



3 1761 07985932 8

UNIV. OF
TORONTO
LIBRARY

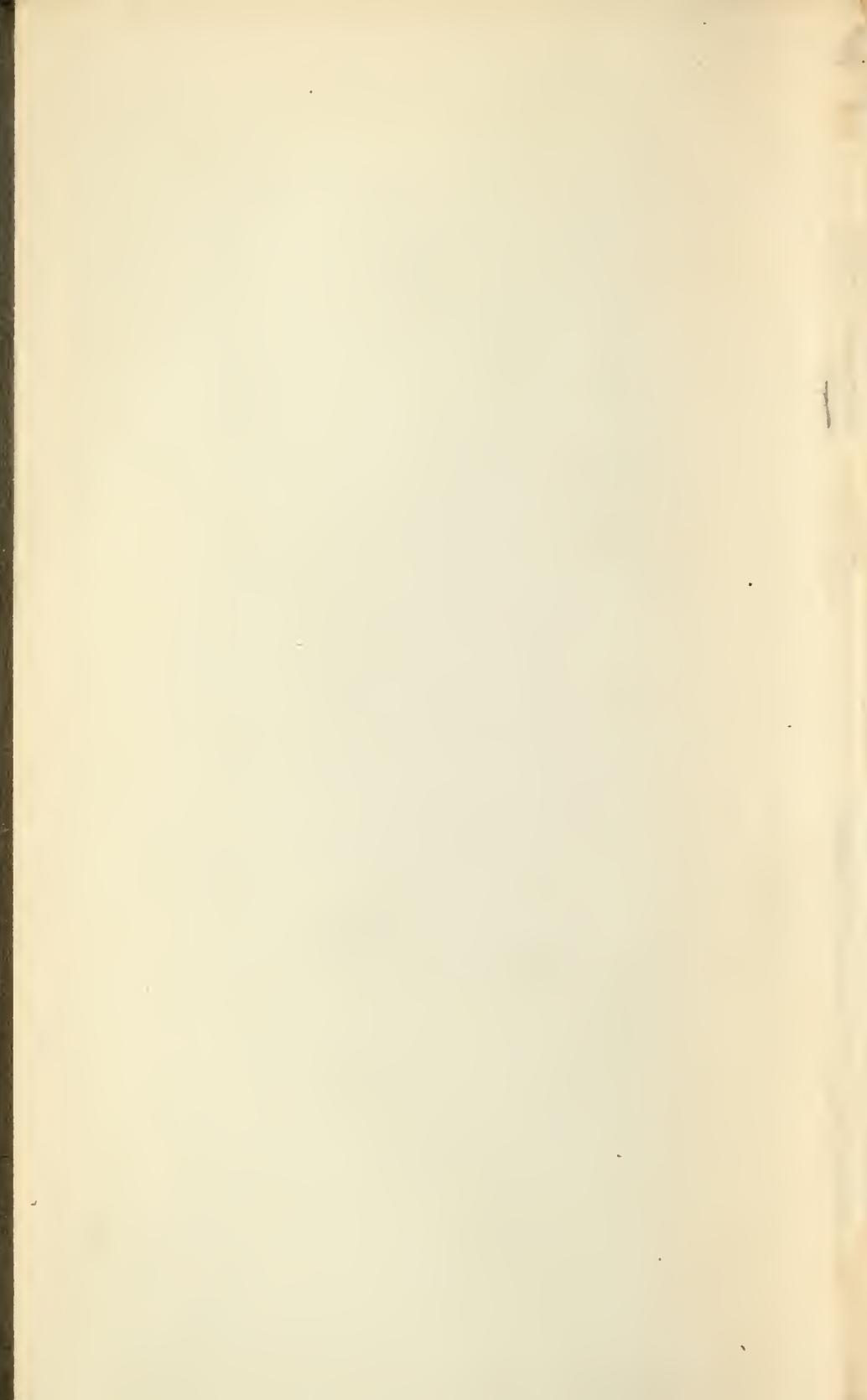


Presented to
The Library
of the
University of Toronto
by
Mrs. Vandersmissen.





Digitized by the Internet Archive
in 2011 with funding from
University of Toronto



~~EGr~~
~~E89N~~

ΕΥΡΙΠΙΔΗΣ

EVRIPIDIS TRAGOEDIAE

SVPERSTITES

ET

DEPERDITARVM FRAGMENTA

EX RECENSIONE

AVGVSTI NAVCKII

VOLVMEN II.



235-495-
6: 9: 29

LIPSIAE

SVMPTIBVS ET TYPIS B. G. TEVBNERI

MDCCCLIV

PA

3973

A2

1854

V.2

ANNOTATIO CRITICA

IPHIGENIA AVLIDENSIS.

Editione Cantabrigiensi (a. 1840) invitus carui. In personarum indice post *MENEΛΑΟΣ* cum Marklando addidi *ΑΓΓΕΛΟΣ* (cf. v. 414) et in fine pro *ΘΕΡΑΠΙΩΝ. ΑΓΓΕΛΟΣ* scripsi *ΑΓΓΕΛΟΣ ΕΤΕΡΟΣ* praeunte Vaterno.

Vs. 3 πεύσει] σπεύσεις; Dobr. 8 ἄσσω] αἰσῶν Vater. 19 ἦσσον ζηλῶ] ἦσσον ἐπαινῶ Stob. 22 καὶ τὸ φιλότιμον] καὶ τὸ πρότιμον Nck. 33 βουλόμεν' ἔσται] νενόμισται Stob., sed βουλομένων ἔσται Plut. 46 τότε] f. ποτὲ cum Barnesio leg. 47 sq. πέμπεν — δίκαιον] πέμπειν — δικαιοῖ probabiler Herm. 66 εὖ δέ πως] ἐμπέδως Nck. 70 ὥς γε] ὥς σφε ed. Cantabr. 84 κᾶτα] κάρτα Heath., στρατηγήσονται (pro στρατηγεῖν κᾶτα) ci. Nck. 89 ἀπορία λελημμένοις ci. Nck. 93 spurium arbitror. 109 λάθρα supplet Hartung. 128 οὐκ ἔργον] ἀντ' ἔργον Libanius (cf. Lennep. in Phalar. p. 209, a. Vnger Theb. Parad. p. 376). 172 Ἀχαιῶν] ἀγανῶν Nck. 233 γυναικείαν] γυναικεῖαν Nck. 234 μέλινον ἄδονάν corrupta, μᾶλλον ἄδονᾶν Herm. 237 θούριος Vater. 251 θετὴν ci. Nck. 252 τι Markl. 253 τῶν et 265 ἐκ deleverim. 263 ναῦς] ναῦς ἦν Herm., ἦν ναῦς praetuli. 268 Ἀδραστος ineptum, ἀδελφὸς Markl., ἄρ' αὐτὸς Mehlhorn. 277—302 strophicum videtur carmen; metro congruunt 280 sq. et 292 sq., 285 et 300, 287 et 302. cetera exaequare tentavit Herm. 277 Αἰνιάνων] Ἐνιάνων Nck. 331 ἐάσομαι] ἔξς ἐμέ Nck. 333 πονηρὸν] πονηρῶν Nck. 334 σαφεῖς φίλοις] σοφοῖς φίλον ci. Nck. 338 mallet haberemus: τῷ λέγειν μὲν οὐχὶ χορήζων, τῷ δὲ φαίνεσθαι θέλων. 339 ἥς ἀπάσης] ἥσθα πάσης Mkl., ἥσθα πᾶσι Nck. 347 καὶ] χορὴ ci. Nck. 351 et 353 sq. diversa puto tentamina traditam lacunam resarciendi. 357 στερέντα σ'] στερέντας Musgr. 363 sq. damnavi, 364 iam Dindorfius; f. inter 362 et 365 nonnulla exciderunt. 372 κόρη] κᾶκην ci. Nck. 373 ἂν] ἄρα Nck. 393 probabiler editor Cantabr.: οὐς λαβῶν

στράτευ'· ἔτοιμοι δ' εἰσὶ μωρία φρενῶν. 407 βούλομ' ἀλλ' οὐ]
 βούλομαι κού ci. Nek. 416 ὠνόμαζες Mkld., sed ipse versus
 suspectus est. 417 σὴ Κλυταιμνήστρα δάμαρ Elmsl. 452 αἰδοῦ-
 μαι] οὐ σθένω Dobr. 521 ἄχρηστον] ἀρεστὸν Nek. 530 κᾶτα
 φεύξομαι tentabam. 547 μαινόμεν'] μαινολῶν Nek. 559 διά-
 τροποι] διάφοροι Nek. 573 sqq. locus corruptissimus; stro-
 pham (572—578) et antistrophum (579—585) efficere tentavit
 Herm. 580 ὅτι] εὖτε Herm. 589 ἐς πέργαμα Τροίας Blomfield.
 595 εὐμεγέθεις ci. Nek. 596 sq. intellegerem sic scriptos: θεοί
 τοι κρείσσους οἰκῶν ἔφοροι τοῖς ὀλβιοδαίμοσι θνατῶν. 601 νώ-
 μη Herm. 626 τὸ Νηρ.] θεᾶς Νηρ.; 639 τῶνδ'] τῷδ' Fix.
 641 τὸ δ' ἴσον ci. Nek. 649 ἰδοὺ γέγηθ' ἔως γέγηθά σ' ὀρῶν
 τέκνον libri; tentabam ἰδοὺ γέγηθ' ὀρῶν σε γηθοῦσαν, τέκνον.
 652 οὐκ οἶδά σ' ὅ τι φῆς, φίλτατ', οὐκ οἶδ', ὦ πάτερ ci. Herm.;
 652—655 hoc loco incommodi aptius fortasse eo loco legerentur
 quem nunc tenent 660—663 mihi suspecti. 657 θέλειν] τελεῖν
 ci. Nek. 665 θύγατερ σύ θ'] an σὺ θύγατερ? 667 αἰτεῖς τί]
 ἔτ' ἔστι Porson, praetuli ἔπεστι. 694 συνανίσχεται libri. 696 δὲ
 ποίου] f. δ' ὁποίου cum Porson. 710 σοφώτερος] σοφῷ τρέφειν
 ci. Nek., nisi quis σοφῷ τέκος malit. 724 ὅμως] ὁμῶς Nek. prima
 verba non expedio. 728 ἀμὲ] f. ὦν με cum Reiskio leg. 734
 σὺ] σοὶ Nek. pro ἡγεῖ tentabam ἔστιν. 741 νυμφίοισι] νυμφίους
 ἢ tentabam, sed fortasse versus delendus cum Herm. 747 τῆς
 θεοῦ φίλον γ'] τοῖς θεοῖσι φίλον ci. Nek. 764 Τρωῆς] Φρύγες
 Herm. 765 πόντιος] ἄλιος Herm. 769 Διὸς κούρων ci. Nek.
 775 Ἄρει φονίῳ Matth., δορὶ φονίῳ Herm. 782 πολὺκλαυτος
 ἔσειται corrupta, εἴσεται (pro ἔσ.) Herm. 790 μυθεῦσαι libri.
 795 εἰ δὴ] εἴθ' ἢ Reisk. 796 Αἰήδ'] Αἰήδα σ' Nek. 804 πύλας]
 πέλας Barnes., πνοάς Herm. 813 πνοαῖς] ῥοαῖς ci. Markl., πύ-
 λαις Herm. 817 δρᾶ] δρᾶ δ' Fix, φράς' ci. Nek. 823 οὐς] οἷς
 Nek. 824 προσέβης ἄν] κατεῖδες editt., προσῆκες Nek. 862
 πάροθεν] παρόντε Dobr. 865 nondum emendatus: libri ἄν
 ὥσῃ (pro ἀνοίσει). 900 οὐκ ἐπαίδ.] f. οὐκέτ' αἰδ. 902 ἐπὶ τί-
 νος] περὶ τίνος Schaefer. 909 πρὸς σῆς] πρὸς σε probabiliter
 Markl. 912 γελᾷ] πέλας Markl., praetuli πελᾷ. 942—974 dam-
 nat Dind., mihi 943. 946. 953. 962—974 suspecti sunt. 944
 ἄρ'] ἄν ci. Nek. 947 ὥσπερ (ὅσπερ) φονεύει] sententiae condu-
 ceret εἰ προυξένησε. 954 τ'] γ' Nek. 959 sq. οὐ τῶν γάμων
 ἔκατι δ' εἰρηται τάδε Hermannus, μυρίαί — τούμὸν delens. 994

ἔξεισιν αἰδοῦς Pors. 995 ἰδοῦ] ἢ μὴ editt., εἰ δ' οὐ Nck. prae-
eunte Hartungio. 996 Achilli tribuebatur, Clytaemnestrae tri-
buit Nck. 1003 ἀνικέτευτος ἦς·] ἀνικετεύτως· εἰς Nck. 1017
ἐπίθετ'·] πείσειτ' Herm. 1017—1023 damnat Dind., certe 1022 sq.
spurii videntur. 1019 πρὸς φίλων κεκλήσομαι ci. Nck. 1031
ἐν] ἦν ci. Nck. 1041 Περιίδες ἐν δαιτὶ θεῶν] θεῶν ἐν δαιτὶ Πιε-
ρίδες Dind. Metris p. 313 nescio quo auctore. 1055 κύκλω ci.
Herm. 1066 ἐξωνόμασεν] ἐξονόμαξεν Herm. 1073 ἐνδυτ'·] ἐκ]
ἐνδύτοις ci. Nck. 1081 γ' ἁλιᾶν] βαλιᾶν ci. Scaliger, ταλαᾶν
Nck. 1082 ὀρέων] ὀρείαν ed. Cantabr. 1084 λαιμόν corruptum,
item 1087 sq. 1090 δύνασιν ἔχει] ἔχει Nck. 1093 δύναιμιν] δύ-
νασιν Nck. 1096 μὴ addidit Herm. 1110 πατρὸς μέτα cor-
rupta, pro πατρὸς f. πάρος leg., de ceteris non liquet. 1117 σὺ
add. Nck. 1126 vehementer friget. 1130 δεῖ γ'·] δεῖ μ' Markl.,
δεῖ σ' Dobr. 1132 ὑπονοεῖς θ' ἃ μὴ σε χορή. ΚΑ. ἐχ' ἥσυχος]
ὑπονοεῖς τ'. ΚΑ. ἐχ' ἥσυχος probabiliter Herm. 1138 τίμ']
τίς σ' ci. Markl. 1141 πέπεισμ' ἃ σύ γε] πεπύσμεθ' ἃ σὺ Er-
furdt. 1151 προσώρισας Hartung. 1153 Διός γε] Διός τε Markl.
1154 ἵπποισι] ἵπποις σε ci. Nck. 1168 καλὸν γένος] καλὸν γε
τοι Fix. 1170 ὠνώμεθα; ci. Nck. 1171 εἰ στρατεύσει Elmsl.
1172 suspectus. 1174 πάντας ineptum, suspicabar ὅταν θρό-
νους μὲν τοὺς τὸ πάρος ἴδω κενούς, coll. Apsine Rhett. vol. IX.
p. 593 (vol. I. p. 403, 25 ed. Spengel.). 1176 καθῶμαι Elmsl.
1179 πρὸς τοὺς δόμους corrupta. 1180 ἐνδεῖ Reisk. 1185 εἶεν·
θύσεις δὲ τὴν παιδ'·] εἶεν· σὺ θύσεις παιῖδα ci. Nck. 1193
ἦλθεν] ἦλθες Herm. 1203 ὑστερήσομαι] ἦς στερήσομαι Herm.,
ἐστερήσομαι Pors. 1207 λέλεκται νῶι μὴ δὴ γε κτάνης libri.
1209 σοι σώζειν vel σ' ἦν σώζειν ci. Nck. 1210 πρὸς τὰδ'·] τοῖσδ'
ἄν ed. Cantabr. 1230 τιθηνῶν ci. Nck. 1244 νηπίοις γε] ma-
lim νηπίοισι cum ed. Cantabr. 1267 sq. damnat Herm. 1274
malim βαρβάρων cum ed. Cantabr. 1293 Ἀλέξανδρον mihi ut
aliis glossema videtur. 1305 δορὶ] δουρὶ ed. Cantabr. 1310
graviter corruptus, post Δαναῖδαισιν excidisse ἦν suspicor.
1323 ὥφελεν] ὥφειλ' ci. Nck. 1324 sqq. tentabam: Ζεὺς μελί-
χιος, | τάσσω ἀνδρᾶν ἄλλοις ἄλλαν | θνατῶν λαίφεσι· τοῖς μὲν
χαίρειν κτλ. 1332 ἀνευρεῖν] εὕρεῖν ci. Dind. 1341 τί δὲ φεύ-
γεις, τέκνον; Ἀχιλλεῖα τὸν ἰδεῖν αἰσχύνομαι libri, unde cum Har-
tungio legendum suspicor: τί δὲ σὺ φεύγεις, τέκνον; IΦ. ἄνδρα

τόνδ' ἰδεῖν αἰσχύνομαι. 1343 melius abesset. 1344 ἦν δυνώ-
μεθα] ἔν' ὀδυνώμεθα Herm. 1348 ὡς χρεῶν σφάξαι νιν. κοῦ-
δεις ἐναντία λέγει; libri. νεῶνιν (pro νιν) Fix, quo recepto scri-
bendum suspicabar: ὡς χρεῶν σφάξαι νεῶνιν. ΚΑ. κοῦδὲ εἰς
ἐναντία; 1349 ἐς τίν'] τίν' Nck. 1350 σώζειν ἐμὴν] σώζων
ἐμὴν Canter, an σώζειν θέλων? 1355 εὐνὴν] εὐνιν Herm. 1361
ἐμοῦ γε ζῶντος ci. Nck. 1366 versus suspectus. 1375 μέν μοι]
ἐμοί ci. Nck. 1380 sq. τὰς δὲ μελλούσας γυναικας μηκέθ' ἀρ-
πάξιν ἐᾶν Hermannus (delens ἦν τι δρῶσι βάρβαροι et τὰς ὀλ-
βίας ἐξ Ἑλλάδος). 1391 ἔχομεν] ἔχοιμ' ἂν Herm., fortasse prae-
stat: τοῦτ'; ἔχομεν ἄρ' ἂν —; ut Hartungius. 1394 ὄρᾶν] ὄρῶν
Dobr. 1438 an 1439 delendus sit ambigitur; μήτ' οὖν γε τὸν
σὸν interpolatorem sapiunt. 1455 πατέρα γε] πατέρα τε Herm.
1480 βωμόν] Ἀρτεμιν] βωμόν Nck. 1483 τὰν μάκαιραν] θεὰν
μάκ. Nck. 1502 ἐθρόεψαθ' Elmsl. 1509 ἰὼ ἰώ choro tribueba-
tur. 1514 γε δαίμονος] διαίμονος Markl. 1517 σφαγεῖσαν] — — —
σφαγεῖσαν ci. Nck. (in stropha 1485 αἵμασι θύμασιν τε vel αἵμασι
θύμασιν θεᾶς?) 1527 δολόεντα vix sanum. 1532—1628 dam-
navit Porsonus, 1532—1558 defendit Matth., mihi quae inde
ab 1540 leguntur suspecta sunt, quorum versuum prior pars ho-
mini haud imperito debetur. in extrema parte quae insunt vitia
immania removeere studuit Herm. medicina nonnunquam vio-
lenta; sed in istiusmodi poeta proletario quid ferendum sit, quid
damnandum, nullo modo definias. unde satius erat librorum
scripturam servari. 1573 ἄναξ θ'] τ' ἄναξ ci. Nck. 1580 δέ τ'
ἄλγος] δὲ τᾶλγος Nck. 1583 οἶδεν] εἶδεν Matth., οἶδαμεν ci. Nck.
Aelianus N. A. VII, 39: ὁ δὲ Εὐριπίδης ἐν τῇ Ἰφιγενείᾳ·
ἐλαφρον δ' Ἀχαιῶν χερσὶν ἐνθήσω φίλαις
κεροῦσσαν, ἣν σφάζοντες ἀνχλήσουσι σὴν
σφάζειν θυγατέρα.

Hos versus e genuino fabulae exitu depromptos esse probabili-
ter viri docti coniecerunt. Quae schol. Ar. Ran. 1310 ἐξ Ἰφιγε-
νείας τῆς ἐν Ἀυλίδι repetit, ex Iphig. Taur. 1090 repetenda fuisse
statuit Bergler.

IPHIGENIA TAVRICA.

Hanc fabulam una cum Helena edidit Carolus Badham, Lon-
dini 1851. Editione Cantabrigiensi (a. 1840) uti mihi non licuit.

Vs. 15 δὴν ἦστ' ἀπλοία ci. Nck. 18 ἀφορμίση edebatur, ἀφορμήση (quod Parisini libri habere dicuntur) Nck. 29 Ἀχαιοῖς] Ἀχαιούς Nck. 31 οὗ γῆς] γύαις δ' ci. Nck. 35 sq. graviter corrupti. 37 interpunxi sicut Schoene. 57 εἰσὶ παῖδες] malim ταῖδες εἰσιν ex Artemid. II, 10. Stob. Fl. 77, 3. Men. monost. 713. 59 sq. subabsurdi sunt. 70 damnavit Badham. 82 τροχλάτου] ποιηλάτου ci. Nck. 91 ἐνθένδ'] ἐνθεν ci. Nck. 98 μάθοιμεν] λάθοιμεν Reisk. 100 ὧν οὐδὲν ἴσμεν] ὧδ' οὐδὲν ἔσμεν Badham, θύραθεν ἔσμεν ci. Nck. 113 κενὸν] χρεὼν ci. Nck. 116 οἴτοι] οὔτω Badham. 135 Εὐρώταν probabilitur Barnes. 142 σπέρμ' Ἀτρειδῶν Schoene. 145 ἔγκειμαι τᾷς] ἔγκειμ' ἰστᾷς' Nck. 146 βοᾶν] ἰάν Nck. 147 ἔ ἔ ἐν] αἰαῖ Nck. οἴκτοιςιν] οἴκτοις Seidler. 148 αἶ] οἶαί Badham. cum οἴκτοιςιν praecedat, malim δειναί vel αἰναί. 150 alii ζωᾶς delent, δνειρών alii. 180 ἰαχάν] ἀχάν Nck. 184 νέκυσσι μέλεον] νέκυσιν μελέων Schoene. 188 lacunam indicavit Herm. qui τῶν σῶν supplet; Dind. 186 οἷμοι, σῶν πατρῶων οἷκων scribi iussit et 188 deleri. 189 τίν'] τίνος Badham. 194 sq. ἑρὸν θνατοῖς ὅμμ' ἡλύγασ' ἡέλιος ci. Badham. 200 ποινά γ'] ποίναμ' Hartung. 208 et 209 sedem mutare iubet Badham. 225 αἰμορράντων] αἰμορράντων ed. Cantabr. 226 βωμόνς f. delendum cum Matth. 246 ὄνομ'] νόμον Nck. 252 et 256 πῶς] ποῦ Badham. 259 ῥοαῖς] φοναῖς ci. Nck. 275 ἀνομῖα] ἀλογία ci. Nck. 284 καὶ βοᾶ· κυνώπιδα ci. Nck. 288 ἐκ χιτώνων] tentabam ἐγκυτῖς νῶν. 292 sq. ἀλλ' ἐπλάζετο φθογγαῖς τε μ. καὶ κ. ὑλάγματι ci. Nck. 294 ἄς φάσ'] ἄ" φασκ' Badham. μιμήματα] μυκήματα Nck. 298 ἐκ πλευρᾶς συθείς ci. Badh., εἰς πλευράς θ' εἰς Musgr. 300 ὥς] ὥσθ' Markl. 318 πέτρους ci. Victorius. 329 οὐδεῖς] οὐδ' εἰς Nck. εὐστόχει Badham. 339 suspectus. 343 οἶα φροντιούμεθα] φροντιούμεν οἶα χρῆ Badh. 349 delevi. 356 κατήγαγ' Badh. 358 Ἀῦλιν] αὐλιν Nck. 370 προσεῖπας] προτείνας Badh. μ' addidit Nck. ante 380 quaedam deesse vidit ed. Cantabr. 382 damnavit Badh. 390 τὸν] τὴν amicus Marklandi. 395 εὔξενον] ἄξενον ed. Cantabr. διεπέρασεν ποτε] διεπέρασε πόντου Schoene, διεπέρασε πόρτιν Bergk. 410 λινοπόροις] λινοπόροισί τ' ed. Cantabr. 419 non expedio. 421 τὰς συνδρο. πέτρας] πέτρας τὰς ξυνδρο. Badham. 430 καὶ delet Herm. 444 ἐλιχθεῖσα] requiritur verbum quod significet conspersa. 447 τήνδ'] δ' Herm., delet Badh. 452—455 locus nondum emendatus. 454 ὕπνων Herm. 466 δι-

δούς et 477 κακὸν corrupta. 481 f. μακρὰν leg., cetera non ex-
 pedio. 486 οὐχ] οὐδ' Herm. 498 γύναι] φύσει ci. Nck. 505
 σοι] σή ci. Nck. 514 ὥς vix sanum. 516 τοῦτ' ἔρα] τοῦδ' ἔρα
 Barnes., τοῦθ' ὄρα Seidl. 541 ἀπωλόμην] ἀπώχόμην Nck. et
 Badh. 555 εἰ] ἦ Nck. 559 φεῦ· ὥς εἰ] ὥς φεῦ Nck. 566 ἀπώ-
 λετο] ἀπώνατο ci. Nck. 571 πτηνῶν] τυφλῶν ci. Nck. e Dioge-
 nian. VIII, 26. Hesych. Phot. Suid. v. Τύφλων ὄν. 573 sq. verbi
 nondum sanata. 580 μάλιστά γ' οὕτω] μάλιστα τοῦτο Nck. 589
 αὐθις] οὐδ' ὅς ci. Nck. 592 οἷσθας οὖς τ' ἐγὼ φιλῶ ci. Nck.
 593 σὺ] ζῆ Canter. 630—632· suspicor in codice nostrorum li-
 brorum fonte initia versuum deleta fuisse, itaque scripserim 630
 καὶ μὴν, 631 ὅσον γε δυνατὸν, 632 πρέποντα γὰρ, 633 ὑγρὰ τ'
 ἐλ. 633 κατασβέσω] κατασκειδῶ ci. Geel. 660 Ἑλληνικῶν ci.
 Nck. 666 Ἀργεῖα τις] Ἀργεῖῳτις ci. Nck., cf. Steph. Byz. p.
 113, 13 ed. Meinek. 675 κοινῇ δὲ πλεύσας ci. Elmsl. 679 σώ-
 ξεσθ'] σωθεῖς δ' Dobr. 687 τᾶμ' ἄλις φέρειν ci. Bergk, τᾶμ'
 ἄδην φέρω Geel. 692 λήσειν] λιπεῖν Badh. 719 θεοῦ γ'] θεοῦ
 σ' Nck. μέ πω] γέ πω Nck. 720 καίτοι γ' corruptum. 736
 suspectus Badhamo. 737 τῷδε] τῶνδε ci. Nck. 744 δώσω] δώ-
 σεις Nck. 749 ἀνακτά γ'] ἀνάκτορ' ci. Nck. 754 αὐτίς] οὕτις
 Nck. 759 πολλῶν] πολλοῖς? 766 θεῶν] τε σῶν Maur. Haupt,
 θ' εἰῶν Nck. 773 λόγων Seidl. 782 delet Dindorf. 811 suspe-
 ctus. 813 ἡνίκ'] οὐνεκ' Barnes. 814 οἷσθ' ἐν] οἷσθας Nck.
 834 τὸ δέ τι] τότ' ἐτι Fix, qui alterum ἔλιπον addidit. mox ἀγκά-
 λαις σὲ scripsi pro ἀγκάλαισι. 837 ἐμοῦ ψυχῇ] τύχαι Elmsl.,
 praetuli τυχαῖν. 864 πατέρ' ἀπάτορα πότμον ἄποτμον ἔλαχον ci.
 Nck. 881 πελάσαι] πελάσσαι Nck. 884 ναυσίν ed. Cantabr.
 895 ἂν οὖν τάδ' ἂν] ἄρ' οὖν, τάλαν Badh. 901 καὶ] κοῦ Ludov.
 Dindorf. ἀπαγγελῶ] ἀπ' ἀγγέλων Herm., nondum tamen locus
 sanatus. 907 sq. vitiorum non expertes. 912 οὐδὲν ἔτ' ἐπίσχει
 μ' ci. Nck. 914 ἔσται πάντ'] ἔστι τᾶμ' ci. Schoene. 938 δρά-
 σειν] δράσων ed. Cantabr. 942 ἐνθεν μοι] ἐνθ' ἐμὸν Herm.
 966 ὠλένη suspectum. 990 suspectus. 995 τὴν θεὸν] τὸν λεῶν
 ci. Nck. 1006 ζῆν] malim ζῶν cum Hartungio. 1010 ἦξω δέ γ'
 ἦνπερ καντὸς libri. ἐνταυθοῖ non est Euripideum. 1025 sq.
 damnavit ed. Cantabr., mihi etiam 1022 sq. suspecti sunt. 1031
 ἀνίαις suspectum. 1042 εἰπας] εἰ παρ' Reisk. 1057 καλῶς]
 καλῶς μ' ci. Nck. 1072 sq. τίς οὐ θέλει; φθέρξασθε δῆτα ci.

Nek. 1112 νόστον] νᾶσον Nek. 1113 ἔνθα τᾶς ἐλαφοκτόνου] ἐν ᾗ τᾶς ἐλλανοφόνου Nek. 1114 ἀμφίπολον κούραν] κούραν ἀμφίπολον ci. Musgr., rectius fortasse κοῦραν (cf. Schol. Γ, 130) scripserimus. 1120 in corrupto μεταβάλλει latet nominis δυσδαιμονία epitheton. 1128—1152 versus depravati, quibus emendandis impares sumus. 1135 πόδα] πόδες Seidler. 1143 χοροῖς δὲ σταίην] χοροὺς δ' ἰσταίην Badham. 1144 παρθένος] πάροχος Nek. 1148 χαίτας ἀβροπλάυτοιο ἐς ἔριν libri. 1152 ante corruptum ἐσκέλαζον indicavi lacunam. 1155 λάμπονται] δάπτονται Iacobs. 1174 τόδ'] γ' Matth. 1182 τῶν] f. μῶν cum Badhamo leg. 1185 πατέρα γε ζῆν] ζῆν γε πατέρα ed. Cantabr. 1204 δέ σ'] δ' Pariss., suspicor σ' librorum auctoritate carere et γὰρ scribendum esse. 1210 συναντῶσιν Elmsl. 1212 sq. transposuit Nek., partim praeunte Hermanno. 1213 οὐδείς] οὐ δεῖ Elmsl. 1214 damnavi cum Dindorfio. 1237 χρυσοκόμαν Φοῖβον libri, Φοῖβόν τε χρ. Herm., τίκτουσα χρυσοκόμαν ci. Schoene. 1242 corruptus. 1243 βακχευθεῖσαν Dobr. 1249 ἔτι μιν] σὺν δέ νιν ci. Nek. 1259 γὰς ἰὼν] γάιον ci. Nek. 1260 sq. Λατῶος addidit Nek., f. ἀπένασεν ὁ Λατῶος praestat. 1266 δνοφεράς γὰς] δνοφεράς Musgr. 1271 ἔλιξ'] ὄρεξεν ci. Badham. ἐν Διὸς Θρόνων] εἰς Δῖον Θρόνον Badham. 1272 χθονίαν] χθονίας Nek. 1273 μῆνιν *'] μῆνιν νυχίους τ' ἐνοπίας libri: extrema verba recte ad 1277 relata sunt, ubi παῦσε νυχίους ὀνείρους libri. 1277 παῦσε] παύσειν ci. Nek. 1278 δὲ μαντοσύναν] δὲ λαθοσύναν Pariss. et fortasse ceteri, δ' ἀλαθοσύναν ci. Nek. 1299 τῶνδε τῶν πεπράγμένων (deleto μέρος) ci. Nek. 1306 ἀγγέλλων] ἀγγελῶν ci. Nek. 1309 ψευδῶς ἔλεγον] ἐπλασσον ci. Badham, πῶς δ' ἔλεγον Nek. 1324 διωγμὸν Herm. 1325 ἀγκίπλουν πόρον corrupta: ἀγκίπους ex h. l. affert Hesychius. 1334 ὑποπτα μέν] ὑποπτά μοι Badham. 1340 λυθέντες] λαθόντες ci. Nek. 1346 ταρσῶ κατήρη Bothe, ταρσοῦ κατήρες Schoene. 1353 πόντω δὲ δόντες corrupta. 1358 λόγῳ] νόμῳ ci. Nek. 1362 τήνδ'] τήν δ' ci. Nek. 1365 suspectus. 1368 ἦσαν] ἦσσον ci. Badh. 1386 ναῦται νεῶς damnat Badham, νεανίαι ci. Nek. 1387 ῥόθια τε] τε ῥόθια Seidler. 1388 εὔξενον] ἄξενον ed. Cantabr. 1394 νεῶς corruptum. 1396 κῦμα] κέντρα Nek. δῆ] δ' αὖ Porson. 1418 sq. ἢ φόνον τοῦν Ἀντίδι (ita ci. Badh.) ἀμνημόνευτος θεᾶν ci. Nek. 1435 πορθμεύεις] πορσύνεις ci. Nek. 1469 ἐκσώσασά σε] ἐξέσωσά σε schol. Ar. Ran

685, ἐξέσωσα δὲ καὶ πρὶν σ' Ἄρ. ci. Nck. 1471 εἰς ταυτό γε] ἔστω
τόδε Dupius. 1486 χρεών] χρῆν Dind., mihi versus suspectus.

I O N.

Eurip. Ion, with notes by C. Badham, London 1852. cf. Philologi vol. VII. p. 161—166.

Vs. 1 ὁ νῶτοις χαλκίοισιν οὐρ. ci. Elmsl., ὁ χαλκίοισι νῶ-
τοισιν πόλον Badham. 2 ἐκτρίβων suspectum. 19 εὐτοίχῳ ci.
Meinekius. 24 ἐκεῖ] ἔτι Barnes. 32 σὺν ἄγγει] ζυγάστρῳ ci.
Nck. 52 τροφὰς mihi suspectum. 83 λάμπει] κάμπτει Musgr.
84 πυρὶ τῷδ'] πῦρ τόδ' Pal., πῦρ τόδ' ἀπ' Badh., an τόδε πῦρ?
98 εὐφημεῖν Badh.; mihi γλώσσης ἰδίας 101 offensioni est, ten-
tabam στόμα τ' εὐφημον φρουρεῖτ' ἀγαθόν, τοῖς ἐθέλουσιν μαν-
τεύεσθαι φήμας ἀγαθὰς ἀποφαίνειν. 118 * τὰν] γὰς τὰν Herm.,
Badhamo videtur τὰν plantae nomen recondere ac paulo post
μυρσίνας θ' ἱερὰν φ. scribendum esse. 128 γε τὸν] γέ τοι ci.
Nck. 140 Φοῖβον τοῦ] Φοῖβον τὸν Badh. 153—169 et 170—183
strophica videntur, certe στρ. et ἀντ. notas apponunt codices
Paris.; fortasse 153—159 et 170—175, 162—169 et 176—183
sibi respondent. 157 οἴκους] τοίχους ci. Badh. 164 σ' ἃ] σ' ἂν
ci. Nck. post 175 duo versus excidisse videntur. 168 αἰμάξω
σ', εἰ μὴ παύσεις τὰς κ. ῥῶδ. ci. Kirchhoff. 178 ante Φοῖβον
molossum desideramus. 190 τάνδ'] f. τᾷδ' cum Dobraeo leg.
194 ὄρῳ] ἀθρῳ ci. Nck. 201 praefixum *HMX*. delendum vi-
detur. 203 πυρὶ] πῦρ Nck. πνέουσας] πνεύουσας ci. Nck. 205
πάντα] πάντῃ ci. Nck. 206 τείχεσι corruptum, πτυχαῖσι vel τύ-
ποισι vel τύκαῖσι viri docti. 210 γοργωπὸν] γοργῶπιν Nck. 221
ποδὶ γ] ποδὶ βηλὸν Herm., ποδὶ βαλὸν Dind. 222 αὐδὰν τίνα δὲ
θέλεις Pal., αὐδα· τί θέλεις; Nck. τί (pro τίνα δὲ) praeierat
Dindorf. 223 μέσον ὀμφαλὸν] μεσομφάλιον Nck. κατέχει δό-
μος] βωμὸς κατέχει ci. Nck. 226 ἐθύσατε] ἔθυσας ci. Nck., ut
mox χρῆσεις et bis πάριθ'. 235 Παλλάδος ἔνοικα corrupta. 237
γενναιότης σοι καὶ] γενναιότητος σοὶ ci. Nck., γενναῖος εἴ τις καὶ
Dobr. 251 ἔσχομεν Pal., ἔσχον Stephanus. 255 ἀνερευνήτα]
ἀνερομήνευτα Nck. 264 τοσαῦτά γ' εὐτ. ci. Nck. 275 εἶεν· τί
— μάτην; (deleto λόγος) Badham. 285 Πύθιος] Φοῖβος ci.
Matth. 286 τιμᾷ τιμᾷ] τιμᾷ γ' ἄτιμ' Bothe. 300 σηκὸς Pal.,
σηκοῖς Arsenius. 301 πότερα] πότερον Ammonius Valek. p. 69.

Eranius Philo p. 169. 324 τεκοῦς' ἥτις] τεκοῦσα, τίς Herman-
 nus, cf. Lud. Dindorfius in Thes. L. Gr. vol. V. p. 1709. 334
 μαθεῖν] λαβεῖν ci. Nck. 354 ταῦτ' ἂν et εἶχεν μέτρα ci. Elmsl.
 355 et 356 sedem mutare iussit Herm., versum οὐκουν κτλ. Ioni,
 alterum ἀδικεῖ κτλ. Creusae tribuens. sed plura in his turbata
 sunt. 358 μοῦνος, οὐ δίκαια δοῶ ci. Nck. 361 καὶ ᾧ ci. Nck.
 μή γ' ἐπ' οἰκτόν μ'] μή μ' ἐπ' οἰκτον Nck. et οἰκτον (pro οἰκτόν
 μ') Par. E. 374 εἰς γὰρ τοσοῦτον] εἰς τοῦσχατον γὰρ ci. Badham.
 377 δι' οἰωνῶν περοῖς corrupta. 379 ἄκοντα] ἀνόνητα Stepha-
 nus. 381 βροτῶν] βροτοῖς Par. E et Stob. 382 μορφαῖ] μορ-
 φαῖς Stob. 383 βίον] βίῳ Flor. 2 et Stob., unde ἕνα δ' ἂν εὐ-
 τυχή — βίον scripserim cum Dobr. 390 ἀλλ' εἶν χρὴ τὰδ'] ἄλ-
 λως ἔδη * χρὴ τὰδ' Nck., post ἔδη fortasse δὴ excidit. 396 καὶ
 προβῆ] κάμ' ὀλῇ vel καβολῇ Stobaeus, ἀποβῆ Nck. 404 ἀφί-
 κου] ἀφίγμην ci. Badh. 408 μάντευμ'] μαντεῖον ci. Nck. 431
 φιλοῦσα γῆς Pal., φιλοῦσα τῆς ci. Nck. 434 προσήκει τοῦδας]
 προσῆκέ μ' οὐθὲν Iustinus Martyr, προσῆκόν γ' οὐδὲν Nck.
 448 πάρος] πέρας Iustinus Martyr, πέρα Conington. 457 πότνα]
 μάκαιρα Pal. et pr. m. Flor. 2, quod recipiendum. 459 Ὀλύμ-
 που] Οὐλύμπου Nck. 462 μεσόμφαλος] μεσσόμφαλος Nck. 467
 τοῦ Φοίβου supplementum metricum. 473 θνατοῖς] f. βροτοῖς?
 475 καρποτρόφοις Dobr. 477 νεάνιδες ἦβαι corruptum. 486
 θαλάμων τ' εἶεν] τ' εἶεν θαλάμων Pal., θαλάμων τ' αἰ ci. Nck.
 511 ἔχοντα (pro ἔχουσαι) libri. 523 corruptus. 523 γνωρίσας]
 χωρίσας ci. Nck., γνώρισον alii. 524 ἀμούσους] ἀμοίρους Nck.
 ξένους] ξένε ci. Nck. 528 ἐμοὶ] ἐμοῦ libri. verba κλύειν ἐμοῦ ab
 interpolatore suppleta esse puto. 545 νέου] λόγου Pal. 551 ἐν
 τῷ] ἐν τοῦ Madvicius, ἐν του Badh. 554 ὁ πότμος σ' ἐξεῦρε
 τέκνον libri. 558 νῦν — ὄρᾱν e Bacch. 924 arcessita. 594 μη-
 δὲν καὶ οὐδὲν ὡν κεκλησόμαι libri. 601 φόβου] φόγου Musgr.
 602 λογίω] σοφῶν ci. Badh. 605 ἔχουσι καξιώματα] ἔχοντες
 ἀξιώμα τε Stobaeus, ἔχοντες ἀξιώματος Badh. 607 ἐλθῶν] ἐλθω
 ci. Nck. 614 et 615 ego, 616 et 617 Dind. damnavimus. 621
 τῆς πάλαι θουλουμένης Stob. 624 βίον] βίου Nck. 634 ἀν-
 θρώπων] ἀνθρώπων Badh. 641 ὦν] ἐν ci. Nck. 646 δ' ἐμαν-
 τῷ] δέ μ' αὐτοῦ Badh. 674 λόγοισιν] νόμοισιν Conington. 677
 ἄλλας γε] ἀλάστων Herm. 679 ἴδῃ] ἦδῃ Pal., εἰδῇ Nck. 691
 τόδε τ' εὐφημα Pal., τάδε θεοῦ φῆμα Nck. 692 non expedio.
 704 οἴχοιτ' ὅλοιτ' ὦ ci. Nck. 713 νέων] νέου Hartung. 714 ἵνα]

ἰὼ Badham. 722 ξενιζὸν] ξένων ci. Nek. 731 ᾶ (pro ὀ) Pal.
 737 τοῦ σοῦ παλαιοῦς ἐκ γένους Bothe. 743 στείβων χθόνα ci.
 Badh. 751 ἀπίστους] ἄπιστον Madvicius. 780 ἐκτελῇ] ἐντελῇ
 ci. Nek. 782 ἄφατον ἄφατον] ἄφατον ἄρρητον ci. Badh. 787
 ἐκ θεοῦ] ἐκ ναοῦ ci. Nek. 790 ἔλαβεν alterum addidit Herm.
 num recte? 801 ἀκύρωτον] ἀκήρυκτον ci. Nek. 828 ἐλθὼν]
 λαθὼν Musgr., de ceteris non liquet. 830 sq. abesse mallem.
 844 ἢ γὰρ] ἦτοι ci. Badham. 847 damnat Dindorf, 848 sq. Bad-
 ham. 856 οὐδεὶς] οὐδὲν malim cum Dobr. 865 στέρομαι παί-
 δων, στέρομαι δ' οἴκων ci. Nek. 877 κακοβουλευθεῖς] κακο-
 βουληθεῖς Badham. 886 ἀνγὰν] ἀνγὰν αἰθέρος Pal., f. πρὸς
 τάνδ' ἀνγὰν αἰθέρος ἀνδῶ leg. ante 887 versus excidisse vide-
 tur. 902 καὶ delendum ci. Nek. 905 παιᾶνας μέλπων] non ha-
 bent in stropha quae respondeant. 916 σὸς γ'] γ' om. Pal., unde
 ὁ δ' ἐμὸς καὶ σὸς γενέτας ἀμ. ci. Nek. 925 οὗτοι] οἴκτου ci. Nek.
 927 sq. obseuri et corrupti. 968 πάτραν σὴν δυστυχοῦσαν Badh.
 mihi 967 sq. spurii videntur. 984 τοῦμόν καίλεις Badh. 995
 Ἀθάνας libri. Ἀθάνα et ἔχει ci. Nek. 999 οἷσθ' ἢ] οἷσθας Din-
 dorf. 1007 χουσέοισι Fix. 1010 δέρος] δῶρον Stephanus, γέ-
 ρας Reisk. 1014 ἀριθμόν ὧν λέγεις ci. Nek. 1046 sq. ὅταν —
 θέλῃ] ὅπου — θέλει Stob. Fl. 54, 22. 1064 ἅ τε — ἐλπὶς] ὧ νῦν
 ἐλπὶς φέρει Pal., ὧ νυν ἐλπὶς φαίνεται ci. Badham. 1065 δαί-
 μων] f. τλάμων cum Cantero leg. 1068 μορφὰς κάτεισιν] κάτεισι
 μορφάς Herm. 1069 γ' ἐτέρους] an πατρίων? 1071 ὁμμάτων
 ἐν] ὁμμασι Pal., f. ὁμμασιν καὶ leg. 1088 πόνον] δόμον ci. Nek.
 1133 σεμνῶν Dobr. 1136 ἀκτῖνας] ἀκτῖνος Dobraeus. βίον cor-
 ruptum. 1154 χουσήρη πώλω libri. 1171 supplementa varia
 tentata sunt. 1195 Βυβλίνου Blomfield. 1198 ἀπεσπείσθη ci.
 Nek. 1231 γὰρ φανερά] φ. γὰρ ci. Nek. 1233 θοᾶς] τ' ὀλοᾶς
 ci. Nek. 1234 μιννυμένων φοναῖς? 1254 suspectus. 1259
 κᾶν] ἦν ci. Nek. 1273 δωμάτων] δικτύων ci. Dobr. 1274 δό-
 μους] μυχοῦς? 1286 κᾶπει' ἔκτανες] κᾶτ' ἔκτανές με Musgr.
 (pro με praetuli σύ), fortasse tamen κᾶπει' ἀπέκτας leg. 1288
 librorum vitia tenui; tentabam πατέρα δ' οὐσίαν λέγω, sicut
 Hartungius. 1289 σὺ δ' οὐκέτ' εἶ interpolatorem redolent.
 1296—1299 post 1303 collocavit Nek. 1298 οὐ λόγοις] ὡς λέγεις
 ci. Nek. 1306 θεηγόρους ci. Nek. 1321 ποδὶ] πόδα Badh.
 1325 λεγόμεσθ' ἐλεγόμεσθ' Nek. 1329 προγόνοις] προγονοῖς
 Nek. 1331 ταῦτα] δῆτα? 1335 ἐκλαβ' suspectum, ἐκμαθ'

Hartung. 1337 ἄγγος χερὸς] ἄγγους κύτος ci. Nck. 1343 ὁ θεὸς — δόμοις Pal., ὁ θεὸς — δόμοις σ' Nck. 1356 Ἀσίαν Ald. et fortasse codices, Ἀσίδ' ci. Nck. 1377 μητρὸς τροφῆς] ἐπιστροφῆς ci. Nck. 1388 οὐδ'] οὐχ ci. Nck. 1396 πολλά — οἷσθᾱ] πολλή — ἥσθᾱ Hartung. 1404 οὐ] οὖν Boiss. 1405 τε σῶν] γε σῶν Pal., τ' ἔσω Tyrwhitt. 1406 ὁρυσιάζομαι λόγῳ corrupta. 1415 φράσω γε] φράσωμεν ci. Nck. 1416 λέγ' ὥς ἔχει τοι· ci. Nck. ἡ τόλμα γε] ἡ τόλμη γε Dind., ἥ γε τόλμα Herm. 1426 εὐστοχεῖς Pierson. 1427 δράκοντες ἀρχαῖόν τι] δράκοντε μαρμαίροντε Porson, δράκοντε σαρκάζοντε Badham. 1434 σκόπελον] σκόπελος Stephanus. εἰσην.] ἐξην. Scaliger. 1436 ἀκηράτου] ἀγηράτου Badham. 1453 ἰὼ γύναι, πόθεν] πόθεν ἰὼ γύναι ci. Nck. 1469 ὑμῖν ἐγώ] ἡμῖν θεός ci. Nck. 1471 γε addidit Nck. 1491 ἐνῆψα (vel ἀνῆψα) libri, ἐξῆψα Fix. 1502 μὲν] μὲν αἱ Matth. 1510 ἀνθρώπων] ἀνθρώπων Badh. 1517 μαθεῖν] παθεῖν ci. Nck. 1521 γὰρ] σοι Schol. Eur. Phoen. 1530 ὅστις] οὗτις ci. Nck. ut Hartungius. 1531 σ' addidit Nck. 1537 ἀληθῶς ci. Nck. 1543 γάμους] γονάς ci. Nck. 1553 με φεύγετε] με λεύσσετε Elmsl. 1562 νομίζης] κομίζῃ σ' Lenting. 1569 θεῶ] θεῶν Nck. 1574 τῆς γ'] τῆς δ' Pal., f. τῆσδ' leg. 1577 γῆς κἀπιφυλίου] τε κἀπιφυλίοι Badham. 1579 Τελέων] Γελέων Canter. inter hunc et sequentem versum nonnulla excidisse ci. Badham.

CYCLOPS.

Eur. Cyclops recensuit G. Hermannus, Lips. 1838.

Vs. 7 θένων] aut θείνων aut θενών leg. 16 ἐρετμοῖς] ἐπ' ἐρετμοῖς Herm. 41 πᾶ δὴ γενναίων μὲν] δὴ del. Nck., μὲν Herm. 49 οὐ τὰδ' οὐ, οὐ] σὺ τὰδ' οὐ, κοῦ Nck. 51—54 tentabam: ὦ ὕπαγ' ὦ κεράστα, | ἢ ῥίψω πέτρον κατὰ σοῦ | Κύκλωπος ἀγροβότα | μηλοβότα στασίωρον. 56 σποράς] γονάς L. Dindorf. 65 οὐ τυμπάνων ἀλαλαγμοί] οὐ τυπάνων ἀραγμοί Nck. 66 κρήναισι] κρήναις Nck. 68 νύσσα μετὰ] λυσσάματα Nck. 88 φέροντας] φέρονται Par. E, φέρουσι Elmsl. 75 σείεις Flor. 1. 2, unde pro οἰοπολοῖς — σείων; suspicabar οἰοπολῶν — σείεις; 100 τόνδ'] τοῖσδ' Herm. 118 ἔχοντες] οἰκοῦντες Nck. 124 ἥμιστά γ', οἵπερ ci. Nck. 136 βοὸς] Διὸς Athenaeus, δῖον (an Δηοῦς?) ci. Nck. 145 ὥς ὄρᾳς] εἰσορᾳς Nck. praeunte Har-

tungio. ante 147 aut duo aut quattuor versus videntur intercedisse. 153 ὡς καλὴν ὁσμὴν] γεῦσιν ὡς καλὴν Herm. coll. Antiatt. p. 87, 33. 166 ῥῖψαί τ'] ῥῖψαί μ' Kirchhoff. λευκάδος] λισσάδος Hartung. 172 οὐ κννήσομαι] οὐκ ὠνήσομαι verissime Kirchhoff. 184 κλῶν Dindorf. 197 οὐ δεινόν] τί (vel ποῦ) δεινόν; ci. Nek. 198 μεγάλη γ'] μεγάλ' ἄν Nek. 202 γ' εὔ] γε Nek. 213 καὶ τᾶστρα] τὰ τ' ἄστρα Choerob. 244 πλήσωσι Kirchhoff. 260 ἐπεὶ γ' ἐλήφθη Heath. 265 μά θ'] τὰ θ' Herm. 288 φίλους ab interpolatore additum videtur. 299 εἰς λόγους ἀποστρέφῃ] εἴ σε λόγος ἔτι στρέφει tentabam. 315 καὶ λαλίστατος] παιπαλίστατος aut καὶ λαλητικὸς ci. Nek. 317 εὐμορφία ci. Nek. 329 βορέας] βοροῶς Nek. 342 ξενία τε] ξένια δὲ Nek. 343 τόνδε λέβητα γ'] λίβα λέβητά θ' ci. Nek. 344 ἀμφέψει ci. Nek. 361 et 362 non intellego. 370 δωμαίων ἐφεστίους ξενικούς] μάταν ἐφεστίους Herm. 376 οὐκ ἔργοις Kirchhoff. 382 χθόνα] στέγην Musgr. ἐπεὶ λεπαίαν τήνδ' ἐσῆλθομεν πέτραν ci. Nek. 393—395 versus nondum expediti. 404 ἐφῆκεν] ἔθηκεν ci. Nek. 439 sq. exhibui vitiosam librorum scripturam, nisi quod τόνδ' in τὸν δ' mutavi. καταφαγεῖν] κατ' αὖ φαγεῖν ci. Nek. σίφωνα dummodo verum sit, de gutture intellegam. 469 ὥσπερ ἐκ] ὥσπερ ἐκ ci. Nek. 490 καὶ κλ.] κατακλ. Herm., τάχα κλ. Fix. 499 δεμνίους τε ξανθόν] δεμνίοισι τ' ἄνθος Dindorf. 513 φίλος ὦν supplet Herm. 514 nondum emendatus. 527 χορῇ] χορῇν Nek. σωμ'] σ' ὦδ' ci. Nek. 534 πληγὰς ὁ κῶμος λοῖδορόν θ' ὕβριν φέρει Athenaeus. 535 μεθύωμεν] μεθύομεν ci. Nek. 541 ἀνθηρᾶς χλόης] ἀνθηρᾶ χλόη ci. Kirchhoff. 551 Vlixis erat, Sileno tribui praeunte Lentingio. 559 τ' ἔτι] τέ τι Nek. 564 οὐκ ἐμέ] οὐκέτι Nek. 566 λαβῶν] λάβον Nek. γέ μου] τέ μοι Dobr. 593 ὠθεῖ suspectum. 604 Ὀδυσσέως malim. 640 HMIX.] OΔ. Nek. 654 κινδυννευτέον Schol. Plat. p. 922, a, 1 ed. Turic. 667 οὐδὲν ὄντες corrupta. 668 τάσδ'] τῆσδ' Nek. 684 διαφεύγουσ' ἔτι ci. Nek. 685 ἐπεὶ τῆδ' εἵπας.] ἐπείγειν εἵπας; Nek. 686 περιάγουσίν σε] περιάγου, καῖσε, Nek. 688 ἀλλ' οὐκέτ' ἀλλὰ] ἄλλου μετάλλα Nek. ibidem οὔτος] οὔτις Florens Christianus, praetuli OTTIS propter ambiguitatem a choro quaesitam. 692 ὅπερ γ' ὁ φύσας μ' edebatur, sed μ' om. Flor. 1. 2. Par. G, hinc ὅπερ μ' ὁ φύσας scripsi. 694 διεπυρωσάμην] διεπυρώσαμεν Fix. 701 ὅπερ θέλω?

MEDEA.

Cf. Eurip. Medea ed. A. Kirchhoff, Berol. 1852. cuius editionis ubique rationem habui, ita tamen ut librariorum errores indubia medela ab aliis sublato praeterirem.

Argum. I. Dicaearcho tribuit codex Florentinus (2). Pag. 193, 2 καὶ habent libri. 3 πρὸς γάμον om. H. 11 κἀκεῖσε] κἀκεῖ H. 13 et 20 ἀφεψήσασα ci. Elmsl. 13 ποιήσεις] ἐποίησε H. 23 αὐτήν] οὕτως addunt libri. Argum. II. Pag. 194, 16 διὰ τὴν πρὸς Ἰάσονα] δυσφοροῦσα τὴν πρὸς Ἰάσονος H. 25 Μηδεία, Φιλοκτήτης, Δίκτυς, Θερισταῖς σατύροις recte Kirchhoff.

Vs. 5 ἀρίστων] ἀριστέων Porson. 11 et 12 sedem mutare iubet Schneidewin, mihi pro ἀνδάνουσα 11 λανθάνουσα scribendum videbatur. 13 τε] δὲ Stob. Fl. 74, 30. 37 νέον] κακόν al. 40 delevit Nck., 41 dudum alii. 42 ἢ] μὴ Nck. 58 Μηδείας] δεσποίνης al. 68 παλαιότεροι Chr. pat. 73 τόδε] τάδε Chr. pat. et v. l. A. 87 et 88 suspecti. 94 τινὰ] τινι ci. Elmsl. 111 ἔἔ αἰ αἰ A. 123 ἔμοιγ' οὖν] ἔμοι γοῦν Nck. 124 μέγας] num sanum? 135 βοᾶν] γόον Elmsl. 139 sq. φροῦδα τὰδ' ἥδη· ὁ μὲν] φροῦδα γὰρ ἥδη τὰδ'· ὁ μὲν Porsonus ope schol. h. l. et Aesch. Cho. 319 ed. Schütz. 149 ἰαχὰν] ἀχὰν Elmsl. 150 ἀπλάστου] ἀπλάτου Elmsl. 159 εὐνέταν] εὐνήταν Brunck, an εὐνάταν? post 167 excidisse versum paroemiacum ci. Witzschel. 182 σπεῦσον (al. σπεῦσαι) πρὶν τι κακῶσαι libri, quod verum puto; corruptus videtur v. 158, ubi Ζεὺς σοι σύνδικος ἔσται tentabam. 211 μύχιον Hermannus. 215 μέμφησθ' libri plerique, μέμφοισθ' A fortasse recte. 219 ἔνεστ' ἐν] ἔνεστιν schol. 228 γινώσκειν] γινώσκεις Musgr. 234 τοῦτ' ἄλγιον libri optimi. 246 ἥλικα] ἥλικας Havn. ut coniecerat Porsonus. 254 συνουσία] κοινωνία al. 259 τοσοῦτον οὖν] τοσοῦτον δέ A. Havn. al., f. τοσοῦτον ἄρα? 262 ἦν] ἦ Porsonus; sed fortasse versus spurius est. 279 ἐμπρόσωπος ἔκβασις ci. Nck. 290 ἀπηχθῆσθαι ci. Nck. 291 μέγα στένειν] μεταστένειν Nck. 317 βουλεύσης] βουλεύης Elmsl. 319 αὕτως libri, sicut Lex. Bekk. p. 412, 19. Suid. v. Ἄξιος λαβεῖν. 329 πόλις] πολὺ A. Havn. al. 355 sq. delevit Nck. 355 ἐφ'] ἐθ' Porson. 359 προξενίαν] πρὸς ξενίαν libri opt. 373 ἐφῆκεν ci. Nck. 398 σφιν] σφι Par. A. 433 διδύμους] διδύμας A. Havn. al. 443 σῶν δέ] τῶνδε libri. 445 ἀνέστη A, alii ἐπέστη vel ἐπέστα vel μετέστη. 491 συγγνώστ' αὖν]

συγγνωστὸν libri opt. 500 μέν τι] μέν τί Elmsl. 511 πιστὸν] σεμνὸν Alexander rhetor, σεπτὸν Nck. 565 τί δέϊ] μέλει ci. Elmsl. 567 τὰ ξῶντ'] τὰ γ' ὄντ' ci. Nck. 573 χρῆν γάρ] χρῆν ἄρ' Porson. 588 σὺ A. Par. A, μοι Pal. Flor. 2, alii alia. 591 εἶχεν] εἶργεν ci. Nck. 643 δῶμα] δώματα Nck. 647 οἰκτροτάτων] οἰκτρότατον Nck. 654 μύθων] μῦθον Nck. 656 ὥκτειρεν] ὥκτισεν Musgr., sed fortasse δυσπέρατον 646 corruptum est. 695 ἦ που libri et Chr. pat. 144, ἦ γάρ Elmsl., οὐ που probabiliter Witzschel. 703 μέν om. libri fere omnes, συγγνωστὰ κάρτ' ἄρ' ἦν σε ci. Kirchhoff. 708 καρτερεῖν] καρδιά v. l. 715 θάνοις] θάλοις Nck. 737 ἐνώμοτος libri plerique, utrumque agnoscunt scholia. 738 ἀπικηρυκεύματα schol. 739 τάχ'] οὐκ libri. locus nondum sanatus. verum excidisse ci. Kirchhoff proponens ἀπικηρυκεύματα [δέξαι' ἂν εὐφρων, τοῖς δ' ἐμοῖσι ῥήμασιν] οὐκ ἂν πίθοιο. 741 ἔλεξας] ἔθηκας Nck. ὧ γύναι] ἐν λόγοις v. l. quod fortasse verum. 746 πατέρα — πατρός] Ἥλιου θ' ἄγνὸν σέβας v. l. 748 delevit Nck. 751 ζῶν] γῆς al. 752 Γαῖαν λαμπρόν θ'] Γῆν καὶ λαμπρόν Kirchhoff. alii scripserunt ὀμνυμι Γαῖαν Ἥλιου θ' ἄγνὸν σέβας (cf. 746). 753 ἐμμένειν] ἐμμενεῖν Schaefer. 778 sq. damnavit Porson, 785 Valek., 786 Elmsl. 790 μέντοι] μέν σοι Chr. pat. 837. 818 γένοιό γ'] γένοι' libri opt., γένοι' ἂν Nck. 824—845 nostris subsidiis restitui vix possunt. 835 ῥοαῖς libri. 840 ἡδυπνόους om. libri optimi. 854 πάντες] πάντη σ' Nck. 857 τέκνων] τέκνον Nck. 867 οὐκ ἂν] οὐ τὰν Herm. 914 ἀφροντιστῶν ci. Nck. 922 αὐτή libri. 923 versus suspectus. 930 ἐξηύχουν libri fere omnes. 943 τήνδε μὴ φεύγειν χθόνα fortasse errore librariorum ex 940 repetita sunt. 966 sq. κεῖνα — τυραννεῖ verba suspecta. 970 τ'] δ' Elmsl. 981 λαβοῦσα delendum esse ci. Nck. 987 sq. deteriorum librorum interpolatio a criticis in maius aucta locum sui dissimilem effecerat. pro ἄταν 987 f. Ἄιδαν leg. 1005 ἕα Medae male tribuitur, paedagogo ascripsit Kirchhoff. 1045 suspectus. 1056 ποτ'] al. σύγ' : fortasse neutrum genuinum. μὴ δῆτα, θυμὲ θυμέ, μὴ ἐργάσῃ τάδε ci. Nck. 1058 σε] με A. 1068 damnavit Pierson. 1077 οἶα τε πρὸς libri opt., οἶά τε πρὸς Nck. 1078 δοῶν μέλλω] τολμήσω libri plerique. 1088 μίαν addidit Elmsl. 1089 κούκ] οὐκ Reisk. 1094 ἀπειροσύναν libri plerique. 1099 ὁρῶ] ἀθρῶ Nck. 1101 θρέψωσι libri. 1107 βίοντον] βιοτήν Lenting. 1116 φίλαι] an πάλαι? 1119 τ'] δ' Herm.

1132 τοῖς γε] τοῖσι ci. Nek. 1156 ὥς] ὥς τ' libri plerique. 1159 ἡμπέσχετο] ἡμπίσχετο Portus. 1181 ἀνέλκων et ἐκπλεθρον libri. versus nondum sanatus. 1189 λευκὴν] λεπτὴν libri fere omnes, ἄρδην ci. Nek. 1201 φαρμάκων] φαρμάκοις libri pauci. 1205 παρελθὼν ci. Nek. 1223 ἀντιστροφὴν Chr. pat. 800 et fortasse schol. 1227 μωρίαν] ζημίαν libri aut omnes aut optimi, Chr. pat. Etym. Gud. p. 231, 33. 1232 ξυνάψειν libri deteriores fortasse recte. 1259 sq. φονίαν τάλαιναν τ'] τάλαιναν φονίαν τ' Seidler. φονᾶν (pro φονίαν) ci. Nek. 1262 ἄρα μάταν] μάταν ἄρα Musgr. 1265 δειλαία] δέιλαια Nek. 1272 delevit Nek. 1273—1281 et 1282—1292 sibi respondent: post 1274 duos versus excidisse ci. Schoenius, mihi 1284 sq. suspecti sunt. 1280 ὦν] ὄν Seidler. 1283 γυναιῖν] γυναικῶν libri opt. 1290 δῆτ'] δήποτ' libri. 1295 τοῖσδέ γ'] τοῖσιν Pal. Flor. 2, τοισίδ' Canter. 1302 ἔρξουσιν] ἔρξουσιν A et al. 1303 ἐκσῶσαι] ἐκσώσων A et al. 1304 sq. malim abesse. 1317 τάσδε — πύλας] τούσδε — λόγους v. l. fuisse videtur. 1322 ἔρυμα] ῥῦμα ci. Nek. 1333 σὸν] ἐὸν Nek. 1356 οὐδ' — οὐδ' Elmsl., videtur gravior corruptela. 1357 ἀνατὶ] ἄτιμον al. 1367 σφε κῆξ. Pal. Flor. 2. 1371 οἴμοι] ὦμοι A. Havn., ὦμοι Burges. 1386—88 suspecti. 1398 ἔκτανες] ἔκανες Elmsl. 1405 Ζεῦ, τὰδ' ἀκούεις] ὦ Ζεῦ, τὰδ' ὀρᾶς v. l. 1409 κἀπιθοάζω] κἀπιθεάζω Blomfield.

Schol. Ar. Ach. 119: ἔστι γὰρ ἐν τῇ Μηδείᾳ Εὐριπίδου.
ὦ θερμόβουλον σπλάγχχνον.

ORESTES.

Post primam ὑπόθεσιν (p. 243, 25 hui. edit.) tres codices Veneti aliud addunt argumentum, quod in codice Havn. 3549 post πάντες φαῦλοι ἦσαν (p. 244, 20 hui. edit.) legitur: Ὀρέστης διὰ τὴν τῆς μητρὸς σφαγὴν ἅμα καὶ ὑπὸ τῶν Ἑριννύων δειματούμενος καὶ ὑπὸ τῶν Ἀργείων κατακριθεὶς θανάτῳ, μέλλων φονεῦν Ἑλένην καὶ Ἑρμιόνην, ἀνθ' ὧν Μενέλαος παρὼν οὐκ ἐβοήθησε, διεκωλύθη ὑπὸ Ἀπόλλωνος. παρ' οὐδενὶ κεῖται ἡ μυθοποιία.

Titulus huius argumenti non idem est, simpliciter ἄλλως Venetorum codex optimus 471, ceterorum alter: ὑπόθεσις Ὀρέστου Ἀριστοφάνους γραμματικοῦ, alter: Ἀριστοφάνους γραμματικοῦ ὑπόθεσις, de Havn. non constat. Aristophani recte tri-

bui statuit Kirchhoffius, qui praecedens argumentum (p. 243, 1—25 huius edit.) Dicaeareho vindicat. Extrema verba παρ' οὐ-
δενι — μυθοποιία om. Havn.

Pag. 243, 12 lacunam codd. multi sic explent: ἐπαγγελιά-
μενος (al. -οι) αὐτὸν εἰς βίον προὔεσθαι. 244, 11 ἂν addidit Nck.
20 φαῦλοι ἦσαν] φαῦλοί εἰσιν Nck. 29 πολλὰ delendum ci. Nck.
245, 10 γοῦν] δ' οὖν ci. Nck. 32 Ναυπλιεῖω ci. Nck. 247, 12
οὐρανούς] οὐρανὸν an οὐρανίους?

Vs. 13 ἔριν] ἔρις al. teste schol. 24 τ'] δ' Elmsl. 30 οὐχ
ἅπαντος ci. Matth. 35 ὁ δὲ] οὐδὲ al., ὅδε Reisk. πεσὼν] πεσών
δ' Reisk., πεσών τ' Nck. 84 σμικρὰς ῥοπῆς Hartung. 86 σὺ
δ' εἶ] σὺ δ' ἡ al. 87 ἦκετον] ἦκεις Eustathius, ἦκοντ' ci. Nck.
93 ὥς ἀσχολοῦσα ci. Nck. 100 ὁρθῶς ἐλέγχεις Hartung. 103 τ']
γ' Matth. 111 ubi pro πέμψομαι alii πέμψομέν, damnavit Her-
mannus. 128 ἀπέθριξεν codd. haud pauci cum schol. Aeschyli
et Hesychio. 141 sq. κτυπεῖτε (al. ψοφεῖτε) μηδ' ἔστω κτύπος
ἄπο πρόβατ'] κτυπεῖτ' ἀποπρόβατ' Dionysius Hal. omissis μηδ'
ἔστω κτύπος, quae verba ex v. 137 repetierunt librarii. 147
ἀτρεμαῖαν] ἀτρεμαῖον Ven. 471, ut coniecerat Herm. 154 τίνα
τύχαν εἶπω verba suspecta. 159 φερομένω] δρεπομένω ci. Nck.
χαρίν] χαράν codd. 164 ἄρ' ἐδίκασε] ἀπεδίκασε Herm. 171
ἀνά] ἄρα Nck. 171 sq. πόδα σὸν εἰλίξεις μεθεμένα κτύπου] με-
θεμένα κτύπου πόδα σὸν εἰλίξεις Porson. 174—181 (οἰχόμεθα)
choro tribuunt libri, correxit Seidler. 188 εἵπας H et alii (al.
εἶπω vel εἵποις), ἔμπας Nck. 194 καλῶς δ' οὐ choro continua-
bantur, correxit Seidler. 229 δέμνια Mosq. d et Stobaeus. 249
εἰς τὸν ψόγον] εἰς ψόγον vel τ' εἰς ψόγον al., γὰρ εἰς ψόγον Her-
mannus. 251 σύ νυν] σύ τοι Plut. et Orion Schneidew. p. 42, 26.
257 suspectus. 269 ἐξαμύνασθαι libri plerique, ἐξαμείβεσθαι
Havn. 277 πλευμόνων ci. Nck. 284 ἐπένευσας] ἦνεσας ci.
Nck. 298 ἴσχναινε] ἴσχνανε vel ἴσχναινε al. 303 ἐπὶ χοροῖ βάλει]
ἐπιβαλοῦ χοροῖ Herm. 319 ἐλάχετ' ἐν] ἐλάχετε codd. quidam teste
Porsono, ἐλλάχετε Nck. 322 ἀμπάλεσθ' al., ἀμπολεῖσθ' ci. Nck.
ibidem αἰμάτων et mox δίκας Iulianus p. 336, B. 327 φεῦ κα-
κῶν] φεῦ alii, κακῶν φεῦ Nck. corruptum φοιταλέου, cuius loco
requiritur spondeus. 328 ὦ τάλας] ὁ τάλας H. et al., f. σύγε τά-
λας? 330 ἔλακε δεξάμενος ἔλακε γαπέδων ci. Nck. 331 μυχοῖ]
μυχοῖ γὰς libri fere omnes. 336 συμβαλεῖ Porson. 349 πολλῇ
δ' ἄβρ.] πολλῇ ἄβρ. Dio Chr.; tentabam: καὶ μὴν βασιλεὺς ὧδ'

ἀβροσύνη Μενέλαος ἄναξ πολλῇ στείχει. 365 τάδ'] τόδ' al.
 367 πανυστάτοις] ἀρκυστάτοις Nck. 374 παιδὸς] θυγατρὸς H.
 et al. 383 ἀφύλλους Reiskius. 384 αὐτὸς] αὐτὸν Schaefer.
 391 παραλόγον] παρὰ λόγον Nck. 395 τί χοῖμα πάσχεις] Ὀρέ-
 στα τλήμων Stob. ac similiter Clem. Alex. 418 εἰδὼν οἱ θεοὶ] εἰσὶ
 θεοὶ libri plerique, f. εἰσὶ δὴ θεοὶ leg. 424 ἔφους κακὸς (vel εἰ-
 πῶν κακῶς) libri, ἔφυν φίλος Brunckius, num recte dubito. 439
 τί δρωῶντες; ἢ τι καὶ σαφῶς εἰπεῖν ἔχεις; ita alios legisse docent
 scholia, atque εἰπεῖν ἔχεις (pro ἔχεις εἰπεῖν) codd. optimi. 447
 πρὸς] εἰς al. 461 ἐξεργασμένοις] ἡμαρτημένοις codd. multi.
 475 χρόνιος Ven. 471. 485 ἐν βαρβάροις] ἀφ' Ἑλλάδος v. l.
 quam sequitur auctor epistolarum Apollon. Tyan. p. 49, 8 ed.
 Kayser. 491 πρὸς τόνδ' ἀγὼν τίς σοφίας ἦκει πέρι] πρὸς τόνδε
 σοφίας τις ἂν ἀγὼν ἦκοι πέρι Porsonus, πρὸς τόνδ' ἀγὼν ἂν τί
 σοφίας εἴη πέρι Nck., cui coniecturae favet Greg. Cor. Rhett.
 vol. VII. p. 1272. 498 ὑπὲρ] ὑπαι Herm. 500 χοῖν] χοῖν δ'
 H. et al. 506 γένετο] ἐγένετο alii codd., γέγονε Nck. 516 φό-
 νου] φόνω al. 535 ἐναντία τοῦτον ὠφελεῖν H. et al., f. ἐναντα
 τοῦτον ὠφ. 536 sq. delevit Brunckius; propter 564 lacunam
 indicavi. 546 ἐγὼ δ'] ἐγῶδ' Herm. 558 ἰδίοισιν suspectum.
 593 versus admodum ieiunus, item 596 suspectus est. 599 ὁ de-
 let Porson. 613 οὐκ ἄκουσαν] οὐχ ἔκουσαν Nck. 632 ποῖ] τῷ
 ci. Nck. 648 εἰς] ὑπ' al. 654 ἀπολάβης libri plerique. 656 sq.
 σωτήριος στάς, ἡμέραν ἡμῶν ὑπερ μίαν πονήσας ci. Nck.
 662—64 versus suspecti, genuina excidisse suspicor. 686 vel-
 lem totus versus abesset. Herm. 696 ὅταν γὰρ ὀργῇ δῆμος εἰς
 θυμὸν πέσῃ Stob. 700 ἐκπνεύσειεν· ὅταν libri fere omnes, ἐκ-
 πνεύσειεν· ἦν ci. Nck. 701 ὅσον θέλεις] ὅσ' ἂν θέλῃς ci. Nck.
 750 ἀρίστας] ἀρίστους Tryphon Rhett. vol. VIII. p. 758, ubi σπεί-
 ρας cum nonnullis Eur. libris. 771 προσήκομεν] προσήκον ἐμὲ
 ci. Nck. 775 ἔδρασας] ἐπραξας H. et al. 782 τὸ προῖμα γ'] τὸ
 προῖμα' vel τὸ γε προῖμα' alii. τὸ δοκεῖν ut videtur optimi libri,
 τὸ δὲ δοκεῖν Barnes. mihi versus suspectus est. 790 αὐ' λέγεις]
 ἀγγελεῖς al. 812 χρυσέας] χρυσείας Porson. 813 corruptus.
 817 δι' αἵματος] διαίματος ci. Nck. 820 τέμνουν] τεμεῖν Porson.
 828 σάν] σὴν al., σὺ Nck. 831—833 mesodum, 834—838 ==
 839—843 strophicum carmen esse statuit Hermannus. 834 οἶον]
 οἶον οἶον al. 838 παῖς Ἀγαμεμνόνειος Seidler. 856 damnat
 Brunck. 876 πόλιν] ὄχλον v. l. 891 καλοῖς] καλῶς Valek., κα-

λούς praecunte Hartungio ci. Nck. 901 ἐπερρόθησαν δ'] λαοὶ δ' ἐπερρόθησαν al. codd., quod probans Porsonus λέγοι delendum esse ci. 906 αὐτοὺς] ἀστοὺς Valck. 913 delet Herm., equidem neque hunc neque praegressum versum intellego. 921 ξυνετὸς — θέλων] ξυνετῶς — σθένων ci. Nck. 922 ἀνεπίληπτον] ἀνεπίληκτον libri plerique et optimi, ἀνεπίληπτον tamen tueri videtur Hesychius. 933 Δαναῖδαι] Δ. δὲ non debebat edi libris et Eustathio invitis. 936 οὐ] ἡ ci. Nck. 938 χρεῶν] πρέπον ci. Nck. 962 τὰν addidit Barnes. 975 ἐν πολίταις] ἐν κακοῖς πολίταις Herm.; mihi neque ἐν πολίταις placet nec sanum videtur quod 964 legitur καλλίπαις θεά. 982 αἰωρήμασι videtur delendum. 984 ἀναβοάσσωμαι Havn., ἀναβοάσσωμαι schol. Ar. Plut. 639. unde θρήνους ἴν' ἀναβοάσσωμαι coniecerim. 985 γέροντι πατρὶ] πατρὶ γέροντι al. 1004 ἀν' μουνόπωλον leg.? 1007 αἰὲ addidit Herm. 1016 post κῶλον libri fere omnes Ὀρέστου addunt, recte opinor: tentabam ἰσάδελφος ἀνὴρ, | ἰθυνῶν νοσερὸν κῶλον Ὀρέστου. 1019 νερτέρων] νερτέρου libri optimi. 1025 sq. σιωπῶ, φέγγος — τοῖς ταλαιπώροις μετόν; Herm.; mihi magis placeret: φέγγος εἰ θεοῦ τόδε | οὐκ ἔσθ' ἔθ' ἡμῖν τοῖς ταλ. ὀρᾶν; 1027 ὑπ'] ἀπ' libri multi fortasse recte. 1032 ὑπόμνησιν] ὑπομνήσει Musgr. 1031 codicum vestigiis (cf. Herm.) alia indicatur lectio: μὴ πρὸς θεῶν με περιβάλλης ἀνανδρίᾳ. 1038 τὸν] τὴν Herm. δόμον (pro γόνον) Aristophanes Byz. 1049 ἐμόν] ἐμοί ci. Nck. 1051 ἀμφί] ἀμφοῖν ci. Lobeck. versus Euripide vix dignus. 1056 θανεῖν] ἀν' θάνης? 1064 τολμήμασι] βουλευμάσι al. 1073 σὴν] σὺ v. l. codicis Augustani. 1079 ἑταιρίαν codd. plerique. 1085 ἡ πολὺ] ἡ πον Ven. 471 et al. 1092 ἧς λέχος ἐπήνεσα] ἧς γε λέχος ἐπήνεσα Pors., ἧς λέχος σύγ' ἦνεσας vel ἧς σὺ λέχος ἐφήμισας ci. Nck. 1108 ἀποσφραγίζεται] ἀπασφραγίζεται al. teste schol. 1109 ἀλλ' οὐκ ἐθ'] οὐκ οἶδεν ci. Nck. 1112 οἴους ἐνόπτρων] ὅσους κατόπτρων Aelianus. 1145 deletit Nck. 1148 μέλαν in suspicionem vocavit Herm., item δόρυ et ἔτι 1146 sq. offensionem sunt. 1151 sq. uncis notavit Nck. 1160 νῦν τ' Par. A. Flor. 2 al., pauci νῦν δ', plerique νῦν. 1170 ἐλεύθερος ci. Nck. 1178 τρίτων] τρίτου vel τρίτον al. 1180 συνετόν γ'] συνετόν codices multi. 1181 ἔχε] ἔχων ci. Nck. 1187 τάφω] al. τάφου vel τάφον, quorum nihil satisfacit. 1200 παρῇ] ὁυῇ vel πνέῃ ci. Nck. 1224 suspectus. 1236 ἐγὼ δ' ἐπεβούλευσα] ἐγὼ δ' ἐπένευσα Havn., καὶ γὰρ δ' ἐπεκέλευσα

schol., ἐγὼ δ' ἐπενεκέλευσα Nek. 1238 ῥύσαι] ῥύσῃ vel ῥύσει al., quod admitti potest, modo τέκνα; scribas. 1245 damnat Nek. 1247 Πελασγὸν] an παλαιὸν leg.? 1265 debetur Electrae: quomodo corrigam non habeo. 1268 προσέρχεται] πρόσχε Seidler. 1284 μέλλεθ' οἱ] μέλλετ' ὦ al. 1302 sq. θείνετε ci πέμπετε multi libri ignorant. tentabam: καίνετε καίνετ', ὀρούετε δίπτυχα | δίστομα φάσγαν' ἔσω χροὸς ἰέμενοι. ubi ἔσω χροὸς pro ἐκ χροὸς praeivit Herm. 1307 δορὶ — ὄθι] δόρει — ὀπόθι Herm. 1319 ἔξω] δέξω Havn. 1323 με] μοι libri opt. 1329 ἐμούς] ἐμοῦ al. 1376 πολὶον] πόλιον ci. Nek. 1383 θ' addidit Nek. 1393 et 1400 ἀνθέκαστα ci. Nek. 1398 γᾶν] γαῖαν H. et al. 1404 οἶος — δόλιος lectore non monito om. Herm. 1437 ὦδ' add. Herm. 1443 ἵνα δαῖς λόγον ἐμοῦ ci. Nek. 1462 κατθανεῖ, κακός] κατθανεῖ κακῶς ci. Nek. 1472 λαιμῶν] λαιμὸν Par. A. Havn. al. 1484 ὅσον] ὅσον ἐς ci. Nek. 1485 ἐγενόμεθ' libri plerique. 1486 φυγὰς ἢ νέκυς ὦν ci. Nek. 1494 παστάδων] θαλάμων Herm. 1502 Τροίας ἔλαβ' ἔλαβε Herm. 1527 μῶρος εἰ δοκεῖς] μῶρος εἰ δοκῶν Havn. 1534 θέλει] θέλῃ H. et al. pro καμὲ fort. καὶ με leg. 1596 graviter corruptus aut spurius. 1607 μ' alii libri post γὰρ addunt, alii (quod probabilius puto) post ἀνδάνουσι. item scholia μ' invenerunt. 1608 θυγατρὸς ἀπαρεῖς φάσγανον; ci. Nek. 1609 ἀλλὰ κτ.] ἀποκτενεῖς ci. Nek. 1614 σοὶ] σὲ Morellus, σ' εἰς ci. Nek. 1615 πλὴν γ'] πλὴν Havn. 1631 delendus videtur. 1647 καλεῖν] ποτε ci. Herm. 1648 δ'] τ' vel γ' al. unde ἔνθεν δ' ἐπελθὼν ci. Nek. 1684 Ζηνὸς] Διὸς libri optimi cum Tzetz. in Lycophr., Δίοις Nek.

RHESVS.

Argumentum exhibui fere ad fidem codicis A (cf. Dindorfii annot. Oxon. p. 564 sq.), quicum Harleianum 5743 plerisque in rebus consentire postea didici e disputatione Kirchhoffii Philol. vol. VII. p. 559—564.

Pag. 307, 2 πυρκαῖεν] δάλλης πυρὰν καίεν Harl., f. δέλλης πυρὰ καίεν leg. 6 καὶ add. Havn., ignorant A et Harl.; complura excidisse monuit Kirchhoff. 9 κοίτην ἐλθόντες] ita Havn., κοίτην A, κατηντηκότες σιγηνὴν Harl. quod verum videtur. 13 τούτων] τούτοις probabiliter Harl. 15 πολέμου] πολέμιον ci. Nek., πολέμιων Kirehh. 17 ἐχωρίσθησαν] ἀνεχώ-

ξησαν ci. Nek. 21 φησιν (ita enim pro φασίν correxit Kirchh.) post αὐτοῦ addit Harl. equidem οἴεται τοῦ supplebam. 308, 2 κοιμίζουσα Harl. 6 ἔσεσθαι] ἔσεσθαι τὴν στρατείαν Harl. τῶν κοινῶν φανερωθ' θανάτῳ] τῷ κοινῷ τοῖς ἐπιφανῶν θανάτῳ Harl., quod τοῖς in τῶν mutato recte probavit Kirchhoff. 10 ὑποφαίνει] ὑποφαίνειν Valek. 13 δὲ] δὲ ἐν αὐτῷ A. Havn. δικαίαν] Δικαίαρχος Nek. 21 τέκος om. A, τέκνον in versu simillimo Eur. Alc. 1136. 25 βιαία] βιαίας al., βιαίως Hermannus Opusc. 3. p. 270. 26 οὐδέν ἐστιν ἄλγιον βάρος] οὐκ ἔνεστι βάρος A. Havn., οὐκ ἔνεστιν ἀλγέων ἄκος ci. Kirchhoff. 309, 5 κατασκοπεύοντες ci. Nek. 6 τοῖς Ἑλλήσι om. A. 8 ὡς — Δόλωνος om. A et al.

Vs. 11 ἦ] ἦ Valek. 17 sq. μῶν τις λόχος ἐκ νυκτῶν ἦκει; τί σὺ γὰρ ci. Nek. 19 στρατιάν, εἰ μὴ τιν' ἔχων] στρατιάν; τίν' ἔχων Nek. 31 μόναρχοι] μόραρχοι vel μοραγοί ci. Nek. 37 sq. φυλακὰς — στρατιάν delet Nek. praeecunte Dobraeo. 41 πυραΐθει] πύρ' αἶθει Hartung (item πύρ' αἶθειν pro πυραΐθειν 78 et 824). 51 τινα μέμψιν εἰς ἑμ'] τιν' ἐς ἑμὲ μέμψιν Lindemann. 52 ἦλθες] ἦκεις Chr. pat. 1870. 2299. 2390. 82 ὦδέ γ'] ὦδ' A, ὦδε δ' Harl. 86 φίλοις] ἴσως Chr. pat. 99. 1135. 118 ἦν ἄρα] ἦ ναρά ci. Nek. 130 γνώμην ἀναξ] προθυμίαν Flor. A, γνώμην ἐγώ Chr. pat. 1916. cf. 2231. 148 ὅταν] ὅς, ἄν ci. Nek. 160 τόσως ἔθηκας] τοσοῦτ' ἔθ. Ald., τόσῳ τέθεικας Elmsl. 162 προσκείμενον] προκείμενον Chr. pat. 1965. 164 λέγω] λέγεις ci. Nek., quod Chr. pat. 1620. 1968 suadet. 165 ἐμῆς τυραννίδος] ἐμὴν τυραννίδα Nek. 175 Οἰλέως] Ἰλέως A, Ἡλέως H, Ἰλεόν Flor. A. 187 αὐτοὺς] αὐτὰς A, αὐτὸς ci. Nek. 197 πόνος δ'] πόνος ὅδ' Nek. 206 σοφοῦ] χρηστοῦ Men. monost. 546. 217 φηλητῶν] φιλητῶν A. H. Flor. 10. Hesychius. 237 τότ' ἐπ'] ποτ' ἐπ' A, ut coniecerat Lachmannus. 252 ποτὶ Μυσῶν corrupta. 262 ἐπὶ γᾶν] ἐς γᾶν Dindorf. 274 μάχας] αἰχμὰς ci. Meinekius, μάχαι Vater. 285 νυκτὸς] μορφῇ Chr. pat. 2096. 2452, quod ὄρφνη esse ci. Vater. 296 corruptus. 334 et 335 post 338 transposuit Nek. 334 nuntio tribuebatur, choro ascripsit Hermannus, cui favet Harl. 336—338 choro tribuebantur, correxit Herm. 336 ὅδ' οὐν] ὁ δ' οὖν Nek. 340 ὁ χροιστευχῆς δ'] δ' om. A. H. οὐνεκ' (οὖν ἐκ A) ἀγγέλου λόγων] οὖν ὅδ' ἀγγέλου λόγῳ Nek. 355 σύ μοι] ἦκεις ci. Nek. 359 εἰπεῖν] ἰδεῖν A. H. Flor. A, unde ἄδειν probabiliter Bothius. 368 σᾶ] τεᾶ ci. Nek. 373 κώλοισ

(πώλους Reisk.) ἐρεθίζων om. A. Havn. Flor. A. 10. 401 et 402 τίς γάρ σε — πόλει] τίνας γὰρ οὐκ ἔστειλα κήρυκας πάλαι Chr. pat. 1719. 423 τέμνω ci. Nek. 425 πρὸς ἥπαρ corrupta. 432 ἀπείργε] ἀπῆγε A. H. Flor. A, f. ἀπῆργε leg.? 438 τὰς ἐμὰς corrupta, ἐλκύσας ci. Musgravius. 452 sq. ἔξω — πέρσας] ἦκω — πέρσων tentabat Nek. 460 πρὶν] πρὶν τιν' Nek. 462 Ἀχιλλεύς] Ἀχιλλεύς Nek. 464 τόδ'] an τόδ' ἔτ'? 465 ὅπως] ὅτω Nek. 466 χειρὸς ἄποινα σᾶ φέροις λόγγα Hartung. 480 ἐλαύνομαι Hartung. 500 καὶ] εἰς Herm. 536 πρὸς δόμων] προδρομῶν Musgr. num recte? 539 υἱόν] ὄν Herm. 546 καὶ μὴν αἰώ verba corrupta; desideratur substantivum, unde Σιμόεντος genetivus pendeat. 550 μελοποιῶ ἀθρονὶς μερίμνα ci. Nek. ac μερίμνα praebet Harl. 552 ποιμνῆα (coll. Etym. M. p. 678, 54) Hermannus. 561 μοι addunt Havn. Flor. A. Harl. ac sine dubio A, de quo tacetur. tentabam τύχαν οἷμοι φοβερόν. 594 τύχη (pro τυχεῖν) Havn. (quid A? nescitur), f. leg. εὐδοίη τύχη. 627 ὑμᾶς ci. Musgr. 633 κακτανόντα ci. Nek. 654 δ' additum e Flor. 10, rectius fortasse omittetur. 658 εἰδῶς] ἰδὼν Chr. pat. 1876. 670 ὑμῖν Valck. 683 damnavit Dindorf. 685 sq. versus corruptissimos intactos reliqui. 691 ἐκ (vel ἐν) νυκτῶν] ἐν νύχῳ Nek. 703 εὐχεται] ἐπεύχεται Herm., videtur aliud quid latere. 705 τεκμαίρεσθαι, τί μή;] τί μή om. A. Havn., τεκμαίρεσθαι δοκεῖ Nek. 706 δοκεῖς] δοκεῖ Flor. 2. 716 κάρα] κράτα A. H. πολυπινῇ libri fere omnes. 732 συμφορὰ βαρεῖα Θρηκῶν συμμάχων. XO. τίς ὁ στένων; edebatur, correxit Herm. 734 ἐσιδὼν] ἰδὼν A. Havn., f. εἰδῶς? 738 Τρώων Herm. 766 πληκτρά] κληῖθρα ci. Musgr. 778 οἷδ'] οὐδ' A. H. 784 τρίχα om. A. H. recte opinor. 785 ἔρεγκον] ἔρρεγκον Nek. 791 δυσθνήσκοντος] δυσθνητοῦντος Nek. 794 νεῖραν] νεῖραν Bothius. 796 πληγῆς] πληγῇ H. et Chr. pat. 1215, fort. πληγῇ praeferendum. 808 πῶς ᾧ] πῶς οἱ Nek. 821 μέγας ἐμοὶ μέγας ᾧ] μέγα σύ μοι μέγ' ᾧ Nek. πολιοῦχον] πολίοχον Vater. sequentia non expedio. 826 ἔβρις' A. H., ἔβριξα Flor. 2, ἔβριξεν Herm. 827 οὐ μὰ τὰς Σιμοεντίδας] οὐ τὰς Σιμοεντιάδας Herm. 829 ἔγωγε πάντων] strophae responderet πάντων πάντη ἔγωγε. 830 παρὰ καιρόν] παρὰκαιρον Vater. 844 τίς δ'] τίς ἄν ci. Nek. 859 ἄν ἀρχοίμεθα] ἄρ' ἀρχοίμ. codex Ambrosianus, ἄρ' ἀρχώμεσθα Nek. 870 ὄχλος] ἄλις ci. Nek. 878 οὕτως] οὕτως θ' ci. Valck. 903 φιλία delendum suspicor. 905 fortasse ἔχοντι λύπη, τὸν

σὸν praestat. 912 σὲ om. Flor. 2. ὑπὸ τ' Ἰλίου ὤλεσε μὲν τὰ Τροίας | φίλτατα ci. Herm., ὑπὸ τ' Ἰλίου ὤλεσεν σέ τ' οἰκτρῶς, φίλτατε Valer. 914 ἀνδρῶν delendum suspicor. 924 κείνῳ] κλεινῷ Bothius, δεινῷ Valek. 928 βροτείαν] βρότειον Elmsl., βρότειαν Nck. 950 στρατηλάτης] τροχηλάτης Valek. 952 οὐδὲ μάντεων ci. Nck. ac μάντεων H (in A v. 899 sqq. desunt). 961 ἀποίχεται ci. Nck. 973 σεμνὸς] σεπτὸς Chr. pal. 1776. 987 ἄνωγε· πληροῦτ' edebatur, sed πληροῦντ' Havn.

TROADES.

De emendanda hac fabula praeclare meritis est A. Kirchhoff, cuius editio prodiit Berolini 1852.

Vs. 17 ἐρκίου libri constanter. 40 λάθρα] οἰκτρὰ Harl. Pal., item γρ. οἰκτρὰ A. certe λάθρα falsum. 68 τύχης A, τύχοις Havn., τύχη Pal. Harl. Cyrillus c. Iul. p. 175, a. 70 εἴλεε Harl. Pal. Cyrillus, εἴλε A. Havn. 71 κοῦδέν] κοῦδέν γ' editi. cum libris deterioribus, κοῦδὲ ἔν Nck. 75 δύστηνον] δύσνοστον Pal. Harl. 85 εὖ σέβειν Valek. videtur aut h. l. εὐσεβεῖν aut σέβειν 86 vitiosum esse. 97 ὥλεθ' ὕστερον] ἀνταπώλετο ci. Nck. 98 κεφαλά A. Havn. schol. 108 συστελλομένων] συστελλόμενος Victorius. 111 τί δὲ μὴ θρ. A. Havn., τί με θρ. ci. Nck. 113 κλισίας A, κλίσιας Havn., κλίσιος Pal. Harl. 119 ἐπὶ τοὺς] ἐπιούσ' ci. Musgr. 119 et 120 sedem mutare iubet Bernhardy. 123 ἱερὰν] ἱερὸν A. H. 122—137 stropham, 138—152 antistrophum esse iussit Seidler. 133 δύσκειαν] δυσκλείαν Nck. 139 ἐφ' ἑδρους Hermannus. 141 ξυρήκει delet Seidler, ξυρία ci. Herm., ξυρικῇ Kirchhoff. mox πενθήρη Pal. Harl. schol. 144 κόραι et 148 μολπὰν delet Kirchhoff. 159 fortasse ᾧ delendum. 161 τλάμων] μελέα H. (et fortasse A), delendum esse ci. Kirchhoff. 171 ἔξω πέμψητ' ci. Nck. 177 ἐπακουσομένην A. H., ἐκπευσομένην ci. Nck. 188 μ' ἄξει H. (et fortasse A), ἥξει Pal. Harl. pro ἡ f. εἰς leg. 194 τὰν παρὰ τε προθύροις] τὰν πὰρ προθύροις ci. Nck. 206 πρόσπολος] πρόπολος Kirchhoff. 225 ναῦτα vel ναῦται libri, ναίοιν Dindorf, ναύταις Victor. vitii medela nondum reperta. 235 οἷσθ' αὖ μ'] οἷσθ' (i. e. οἷσθας) Harl. 239 τόδε, φίλαι γυναῖκες, φόβος ἦν πάλαι ci. Nck. 247 alterum τίς add. Nck. 257 κληῖδας ἀπὸ] κλειῖδας ἀπὸ A. H., unde κλεῖδας ἀπὸ Nck. 260 τί δ' ὃ] τί δὲ τὸ vel τί δὲ τὸν libri. 261 ποῦ

μοι et 263 ταύταν delet Dindorf. 271 χαλκεομήτορος A. H., χαλ-
 κεομήτορος Kirchhoff. 275 τριβάμονος A. H. Flor. 285 sq.
 ἐνθάδ' ἀντίπαλ' αὐθις] ἐνθάδε κάμπαλιν οὐρις' ci. Nck. 287
 πάντων] πάντως Herm. 310 ἰδὸν ἰδού] ἰὸν ἰού Musgr. strophae
 et antistrophī initium nostris subsidiis nemo facile restituerit.
 325 αἰθέριον] ἄεριον in re simili v. 546, rectius opinor. 332
 ἀναγε πόδα σὸν] ἀναγέλασον A. H. Flor., ἀναγ' ἔλίσσ' et in stro-
 pha (315 sq.) ἐπεὶ σὺ, μᾶτερ, ἐπίδακρυς | γόοισι ci. Nck. 335
 βοάσατ' εὖ] βοάσατε H., βοᾶτε Fix. 338 ἔτ' ὦ] ἔτ' ἔξω A. H.
 Flor. A. 346 σ' addidit Herm. 349 sq. οὐδέ σ' αἰ τύχαι, τέκνον,
 ἔσωφρονήκας' libri et schol., recepi Seidleri coniecturam parum
 certam. 356 ὦθι βιαίως] ὦθι αἰσίως A. H. Flor. locus Oedi-
 pum expectat. 367 γ' ἔξω] δ' ἐκτὸς schol. Eur. Or. 258. 381
 ἄλλοις] ἄλλως Tyrwhitt. 396 ἔξις] ἤξις Antiatt. 399 κῆδος]
 κῦδος A. Flor. Chr. pat. εἶδεν A. H. Flor., εἶχεν Harl. Pal. Chr.
 pat. 402 δυσκλής A. H. 417 σοὶ] σοῦ Herm. 433 ἐκπλήσας
 A. H., ἀντλήσας Pal. Harl. 435 οὐ δὴ] ἰδού, ci. Nck. 436 ὠμό-
 φρων τ' ἐπιστάτης] ὠμοβρώς τ' ὀρειβάτης libri deteriores, et
 ὠμοβρώς confirmare videtur Hesychius II. p. 1544. 437 θ' ἦ]
 γῆ Havn. 442 ζῶν εἶς' ἐς Αἰδοῦ] καὶ ζῶν ἐς Αἰδὴν A. H. plura
 v. 442 sq. insunt, quae dubitationem moveant. 452 ἐκλέλοιψ'
 ἑορτὰς] ἐκλέλοιπα δ' ἑορτὰς A. H., ἐκλέλοιπα δ' ὀρτὰς Nck.
 455 ποῖ σκάφος A. H. Flor., ποῦ σκάφος Pal. Harl. Cicero epist. ad
 Att. 464 ἀντιλήψεται A. H. Flor. 474 ἡμεν τύραννοι] καὶ μὴν
 (vel potius ἡμῶν) τύραννος Apsin. Rhett. vol. IX. p. 581 (vol. I.
 p. 394, 11 ed. Spengel.), cf. ἡμῶν ἀνάνδρος Chr. pat. 537. ante
 477 lacunam statuit Kirchhoff, mihi ποτε 478 suspectum. 479
 ἀκκεῖνά τ' εἶδον] καὶ ταῦτ' ἐπεῖδον Apsines. 480 om. Apsines
 fortasse recte. 482 ἤκονον, ἀλλὰ τοῖσδ' ἐπεῖδον Apsines. 498
 ἔνα] ἄρα ci. Nck. 507 χαμαιπετῇ] χαμεροπτῇ A., χαμεροπῇ H,
 unde χαμαιριφῇ suspiceris. 513 αἶσον δακρύουσ' ci. Kirch-
 hoff. 522 ἀνὰ δ'] ἀν δ' Hartung. 525 ἀνάγετε Pal. Harl., ἀγετε
 A. H., ἀγάγετε Nck. 533 πευκάεντ' οὐρειον ci. Fix, πευκάεντ'
 ὄρειον Kirchhoff. 538 λῖνοις] λίνου schol., λῖνοιο Kirchhoff.
 540 φόνια] φοῖνιά τε A. H., φόνιά τε Flor. 543 ἐπὶ] ἐπεὶ Herm.
 550 ἔδωκεν] ἀπεδίωκεν Herm. 565 νεανιῶν Bothius. 572—576
 choro tribuit Kirchhoff. 578 ἰώ μοί μοι] οἴμοι schol., ὦμοι Seid-
 ler. 587 πόσι] πόσις Seidler. an pro Ἀχαιῶν 591 leg. ἀχέων?
 591—594 Hecubae tribuebantur, Andromachae tribuunt A. Harl.,

seculus sum Kirchhoffium. 592 sq. retinui librorum corruptelam. 595 σχέτλια τάδε] σχετλιώτατα ci. Nck. 600 ἤνυσσε] ἤνυσσε ci. Nck. 602 ἐμὸν A. H. Flor., ἐγὼ Pal. Harl. verba ἐμὸν — ἐλογεῦθην suspecta sunt. 603 ἔρημος πόλις libri. fortasse ieg.: ὃ τέκν', ἔρημα πολιῶματ', ἔρ[ημα δὲ.....] 607 λάθεται ἀλγέων ἀδάκρυτος librarii supplementum. 608 πεπραγόσι A. H. Flor., πεπονθόσι Harl. Pal. Stob. 609 λύπας ἔχει suspecta. 610 δορὶ κόρους ci. Nck. 613 τὸ μηδὲν Elmsl. 626 αὐτὴν ἀποβάσα] αὐτὴν ἀποβάσα A. 634 ὃ τεκοῦσα κάλλιστον γόνον Kirchhoff. 647 ἐνθα suspectum, οὗν γε Chr. pat. 541. 651 εἴσω] εἴσω τε Pal. Θηλειῶν δ' ἔπη Chr. pat. 667 sq. suspecti. 679 ἔχειν] ἡγεῖ Fix. 692 τύχη] φορᾷ Chr. pat. 703 ἔν' εἴποτε] ἦν ἄν ποτε Nck. 704 inter παῖδες ei ὕστερον ('Ιλιον Pal.) quaedam excidisse statuit Kirchhoff. 710 μή με] μή' μὲ praetuli. 714 σὸν] τὸν A. 720 γάμων] κακῶν ci. Nck. 731 sq. ἡμῖν τε πῶς γυναιῖκα μάρνασθαι μίαν οἶόν τε; ci. Nck. 742 sq. spurii videntur. 745 τε] γε Reisk. 747 οὐχ ὥς σφάγιον] οὐ σφάγιον ἵνιν ci. Kirchhoff, οὐ σφάγιον υἶδον Nck. 748 Ἀσιάδος] Ἀσιάτιδος A. H. Flor., Ἀσίδος ci. Nck. 759 σπαργάνοις σε Pal., σπαργάνοισι A. H. Flor. unde διὰ κενῆς σ' ἄρα ἐν σπαργάνοισι ci. Kirchhoff. 770 αὐχῶ] αὐδῶ ci. Nck. Ζηνὸς ἐκφυναί σ' ἐγὼ ci. Reisk. 774 ἄγετε] ἀλλ' ἄγετε Herm., ἄγε δῆτα ci. Nck. 778 om. A. H. Harl. 788 ἡμετέρας Tyrwhitt, qui 782—789 Talthybio tribuit. post 788 versum excidisse ci. Herm. 800 ἔδραν Pal. 803 λιπαραις] λιπαραισί τε Seidler. 807 suspectus. 813 ἐξεῖλε νεῶν A. H., ἐξεῖλεν ἰόν ci. Nck. 815 πυρὸς πυρὸς ci. Meinekius. πνοᾷ Pal., βοᾷ A. H. Harl. 828 sq. ἕαρον οἶον οἰωνὸς — βοᾷ verba corrupta. 831 εὐνάτορας] ἄορας Hermannus. 857 πατρίδι] πατρίᾳ Pal. 863 Μενέλεως πάρειμι ci. Nck. alii post Ἀχαιῶν versum excidisse statuunt. 873 ἐξεμόχλευσαν A. H. Harl., an ἐξεμόχλευσαν? 875 Ἀργεῖαν Pal. 885 εἰδέναί Sextus Empir. p. 219, 1. 666, 5. 887 ἐπενξάμην Sext. Emp. p. 219, 3. 901 ἀλλὰ πᾶς A. H. Harl., ἀλλ' ἅπας Pal., ἀλλ' ὁ πᾶς ci. Nck. 905 κτενῶ] κτενῶν Flor., κτανῶν Pal., κτενῶν Stephanus. 910 μηδαμῇ ci. Fix. 918 τοῖς σοῖσι] f. λόγοισι cum Hartungio leg. 919 ἔτεκεν ἥδε] ἥδ' ἔθηκε ci. Nck. 927 Ἀσιάδ' Pal., Ἀσίας A. H. Harl. Tzetzes exeg. Il., Ἀσίδ' ci. Nck. 928 om. Tzelzes recte opinor. 935 ἃ δ' Pal., ἄρ' A. H. Harl. δ' post ὠλόμην addunt H. Harl. hinc ἄρ' εὐτύχησεν Ἑλλάς;

ὠλόμην δ' ἐγὼ Kirehhoﬀ. 937 ἐπὶ κάρῳ] εὐκλείας ci. Nek. 942
 εἶτε καὶ Πάριν] εἶτ' ἀλάστορα ci. Nek. corruptum ὁ τῆσδ' ἀλά-
 στωρ 941, ubi ὁ τῆσδε ληστήρ tentare possis. 946 φρονοῦς]
 φρονήσας' Nek. 951 εὐτρεπῇ ci. Nek. 961 sq. ἐνδίκως δι-
 καίως non sanum. vide an ex h. l. derivata sint quae Gramm.
 Bekk. p. 128, 28 Sophocli tribuit: πῶς ἂν οὐκ ἂν ἐν δίκῃ θά-
 νοιμ' ἂν; 969 θεαῖσι] ταῖς θεαῖσι Pal. et Aristot. Rhet. III, 17.
 p. 1418, b, 21 ed. Bekk. 970 ἐνδίκῃ Pal. 976 ἦλθον ἐπ'] ἦλ-
 θον πρὸς Pal., ἦλθον ἐπ' Kirehhoﬀ. 991 ὃν ἰδοῦσα A, ὃν εἰς-
 ἰδοῦσα Pal., ὃν σύγ' ἰδοῦσα H. Harl., σὺ γοῦν ἰδοῦσα ci. Nek.
 1012 ποῦ Pal., ποῖ A, πῇ H. 1051 οὐκ ἔστ'] οὐδεὶς Aristot.
 1068 ἀλίῳ] ἀελίῳ Nek. 1076 σὺν δώδεκα] συνδώδεκα Barnes.,
 an σοι δώδεκα? 1078 f. ὀράνιον? 1087 τείχεα] τύχη Herm.
 1105 ὅτε] ὅς Nek. 1117 f. πάθῃ leg. 1118 καινὰ] καινὰ A. H.
 Harl., f. καινὰ καινῶν μεταβάλλονσ' αἱ χθονὶ συντυχία? 1133
 καμ' ἠτήσατο ci. Nek. 1155 ὀρμήσει] ὀρμίσει Pal., ὀρμήσει Nek.
 1162 ὅθ'] f. τόθ' leg. 1163 μυρίας Pal., μυρίους A. H., μυρίον
 Nek. 1171 νῦν δ' Reisk. 1179 μοι Pal., om. ceteri libri, δὴ ci.
 Fix. 1184 ἐπάξω ci. Nek. pro κώμους olim κομμοὺς malebam.
 1189 ἂν σε] ἂν σφ ci. Nek. 1190 Ἀργ.] malim Ἀργ. 1199
 ἔσταξεν Pal. 1201 εἰς καλὸν ci. Nek. 1209 νεκροῦ vel νεκρῶν
 ci. Nek. 1229 μᾶτερ] μάτηρ Nek. 1239 ***] Ἐκάβη σας libri,
 θαρσέσας' Herm. 1243 ἔστρεψε τάνω] ἀφανεῖς ἂν ὄντες A ex
 sequenti versu. mihi et ἔστρεψε τάνω et χθονός suspecta. 1245
 ὑστέραν Pal., αἰοιδοῖς A. H. Harl., ἀφθίτους Nek. βροτῶν (ut
 nunc legitur cum μούσαις iungendum) suspicor interpolatori de-
 beri, cui suspiciōni favet quod pro δόντες A. H. διδόντες prae-
 bent. 1247 δῆ] δεῖ Pal. Chr. pat. 1252 ἐπὶ] ἐν Porson. 1260
 τέταχθεν πιμπράναι A, unde τέταχθ' ἐπιμπράναι Hartung.
 1273 ἦδη] ἦλθε Nek. 1277 ἀμπνέουσ'] ἐμπνέουσ' Harl. (Pal.)
 Chr. pat. 1310 ἄλγος ἄλγος βοᾶς] ἄλγος ἀμβοᾶς ci. Nek. 1314
 κατακαλύπει A, κατεκάλυψε Herm. 1329 τάλαιναν delet Her-
 mannus.

PHOENISSAE.

Argum. Pag. 391, 18 ἔσφαξαν] ἔτρεψαν Hermannus.
 392, 10 ἀποθανόν] πηδῶν ci. Nek. 17 et 18 ὁ χορὸς — Παλαι-
 τύρου om. Havn. item Ven. 468. 26 διὰ κενοῦ] διὰ κενῆς Nek.

Codex Ven. 468 hanc praebet hypothesin: pag. 392, 8—26 hui. edit., tum 394, 6—11. 395, 28—32. 396, 1. 2. 9—15. 391, 1—24. 392, 1—5. sequuntur mythologica quaedam ac deinde haec: Ἀριστοφάνους γραμματικοῦ ὑπόθεσις ἐπὶ τῇ στρατείᾳ τοῦ Πολυνείκου μετὰ τῶν Ἀργείων ἐπὶ Θήβας καὶ ἀπώλεια τῶν ἀδελφῶν Πολυνείκους καὶ Ἐτεοκλέους καὶ θάνατος Ἰοκάστης. ἐπὶ Ναυσικράτους ἀρχοντος δεύτερος Εὐριπίδης καθῆκε διδασκαλίαν περὶ τούτου. καὶ γὰρ ταῦτα ὁ Οἰνόμαος καὶ Χρήσιππος καὶ σώζεται. ὁ χορὸς συνέστηκεν ἐκ Φοινισσῶν. προλογίζει δὲ Ἰοκάστη.

Edidit haec A. Kirchhoff (in Mützellii Zeitschr. für das Gymnasialw. 1853. Suppl.-Heft) et ut fieri potuit emendare ac supplere conatus est. Docemur fragmento quantumvis mutilo Phoenissas Oenomaum Chrysippum simul actas esse, quibus accesserit drama satyricum mature deperditum. Nausicratem archontem non novimus; de Lysierate (olymph. 81, 4) quo minus cogitemus, obstant testimonia veterum (schol. Ar. Av. 348. Ran. 53) et ipsa Phoenissarum compositio.

Pag. 393, 21 προσάλληλα] πρὸς ἄλληλα Nek. 23 τῆς] τὴν Nek. 394, 2 τοῦτον] τούτου Nek. 13 ἐκλαθόμενος Λαίος post Θεσπισμάτων (v. 12) collocanda et pro ὥσπερ ἢ ὡς scribendum esse ἢ ὥσπερ ci. Nek. 395, 27 τοῦτο] τότε hic scribendum et mox delendum videtur. 396, 5 συνάψει] συνάψει Nek. 17 ἄερος] ὄρους ci. Nek. 397, 3 τούτῳ] f. αὐτῷ leg. 24 παρ' ἀντιδ.] πρὸς ἀντιδ. Nek.

Vs. 34 φύσαντας] τεκόντας Strab. 50 αἶνιγμ'] μούσας al. teste schol. 57 κόρας δὲ Wakefield. 128 γίγαντι] γίγαντι τε Seidler. 129 ἀστρωπὸς Dindorf, στερωπὸς vel γαλερωπὸς ci. Nek. 132 λοχαγόν om. codices plerique, ὁρῶ νιν ci. Geel; fortasse versus delendus est. 143 spurius videtur. 166 χρόνῳ] χρονία ci. Pluygers. 171 τίς κυρεῖ] τίς πόθεν κυρεῖ codices fere omnes. 174 ῥοα] χοαί Musgr. 175 ἀελίου] Λατοῦς Badham, ἅ Λατοῦς praeluli. 178 sq. verba corruptissima. ὡς ἀτρεμαῖα κέντρα σώφρονα πώλοις [ἐνθεν ἐκείσε] μεταφέρων ἰθύνει ci. Herm. 183 κεραυνιόν] κεραυνῶν Nek. 185—187 ὅδ' ἔστ' αἰχμαλώτιδας ὁ φᾶς δόρει | Θηβαίας Μυκῆναις ἢ Λερναίᾳ | τριαινα δώσειν ci. Nek. 198 γὰρ] δὲ al. cum Stobaeo. ἔφν] γένος ἔφν Havn. 199 λόγων] ψόγων Stob. 201 ἀλλήλας] ἀλλήλαις H. Ven. 471 alii, item Etym. M. p. 420, 19. Choricus p. 110 ed.

Boiss. 207 κατενάσθη amicus Kingii et Hermannus. 220 χρυσοτεύκοις] χρυσεοτεύκοις al., χρυσεοτύποις Herm. 221 λάτρις γενόμεαν] γενόμεαν λάτρις ci. Nek. 259 ὄρμα᾽ παῖς] ὄρμα᾽ Nek. 296 ἰὼ geminant H. et al. 298 τόνδε] τόνδ' ὦ Seidler. 300 ὠλέναις] ὠλέναισι σαῖσιν Seidler. 301—303 emendatio tentari poterit, si optimorum librorum scriptura explorata fuerit. 321 Θήβαις] πόλει ci. Geel. ἧ hoc et praegresso versu delet Seidler. 323 πενθήρη] ἀπενθέα schol., πένθει Herm. 324 ἄπεπλος, τέκνον, λευκῶν φαρέων ci. Nek. 325 ἀμφὶ τρύχη vel ἀμφι- τρύχη] ἀμφιτρύχῃ Hesych., ἀμφιτρούγῃ Anecd. Bekk. p. 389, 19. Suid. 337 καὶ delet Herm. 347 ἀνυμέναι' ἀνίσμηνος ἐκηδεύ- θης ci. Badham. 361 τάρβους] τάρβος Grotius. 370 δι' ὅσσαν νᾶμ' Musgr., δίοσσον ὅμμ' ci. Nek. 386 ταῦτ'] ταῦτ' Nek. 390 δυσχερές] δυστυχές al. sicut Plutarchus. 395 ἀλλ' εἰς] ὅπου Plutarchus et Lucianus. 397 βλέπουσαί γ' ci. Herm. 399 κα- κῶν] θεὸν pauci codices, fortasse neutrum genuinum. 401 εἶ- χον ἄν] εἶχον αὖ Valek., malui εἶχομεν. 403 τις δυστυχή] τι δυστυχήs v. d. in Edinb. Review, cf. schol. Hermog. Rhett. vol. V. p. 422. σὺ δυστυχήs Append. Prov. II, 90. 434 τοκεῦ- σιν] ἐκοῦσιν schol. 436 φίλους suspectum. 449 πόλιν] μόλις Badham, πάλιν ci. Hartung; neutra coniectura difficultates omnes tolluntur. 458 ταῦτόν] τοῦτον schol. 473 πατρός δωμά- των corrupta, πατρός δειμάτων Geel. nil desideraretur si δω- μάτων — τοῦδ' et versus 475 abessent. 494 αὐθέκαστα ci. Nek. 504 ἡλίου] αἰθέρος Stob. οἰστῶν (pro ἄστρων) ci. Pier- son. 519 μαθήσομαι ci. Geel. 548 τῷδ' ἀπονεῖμαι] τῷδε νεῖ- μαι Salmasius, τῷδ' ἀπονεμῖς Porson. 555—557 pariter ac 558 interpolatori deberi videntur. 565 πορθουμένης] λελησμέ- νης v. l. 566 ὀδυνηρός] δαπανηρός vel πονηρός v. l., ὀλέ- θριος ci. Geel. 567 Θήβαισιν, ὀδυνηρός δὲ σοί ci. Geel. 574 καὶ] κῆς Valek. 577 γένοιτ' ἂν ὑφ'] γένοιτ' ἀφ' Dobr. 612 ὀνοτάζειν ci. Nek. 616 aut 617 delendus videtur. 630 Valcke- nario suspectus. 640 ἀδάμαστον] ἀδάματος Bergk. 642 οὐ κατοκλάσῃ Bergk. 644 δόμων] δέμειν Bergk., aptius fue- rit νέμειν. si κατοικίσαι recte habet, pro δόμων certe δόμον τ' expectes. 645 ὕδατος suspectum, post ἵνα τε trochaeus vide- tur excidisse. 646 γᾶς vel γαίης] ἔνταs Herm. 655 Θηβαίαισι] Θηβαῖταις Herm. 663 ὠλεσε] ὄλεσε Herm. 664 ὀλεσίθροος] ὄλεσε θηρός ci. Nek. 673 φίλα γᾶ] γᾶ φίλα liber nullius pretii,

tentabam φυλέτας. 674 εὐηλλίοισι] εὐαλλίους Herm. 683 ᾗ] ἂν Herm., sed fortasse ἐκτῆσαντο 687 corruptum est. 739 λόγων ἀνάσσειν huc ex 742 immigrarunt, genuina lectio latet. 755 ἐλεῖν] ἐλθεῖν al. 766 ἐν δ' ἡμῶν ἀργόν optimi libri, ἐν δ' ἡμῶν ἀργόν Nck. 774 ταῦτ'] τοῦτ' tacite Herm. 786 ὥρας] ὥραις libri plerique. 788 χαροποιοί libri plerique, μελοποιοί v. l. 789 ὀπλοφόροις] ὀπλοφόρῳ Badham. 790 αἵματι Θήβας] ἄσματι Θήβαις Badham. 792 οὐ πόδα θυροσομανῇ Musgr. δινεύεις] δινεῖς Geel. 796 θάσσον ἐνοπλον corrupta. 806 γαίτας] γαῖα ci. Nck. 807 Σφίγγ' ἀπομονοστατάταισι ci. Nck. 814 ἔφν καλόν] ἔφν φίλον Valck. 815 οὐδ' εὐώδιον tentabam, quae sequuntur non expeditio. 824 πύργοι] πύργοι Par. A. ἀνέστην libri opt. 835 ναυτίλοισιν al. 847 ὥς πᾶς ἀπήνη] medelam desidero, ὥς παῖς ἔτ' ἀπτήν Herm. 851 ἀπος] ἀππος al., αἶπος Monk. 878 τί οὐ H. et al., plerique οὐ om. pro ποῖα plerique libri ὁποῖα. unde τί δρῶν οὐ, ποῖα δ' οὐ λέγων ἔπη conieceris. 882 abesse mallet. 899 βούλει σύ μέν; κἄτ' οὐχὶ ci. Nck. 904 si genuinus sit, Creonti ascribendus erit. 915 τί φῆς; ἐμὸν παῖδ' ἔνεκα γῆς σφάξαι θέλεις; al. teste schol. 916 πέφυκε] πέφηνε Camper. 933 γῇ Κάδμου χοὰς δοῦναι ci. Nck. 943 Geelio, 968 sq. Hermannō suspecti. 967 κτείνων] an κτείνειν? 971 μάντεων al. 983 τί δῆτ' ἔρυμα] τί δῆτα ῥῦμα Valck., an τί δῆ τόδ' ἔρυμα leg.? 988 suspectus. 990 sq. μὴ — εὖ interpolatori tribuo. 1017 ἐλασσόνων] ἐλασσον ἂν ci. Nck. 1075 uncis notavi, et de hoc versu intellego quod de 1074 scholia tradunt: ἐν πολλοῖς ἀντιγράφοις οὐ φέρεται ὁ στίχος. 1116—18 locus nondum expeditus. 1120 ἀσπίδι] ἀσπίδος al. 1132 βάθρων] βίαι libri plerique, fortasse utrumque coniecturae debetur. 1135 ἐκπληρῶν] ἐκπληροῦν Geel. 1137 Ἀργεῖον] an ἄχρειον? 1151 ἐκνευενυότας ci. Markland. 1153 ὁ δ' Ἀρκὰς αὐτὸν κἀργεῖος ci. Nck. 1183—1185 abesse malim, 1184 Geelio suspectus. 1194 sq. ἄξονες τ' — νεκροὶ δὲ] ἄξονες δ' — νεκροὶ τε Fritzschius. 1200 sq. καλὸν τὸ νικᾶν, οἷς ἀμείνον' οἱ θεοὶ γνώμην ἔχουσιν· οὐ τύχης εἶην ἐγώ ci. Nck. 1215 σοῖς] σοι Geel. initium versus nondum emendatum. 1216 γε] με al. 1225 teste schol. a multis exemplaribus aberat. 1235 ὅσος] ὅς libri plerique. versus est eius aetatis, quo ἄλις quadruplicis erat mensurae. pro θανών nonnulli νεκρός. 1249 λόγοισι θαρσύνοντες ἐξηγύδων τάδε al. 1252 et 1253 νῦν] σὺ ci. Nck. 1253 κρατεῖς] κρατεῖ Nck.

1255 ἐμπύρου τ' ἀκμῆς ci. Geel. 1256 verba corrupta. ἐναντίων alii multi. 1271 spurius videtur. 1298 βαλλόμεναι ci. Musgr. 1305 φάος] ξίφος Herm. 1312 dicendi genus non Euripideum. 1314 ἀνισαρώς ci. Nek. 1317 sq. μέτα γέρων] μεταστέλλων al., στελῶν γέρων Herm. 1321 εὖ σέβειν Valck. 1333 πρόσωπον] προνωπές ci. Nek. 1338 ἄλλοις] ἄλλα Porson. 1343 damnat Geel. 1350 sq. ἀνάγει' ἀνάγει' ὧ κωκυτόν, χεροῖν | ἐπικραδά-τε λευκοπήχεις κτύπους ci. Nek. transpositionem vocabuli χεροῖν praeivit Hermannus. 1353 αἰνιγμοῖς Geel. 1362 damnavit Valck., item 1360 suspectus; fortasse ante 1359 quaedam exciderunt. 1368 καθαιματωῶσαι] καθαιματωῶσαι Nek. 1369 αἰτῶ] αἰτῶν Canter. 1394 κνήμης al. 1396 γύνυ' ἄνωθεν εἰσιδῶν ci. Geel. 1426 ἐκπλήσειν libri nonnulli. 1428 ἐπεὶ τέκνω πε-σόντ'] ὥς γὰρ πεσόντε παῖδ' al. 1429 προσκυρεῖ Hartung. 1430 τε om. Flor. A. Havn. al., fortasse σὺν παρθένῳ νέῃ, προ-θυμία π. ? 1434 μαστῶν] μάτην Nek. 1438 δύσκλητον corru-ptum, δύσθνητον Ven. 471. 1479 δυσποτμώτατοι ci. Nek. 1485—1581 carmen difficillimum, quod nostris subsidiis nemo facile expediat. 1489 αἰδομένα] ἀδομένα H. Aug. d, καδομένα Nek. 1491 στολίδος — τρυφάν Porson. 1494 Θῆβαι] Θήβαις Herm. 1495 σὰ δ'] ἄδ' ci. Nek. 1497 δεινῶς et λυγρῶς ci. Nek. 1502 τάδ' αἵματα] τάδε σώματα vel δὲ σώματα codices plerique. 1505 πρόπαρ] πρόπαν libri fere omnes. 1508 πάτερ om. Herm. cum schol. 1511 sq. σπέρματος ἀμερίου | τοσῶνδ' ἔτλα κακῶν ci. Nek. 1516 ἀμφὶ om. Ven. 471. ἀκροκόμοισι κλάδοις | ἐξομένα μονομάτορ' ὀδυρμὸν ἱήσιν ἐμοῖς ἄχεσι συνω-δός ci. Nek. 1526 ἐμᾶς] ἐμᾶς ἐν codices plerique. 1527 διδύ-μοισι γάλακτος] διδύμοις τάλανος ci. Nek. 1534 δώμασιν] δά-κρυσιν Herm. 1535 μακρόπουν] μακρόπνουν al., μακρόπονον Nek. 1536—38 verba corrupta. 1539 τί δ'] τί μ' al. 1541 με addidit Herm. 1549 τυφλόπλουν ci. Geel. 1557 ξ. βροίθων φο-νίοισι Seidler. 1596 damnavit Valek. 1601 πεφυκέναι] δυσδαί-μονα Ven. 471 et al. 1606 sq. locus desperatus. τέ με] τέ μοι al. 1619 ἔτι νεάζων corrupta. 1637 ἰοῦσαν Flor. 2, εἰσιοῦσαν vel ἐπιοῦσαν ceteri, τελοῦσαν ci. Geel. 1647 ὅς ἐπείθου] εἰ πεί-θει ci. Nek. 1674 σ'] γ' al. 1687 suspicabar πεσεῖν ὅπου μοι μοῖρα, κείσομαι πεσών. 1724 ἐλαύνων] an Κρέων ἐλαύνει? 1726 ἔτλας ἔτλας· οὐχ Herm. 1761 αὐτὸς οἰκτρὸς] αὐτὸς οἰκτρῶς ci. Nek.

ADDENDA.

Iphig. A. 356 δὲ om. Pal., unde legendum suspicor τίν' ἀπο-
 ρῶν εὐρὼ πόρον; 864 σώσας libri, σώσαθ' recte Kirchhoff.
 1034 sq. σὺ δ' εἰ μὲν εἰσι θεοί, δίκαιος ὢν ἀνὴρ ἐσθλῶν κυρή-
 σεις Hermannus, cui favet Pal. σὺ γε omittens. 1064 Hermannus
 emendavit μάντις ὃ φοιβάδα μοῦσαν εἰδώς. confirmat Pal. qui
 μάντις δ' ὃ φοῖβα μοῦσαν praebebat. 1570 ἔλεξε δ' ὦ παῖ Ζηνός,
 Ἄρτεμις θηροκτόνε Pal., f. ὦ θηροκτόνε legendum deleto Ἄρτε-
 μις. Iphig. T. 306 ἐν μακρῷ Pal., οὐ μακρῷ ci. Nck. 679
 προδοὺς σε σωθεὶς δ' αὐτὸς recte Dobr. 966 διηρόθυμιζε (i. e.
 διεροθύμιζε) Pal. 1220 σχολῇ Pal. 1380 ὥστε μὴ interpolato-
 ris esse vidit Badham, qui παρθένω substituit. 1404 γυμνάς
 ἐκ χειρῶν ἐπωμίδας Pal., γυμνάς εὐχερῶς ἐπωμίδας ci. Nck.
 Phoen. 572 libri optimi Venetus 471 et A haec habent: πρὸς
 θεῶν, τρόπαια πῶς ἀναστήσεις δῆ; praeclare correxit Kirchhoff:
 τρόπαια πῶς ἀναστήσεις Διί;

CORRIGENDA.

Andr. 656 θ' delendum.
 Iph. A. 560 corrigendum αἶψ· 864 ἡμῇ, 873 πατήρ 1203
 παιδὸς ἐστερήσομαι, 1469 (sicut Ion. 1277. 1584. Cycl. 567) τῇ-
 μῃ Iph. T. 503 ἢ 589 Ἄργος 610 ὀρθῶς 769 παιδὶ τάγαμέ-
 μνονος· 1450 τις ἔστιν Ion. 359 τῶμῳ Med. 526 λίαν 1091
 ἐφύτευσαν 1094 ἀπειροσύνην Rhcs. 687 θένης.

ΙΦΙΓΕΝΕΙΑ Η ΕΝ ΑΥΛΙΔΙ.

ΤΑ ΤΟΥ ΔΡΑΜΑΤΟΣ ΠΡΟΣΩΠΑ.

ΑΓΑΜΕΜΝΩΝ.
ΠΡΕΣΒΥΤΗΣ.
ΧΟΡΟΣ.
ΜΕΝΕΛΑΟΣ.
ΑΓΓΕΛΟΣ.
ΚΑΤΤΑΙΜΝΗΣΤΡΑ.
ΙΦΙΓΕΝΕΙΑ.
ΑΧΙΛΛΕΥΣ.
ΑΓΓΕΛΟΣ ΕΤΕΡΟΣ.

ΕΥΡΥΠΙΔΟΥ

ΙΦΙΓΕΝΕΙΑ Η ΕΝ ΑΥΛΙΔΙ.

- ΑΓΑ. ὦ πρόεσβυ, δόμων τῶνδε πάροιθεν
στεῖχε. ΠΡ. στείχω. τί δὲ καινουργεῖς,
Ἀγάμεμνον ἄναξ; ΑΓΑ. σπένδεις; ΠΡ. σπένδω.
μάλα τοι γῆρας τοῦμὸν ἄνπνον
καὶ ἐπ' ὀφθαλμοῖς ὅξυν πάρεστιν. 5
- ΑΓΑ. τίς ποτ' ἄρ' ἀστήρ ὅδε πορθμεύει;
ΠΡ. Σείριος, ἐγγὺς τῆς ἑπταπόρου
Πλειάδος αἰσῶν ἔτι μεσσήρης.
- ΑΓΑ. οὐκουν φθόγγος γ' οὐτ' ὀρνίθων
οὔτε θαλάσσης· σιγαλὶ δ' ἀνέμων 10
τόνδε κατ' Εὐρύπον ἔχουσιν.
- ΠΡ. τί δὲ σὺ σκηνῆς ἐκτὸς αἰσσεις,
Ἀγάμεμνον ἄναξ;
ἔτι δ' ἡσυχία τῇδε κατ' Αὐλιν,
καὶ ἀκίνητοι φυλακαὶ τειχέων. 15
στείχωμεν ἔσω. ΑΓΑ. ζηλῶ σέ, γέρον,
ζηλῶ δ' ἀνδρῶν ὃς ἀκίνδυνον
βίον ἐξεπέρασ' ἀγνώως ἀκλεής·
τοὺς δ' ἐν τιμαῖς ἥσσον ἐπαινώ.
- ΠΡ. καὶ μὴν τὸ καλόν γ' ἐνταῦθα βίου. 20
- ΑΓΑ. τοῦτο δέ γ' ἐστὶν τὸ καλὸν σφαλερόν·
καὶ τὸ πρότιμον

γλυκὺ μὲν, λυπεῖ δὲ προσιστάμενον.
 τοτὲ μὲν τὰ θεῶν οὐκ ὀρθωθέντ'
 ἀνέτρεψε βίον, τοτὲ δ' ἀνθρώπων
 γινῶμαι πολλὰ
 καὶ δυσάρεστοι διέκναισαν.

ΠΡ. οὐκ ἄγαμαι ταῦτ' ἀνδρὸς ἀριστεῶς·
 οὐκ ἐπὶ πᾶσιν σ' ἐφύτευσ' ἀγαθοῖς,
 Ἀγάμεμνον, Ἄτρεϋς.

δεῖ δέ σε χαίρειν καὶ λυπεῖσθαι·
 θνητὸς γὰρ ἔφυς. καὶ μὴ σὺ θέλῃς,
 τὰ θεῶν οὕτω βουλόμεν' ἔσται.
 σὺ δὲ λαμπτήρος φάος ἀμπετάσας
 δέλτον τε γράφεις
 τήνδ' ἣν πρὸ χειρῶν ἔτι βαστάξεις,
 καὶ ταῦτὰ πάλιν γράμματα συγχέῃς
 καὶ σφραγίζεις λύεις τ' ὀπίσω
 ρίπτεις τε πέδῳ πεύκην, θαλερὸν
 κατὰ δάκρυ χέων,
 καὶ τῶν ἀπόρων οὐδενὸς ἐνδεῖς
 μὴ οὐ μαίνεσθαι. τί πονεῖς τί πονεῖς;
 τί νέον τί νέον περὶ σοι, βασιλεῦ;
 φέρε κοίνωσον μῦθον ἐς ἡμᾶς.
 πρὸς δ' ἄνδρ' ἀγαθὸν πιστόν τε φράσεις·
 σὴ γὰρ μ' ἀλόχῳ τότε Τυνδάρεως
 πέμπει φερνὴν
 συννυμφοκόμον τε δίκαιον.

ΑΓΑ. ἐγένοντο Αἰδῶ Θεστιάδι τρεῖς παρθένοι,
 Φοίβη Κλυταιμνήστρα τ' ἐμὴ ξυνάορος
 Ἑλένη τε· ταύτης οἱ τὰ πρῶτ' ὠλβισμένοι
 μνηστῆρες ἦλθον Ἑλλάδος νεανῖαι.
 δειναὶ δ' ἀπειλαὶ καὶ κατ' ἀλλήλων φόβος

ξυνίσταθ', ὅστις μὴ λάβοι τὴν παρθένον.
 τὸ πρᾶγμα δ' ἀπόρως εἶχε Τυνδάρεω πατρί, 55
 δοῦναί τε μὴ δοῦναί τε, τῆς τύχης ὅπως
 ἄψαιτ' ἄθραυστα. καὶ νιν εἰσῆλθεν τάδε,
 ὅρκους συνάψαι δεξιᾶς τε συμβαλεῖν
 μνηστῆρας ἀλλήλοισι καὶ δι' ἐμπύρων
 σπονδὰς καθεῖναι κἀπαράσασθαι τάδε, 60
 ὅτου γυνὴ γένοιτο Τυνδαρὶς κόρη,
 τοῦτῳ συναμνεῖν, εἴ τις ἐκ δόμων λαβὼν
 οἴχοιτο τόν τ' ἔχοντ' ἀπωθοίη λέχους,
 κἀπιστρατεύσειν καὶ κατασκάψει πόλιν
 Ἑλλήν' ὁμοίως βάρβαρόν θ' ὅπλων μέτα. 65
 ἐπεὶ δ' ἐπιστώθησαν ἐμπέδως, γέρων
 ὑπῆλθεν αὐτοὺς Τυνδάρεως πυνκνῇ φρενί,
 διδούς ἐλέσθαι θυγατρὶ μνηστήρων ἕνα,
 ὅτου πνοαὶ φέροιεν Ἀφροδίτης φίλαι.
 ἡ δ' εἶλεθ', ὅς σφε μήποτ' ὥφελεν λαβεῖν, 70
 Μενέλαον. ἐλθὼν δ' ἐκ Φρυγῶν ὁ τὰς θεὰς
 κρίνων ὄδ', ὡς ὁ μῦθος Ἀργείων ἔχει,
 Λακεδαίμον', ἀνθηρὸς μὲν εἰμάτων στολῇ
 χρυσῷ τε λαμπρὸς βαρβάρῳ χλιδήματι,
 ἐρῶν ἐρῶσαν ὥχετ' ἐξαναρπάσας 75
 Ἑλένην πρὸς Ἴδης βούσταθμ', ἐκδημον λαβὼν
 Μενέλαον· ὁ δὲ καθ' Ἑλλάδ' οἰστρήσας δρόμῳ
 ὅρκους παλαιοὺς Τυνδάρεω μαρτύρεται,
 ὡς χρὴ βοηθεῖν τοῖσιν ἡδικημένοις.
 τοῦντεῦθεν οὖν Ἕλληνες ἄξαντες δορί, 80
 τεύχη λαβόντες στενόπορ' Αὐλίδος βάθρα
 ἦκουσι τῆσδε, ναυσὶν ἀσπίσιν θ' ὁμοῦ
 ἵπποις τε πολλοῖς ἄρμασίν τ' ἡσκημένοι.
 κἀμὲ στρατηγεῖν κάρτα Μενέλεω χάριν
 εἶλοντο, σύγγρονόν γε. τὰξίωμα δὲ 85

ἄλλος τις ὥφελ' ἀντ' ἐμοῦ λαβεῖν τόδε.
 ἡθροισμένου δὲ καὶ ξυνεστῶτος στρατοῦ,
 ἤμεσθ' ἀπλοῖα χρώμενοι κατ' Αὐλίδα.
 Κάλχας δ' ὁ μάντις ἀπορία κεχρομένοις
 ἀνεῖλεν Ἰφιγένειαν ἣν ἔσπειρ' ἐγὼ 90
 Ἀρτέμιδι θῦσαι τῇ τόδ' οἰκούσῃ πέδον,
 καὶ πλοῦν τ' ἔσεσθαι καὶ κατασκαφὰς Φρυγῶν
 [θύσασι, μὴ θύσασι δ' οὐκ εἶναι τάδε].
 κλύων δ' ἐγὼ ταῦτ', ὀρθίῳ κηρύγματι
 Ταλθύβιον εἶπον πάντ' ἀφιέναι στρατόν, 95
 ὥς οὔ ποτ' ἂν τλὰς θυγατέρα κτανεῖν ἐμὴν.
 οὐδ' ἄν μ' ἀδελφὸς πάντα προσφέρων λόγον
 ἔπεισε τλῆναι δεινὰ. κὰν δέλτου πτυχαῖς
 γράψας ἔπεμψα πρὸς δάμαρτα τὴν ἐμὴν
 πέμπειν Ἀχιλλεῖ θυγατέρ' ὥς γαμουμένην, 100
 τό τ' ἀξίωμα τάνδρὸς ἐκγανρούμενος,
 συμπλεῖν τ' Ἀχαιοῖς οὔνεκ' οὐ θέλοι λέγων,
 εἰ μὴ παρ' ἡμῶν εἴσιν εἰς Φθίαν λέχος·
 πειθῶ γὰρ εἶχον τήνδε πρὸς δάμαρτ' ἐμὴν,
 ψευδῇ συνάψας ἀμφὶ παρθένου γάμον. 105
 μόνοι δ' Ἀχαιῶν ἴσμεν ὥς ἔχει τάδε
 Κάλχας Ὀδυσσεὺς Μενέλεώς θ'. ἃ δ' οὐ καλῶς
 ἔγνων τότ', αὐτίς μεταγράφω καλῶς πάλιν
 εἰς τήνδε δέλτον, ἣν κατ' εὐφρόνην * *
 λύοντα καὶ συνδοῦντά μ' εἰσεῖδες, γέρον. 110
 ἀλλ' εἴα χώρει τάσδ' ἐπιστολὰς λαβὼν
 πρὸς Ἄργος. ἃ δὲ κέκευθε δέλτος ἐν πτυχαῖς,
 λόγῳ φράσω σοι πάντα τὰγγεγραμμένα·
 πιστὸς γὰρ ἀλόχῳ τοῖς τ' ἐμοῖς δόμοισιν εἴ.
 ΠΡ. λέγε καὶ σήμαιν', ἵνα καὶ γλώσση 115
 σύντονα τοῖς σοῖς γράμμασιν αὐδῶ.
 ΑΓΑ. πέμπω σοι πρὸς ταῖς πρόσθεν

δέλτοις, ὦ Ἀήδας ἔρνος,
μὴ στέλλειν τὰν σὰν Ἴνιν πρὸς
τὰν κολπώδη πτέρυγ' Εὐβοίας
Ἀὔλιν ἀκλύσταν. 120

εἰς ἄλλας ὥρας γὰρ δὴ
παιδὸς δαίσομεν ὑμεναίους.

ΠΡ. καὶ πῶς Ἀχιλεὺς λέκτρων ἀπλακῶν
οὐ μέγα φνυσῶν θυμὸν ἐπαρεῖ
σοὶ σῇ τ' ἀλόχῃ;
τόδε καὶ δεινόν. σήμαιν' ὅ τι φῆς. 125

ΑΓΑ. ὄνομ' ἀντ' ἔργου παρέχων Ἀχιλεὺς
οὐκ οἶδε γάμους, οὐδ' ὅ τι πράσσομεν,
οὐδ' ὅτι κείνῳ παῖδ' ἐπεφήμισα
νυμφεῖους εἰς ἀγκώνων
εὐνὰς ἐκδώσειν λέκτροις. 130

ΠΡ. δεινά γε τολμᾶς, Ἀράμεμνον ἄναξ,
ὃς τῷ τῆς θεᾶς σὴν παῖδ' ἄλοχον
φατίσας ἦγες σφάριον Δαναοῖς. 135

ΑΓΑ. οἷμοι, γνώμας ἐξέσταν,
αἰαῖ, πίπτω δ' εἰς ἄταν.
ἀλλ' ἴθ' ἐρέσσω σὸν πόδα, γήρα
μηδὲν ὑπείκων. ΠΡ. σπεύδω, βασιλεῦ. 140

ΑΓΑ. μὴ νυν μήτ' ἀλσώδεις ἴξου
κρήνας, μήθ' ὕπνω θελχθῆς.

ΠΡ. εὖφημα θρόει.

ΑΓΑ. πάντῃ δὲ πόρον σχιστὸν ἀμείβων
λεῦσσε, φυλάσσω μὴ τίς σε λάθῃ
τροχάλοισιν ὅχοις παραμειψαμένη
παῖδα κομίζουσ' ἐνθάδ' ἀπήνη
Δαναῶν πρὸς ναῦς. 145

ἦν γὰρ νιν πομπαῖς ἀντήσης,
πάλιν ἐξόρμα, σεῖτε χαλινούς, 150

- ἐπὶ Κυκλώπων ἰεὺς θυμέλας.
- ΠΡ. ἔσται τάδε. ΑΓΑ. κλήθρων δ' ἐξόρμα. 149
- ΠΡ. πιστὸς δὲ φράσας τάδε πῶς ἔσομαι, 153
λέγε, παιδὶ σέθεν τῇ σῇ τ' ἀλόχῳ.
- ΑΓΑ. σφραγῖδα φύλασς' ἣν ἐπὶ δέλτῳ 155
τῇδε κομίζεις. ἴθι. λευκαίνει
τόδε φῶς ἥδη λάμπουσ' ἡὼς
πῦρ τε τεθρίππων τῶν Ἀελίου·
σύλλαβε μόχθων. 160
θυνητῶν δ' ὄλβιος εἰς τέλος οὐδεὶς
οὐδ' εὐδαίμων·
οὔπω γὰρ ἔφυ τις ἄλυπος.
- ΧΟ. ἔμολον ἀμφὶ παρακτίαν στρ. 165
ψάμαθον Ἀνλίδος ἐναλίας,
Εὐρίπου διὰ χευμάτων
κέλσασα, στενόπορθμον
Χαλκίδα, πόλιν ἐμάν, προλιποῦς',
ἀγχιάλων ὑδάτων τροφὸν
τᾶς κλειναῖς Ἀρεθούσας, 170
Ἀχαιῶν στρατιὰν ὡς κατιδοίμαν
ἀγανῶν τε πλάτας ναυσιπόρους
ἡιθέων, οὓς ἐπὶ Τροί-
αν ἐλάταις χιλιόναυσιν
τὸν ξανθὸν Μενέλαον 175
ἀμέτεροι πόσεις
ἐνέπουσ' Ἀγαμέμνονά τ' εὐπατρίδαν
στέλλειν ἐπὶ τὰν Ἑλέναν, ἀπ'
Εὐρώτα δονακοτρόφου
Πάρις ὁ βουκόλος ἂν ἔλαβε, 180
δῶρον τᾶς Ἀφροδίτας,

ὅτ' ἐπὶ κρηναίαισι δρόσοις
 Ἦρα Παλλάδι τ' ἔριν ἔριν
 μορφᾶς ἅ Κύπρις ἔσχευ.
 πολύθυτον δὲ δι' ἄλσος Ἄρ-
 τέμιδος ἦλυθον ὀρομένα,
 φοινίσσουσα παρῇδ' ἐμὴν
 αἰσχύνῃ νεοθαλεῖ,
 ἀσπίδος ἔρυμα καὶ κλισίας
 ὀπλοφόρους Δαναῶν θέλουσ'
 ἵππων τ' ὄχλον ιδέσθαι.
 κατεῖδον δὲ δὴ Ἀἴαντε συνέδρω
 τὸν Οἰλέως Τελαμῶνός τε γόνον,
 τοῖς Σαλαμίνοις στέφανον.
 Πρωτεσίλαόν τ' ἐπὶ θάκοις
 πεσσῶν ἡδομένους μορ-
 φαῖσι πολυπλόκοις,
 Παλαμήδεά θ', ὃν τέκε παῖς ὁ Ποσει-
 δᾶνος, Διομήδεά θ' ἡδο-
 ναῖς δίσκου κεχαρημένον,
 παρὰ δὲ Μηριόνην, Ἄρεος
 ὄξον, θαῦμα βροτοῖσι,
 τὸν ἀπὸ νησαίων τ' ὀρέων
 Λαέρτα τόκον, ἅμα δὲ Νι-
 ρέα, κάλλιστον Ἀχαιῶν.
 τὸν ἰσάνεμόν τε ποδοῖν
 λαιψηροδρόμον Ἀχιλῆα,
 τὸν ἅ Θεῖς τέκε καὶ
 Χείρων ἐξεπόνασεν,
 εἶδον αἰγιαλοῖσι
 παρὰ τε κροκάλαις δρόμον ἔχοντα σὺν ὅπλοις.
 ἄμιλλαν δ' ἐπόνει ποδοῖν
 πρὸς ἄρμα τέτρωρον

ἀντ. 185

190

195

200

205

210

ἐλίσσων περὶ νίκας. 215
 ὁ δὲ διφορηλάτας ἐβοᾷτ'
 Εὐμηλος Φερετιάδας,
 ᾧ καλλίστους ἰδόμαν
 χρυσοδαϊδάλτους στομίους
 πώλους κέντρῳ θεινομένους, 220
 τοὺς μὲν μέσους ξυγίους,
 λευκοστίκτῳ τριχὶ βαλιούς,
 τοὺς δ' ἔξω σειροφόρους,
 ἀντήρεις καμπαῖσι δρόμων,
 πυρρότριχας, μονόχαλα δ' ὑπὸ σφυρὰ 225
 ποικιλοθέρμονας· οἷς παρεπάλλετο
 Πηλεΐδας σὺν ὅπλοισι παρ' ἄντυγα
 καὶ σύριγγας ἄρματείους. 230
 ναῶν δ' εἰς ἀριθμὸν ἤλυθον
 καὶ θέαν ἀθέσφατον,
 τὰν γυναικεῖαν ὄψιν ὀμμάτων
 ὥς πλήσαιμι, μείλινον ἄδονάν.
 καὶ κέρας μὲν ἦν 235
 δεξιὸν πλάτας ἔχων
 Φθιώτας ὁ Μυρμιδῶν Ἄρης
 πεντήκοντα ναυσὶ θουρίαις.
 χρυσέαις δ' ἐλκόσιν κατ' ἄκρα Νη-
 ρῆδες ἔστασαν θεαί, 240
 πρῶμναις σῆμ' Ἀχιλλείου στρατοῦ.
 Ἀργείων δὲ ταῖσδ' ἰσήμετοι
 νᾶες ἔστασαν πέλας·
 ὧν ὁ Μημιστέως στρατηλάτας
 παῖς ἦν, Ταλαὸς ὃν τρέφει πατήρ· 245
 Καπανέως τε παῖς
 Σθένελος· Ἀτθίδος δ' ἄγων
 ἐξήκοντα ναῦς ὁ Θησέως

παῖς ἐξῆς ἐναυλόχει θεῶν
 Παλλάδ' ἐν μωνύχοις ἔχων πτερω- 250
 τοῖσιν ἄρμασιν θετὸν
 εὖσημόν τε φάσμα ναυβάταις.
 τῶν Βοιωτῶν δ' ὄπλισμα, ποντίας στρ.
 πεντήκοντα νῆας εἰδόμαν
 σημείοισιν ἐστολισμένας· 255
 τοῖς δὲ Κάδμος ἦν
 χρύσειον δράκοντ' ἔχων
 ἄμφι ναῶν κόρυμβα·
 Αἴιτος δ' ὁ γηγενὴς
 ἄρχε ναῖου στρατοῦ· 260
 Φωκίδος δ' ἀπὸ χθονός,
 Δοκρὰς δὲ τοῖσδ' ἴσας ἄγων
 ἦν ναῦς Οἰλέως τόκος κλυτὰν
 Θροινιάδ' ἐκλιπὼν πόλιν.
 ἐκ Μυκῆνας δὲ τᾶς Κυκλωπίας ἀντ. 265
 Ἀτρεΰος παῖς ἔπεμπε ναυβάτας
 ναῶν ἑκατὸν ἡθροῖσμένους.
 σὺν δ' Ἀδραστος ἦν
 ταγός, ὥς φίλος φίλῳ,
 τᾶς φνιγύσας μέλαθρα 270
 βαρβάρων χάριν γάμων
 προᾶξιν Ἑλλὰς ὥς λάβοι.
 ἐκ Πύλου δὲ Νέστορος
 Γερηνίου κατειδόμαν
 πρύμνας σῆμα ταυρόπουν ὄρᾱν, 275
 τὸν πάροιικον Ἀλφεόν.
 Ἐνιάνων δὲ δωδεκάστολοι· στρ.
 νᾶες ἦσαν, ὧν ἄναξ Γουνεὺς

253 — 264 = 265 — 276

277 — 288 = 289 — 302

ἄρχε· τῶνδε δ' αὖ πέλας
 Ἕλιδος δυνάστορες, 280
 οὓς Ἐπειοὺς ὠνόμαξε πᾶς λεώς·
 Εὐρυτος δ' ἄνασσε τῶνδε·
 λευκήρετμον δ' Ἄρη
 Τάφιον ἦγεν, ὧν Μέγης ἄνασσε
 Φυλέως λόχευμα, 285
 τὰς Ἐχίνας λιπὼν * * * *
 νήσους ναυβάταις ἀπροσφόρους.
 Αἴας δ' ὁ Σαλαμῖνος ἔντροφος ἀντ.
 δεξιὸν κέρας πρὸς τὸ λαιὸν ξύναγε, 290
 τῶν ἄσσον ὥρμει πλάταισιν
 ἐσχάταισι συμπλέκων
 δῶδεκ' εὐστροφωτάταισι ναυσὶν· ὡς
 αἶον καὶ ναυβάταν
 εἰδόμαν λεαῖν· 295
 ὧ τις εἰ προσαρμόσει
 βαρβάρους βάριδας,
 νόστον οὐκ ἀποίσεται,
 ἐνθάδ' οἶον εἰδόμαν
 νάιον πόρευμα, 300
 τὰ δὲ κατ' οἴκους κλύουσα συγκλήτου
 μνήμην σῶζομαι στρατεύματος.

- ΠΡ. Μενέλαε, τολμᾷς δεῖν', ἃ σ' οὐ τολμᾷν χρεών.
 ΜΕ. ἄπελθε· λίαν δεσπόταισι πιστὸς εἶ.
 ΠΡ. καλὸν γέ μοι τοῦνιδος ἐξωνείδισας. 305
 ΜΕ. κλαίοις ἄν, εἰ πράσσοις ἂ μὴ πράσσειν σε δεῖ.
 ΠΡ. οὐ χρῆν σε λῦσαι δέλτον, ἣν ἐγὼ ῥ' φερον.
 ΜΕ. οὐδὲ σέ φέρειν δεῖ πᾶσιν Ἑλλήσιν κακά.
 ΠΡ. ἄλλοις ἀμιλλῶ ταῦτ'· ἄφες δὲ τήνδ' ἐμοί.
 ΜΕ. οὐκ ἂν μεθείμην. ΠΡ. οὐδ' ἐγὼγ' ἀφήσομαι. 310

- ΜΕ. σκήπτρῳ τάχ' ἄρα σὸν καθαιμάξω κάρα.
- ΠΡ. ἀλλ' εὐκλεές τοι δεσποτῶν θνήσκειν ὕπερ.
- ΜΕ. μέθες· μακροὺς δὲ δοῦλος ὦν λέγεις λόγους.
- ΠΡ. ὦ δέσποτ', ἀδικούμεσθα. σὰς δ' ἐπιστολὰς
ἐξαρχάσας ὅδ' ἐκ χειρῶν ἐμῶν βία, 315
Ἀγάμεμνον, οὐδὲν τῇ δίκη χρῆσθαι θέλει.
- ΑΓΑ. ἔα·
τίς ποτ' ἐν πύλαισι θόρυβος καὶ λόγων ἀκοσμία;
- ΜΕ. οὐμὸς οὐχ ὁ τοῦδε μῦθος κυριώτερος λέγειν.
- ΑΓΑ. σὺ δὲ τί τῷδ' ἐς ἔριν ἀφίξαι, Μενέλεως, βία τ'
ἄγεις;
- ΜΕ. βλέψον εἰς ἡμᾶς, ἵν' ἀρχὰς τῶν λόγων ταύτας
λάβω. 320
- ΑΓΑ. μῶν τρέσας οὐκ ἀνακαλύψω βλέφαρον, Ἀτρέως
γεγώς;
- ΜΕ. τήνδ' ὀρᾷς δέλτον, κακίστων γραμμάτων ὑπη-
ρέτιν;
- ΑΓΑ. εἰσορῶ, καὶ προῶτα ταύτην σῶν ἀπάλλαξον χειρῶν.
- ΜΕ. οὐ, πρὶν ἂν δείξω γε Δαναοῖς πᾶσι τ'ἀγγεγραμ-
μένα.
- ΑΓΑ. ἦ γὰρ οἶσθ' ἂ μὴ σε καιρὸς εἰδέναι, σήμαντρο'
ἀνείς; 325
- ΜΕ. ὥστε σ' ἀλγῦναί γ', ἀνοίξας, ἂ σὺ κἀκ' εἰργάσω
λάθρα.
- ΑΓΑ. ποῦ δὲ κἄλλαβές νιν; ὦ θεοί, σῆς ἀναισχύντου
φρενός.
- ΜΕ. προσδοκῶν σὴν παῖδ' ἀπ' Ἀργους, εἰ στράτευμ'
ἀφίξεται.
- ΑΓΑ. τί δέ σε τὰμὰ δεῖ φυλάσσειν; οὐκ ἀναισχύντου
τόδε;
- ΜΕ. ὅτι τὸ βούλεσθαί μ' ἐκνίξε· σὸς δὲ δοῦλος οὐκ
ἔφυν. 330

ΑΓΑ. οὐχὶ δεινά; τὸν ἐμὸν οἴκειν οἶκον οὐκ ἔῤῃς ἐμέ;

ΜΕ. πλάγια γὰρ φρονεῖς, τὰ μὲν νῦν, τὰ δὲ πάλαι, τὰ
δ' αὐτίκα.

ΑΓΑ. εὖ κεκόμψευσαι· πονηρῶν γλῶσσο' ἐπίφθονον
σοφῇ.

ΜΕ. νοῦς δέ γ' οὐ βέβαιος ἄδικον κτῆμα κοῦ σαφές
φίλοις. 334

βούλομαι δέ σ' ἐξελέγξαι, καὶ σὺ μήτ' ὀργῆς ὕπο
ἀποτρέπου τάληθές, οὔτε κατατενω λίαν ἐγώ.

οἶσθ' ὅτ' ἐσπούδαξες ἄρχειν Δαναΐδαις πρὸς Ἴλιον,
τῷ δοκεῖν μὲν οὐχὶ χρήζων, τῷ δὲ βούλεσθαι
θέλων,

ὥς ταπεινὸς ἦσθα πᾶσι, δεξιᾶς προσδιγγάνων 339
καὶ θύρας ἔχων ἀκλήστους τῷ θέλουντι δημοτῶν,
καὶ διδοὺς πρόσρησιν ἐξῆς πᾶσι, κελὶ μή τις θέλοι,
τοῖς τρόποις ζητῶν πρίσθαι τὸ φιλότιμον ἐκ μέ-
σου;

καῖτ' ἐπεὶ κατέσχες ἀρχάς, μεταβαλὼν ἄλλους
τρόπους

τοῖς φίλοισιν οὐκέτ' ἦσθα τοῖς πρὶν ὥς πρόσθεν
φίλος,

δυσπρόσιτος ἔσω τε κλήθρων σπάνιος. ἄνδρα δ'
οὐ χρεῶν 345

τὸν ἀγαθὸν πρᾶσσοντα μεγάλα τοὺς τρόπους με-
θιστάναι,

ἀλλὰ καὶ βέβαιον εἶναι τότε μάλιστα τοῖς φίλοις
ἡνίκ' ὠφελεῖν μάλιστα δυνατός ἐστιν εὐτυχῶν.

ταῦτα μὲν σε πρῶτ' ἐπῆλθον, ἵνα σε πρῶθ' ὀρῶ
κακόν.

ὥς δ' ἐς Αὔλιν ἦλθες αὖθις, ᾧ Πανελλήνων
στρατὸς 350

οὐρίας πομπῆς σπανίζων, Δαναΐδαι δ' ἀφιέναι 352
ναῦς διήγγελλον, μάτην δὲ μὴ πονεῖν ἐν Αὐ-
λίδι, 353

* * * * *

κἀμὲ παρεκάλεις· τί δρᾶσω; τίνα δὲ πόρον εὔρω
πόθεν, 356

ὥστε μὴ στερέντας ἀρχῆς ἀπολέσαι καλὸν κλέος;
κᾶτ' ἐπεὶ Κάλχας ἐν ἱεροῖς εἶπε σὴν θῦσαι κόρην
Ἀρτέμιδι καὶ πλοῦν ἔσεσθαι Δαναΐδαις, ἥσθεις
φρένας 359

ἄσμενος θύσειν ὑπέστης παῖδα· καὶ πέμπεις ἐκὼν,
οὐ βία, μὴ τοῦτο λέξης, σῇ δάμαρτι, παῖδα σὴν
δεῦρ' ἀποστέλλειν, Ἀχιλλεῖ πρόφασιν ὥς γαμου-
μένην.

οὗτος αὐτός ἐστιν αἰθὴρ ὃς τάδ' ἤκουσεν σέθεν. 365
μυριοὶ δέ τοι πεπόνθασ' αὐτὸ πρὸς τὰ πράγματα·
ἐκπονοῦς' ἐκόντες, εἶτα δ' ἐξεχώρησαν κακῶς,
τὰ μὲν ὑπὸ γνῶμης πολιτῶν ἀσυνέτου, τὰ δ' ἐν-
δίκως

ἀδύνατοι γεγῶτες αὐτοὶ διαφυλάξασθαι πόλιν.
Ἑλλάδος μάλιστ' ἔγωγε τῆς τάλαιπώρου στένω, 370
ἢ θέλουσα δρᾶν τι κεδνόν, βαρβάρους τοὺς οὐ-
δένας

καταγελῶντας ἐξανήσει διὰ σὲ καὶ τὴν σὴν κόρην.
μηδέν' ἄρα χρέους ἔκατι προστάτην θείμην χθονός,
μηδ' ὅπλων ἄρχοντα· νοῦν χρὴ τὸν στρατηλάτην
ἔχειν·

οὐδὲν ἦσθ', ἀλλ' ἐξεπλήσσον τῇ τύχῃ τῇ τῶν θεῶν, 351
ὥς δ' ἄνολβον εἶχες ὄμμα σύγχυσίν τε μὴ νεῶν
χιλίων ἄρχων Πριάμου τε πεδίου ἐμπλήσας δορός. 355
κᾶτ' ὑποστρέψας λέληπαι μεταβαλὼν ἄλλας γραφάς, 363
ὥς φρονεὺς οὐκέτι θυγατρὸς σῆς ἔσει μάλιστά γε.

πόλεος ὡς ἄρχων ἀνὴρ πᾶς, ξύνεσιν ἣν ἔχων τύχη.

ΧΟ. δεινὸν κασιγνήτοισι γίννεσθαι λόγους 376
μάχας θ', ὅταν ποτ' ἐμπέσωσιν εἰς ἔριν.

ΑΓΑ. βούλομαι σ' εἰπεῖν κακῶς αὖ, βραχέα, μὴ λίαν
ἄνω

βλέφαρα πρὸς τ' ἀναιδὲς ἀγαγών, ἀλλὰ σωφρονε-
στέρως,

ὡς ἀδελφὸν ὄντ'. ἀνὴρ γὰρ χρηστὸς αἰδεῖσθαι
φιλεῖ. 380

εἰπέ μοι, τί δεινὰ φυσᾶς αἱματηρὸν ὄμμ' ἔχων;
τίς ἀδικεῖ σε; τοῦ κέχρησαι; λέκτρα χρηστ' ἐρᾶς
λαβεῖν;

οὐκ ἔχοιμ' ἂν σοι παρασχεῖν· ὦν γὰρ ἐκθήσω,
κακῶς

ῥοχες· εἴτ' ἐγὼ δίκην δῶ σῶν κακῶν, ὃ μὴ σφαλεῖς;
ἢ δάκνει σε τὸ φιλότιμον τοῦμόν; ἀλλ' ἐν ἀγκά-
λαις 385

εὐπρεπῇ γυναιῖκα χρῆξεις, τὸ λελογισμένου παρεῖς
καὶ τὸ καλόν, ἔχειν; πονηροῦ φωτὸς ἡδοναὶ κακαί.
εἰ δ' ἐγὼ γνούς πρόσθεν οὐκ εὖ μετετέθην εὐ-
βουλία,

μαίνομαι; σὺ μᾶλλον, ὅστις ἀπολέσας κακὸν λέχος
ἀναλαβεῖν θέλεις, θεοῦ σοι τὴν τύχην διδόντος εὖ.
ᾧμοσαν τὸν Τυνδάρειον ὄρκον οἱ κακόφρονες 391
φιλόγαμοι μνηστῆρες. ἦγε δ' ἐλπίς, οἶμαι μὲν,
θεὸς

κᾶξέπραξεν αὐτὸ μᾶλλον ἢ σὺ καὶ τὸ σὸν σθένος.
οὐς λαβὼν στράτευνέ γ', οἶμαι δ', εἴσῃ μωρία
φρενῶν·

οὐ γὰρ ἀσύνετον τὸ θεῖον, ἀλλ' ἔχει συνιέναι
τοὺς κακῶς παγέντας ὄρκους καὶ κατηναγκασμέ-
νους. 395

τὰμὰ δ' οὐκ ἀποκτενῶ ἔγωγέκνα· κοῦ τὸ σὸν
μὲν εὖ

παρὰ δίκην ἔσται κακίστης εὐνιδος τιμωρία,
ἐμὲ δὲ συντήξουσιν νύκτες ἡμέραι τε δακρυοῖς,
ἄνομα δρωῶντα κοῦ δίκαια παῖδας οὓς ἐγεινάμην.
ταῦτά σοι βραχέα λέλεκται καὶ σαφῆ καὶ ῥάδια· 400
εἰ δὲ μὴ βούλει φρονεῖν εὖ, τᾶμ' ἐγὼ θήσω καλῶς.

ΧΟ. οἷδ' αὖ διάφοροι τῶν πάρος λελεγεμένων
μύθων, καλῶς δ' ἔχουσι, φείδεσθαι τέκνων.

ΜΕ. αἰαῖ, φίλους ἄρ' οὐχὶ κεκτῆμην τάλας.

ΑΓΑ. εἰ τοὺς φίλους γε μὴ θέλεις ἀπολλύναι. 405

ΜΕ. δεῖξεις δὲ ποῦ μοι πατρὸς ἐκ ταύτου γεγώς;

ΑΓΑ. συνσωφρονεῖν σοι βούλομ', ἀλλ' οὐ συννοσεῖν.

ΜΕ. ἐς κοινὸν ἀλγεῖν τοῖς φίλοισι χρὴ φίλους.

ΑΓΑ. εὖ δρωῶ παρακάλει μ', ἀλλὰ μὴ λυπῶν ἐμέ.

ΜΕ. οὐκ ἄρα δοκεῖ σοι τάδε πονεῖν σὺν Ἑλλάδι; 410

ΑΓΑ. Ἑλλὰς δὲ σὺν σοὶ κατὰ θεὸν νοσεῖ τινα.

ΜΕ. σκῆπτρῳ νυν αὖχει, σὸν κασίγνητον προδοῦς·

ἐγὼ δ' ἐπ' ἄλλας εἶμι μηχανάς τινας,
φίλους τ' ἐπ' ἄλλους. ΑἴΓ. ὦ Πανελλήνων ἀναξ,
Ἀγάμεμνον, ἦκω παῖδά σοι τὴν σὴν ἄγων, 415
ἦν Ἰφιγένειαν ὠνόμαξας ἐν δόμοις.

μήτηρ δ' ὀμαρτεῖ, σῆς Κλυταιμνήστρας δέμας,
καὶ παῖς Ὀρέστης, ὥς τι τερφθείης ἰδὼν,
χρόνον παλαιὸν δωμάτων ἔκδημος ὢν.

ἀλλ' ὥς μακρὰν ἔτεινον, εὖρυτον παρὰ 420
κρήνην ἀναψύχουσι θηλύπου· βάσιν,
αὐταὶ τε πῶλοί τ'· εἰς δὲ λειμώνων χλόην
καθεῖμεν αὐτάς, ὥς βορᾶς γευσαίαιτο.

ἐγὼ δὲ πρόδρομος σῆς παρασκευῆς χάριν
ἦκω· πέπυσται γὰρ στρατός, ταχεῖα γὰρ 425
διῆξε φήμη, παῖδα σὴν ἀφιγμένην.

πᾶς δ' εἰς θέαν ὄμιλος ἔρχεται δρόμῳ,
 σὴν παῖδ' ὅπως ἴδωσιν· οἱ δ' εὐδαίμονες
 ἐν πᾶσι κλεινοὶ καὶ περίβλεπτοι βροτοῖς.
 λέγουσι δ', ὑμέναιός τις ἢ τί πράσσεται;
 ἢ πόθον ἔχων θυγατρὸς Ἀγαμέμνων ἄναξ
 ἐκόμισε παῖδα; τῶν δ' ἂν ἤκουσας τάδε·
 Ἀρτέμιδι προτελίζουσι τὴν νεάνίδα,
 Αὐλίδος ἀνάσση. τίς νιν ἄξεται ποτε;
 ἀλλ' εἶα, τὰπὶ τοισίδ' ἐξάρχου κανᾶ,
 στεφανοῦσθε κρᾶτα καὶ σὺ Μενελέως τ' ἄναξ,
 ὑμέναιον εὐτρέπιξε καὶ κατὰ στέγας
 λωτὸς βοάσθω καὶ ποδῶν ἔστω κτύπος·
 φῶς γὰρ τόδ' ἦκει μακάριον τῇ παρθένῳ.

ΑΓΑ. ἐπήνεσ', ἀλλὰ στεῖχε δωμάτων ἔσω·
 τὰ δ' ἄλλ' ἰούσης τῆς τύχης ἔσται καλῶς.
 οἴμοι, τί φῶ δύστηνος; ἄρξομαι πόθεν;
 εἰς οἷ' ἀνάγκης ξεύγματ' ἐμπεπτώκαμεν.
 ὑπῆλθε δαίμων, ὥστε τῶν σοφισμάτων
 πολλῶ γενέσθαι τῶν ἐμῶν σοφώτερος.
 ἢ δυσγένεια δ' ὥς ἔχει τι χρήσιμον.
 καὶ γὰρ δακρυῦσαι ῥαδίως αὐτοῖς ἔχει,
 ἅπαντά τ' εἰπεῖν. τῷ δὲ γενναίῳ φύσιν
 ἄνολβα ταῦτα. προστάτην δὲ τοῦ βίου
 τὸν ὄγκον ἔχομεν τῷ τ' ὀχλῷ δουλεύομεν.
 ἐγὼ γὰρ ἐκβαλεῖν μὲν αἰδοῦμαι δάκρυ,
 τὸ μὴ δακρυῦσαι δ' αὖθις αἰδοῦμαι τάλας,
 εἰς τὰς μεγίστας συμφορὰς ἀφιγμένος.
 εἶεν, τί φήσω πρὸς δάμαρτα τὴν ἐμήν;
 πῶς δέξομαί νιν; ποῖον ὄμμα συμβαλῶ;
 καὶ γάρ μ' ἀπώλεσ' ἐπὶ κακοῖς ἅ μοι πάρα
 ἐλθοῦς' ἀκλητος. εἰκότως δ' ἅμ' ἔσπετο
 θυγατρὶ νυμφεύσουσα καὶ τὰ φίλτατα

δῶσονς, ἔν' ἡμᾶς ὄντας εὐρήσει κακούς.
 τὴν δ' αὖ τάλαιναν παρθένον, τί παρθένον; 460
 Αἰδῆς νιν ὥς ἔοικε νυμφεύσει τάχα,
 ὥς ὥκτισ'· οἶμαι γάρ νιν ἱκετεύσειν τάδε·
 ὦ πάτερ, ἀποκτενεῖς με; τοιούτους γάμους
 γήμειας αὐτὸς χῶστις ἐστὶ σοι φίλος.
 παρὼν δ' Ὀρέστης ἐγγὺς ἀναβοήσεται 465
 οὐ συνετὰ συνετῶς· ἔτι γάρ ἐστι νῆπιος.
 αἰαῖ, τὸν Ἑλένης ὥς μ' ἀπώλεσεν γάμον
 γήμας ὁ Πριάμου Πάρις, ὃ μ' εἰργασται τάδε.

ΧΟ. καὶ γὰρ κατ' ὥκτειρ', ὥς γυναιῖκα δεῖ ξένην
 ὑπὲρ τυράννων συμφορᾶς καταστένειν. 470

ΜΕ. ἀδελφέ, δός μοι δεξιᾶς τῆς σῆς θιγεῖν.

ΑΓΑ. δίδωμι· σὸν γὰρ τὸ κράτος, ἄθλιος δ' ἐγώ.

ΜΕ. Πέλοπα κατόμνυμ', ὃς πατὴρ τοῦμοῦ πατρὸς
 τοῦ σοῦ τ' ἐκλήθη, τὸν τεκόντα τ' Ἀτρεά,
 ἥ μὴν ἐρεῖν σοι τὰ πὸ καρδίας σαφῶς 475

καὶ μὴ πίτηδες μηδὲν ἄλλ' ὅσον φρονῶ.
 ἐγὼ σ' ἀπ' ὅσων ἐκβαλόντ' ἰδὼν δάκρυ
 ὥκτειρα καὐτὸς ἀνταφῆκά σοι πάλιν
 καὶ τῶν παλαιῶν ἐξαφίσταμαι λόγων,
 οὐκ εἰς σέ δεινός· εἴμι δ' οὐ̃περ εἴ σὺ νῦν· 480

καὶ σοι παραινῶ μὴτ' ἀποκτείνειν τέκνον
 μὴτ' ἀνθελέσθαι τοῦμόν. οὐ γὰρ ἔνδικον
 σέ μὲν στενάζειν, τὰ μὰ δ' ἡδέως ἔχειν,
 θνήσκειν τε τοὺς σοὺς, τοὺς δ' ἐμοὺς ὀρᾶν φάος.
 τί βούλομαι γάρ; οὐ γάμους ἐξαιρέτους 485

ἄλλους λάβοιμ' ἄν, εἰ γάμων ἱμεῖρομαι;
 ἀλλ' ἀπολέσας ἀδελφόν, ὃν μ' ἥκιστ' ἐχρῆν,
 Ἑλένην ἔλωμαι, τὸ κακὸν ἀντὶ τάγαθοῦ;
 ἄφρων νέος τ' ἦν, πρὶν τὰ πράγματ' ἐγγύθεν
 σκοπῶν ἐσεῖδον οἷον ἦν κτείνειν τέκνα. 490

ἄλλως τέ μ' ἔλεος τῆς ταλαιπώρου κόρης
 ἐσῆλθε, συγγένειαν ἐννοουμένῳ,
 ἢ τῶν ἐμῶν ἕκατι θύεσθαι γάμων
 μέλλει. τί δ' Ἑλένης παρθένῳ τῇ σῇ μέτα;
 ἵτω στρατεία διαλυθεῖς' ἐξ Αὐλίδος. 49
 σὺ δ' ὄμμα παῦσαι δακρύοις τέργων τὸ σόν,
 ἀδελφέ, κἀμὲ παρακαλῶν εἰς δάκρυα.
 εἰ δέ τι κόρης σῆς θεσφάτων μέτεστί σοι,
 μὴ' μοι μετέστω· σοὶ νέμω τοῦμὸν μέρος.
 ἀλλ' εἰς μεταβολὰς ἦλθον ἀπὸ δεινῶν λόγων. 50
 εἰκὸς πέπονθα· τὸν ὁμόθεν πεφυκότα
 στέργων μετέπεσον. ἀνδρὸς οὐ κακοῦ τρόποι
 τοιοῖδε, χρῆσθαι τοῖσι βελτίστοις αἰεὶ.

ΧΟ. γενναί' ἔλεξας Ταντάλῳ τε τῷ Διὸς
 πρόποντα· προγόνους οὐ καταισχύνεις σέθεν. 50

ΑΓΑ. αἰνῶ σε, Μενέλεως, ὅτι παρὰ γνώμην ἐμὴν
 ὑπέθηκας ὀρθῶς τοὺς λόγους σοῦ τ' ἀξίως.
 ταραχὴ δ' ἀδελφῶν διὰ τ' ἔρωτα γίνεται
 πλεονεξίαν τε δωμάτων· ἀπέπτυσα
 τοιάνδε συγγένειαν ἀλλήλοιν πικράν. 51
 ἀλλ' ἤκομεν γὰρ εἰς ἀναγκαίης τύχας,
 θυγατρὸς αἵματηρὸν ἐκπροᾶσαι φόνον.

ΜΕ. πῶς; τίς δ' ἀναγκάσει σε τήν γε σὴν κτανεῖν;

ΑΓΑ. ἅπας Ἀχαιῶν σύλλογος στρατεύματος.

ΜΕ. οὐκ, εἴ νιν εἰς Ἄργος γ' ἀποστελεῖς πάλιν. 51

ΑΓΑ. λάθοιμι τοῦτ' ἄν. ἀλλ' ἐκεῖν' οὐ λήσομεν.

ΜΕ. τὸ ποῖον; οὔτοι χρὴ λίαν ταρβεῖν ὄχλον.

ΑΓΑ. Κάλχας ἐρεῖ μαντεύματ' Ἀργείων στρατῶ.

ΜΕ. οὐκ, ἦν σανῇ γε πρόσθε· τοῦτο δ' εὐμαρές.

ΑΓΑ. τὸ μαντικὸν πᾶν σπέρμα φιλότιμον κακόν. 52

ΜΕ. κούδέν γ' ἄρεστον οὐδὲ χρήσιμον παρόν.

ΑΓΑ. ἐκεῖνο δ' οὐ δέδοικας ὅ τι μ' εἰσέρχεται;

ΜΕ. ὃν μὴ σὺ φράξεις, πῶς ὑπολάβοιμ' ἄν λόγον;

ΑΓΑ. τὸ Σισύφειον σπέρμα πάντ' οἶδεν τάδε.

ΜΕ. οὐκ ἔστ' Ὀδυσσεὺς ὅ τι σὲ κἄμ' ἐπημανεῖ. 525

ΑΓΑ. ποικίλος ἀεὶ πέφυκε τοῦ τ' ὄχλου μέτα.

ΜΕ. φιλοτιμία μὲν ἐνέχεται, δεινῷ κακῷ.

ΑΓΑ. οὐκοῦν δόκει νιν στάντ' ἐν Ἀργείοις μέσοις
λέξειν ἃ Κάλχας θέσφατ' ἐξηγήσατο,
κἄμ' ὥς ὑπέστην θῦμα κἄτα ψεύδομαι, 530

Ἀρτέμιδι θύσειν ὃς ξυναρπάσας στρατόν,
σὲ κἄμ' ἀποκτείναντας Ἀργείους κόρην
σφάξαι κελεύσει. κἂν πρὸς Ἄργος ἐκφύγῃ,
ἐλθόντες αὐτοῖς τείχεσιν Κυκλωπίους
ξυναρπάσουσι καὶ κατασκάψουσι γῆν. 535

τοιαῦτα τὰμὰ πῆματ'. ὦ τάλας ἐγώ,
ὥς ἠπόρημαι πρὸς θεῶν τὰ νῦν τάδε.
ἔν μοι φύλαξον, Μενέλεως, ἀνὰ στρατὸν
ἐλθών, ὅπως ἂν μὴ Κλυταιμνήστρα τάδε
μάθῃ, πρὶν Ἄϊδῃ παῖδ' ἐμὴν προσθῶ λαβών, 540
ὥς ἐπ' ἐλαχίστοις δακρύοις πράσσω κακῶς.
ὑμεῖς τε σιγὴν, ὦ ξένοι, φυλάσσετε.

ΧΟ. μάκαρες οἷ μετρίας θεοῦ στρ. 545

μετά τε σωφροσύνας μετέ-
σχον λέκτρων Ἀφροδίτας,
γαλανεῖα χρησάμενοι
μεινολαῶν οἷστρων, ὅθι δὴ
δίδυμ' Ἔρως ὁ χρυσοκόμας
τόξ' ἐντείνεται χαρίτων,
τὸ μὲν ἐπ' εὐαίῳνι πότμῳ, 550
τὸ δ' ἐπὶ συγχύσει βιοτᾶς.
ἀπενέπω νιν ἀμετέρων,
Κύπρι καλλίστα, θαλάμων.

εἴη δέ μοι μετρία μὲν
 χάρις, πόθοι δ' ὅσιοι, 555
 καὶ μετέχοιμι τᾷς Ἀφροδί-
 τας, πολλὰν δ' ἀποθεύμαν.
 διάφοροι δὲ φύσεις βροτῶν, 560
 διάφοροι δὲ τρόποι· τὸ δ' ὄρ-
 θῶς ἐσθλὸν σαφεὲς αἰεὶ·
 τροφαί θ' αἰ παιδεύομεναι
 μέγα φέρουσιν εἰς ἀρετάν,
 τό τε γὰρ αἰδεῖσθαι σοφία,
 τάν τ' ἐξαλλάσσουσιν ἔχει 565
 χάριν ὑπὸ γνώμας ἐσορᾶν
 τὸ δέον, ἔνθα δόξα φέρει
 κλέος ἀγήρατον βιοτᾶ.
 μέγα τι θηρεύειν ἀρετάν,
 γυναιξὶν μὲν κατὰ Κύπριν
 κρυπτάν, ἐν ἀνδράσι δ' αὖ 570
 κόσμος ἐνὼν ὁ μυριοπλη-
 θῆς μείζω πόλιν αὔξει.
 ἔμολες, ὦ Πάρις, ἦτε σύ γε
 βουκόλος ἀργενναῖς ἐτράφης
 Ἰδαίαις παρὰ μόσχους, 575
 βάρβαρα συρίζων, Φρυγίων
 αὐλῶν Ὀλύμπου καλάμοις
 μιμήματα πνέων.
 εὖθηλοι δὲ τρέφοντο βόες,
 ὅτι σε κρίσις ἔμηνε θεῶν, 580
 ἅ σ' Ἑλλάδα πέμπει
 τῶν ἐλεφαντοδέτων πάροι-
 θεν δόμων, ὃς τᾷς Ἑλένας
 ἐν ἀντωποῖς βλεφάρουσιν
 ἔρωτα δέδωκας, 585

ἔρωτι δ' αὐτὸς ἐπτοάθης.

ὄθεν ἔρις ἔριν

Ἑλλάδα σὺν δορὶ ναυσί τ' ἄγει

ἔς Τροίας πέργαμα.

ἰὼ ἰὼ· μεγάλαι μεγάλων

590

εὐδαιμονίαι· τὴν τοῦ βασιλέως

ἴδεν' Ἰφιγένειαν ἄνασσαν

τὴν Τυνδαρέου τε Κλυταιμνήστραν,

ὥς ἐκ μεγάλων ἐβλαστήκασ'

ἐπὶ τ' εὐμήκεις ἤκουσι τύχας.

595

θεοὶ τοι κρείσσους οἵ τ' ὀλβοφόροι

τοῖς οὐκ εὐδαίμοσι θνατῶν.

[στῶμεν, Χαλκίδος ἔκγονα θρέμματα,

τὴν βασίλειαν δεξώμεθ' ὄχων

ἄπο μὴ σφαλερῶς ἐπὶ γαῖαν,

600

ἄρανῶς δὲ χεροῖν μαλακῇ γνώμῃ,

μὴ ταρβήσῃ νεωστί μοι μολὸν

τὸ κλεινὸν τέκνον Ἀγαμέμνωνος,

μηδὲ θόρυβον μηδ' ἐκπληξιν

ταῖς Ἀργείαις

605

ξεῖναι ξείναις παρέχωμεν.]

ΚΑ. ὄρνιθα μὲν τόνδ' αἵσιον ποιούμεθα,

τὸ σὺν τε χρηστὸν καὶ λόγων εὐφημίαν·

ἐλπίδα δ' ἔχω τιν' ὥς ἐπ' ἐσθλοῖσιν γάμοις

πάρεμι νυμφαγωγός. ἀλλ' ὀχημάτων

610

ἔξω πορεύεθ' ἃς φέρω φερνὰς κόρη,

καὶ πέμπει' εἰς μέλαθρον εὐλαβούμενοι.

σὺ δ', ὦ τέκνον μοι, λείπε πωλικοὺς ὄχους,

ἄβρον τιθεῖσα κῶλον ἄσθενές θ' ἅμα.

ὕμεις δὲ νεάνιδές νιν ἀγκάλαις ἔπι

615

δέξασθε καὶ πορεύσατ' ἐξ ὀχημάτων.

καί μοι χερὸς τις ἐνδότη στήριγματα,

- θάκους ἀπήνης ὡς ἂν ἐκλίπω καλῶς.
αἰ δ' εἰς τὸ πρόσθεν στῆτε πωλικῶν ζυγῶν,
φοβερόν γάρ ἀπαράμυθον ὄμμα πωλικόν· 620
καὶ παῖδα τόνδε τὸν Ἀγαμέμνονος γόνον
λάξυσθ', Ὀρέστην· ἔτι γάρ ἐστι νῆπιος.
τέκνον, καθεύδεις πωλικῶ δαμεις ὄχρ;
ἔγρει' ἀδελφῆς ἐφ' ὑμέναιον εὐτυχῶς·
ἄνδρὸς γὰρ ἀγαθοῦ κῆδος αὐτὸς ἐσθλὸς ὢν 625
λήψει, τὸ τῆς Νηρηΐδος ἰσόθεον γένος.
[ἐξῆς κἀθησο δευρό μου ποδός, τέκνον,
πρὸς μητέρ', Ἰφιγένεια, μάκαρίαν δέ με
ξέναισι ταῖσδε πλησία σταθεῖσα δός,
καὶ δεῦρο δὴ πατέρα πρόσσειπε σὸν φίλον. 630
ΙΦ. ὦ μητερ, ὑποδραμοῦσά γ', ὀργισθῆς δὲ μή,
πρὸς στέρνα πατρὸς στέρνα τὰμὰ περιβαλῶ.]
ΚΛ. ὦ σέβας ἐμοὶ μέγιστον, Ἀγαμέμνων ἀνάξ,
ἤκομεν, ἐφετμαῖς οὐκ ἀπιστοῦσαι σέθεν.
ΙΦ. [ἐγὼ δὲ βούλομαι τὰ σὰ στέρν', ὦ πάτερ, 635
ὑποδραμοῦσα προσβαλεῖν διὰ χρόνου.
ποθῶ γὰρ ὄμμα δὴ σόν. ὀργισθῆς δὲ μή.
ΚΛ. ἀλλ', ὦ τέκνον, χρή· φιλοπάτωρ δ' αἰεί ποτ' εἴ
μάλιστα παίδων τῶδ' ὅσους ἐγὼ τέκον.]
ΙΦ. ὦ πάτερ, ἐσεῖδόν σ' ἀσμένῃ πολλῶ χρόνῳ. 640
ΑΓΑ. καὶ γὰρ πατὴρ σέ· τόδ' ἴσον ὑπὲρ ἀμφοῖν λέγεις.
ΙΦ. χαῖρ'· εὖ δέ μ' ἀγαγὼν πρὸς σ' ἐποίησας, πάτερ.
ΑΓΑ. οὐκ οἶδ' ὅπως φῶ τοῦτο καὶ μὴ φῶ, τέκνον.
ΙΦ. ἔα·
ὡς οὐ βλέπεις ἔκηλον, ἄσμενός μ' ἰδών.
ΑΓΑ. πόλλ' ἀνδρὶ βασιλεῖ καὶ στρατηλάτῃ μέλει. 645
ΙΦ. παρ' ἐμοὶ γενοῦ νῦν, μὴ' πλὴ φροντίδας τρέπου.
ΑΓΑ. ἀλλ' εἰμὶ παρὰ σοὶ νῦν ἅπας κοῦκ ἄλλοθι.
ΙΦ. μέθες νυν ὀφρὺν ὄμμα τ' ἐκτεινον φίλον.

ΑΓΑ. ἰδοὺ γέγηθά σ' ὥς γέγηθ' ὄρωϊν, τέκνον.

ΙΦ. κᾶπειτα λείβεις δάκρυ' ἀπ' ὀμμάτων σέθεν; 650

ΑΓΑ. μακρὰ γὰρ ἡμῖν ἡ 'πιούσ' ἀπουσία.

ΙΦ. οὐκ οἶδ' ὅ τι φῆς, οὐκ οἶδα, φίλτατ' ἐμοὶ πάτερ.

ΑΓΑ. συνετὰ λέγουσα μᾶλλον εἰς οἶκτόν μ' ἄγεις.

ΙΦ. ἀσύνετὰ νυν ἔροῦμεν, εἰ σέ γ' εὐφρανῶ.

ΑΓΑ. παπαῖ. τὸ σιγαῶν οὐ σθένω· σέ δ' ἤνεσα. 655

ΙΦ. μέν', ὦ πάτερ, κατ' οἶκον ἐπὶ τέκνοις σέθεν.

ΑΓΑ. θέλω γε· τὸ θέλειν δ' οὐκ ἔχων ἀλγύνομαι.

ΙΦ. ὅλοιτο λόγχοι καὶ τὰ Μενέλεω κακά.

ΑΓΑ. ἄλλους ὀλεῖ πρόσθ' ἀμὲρ διολέσαντ' ἔχει.

ΙΦ. ὥς πολὺν ἀπῆσθα χρόνον ἐν Αὐλίδος μυχοῖς. 660

ΑΓΑ. καὶ νῦν γέ μ' ἴσχει δῆ τι μὴ στέλλειν στρατόν.

ΙΦ. ποῦ τοὺς Φρύγας λέγουσιν ὤκισθαι, πάτερ;

ΑΓΑ. οὐ μή ποτ' οἴκεῖν ὥφελ' ὁ Πριάμον Πάρις.

ΙΦ. μακράν γ' ἀπαίρεις, ὦ πάτερ, λιπὼν ἐμέ;

ΑΓΑ. εἰς ταυτόν, ὦ θύγατερ, σύ θ' ἦκεις σῶ πατρί. 665

ΙΦ. φεῦ·

εἰθ' ἦν καλόν μοι σοί τ' ἄγειν σύμπλουν ἐμέ.

ΑΓΑ. ἔπεστι καὶ σοὶ πλοῦς, ἵνα μνήσει πατρός.

ΙΦ. σὺν μητρὶ πλεύσας ἢ μόνη πορεύσομαι;

ΑΓΑ. μόνη, μονωθεῖς ἀπὸ πατρὸς καὶ μητέρος.

ΙΦ. οὐ πού μ' ἐς ἄλλα δώματ' οἰκίζεις, πάτερ; 670

ΑΓΑ. ἔασον. οὐ χρὴ τοιάδ' εἰδέναι κόρας.

ΙΦ. σπεῦδ' ἐκ Φρυγῶν μοι, θέμενος εὔ τᾶκεῖ, πάτερ.

ΑΓΑ. θῦσαί με θυσίαν πρῶτα δεῖ τιν' ἐνθάδε.

ΙΦ. ἀλλὰ ξὺν ἱεροῖς χρὴ τό γ' εὐσεβὲς σκοπεῖν.

ΑΓΑ. εἴσει σύ· χερνίβων γὰρ ἐσθήξει πέλας. 675

ΙΦ. στησόμεν ἄρ' ἀμφὶ βωμόν, ὦ πάτερ, χορούς;

ΑΓΑ. ζηλῶ σέ μᾶλλον ἢ μὲ τοῦ μηδὲν φρονεῖν.

χώρει δὲ μελάθρων ἐντὸς ὀφθῆναι κόραις,

πικρὸν φίλημα δοῦσα δεξιάν τ' ἐμοί,

- μέλλουσα δαρὸν πατρὸς ἀποικήσειν χρόνον. 680
 ὦ στέρνα καὶ παρῆδες, ὦ ξανθαὶ κόμαι,
 ὡς ἄχθος ὑμῖν ἐγένεθ' ἡ Φρυγῶν πόλις
 Ἑλένη τε· πᾶν τούτους λόγους· ταχεῖα γὰρ
 νοτὶς διώκει μ' ὀμμάτων ψαύσαντά σου.
 ἴθ' εἰς μέλαθρα. σὲ δὲ παραιτοῦμαι τάδε, 685
 Αἰήδας γένεθλον, εἰ κατωκτίσθην ἄραν,
 μέλλων Ἀχιλλεῖ θυγατέρ' ἐκδώσειν ἐμήν.
 ἀποστολαὶ γὰρ μακάριαι μὲν, ἀλλ' ὅμως
 δάκνουσι τοὺς τεκόντας, ὅταν ἄλλοις δόμοις
 παῖδας παραδιδῶ πολλὰ μοχθήσας πατήρ. 690
ΚΛ. οὐχ ὧδ' ἀσύνετός εἰμι, πείσεσθαι δέ με
 καὐτήν δόκει τάδ', ὥστε μὴ σε νουθετεῖν,
 ὅταν ξὺν ὑμεναίοισιν ἐξάγω κόρην·
 ἀλλ' ὁ νόμος ἀντὰ τῷ χρόνῳ συνισχανεῖ.
 τοῦνομα μὲν οὖν παῖδ' οἶδ' ὅτῳ κατήνεσας, 695
 γένους δὲ ποίου χάποθ' ἐν, μαθεῖν θέλω.
ΑΓΑ. Αἴγινα θυγάτηρ ἐγένετ' Ἀσωποῦ πατρός.
ΚΛ. ταύτην δὲ θυητῶν ἢ θεῶν ἐξευξε τίς;
ΑΓΑ. Ζεὺς· Αἰακὸν δ' ἔφυσεν, Οἰνῶνῃς πρόμον.
ΚΛ. τοῦ δ' Αἰακοῦ παῖς τίς κατέσχε δῶματα; 700
ΑΓΑ. Πηλεὺς· ὁ Πηλεὺς δ' ἔσχε Νηρέως κόρην.
ΚΛ. θεοῦ διδόντος, ἢ βίᾳ θεῶν λαβών;
ΑΓΑ. Ζεὺς ἡγγύησε καὶ δίδωσ' ὁ κύριος.
ΚΛ. γαμεῖ δὲ ποῦ νιν; ἢ κατ' οἶδμα πόντιον;
ΑΓΑ. Χείρων ἔν' οἴκεϊ σεμνὰ Πηλείου βάθρα. 705
ΚΛ. οὗ φασι Κενταύρειον ὠκίσθαι γένος;
ΑΓΑ. ἐνταῦθ' ἔδαισαν Πηλέως γάμους θεοί.
ΚΛ. Θέτις δ' ἔθρεψεν ἢ πατήρ Ἀχιλλέα;
ΑΓΑ. Χείρων, ἔν' ἥθη μὴ μάθοι κακῶν βροτῶν.
ΚΛ. φεῦ·
 σοφός γ' ὁ θρέψας χά διδοὺς σοφώτερος. 710

- ΑΓΑ. τοιόσδε παίδος σῆς ἀνὴρ ἔσται πόσις.
 ΚΑ. οὐ μεμπτός. οἶκεῖ δ' ἄστυ ποῖον Ἑλλάδος;
 ΑΓΑ. Ἀπιδανὸν ἀμφὶ ποταμὸν ἐν Φθίας ὄροις.
 ΚΑ. ἐκεῖσ' ἀπάξεις σὴν ἐμήν τε παρθένον;
 ΑΓΑ. κείνῳ μελήσει ταῦτα τῷ κεκτημένῳ. 715
 ΚΑ. ἀλλ' εὐτυχοίτην. τίνι δ' ἐν ἡμέρᾳ γαμεῖ;
 ΑΓΑ. ὅταν σελήνης εὐτυχῆς ἔλθῃ κύκλος.
 ΚΑ. προτέλεια δ' ἤδη παίδος ἔσφαξας θεᾷ;
 ΑΓΑ. μέλλω· πλὴ ταύτῃ καὶ καθέσταμεν τύχῃ.
 ΚΑ. κᾶπειτα δαίσεις τοὺς γάμους ἐς ὕστερον;
 ΑΓΑ. θύσας γε θύμαθ' ἀμὲ χρὴ θῦσαι θεοῖς. 720
 ΚΑ. ἡμεῖς δὲ θοίνην ποῦ γυναιξὶ θήσομεν;
 ΑΓΑ. ἐνθάδε παρ' εὐπρόμνοισιν Ἀργείων πλάταις.
 ΚΑ. καλῶς ἀναγκαίως τε· συνενέγκαι δ' ὁμῶς.
 ΑΓΑ. οἶσθ' οὖν ὃ δρᾶσον, ὦ γύναι; πιθοῦ δέ μοι. 725
 ΚΑ. τί χρῆμα; πείθεσθαι γὰρ εἰθισμαι σέθεν.
 ΑΓΑ. ἡμεῖς μὲν ἐνθάδ', οὐπὲρ ἐσθ' ὁ νυμφίος,
 ΚΑ. μητρὸς τί χωρὶς δράσεθ', ἀμὲ δρᾶν χρεῶν;
 ΑΓΑ. ἐκδώσομεν σὴν παῖδα Δαναίδων μέτα.
 ΚΑ. ἡμᾶς δὲ ποῦ χρὴ τηνικαῦτα τυγχάνειν; 730
 ΑΓΑ. χώρει πρὸς Ἄργος παρθέτους τε τημέλει.
 ΚΑ. λιποῦσα παῖδα; τίς δ' ἀνασχήσει φλόγα;
 ΑΓΑ. ἐγὼ παρέξω φῶς ὃ νυμφίοις πρόπει.
 ΚΑ. οὐχ ὁ νόμος οὔτος, σοὶ δὲ φαῦλ' ἡγεῖ τάδε.
 ΑΓΑ. οὐ καλὸν ἐν ὄχλῳ σ' ἐξομιλεῖσθαι στρατοῦ. 735
 ΚΑ. καλὸν τεκοῦσαν τὰμά μ' ἐκδοῦναι τέκνα.
 ΑΓΑ. καὶ τὰς γ' ἐν οἴκῳ μὴ μόνας εἶναι κόρας.
 ΚΑ. ὀχυροῖσι παρθενῶσι φρουροῦνται καλῶς.
 ΑΓΑ. πιθοῦ. ΚΑ. μὰ τὴν ἄνασσαν Ἀργεῖαν θεάν.
 ἐλθὼν σὺ τᾶξω πρᾶσσε, τὰν δόμοις δ' ἐγώ, 740
 ἃ χρὴ παρεῖναι νυμφίοισι παρθένοισι.
 ΑΓΑ. οἴμοι· μάτην ἦξ', ἐλπίδος δ' ἀπεσφάλην,

ἐξ ὁμμάτων δάμαρτ' ἀποστεῖλαι θέλων.
 σοφίζομαι δὲ καὶ πλὶ τοῖσι φιλτάτοις
 τέχνας πορίζω, πανταχῇ νικώμενος. 745
 ὅμως δὲ σὺν Κάλχαντι τῷ θυηπόλῳ
 τὸ τῆς θεοῦ φίλον γ', ἔμοι δ' οὐκ εὐτυχές,
 ἐξιστορήσων εἶμι, μόχθον Ἑλλάδος.
 χορὴ δ' ἐν δόμοισιν ἄνδρα τὸν σοφὸν τρέφειν
 γυναιῖκα χρηστὴν κάγαθήν, ἢ μὴ γαμεῖν. 750
 ΧΟ. ἥξει δὴ Σιμόεντα καὶ στρ.
 δίνας ἀργυροειδεῖς
 ἄγυρις Ἑλλάνων στρατιᾶς
 ἀνὰ τε ναυσὶν καὶ σὺν ὅπλοις
 Ἴλιον εἰς τὸ Τροίας 755
 Φοιβήιον δάπεδον,
 τὰν Κασάνδραν ἵν' ἀκούω
 ῥίπτειν ξανθοὺς πλοκάμους
 χλωροκόμῳ στεφάνῳ δάφνας
 κοσμηθεῖσαν, ὅταν θεοῦ 760
 μαντόσυνοι πνεύσωσ' ἀνάγκαι.
 στάσσονται δ' ἐπὶ περράμων ἀντ.
 Τροίας ἀμφί τε τείχη
 Τρῶες, ὅταν χάλκασπις Ἄρης
 πόντιος εὐπρόρροισι πλάταις 765
 εἰρεσίᾳ πελάξῃ
 Σιμουντίοις ὀχετοῖς,
 τὰν τῶν ἐν αἰθέρι δισσων
 Διοσκούρων Ἑλέναν
 ἐκ Πριάμου κομίσαι θέλων 770
 εἰς γὰρ Ἑλλάδα δοριπόντοις
 ἀσπίσι καὶ λόγχαις Ἀχαιῶν.
 Πέργαμον δὲ Φρυγῶν πόλιν

λαῖνους περὶ πύργους
 κυκλώσας Ἄρει φοινίῳ, 775
 λαιμοτόμους κεφαλὰς
 σπάσας, πόλισμα Τροίας
 πέρσας κατάκρας πόλιν,
 θήσει κόρας πολυκλαύστους
 δάμαρτά τε Πριάμουν. 780
 ἃ δὲ Διὸς Ἑλένα κόρα
 πολὺκλαυτος ἐσεῖται
 πόσιν προλιποῦσα. μήτ' ἐμοὶ
 μήτ' ἐμοῖσι τέκνων τέκνοις 785
 ἐλπὶς ἄδε ποτ' ἔλθοι,
 οἷαν αἰ πολύχρουσοι
 Λυδαὶ καὶ Φρυγῶν ἄλοχοι
 στήσουσι παρ' ἱστοῖς
 μυθοῦσαι τὰδ' ἐς ἀλλήλας. 790
 τίς ἄρα μ' εὐπλοκάμους κόμας
 ῥῦμα δακρυόεν τανύσας
 πατρίδος ὀλλυμένας ἀπολωτιεῖ;
 διὰ σέ, τὰν κύκνου δολιχαύχενος γόνου,
 εἰ δὴ φάτις ἔτυμος, 795
 ὥς ἔτεκεν Αἴδα σ'
 ὄρνιθι πταμένῳ
 Διὸς ὅτ' ἀλλάχθη δέμας,
 εἴτ' ἐν δέλτοις Πιερίσιν
 μῦθοι τὰδ' ἐς ἀνθρώπους
 ἦνεγκαν παρὰ καιρὸν ἄλλως. 800

ΑΧ. ποῦ τῶν Ἀχαιῶν ἐνθάδ' ὁ στρατηλάτης;
 τίς ἂν φράσειε προσπόλων τὸν Πηλέως
 ζητοῦντά νιν παῖδ' ἐν πύλαις Ἀχιλλέας;
 οὐκ ἐξ ἴσου γὰρ μένομεν Εὐρύπου τέλας.

- οἱ μὲν γὰρ ἡμῶν ὄντες ἄξυργες γάμων 805
οἴκους ἐρήμους ἐκλιπόντες ἐνθάδε
θάσσουσ' ἐπ' ἀκταῖς, οἱ δ' ἔχοντες εὐνίδας
καὶ παῖδας· οὕτω δεινὸς ἐμπέπτωκ' ἔρως
τῇσδε στρατείας Ἑλλάδ' οὐκ ἄνευ θεῶν.
τοῦμὸν μὲν οὖν δίκαιον ἐμὲ λέγειν χρεῶν· 810
ἄλλος δ' ὁ χρήζων αὐτὸς ὑπὲρ αὐτοῦ φράσει.
γῆν γὰρ λιπὼν Φάρσαλον ἡδὲ Πηλεά
μένω' πλὴν λεπταῖς ταισίδ' Εὐρύπου πνοαῖς,
Μυρμιδόνας ἴσχων, οἳ μ' ἀεὶ προσκειμένοι
λέγουσ'· Ἀχιλλεῦ, τί μένομεν; ποῖον χρόνον 815
ἔτ' ἐκμετρῆσαι χρὴ πρὸς Ἴλιον στόλον;
δοῖα δ', εἴ τι δράσεις, ἢ ἅπαρ' οἴκαδε στρατόν,
τὰ τῶν Ἀτρειδῶν μὴ μένων μελλήματα.
- ΚΛ. ὦ παῖ θεᾶς Νηρηΐδος, ἐνδοθεν λόγων 820
τῶν σῶν ἀκούσας' ἐξέβην πρὸς δωμάτων.
- ΑΧ. ὦ πότνι' αἰδώς, τήνδε τίνα λεύσσω ποτὲ
γυναῖκα, μορφὴν εὐπρεπῇ κεκτημένην;
ΚΛ. οὐ θαῦμά σ' ἡμᾶς ἀγνοεῖν, οἷς μὴ πάρος
προσῆκες· αἰνῶ δ' ὅτι σέβεις τὸ σωφρονεῖν.
- ΑΧ. τίς δ' εἶ; τί δ' ἦλθες Δαναῖδων εἰς σύλλογον, 825
γυνὴ πρὸς ἄνδρας ἀσπίσιν πεφραγμένους;
- ΚΛ. Αἰδᾶς μὲν εἰμι παῖς, Κλυταιμνήστρα δέ μοι
ὄνομα, πόσις δέ μου στήν' Ἀγαμέμνων ἄναξ.
- ΑΧ. καλῶς ἔλεξας ἐν βραχεὶ τὰ καίρια.
αἰσχρὸν δέ μοι γυναιξὶ συμβάλλειν λόγους. 830
- ΚΛ. μεῖνον· τί φεύγεις; δεξιάν τ' ἐμῇ χειρὶ
σύναψον, ἀρχὴν μακαρίων νυμφευμάτων.
- ΑΧ. τί φῆς; ἐγὼ σοὶ δεξιάν; αἰδοίμεθ' ἄν
Ἀγαμέμνον', εἰ ψάνοιμεν ὦν μὴ μοι θέμις.
- ΚΛ. θέμις μάλιστα, τὴν ἐμὴν ἐπεὶ γαμεῖς 835
παῖδ', ὦ θεᾶς παῖ ποντίας Νηρηίδος.

- ΑΧ. ποίους γάμους φής; ἀφασία μ' ἔχει, γύναι.
εἰ μή τι παρανοοῦσα καινουργεῖς λόγον.
- ΚΛ. πᾶσιν τόδ' ἐμπέφυκεν, αἰδεῖσθαι φίλους
καινοὺς ὀρῶσι καὶ γάμου μεμνημένους. 840
- ΑΧ. οὐπώποτ' ἐμνήστευσα παῖδα σήν, γύναι,
οὐδ' ἐξ Ἀτρειδῶν ἦλθέ μοι λόγος γάμων.
- ΚΛ. τί δῆτ' ἂν εἴῃ; σὺ πάλιν αὖ λόγους ἐμοὺς
θαύμαξ'· ἐμοὶ γὰρ θαύματ' ἐστὶ τὰ παρὰ σοῦ.
- ΑΧ. εἴκαζε· κοινόν ἐστὶν εἰκάζειν τάδε· 845
ἄμφω γὰρ οὐ ψευδόμεθα τοῖς λόγοις ἴσως.
- ΚΛ. ἀλλ' ἢ πέπονθα δεινά; μνηστεύω γάμους
οὐκ ὄντας, ὥς εἴξασιν· αἰδοῦμαι τάδε.
- ΑΧ. ἴσως ἐκερτόμησε καὶ με καὶ σέ τις.
ἀλλ' ἀμελία δὸς αὐτὰ καὶ φάυλως φέρε. 850
- ΚΛ. χαῖρ'· οὐ γὰρ ὀρθοῖς ὄμμασιν σ' ἔτ' εἰσορῶ,
ψευδῆς γενομένη καὶ παθοῦς' ἀνάξια.
- ΑΧ. καὶ σοὶ τόδ' ἐστὶν ἐξ ἐμοῦ· πόσιν δὲ σὸν
στείχω ματεύσων τῶνδε δωμάτων ἔσω. 854
- ΠΡ. ὦ ξέν', Αἰακοῦ γένεθλον, μεῖνον, ὦ σέ τοι λέγω,
τὸν θεῶς γεγῶτα παῖδα, καὶ σὲ τὴν Αἰήδας κόρην.
- ΑΧ. τίς ὁ καλῶν πύλας παροίξας; ὥς τεταρβηκῶς καλεῖ.
- ΠΡ. δοῦλος, οὐχ ἄβρύνομαι τῷδ'· ἡ τύχη γὰρ οὐκ ἔῃ.
- ΑΧ. τίνος; ἐμὸς μὲν οὐχί· χωρὶς τὰμὰ καγαμέμνονος.
- ΠΡ. τῆσδε τῆς πάροιθεν οἴκων, Τυνδάρεω δόντος
πατρός. 860
- ΑΧ. ἔσταμεν· φράζ', εἴ τι χρήξεις, ὦν μ' ἐπέσχεις
οὔνεκα.
- ΠΡ. ἢ μόνω παρόντε δῆτα ταῖσδ' ἐφέστατον πύλαις;
- ΚΛ. ὥς μόνοις λέγοις ἄν, ἔξω δ' ἔλθῃ βασιλικῶν δόμων.
- ΠΡ. ὦ τύχη πρόνοιά θ' ἢ μή, σῶσον οὐς ἐγὼ θέλω.
- ΑΧ. ὁ λόγος εἰς μέλλοντ' ἀνοίσει χρόνον· ἔχει δ' ὄγκον
τινά. 865

- ΚΛ. δεξιᾶς ἔκατι μὴ μέλλ', εἴ τί μοι χορήξεις λέγειν.
- ΠΡ. οἷσθα δῆτά μ' ὅστις ὦν σοὶ καὶ τέκνοις εὖνους
ἔφυν.
- ΚΛ. οἷδά σ' ὄντ' ἐγὼ παλαιὸν δωμάτων ἐμῶν λάτριν.
- ΠΡ. χῶτι μ' ἐν ταῖς σαῖσι φερναῖς ἔλαβεν Ἀγαμέμνων
ἄναξ.
- ΚΛ. ἦλθες εἰς Ἄργος μεθ' ἡμῶν ἀμὸς ἦσθ' ἀεὶ ποτε.
- ΠΡ. ᾧδ' ἔχει. καὶ σοὶ μὲν εὖνους εἰμί, σῶ δ' ἦσσον
πόσει. 871
- ΚΛ. ἐκκάλυπτε νῦν ποθ' ἡμῖν οὔστινας λέγεις λόγους.
- ΠΡ. παῖδα σὴν πατὴρ ὁ φύσας αὐτόχειρ μέλλει κτανεῖν.
- ΚΛ. πῶς; ἀπέπτυσ', ὦ γεραῖέ, μῦθον· οὐ γὰρ εὖ
φρονεῖς.
- ΠΡ. φασγάνῳ λευκὴν φονεύων τῆς τάλαιπώρου δέσρην.
- ΚΛ. ᾧ τάλαιν' ἐγώ. μεμηνὼς ἄρα τυγχάνει πόσις; 876
- ΠΡ. ἄρτίφρων, πλὴν εἰς σέ καὶ σὴν παῖδα· τοῦτο δ'
οὐ φρονεῖ.
- ΚΛ. ἐκ τίνος λόγου; τίς αὐτὸν οὐπάγων ἀλαστόρων;
- ΠΡ. θεσφαθ', ὥς γέ φησι Κάλχας, ἵνα πορευῇται
στρατὸς
- ΚΛ. ποῖ; τάλαιν' ἐγώ, τάλαινα δ' ἦν πατήρ μέλλει
κτανεῖν. 880
- ΠΡ. Δαρδάνου πρὸς δῶμαθ', Ἑλένην Μενέλεως ὅπως
λάβῃ.
- ΚΛ. εἰς ἄρ' Ἰφιγένειαν Ἑλένης νόστος ἦν πεπρω-
μένος;
- ΠΡ. πάντ' ἔχεις· Ἀρτέμιδι θύσειν παῖδα σὴν μέλλει
πατήρ.
- ΚΛ. ὁ δὲ γάμος τίς εἶχε πρόφασιν, ἥ μ' ἐκόμισεν ἐκ
δόμων;
- ΠΡ. ἵν' ἀγάγοις χαίρουσ' Ἀχιλλεῖ παῖδα νυμφεύσουσα
σὴν. 885

ΚΛ. ὦ θύρατερ, ἦκεις ἐπ' ὀλέθρῳ καὶ σὺ καὶ μήτηρ
σέθεν.

ΠΡ. οἴκτρά πάσχετον δὺ' οὔσαι· δεινὰ δ' Ἀγαμέμνων
ἔτλη.

ΚΛ. οἷχομαι τάλαινα, δάκρυόν τ' ὄμματ' οὐκέτι στέγει.

ΠΡ. εἵπερ ἄλγεινόν τὸ τέκνων στερομένην δακρυρροεῖν.

ΚΛ. σὺ δὲ τάδ', ὦ γέρον, πόθεν φῆς εἰδέναι πεπνυ-
σμένος; 890

ΠΡ. δέλτον ὠχόμην φέρων σοι πρὸς τὰ πρὶν γεγραμ-
μένα.

ΚΛ. οὐκ ἐὼν ἢ ξυγκελεύων παῖδ' ἄγειν θανουμένην;

ΠΡ. μὴ μὲν οὖν ἄγειν· φρουρῶν γὰρ ἔτυχε σὸς πόσις
τότ' εὔ.

ΚΛ. καῖτα πῶς φέρων γε δέλτον οὐκ ἐμοὶ δίδως λαβεῖν;

ΠΡ. Μενέλεως ἀφείλεθ' ἡμᾶς, ὃς κακῶν τῶνδ' αἰ-
τιος. 895

ΚΛ. ὦ τέκνον Νηρῆδος, ὦ παῖ Πηλέως, κλύεις τάδε;

ΑΧ. ἔκλυον οὔσαν ἀθλίαν σε, τὸ δ' ἐμὸν οὐ φαύλως
φέρω.

ΚΛ. παῖδά μου κατακτενοῦσι σοῖς δολώσαντες γάμοις.

ΑΧ. μέμφομαι καὶ γὰρ πόσει σῶ, κοῦχ ἁπλῶς οὔτω φέρω.

ΚΛ. οὐκ ἐπαιδεσθησόμεσθα προσπεσεῖν τὸ σὸν γόνυ, 900
θυητὸς ἐκ θεᾶς γεγῶτα· τί γὰρ ἐγὼ σεμνύνομαι;
περὶ τίνοσ σπουδαστέον μοι μᾶλλον ἢ τέκνον πέρι;
ἀλλ' ἄμυνον, ὦ θεᾶς παῖ, τῇ τ' ἐμῇ δυσπραξίᾳ
τῇ τε λεχθείσῃ δάμαρτι σῇ, μάτην μὲν, ἀλλ' ὅμως.
σοὶ καταστέψασ' ἐγὼ νιν ἦγον ὥς γαμουμένην, 905
νῦν δ' ἐπὶ σφαγὰς κομίζω· σοὶ δ' ὄνειδος ἴξεται,
ὅστις οὐκ ἤμυνας· εἰ γὰρ μὴ γάμοισιν ἐξύγης,
ἀλλ' ἐκλήθης γοῦν ταλαίνης παρθένου φίλος πόσις.
πρὸς γενειάδος σε, πρὸς σῆς δεξιᾶς, πρὸς μητέρος·

ὄνομα γὰρ τὸ σὸν μ' ἀπώλεσ', ὃ σ' ἀμυναθεῖν
 χρεῶν. 910

οὐκ ἔχω βωμὸν καταφυγεῖν ἄλλον ἢ τὸ σὸν γόνυ.
 οὐδὲ φίλος οὐδεὶς πελᾷ μοι· τὰ δ' Ἀγαμέμνονος
 κλύεις

ὦμὰ καὶ πάντολμ'· ἀφῖγμαι δ', ὥσπερ εἰσορᾷς,
 γυνή

ναυτικὸν στρατεύμ' ἄναρχον κἀπὶ τοῖς κακοῖς
 θρασύ,

χρήσιμον δ', ὅταν θέλωσιν. ἦν δὲ τολμῆσης σύ μου
 χεῖρ' ὑπερτεῖναι, σεσώσμεθ'· εἰ δὲ μή, οὐ σεσώ-
 σμεθα. 916

ΧΟ. δεινὸν τὸ τίκτειν καὶ φέρει φίλτρον μέγα,
 παῖσιν τε κοινὸν ὥσθ' ὑπερκάμνειν τέκνων.

ΑΧ. ὑψηλόφρων μοι θυμὸς αἴρεται πρόσω·
 ἐπίσταται δὲ τοῖς κακοῖσι τ' ἀσχαλᾷν 920

μετρίως τε χαίρειν τοῖσιν ἔσωγικωμένοις.
 λελογισμένοι γὰρ οἱ τοιοῖδ' εἰσὶν βροτῶν
 ὀρθῶς διαζῆν τὸν βίον γνώμης μέτα.

ἔστιν μὲν οὖν ἔν' ἡδὺ μὴ λίσαν φρονεῖν,
 ἔστιν δὲ χῶπου χρήσιμον γνώμην ἔχειν. 925

ἐγὼ δ' ἐν ἀνδρὸς εὐσεβεστάτου τραφεὶς
 Χείρωνος, ἔμαθον τοὺς τρόπους ἀπλοῦς ἔχειν.

καὶ τοῖς Ἀτρεΐδαις, ἦν μὲν ἡγῶνται καλῶς,
 πεισόμεθ'· ὅταν δὲ μὴ καλῶς, οὐ πείσομαι.

ἀλλ' ἐνθάδ' ἐν Τροίᾳ τ' ἐλευθέραν φύσιν 930
 παρέχων, Ἄρη τὸ κατ' ἐμὲ κοσμήσω δορί.

σὲ δ', ὧ σχέτλια παθοῦσα πρὸς τῶν φιλτάτων,
 ἃ δὴ κατ' ἀνδρα γίγνεται νεανίαν,

τοσοῦτον οἶκτον περιβαλὼν καταστελῶ,
 κοῦποτε κόρη σὴ πρὸς πατρός σφαγήσεται, 935

ἐμὴ φατισθεῖς· οὐ γὰρ ἐμπλέκειν πλοκάς

ἐγὼ παρῆξω σῶ πόσει τοῦμόν δέμας.
 τοῦνομα γάρ, εἰ καὶ μὴ σίδηρον ἦρατο,
 τοῦμόν φονεύσει παῖδα σήν. τὸ δ' αἷτιον
 πόσις σός· ἄγνον δ' οὐκέτ' ἐστὶ σῶμ' ἐμόν, 940
 εἰ δι' ἐμ' ὀλεῖται διὰ τε τοὺς ἐμοὺς γάμους
 ἢ δεινὰ τλᾶσα κοῦκ ἀνεκτὰ παρθένος,
 θαυμαστὰ δ' ὥς ἀνάξι' ἠτιμασμένη.
 ἐγὼ κάκιστος ἦν ἄρ' Ἀργείων ἀνὴρ,
 ἐγὼ τὸ μηδέν, Μενέλεως δ' ἐν ἀνδράσιν, 945
 ὥς οὐχὶ Πηλέως, ἀλλ' ἀλάστορος γεγώς,
 εἶπερ φονεύσει τοῦμόν ὄνομα σῶ πόσει.
 μὰ τὸν δι' ὑγρῶν κυμάτων τεθραμμένον
 Νηρέα, φυτουργὸν Θετιδος ἥ μ' ἐγείνατο,
 οὐχ ἄψεται σῆς θυγατρὸς Ἀγαμέμνων ἀναξ, 950
 οὐδ' εἰς ἄκραν χεῖρ', ὥστε προσβαλεῖν πέπλοις·
 ἢ Σίπυλος ἐστὶ πόλις ὄρισμα βαρβάρων,
 ὅθεν πεφύκασ' οἱ στρατηλάται γένος,
 Φθία δὲ τοῦμόν γ' οὐδαμοῦ κεκλήσεται.
 πικροὺς δὲ προχύτας χέρνιβας τ' ἐνάρξεται 955
 Κάλχας ὁ μάντις. τίς δὲ μάντις ἐστ' ἀνὴρ,
 ὃς ὀλίγ' ἀληθῆ, πολλὰ δὲ ψευδῆ λέγει
 τυχῶν· ὅταν δὲ μὴ τύχη, διοίχεται;
 οὐ τῶν γάμων ἕκατι, μυρίαί κόραι
 θηρῶσι λέκτρον τοῦμόν, εἴρηται τόδε· 960
 ἀλλ' ὕβριν ἐς ἡμᾶς ὕβρις' Ἀγαμέμνων ἀναξ·
 χορῇ δ' αὐτὸν αἰτεῖν τοῦμόν ὄνομ' ἐμοῦ πάρα,
 θήραμα παιδός· εἰ Κλυταιμνήστρα δ' ἐμοὶ
 μάλιστ' ἐπέισθη θυγατέρ' ἐκδοῦναι πόσει,
 ἔδωκά τ' ἂν Ἑλλήσιν, εἰ πρὸς Ἴλιον 965
 ἐν τῷδ' ἔκαμνε νόστος· οὐκ ἡρνούμεθ' ἂν
 τὸ κοινὸν αὔξειν ὧν μέτ' ἐστρατευόμεν.
 νῦν δ' οὐδὲν εἰμι παρὰ γε τοῖς στρατηλάταις,

- ἐν εὐμαρεῖ τε δοῶν τε καὶ μὴ δοῶν καλῶς.
 τάχ' εἴσεται σίδηρος, ὃν πρὶν εἰς Φρύγας 970
 ἔλθειν, φόνου κηλῖσιν αἵματος χροανῶ,
 εἰ τίς με τὴν σὴν θυγατέρ' ἐξαίρῃσεται.
 ἀλλ' ἡσύχαξε· θεὸς ἐγὼ πέφηνά σοι
 [μέγιστος, οὐκ ὦν· ἀλλ' ὅμως γενήσομαι].
- ΧΟ. ἔλεξας, ὦ παῖ Πηλέως, σοῦ τ' ἄξια 975
 καὶ τῆς ἐναλίας δαίμονος, σεμνῆς θεοῦ.
- ΚΑ. φεῦ·
 πῶς ἂν σ' ἐπαινέσαιμι μὴ λίαν λόγοις,
 μὴδ' ἐνδεῶς τοῦδ' ἀπολέσαιμι τὴν χάριν;
 αἰνούμενοι γὰρ ἀγαθοὶ τρόπον τινα 980
 μισοῦσι τοὺς αἰνοῦντας, ἣν αἰνῶς' ἄγαν.
 αἰσχύνομαι δὲ παρὰφέρουσ' οἰκτροὺς λόγους,
 ἰδίᾳ νοσοῦσα· σὺ δ' ἄνοσος κακῶν γ' ἐμῶν.
 ἀλλ' οὖν ἔχει τοι σχῆμα, καὶν ἄπωθεν ἢ
 ἀνὴρ ὁ χρηστός, δυστυχοῦντας ὠφελεῖν. 985
 οἴκτειρε δ' ἡμᾶς· οἴκτρον γὰρ πεπόνθαμεν.
 ἢ πρῶτα μὲν σε γαμβρὸν οἰηθεῖς' ἔχειν,
 κενὴν κατέσχον ἐλπίδ'· εἰτά σοι τάχα
 ὄρνις γένοιτ' ἂν τοῖσι μέλλουσιν γάμοις
 θανούσ' ἐμὴ παῖς, ὅ σε φυλάξασθαι χρεῶν.
 ἀλλ' εὖ μὲν ἀρχὰς εἶπας, εὖ δὲ καὶ τέλη· 990
 σοῦ γὰρ θέλοντος παῖς ἐμὴ σωθήσεται.
 βούλει νιν ἱκέτιν σὸν περιπτύξαι γόνυ;
 ἀπαρθένευτα μὲν τάδ'· εἰ δέ σοι δοκεῖ,
 ἥξει, δι' αἰδοῦς ὅμμ' ἔχουσ' ἐλεύθερον·
 εἰ δ' οὐ παρούσης ταῦτ' αὖτε ξομαι σέθεν, 995
 μενέτω κατ' οἴκους· σεμνὰ γὰρ σεμνύνεται.
 ὅμως δ' ὅσον γε δυνατὸν αἰδεῖσθαι χρεῶν.
- ΑΧ. σὺ μῆτε σὴν παῖδ' ἔξαγ' ὅψιν εἰς ἐμήν,
 μήτ' εἰς ὄνειδος ἀμαθὲς ἔλθωμεν, γύναι·

στρατὸς γὰρ ἄθροός ἀργὸς ὢν τῶν οἴκοθεν 1000

λέσχας πονηρὰς καὶ κακοστόμους φιλεῖ.

πάντως δέ μ' ἱκετεύοντες ἤξετ' εἰς ἴσον,

εἴ τ' ἀνικετεύτως· εἰς ἔμοι γὰρ ἔστ' ἀγὼν

μέγιστος ὑμᾶς ἐξαπαλλάξαι κακῶν.

ὥς ἔν γ' ἀκούσας ἴσθι, μὴ ψευδῶς μ' ἐρεῖν· 1005

ψευδῇ λέγων δὲ καὶ μάτην ἐγκερτομῶν

θάνοιμι· μὴ θάνοιμι δ', ἣν σῶσω κόρην.

ΚΛ. ὄναιο συνεχῶς δυστυχοῦντας ὠφελῶν.

ΑΧ. ἄκουε δὴ νυν, ἵνα τὸ πρᾶγμ' ἔχη καλῶς.

ΚΛ. τί τοῦτ' ἔλεξας; ὥς ἀκουστέον γέ σου. 1010

ΑΧ. πείθωμεν αὐτίς πατέρα βέλτιον φρονεῖν.

ΚΛ. κακός τις ἔστι καὶ λίαν ταρβεῖ στρατόν.

ΑΧ. ἀλλ' οἱ λόγοι γε καταπαλαίουσιν λόγους.

ΚΛ. ψυχρὰ μὲν ἐλπίς· ὅ τι δὲ χρή με δοῶν φράσον.

ΑΧ. ἱκέτευ' ἐκεῖνον πρῶτα μὴ κτείνειν τέκνα· 1015

ἣν δ' ἀντιβαίνῃ, πρὸς ἐμέ σοι πορευτέον.

εἰ γὰρ τὸ χρῆζον πείσεται, οὐ τοῦμόν χρεῶν

χωρεῖν· ἔχει γὰρ τοῦτο τὴν σωτηρίαν.

κἀγὼ τ' ἀμείνων πρὸς φίλον γενήσομαι,

στρατὸς τ' ἂν οὐ μέμψαιτό μ', εἰ τὰ πράγματα

λελογισμένως πράσσοιμι μᾶλλον ἢ σθένει. 1021

[καλῶς δὲ κρανθέντων πρὸς ἡδονὴν φίλοις

σοί τ' ἂν γένοιτο κἂν ἐμοῦ χωρὶς τάδε.]

ΚΛ. ὥς σῶφρον' εἶπας. δραστέον δ' ἅ σοι δοκεῖ.

ἣν δ' αὐτὰ μὴ πράσσωμεν ἂν ἐγὼ θέλω, 1025

ποῦ σ' αὐτίς ὀψόμεσθα; ποῦ χρή μ' ἀθλίαν

ἐλθοῦσαν εὐρεῖν σὴν χέρ' ἐπίκουρον κακῶν;

1X. ἡμεῖς σε φύλακες οὐ χρεῶν φυλάξομεν,

μή τις σ' ἰδῇ στείχουσιν ἐπτοημένην

Δαναῶν δι' ὄχλου· μηδὲ πατρῶον δόμον 1030

- αἰσχυν'· ὁ γάρ τοι Τυνδάρεως οὐκ ἄξιος
κακῶς ἀκούειν· ἐν γὰρ Ἑλλήσιν μέγας.
- ΚΛ. ἔσται τάδ'· ἄρχε· σοί με δουλεύειν χρεών.
εἰ δ' εἰσὶ θεοί, δίκαιος ὢν ἀνὴρ σύ γε
ἔσθλῶν κυρήσεις· εἰ δὲ μή, τί δεῖ πονεῖν; 1035
- ΧΟ. τίς ἄρ' ὑμέναιος διὰ λωτοῦ Αἰβυος στρ.
μετά τ' ἐφίλοχόρου κιθάρας
συρίγγων θ' ὑπὸ καλαμοεσ-
σᾶν ἔστασεν ἰαχάν,
ὅτ' ἀνὰ Πήλιον αἰ καλλιπλόκαμοι 1040
θεῶν ἐν δαιτὶ Πιερίδες
χρυσεοσάνδαλον ἔχνος
ἐν γὰ κρούουσai
Πηλέως εἰς γάμον ἦλθον,
μελωδοῖς Θετὶν ἀχήμασι τόν τ' Αἰακίδα 1045
Κενταύρων ἀν' ὄρος κλέουσai
Πηλιάδα καθ' ὕλαν.
ὁ δὲ Δαρδανίδας, Διὸς
λέκτρων τρύφημα φίλον, 1050
χρυσέοισιν ἄφυσσε λοιβὰν
ἐν κρατήρων γυάλοις,
ὁ Φρύγιος Γανυμήδης.
παρὰ δὲ λευκοφαῖ ψάμαθον
εἰλισσόμεναι κύκλια 1055
πεντήκοντα κόραι Νηρῆως
γάμους ἐχόρευσαν.
ἀνὰ δ' ἐλάταισι στεφανώδει τε χλόα ἀντ.
θίασος ἔμολεν ἱπποβότας
Κενταύρων ἐπὶ δαῖτα τὰν 1060
θεῶν κρατῆρά τε Βάκχον.
μέγα δ' ἀνέκλαγον, ᾧ Νηρηὶ κόρα,

- παῖδες Θεσσαλαί, μέγα φῶς
 μάντις ὁ Φοῖβος ὁ Μουσᾶν τ'
 εἰδὼς γεννάσεις 1065
 Χείρων ἐξονόμαξεν,
 ὃς ἤξει χθόνα λογχήρεσι σὺν Μυρμιδόνων
 ἄσπισταῖς Πριάμοιο κλεινὰν
 γαῖαν ἐκπυρώσων, 1070
 περὶ σώματι χρυσέων
 ὅπλων Ἑφαιστοπόνων
 κεκορυθμένος ἔνδυτ', ἐκ θεᾶς
 ματρὸς δωρήματ' ἔχων,
 Θέτιδος ἅ νιν ἔτικτε 1075
 μακάριον. τότε δαίμονες
 τᾶς εὐπάτριδος γάμον
 Νηρήδων ἔθεσαν πρώτας
 Πηλέως θ' ὑμεναίους.
 σὲ δ' ἐπὶ κᾶρα στέψουσι καλλικόμαν 1080
 πλόκαμον Ἀργεῖοί γ' ἁλιᾶν,
 ὥστε πετραίων ἀπ' ἄντρων ἐλθοῦσαν ὀρεῖαν
 μόσχον ἀκήρατον, βρότειον
 αἰμάσσοντες λαιμόν·
 οὐ σύριγγι τραφεῖσαν, οὐδ' 1085
 ἐν ροιβδήσεσι βουκόλων,
 παρὰ δὲ ματέρι νυμφοκόμον
 Ἰναχίδαις γάμον.
 ποῦ τὸ τᾶς αἰδοῦς
 ἢ τὸ τᾶς ἀρετᾶς ἔχει 1090
 σθένειν τι πρόσωπον;
 ὁπότε τὸ μὲν ἄσεπτον ἔχει
 δύνασιν, ἅ δ' ἀρετὰ κατόπι-
 σθεν θνατοῖς ἀμελεῖται,
 ἀνομία δὲ νόμων κρατεῖ, 1095

καὶ μὴ κοινὸς ἀγὼν βροτοῖς,
μή τις θεῶν φθόνος ἔλθῃ.

ΚΛ. ἐξῆλθον οἴκων προσκοπυμένη πόσιν,
χρόνιον ἀπόντα κἀκλειοπότα στέγας.
ἐν δακρύοισι δ' ἡ τάλαινα παῖς ἐμή, 1100
πολλὰς λείσα μεταβολὰς ὀδυρμάτων,
θάνατον ἀκούσας, ὃν πατὴρ βουλεύεται.
μνήμην δ' ἄρ' εἶχον πλησίον βεβηκότος
Ἀγαμέμνονος τοῦδ', ὃς ἐπὶ τοῖς αὐτοῦ τέκνοις
ἀνόσια πράστων ἀντίχ' εὐρεθήσεται. 1105

ΑΓΑ. Αἰῶδες γένεθλον, ἐν καλῷ σ' ἔξω δόμων
εὖρηχ', ἵν' εἴπω παρθένου χωρὶς λόγους
οὓς οὐκ ἀκούειν τὰς γαμουμένας πρέπει.

ΚΛ. τί δ' ἔστιν, οὗ σοι καιρὸς ἀντιλάζυται;

ΑΓΑ. ἔκπεμπε παῖδα δωμάτων πατρὸς μέτα· 1110
ὥς χέρνιβες πάρεισιν ἠντρεπισμέναι,
προχύται τε βάλλειν πῦρ καθάρσιον χεροῖν,
μόσχοι τε, πρὸ γάμων ἄς θεᾶ πεσεῖν χρεῶν
Ἀρτέμιδι, μέλανος αἵματος φουσάματα.

ΚΛ. τοῖς ὀνόμασιν μὲν εὖ λέγεις, τὰ δ' ἔργα σου 1115
οὐκ οἶδ' ὅπως χρή μ' ὀνομάσασαν εὖ λέγειν.
χώρει σὺ θύγατερ ἐκτός, οἶσθα γὰρ πατρός·
πάντως ἂ μέλλει, χυπὸ σοῖς πέπλοις ἄγε
λαβοῦσ' Ὀρέστην σὸν κασίγνητον, τέκνον.
ἰδοὺ πάρεστιν ἥδε πειθαρχοῦσά σοι. 1120

τὰ δ' ἄλλ' ἐγὼ πρὸ τῆσδε κάμαντῆς φράσω.

ΑΓΑ. τέκνον, τί κλαίεις, οὐδ' ἔθ' ἡδέως ὀρᾷς,
εἰς γῆν δ' ἐρείσας ὄμμα πρόσθ' ἔχεις πέπλους;

ΚΛ. φεῦ·

τίν' ἂν λάβοιμι τῶν ἐμῶν ἀρχὴν κακῶν;
ἅπασι γὰρ πρώτοισι χρήσασθαι πάρα 1125
[κἂν ὑστάτοισι κἂν μέσοισι πανταχοῦ].

- ΑΓΑ. τί δ' ἔστιν; ὥς μοι πάντες εἰς ἔν ἤκετε,
σύγχρυσιν ἔχοντες καὶ ταραγμὸν ὁμμάτων.
- ΚΛ. εἴφ' ἂν ἐρωτήσω σε γενναίως, πόσι.
- ΑΓΑ. οὐδὲν κελευσμοῦ δεῖ μ'· ἐρωτᾶσθαι θέλω. 1130
- ΚΛ. τὴν παῖδα τὴν σὴν τὴν τ' ἐμὴν μέλλεις κτανεῖν;
- ΑΓΑ. ἔα·
τλήμονά γ' ἔλεξας, ὑπονοεῖς θ' ἂ μή σε χρή.
- ΚΛ. ἔχ' ἥσυχος,
κάκεινόν μοι τὸ πρῶτον ἀπόκριναι πάλιν.
- ΑΓΑ. σὺ δ' ἦν γ' ἐρωτᾶς εἰκότ', εἰκότ' ἂν κλύοις.
- ΚΛ. οὐκ ἄλλ' ἐρωτῶ, καὶ σὺ μὴ λέγ' ἄλλα μοι. 1135
- ΑΓΑ. ὦ πότνια μοῖρα καὶ τύχη δαίμων τ' ἐμός.
- ΚΛ. καμός γε καὶ τῆσδ', εἷς τριῶν δυσδαιμόνων.
- ΑΓΑ. τίς σ' ἠδίκησε; ΚΛ. τοῦτ' ἐμοῦ πεύθει πάρα;
ὁ νοῦς ὅδ' αὐτὸς νοῦν ἔχων οὐ τερχάνει.
- ΑΓΑ. ἀπωλόμεσθα. προδέδοται τὰ κρυπτά μου. 1140
- ΚΛ. πάντ' οἶδα καὶ πέπυσμ' ἂ σύ γε μέλλεις με δοῖν·
αὐτὸ δὲ τὸ σιγαῖν ὁμολογοῦντός ἐστί σου
καὶ τὸ στενάζειν πολλά. μὴ κάμῃς λέγων.
- ΑΓΑ. ἰδοὺ σιωπῶ· τὸ γὰρ ἀναίσχυντον τί δεῖ
ψευδῇ λέγοντα προσλαβεῖν τῇ συμφορᾷ; 1145
- ΚΛ. ἄκουε δὴ νυν· ἀνακαλύψω γὰρ λόγους,
κούκετι παρῳδοῖς χρησόμεσθ' αἰνίγμασιν.
πρῶτον μὲν, ἵνα σοι πρῶτα τοῦτ' ὀνειδίσω,
ἔγνημας ἄκουσάν με κάλαβες βία,
τὸν πρόσθεν ἄνδρα Τάνταλον κατακτανών, 1150
βρέφος τε τοῦμόν σφ' προσοφύρισας πάλω,
μαστῶν βιαίως τῶν ἐμῶν ἀποσπάσας.
καὶ τὼ Διὸς τε παῖδ' ἐμῷ τε συγγόνω
ἵπποισι μαρμαίροντ' ἐπεστρατευσάτην·
πατὴρ δὲ πρέσβυς Τυνδάρεώς σ' ἐρούσατο 1155
ἱκέτην γενόμενον, τὰμὰ δ' ἔσχεσ αὖ λέχη.

οὐ σοι καταλλαχθεῖσα περὶ σέ καὶ δόμους
 συμμαρτυρήσεις ὥς ἄμεμπτος ἦν γυνή,
 εἰς τ' Ἀφροδίτην σωφρονοῦσα καὶ τὸ σὺν
 μέλαθρον αὖξουσ', ὥστε σ' εἰσιόντα τε 1160
 χαίρειν θύραξέ τ' ἐξιόντ' εὐδαιμονεῖν.

σπάνιον δὲ θήρευμ' ἀνδρὶ τοιαύτην λαβεῖν
 δάμαρτα· φλαύραν δ' οὐ σπάνις γυναικ' ἔχειν.
 τίκτω δ' ἐπὶ τρισὶ παρθένοισι παῖδά σοι
 τόνδ', ὧν μιᾷς σὺ τλημόνως μ' ἀποστερεῖς. 1165

κἄν τις σ' ἔρηται τίνος ἑκατὶ νιν κτενεῖς,
 λέξον, τί φήσεις; ἢ μὲ χρὴ λέγειν τὰ σά;
 Ἑλένην Μενέλεως ἵνα λάβῃ. καλὸν γέ τοι
 κακῆς γυναικὸς μισθὸν ἀποτίσαι τέκνα.

τᾶχθιστα τοῖσι φιλτάτοις ὠνούμεθα. 1170

ἄγ', ἣν στρατεύσῃ καταλιπὼν μ' ἐν δώμασιν,
 κἀκεῖ γενήσῃ διὰ μακροῦς ἀπουσίας,
 τίν' ἐν δόμοις με καρδίαν ἔξειν δοκεῖς,
 ὅταν θρόνους τῆσδ' εἰσίδω πάντας κενούς,

κενοὺς δὲ παρθενῶνας; ἐπὶ δὲ δακρύοις 1175
 μόνη κάθημαι, τήνδε θορηνωδοῦσ' αἶε·
 ἀπώλεσέν σ', ὦ τέκνον, ὃ φυτεύσας πατήρ,
 αὐτὸς κτανὼν, οὐκ ἄλλος οὐδ' ἄλλη χερὶ,
 τοιόνδε μισθὸν καταλιπὼν πρὸς τοὺς δόμους.

ἐπεὶ βραχείας προφάσεως ἔδει μόνον, 1180

ἐφ' ἣ σ' ἐγὼ καὶ παῖδες αἱ λελειμμέναι
 δεξόμεθα δέξιν ἣν σε δέξασθαι χρεῶν.
 μὴ δῆτα πρὸς θεῶν μήτ' ἀναγκάσης ἐμὲ
 κακὴν γενέσθαι περὶ σέ, μήτ' αὐτὸς γένῃ.
 εἶεν·

θύσεις δὲ τὴν παῖδ'· ἔνθα τίνας εὐχὰς ἐρεῖς; 1185

τί σοι κατεύξει τάγαθόν, σφάζων τέκνον;
 νόστον πονηρόν, οἴκοθέν γ' αἰσχροῦς ἰών;

ἀλλ' ἐμὲ δίκαιον ἀγαθὸν εὖχεσθαι τι σοί;
 οὐ τάρ' ἀσυνέτους τοὺς θεοὺς ἡγοίμεθ' ἄν,
 εἰ τοῖσιν ἀνθένταισιν εὖ φρονήσομεν; 1190
 ἦκων δ' ἐς Ἄργος προσπесεῖ τέκνοισι σοῖς;
 ἀλλ' οὐ θέμις σοι. τίς δὲ καὶ προσβλέψεται
 παίδων σ', ἔν' αὐτῶν προθέμενος κτάνης τινά;
 ταῦτ' ἦλθες ἤδη διὰ λόγων, ἢ σκῆπτρά σοι
 μόνον διαφέρειν καὶ στρατηλατεῖν σε δεῖ; 1195
 ὃν χρῆν δίκαιον λόγον ἐν Ἀργείοις λέγειν·
 βούλεσθ', Ἀχαιοί, πλεῖν Φρυγῶν ἐπὶ χθόνα;
 κληῖρον τίθεσθε παῖδ' ὅτου θανεῖν χρεῶν.
 ἐν ἴσῳ γὰρ ἦν τόδ', ἀλλὰ μὴ σ' ἐξαίρετον
 σφάγιον παρασχεῖν Δαναΐδαισι παῖδα σήν, 1200
 ἢ Μενέλεων πρὸ μητρὸς Ἑρμιόνην κτανεῖν,
 οὐπερ τὸ πρᾶγμ' ἦν. νῦν δ' ἐγὼ μὲν ἢ τὸ σὸν
 σώζουσα λέκτρον παιδὸς ἧς στερήσομαι,
 ἢ δ' ἐξαμαρτοῦσ', ὑπόροφον νεάνιδα
 Σπάρτη κομίζουσ', εὐτυχὴς γενήσεται. 1205
 τούτων ἄμειψαί μ' εἴ τι μὴ καλῶς λέγω·
 εἰ δ' εὖ λέλεκται * * * μὴ κτάνης
 τὴν σήν τε καμὴν παῖδα, καὶ σώφρων ἐσει.

ΧΟ. πιθοῦ. τὸ γάρ τοι τέκνα συνσώζειν καλόν,
 Ἀγάμεμνον· οὐδεὶς τοῖσδ' ἄν ἀντείποι βροτῶν.

ΙΦ. εἰ μὲν τὸν Ὀρφέως εἶχον, ὦ πάτερ, λόγον, 1211
 πείθειν ἐπάδουσ', ὥσθ' ὁμαρτεῖν μοι πέτρας,
 κηλεῖν τε τοῖς λόγοισιν οὐς ἐβουλόμην,
 ἐνταῦθ' ἄν ἦλθον. νῦν δὲ τὰπ' ἐμοῦ σοφά,
 δάκρυα παρέξω· ταῦτα γὰρ δυναίμεθ' ἄν. 1215
 ἱκετηρίαν δὲ γόνασιν ἐξάπτω σέθεν
 τὸ σῶμα τοῦμόν, ὅπερ ἔτικτεν ἦδε σοι,
 μὴ μ' ἀπολέσης ἄωρον· ἡδὺ γὰρ τὸ φῶς
 λεύσσειν· τὰ δ' ὑπὸ γῆν μὴ μ' ἰδεῖν ἀναγκάσης.

πρώτη σ' ἐκάλεσα πατέρα καὶ σὺ παῖδ' ἐμέ· 1220
 πρώτη δὲ γόνασι σοῖσι σῶμα δοῦς' ἐμὸν
 φίλας χάριτας ἔδωκα κἀντεδεξάμην.
 λόγος δ' ὁ μὲν σὸς ἦν ὅδ'· ἄρά σ', ὦ τέκνον,
 εὐδαίμον' ἀνδρὸς ἐν δόμοισιν ὄψομαι,
 ζῶσάν τε καὶ θάλλουσιν ἀξίως ἐμοῦ; 1225
 οὐμὸς δ' ὅδ' ἦν αὖ περὶ σὸν ἐξαρτωμένης
 γένειον, οὔ νῦν ἀντιλάξυμαι χερσί·
 τί δ' ἄρ' ἐγὼ σέ, πρέσβυν ἄρ' εἰσδέξομαι
 ἐμῶν φίλαισιν ὑποδοχαῖς δόμων, πάτερ,
 πόνων τιθηνοὺς ἀποδιδούσά σοι τροφάς; 1230
 τούτων ἐγὼ μὲν τῶν λόγων μνήμην ἔχω,
 σὺ δ' ἐπιλέλῃσαι, καί μ' ἀποκτεῖναι θέλεις.
 μὴ πρὸς σε Πέλοπος καὶ πρὸς Ἀτρεΐως πατρὸς
 καὶ τῇσδε μητρός, ἢ πρὶν ὠδίνουσ' ἐμὲ
 νῦν δευτέραν ὠδῖνα τήνδε λαμβάνει. 1235
 τί μοι μέτεστι τῶν Ἀλεξάνδρου γάμων
 Ἑλένης τε; πόθεν ἦλθ' ἐπ' ὀλέθρῳ τῷμῳ, πάτερ;
 βλέψον πρὸς ἡμᾶς, ὅμμα δὸς φίλημά τε,
 ἵν' ἀλλὰ τοῦτο κατθανοῦς' ἔχω σέθεν
 μνημεῖον, εἰ μὴ τοῖς ἐμοῖς πεῖθει λόγοις. 1240
 ἀδελφέ, μικρὸς μὲν σὺ γ' ἐπίκουρος φίλοις,
 ὅμως δὲ συνδάκρυσον, ἱκέτευσον πατρὸς
 τὴν σὴν ἀδελφὴν μὴ θανεῖν· αἰσθημά τοι
 κἀν νηπίοις γε τῶν κακῶν ἐγγίγνεται.
 ἰδοὺ σιωπῶν λίσσεται σ' ὅδ', ὦ πάτερ. 1245
 ἀλλ' αἰδεσαί με καὶ κατοίκτηρον βίον.
 ναί, πρὸς γενείου σ' ἀντόμεσθα δύο φίλω·
 ὁ μὲν νεοσσός ἐστιν, ἡ δ' ἠῤῥυμένη.
 ἐν συντεμοῦσα πάντα νικήσω λόγον·
 τὸ φῶς τόδ' ἀνθρώποισιν ἥδιστον βλέπειν, 1250

τὰ νέρθε δ' οὐδέν· μαίνεται δ' ὃς εὐχεται
θανεῖν. κακῶς ζῆν κρεῖσσον ἢ καλῶς θανεῖν.

ΧΟ. ᾧ τλῆμον Ἑλένη, διὰ σὲ καὶ τοὺς σοὺς γάμους
ἄγων Ἀτρεΐδαις καὶ τέκνοις ἤκει μέγας.

ΑΓΑ. ἐγὼ τὰ τ' οἴκτρ' ἀσυνετός εἰμι καὶ τὰ μή, 1255

φιλῶν ἐμ' αὐτοῦ τέκνα· μαινοίμην γὰρ ἄν.

δεινῶς δ' ἔχει με ταῦτα τολμῆσαι, γύναι,

δεινῶς δὲ καὶ μή· τοῦτο γὰρ πρῶταί με δεῖ.

ὀρᾷθ' ὅσον στρατεύμα ναύφρακτον τόδε, 1260

χαλκέων θ' ὅπλων ἄνακτες Ἑλλήνων ὅσοι,

οἷς νόστος οὐκ ἔστ' Ἰλίου πύργους ἔπι,

εἰ μή σε θύσω, μάντις ὡς Κάλχας λέγει,

οὐδ' ἔστι Τροίας ἐξελεῖν κλεινὸν βᾶθρον.

μέμνηε δ' Ἀφροδίτη τις Ἑλλήνων στρατῷ 1265

πλεῖν ὡς τάχιστα βαρβάρων ἐπὶ χθόνα,

παῦσαι τε λέκτρων ἄρπαγὰς Ἑλληνικάς·

οἷ τὰς ἐν Ἀργεὶ παρθένους κτενοῦσί μου

ὕμᾱς τε καμέ, θέσφατ' εἰ λύσω θεᾶς.

οὐ Μενέλεώς με καταδεδούλωται, τέκνον,

οὐδ' ἐπὶ τὸ κείνου βουλούμενον ἐλήλυθα, 1270

ἀλλ' Ἑλλάς, ἣ δεῖ, καὶν θέλω καὶν μὴ θέλω,

θύσαι σε· τούτου δ' ἥσσανες καθέσταμεν.

ἐλευθέραν γὰρ δεῖ νιν ὅσον ἐν σοί, τέκνον,

κάμοι γενέσθαι, μηδὲ βαρβάροις ὑπο

Ἑλληνας ὄντας λέκτρα συλᾶσθαι βία. 1275

ΚΑ. ᾧ τέκνον, ᾧ ξέναι,

οἷ γὰρ θανάτου τοῦ σοῦ μελέα.

φεύγει σε πατὴρ ἄδη παραδούς.

ΙΦ. οἷ γὰρ, μᾶτερ μᾶτερ, ταῦτόν

μέλος εἰς ἄμφω πέπτωκε τύχης, 1280

κοῦκέτι μοι φῶς,

οὐδ' ἀελίου τόδε φέγγος.

ὦ ὦ.

νιφόβολον Φρυγῶν νάπος Ἰδας τ'
 ὄρεα, Πρίamos ὅθι ποτὲ βρέφος ἀπαλὸν ἔβαλε
 ματρὸς ἀποπρὸ νοσφίσας 1286
 ἐπὶ μόρφῳ θανατόεντι

Πάριν, ὃς Ἰδαῖος
 Ἰδαῖος ἐλέγет' ἐλέγет' ἐν Φρυγῶν πόλει. 1290
 μή ποτ' ὥφελεν τὸν ἀμφὶ
 βουσί βουκόλον τραφέντ'

Ἀλέξανδρον
 οἰκίσαι ἀμφὶ τὸ λευκὸν ὕδωρ, ὅθι
 κρῆναι Νυμφᾶν κεῖνται 1295
 λειμών τ' ἄνθεσι θάλλων
 χλωροῖς, καὶ ῥοδόεντα
 ἄνθε' ὑακίνθινά τε θεαῖς δρέπειν·

ἔνθα ποτὲ Παλλὰς ἔμολε 1300
 καὶ δολιόφρων Κύπρις
 Ἥρα θ' Ἑρμᾶς θ',

ὁ Διὸς ἄγγελος,
 ἅ μὲν ἐπὶ πόθῳ τρυφῶσα
 Κύπρις, ἅ δὲ δουρὶ Παλλᾶς, 1305

Ἥρα τε Διὸς ἄνακτος
 εὐναῖσι βασιλίσιν,
 κρίσιν ἐπὶ στυγνὰν ἔριν τε
 καλλουᾶς, ἔμοι δὲ θάνατον,
 ὄνομα μὲν φέροντα Δαναΐδαισιν, ὧ κόραι, 1310
 προθύματ' ἔλαβεν Ἀρτεμις πρὸς Ἴλιον.

ὁ δὲ τεκὼν με τὰν τάλαιναν,
 ὧ μᾶτερ ὧ μᾶτερ,
 οἷχεται προδοὺς ἔρημον.
 ὧ δυστάλαιν' ἐγώ, πικρὰν 1315
 πικρὰν ἰδοῦσα δυσελέναν,

φονεύομαι διόλλυμαι
σφαγαῖσιν ἀνοσίοισιν ἀνοσίου πατρός.

μή μοι νᾶων χαλκεμβολάδων 1320

πρύμνας ἅδ' Αὐλὶς δέξασθαι
τούσδ' εἰς ὄρμους εἰς Τροίαν
ᾧφελεν ἐλάταν πομπαίαν,

μηδ' ἀνταίαν Εὐρύπῳ
πνεῦσαι πομπὰν Ζεύς, μειλίσσῳ
αὔραν ἄλλοις ἄλλαν θνατῶν 1325

λαίφεσι χαίρειν,
τοῖσι δὲ λύπαν, τοῖσι δ' ἀνάγκαν,
τοῖς δ' ἐξορμᾶν, τοῖς δὲ στέλλειν,
τοῖσι δὲ μέλλειν.

ἧ πολύμοχθον ἄρ' ἧν γένος, ἧ πολύμοχθον 1330
ἀμερίων, τὸ χρεὼν δέ τι δύσποτμον
ἀνδράσιν ἀνευρεῖν.

ἰὼ ἰώ,

μεγάλα πάθρα, μεγάλα δ' ἄχρα
Δαναῖδαις τιθεῖσα Τυνδαρίς κόρα. 1335

ΧΟ. ἐγὼ μὲν οἴκτειρῶ σε συμφορᾶς κακῆς
τυχοῦσαν, οἷας μή ποτ' ᾧφελες τυχεῖν.

ΙΦ. ᾧ τεκοῦσα μήτερ, ἀνδρῶν ὄχλον εἰσορῶ πέλας.

ΚΛ. τόν γε τῆς θεᾶς παῖδα, τέκνον, ᾧ σὺ δεῦρ' ἐλή-
λυθας. 1339

ΙΦ. διαχαλᾷτέ μοι μέλαθρα, δμῶες, ὥς κρύψω δέμας.

ΚΛ. τί δέ, τέκνον, φεύγεις; ΙΦ. Ἀχιλλέα τόνδ' ἰδεῖν
αἰσχύνομαι.

ΚΛ. ὥς τί δή; ΙΦ. τὸ δυστυχές μοι τῶν γάμων αἰδῶ
φέρει.

ΚΛ. [οὐκ ἐν ἀβρότῃ κεῖσθαι πρὸς τὰ νῦν πεπτωκότα.]
ἀλλὰ μίμν'· οὐ σεμνότητος ἔργον, ἧν δυνώμεθα.

- ΑΧ. ὦ γύναι τάλαινα, Αἰήδας θύγατερ, ΚΑ. οὐ ψευδῆ
 θροεῖς. 1345
 ΑΧ. δεῖν' ἐν Ἀργείοις βοᾷται ΚΑ. τίνα βοήν; σήμαινέ
 μοι.
 ΑΧ. ἀμφὶ σῆς παιδός, ΚΑ. πονηρὸν εἶπας οἰωνὸν λόγων.
 ΑΧ. ὥς χρεὼν σφάζει νιν. ΚΑ. κοῦδεις ἐναντία λέγει;
 ΑΧ. εἰς θόρυβον ἐγὼ τι καὶ τὸς ἦλθον, ΚΑ. τίν', ὦ
 ξένε;
 ΑΧ. σῶμα λευσθῆναι πέτροισι. ΚΑ. μὲν κόρην σώζων
 ἐμήν; 1350
 ΑΧ. αὐτὸ τοῦτο. ΚΑ. τίς δ' ἂν ἔτλη σώματος τοῦ σοῦ
 θιγεῖν;
 ΑΧ. πάντες Ἕλληνες. ΚΑ. στρατὸς δὲ Μυρμιδῶν οὐ
 σοι παρῆν;
 ΑΧ. πρῶτος ἦν ἐκείνος ἐχθρός. ΚΑ. δι' ἅρ' ὀλώλαμεν,
 τέκνον.
 ΑΧ. οἷ με τὸν γάμων ἀπεκάλουν ἦσσαν. ΚΑ. ἀπεκρίνω
 δὲ τί;
 ΑΧ. τὴν ἐμήν μέλλουσιν εὐνὴν μὴ κτανεῖν, ΚΑ. δίκαια
 γάρ. 1355
 ΑΧ. ἦν ἐφήμισεν πατήρ μοι. ΚΑ. κἀργόθεν γ' ἐπέμ-
 ψατο.
 ΑΧ. ἀλλ' ἐνικώμην κεκραγμοῦ. ΚΑ. τὸ πολὺ γὰρ δει-
 νὸν κακόν.
 ΑΧ. ἀλλ' ὅμως ἀρήξομέν σοι. ΚΑ. καὶ μαχεῖ πολλοῖσιν
 εἶς;
 ΑΧ. εἰσορᾷς τεύχη φέροντας τούσδ'; ΚΑ. ὄναιο τῶν
 φρενῶν.
 ΑΧ. ἀλλ' ὀνησόμεσθα. ΚΑ. παῖς ἅρ' οὐκέτι σφαγή-
 σεται; 1360
 ΑΧ. οὐκ, ἐμοῦ γ' ἐκόντος. ΚΑ. ἥξει δ' ὅστις ἄψεται
 κόρης;

ΑΧ. μυριοί γ' ἄξει δ' Ὀδυσσεύς. ΚΛ. ἄρ' ὁ Σισύφου
γόνος;

ΑΧ. αὐτὸς οὗτος. ΚΛ. ἴδια πράσων, ἣ στρατοῦ τα-
χθεὶς ὑπο;

ΑΧ. αἰρεθεὶς ἐκῶν. ΚΛ. πονηράν γ' αἵρεσιν, μαι-
φονεῖν.

ΑΧ. ἀλλ' ἐγὼ στήσω νιν. ΚΛ. ἄξει δ' οὐχ ἐκοῦσαν
ἀρπάσας; 1365

ΑΧ. δηλαδὴ ξανθῆς ἐθείρης. ΚΛ. ἐμὲ δὲ τί χρὴ δρᾶν
τότε;

ΑΧ. ἀντέχου θυγατρός. ΚΛ. ὥς τοῦδ' οὔνεκ' οὐ σφα-
γήσεται.

ΑΧ. ἀλλὰ μὴν εἰς τοῦτό γ' ἤξει. ΙΦ. μῆτερ, εἰσακού-
σατε

τῶν ἐμῶν λόγων· μάτην γάρ σ' εἰσορῶ θυμου-
μένην

σῶ πόσει· τὰ δ' ἀδύναθ' ἡμῖν καρτερεῖν οὐ ῥά-
διον. 1370

τὸν μὲν οὖν ξένον δίκαιον αἰνέσαι προθυμίας·
ἀλλὰ καὶ σὲ τοῦθ' ὀρᾶν χρὴ, μὴ διαβληθῆς στρατῷ,
καὶ πλέον πράξωμεν οὐδέν, ὅδε δὲ συμφορᾶς
τύχη.

οἷα δ' εἰσῆλθεν μ', ἄκουσον, μῆτερ, ἐννοουμένην·
κατθανεῖν μὲν μοι δέδοκται· τοῦτο δ' αὐτὸ βού-
λομαι 1375

εὐκλεῶς πράξαι παρεῖσά τ' ἐκποδὼν τὸ δυσγενές.
δεῦρο δὴ σκέψαι μεθ' ἡμῶν, μῆτερ, ὥς καλῶς
λέγω·

εἰς ἔμ' Ἑλλάς ἡ μεγίστη πᾶσα νῦν ἀποβλέπει,
κἂν ἐμοὶ πορθμός τε ναῶν καὶ Φρυγῶν κατα-
σκαφαί,

τάς τε μελλούσας γυναῖκας ἣν τι δρῶσι βάρβαροι,

μηκέθ' ἀρπάζειν ἔαν τὰς ὀλβίας ἐξ Ἑλλάδος, 1381
 τὸν Ἑλένης τίσαντας ὄλεθρον, ἦντιν' ἥρπασεν
 Πάρις.

ταῦτα πάντα κατθανοῦσα ῥύσομαι, καί μου κλέος,
 Ἑλλάδ' ὥς ἡλευθέρωσα, μακάριον γενήσεται.
 καὶ γὰρ οὐδέ τοί τι λίαν ἐμὲ φιλοψυχεῖν χρεών· 1385
 πᾶσι γάρ μ' Ἕλλησι κοινὸν ἔτεκες, οὐχὶ σοὶ μόνῃ.
 ἀλλὰ μυριοὶ μὲν ἄνδρες ἀσπίσιν πεφραγμένοι,
 μυριοὶ δ' ἐρέτμ' ἔχοντες, πατρίδος ἡδικημένης,
 δοῶν τι τολμήσουσιν ἐχθροὺς χυπερὸν Ἑλλάδος
 θανεῖν·

ἢ δ' ἐμὴ ψυχὴ μί' οὖσα πάντα κωλύσει τάδε; 1390
 τί τὸ δίκαιον τοῦτό γ'; ἄρ' ἔχοιμ' ἂν ἀντειπεῖν
 ἔπος;

κάπ' ἐκεῖν' ἔλθωμεν. οὐ δεῖ τόνδε διὰ μάχης
 μολεῖν

πᾶσιν Ἀργείοις γυναικὸς οὔνεκ' οὐδὲ κατθανεῖν.
 εἷς γ' ἀνὴρ κρείσσω γυναικῶν μυρίων ὀρῶν
 φάος.

εἰ δ' ἐβουλήθη τὸ σῶμα τοῦμὸν Ἀρτεμις λαβεῖν,
 ἐμποδὼν γενήσομαι γὰρ θνητὸς οὖσα τῇ θεῷ; 1396
 ἀλλ' ἀμήχανον· δίδωμι σῶμα τοῦμὸν Ἑλλάδι.
 θύετ', ἐκπορθεῖτε Τροίαν. ταῦτα γὰρ μνημεῖά μου
 διὰ μακροῦ, καὶ παῖδες οὔτοι καὶ γάμοι καὶ δόξ'
 ἐμῇ.

βαρβάρων δ' Ἕλληνας ἄρχειν εἰκός, ἀλλ' οὐ βαρ-
 βάρους, 1400
 μῆτερ, Ἑλλήνων· τὸ μὲν γὰρ δοῦλον, οἱ δ' ἐλεύ-
 θεροι.

XO. τὸ μὲν σόν, ὦ νεᾶνι, γενναίως ἔχει·

τὸ τῆς τύχης δὲ καὶ τὸ τῆς θεοῦ νοσεῖ.

AX. Ἀγαμέμνωνος παῖ, μακάριόν μέ τις θεῶν 1405

ἔμελλε θῆσειν, εἰ τύχοιμι σῶν γάμων.
 ζηλῶ δὲ σοῦ μὲν Ἑλλάδ', Ἑλλάδος δὲ σέ.
 εὖ γὰρ τόδ' εἶπας ἀξίως τε πατρίδος·
 [τὸ θεομαχεῖν γὰρ ἀπολιποῦς', ὃ σου κρατεῖ,
 ἐξελογίσω τὰ χρηστὰ τὰναγκαῖά τε.] 1410

μᾶλλον δὲ λέκτρων σῶν πόθος μ' εἰσέρχεται
 εἰς τὴν φύσιν βλέψαντα· γενναία γὰρ εἶ.
 ὄρα δ'· ἐγὼ γὰρ βούλομαί σ' εὐεργετεῖν
 λαβεῖν τ' ἐς οἴκους· ἄχθομαί τ', ἴστω Θέτις,
 εἰ μὴ σε σῶσω Δαναῦδαισι διὰ μάχης 1415
 ἐλθὼν· ἄθρησον, ὃ θάνατος δεινὸν κακόν.

ΙΦ. λέγω τάδ', οὐδὲν οὐδέν' εὐλαβουμένη.
 ἢ Τυνδαρίς παῖς διὰ τὸ σῶμ' ἀρκεῖ μάχας
 ἀνδρῶν τιθεῖσα καὶ φόνους· σὺ δ', ὦ ξένε,
 μὴ θνηῆσκε δι' ἐμὲ μηδ' ἀποκτείνῃς τινά. 1420
 ἔα δὲ σῶσαί μ' Ἑλλάδ', ἣν δυνώμεθα.

ΑΧ. ὦ λῆμ' ἄριστον, οὐκ ἔχω πρὸς τοῦτ' ἔτι
 λέγειν, ἐπεὶ σοι τάδε δοκεῖ· γενναῖα γὰρ
 φρονεῖς· τί γὰρ τάληθές οὐκ εἶποι τις ἄν;
 ὅμως δ' ἴσως ἔτ' ἂν μεταγνοίῃς τάδε. 1425
 [ὥς οὖν ἂν εἰδῆς τὰπ' ἐμοῦ λελεγμένα,
 ἐλθὼν τάδ' ὅπλα θήσομαι βωμοῦ πέλας,
 ὥς οὐκ ἐάσω σ' ἀλλὰ κωλύσων θανεῖν.
 χρήσει δὲ καὶ σὺ τοῖς ἐμοῖς λόγοις τάχα,
 ὅταν πέλας σῆς φάσγανον δέξης ἰδῆς.] 1430
 οὐκουν ἐάσω σ' ἀφροσύνη τῇ σῇ θανεῖν·
 ἐλθὼν δὲ σὺν ὅπλοις τοῖσδε πρὸς ναὸν θεᾶς
 καραδοκήσω σὴν ἐκεῖ παρουσίαν.

ΙΦ. μῆτερο, τί σιγῇ δακρύοις τέγγεις κόρας;
 ΚΑ. ἔχω τάλαινα πρόφασιν ὥστ' ἀλγεῖν φρένα. 1435

ΙΦ. παῦσαί με μὴ κἀκίξε· τάδε δ' ἐμοὶ πιθοῦ.
 ΚΑ. λέγ', ὥς παρ' ἡμῶν οὐδὲν ἀδικήσει, τέκνον.

- ΙΦ. μήτ' οὖν γε τὸν σὸν πλόκαμον ἐκτέμης τριχός,
μήτ' ἀμφὶ σῶμα μέλανας ἀμπίσχη πέπλους.
- ΚΛ. τί δὴ τόδ' εἶπας, τέκνον; ἀπολέσασά σε 1440
- ΙΦ. οὐ σύ γε· σέσωσμαι, κατ' ἐμὲ δ' εὐκλεῆς ἔσει.
- ΚΛ. πῶς εἶπας; οὐ πενθεῖν με σὴν ψυχὴν χρεῶν;
- ΙΦ. ἦκιστ', ἐπεὶ μοι τύμβος οὐ χωσθήσεται.
- ΚΛ. τί δαί, τὸ θνήσκειν οὐ τάφος νομίζεται;
- ΙΦ. βωμὸς θεᾶς μοι μνημα τῆς Διὸς κόρης. 1445
- ΚΛ. ἄλλ', ὦ τέκνον, σοὶ πείσομαι· λέγεις γὰρ εὖ.
- ΙΦ. ὥς εὐτυχοῦσά γ' Ἑλλάδος τ' εὐεργέτις.
- ΚΛ. τί δὴ κασιγνήταισιν ἀγγελῶ σέθεν;
- ΙΦ. μηδ' ἀμφὶ κείναις μέλανας ἐξάψῃ πέπλους.
- ΚΛ. εἴπω δὲ παρὰ σοῦ φίλον ἔπος τι παρθένους; 1450
- ΙΦ. χαίρειν γ'. Ὀρέστην τ' ἔκτρεφ' ἄνδρα τόνδε μοι.
- ΚΛ. προσέλκυσά νιν ὕστατον θεωμένη.
- ΙΦ. ὦ φίλτατ', ἐπεκούρησας ὅσον εἶχες φίλοις.
- ΚΛ. ἔσθ' ὅ τι κατ' Ἄργος δρωσά σοι χάριν φέρω;
- ΙΦ. πατέρα τε τὸν ἐμὸν μὴ στύγει πόσιν τε σόν. 1455
- ΚΛ. δεινοὺς ἀγῶνας διὰ σέ δεῖ κεῖνον δραμεῖν.
- ΙΦ. ἄκων μ' ὑπὲρ γῆς Ἑλλάδος διώλεσεν.
- ΚΛ. δόλῳ δ', ἀγεννῶς Ἀτρέως τ' οὐκ ἄξιως.
- ΙΦ. τίς μ' εἶσιν ἄξων πρὶν σπαράξεσθαι κόμης;
- ΚΛ. ἔγωγε μετὰ σοῦ ΙΦ. μὴ σύ γ'· οὐ καλῶς λέγεις.
- ΚΛ. πέπλων ἐχομένη σῶν ΙΦ. ἐμοί, μῆτερ, πιθοῦ, 1461
μέν'· ὥς ἐμοί τε σοί τε κάλλιον τόδε.
πατρὸς δ' ὀπαδῶν τῶνδ' εἰς τίς με πεμπέτω
Ἀρτέμιδος εἰς λειμῶν', ὅπου σφαγήσομαι.
- ΚΛ. ὦ τέκνον, οἶχει; ΙΦ. καὶ πάλιν γ' οὐ μὴ μόλω. 1465
- ΚΛ. λιποῦσα μητέρ'; ΙΦ. ὥς ὀρᾷς γ', οὐκ ἄξιως.
- ΚΛ. σχέες, μή με προλίπῃς. ΙΦ. οὐκ ἔω στάζειν δάκρυ.
ὑμεῖς δ' ἐπευφημήσατ', ὦ νεάνιδες,
παιᾶνα τῇ μῇ συμφορᾷ Διὸς κόρην

Ἄρτεμιν· ἴτω δὲ Δαναΐδαις εὐφημία. 1470

κανᾶ δ' ἐναρχέσθω τις, αἰθέσθω δὲ πῦρ
προχύταις καθαρσίοισι, καὶ πατὴρ ἐμὸς
ἐνδεξιούσθω βωμόν· ὥς σωτηρίαν

Ἑλλήσι δώσουσ' ἔρχομαι νικηφόρον.

ἄγετέ με τὰν Ἰλίου στρ. 1475

καὶ Φρυγῶν ἐλέπτολιν.

στέφρα περίβολα δίδοτε, φέρε-
τε· πλόκαμος ὅδε καταστέφειν
χερνίβων γε παραῖς.

ἐλίσσεται ἄμφι ναὸν ἄμφι βωμόν 1480

τὰν ἄνασσαν Ἄρτεμιν,

θεὰν μάκαιραν· ὥς ἐμοῖσιν, εἰ χρεῶν,

αἵμασι θύμασί τε 1485

θέσφατ' ἐξαλείψω.

ὦ πότνια πότνια μᾶτερ, ὥς δάκρυά γέ σοι
δώσομεν ἀμέτερα·

παρ' ἱεροῖς γὰρ οὐ πρόπει. 1490

ἰὼ ἰὼ νεάνιδες,

συνεπαείδειτ' Ἄρτεμιν

Χαλκίδος ἀντίπορον,

ἵνα τε δόρατα μέμονε δᾶα 1495

δι' ἐμὸν ὄνομα τᾶσδ' Αὐλίδος

στενοπόροισιν ὄρμοις.

ἰὼ γὰ μᾶτερ ὦ Πελασγία,

Μυκηναῖαί τ' ἐμὰ θεράπναι.

ΧΟ. καλεῖς πόλισμα Περσέως, 1500

Κυκλωπίων πόνον χερῶν;

ΙΦ. ἔθρεψας Ἑλλάδι με φάος·

θανοῦσα δ' οὐκ ἀναίνομαι.

ΧΟ. κλέος γὰρ οὗ σε μὴ λίπη.

ΙΦ. ἰὼ ἰώ.

λαμπαδοῦχος ἀμέρα Δι-
ός τε φέγγος, ἕτερον
ἕτερον αἰῶνα καὶ μοῖραν οἰκήσομεν.
χαῖρέ μοι, φίλον φάος. ἰὼ ἰώ.

ΧΟ. ἴδεσθε τὰν Ἰλίου

ἀντ. 1510

καὶ Φρυγῶν ἐλέπτολιν
στείχουσιν, ἐπὶ κᾶρα στέφρα
***** βαλομέναν

χερνίβων τε παγᾶς,
βωμὸν διαίμονος θεᾶς ***

ῥανίσιν αἱματορρύτοις
ῥανοῦσαν εὐφυῇ τε σώματος δέσρην
σφαγεῖσαν.

1515

εὐδροσοὶ πατρῷαι

παγαὶ μένουσι χέρνιβές τέ σε στρατός τ'
Ἀχαιῶν θέλων

Ἰλίου πόλιν μολεῖν.

1520

ἀλλὰ τὰν Διὸς κόραν

κλήσωμεν Ἀρτεμιν, θεῶν ἄνασσαν,
ὥς ἐπ' εὐτυχεῖ πότμῳ.

ὦ πότνια, θύμασιν βροτησίοις

χαρεῖσα, πέμψον εἰς Φρυγῶν

1525

γαῖαν Ἑλλάνων στρατὸν

καὶ δολόεντα Τροίας ἔδη,

Ἀγαμέμνονά τε λόγχαις

Ἑλλάσι κλεινότατον στέφανον

δὸς ἀμφὶ κᾶρα θ' ἔδον

1530

κλέος ἀείμνηστον ἀμφιθεῖναι.

ΑΓΓ. ὦ Τυνδαρεία παῖ, Κλυταιμνήστρα, δόμων
ἔξω πέρασον, ὥς κλύης ἐμῶν λόγων.

ΚΑ. φθογγῆς κλύουσα δεῦρο σῆς ἀφικόμην,
ταρβοῦσα τλήμων κᾶκπεπληγμένη φόβῳ, 1535
μή μοι τιν' ἄλλην ξυμπορὰν ἤκῃς φέρων
πρὸς τῇ παρούσῃ. ΑΓΓ. σῆς μὲν οὖν παιδὸς

πέρι

θαυμαστά σοι καὶ δεινὰ σημῆναι θέλω.

ΚΑ. μὴ μέλλε τοίνυν, ἀλλὰ φράζ' ὅσον τάχος. 1540

[ΑΓΓ. ἀλλ', ὦ φίλῃ δέσποινα, πᾶν πένθει σαφῶς. 1540

λέξω δ' ἀπ' ἀρχῆς, ἣν τι μὴ σφαλεῖσά μου
γνώμη ταράξῃ γλῶσσαν ἐν λόγοις ἐμήν.

ἐπεὶ γὰρ ἰκόμεσθα τῆς Διὸς κόρης

Ἀρτεμίδος ἄλσος λείμακας τ' ἀνθεσφόρους,

ἔν' ἣν Ἀχαιῶν σύλλογος στρατεύματος, 1545

σὴν παῖδ' ἄγοντες, εὐθὺς Ἀργείων ὄχλος

ἡθροΐζεθ'. ὥς δ' ἐσεῖδεν Ἀγαμέμνων ἀναξ

ἐπὶ σφαγὰς στείχουσαν εἰς ἄλσος κόρην,

ἀνεστέναξε, κᾶμπαλιν στρέψας κᾶρα

δάκρυα προῆγεν, ὁμμάτων πέπλον προθείς. 1550

ἣ δὲ σταθεῖσα τῷ τεκόντι πλησίον

ἔλεξε τοιάδ'· ὦ πάτερ, πάρειμί σοι,

τοῦμόν δὲ σῶμα τῆς ἐμῆς ὑπὲρ πάτρας

καὶ τῆς ἀπάσης Ἑλλάδος γαίας ὕπερ

θῦσαι δίδωμ' ἐκοῦσα πρὸς βωμὸν θεᾶς 1555

ἄγοντας, εἶπερ ἐστὶ θέσφατον τόδε.

καὶ τοῦπ' ἐμ' εὐτυχεῖτε, καὶ νικηφόρου

δορὸς τύχοιτε πατρίδα τ' ἐξίκοισθε γῆν.

πρὸς ταῦτα μὴ ψεύσῃ τις Ἀργείων ἐμοῦ·

σιγῇ παρέξω γὰρ δέρον ἐνκαρδίως. 1560

τοσαῦτ' ἔλεξε· πᾶς δ' ἐθάμβησεν κλύων

εὐψυχίαν τε κᾶρετήν τῆς παρθένου.

στάς δ' ἐν μέσῳ Ταλθύβιος, ᾧ τόδ' ἦν μέλον,

εὐφημίαν ἀνεῖπε καὶ σιγὴν στρατῷ·

Κάλχας δ' ὁ μάντις εἰς κανοῦν χρυσήλατον 1565
 ἔθηκεν ὅξυ χειρὶ φάσγανον σπάσας
 κολεῶν ἔσωθεν, κρᾶτά τ' ἔστεψεν κόρης.
 ὁ παῖς δ' ὁ Πηλέως ἐν κύκλῳ βωμὸν θεᾶς
 λαβὼν κανοῦν ἔθρεξε χέρνιβας θ' ὁμοῦ,
 ἔλεξε δ'· ὦ Διὸς Ἀρτεμις θηροκτόνε, 1570
 τὸ λαμπρὸν εἰλίσσουσ' ἐν εὐφρόνῃ φάος,
 δέξαι τὸ θυμὰ τόδ' ὅ γέ σοι δωρούμεθα
 στρατός τ' Ἀχαιῶν Ἀγαμέμνων ἄναξ θ' ὁμοῦ,
 ἄχραντον αἶμα καλλιπαρθένου δέρης,
 καὶ δὸς γενέσθαι πλοῦν νεῶν ἀπήμονα, 1575
 Τροίας τε πέργαμ' ἐξελεῖν ἡμᾶς δορί.
 εἰς γῆν δ' Ἀτρεΐδαι πᾶς στρατός τ' ἔσται βλέ-
 πων.

ἱερεὺς δὲ φάσγανον λαβὼν ἐπενύξατο,
 λαιμόν τ' ἐπεσκοπεῖθ', ἵνα πλήξειεν ἄν·
 ἐμοὶ δὲ τᾶλγος οὐ μικρὸν εἰσῆι φρενί, 1580
 κᾶστην νενευκῶς· θαῦμα δ' ἦν αἰφνης ὄρᾶν·
 πληγῆς κτύπον γὰρ πᾶς τις ἦσθετ' ἂν σαφῶς,
 τὴν παρθένον δ' οὐκ εἶδεν οὐ γῆς εἰσέδν.
 βοᾷ δ' ἱερεὺς, ἅπας δ' ἐπήχησε στρατός,
 ἄελπτον εἰσιδόντες ἐκ θεῶν τινος 1585
 φάσμ', οὐ γέ μῃδ' ὀρωμένου πίσις παρῆν·
 ἔλαφος γὰρ ἀσπαίρουσ' ἔκειτ' ἐπὶ χθονὶ
 ἰδεῖν μεγίστη διαπρεπῆς τε τὴν θεῶν,
 ἧς αἵματι βωμὸς ἐραίνεται' ἄρδην τῆς θεοῦ.
 κἂν τῷδε Κάλχας πῶς δοκεῖς χαίρων ἔφη· 1590
 ὦ τοῦδ' Ἀχαιῶν κοῖρανοι κοινοῦ στρατοῦ,
 ὁρᾶτε τήνδε θυσίαν, ἣν ἡ θεὸς
 προὔθηκε βωμίαν, ἔλαφον ὀρειδρόμον;
 ταύτην μάλιστα τῆς κόρης ἀσπάζεται,
 ὥς μὴ μιάνῃ βωμὸν εὐγενεῖ φόνῳ. 1595

ἡδέως τε τοῦτ' ἐδέξατο, καὶ πλοῦν οὖριον
 δίδωσιν ἡμῖν Ἰλίου τ' ἐπιδρομάς.
 πρὸς ταῦτα πᾶς τις θάρσος αἶρε ναυβάτης,
 χώρει τε πρὸς ναῦν· ὥς ἡμέρᾳ τῇδε δεῖ
 λιπόντας ἡμᾶς Αὐλίδος κόλπους μυχοῦς 1600
 Αἴγαιον οἶδμα διαπερᾶν. ἐπεὶ δ' ἅπαν
 κατηνθρακώθη θυμ' ἐν Ἡφαίστου φλογί,
 τὰ πρόσφορ' ἠΰξαθ', ὥς τύχοι νόστου στρατός.
 πέμπει δ' Ἀγαμέμνων μ' ὥστε σοι φράσαι
 τάδε,

λέγειν θ' ὁποίας ἐκ θεῶν μοίρας κυρεῖ 1605
 καὶ δόξαν ἔσχεν ἄφθιτον καθ' Ἑλλάδα.
 ἐγὼ παρὼν δὲ καὶ τὸ πρᾶγμ' ὁρῶν λέγω·
 ἡ παῖς σαφῶς σοι πρὸς θεοὺς ἀφίπτατο.
 λύπης δ' ἀφαίρει καὶ πόσει πάρες χόλον·
 ἀπροσδόκητα δὲ βροτοῖσι τὰ τῶν θεῶν, 1610
 σώξουσί θ' οὐς φιλοῦσιν. ἡμαρ γὰρ τόδε
 θανοῦσαν εἶδε καὶ βλέπουσαν παῖδα σῆν.

ΧΟ. ὥς ἦδομαί τοι ταῦτ' ἀκούσας' ἀγγέλου·
 ζῶν δ' ἐν θεοῖσι σὸν μένειν φράζει τέκος.

ΚΛ. ὦ παῖ, θεῶν τοῦ κλέμμα γέγονας; 1615
 πῶς σε προσείπω; πῶς δὲ φῶ;
 παραμυθεῖσθαι τούσδε μάτην μύθους,
 ὥς σου πένθους λυγροῦ παυσαίμαν;

ΧΟ. καὶ μὲν Ἀγαμέμνων ἄναξ στείχει,
 τούσδ' αὐτοὺς ἔχων σοι φράζειν μύθους. 1620

ΑΓΑ. γύναι, θυγατρὸς ἔνεκ' ὄλβιοι γενοίμεθ' ἄν·
 ἔχει γὰρ ὄντως ἐν θεοῖς ὁμιλίαν.
 χρὴ δέ σε λαβοῦσαν τόνδε μόσχον νεαγενῇ
 στείχειν πρὸς οἴκους· ὥς στρατὸς πρὸς πλοῦν
 ὁρᾷ.

καὶ χαῖρε· χρόνιά γε τὰμά σοι προσφθέγματα 1625
Τροίηθεν ἔσται. καὶ γένοιτό σοι καλῶς.

ΧΟ. χαίρων, Ἀτρεΐδῃ, γῆν ἰκοῦ Φρυγίαν,
χαίρων δ' ἐπάνηκε,
κάλλιστά μοι σκῦλ' ἀπὸ Τροίας ἐλών.]

ΙΦΙΓΕΝΕΙΑ Η ΕΝ ΤΑΥΡΟΙΣ.

ΤΑ ΤΟΥ ΔΡΑΜΑΤΟΣ ΠΡΟΣΩΠΑ.

ΙΦΙΓΕΝΕΙΑ.

ΟΡΕΣΤΗΣ.

ΠΤΑΛΑΔΗΣ.

ΧΟΡΟΣ ΕΛΛΗΝΙΔΩΝ ΓΥΝΑΙΚΩΝ.

ΒΟΥΚΟΛΟΣ.

ΘΟΑΣ.

ΑΓΓΕΛΟΣ.

ΑΘΗΝΑ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ.

Ὁρέστης κατὰ χρησμὸν εἰς Ταύρους τῆς Σκυθίας μετὰ Πυλάδου παραγενόμενος τὸ παρ' αὐτοῖς τιμώμενον τῆς Ἀρτέμιδος ξόانون ὑφελέσθαι προηρεῖτο. προελθὼν δ' ἀπὸ τῆς νεῶς καὶ φανείς, ὑπὸ τῶν ἐγχωρίων ἅμα τῷ φίλῳ συλληφθεὶς ἀνήχθη κατὰ τὸν παρ' αὐτοῖς ἐθι-
σμόν, ὅπως τοῦ τῆς Ἀρτέμιδος ἱεροῦ σφάγιον γένωνται. τοὺς γὰρ καταπλεύσαντας ξένους ἀπέσφαττον.

Ἡ μὲν σκηνὴ τοῦ δράματος ὑπόκειται ἐν Ταύροις τῆς Σκυθίας· ὁ δὲ χορὸς συνέστηκεν ἐξ Ἑλληνίδων γυναικῶν, θεραπαινίδων τῆς Ἰφιγενείας. προλογίζει δὲ ἡ
Ἰφιγένεια.

ΕΥΡΙΠΙΔΟΥ

ΙΦΙΓΕΝΕΙΑ Η ΕΝ ΤΑΥΡΟΙΣ.

- ΙΦ. Πέλοψ ὁ Ταντάλειος εἰς Πῖσαν μολὼν
 θοαῖσιν ἵπποις Οἰνομάου γαμεῖ κόρην,
 ἐξ ἧς Ἀτρεὺς ἐβλαστέν· Ἀτρεὺς δὲ παῖς
 Μενέλαος Ἀγαμέμνων τε· τοῦ δ' ἔφυν ἐγώ,
 τῆς Τυνδαρείας θυγατρὸς Ἰφιγένεια παῖς, 5
 ἣν ἀμφὶ δύναις ἄς θάμ' Εὐριπος πυκναῖς
 αὔραις ἐλίσσων κυανέαν ἄλα στρέφει,
 ἔσφαξεν Ἑλένης οὔνεχ', ὥς δοκεῖ, πατὴρ
 Ἀρτέμιδι κλειναῖς ἐν πτυχαῖσιν Αὐλίδος.
 ἔνταῦθα γὰρ δὴ χιλίων ναῶν στόλον 10
 Ἑλληνικὸν συνήγαγ' Ἀγαμέμνων ἄναξ,
 τὸν καλλίνικον στέφανον Ἰλίου θέλων
 λαβεῖν Ἀχαιοὺς, τοὺς θ' ὑβρισθέντας γάμους
 Ἑλένης μετελθεῖν, Μενέλεω χάριν φέρων.
 δεινῆς τ' ἀπλοίας πνευμάτων τ' οὐ τυγχάνων, 15
 εἰς ἔμπυρ' ἦλθε, καὶ λέγει Κάλχας τάδε·
 ὦ τῇσδ' ἀνάσσων Ἑλλάδος στρατηγίας,
 Ἀγάμεμνον, οὐ μὴ ναῦς ἀφορμήσῃ χθονός,
 πρὶν ἂν κόρην σὴν Ἰφιγένειαν Ἀρτεμῖς
 λάβῃ σφαγεῖσαν· ὃ τι γὰρ ἐνιαυτὸς τέκοι 20
 κάλλιστον, εὖξω φωσφόρῳ θύσειν θεᾷ.
 παῖδ' οὖν ἐν οἴκοις σὴ Κλυταιμνήστρα δάμαρ

τίκτει, τὸ καλλιστεῖον εἰς ἔμ' ἀναφέρων,
 ἣν χρή σε θῦσαι. καί μ' Ὀδυσσεὺς τέχνηαι
 μητρὸς παρείλοντ' ἐπὶ γάμοις Ἀχιλλέως. 25
 ἔλθοῦσα δ' Αὐλίδ' ἢ τάλαιν' ὑπὲρ πυρᾶς
 μεταρσία ληφθεῖς ἐκαινόμην ξίφει·
 ἀλλ' ἐξέκλεψεν ἔλαφον ἀντιδοῦσά μου
 Ἄρτεμις Ἀχαιοὺς, διὰ δὲ λαμπρὸν αἰθέρα
 πέμψασά μ' εἰς τήνδ' ὤκισεν Ταύρων χθόνα, 30
 οὗ γῆς ἀνάσσει βαρβάρουσι βάρβαρος
 Θόας, ὃς ὠκὺν πόδα τιθεῖς ἴσον πετεροῖς
 εἰς τοῦνομ' ἦλθε τόδε ποδωκείας χάριν.
 ναοῖσι δ' ἐν τοῖσδ' ἱερίαν τίθησί με,
 ὅθεν νόμοισι τοῖσιν ἥδεται θεὰ 35
 Ἄρτεμις ἑορτῆς, τοῦνομ' ἧς καλὸν μόνον,
 τὰ δ' ἄλλα — σιγᾶ, τὴν θεὸν φοβουμένη.
 θύω γὰρ ὄντος τοῦ νόμου καὶ πρὶν πόλει,
 ὃς ἂν κατέλθῃ τήνδε γῆν Ἑλλήν ἀνῆρ.
 κατάρχομαι μὲν, σφάγια δ' ἄλλοισιν μέλει 40
 ἄρορετ' ἔσωθεν τῶνδ' ἀνακτόρων θεᾶς.
 ἂ καὶνὰ δ' ἦκει νύξ φέρουσα φάσματα,
 λέξω πρὸς αἰθέρ', εἴ τι δὴ τόδ' ἔστ' ἄκος.
 ἔδοξ' ἐν ὕπνῳ τῆσδ' ἀπαλλαχθεῖσα γῆς
 οἴκειν ἐν Ἄργει, παρθενῶσι δ' ἐν μέσοις 45
 εὖδειν, χθονὸς δὲ νῶτα σειςθῆναι σάλῳ,
 φεύγειν δὲ κᾶξω σταῖσα θριγκὸν εἰσιδεῖν
 δόμων πίτνοντα, πᾶν δ' ἐρείψιμον στέγος
 βεβλημένον πρὸς οὐδας ἐξ ἄκρων σταθμῶν.
 μόνος δ' ἐλείφθη στῦλος, ὥς ἔδοξέ μοι, 50
 δόμων πατρῶων, ἐκ δ' ἐπικράνων κόμας.
 ξανθὰς καθεῖναι, φθέγμα δ' ἀνθρώπου λαβεῖν,
 κἀγὼ τέχνην τήνδ' ἣν ἔχω ξενοκτόνου
 τιμῶσ' ὑδραίνειν αὐτὸν ὥς θανούμενον,

κλαίουσα. τοῦναρ δ' ὦδε συμβάλλω τόδε· 55
 τέθνηκ' Ὀρέστης, οὗ κατηρξάμην ἐγώ.
 στῦλοι γὰρ οἴκων εἰσὶ παῖδες ἄρσενες·
 θνήσκουσι δ' οὓς ἂν χέρνιβες βάλῃσ' ἑμαί.
 οὐδ' αὖ συνάψαι τοῦναρ εἰς φίλους ἔχω·
 Στροφίῳ γὰρ οὐκ ἦν παῖς, ὅτ' ὠλλύμην ἐγώ. 60
 νῦν οὖν ἀδελφῷ βούλομαι δοῦναι χοᾶς
 παροῦς' ἀπόντι, ταῦτα γὰρ δυναίμεθ' ἄν,
 σὺν προσπόλοισιν, ἃς ἔδωχ' ἡμῖν ἄναξ
 Ἑλληνίδας γυναικάς. ἀλλ' ἐξ αἰτίας
 οὐπω τίνος πάρεισιν; εἴμ' εἶσω δόμων 65
 ἐν οἷσι ναίω τῶνδ' ἀνακτόρων θεᾶς.

- ΟΡ. ὦρα, φύλασσε μή τις ἐν στίβῳ βροτῶν.
 ΠΥ. ὁρῶ, σκοποῦμαι δ' ὄμμα πανταχοῦ στρέφων.
 ΟΡ. Πυλάδῃ, δοκεῖ σοι μέλαθρα ταῦτ' εἶναι θεᾶς;
 ΠΥ. ἔμοιγ', Ὀρέστα· σοὶ δὲ συνδοκεῖν χρεῶν. 71
 ΟΡ. καὶ βωμός, Ἑλλήν οὗ καταστάξει φόνος;
 ΠΥ. ἐξ αἱμάτων γοῦν ξάνθ' ἔχει θριγκώματα.
 ΟΡ. θριγκοῖς δ' ὑπ' αὐτοῖς σκυλ' ὀρᾷς ἡρτημένα;
 ΠΥ. τῶν κατθανόντων γ' ἀκροθίνια ξένων. 75
 ΟΡ. ἀλλ' ἐγκυκλοῦντ' ὀφθαλμὸν εὖ σκοπεῖν χρεῶν.
 ὦ Φοῖβε, ποῦ μ' αὖ τήνδ' ἐς ἄρκυν ἤγαγες
 χρήσας, ἐπειδὴ πατρός αἴμ' ἐτισάμην,
 μητέρα κατακτάς; διαδοχαῖς δ' Ἑρινύων
 ἡλανυνόμεσθα φυγάδες, ἔξεδροι χθονός, 80
 δρόμους τε πολλοὺς ἐξέπλησα καμπίμους.
 ἔλθων δὲ σ' ἡρώτησα πῶς τροχηλάτου
 μανίας ἂν ἔλθοιμ' εἰς τέλος πόνων τ' ἐμῶν.
 σὺ δ' εἶπας ἔλθειν Ταυρικῆς μ' ὄρους χθονός, 85

ἐνθ' Ἀργόθεν ναῦν ποντίαν ἐστείλαμεν; 70

οὓς ἐξεμόχθουν περιπολῶν καθ' Ἑλλάδα. 84

ἐνθ' Ἄρτεμις σὴ σύγγονος βωμοὺς ἔχει,
 λαβεῖν τ' ἄγαλμα θεᾶς, ὅ φασιν ἐνθάδε
 εἰς τούσδε ναοὺς οὐρανοῦ πεσεῖν ἄπο·
 λαβόντα δ' ἢ τέχναισιν ἢ τύχῃ τινί,
 κίνδυνον ἐκπλήσαντ', Ἀθηναίων χθονὶ 90
 δοῦναι· τὸ δ' ἐνθένδ' οὐδὲν ἐρρήθη πέρα·
 καὶ ταῦτα δράσαντ' ἀμπνοᾶς ἕξιν πόνων.
 ἦκω δὲ πεισθεὶς σοῖς λόγοισιν ἐνθάδε
 ἄγνωστον εἰς γῆν, ἄξενον. σὲ δ' ἱστορῶ,
 Πυλάδῃ, σὺ γάρ μοι τοῦδε συλλήπτωρ πόνου, 95
 τί δρῶμεν; ἀμφίβληστρα γὰρ τοίχων ὄρεᾶς
 ὑψηλά· πότρεα δωμάτων προσαμβάσεις
 ἐκβησόμεσθα; πῶς ἂν οὖν λάθοιμεν ἄν;
 ἢ χαλκότευκτα κληῖθρα λύσαντες μοχλοῖς,
 ὧδ' οὐδὸν ἔσιμεν; ἦν δ' ἀνοίγοντες πύλας 100
 ληφθῶμεν εἰσβάσεις τε μηχανώμενοι,
 θανούμεεθ'. ἀλλὰ πρὶν θανεῖν, νεῶς ἔπι.
 φεύγωμεν, ἥπερ δεῦρ' ἐναυστολήσαμεν.
 ΠΥ. φεύγειν μὲν οὐκ ἀνεκτὸν οὐδ' εἰώθαμεν·
 τὸν τοῦ θεοῦ δὲ χρησμὸν οὐ κακιστέον. 105
 ναοῦ δ' ἀπαλλαχθέντε κρύψωμεν δέμας
 κατ' ἄντρο' ἃ πόντος νοτίδι διακλύζει μέλας,
 νεῶς ἄπωθεν, μή τις εἰσιδὼν σκάφος
 βασιλεῦσιν εἴπῃ κατὰ ληφθῶμεν βίᾳ.
 ὅταν δὲ νυκτὸς ὄμμα λυγαίας μόλῃ, 110
 τολμητέον τὸ ξεστὸν ἐκ ναοῦ λαβεῖν
 ἄγαλμα πάσας προσφέροντε μηχανάς.
 ὅρα δὲ γεῖσα τριγλύφων ὅποι κενὸν
 δέμας καθεῖναι· τοὺς πόνους γὰρ ἀγαθοὶ
 τολμῶσι, δειλοὶ δ' εἰσὶν οὐδὲν οὐδαμοῦ. 115
 οὕτω μακρὸν μὲν ἦλθομεν κώπῃ πόρον,
 ἐκ τερμάτων δὲ νόστον ἀροῦμεν πάλιν.

- ΟΡ. ἄλλ' εὖ γὰρ εἶπας, πειστέον· χωρεῖν χρεῶν
 ὅποι χθονὸς κρύψαντε λήσομεν δέμας.
 οὐ γὰρ τὸ τοῦ θεοῦ γ' αἴτιον γενήσεται 12
 πεσεῖν ἄκραντον θέσφατον· τολμητέον·
 μόχθος γὰρ οὐδεὶς τοῖς νέοις σκῆψιν φέρει.
- ΧΟ. εὐφραμεῖτ', ὦ
 πόντου δισσὰς συγχωρούσας
 πέτρας Εὐξείνου ναίοντες. 12
 ὦ παῖ τᾶς Λατοῦς,
 Δίκτυνν' οὐρεία,
 πρὸς σὰν ἀυλάν, εὐστύλων
 ναῶν χρυσήρεις θριγκούς,
 πόδα παρθένιον ὅσιον ὁσίας 13
 κληδούχου δούλα πέμπω,
 Ἑλλάδος εὐίππου πύργους
 καὶ τείχη χόρτων τ' εὐδένδρων
 ἑξαλλάξας' Εὐρώπαν, 13
 πατρῶων οἴκων ἔδρας.
 ἔμολον· τί νέον; τίνα φροντίδ' ἔχεις;
 τί με πρὸς ναοὺς ἄγαγες ἄγαγες,
 ὦ παῖ τοῦ τᾶς Τροίας πύργους
 ἐλθόντος κλεινᾶ σὺν κώπᾳ 14
 χιλιοναύτᾳ μυριοτευχεῖ
 * Ἀτρειδᾶν τῶν κλεινῶν;
- ΙΦ. ἰὼ δμωαί,
 δυσθροηνήτοις ὥς θρήνοις
 ἔγκειμ', ἰστᾶσ' οὐκ εὐμούσου 14
 μολπᾶς ἰὰν ἀλύροις ἐλέγοις,
 αἰαῖ, κηδείοις οἴκοις.
 αἷ μοι συμβαίνουσ' ἄται,
 σύγγγονον ἄμὸν κατακλαιομένα
 ζωᾶς, οἶαν ἰδόμαν ὄψιν ὀνείρων 15

νυκτός, τᾷς ἐξῆλθ' ὄρφνα.
 ὀλόμαν ὀλόμαν·
 οὐκ εἶσ' οἴκοι πατρῶοι·
 οἴμοι φροῦδος γέννα.
 φεῦ φεῦ τῶν Ἀργεὶ μόχθων. 155
 ἰὼ ἰὼ δαίμων, ὅς τὸν
 μοῦνόν με κασίγνητον συλᾷς
 Αἰδᾶ πέμψας, ᾧ τάσδε χοᾶς
 μέλλω κρατῆρά τε τὸν φθιμένων 160
 ὑδραίνειν γαίης ἐν νώτοις,
 πηγᾶς τ' οὐρείων ἐκ μόσχων
 Βάκχου τ' οἶνηρᾶς λοιβᾶς
 ξουθᾶν τε πόνημα μελισσᾶν, 165
 ἃ νεκροῖς θελκτήρια κεῖται.
 ἄλλ' ἔνδος μοι πάγχρυσον
 τεῦχος καὶ λοιβὰν Αἰδᾶ.
 ὦ κατὰ γαίης Ἀγαμεμνόνιον 170
 θάλος, ὥς φθιμένῳ τάδε σοὶ πέμπω·
 δέξαι δ'· οὐ γὰρ πρὸς τύμβον σοὶ
 ξανθὰν χαίταν, οὐ δάκρυ' οἶσω.
 τηλόσε γὰρ δὴ σᾶς ἀπενάσθην 175
 πατρίδος καὶ ἐμᾶς, ἔνθα δοκήμασι
 κεῖμαι σφαχθεῖς ἅ τλάμων.
 ΧΟ. ἀντιψάλμους ᾠδὰς ὕμνον τ'
 Ἀσιήταν σοὶ βάρβαρον ἄχᾶν 180
 δεσποίνῃ γ' ἐξανδάσω,
 τὰν ἐν θρήνοισιν μοῦσαν,
 νέκυσιν μελέων τὰν ἐν μολπαῖς
 Αἰδᾶς ὕμνεϊ δίχα παιάνων. 185
 οἴμοι, τῶν Ἀτρειδᾶν οἴκων
 ἔρρει φῶς σκήπτρων, οἴμοι,
 * * πατρῶων οἴκων.

τίνος ἐκ τῶν εὐόλβων Ἄργει
 βασιλέων ἀρχά;
 μόχθος δ' ἐκ μόχθων ἄσσει
 δινενοῦσαις ἵπποις πιταναῖς·
 ἀλλάξας δ' ἐξ ἔδρας
 ἱερὸν * * ὅμ' ἀνγᾶς
 ἄλιος. ἄλλαις δ' ἄλλα προσέβα
 χρυσέας ἀρνὸς μελάθροισι ὀδύνα,
 φόνος ἐπὶ φόνῳ, ἄχεά τ' ἄχεσιν·
 ἔνθεν τῶν πρόσθεν δμαθέντων
 Τανταλιδᾶν ἐκβαίνει ποινά γ'
 εἰς οἴκους· σπεύδει δ' ἀσπούδαστ'
 ἐπὶ σοὶ δαίμων.

ΙΦ. ἐξ ἀρχᾶς μοι δυσδαίμων
 δαίμων τᾶς ματρὸς ζώνας
 καὶ νυκτὸς κείνας· ἐξ ἀρχᾶς
 λόχια στερορὰν παιδείαν
 Μοῖραι συντείνουσιν θεαί,
 α μναστευθεῖσ' ἐξ Ἑλλάνων,
 ἂν πρωτόγονον θάλος ἐν θαλάμοις
 Αἴδας ἅ τλάμων κούρα
 σφάγιον πατρῷά λώβα
 καὶ θυμ' οὐκ εὐγάθητον
 ἔτεκεν, ἔτρεφεν, εὐκταίαν
 ἱππείοις ἐν δίφροισιν
 ψαμάθων Αὐλίδος ἐπιβᾶσαν
 νύμφαν, οἴμοι, δύσνυμφον
 τῷ τᾶς Νηρῆως κούρας, αἰαῖ.
 νῦν δ' ἀξείνου πόντου ξείνα
 δυσχόρτους οἴκους ναίω
 ἄγαμος, ἄτεκνος, ἄπολις, ἄφιλος,
 οὐ τὰν Ἄργει μέλπουσ' Ἥραν

οὐδ' ἰστοῖς ἐν καλλιφθόργοις
 κερκίδι Παλλάδος Ἀτθίδος εἰκῶ
 καὶ Τιτάνων ποικίλλουσ', ἀλλ'
 αἰμόρραντον δυσφόρμιγγα 225
 ξείνων αἱμάσσουσ' ἄταν βωμούς,
 οἰκτρὰν τ' αἰαζόντων αὐδάν,
 οἰκτρόν τ' ἐκβαλλόντων δάκρυον.
 καὶ νῦν κείνων μὲν μοι λάθρα,
 τὸν δ' Ἄργει δμαθέντα κλαίω 230
 σύγγονον, ὃν ἔλιπον ἐπιμαστίδιον
 ἔτι βρέφος, ἔτι νέον, ἔτι θάλος
 ἐν χερσὶν ματρὸς πρὸς στέρνοις τ'
 Ἄργει σκηπτοῦχον Ὀρέσταν. 235

ΧΟ. καὶ μὴν ὅδ' ἀκτὰς ἐκλιπὼν θαλασσίους
 βουφορβὸς ἦκει, σημανῶν τί σοι νέον.

ΒΟΥ. Ἀγαμέμνωνος παῖ καὶ Κλυταιμνήστρας τέκνον,
 ἄκουε καινῶν ἐξ ἐμοῦ κηρυγμάτων.

ΙΦ. τί δ' ἔστι τοῦ παρόντος ἐκπλήσσον λόγου; 240

ΒΟΥ. ἤκουσιν εἰς γῆν κυανέαν Συμπληγάδα
 πλάτῃ φυγόντες δίπτυχοι νεανίαι,
 θεᾷ φίλον πρόσφαγμα καὶ θυτήριον
 Ἀρτέμιδι. χέρνιβας δὲ καὶ κατάργματα
 οὐκ ἂν φθάνοις ἂν εὐτρεπῇ ποιουμένη. 245

ΙΦ. ποδαποί; τίνας γῆς νόμον ἔχουσιν οἱ ξένοι;

ΒΟΥ. Ἑλληνες, ἐν τοῦτ' οἶδα κοῦ περαιτέρω.

ΙΦ. οὐδ' ὄνομ' ἀκούσας οἶσθα τῶν ξένων φράσαι;

ΒΟΥ. Πυλάδης ἐκλήζεθ' ἄτερος πρὸς θατέρου.

ΙΦ. τοῦ ξυζύγου δὲ τοῦ ξένου τί τοῦνομ' ἦν; 250

ΒΟΥ. οὐδεὶς τόδ' οἶδεν· οὐ γὰρ εἰσηκούσαμεν.

ΙΦ. πῶς δ' εἶδετ' αὐτοὺς καὶ τυχόντες εἴλετε;

ΒΟΥ. ἄκραις ἐπὶ ῥηγμῖσιν ἀξένου πόρου.

ΙΦ. καὶ τίς θαλάσσης βουκόλοις κοινωνία;

ΒΟΥ. βοῦς ἦλθομεν νίψοντες ἐναλίᾳ δρόσῳ. 25

ΙΦ. ἐκεῖσε δὴ ᾧ πάνελθε, πῶς νιν εἴλετε
 τρόπῳ θ' ὁποίῳ· τοῦτο γὰρ μαθεῖν θέλω.
 χρόνιοι γὰρ ἦκουσ' οἷδ', ἐπεὶ βωμὸς θεᾶς
 Ἑλληνικαῖσιν ἐξεφοινίχθη ῥοαῖς.

ΒΟΥ. ἐπεὶ τὸν εἰσρέοντα διὰ Συμπληγάδων 26
 βοῦς ὑλοφορβοὺς πόντον εἰσεβάλλομεν,
 ἦν τις διαρρῶξ κυμάτων πολλῷ σάλῳ
 κοιλωπὸς ἄγμος, πορφυρευτικάι στέγαι.

ἐνταῦθα δισσοὺς εἶδέ τις νεανίας
 βουφορβὸς ἡμῶν, κἀνεχώρησεν πάλιν 26
 ἄκροισι δακτύλοισι πορθμεύων ἵχνος.

ἔλεξε δ' οὐχ ὀρᾷτε; δαίμονές τινες
 θάσσουσιν οἷδε. θεοσεβῆς δ' ἡμῶν τις ὦν
 ἀνέσχε χεῖρε καὶ προσεύξατ' εἰσιδῶν·

ὦ ποντίας παῖ Λευκοθέας, νεῶν φύλαξ, 27
 δέσποτα Παλαῖμον, ἴλεως ἡμῖν γενοῦ,
 εἴτ' οὖν ἐπ' ἅκταῖς θάσσετον Διοσκόρῳ;

ἢ Νηρέως ἀγάλμαθ', ὃς τὸν εὐγενῆ
 ἔτικτε πεντήκοντα Νηρήδων χορόν.

ἄλλος δέ τις μάταιος, ἀνομία θρασύς, 27
 ἐγέλασεν εὐχαῖς, ναυτίλους δ' ἐφθαρμένους
 θάσσειν φάραγγ' ἔφασκε τοῦ νόμου φόβῳ,
 κλύοντας ὡς θύοιμεν ἐνθάδε ξένους.

ἔδοξε δ' ἡμῶν εὖ λέγειν τοῖς πλείοσι,
 θηρᾶν τε τῇ θεῷ σφάγια τὰπιχώρια. 28

κἀν τῷδε πέτρῳ ἄτερος λιπὼν ξένοιν
 ἔσση κάρῳ τε διετίνῃξ' ἄνω κάτω

κἀπεστέναξεν ὠλένας τρέμων ἄκρας,
 μανίαις ἀλαίνων, καὶ βοᾷ κυναγὸς ὥς·

Πυλάδην, δέδορκας τήνδε; τήνδε δ' οὐχ ὀρᾷς 28

Ἄιδου δράκαιναν, ὥς με βούλεται κτανεῖν

δειναῖς ἐχίδναις εἰς ἔμ' ἐστομωμένη·
 ἥ δ' ἐκ χιτώνων πῦρ πνέουσα καὶ φόνον
 πτεροῖς ἐρέσσει, μητέρ' ἀγκάλαις ἐμὴν
 ἔχουσα, πέτρινον ὄχθον, ὥς ἐπεμβάλη. 290
 οἴμοι κτενεῖ με· ποῖ φύγω; παρῆν δ' ὄρᾱν
 οὐ ταῦτα μορφῆς σχήματ', ἀλλ' ἡλλάσσετο
 φθογγάς τε μόσχων καὶ κυνῶν ὑλάγματα,
 ἃ "φασκ' Ἑρινῦς ἰέναι μυκήματα.
 ἡμεῖς δὲ συσταλέντες, ὥς θανούμενοι, 295
 σιγῇ καθήμεθ'· ὁ δὲ χερὶ σπᾶσας ξίφος,
 μόσχους ὀρούσας εἰς μέσας λέων ὅπως,
 παῖει σιδήρῳ λαρόνας εἰς πλευράς εἰς,
 δοκῶν Ἑρινῦς θεὰς ἀμύνεσθαι τάδε,
 ὥς αἱματηρὸν πέλαγος ἐξανθεῖν ἁλός. 300
 κἂν τῷδε πᾶς τις, ὥς ὄρᾳ βουφόρβια
 πίπτοντα καὶ πορθούμεν', ἐξωπλίζετο,
 κόχλους τε φυσῶν συλλέγων τ' ἐργαρείους·
 πρὸς εὐτραφεῖς γὰρ καὶ νεανίας ξένους
 φαύλους μάχεσθαι βουκόλους ἡγούμεθα. 305
 πολλοὶ δ' ἐπληρώθημεν ἐν μικρῷ χρόνῳ.
 πίπτει δὲ μανίας πίτυλον ὁ ξένος μεθείς,
 στάζων ἀφρῶ γένειον· ὥς δ' ἐσείδομεν
 προὔργου πεσόντα, πᾶς ἀνὴρ ἔσχεν πόνον
 βάλλων ἀράσσω· ἄτερος δὲ τοῖν ξένοιον 310
 ἀφρόν τ' ἀπέψη σώματός τ' ἐτημέλει
 πέπλων τε προυνκάλυπτεν εὐπήνους ὑφάς,
 καραδοκῶν μὲν τὰπιόντα τραύματα,
 φίλον δὲ θεραπεύεισιν ἄνδρ' εὐεργετῶν.
 ἔμφρων δ' ἀνάξας ὁ ξένος πεσέματος 315
 ἔγνω κλύδωνα πολεμίων προσκείμενον
 καὶ τὴν παροῦσαν συμφορὰν αὐτοῖν πέλας,
 ὥμωξέ θ'· ἡμεῖς δ' οὐκ ἀνίεμεν πέτρους

βάλλοντες, ἄλλος ἄλλοθεν προσκείμενοι.
 οὐ δὴ τὸ δεινὸν παρακέλευσμ' ἠκούσαμεν· 32
 Πυλάδῃ, θανούμεθ', ἀλλ' ὅπως θανούμεθα
 κάλλισθ'· ἔπου μοι, φάσγανον σπάσας χειρί.
 ὥς δ' εἶδομεν δίπαλτα πολεμίων ξίφῃ,
 φρυγῇ λεπαλάς ἐξεπίμπλαμεν νάπας.
 ἀλλ' εἰ φύγοι τις, ἄτεροι προσκείμενοι 32
 ἔβαλλον αὐτούς· εἰ δὲ τούσδ' ὠσαίατο,
 αὐτίς τὸ νῦν ὑπεῖκον ἥρασσον πέτροις.
 ἀλλ' ἦν ἄπιστον· μυρῖων γὰρ ἐκ χειρῶν
 οὐδ' εἰς τὰ τῆς θεοῦ θύματ' εὐτύχει βαλῶν.
 μόλις δέ νιν τόλμῃ μὲν οὐ χειρούμεθα, 33
 κύκλῳ δὲ περιβαλόντες ἐξεκλέψαμεν
 πέτροισι χειρῶν φάσγαν', εἰς δὲ γῆν γόνυ
 καμάτῳ καθεῖσαν. πρὸς δ' ἄνακτα τῆσδε γῆς
 κομίζομέν νιν. ὁ δ' ἐσιδὼν ὅσον τάχος
 εἰς χέρνιβάς τε καὶ σφαγεῖ' ἔπεμπέ σοι. 33
 εὐχου δὲ τοιάδ' ὧ νεᾶνί σοι ξένων
 σφάγια παρεῖναι· καὶ ἀναλίσκῃς ξένους
 τοιούσδε, τὸν σὸν Ἑλλὰς ἀποτίσει φόνον
 [δίκας τίνουσα τῆς ἐν Αὐλίδι σφαγῆς].
 ΧΟ. θαυμάστ' ἔλεξας τὸν φανένθ', ὅστις ποτὲ 34
 Ἑλληνος ἐκ γῆς πόντον ἦλθεν ἄξενον.
 ΙΦ. εἶεν. σὺ μὲν κόμιζε τοὺς ξένους μολῶν·
 τὰ δ' ἐνθάδ' ἡμεῖς οἶα φροντιούμεθα.
 ὧ καρδίᾳ τάλαινα, πρὶν μὲν εἰς ξένους
 γαληνὸς ἦσθα καὶ φιλοικτίρμων αἰεί, 34
 εἰς θοῦμόφυλον ἀναμετρουμένη δάκρυ,
 Ἑλληνας ἄνδρας ἠνίκ' εἰς χέρας λάβοις.
 νῦν δ' ἐξ ὀνείρων οἷσιν ἡγριώμεθα,

δοκοῦσαν Ὀρέστην μηκέθ' ἥλιον βλέπειν,

δύσνουν με λήψεσθ', οἵτινές ποθ' ἤκετε. 350
 καὶ τοῦτ' ἄρ' ἦν ἀληθές, ἡσθόμην, φίλαι·
 οἱ δυστυχεῖς γὰρ τοῖσιν εὐτυχεστέροις
 αὐτοὶ καλῶς πράξαντες οὐ φρονοῦσιν εὔ.
 ἀλλ' οὔτε πνεῦμα Διόθεν ἦλθε πώποτε,
 οὐ πορθμῖς, ἥτις διὰ πέτρας Συμπληγάδας 355
 Ἑλένην ἀπήγαγ' ἐνθάδ', ἥ μ' ἀπώλεσε,
 Μενέλεών θ', ἵν' αὐτοὺς ἀντετιμωρησάμην,
 τὴν ἐνθάδ' ἀνλιν ἀντιθεῖσα τῆς ἐκεῖ,
 οὗ μ' ὥστε μόσχον Δαναΐδαι χειρούμενοι
 ἔσφαζον, ἱερεὺς δ' ἦν ὁ γεννήσας πατήρ. 360
 οἷμοι· κακῶν γὰρ τῶν τότ' οὐκ ἀμνημονῶ,
 ὅσας γενείου χεῖρας ἐξηκόντισα
 γονάτων τε τοῦ τεκόντος ἐξαρτωμένη,
 λέγουσα τοιάδ'· ὦ πάτερ, νυμφεύομαι
 νυμφεύματ' αἰσχρὰ πρὸς σέθεν· μήτηρ δ' ἐμὲ 365
 σέθεν κατακτείνοντος Ἀργεῖαί τε νῦν
 ὕμνοῦσιν ὕμεναιόισιν, ἀνλεῖται δὲ πᾶν
 μέλαθρον· ἡμεῖς δ' ὀλλύμεσθα πρὸς σέθεν.
 Αἰδῆς Ἀχιλλεὺς ἦν ἄρ', οὐχ ὁ Πηλέως,
 ὃν μοι προτείνας πόσιν, ἐν ἁρμάτων μ' ὄχοις 370
 εἰς αἵματηρὸν γάμον ἐπόρθμευσας δόλω.
 ἐγὼ δὲ λεπτῶν ὄμμα διὰ καλυμμάτων
 ἔχουσ', ἀδελφόν τ' οὐκ ἀνελόμην χεροῖν,
 ὃς νῦν ὄλωλεν, οὐ κασιγνήτη στόμα
 συνῆψ' ὑπ' αἰδοῦς, ὡς ἰοῦσ' εἰς Πηλέως 375
 μέλαθρα· πολλὰ δ' ἀπεθέμην ἀσπάσματα
 εἰσαῦθις, ὡς ἦξουσ' ἐς Ἀργος αὖ πάλιν.
 ὦ τλήμον, εἰ τέθνηκας, ἐξ οἶων καλῶν
 ἔρρεις, Ὀρέστα, καὶ πατρὸς ζηλωμάτων.
 * * * * *
 τὰ τῆς θεοῦ δὲ μέφομαι σοφίσματα, 380

ἥτις βροτῶν μὲν ἦν τις ἄψηται φόνου,
 βωμῶν ἀπέλργει, μυσαρὸν ὥς ἡγουμένη,
 αὐτὴ δὲ θυσίαις ἤδεται βροτοκτόνοις.
 οὐκ ἔσθ' ὅπως ἔτικτεν ἡ Διὸς δάμαρ 385
 Αἰτῶ τοσαύτην ἀμαθίαν. ἐγὼ μὲν οὖν
 τὰ Ταντάλου θεοῖσιν ἐστιάματα
 ἄπιστα κρίνω, παιδὸς ἡσθῆναι βορᾶ,
 τοὺς δ' ἐνθάδ', αὐτοὺς ὄντας ἀνθρωποκτόνους,
 εἰς τὸν θεὸν τὸ φαῦλον ἀναφέρειν δοκῶ· 390
 οὐδένα γὰρ οἶμαι δαιμόνων εἶναι κακόν.

ΧΟ. κυάνεαι κυάνεαι σύνοδοι θαλάσσας, στρ.
 ἔν' οἷστρος ὁ ποτώμενος Ἀργόθεν
 ἄξενον ἐπ' οἶδμα διεπέρασε πόντου, 395
 Ἀσιάτιδα γαῖαν
 Εὐρώπας διαμήψας.
 τίνες ποτ' ἄρα τὸν εὐύδρον δονακόχλοα
 λιπόντες Εὐρώταν 400
 ἢ ρεύματα σεμνὰ Δίρκας
 ἔβασαν ἔβασαν ἄμικτον αἶαν, ἐνθα κούρα
 δία τέγγει
 βωμοὺς καὶ περικίονας 405
 ναοὺς αἶμα βρότειον;
 ἢ ῥοθίοις εἰλατίनαις δικρότοισι κώπαις ἀντ.
 ἔπλευσαν ἐπὶ πόντια κύματα
 νάιον ὄχημα λινοπόροισί τ' αὔραις, 410
 φιλόπλουτον ἄμιλλαν
 αὔξοντες μελάθροισιν;
 φίλα γὰρ ἐλπίς ἐγένετ' ἐπὶ πῆμασι βροτῶν
 ἄπληστος ἀνθρώποις, 415

392 — 406 = 407 — 420

ἢ καὶ λοχείας ἢ νεκροῦ θίγη χειροῖν, 382

ὄλβου βάρος οἷ φέρονται
 πλάνητες ἐπ' οἶδμα πόλεις τε βαρβάρους περῶντες
 κεινᾷ δόξῃ.

γνώμα δ' οἷς μὲν ἄκαιρος ὄλ-
 βου, τοῖς δ' εἰς μέσον ἤκει. 420

πῶς πέτρας τὰς συνδρομάδας, στρ.

πῶς Φινεΐδας ἀνύπνους

ἀκτὰς ἐπέρασαν

παρ' ἄλιον αἰγιαλὸν ἐπ' Ἀμφιτρίτας 425

ῥοθίῳ δραμόντες;

ὅπου πεντήκοντα κορᾶν

τῶν Νηρηίδων χοροὶ

μέλπουσιν ἐγκύκλιοι,

καὶ πλησιςτίοισι πνοαῖς, 430

συριζόντων κατὰ πρύμναν

εὐναίων πηδαλίων

αὔραις ἐν νοτίαις

ἢ πνεύμασι Ζεφύρου,

τὰν πολυόρνιθον ἐπ' αἶαν, 435

λενκὰν ἀκτάν, Ἀχιλλῆος

δρομούς καλλισταδίους,

Εὐξεινον κατὰ πόντον.

εἶθ' εὐχαῖσιν δεσποσύνοις ἀντ.

Λήδας Ἑλένα φίλα παῖς 440

ἐλθοῦσα τύχοι τὰν

Τρῳάδα λιποῦσα πόλιν, ἵν' ἀμφὶ χαίταν

δρόσον αἵματηρὰν

ἐλιχθεῖσα λαιμοτόμῳ

δεσποίνας χερὶ θάνοι 445

ποινὰς δοῦσ' ἀντιπάλους.

ἥδιστ' ἂν τήνδ' ἀγγελίαν

δεξαίμεσθ', Ἑλλάδος ἐκ γᾶς

πλωτήρων εἴ τις ἔβα,

δουλείας ξμέθεν

450

δειλαίας πανσίπονος·

καὶ γὰρ ὀνείρασι συμβαίην

δόμοις πόλει τε πατρῶα,

τερπνῶν ὕμνων ἀπολαύ-

ειν κοινὰν χάριν ὀλβω.

455

ἀλλ' οὔδε χέρας δεσμοῖς δίδυμοι

συνερεισθέντες χωροῦσι, νέον

πρόσφαγμα θεᾶς· σιγᾶτε, φίλαι.

τὰ γὰρ Ἑλλήνων ἀκροθίνια δὴ

ναοῖσι πέλας τάδε βαίνει·

460

οὐδ' ἀγγελίας ψευδεῖς ἔλακεν

βουφορβὸς ἀνήρ.

ὦ πότνι', εἴ σοι τὰδ' ἀρεσκόντως

πόλις ἦδε τελεῖ, δέξαι θυσίας,

ἃς ὁ παρ' ἡμῖν νόμος οὐχ ὀσίας

465

Ἑλλήσι διδουὺς ἀναφαίνει.

ΙΦ. εἶεν·

τὰ τῆς θεοῦ μὲν προῶτον ὥς καλῶς ἔχη

φροντιστέον μοι. μέθετε τῶν ξένων χέρας,

ὥς ὄντες ἱεροὶ μηκέτ' ὦσι δέσμιοι.

ναοῦ δ' ἔσω στείχοντες εὐτρεπίζετε

470

ἂν χρὴ 'πὶ τοῖς παροῦσι καὶ νομίζεται.

φεῦ·

τίς ἄρα μήτηρ ἢ τεκοῦσ' ὑμᾶς ποτε

πατήρ τ' ἀδελφή τ', εἰ γεγῶσα τυγχάνει;

οἷων στερεῖσα διπτύχων νεανιῶν

ἀνάδελφος ἔσται. τὰς τύχας τίς οἶδ' ὅτῳ

475

τοιαῖδ' ἔσονται; πάντα γὰρ τὰ τῶν θεῶν

εἰς ἀφανὲς ἔρπει, κούδ' ἐν οἶδ' οὐδεὶς κακόν·

ἢ γὰρ τύχη παρήγαγ' εἰς τὸ δυσμαθές.
 πόθεν ποθ' ἦκει, ὦ ταλαίπωροι ξένοι;
 ὥς δια μακροῦ μὲν τήνδ' ἐπλεύσατε χθόνα, 480
 μακρὸν δ' ἀπ' οἴκων χρόνον ἔσεσθ' αἰεὶ κάτω.

ΟΡ. τί ταῦτ' ὁδύρει, κάπλι τοῖς μέλλουσι νῶ
 κακοῖσι λυπεῖς, ἥτις εἴ ποτ', ὦ γύναι;
 οὔτοι νομίζω σοφόν, ὃς ἂν μέλλων θανεῖν
 οἴκτω τὸ δεῖμα τοῦλέθρου νικᾷν θέλῃ, 485
 οὐχ ὅστις Ἄιδην ἐγγὺς οὔτ' οἰκτιζεται,
 σωτηρίας ἀνελπισ· ὥς δὴ ἐξ ἐνὸς
 κακῶ συνάπτει, μωρίαν τ' ὀφλισκάνει
 θνήσκει θ' ὁμοίως· τὴν τύχην δ' ἔαν χρεών.
 ἡμᾶς δὲ μὴ θρήνηι σύ· τὰς γὰρ ἐνθάδε 490
 θυσίας ἐπιστάμεσθα καὶ γινώσκομεν.

ΙΦ. πότερος ἄρ' ὑμῶν ἐνθάδ' ὠνομασμένος
 Πυλάδης κέκληται; τόδε μαθεῖν προῶτον θέλω.

ΟΡ. ὅδ', εἴ τι δὴ σοι τοῦτ' ἐν ἡδονῇ μαθεῖν.

ΙΦ. ποίας πολίτης πατρίδος Ἕλληνος γεγώς; 495

ΟΡ. τί δ' ἂν μαθοῦσα τόδε πλέον λάβοις, γύναι;

ΙΦ. πότερον ἀδελφῶ μητρὸς ἔστων ἐκ μιᾶς;

ΟΡ. φιλότῃ γ', ἐσμέν δ' οὐ κασιγνήτω, γύναι.

ΙΦ. σοὶ δ' ὄνομα ποῖον ἔθεθ' ὁ γεννήσας πατήρ;

ΟΡ. τὸ μὲν δίκαιον δυστυχεῖς καλοῖμεθ' ἄν. 500

ΙΦ. οὐ τοῦτ' ἐρωτῶ· τοῦτο μὲν δὸς τῇ τύχῃ.

ΟΡ. ἀνώνυμοι θανόντες οὐ γελώμεθ' ἄν.

ΙΦ. τί δὲ φθονεῖς τοῦτ'; ἢ φρονεῖς οὔτω μέγα;

ΟΡ. τὸ σῶμα θύσεις τοῦμόν, οὐχὶ τοῦνομα.

ΙΦ. οὐδ' ἂν πόλιν φράσειας ἥτις ἐστί σοι; 505

ΟΡ. ζητεῖς γὰρ οὐδὲν κέρδος, ὥς θανουμένω.

ΙΦ. χάριν δὲ δοῦναι τήνδε κωλύει τί σε;

ΟΡ. τὸ κλεινὸν Ἄργος πατρίδ' ἐμὴν ἐπεύχομαι.

ΙΦ. πρὸς θεῶν ἀληθῶς, ὦ ξέν', εἴ κεῖθεν γεγώς;

- ΟΡ. ἐκ τῶν Μυκηναῶν, αἷ ποτ' ἦσαν ὀλβιαί. 510
- ΙΦ. φυγὰς δ' ἀπῆρας πατρίδος, ἣ ποίᾳ τύχῃ;
- ΟΡ. φεύγω τρόπον γε δὴ τιν' οὐχ ἐκὼν ἐκὼν.
- ΙΦ. ἄρ' ἂν τί μοι φράσεως ὦν ἐγὼ θέλω;
- ΟΡ. ὥς ἐν παρέργῳ τῆς ἐμῆς δυσπραξίας.
- ΙΦ. καὶ μὴν ποθεινός γ' ἦλθες ἐξ Ἀργους μολών. 515
- ΟΡ. οὐκ οὐν ἐμαντῶ γ'· εἰ δὲ σοί, σὺ τοῦτ' ἔρα.
- ΙΦ. Τροίαν ἴσως οἶσθ', ἣς ἀπανταχοῦ λόγος.
- ΟΡ. ὥς μή ποτ' ὄφελόν γε μηδ' ἰδὼν ὄναρ.
- ΙΦ. φασὶν νιν οὐκέτ' οὔσαν οἴχεσθαι δορί.
- ΟΡ. ἔστιν γὰρ οὕτως οὐδ' ἄκραντ' ἠκούσατε. 520
- ΙΦ. Ἑλένη δ' ἀφίκται δῶμα Μενέλεω πάλιν;
- ΟΡ. ἦκει, κακῶς γ' ἐλθοῦσα τῶν ἐμῶν τινι.
- ΙΦ. καὶ ποῦ 'στι; κἄμοι γάρ τι προυφείλει κακόν.
- ΟΡ. Σπάρτῃ ξυνοικεῖ τῶ πάρος ξυνευνέτῃ.
- ΙΦ. ᾧ μῦθος εἰς Ἑλληνας, οὐκ ἐμοὶ μόνῃ. 525
- ΟΡ. ἀπέλαυσα κἀγὼ δὴ τι τῶν κείνης γάμων.
- ΙΦ. νόστος δ' Ἀχαιῶν ἐγένεθ', ὥς κηρύσσεται;
- ΟΡ. ὥς πάνθ' ἅπαξ με συλλαβοῦς' ἀνιστορεῖς.
- ΙΦ. πρὶν γὰρ θανεῖν σε, τοῦδ' ἐπαντρέσθαι θέλω.
- ΟΡ. ἔλεγχ', ἐπειδὴ τοῦδ' ἐρᾷς· λέξω δ' ἐγώ. 530
- ΙΦ. Κάλχας τις ἦλθε μάντις ἐκ Τροίας πάλιν;
- ΟΡ. ὄλωλεν, ὥς ἦν ἐν Μυκηναίοις λόγος.
- ΙΦ. ᾧ πότνι, ὥς εὔ. τί γὰρ ὁ Λαέρτου γόνος;
- ΟΡ. οὐπω νενόστηκ' οἶκον, ἔστι δ', ὥς λόγος.
- ΙΦ. ὅλοιτο, νόστου μή ποτ' εἰς πάτραν τυχών. 535
- ΟΡ. μηδὲν κατεύχου· πάντα τὰ κείνου νοσεῖ.
- ΙΦ. Θέτιδος δ' ὁ τῆς Νηρηίδος ἔστι παῖς ἔτι;
- ΟΡ. οὐκ ἔστιν· ἄλλως λέκτρ' ἔγρημ' ἐν Αὐλίδι.
- ΙΦ. δόλια γάρ, ὥς γέ φασιν οἱ πεπονθότες.
- ΟΡ. τίς εἴ ποθ'; ὥς εὔ πυνθάνει τὰ φ' Ἑλλάδος. 540
- ΙΦ. ἐκεῖθεν εἰμι· παῖς ἔτ' οὐς' ἀπωρόμην.

- ΟΡ. ὀρθῶς ποθεῖς ἄρ' εἰδέναι τὰ κεῖ, γύναι.
- ΙΦ. τί δ' ὁ στρατηγός, ὃν λέγουσ' εὐδαιμονεῖν;
- ΟΡ. τίς; οὐ γὰρ ὃν γ' ἐγῶδα τῶν εὐδαιμόνων.
- ΙΦ. Ἀτρέως ἐλέγετο δὴ τις Ἀγαμέμνων ἄναξ. 545
- ΟΡ. οὐκ οἶδ'· ἄπελθε τοῦ λόγου τούτου, γύναι.
- ΙΦ. μὴ πρὸς θεῶν, ἀλλ' εἴφ', ἵν' εὐφρανθῶ, ξένε.
- ΟΡ. τέθνηχ' ὁ τλήμων, πρὸς δ' ἀπώλεσέν τινα.
- ΙΦ. τέθνηκε; ποῖα συμφορᾷ; τάλαιν' ἐγώ.
- ΟΡ. τί δ' ἐστέναξας τοῦτο; μῶν προσῆκέ σοι; 550
- ΙΦ. τὸν ὄλβον αὐτοῦ τὸν πάροιθ' ἀναστένω.
- ΟΡ. δεινῶς γὰρ ἐκ γυναικὸς οἴχεται σφαγεῖς.
- ΙΦ. ὦ πανδάκρυτος ἢ κτανοῦσα χῶ θανῶν.
- ΟΡ. παῦσαί νυν ἤδη μὴδ' ἐρωτήσης πέρα.
- ΙΦ. τοσόνδε γ'· ἡ ξῆ τοῦ τάλαιπῶρου δάμαρ; 555
- ΟΡ. οὐκ ἔστι· παῖς νιν ὃν ἔτεχ', οὗτος ὥλεσεν.
- ΙΦ. ὦ συνταραχθεὶς οἶκος. ὡς τί δὴ θέλων;
- ΟΡ. πατρὸς θανόντος αἷμα τιμωρούμενος.
- ΙΦ. ὡς φεῦ κακὸν δίκαιον εἰσεπράξατο.
- ΟΡ. ἀλλ' οὐ τὰ πρὸς θεῶν εὐτυχεῖ δίκαιος ὢν. 560
- ΙΦ. λείπει δ' ἐν οἴκοις ἄλλον Ἀγαμέμνων γόνον;
- ΟΡ. λέλοιπεν Ἥλέκτραν γε παρθένον μίαν.
- ΙΦ. τί δέ, σφαγείσης θυγατρὸς ἔστι τις λόγος;
- ΟΡ. οὐδεὶς γε, πλὴν θανοῦσαν οὐχ ὀρᾷ φάος.
- ΙΦ. τάλαιν' ἐκείνη χῶ κτανῶν αὐτὴν πατήρ. 565
- ΟΡ. κακῆς γυναικὸς χάριν ἄχαριν ἀπώλετο.
- ΙΦ. ὁ τοῦ θανόντος δ' ἔστι παῖς Ἀργεὶ πατρός;
- ΟΡ. ἔστ', ἄθλιός γε, κούδαμοῦ καὶ πανταχοῦ.
- ΙΦ. ψευδεῖς ὄνειροι, χαίρετ'· οὐδὲν ἦτ' ἄρα.
- ΟΡ. οὐδ' οἱ σοφοί γε δαίμονες κεκλημένοι 570
- πτηνῶν ὀνειρῶν εἰσὶν ἀψευδέστεροι.
- πολὺς ταραγμὸς ἐν τε τοῖς θείοις ἐνι
- καὶ τοῖς βροτείοις· ἐν δὲ λείπεται μόνον,

ὅτ' οὐκ ἄφρων ὢν μάντεων πεισθεὶς λόγοις
ὕλωλεν ὥς ὕλωλε τοῦσιν εἰδόσιν. 575

ΧΟ. φεῦ φεῦ· τί δ' ἡμεῖς οἱ τ' ἐμοὶ γεννήτορες;
ἄρ' εἰσὶν; ἄρ' οὐκ εἰσὶ; τίς φράσειεν ἄν;

ΙΦ. ἀκούσατ'· εἰς γὰρ δὴ τιν' ἤκομεν λόγον,
ὕμῃν τ' ὄνησιν ὧ ξένοι σπεύδουσ' ἅμα
κἀμοί. τὸ δ' εὖ μάλιστα τοῦτο γίγνεται, 580

εἰ πᾶσι ταῦτόν τε προῖα γμ' ἀρεσκόντως ἔχει.
θέλοις ἄν, εἰ σώσασθαι σ', ἀγγεῖλαι τί μοι
πρὸς Ἄργος ἐλθὼν τοῖς ἐμοῖς ἐκεῖ φίλοις,
δέλτον τ' ἐνεργεῖν, ἣν τις οἰκτείρας ἐμὲ
ἔγραψεν αἰχμάλωτος, οὐχὶ τὴν ἐμὴν 585

φονέα νομίζων χεῖρα, τοῦ νόμου δ' ὑπο
θνήσκειν σφε, τῆς θεοῦ τάδε δίκαι' ἡγουμένης;
οὐδένα γὰρ εἶχον ὅστις ἀγγεῖλαι μολὼν
εἰς Ἀργος αὐθις τὰς ἐμὰς ἐπιστολὰς
πέμψειε σωθεὶς τῶν ἐμῶν φίλων τινί. 590

σὺ δ', εἰ γάρ, ὥς ἔοικας, οὔτε δυσγενὴς
καὶ τὰς Μυκῆνας οἶσθα χοῦς κἀγὼ θέλω,
σώθῃτι καὶ σὺ μισθὸν οὐκ αἰσχροὺς λαβὼν
κούφων ἕκατι γραμμαμάτων σωτηρίαν.

οὗτος δ', ἐπεὶ περ πόλις ἀναγκάζει τάδε, 595
θεῶν γενέσθω θυμὰ χωρισθεὶς σέθεν.

ΟΡ. καλῶς ἔλεξας τᾶλλα πλὴν ἓν, ὧ ξένη·
τὸ γὰρ σφαγεῖναι τόνδ' ἐμοὶ βάρος μέγα.

ὁ νανυστολῶν γάρ εἰμ' ἐγὼ τὰς συμφοράς·
οὗτος δὲ συμπλεῖ τῶν ἐμῶν μόχθων χάριν. 600
οὐκ οὐν δίκαιον ἐπ' ὀλέθρῳ τῷ τοῦδ' ἐμὲ
χάριν τίθεσθαι καὐτόν ἐκδῦναι κακῶν.

ἀλλ' ὥς γενέσθω· τῷδε μὲν δέλτον δίδου,
πέμψει γὰρ Ἄργος, ὥστε σοι καλῶς ἔχειν·
ἡμᾶς δ' ὁ χορήζων κτεινέτω. τὰ τῶν φίλων 605

αἰσχιστον ὅστις καταβαλὼν εἰς ξυμφορὰς
αὐτὸς σέσωσται. τυγχάνει δ' ὅδ' ὢν φίλος,
ὃν οὐδὲν ἥσσον ἢ 'μὲ φῶς ὀρᾶν θέλω.

ΙΦ. ὦ λῆμ' ἄριστον, ὥς ἀπ' εὐγενοῦς τινος
ρίξης πέφυκας τοῖς φίλοις τ' ὀρθὸς φίλος. 610
τοιοῦτος εἶη τῶν ἐμῶν ὁμοσπόρων
ὅσπερ λέλειπται. καὶ γὰρ οὐδ' ἐγώ, ξένοι,
ἀνάδελφός εἰμι, πλὴν ὅσ' οὐχ ὀρῶσά νιν.
ἐπεὶ δὲ βούλει ταῦτα, τόνδε πέμψομεν
δέλτον φέροντα, σὺ δὲ θανεῖ· πολλὴ δέ τις 615
προθυμία σε τοῦδ' ἔχουσα τυγχάνει.

ΟΡ. θύσει δὲ τίς με καὶ τὰ δεινὰ τλήσεται;

ΙΦ. ἐγώ· θεᾶς γὰρ τήνδε προστροπὴν ἔχω.

ΟΡ. ἄξιλά γ', ὦ νεᾶνι, κούκ εὐδαίμονα.

ΙΦ. ἀλλ' εἰς ἀνάγκην κείμεθ', ἣν φυλακτέον. 620

ΟΡ. αὐτὴ ξίφει θύουσα θῆλυς ἄρσενας;

ΙΦ. οὐκ· ἀλλὰ χαίτην ἀμφὶ σὴν χερνύσομαι.

ΟΡ. ὁ δὲ σφαγεὺς τίς; εἰ τὰδ' ἱστορεῖν με χρή.

ΙΦ. εἶσω δόμων τῶνδ' εἰσὶν οἷς μέλει τάδε.

ΟΡ. τάφος δὲ ποῖος δέξεταιί μ', ὅταν θάνω; 625

ΙΦ. πῦρ ἱερὸν ἔνδον χάσμα τ' εὐρωπὸν πέτρας.

ΟΡ. φεῦ·

πῶς ἂν μ' ἀδελφῆς χεὶρ περιστείλειεν ἄν.

ΙΦ. μάταιον εὐχὴν, ὦ τάλας, ὅστις ποτ' εἶ,
εὔξω· μακρὰν γὰρ βαρβάρου ναίει χθονός.
οὐ μὴν, ἐπειδὴ τυγχάνεις Ἀργεῖος ὦν, 630
ἀλλ' ὦν γε δυνατὸν οὐδ' ἐγὼ ἠλείψω χάριν.

πολὺν τε γὰρ σοι κόσμον ἐνθήσω τάφῳ,

ξανθῷ τ' ἐλαίῳ σῶμα σὸν κατασβέσω,

καὶ τῆς ὀρείας ἀνθεμόρρουτον γάνος

ξουθῆς μελίσσης εἰς πυρὰν βαλῶ σέθεν. 635

ἀλλ' εἶμι δέλτον τ' ἐκ θεᾶς ἀνακτόρων

- οἶσω· τὸ μέντοι δυσμενὲς μὴ 'μοῦ λάβῃς.
 φυλάσσειτ' αὐτούς, πρόσπολοι, δεσμῶν ἄτερ.
 ἴσως ἄελπτα τῶν ἐμῶν φίλων τινὶ
 πέμψω πρὸς Ἄργος, ὃν μάλιστ' ἐγὼ φιλῶ, 640
 καὶ δέλτος αὐτῷ ζῶντας οὓς δοκεῖ θανεῖν
 λέγουσα πιστὰς ἡδονὰς ἀπαγγελεῖ.
- ΧΟ. καταλοφύρομαι σὲ τὸν χερνίβων
 ῥανίσι * * *
 μελόμενον αἵμακταῖς. 645
- ΟΡ. οἶκτος γὰρ οὐ ταῦτ', ἀλλὰ χαίρειτ', ὦ ξένοι.
- ΧΟ. σὲ δὲ τύχας μάκαρος, ἰὼ νεανία,
 σεβόμεθ', εἰς πάτραν
 ὅτι πόδ' ἐπεμβάσει.
- ΠΥ. ἄζηλά τοι φίλοισι, θνησκόντων φίλων. 650
- ΧΟ. ὦ σχέτλιοι πομπαί.
 φεῦ φεῦ, διόλλυσαι.
 αἰαῖ αἰαῖ.
 πότερος ὁ μέλλων;
 ἔτι γὰρ ἀμφίλογα δίδυμα μέμονε φρήν, 655
 σὲ πάρος ἢ σ' ἀναστενάξω γόοις.
- ΟΡ. Πυλάδῃ, πέπονθας ταῦτ' αὖ πρὸς θεῶν ἐμοί;
- ΠΥ. οὐκ οἶδ'· ἐρωτᾷς οὐ λέγειν ἔχοντά με.
- ΟΡ. τίς ἐστὶν ἡ νεᾶνις; ὥς Ἑλληνικῶς 660
 ἀνήρεθ' ἡμᾶς τοὺς τ' ἐν Ἰλίου πόνους
 νόστον τ' Ἀχαιῶν τόν τ' ἐν οἰωνοῖς σοφὸν
 Κάλχαντ' Ἀχιλλέως τ' ὄνομα, καὶ τὸν ἄθλιον
 Ἀγαμέμνον' ὥς ᾤκτειρ' ἀνηρώτα τέ με
 γυναιῖκα παῖδάς τ'. ἔστιν ἡ ξένη γένος 665
 ἐκεῖθεν Ἀργεῖα τις· οὐ γὰρ ἄν ποτε
 δέλτον τ' ἐπεμπε καὶ τάδ' ἐξεμάνθανεν,
 ὥς κοινὰ πράσσουσ', Ἄργος εἰ πράσσοι καλῶς.
- ΠΥ. ἔφθης με μικρόν· ταῦτ' αὖ δὲ φθάσας λέγεις,

πλὴν ἓν· τὰ γὰρ τοι βασιλέων παθήματα 670
 ἴσασι πάντες, ὧν ἐπιστροφή τις ἦν.
 ἀτὰρ διήλθον χῆτερον λόγον τινά.

ΟΡ. τίν' ; εἰς τὸ κοινὸν δοὺς ἄμεινον ἂν μάθοις.
 ΠΤ. αἰσχροὺς θανόντος σοῦ βλέπειν ἡμᾶς φάος· 675
 κοινῇ τ' ἐπλευσα, δεῖ με καὶ κοινῇ θανεῖν.
 καὶ δειλίαν γὰρ καὶ κάκην κεκτήσομαι

Ἄργει τε Φωκέων τ' ἐν πολυπτύχῳ χθονί,
 δόξω δὲ τοῖς πολλοῖσι, πολλοὶ γὰρ κακοί,
 προδοὺς σε σώξουσθ' αὐτὸς εἰς οἴκους μόνος,
 ἢ καὶ φονεύσας ἐπὶ νοσοῦσι δώμασι 680

ῥάψαι μόνον σοι σῆς τυραννίδος χάριν
 [ἐγκληρον ὡς δὴ σὴν κασιγνήτην γαμῶν].
 ταῦτ' οὖν φοβοῦμαι καὶ δι' αἰσχύνης ἔχω,
 κοῦκ ἔσθ' ὅπως οὐ χρὴ συνεκπνεῦσαί μέ σοι
 καὶ συσφαγῆναι καὶ πυρωθῆναι δέμας, 685
 φίλον γεγῶτα καὶ φοβούμενον ψόγον.

ΟΡ. εὐφημα φώνει· τὰμὰ δεῖ φέρειν κακά·
 ἀπλᾶς δὲ λύπας ἐξόν, οὐκ οἴσω διπλᾶς.
 ὃ γὰρ σὺ λυπρὸν κάπονείδιστον λέγεις,
 ταῦτ' ἔστιν ἡμῖν, εἰ σε συμμοχθοῦντ' ἐμοὶ 690
 κτενῶ· τὸ μὲν γὰρ εἰς ἔμ' οὐ κακῶς ἔχει
 πρᾶσσονθ' ἢ πρᾶσσω πρὸς θεῶν, λιπεῖν βίον.
 σὺ δ' ὄλβιός τ' εἶ καθαρά τ' οὐ νοσοῦντ' ἔχεις
 μέλαθρ', ἐγὼ δὲ δυσσεβῇ καὶ δυστυχῇ.

σωθεῖς δὲ παῖδας ἐξ ἐμῆς ὁμοσπόρου 695
 κτησάμενος, ἣν ἔδωκά σοι δάμαρτ' ἔχειν,
 ὄνομά τ' ἐμοῦ γένοιτ' ἂν, οὐδ' ἄπαις δόμος
 πατρῷος οὐμὸς ἐξαλειφθεῖη ποτ' ἂν.

ἀλλ' ἔρπε καὶ ξῇ καὶ δόμους οἴκει πατρός.
 ὅταν δ' ἐς Ἑλλάδ' ἵππιόν τ' Ἄργος μόλῃς, 700
 πρὸς δεξιᾶς σε τῆσδ' ἐπισκήπτω τάδε·

τύμβον τε χῶσον ἀπὶ θες μνημεῖά μοι,
καὶ δάκρυ' ἀδελφῇ καὶ κόμας δότω τάφῳ.
ἄγγελλε δ' ὡς ὕλωλ' ὑπ' Ἀργείας τινὸς
γυναικὸς, ἀμφὶ βωμὸν ἀγνισθεὶς φόνῳ. 70

καὶ μὴ προδοῖς μου τὴν κασιγνήτην ποτέ,
ἔρημα κήδη καὶ δόμους ὀρῶν πατρός.
καὶ χαῖρ' ἑμῶν γὰρ φίλτατον σ' εὖρον φίλων,
ὧ̃ συγκυναγὲ καὶ συνεκτραφεὶς ἐμοί,
ὧ̃ πόλλ' ἐνεγκῶν τῶν ἐμῶν ἄχθῃ κακῶν. 71

ἡμᾶς δ' ὁ Φοῖβος μάντις ὦν ἐψεύσατο
τέχνην δὲ θέμενος ὡς προσώταθ' Ἑλλάδος
ἀπήλασ' αἰδοῖ τῶν πάρος μαντευμάτων.
ὧ̃ πάντ' ἐγὼ δοὺς τὰ μὰ καὶ πεισθεὶς λόγοις,
μητέρα κατακτὰς αὐτὸς ἀνταπόλλυμαι. 72

ΠΥ. ἔσται τάφος σοι, καὶ κασιγνήτης λέχος
οὐκ ἂν προδοίην, ὧ̃ τάλας, ἐπεὶ σ' ἐγὼ
θανόντα μᾶλλον ἢ βλέπονθ' ἔξω φίλον.
ἀτὰρ τὸ τοῦ θεοῦ σ' οὐ διέφθορέν γέ πω
μάντευμα, καίτοι γ' ἐγγυὲς ἔσθηκας φόνου.
ἀλλ' ἔστιν ἔστιν ἡ λίαν δυσπραξία
λίαν διδοῦσα μεταβολάς, ὅταν τύχη.

ΟΡ. σίγα· τὰ Φοίβου δ' οὐδὲν ὠφελεῖ μ' ἔπη·
γυνὴ γὰρ ἦδε δωμάτων ἔξω περᾶ.

ΙΦ. ἀπέλθεθ' ὑμεῖς καὶ παρευτρεπίζετε 72
τᾶνδον μολόντες τοῖς ἐφεστῶσι σφαγῇ.
δέλτον μὲν αἶδε πολύθυροι διαπτυχαί,
ξένοι, πάρεισιν· ἃ δ' ἐπὶ τοῖσδε βούλομαι,
ἀκούσατ'· οὐδεὶς αὐτὸς ἐν πόνοις ἀνὴρ
ὅταν τε πρὸς τὸ θάρσος ἐκ φόβου πέσῃ. 73
ἐγὼ δὲ ταρβῶ μὴ 'πονοστήσας χθονὸς
θῆται παρ' οὐδὲν τὰς ἐμὰς ἐπιστολάς
ὁ τήνδε μέλλων δέλτον εἰς Ἄργος φέρειν.

- ΟΡ. τί δῆτα βούλει; τίνος ἀμηχανεῖς πέρι;
- ΙΦ. ὄρκον δότω μοι τάσδε πορθμεύσειν γραφάς 735
[πρὸς Ἄργος, οἷσι βούλομαι πέμψαι φίλων].
- ΟΡ. ἡ κἀντιδώσεις τῷδε τοὺς αὐτοὺς λόγους;
- ΙΦ. τί χρῆμα δράσειν ἢ τί μὴ δράσειν, λέγε.
- ΟΡ. ἐκ γῆς ἀφήσειν μὴ θανόντα βαρβάρου.
- ΙΦ. δίκαιον εἶπας· πῶς γὰρ ἀγγείλειεν ἄν; 740
- ΟΡ. ἡ καὶ τύραννος ταῦτα συγχωρήσεται;
- ΙΦ. πείσω σφε, καὐτὴ νὰὸς εἰσβήσω σκάφος.
- ΟΡ. ὄμνυ· σὺ δ' ἔξαρχ' ὄρκον ὅστις εὐσεβής.
- ΙΦ. δώσεις, λέγειν χρή, τήνδε τοῖς ἐμοῖς φίλοις.
- ΠΥ. τοῖς σοῖς φίλοισι γράμματ' ἀποδώσω τάδε. 745
- ΙΦ. κἀγὼ σὲ σώσω κτανέας ἔξω πέτρας.
- ΠΥ. τίν' οὖν ἐπόμενος τοισίδ' ὄρκιον θεῶν;
- ΙΦ. Ἄρτεμιν, ἐν ἧσπερ δώμασιν τιμὰς ἔχω.
- ΠΥ. ἐγὼ δ' ἀνακτά γ' οὐρανοῦ, σεμνὸν Δία.
- ΙΦ. εἰ δ' ἐκλιπὼν τὸν ὄρκον ἀδικοίης ἐμέ; 750
- ΠΥ. ἄνοστος εἶην· τί δὲ σύ, μὴ σώσασά με;
- ΙΦ. μήποτε κατ' Ἄργος ξῶσ' ἔχνος θεῖήν ποδός.
- ΠΥ. ἄκουε δὴ νυν ὃν παρήλθομεν λόγον.
- ΙΦ. ἀλλ' οὔτις ἔσται καινός, ἦν καλῶς ἔχη.
- ΠΥ. ἐξαίρετόν μοι δὸς τόδ', ἦν τι ναῦς πάθῃ, 755
χὴ δέλτος ἐν κλύδωνι χρημάτων μέτα
ἀφανῆς γένηται, σῶμα δ' ἐκσώσω μόνον,
τὸν ὄρκον εἶναι τόνδε μηκέτ' ἔμπεδον.
- ΙΦ. ἀλλ' οἷσθ' ὃ δράσω; πολλὰ γὰρ πολλῶν κυρεῖ·
τάνόντα κἀγγεγραμμέν' ἐν δέλτου πτυχαῖς 760
λόγῳ φράσω σοι πάντ' ἀναγγεῖλαι φίλοις.
ἐν ἀσφαλεῖ γάρ· ἦν μὲν ἐκσώσεως γραφήν,
αὕτη φράσει σιγῶσα τἀγγεγραμμένα·
ἦν δ' ἐν θαλάσῃ γράμματ' ἀφανισθῇ τάδε,
τὸ σῶμα σώσας τοὺς λόγους σώσεις ἐμοί. 765

- ΠΤ. καλῶς ἔλεξας τῶν θ' ἑῶν ἔμοῦ θ' ὕπερ.
σήμαινε δ' ὧς χορὴ τάσδ' ἐπιστολὰς φέρειν
πρὸς Ἄργος ὅτι τε χορὴ κλύοντά σου λέγειν.
- ΙΦ. ἄγγελλ' Ὀρέστη, παιδὶ τῷ γαμέμνονος·
ἢ 'ν Αὐλίδι σφαγεῖς ἐπιστέλλει τάδε 7
ζῶσ' Ἰφιγένεια, τοῖς ἐκεῖ δ' οὐ ζῶσ' ἔτι.
- ΟΡ. ποῦ δ' ἔστ' ἐκείνη; κατθανοῦς ἦκει πάλιν;
- ΙΦ. ἦδ' ἦν ὀρᾷς σύ· μὴ λόγοις ἐκπλησέ με.
κόμισαί μ' ἐς Ἄργος, ὧς σύναιμε, πρὶν θανεῖν,
ἐκ βαρβάρου γῆς καὶ μετὰστησον θεᾶς 7
σφαγίων, ἐφ' οἷσι ξυνοφόνους τιμὰς ἔχω.
- ΟΡ. Πυλάδην, τί λέξω; ποῦ ποτ' ὄνθ' εὐρήμεθα;
- ΙΦ. ἦ σοῖς ἀραῖα δῶμασιν γενήσομαι,
Ὀρέσθ', ἵν' αὖθις ὄνομα δις κλύων μάθῃς.
- ΟΡ. ὦ θεοί. ΙΦ. τί τοὺς θεοὺς ἀνακαλεῖς ἐν τοῖς ἔμοῖς;
- ΟΡ. οὐδέν· πέραινεν δ'· ἐξέβην γὰρ ἄλλοσε. 7
[τάχ' οὖν ἐρωτῶν σ' εἰς ἄπιστ' ἀφίξομαι.]
- ΙΦ. λέγ' οὔνεκ' ἔλαφον ἀντιδοῦσά μου θεὰ
Ἄρτεμις ἔσωσέ μ', ἦν ἔθυσ' ἐμὸς πατήρ,
δοκῶν ἐς ἡμᾶς ὅξυ φάσγανον βαλεῖν, 7
εἰς τήνδε δ' ὥκισ' αἶαν. αἶδ' ἐπιστολαί,
τάδ' ἔστι τὰν δέλτοισιν ἐγγεγραμμένα.
- ΠΤ. ὦ ῥαδίῳις ὄρκοισι περιβαλοῦσά με,
κάλλιστα δ' ὁμόσας, οὐ πολὺν στήσω χρόνον,
τὸν δ' ὄρκον ὃν κατώμοσ' ἐμπεδώσομεν. 7
ἰδοῦ, φέρω σοι δέλτον ἀποδίδωμί τε,
Ὀρέστα, τῆσδε σῆς κασιγνήτης πάρα.
- ΟΡ. δέχομαι· παρεῖς δὲ γραμμάτων διαπτυχάς,
τὴν ἡδονὴν πρῶτ' οὐ λόγοις αἰρήσομαι.
ὦ φιλάτῃ μοι σύγγον', ἐκπεπληγμένος 7
ὅμως σ' ἀπίστῳ περιβαλὼν βραχίονι
εἰς τέρψιν εἶμι, πυθόμενος θανυμιάστ' ἐμοί.

- ΧΟ. ξεῖν', οὐ δικαίως τῆς θεοῦ τὴν πρόσπολον
 κραίνεις ἀθίκτοις περιβαλὼν πέπλοις χέρα.
- ΟΡ. ὦ συγκασιγνήτη τε καὶ ταῦτοῦ πατρὸς 800
 Ἀγαμέμνονος γεγῶσα, μή μ' ἀποστρέφου,
 ἔχουσ' ἀδελφόν, οὐ δοκοῦσ' ἔξειν ποτέ.
- ΙΦ. ἐγὼ σ' ἀδελφὸν τὸν ἐμόν; οὐ παύσει λέγων;
 τὸ δ' Ἄργος αὐτοῦ μεστὸν ἢ τε Ναυπλία.
- ΟΡ. οὐκ ἔστ' ἐκεῖ σός, ὦ τάλαινα, σύγγονος. 805
- ΙΦ. ἀλλ' ἡ Λάκαινα Τυνδαρίς σ' ἐγείνατο;
- ΟΡ. Πέλοπος γε παιδὶ παιδός, οὗ 'κπέφυκ' ἐγώ.
- ΙΦ. τί φῆς; ἔχεις τι τῶνδ' ἐμοὶ τεκμήριον;
- ΟΡ. ἔχω· πατρῶων ἐκ δόμων τι πυνθάνου.
- ΙΦ. οὐκοῦν λέγειν μὲν χρὴ σέ, μανθάνειν δ' ἐμέ. 810
- ΟΡ. [λέγοιμ' ἄν. ἄκουε πρῶτον Ἠλέκτρας τάδε.]
 Ἀτρέως Θυέστου τ' οἶσθα γενομένην ἔριν;
- ΙΦ. ἤκουσα, χρυσῆς ἀρνὸς οὔνεκ' ἦν πέρι.
- ΟΡ. ταῦτ' οὖν ὑφήνασ' οἶσθας εὐπῆνοις ὑφαῖς;
- ΙΦ. ὦ φίλτατ', ἐγγὺς τῶν ἐμῶν κάμπταις φρενῶν. 815
- ΟΡ. εἰκὼ τ' ἐν ἱστοῖς ἡλίου μετὰστασιν;
- ΙΦ. ὕφηνά καὶ τόδ' εἶδος εὐμίτοις πλοκαῖς.
- ΟΡ. καὶ λούτρ' ἐς Αὔλιν μητρὸς ἀνεδέξω πάρα;
- ΙΦ. οἶδ'· οὐ γὰρ ὁ γάμος ἐσθλὸς ὢν μ' ἀφείλετο.
- ΟΡ. τί γάρ; κόμας σὰς μητρὶ δοῦσα σῇ φέρειν; 820
- ΙΦ. μνημεῖά γ' ἀντὶ σώματος τοῦμοῦ τάφω.
- ΟΡ. ἃ δ' εἶδον αὐτός, τάδε φράσω τεκμήρια·
 Πέλοπος παλαιὰν ἐν δόμοις λόγῃην πατρός,
 ἦν χερσὶ πάλλων παρθένον Πισάτιδα
 ἐκτῆσαθ' Ἴπποδάμειαν, Οἰνόμαον κτανών, 825
 ἐν παρθενῶσι τοῖσι σοῖς κεκρυμμένην.
- ΙΦ. ὦ φίλτατ', οὐδ' ἐν ἄλλο, φίλτατος γὰρ εἴ,
 ἔχω σ', Ὀρέστα, τηλύγετον

χθονὸς ἀπὸ πατρίδος

Ἀργόθεν, ὦ φίλος.

ΟΡ. κἀγὼ σε τὴν θανοῦσαν, ὡς δοξάζεται.
κατὰ δὲ δάκρυα, κατὰ δὲ γόος ἅμα χαρᾷ
τὸ σὸν νοτίζει βλέφαρον, ὡσαύτως δ' ἐμόν.

ΙΦ. τότ' ἔτι βρέφος ἔλιπον ἔλιπον ἀγκάλαις
σὲ νεαρὸν τροφοῦ νεαρὸν ἐν δόμοις.
ὦ κρεῖσσον ἢ λόγοισιν εὐτυχῶν τυχᾶν.
τί φῶ; θαυμάτων πέρα καὶ λόγου
πρόσω τάδ' ἐπέβα.

ΟΡ. τὸ λοιπὸν εὐτυχοῖμεν ἀλλήλων μέτα.

ΙΦ. ἄτοπον ἄδονὰν ἔλαβον, ὦ φίλοι·
δέδοικα δ' ἐκ χειρῶν με μὴ πρὸς αἰθέρα
ἀμπτάμενος φύγῃ·

ὦ Κυκλωπιδὲς ἐστίαι, ὦ πατρίς,

Μυκῆνα φίλα,

χάριν ἔχω ζῴας, χάριν ἔχω τροφᾶς,

ὅτι μοι συνομαίμονα

τόνδε δόμοισιν ἐξεθρέψω φάος.

ΟΡ. γένει μὲν εὐτυχοῦμεν, εἰς δὲ συμφοράς,

ὦ σύγγρον', ἡμῶν δυστυχῆς ἔφυ βίος.

ΙΦ. ἐγὼ * μέλεος οἶδ', ὅτε φάσγανον

δέρα ᾗθηκέ μοι μελεόφρων πατήρ,

ΟΡ. οἷμοι. δοκῶ γὰρ οὐ παρῶν σ' ὄρᾶν ἐκεῖ.

ΙΦ. ἀνυμέναιος, ὦ σύγγρον', Ἀχιλλέως

εἰς κλισίαν λέκτρων

δόλι' ὅτ' ἀγόμαν·

παρὰ δὲ βωμὸν ἦν δάκρυα καὶ γόοι.

φεῦ φεῦ χειρὶβων τῶν ἐκεῖ.

ΟΡ. ὦ μωξα κἀγὼ τόλμαν ἦν ἔτλη πατήρ.

ΙΦ. ἀπάτορ' ἀπάτορα πότμον ἔλαχον.

ἄλλα δ' ἐξ ἄλλων κυρεῖ.

- ΟΡ. εἰ σὸν γ' ἀδελφόν, ὦ τάλαινα, ἀπώλεσας
δαίμονος τύχα τινός.
- ΙΦ. ὦ μελέα δεινᾶς τόλμας. δεῖν' ἔτλαν
δεῖν' ἔτλαν, ὦμοι σύγγονε. παρὰ δ' ὀλίγον 870
ἀπέφυγες ὄλεθρον ἀνόσιον ἐξ ἐμᾶν
δαίχθεις χερσῶν.
ἀ δ' ἐπ' αὐτοῖς τίς τελευτά;
τίς τύχα μοι συγκυρήσει;
τίνα σοι πόρον εὐρομέννα 875
πάλιν ἀπὸ πόλεως, ἀπὸ φόνου πέμψω
πατρίδ' ἐς Ἀργεῖαν,
πρὶν ἐπὶ ξίφος αἵματι σῶ
πελάσσαι; τόδε σόν, ὦ μελέα ψυχά,
χρέος ἀνευρίσκειν,
πότερον κατὰ χέρσον, οὐχὶ ναῖ,
ἀλλὰ ποδῶν ῥίπῃ 885
θανάτῳ πελάσεις ἀνὰ βάρβαρα φῦλα
καὶ δι' ὁδοὺς ἀνόδους στείχων· διὰ κυανέας μὴν
στενοπόρου πέτρας μακρὰ κέλευθα να- 890
ῖοισιν δρασμοῦς.
τάλαινα, τάλαινα.
τίς ἄρ' οὖν, τάλαινα, ἥ θεὸς ἢ βροτὸς ἢ 895
τι τῶν ἀδοκῆτων
πόρον εὐπορον ἐξανύσας
δυοῖν τοῖν μόνοιιν Ἀτρεΐδαιν φανεῖ
κακῶν ἔκλυσιν;
- ΧΟ. ἐν τοῖσι θανμαστοῖσι καὶ μύθων πέρα 900
τάδ' εἶδον αὐτὴ κοῦ κλύουσ' ἀπ' ἀγγέλων.
- ΠΥ. τὸ μὲν φίλους ἐλθόντας εἰς ὄψιν φίλων,
Ὁρέστα, χειρῶν περιβολὰς εἰκὸς λαβεῖν·
λήξαντα δ' οἷκτων κάπ' ἐκεῖν' ἐλθεῖν χρεῶν,
ὅπως τὸ κλεινὸν ὄνομα τῆς σωτηρίας 905

λαβόντες ἐκ γῆς βησόμεσθα βαρβάρου.
σοφῶν γὰρ ἀνδρῶν ταῦτα, μὴ ἔκβάντας τύχης,
καιρὸν λαβόντας, ἡδονὰς ἄλλας λαβεῖν.

ΟΡ. καλῶς ἔλεξας· τῇ τύχῃ δ' οἶμαι μέλειν
τοῦδε ξὺν ἡμῖν· ἦν δέ τις πρόθυμος ἦ, 910
σθένειν τὸ θεῖον μᾶλλον εἰκότως ἔχει.

ΙΦ. οὐδέν μ' ἐπίσχει γ' οὐδ' ἀποστήσει λόγου
πρῶτον πυθέσθαι τίνα ποτ' Ἠλέκτρα πότμον
εἶληχε βιότου· φίλα γὰρ ἔσται πάντ' ἐμοί.

ΟΡ. τῷδε ξυνοικεῖ βίον ἔχουσ' εὐδαίμονα. 915

ΙΦ. οὗτος δὲ ποδαπὸς καὶ τίνος πέφυκε παῖς;

ΟΡ. Στρόφιος ὁ Φωκεὺς τοῦδε κληῖται πατήρ.

ΙΦ. ὁ δ' ἐστὶ γ' Ἀτρέως θυγατρός, ὁμογενὴς ἐμός;

ΟΡ. ἀνεπιός γε, μόνος ἐμοὶ σαφὴς φίλος.

ΙΦ. οὐκ ἦν τόθ' οὗτος ὅτε πατήρ ἔκτεινέ με. 920

ΟΡ. οὐκ ἦν· χρόνον γὰρ Στρόφιος ἦν ἄπαις τινά.

ΙΦ. χαῖρ' ὦ πόσις μοι τῆς ἐμῆς ὁμοσπόρου.

ΟΡ. καμός γε σωτήρ, οὐχὶ συγγενὴς μόνον.

ΙΦ. τὰ δεινὰ δ' ἔργα πῶς ἔτλης μητρὸς πέρι;

ΟΡ. σιγῶμεν αὐτά· πατρὶ τιμωρῶν ἐμῷ. 925

ΙΦ. ἦ δ' αἰτία τίς ἀνθ' ὅτου κτείνει πόσιν;

ΟΡ. ἕα τὰ μητρός· οὐδὲ σοὶ κλύειν καλόν.

ΙΦ. σιγῶ· τὸ δ' Ἄργος πρὸς σὲ νῦν ἀποβλέπει;

ΟΡ. Μενέλαος ἄρχει· φυγάδες ἐσμέν ἐκ πάτρας.

ΙΦ. οὗ που νοσοῦντας θεῖος ὕβρισεν δόμους; 930

ΟΡ. οὐκ, ἀλλ' Ἐρινύων δειμά μ' ἐκβάλλει χθονός.

ΙΦ. ταῦτ' ἄρ' ἐπ' ἀνταῖς κἀνθάδ' ἡγγέλθης μανείς;

ΟΡ. ὥφθημεν οὐ νῦν πρῶτον ὄντες ἄθλιοι.

ΙΦ. ἔγνωκα, μητρός σ' οὔνεκ' ἡλάστρουν θεαί.

ΟΡ. ὥσθ' αἵματηρὰ στόμι' ἐπεμβαλεῖν ἐμοί. 935

ΙΦ. τί γὰρ ποτ' εἰς γῆν τήνδ' ἐπόρθμευσας πόδα;

ΟΡ. Φοίβου κελευσθεὶς θεσφάτοις ἀφικόμην.

- ΙΦ. τί χρῆμα δράσων; ῥητὸν ἢ σιγῶμενον;
 ΟΡ. λέγοιμ' ἄν· ἀρχαὶ δ' αἶδε μοι πολλῶν πόνων.
 ἐπεὶ τὰ μητρὸς ταῦθ' ἃ σιγῶμεν κακὰ 940
 εἰς χεῖρας ἤλθε, μεταδρομαῖς Ἑρινύων
 ἡλαννόμεσθα φυγάδες, ἐνθ' ἐμὸν πόδα
 εἰς τὰς Ἀθήνας δῆτ' ἔπεμψε Λοξίας,
 δίκην παρασχεῖν ταῖς ἀωνύμοις θεαῖς.
 ἐστὶν γὰρ ὅσια ψῆφος, ἣν Ἄρει ποτὲ 945
 Ζεὺς εἶσατ' ἐκ τοῦ δὴ χειρῶν μιάσματος.
 ἐλθὼν δ' ἐκέῖσε, πρῶτα μὲν μ' οὐδεὶς ξένων
 ἐκὼν ἐδέξαθ', ὥς θεοῖς στυγούμενον·
 οἱ δ' ἔσχον αἰδῶ, ξένια μονοτράπεζά μοι
 παρέσχον, οἴκων ὄντες ἐν ταύτῳ στέγει, 950
 σιγῇ δ' ἔτεκτῆναντ' ἀπόφθεγκτόν μ', ὅπως
 δαιτὸς γενοίμην πώματός τ' αὐτῶν δίχα,
 εἰς δ' ἄγρος ἴδιον ἴσον ἅπασι βακχίου
 μέτρομα πληρώσαντες εἶχον ἡδονήν.
 κἀγὼ ἑλεέργξαι μὲν ξένους οὐκ ἡξίου, 955
 ἡλγουν δὲ σιγῇ καδόκου οὐκ εἰδέναι,
 μέγα στενάζων, οὔνεκ' ἦν μητρὸς φονεύς.
 κλύω δ' Ἀθηναίοισι τὰμὰ δυστυχῇ
 τελετὴν γενέσθαι, κᾶτι τὸν νόμον μένειν,
 χοῆρες ἄγρος Παλλάδος τιμᾶν λεῶν. 960
 ὥς δ' εἰς Ἄρειον ὄχθον ἦκον εἰς δίκην τ'
 ἔστην, ἐγὼ μὲν θάτερον λαβὼν βάθρον,
 τὸ δ' ἄλλο πρέσβειρ' ἤπερ ἦν Ἑρινύων,
 εἰπὼν ἀκούσας θ' αἵματος μητρὸς πέρι,
 Φοῖβός μ' ἔσωσε μαρτυρῶν· ἴσας δέ μοι 965
 ψῆφους διηρίθμησε Παλλὰς ὠλένη,
 νικῶν δ' ἀπῆρα φόνια πειρατήρια.
 ὅσαι μὲν οὖν ἔξοντο πεισθεῖσαι δίκῃ,
 ψῆφον παρ' αὐτὴν ἱερὸν ὠρίσαντ' ἔχειν·

ὅσαι δ' Ἑρινύων οὐκ ἐπέσθησαν νόμῳ, 970
 δρόμοις ἀνιδρύτοισιν ἡλάστρουν μ' αἰεί,
 ἕως ἐς ἀγνὸν ἦλθον αὖ Φοῖβον πέδον,
 καὶ πρόσθεν ἀδύτων ἐκταθείς, νῆστις βορᾶς,
 ἐπώμοσ' αὐτοῦ βίον ἀπορρήξειν θανών,
 εἰ μὴ με σώσει Φοῖβος, ὅς μ' ἀπώλεσεν. 975
 ἐντεῦθεν ἀνδρὴν τρίποδος ἐκ χρυσοῦ λακῶν
 Φοῖβός μ' ἔπεμψε δεῦρο, διοπετέες λαβεῖν
 ἄγαλμ' Ἀθηνῶν τ' ἐγκαθιδρῦσαι χθονί.
 ἀλλ' ἦν περ ἡμῖν ὥρισεν σωτηρίαν,
 σύμπραξον· ἦν γὰρ θεᾶς κατάσχωμεν βρέτας, 980
 μανιῶν τε λήξω καὶ σὲ πολυκώπῳ σκάφει
 στείλας Μυκήναις ἐγκαταστήσω πάλιν.
 ἀλλ' ὦ φιληθεῖς, ὦ κασίγνητον κάρα,
 σῶσον πατρῶον οἶκον, ἔκσωσον δ' ἐμέ·
 ὡς τὰμ' ὄλωλε πάντα καὶ τὰ Πελοπιδῶν, 985
 οὐράνιον εἰ μὴ ληψόμεσθα θεᾶς βρέτας.

ΧΟ. δεινὴ τις ὀργὴ δαιμόνων ἐπέξεσε
 τὸ Ταντάλειον σπέρμα διὰ πόνων τ' ἄγει.

ΙΦ. τὸ μὲν πρόθυμον, πρὶν σε δεῦρ' ἐλθεῖν, ἔχω
 [Ἄρχει γενέσθαι καὶ σέ, σύγγον', εἰσιδεῖν]. 990
 θέλω δ' ἅπερ σύ, σέ τε μεταστῆσαι πόνων
 νοσοῦντά τ' οἶκον, οὐχὶ τῷ κτανόντι με
 θυμουμένη, πατρῶον ὀρθῶσαι θέλω·
 σφαγῆς τε γὰρ σῆς χεῖρ' ἀπαλλάξαιμεν ἄν
 σώσαιμὶ τ' οἴκους· τὴν θεὸν δ' ὅπως λάθω 995
 δέδοικα καὶ τύραννον, ἥνίκ' ἄν κενὰς
 κρηπῖδας εὖρη λαῖνας ἀγάλατος.
 πῶς δ' οὐ θανοῦμαι; τίς δ' ἔνεστί μοι λόγος;
 ἀλλ' εἰ μὲν ἔν τι τοῦθ' ὁμοῦ γενήσεται,
 ἄγαλμά τ' οἴσεις καὶ μ' ἐπ' εὐπρόμνου νεῶς 1000
 ἄξεις, τὸ κινδύνευμα γίγνεται καλόν·

τούτου δὲ χωρισθεῖς· ἐγὼ μὲν ὄλλυμαι,
 σὺ δ' ἂν τὸ σαντοῦ θέμενος εὖ νόστον τύχοις.
 οὐ μὴν τι φεύγω γ' οὐδέ μ' εἰ θανεῖν χρεών,
 σῶσασα σ'· οὐ γὰρ ἄλλ' ἀνὴρ μὲν ἐκ δόμων 1005
 θανὼν ποθεινός, τὰ δὲ γυναικὸς ἀσθενῇ.

ΟΡ. οὐκ ἂν γενοίμην σοῦ τε καὶ μητρὸς φονεύς·
 ἄλλης τὸ κείνης αἵμα· κοινόφρων δὲ σοὶ
 καὶ ζῆν θέλοιμ' ἂν καὶ θανὼν λαχεῖν ἴσον.
 ἄξω δέ σ', ἥνπερ μὴ αὐτὸς ἐνταυθοῖ πέσω, 1010
 πρὸς οἶκον, ἢ σοῦ κατθανὼν μενῶ μέτα.
 γνώμης δ' ἄκουσον· εἰ πρόσαντες ἦν τόδε
 Ἀρτέμιδι, πῶς ἂν Λοξίας ἐθέσπισε

κομίσαι μ' ἄγαλμα θεᾶς πόλισμα Παλλάδος
 καὶ σὸν πρόσωπον εἰσιδεῖν; ἅπαντα γὰρ 1015
 συνθεῖς τάδ' εἰς ἓν νόστον ἐλπίζω λαβεῖν.

ΙΦ. πῶς οὖν γένοιτ' ἂν ὥστε μῆθ' ἡμᾶς θανεῖν,
 λαβεῖν θ' ἃ βουλόμεσθα; τῇδε γὰρ νοσεῖ
 νόστος πρὸς οἴκους· ἡ δὲ βούλησις πάρα.

ΟΡ. ἄρ' ἂν τύραννον διολέσαι δυναίμεθ' ἄν; 1020

ΙΦ. δεινὸν τόδ' εἶπας, ξενοφονεῖν ἐπήλυδας.

ΟΡ. ἄλλ' εἰ σὲ σώσει καμέ, κινδυνευτέον.

ΙΦ. οὐκ ἂν δυναίμην, τὸ δὲ πρόθυμον ἦνεσα.

ΟΡ. τί δ', εἰ με ναῶ τῷδε κρύψειας λάθρα;

ΙΦ. εἶς' ἔνδον ἱεροῦ φύλακες, οὓς οὐ λήσομεν. 1027

ΟΡ. οἷμοι διεφθάρμεσθα· πῶς σωθεῖμεν ἄν;

ΙΦ. ἔχειν δοκῶ μοι καινὸν ἐξεύρημά τι.

ΟΡ. ποῖόν τι; δόξης μετάδος, ὥς καγὼ μάθω. 1030

ΙΦ. ταῖς σαῖς ἀνίαις χρήσομαι σοφίσμασιν.

ΟΡ. δειναὶ γὰρ αἱ γυναικες εὐρίσκειν τέχνας.

ΙΦ. φονέα σε φήσω μητρὸς ἐξ Ἀργους μολεῖν.

ΙΦ. ὥς δὴ σκότος λαβόντες ἐκσωθεῖμεν ἄν; 1025

ΟΡ. κλεπτῶν γὰρ ἡ νύξ, τῆς δ' ἀληθείας τὸ φῶς.

- ΟΡ. χοῖσαι κακοῖσι τοῖς ἔμοις, εἰ κερδανεῖς.
 ΙΦ. ὥς οὐ θέμις σε λέξομεν θύειν θεῶ,
 ΟΡ. τίν' αἰτίαν ἔχουσ'; ὑποπτεύω τι γάρ.
 ΙΦ. οὐ καθαρὸν ὄντα, τὸ δ' ὅσιον δώσω φόνῳ.
 ΟΡ. τί δῆτα μᾶλλον θεῶς ἄγαλμ' ἀλίσκεται;
 ΙΦ. πόντου σε πηγαῖς ἀγνῖσαι βουλήσομαι,
 ΟΡ. ἔτ' ἐν δόμοισι βρέτας, ἐφ' ᾧ πεπλευκάμεν. 1035
 ΙΦ. κἀκεῖνο νύβαι, σοῦ θιγόντος ὥς, ἐρῶ.
 ΟΡ. ποῖ δῆτα; πόντου νοτερόν εἴπας ἔκβολον;
 ΙΦ. οὔ ναῦς χαλινοῖς λινοδέτοις ὀρμεῖ σέθεν.
 ΟΡ. σὺ δ' ἢ τις ἄλλος ἐν χεροῖν οἷσει βρέτας;
 ΙΦ. ἐγώ· θιγεῖν γὰρ ὀσιόν ἐστ' ἔμοι μόνῃ. 1045
 ΟΡ. Πυλάδης δ' ὅδ' ἡμῖν ποῦ τετάσσεται πόνου;
 ΙΦ. ταῦτόν χεροῖν σοὶ λέξεται μίασμ' ἔχων.
 ΟΡ. λάθρα δ' ἀνακτος ἢ εἰδότος δράσεις τάδε;
 ΙΦ. πείσασα μύθοις· οὐ γὰρ ἂν λάθοιμί γε.
 ΟΡ. καὶ μὴν νεῶς γε πίτυλος εὐήρης πάρα. 1050
 ΙΦ. σοὶ δὴ μέλειν χορὴ τᾶλλ' ὅπως ἔξει καλῶς.
 ΟΡ. ἐνὸς μόνου δεῖ, τάσδε συγκρούσαι τάδε.
 ἀλλ' ἀντίαζε καὶ λόγους πειστηρίους
 εὕρισκ'· ἔχει τοι δύναιμι εἰς οἶκτον γυνή.
 τὰ δ' ἄλλ' ἴσως ἂν πάντα συμβαίῃ καλῶς. 1055
 ΙΦ. ᾧ φίλταται γυναικες, εἰς ὑμᾶς βλέπω,
 καὶ τᾶμ' ἐν ὑμῖν ἐστὶν ἢ καλῶς ἔχειν
 ἢ μηδὲν εἶναι καὶ στερηθῆναι πάτρας
 φίλου τ' ἀδελφοῦ φιλτάτης τε συγγόνου.
 καὶ πρῶτα μὲν μοι τοῦ λόγου τὰδ' ἀρχέτω· 1060
 γυναικῆς ἔσμεν, φιλόφρον ἀλλήλαις γένος,
 σῶζειν τε κοινὰ πράγματ' ἀσφαλέσταται.
 σιγήσαθ' ἡμῖν καὶ συνεκπονήσατε
 φυγάς. καλὸν τοι γλῶσς' ὅτῳ πιστὴ παρῇ.
 ὁρᾶτε δ' ὥς τρεῖς μία τύχη τοὺς φιλτάτους, 1065

ἢ γῆς πατρώας νόστος ἢ θανεῖν ἔχει.
 σωθεῖσα δ', ὥς ἂν καὶ σὺ κοινωνῇς τύχης,
 σώσω σ' ἐς Ἑλλάδ'. ἀλλὰ πρὸς σε δεξιᾶς,
 σὲ καὶ σ' ἱκνοῦμαι, σὲ δὲ φίλης παρηίδος
 γονάτων τε καὶ τῶν ἐν δόμοισι φιλτάτων 1070
 [μητρὸς πατρός τε καὶ τέκνων ὅτῳ κυρεῖ],
 τί φατέ; τίς ὑμῶν φησιν ἢ τίς οὐ θέλει,
 φθέγγασθε, ταῦτα; μὴ γὰρ αἰνουσῶν λόγους
 ὀλωλα κἀγὼ καὶ κασίγνητος τάλας.

ΧΟ. θάρσει, φίλη δέσποινα, καὶ σώξου μόνον· 1075
 ὥς ἔκ γ' ἐμοῦ σοι πάντα σιγηθήσεται,
 ἴστω μέγας Ζεὺς, ὦν ἐπισκῆπτεις πέρι.

ΙΦ. ὄναισθε μύθων καὶ γένοισθ' εὐδαίμονες.
 σὸν ἔργον ἤδη καὶ σὸν εἰσβαίνειν δόμους·
 ὥς αὐτίχ' ἥξει τῆσδε κοῖρανος χθονός, 1080
 θυσίαν ἐλέγξων, εἰ κατείργασται, ξένων.
 ὦ πότνι', ἥπερ μ' Ἀυλίδος κατὰ πτύχας
 δεινῆς ἔσωσας ἐκ πατροκτόνου χερός,
 σώσόν με καὶ νῦν τούσδε τ'· ἢ τὸ Λοξίου
 οὐκέτι βροτοῖσι διὰ σ' ἐτήτυμον στόμα. 1085
 ἀλλ' εὐμενῆς ἔκβηθι βαρβάρου χθονὸς
 εἰς τὰς Ἀθήνας· καὶ γὰρ ἐνθάδ' οὐ πρόπει
 ναίειν, παρὸν σοι πόλιν ἔχειν εὐδαίμονα.

ΧΟ. ὄρνις, ἃ παρὰ πετρίνας στρ. 1090
 πόντου δειράδας, ἄλκυών,
 ἔλεγον οἶκτρον αἰίδεις,
 εὐξύνετον ξυνετοῖσι βοάν,
 ὅτι πόσιν κελαδεῖς αἰὲλ μολπαῖς,
 ἐγὼ σοι παραβάλλομαι
 θρήνους, ἄπτερος ὄρνις, 1095
 ποθοῦς Ἑλλάνων ἀγόρους,

ποθοῦσ' Ἀρτεμιν λοχίαν,
 ἃ παρὰ Κύνθιον ὄχθον οἴκεῖ
 φοίνικά θ' ἄβροκόμαν
 δάφναν τ' εὐερνέα καὶ
 γλαυκᾶς θαλλὸν ἱρὸν ἐλαίας,
 Λατοῦς ὠδῖνα φίλαν,
 λίμναν θ' εἰλίσσουσαν ὕδωρ
 κύκλιον, ἔνθα κύκνος μελω-
 δὸς Μούσας θεραπεύει.
 ὦ πολλὰ δακρύων λιβάδες,
 αἵ παρηίδας εἰς ἐμὰς
 ἔπεσον, ἀνίκα πύργων
 ὀλλυμένων ἐπὶ ναυσὶν ἔβαν
 πολεμίων ἐρετμοῖσι καὶ λόγχαις.
 ξαχρύσου δὲ δι' ἐμπολᾶς
 νᾶσον βάρβαρον ἦλθον,
 ἐν ᾗ τᾶς ἑλλανοφόνου
 θεᾶς κούραν ἀμφίπολον
 παῖδ' Ἀγαμεμνονίαν λατρεύω
 βωμούς τε μηλοθύτας,
 ξηλοῦσ' ἄταν διὰ παν-
 τὸς δυσδαίμον'· ἐν γὰρ ἀνάγκαις
 οὐ κάμνει σύντροφος ὦν
 μεταβάλλει δυσδαιμονία·
 τὸ δὲ μετ' εὐτυχίαν κακοῦ-
 σθαι θνατοῖς βαρὺς αἰὼν.
 καὶ σὲ μέν, πότνι', Ἀργεῖα
 πεντηκόντορος οἶκον ἄξει·
 συρίζων δ' ὁ κηροδέτας
 κάλαμος οὐρείου Πανὸς
 κώπαις ἐπιθωῖξει,

1100

1103

ἀντ.

1110

1113

1120

στρ.

1123

ὁ Φοῖβός θ' ὁ μάντις ἔχων
 κέλαδον ἐπτατόνου λύρας
 αἰείδων ἄξει λιπαρὰν 1130
 εὖ σ' Ἀθηναίων ἐπὶ γᾶν.
 ἐμὲ δ' αὐτοῦ προλιποῦ-
 σα βήσει ῥοθίοις πλάταις·
 ἀέρι δ' ἰστία πρότονοι κατὰ
 πρῶραν ὑπὲρ στόλον ἐκπετάσουσι πόδες 1135
 ναὸς ὠκυπόμπου.
 λαμπρὸν ἱππόδρομον βαίην,
 ἔνθ' εὐάλιον ἔρχεται πῦρ·
 οἰκείων δ' ὑπὲρ θαλάμων 1140
 πτέρυγας ἐν νώτοις ἄμοις
 λήξαιμι θοάξουσα·
 χοροὺς δ' ἰσταίην, ὅθι καὶ
 πάροχος εὐδοκίμων γάμων,
 παρὰ πόδ' εἰλίσσουσα φίλας 1145
 ματρὸς ἡλίκων θιάσους,
 ἐς ἀμίλλας χαρίτων,
 χλιδᾶς ἄβροπλούτοι' ἐς ἔριν
 ὀρνυμένα, πολυποίκιλα φάρεα
 καὶ πλοκάμους περιβαλλομένα γένυσιν 1150
 * * ἐσκίαζον.

ΘΟ. ποῦ σθ' ἡ πυλωρὸς τῶνδε δωμάτων γυνή
 Ἑλληνίς; ἥδη τῶν ξένων κατήρξατο,
 ἀδύτοις τ' ἐν ἄγνοῖς σῶμα δάπτονται πυρί; 1155

ΧΟ. ἥδ' ἐστίν, ἥ σοι πάντ', ἄναξ, ἐρεῖ σαφῶς.

ΘΟ. εἰ·

τί τόδε μεταίρεις ἐξ ἀκινήτων βάθρων,
 Ἀγαμέμνονος παῖ, θεᾶς ἄγαλμ' ἐν ὠλέναις;
 ΙΦ. ἄναξ, ἐχ' αὐτοῦ πόδα σὸν ἐν παραστάσιν.

ΘΟ. τί δ' ἐστίν, Ἰφιγένεια, καινὸν ἐν δόμοις; 1160

- ΙΦ. ἀπέπτυσ' ὅσῃ γὰρ δίδωμ' ἔπος τόδε.
 ΘΟ. τί φροϊμιάζει νεοχμὸν; ἔξαύδα σαφῶς.
 ΙΦ. οὐ καθαρὰ μοι τὰ θύματ' ἡγρεύσασθ', ἄναξ.
 ΘΟ. τί τοῦκιδιάξαν τοῦτό σ'; ἢ δόξαν λέγεις;
 ΙΦ. βρέτας τὸ τῆς θεοῦ πάλιν ἔδρας ἀπεστράφη.
 ΘΟ. αὐτόματον, ἥ νιν σεισμὸς ἔστρεψε χθονός;
 ΙΦ. αὐτόματον· ὅψιν δ' ὁμμάτων ξυνήρμωσε.
 ΘΟ. ἢ δ' αἰτία τίς; ἢ τὸ τῶν ξένων μύσος;
 ΙΦ. ἥδ', οὐδὲν ἄλλο· δεινὰ γὰρ δεδράκατον.
 ΘΟ. ἀλλ' ἢ τιν' ἔκανον βαρβάρων ἀκτῆς ἐπι;
 ΙΦ. οἰκεῖον ἦλθον τὸν φόνον κεκτημένοι.
 ΘΟ. τίν'; εἰς ἔρον γὰρ τοῦ μαθεῖν πεπτώκαμεν.
 ΙΦ. μητέρα κατειργάσαντο κοινωνῶ ξίφει.
 ΘΟ. Ἀπολλων, οὐδ' ἐν βαρβάροις γ' ἔτλη τις ἄν.
 ΙΦ. πάσης διωγμοῖς ἠλάθησαν Ἑλλάδος.
 ΘΟ. ἢ τῶνδ' ἓκατι δῆτ' ἄγαλμ' ἔξω φέρεις;
 ΙΦ. σεμνόν γ' ὑπ' αἰθέρ', ὡς μεταστήσω φόνου.
 ΘΟ. μίᾱσμα δ' ἔγνωσ τοῖν ξένοιν ποίῳ τρόπῳ;
 ΙΦ. ἥλεγχον, ὡς θεᾶς βρέτας ἀπεστράφη πάλιν.
 ΘΟ. σοφὴν σ' ἔστρεψεν Ἑλλάς, ὡς ἦσθου καλῶς.
 ΙΦ. καὶ νῦν καθεῖσαν δέλεαρ ἡδύ μοι φρενῶν.
 ΘΟ. τῶν Ἀργόθεν τι φίλτρον ἀγγέλλοντέ σοι;
 ΙΦ. τὸν μόνον Ὀρέστην ἐμὸν ἀδελφὸν εὖτυχεῖν.
 ΘΟ. ὡς δὴ σφε σώσαις ἡδοναῖς ἀγγελμάτων;
 ΙΦ. καὶ πατέρα γε ξῆν καὶ καλῶς πράσσειν ἐμόν.
 ΘΟ. σὺ δ' εἰς τὸ τῆς θεοῦ γ' ἐξένευσας εἰκότως.
 ΙΦ. πᾶσάν γε μισοῦσ' Ἑλλάδ', ἥ μ' ἀπώλεσεν.
 ΘΟ. τί δῆτα δρωμεν, φράξε, τοῖν ξένοιν πέρι;
 ΙΦ. τὸν νόμον ἀνάγκη τὸν προκειμένον σέβειν.
 ΘΟ. οὔκουν ἐν ἔργῳ χέρσιβες ξίφος τε σόν;
 ΙΦ. ἄγνοις καθαρμοῖς πρῶτά νιν νίψαι θέλω.
 ΘΟ. πηγαῖσιν ὑδάτων ἢ θαλασσίᾳ δρόσῳ;

- ΙΦ. θάλασσα κλύζει πάντα τὰνθρώπων κακά.
 ΘΟ. ὀσιώτερον γοῦν τῇ θεῷ πέσοιεν ἄν.
 ΙΦ. καὶ τὰμά γ' οὔτω μᾶλλον ἂν καλῶς ἔχοι. 1195
 ΘΟ. οὐκουν πρὸς αὐτὸν ναὸν ἐκπίπτει κλύδων;
 ΙΦ. ἐρημίας δεῖ· καὶ γὰρ ἄλλα δράσομεν.
 ΘΟ. ἄγ' ἐνθα χρήξεις· οὐ φιλῶ τᾶρρηθ' ὀρᾶν.
 ΙΦ. ἀγνιστέον μοι καὶ τὸ τῆς θεοῦ βρέτας.
 ΘΟ. εἴπερ γε κηλὶς ἔβαλέ νιν μητροκτόνος. 1200
 ΙΦ. οὐ γάρ ποτ' ἄν νιν ἡράμην βάρθρων ἄπο.
 ΘΟ. δίκαιος ἡνσέβεια καὶ προμηθία.
 ΙΦ. οἶσθά νυν ἅ μοι γενέσθω; ΘΟ. σὸν τὸ σημαίνειν
 τόδε.
 ΙΦ. δεσμὰ τοῖς ξένοισι πρόσθες. ΘΟ. ποῖ δέ σ' ἐκφύ-
 γοιεν ἄν;
 ΙΦ. πιστὸν Ἑλλὰς οἶδεν οὐδέν. ΘΟ. ἔτ' ἐπὶ δεσμά,
 πρόσπολοι. 1205
 ΙΦ. κἀκκομιζόντων δὲ δεῦρο τοὺς ξένους, ΘΟ. ἔσται
 τάδε.
 ΙΦ. κρᾶτα κρούσαντες πέπλοισιν. ΘΟ. ἡλίου πρόσθεν
 φλογός.
 ΙΦ. σῶν τέ μοι σύμπεμπ' ὀπαδῶν. ΘΟ. οἶδ' ὁμαρτή-
 σουσί σοι.
 ΙΦ. καὶ πόλει πέμψον τιν' ὅστις σημανεῖ ΘΟ. ποίας
 τύχας;
 ΙΦ. ἐν δόμοις μέμνειν ἅπαντας. ΘΟ. μὴ συναντῶεν
 φόνῳ; 1210
 ΙΦ. μυσαρὰ γὰρ τὰ τοιάδ' ἐστί. ΘΟ. στεῖχε καὶ σή-
 μαινε σύ.
 ΙΦ. καὶ φίλων γ' οὐ δεῖ μάλιστα ΘΟ. τοῦτ' ἔλεξας
 εἰς ἐμέ. 1213
 ΙΦ. μηδέν' εἰς ὅψιν πελάζειν. ΘΟ. εὖ γε κηδεύεις
 πόλιν. 1212

- ΙΦ. σὺ δὲ μένων αὐτοῦ πρὸ ναῶν τῇ θεῷ ΘΟ. τί
 χρῆμα δρῶ; 1215
- ΙΦ. ἄγνισον πυρρῷ μέλαθρον. ΘΟ. καθαρὸν ὡς μόλης
 πάλιν;
- ΙΦ. ἥνικ' ἂν δ' ἔξω περῶσιν οἱ ξένοι, ΘΟ. τί χρή με
 δρᾶν;
- ΙΦ. πέπλον ὀμμάτων προθέσθαι. ΘΟ. μὴ παλαμναῖον
 λάβω;
- ΙΦ. ἦν δ' ἄγαν δοκῶ χρονίζειν, ΘΟ. τοῦδ' ὄρος τίς
 ἐστί μοι;
- ΙΦ. θαυμάσης μηδέν. ΘΟ. τὰ τῆς θεοῦ πρᾶσσ' ἐπὶ
 σχολῆς καλῶς. 1220
- ΙΦ. εἰ γὰρ ὡς θέλω καθαροὺς ὅδε πέσοι. ΘΟ. συνεύ-
 χομαι.
- ΙΦ. τούσδ' ἄρ' ἐκβαίνοντας ἤδη δωμαίων ὄρῳ ξένους
 καὶ θεᾶς κόσμους νεογνοὺς τ' ἄρνας, ὡς φόνον
 φόνον
 μυσαρὸν ἐκνήψω, σέλας τε λαμπάδων τά τ' ἄλλ'
 ὅσα
 προυθέμην ἐγὼ ξένοισι καὶ θεᾷ καθάρσια. 1225
 ἐκποδὼν δ' αὐδῶ πολίταις τοῦδ' ἔχειν μιάσματος,
 εἴ τις ἢ ναῶν πυλωρὸς χεῖρας ἀγνεύει θεοῖς
 ἢ γάμον στείχει συνάψων ἢ τόκοις βαρύνεται,
 φεύγετ' ἐξίστασθε, μή τω προσπέσῃ μύσος τόδε.
 ὦ Διὸς Αἰητοῦς τ' ἄνασσα παρθένης, ἣν νύψω
 φόνον 1230
 τῶνδε καὶ θύσωμεν οὗ χρή, καθαρὸν οἰκήσεις
 δόμον,
 εὐτυχεῖς δ' ἡμεῖς ἐσόμεθα. τᾶλλα δ' οὐ λέγουσ',
 ὅμως

τοῖς τὰ πλείον' εἰδόσιν θεοῖς σοί τε σημαίνω,
θεά.

- ΧΟ. εὖπαις ὁ Λατοῦς γόνος, στρ.
τόν ποτε Δηλιάσιν 1235
καρποφόροις γυάλοις
* * * χρυσοκόμαν
ἐν κιθάρα σοφόν, ἅ τ' ἐπὶ τόξων
εὖστοχίᾳ γάννυται, φέρειν ἱνιν
ἀπὸ δειράδος εἰναλίας, 1240
λοχεῖα κλεινὰ λιποῦσ'
ἀστιάκτων μάτηρ ὑδάτων,
τὰν βακχεύουσιν Διονύσῳ
Παρνάσιον κορυφάν,
ὅθι ποικιλόνωτος οἶνωπὸς δράκων 1245
σκιερᾷ κατάχαλκος εὐφύλλῳ δάφνῃ,
γᾶς πελώριον τέρας, ἄμφεπε
μαντεῖον χθόνιον.
ἔτι μιν ἔτι βρέφος, ἔτι φίλας
ἐπὶ ματέρος ἀγκάλαισι θρώσκων 1250
ἔκανες, ὦ Φοῖβε, μαν-
τείων δ' ἐπέβας ξαθέων,
τρίποδί τ' ἐν χρυσέῳ
θάσσεις, ἐν ἄψευδεῖ θρόνῳ
μαντείας βροτοῖς 1255
θεσφάτων νέμων
ἀδύτων ὑπο, Κασταλίας ῥεέθρων
γείτων, μέσον γᾶς ἔχων μέλαθρον.
Θέμιν δ' ἐπεὶ γᾶς ἰὼν ἀντ.
παῖδ' ἀπενάσσαστο Λα- 1260
τῶς ἀπὸ ξαθέων
χρηστηρίων, νύχια

- χθὼν ἔτεκνώσατο φάσματ' ὀνείρων,
 οἳ πολέσιν μερόπων τά τε πρῶτα
 τά τ' ἔπειθ' ἅ τ' ἔμελλε τυχεῖν 1265
 ὕπνου κατὰ δνοφεράς
 εὐνὰς φράζον· Γαῖα δὲ τὰν
 μαντείων ἀφείλετο τιμὰν
 Φοῖβον φθόνῳ θυγατρός·
 ταχύπους δ' ἐς Ὀλυμπον ὄρμαθεις ἄναξ 1270
 χέρα παιδνὸν ἔλιξεν εἰς Δῖον θρόνον
 Πυθίων δόμων χθονίας ἀφε-
 λεῖν θεᾶς μῆνιν * * .
 γέλασε δ', ὅτι τέκος ἄφαρ ἔβα
 πολύχρυσά θέλων λατρεύματα σχεῖν· 1275
 ἐπὶ δ' ἔσεισεν κόμαν,
 παῦσεν νυχίους ἐνοπίας,
 ἀπὸ δὲ μαντοσύναν
 νυκτιωπὸν ἐξεῖλεν βροτῶν,
 καὶ τιμὰς πάλιν 1280
 θῆκε Δοξία,
 πολυάνοροι δ' ἐν ξενόεντι θρόνῳ
 θάρσῃ βροτοῖς θεσφάτων ἀοιδαῖς.
- ΑΓΓ. ὦ ναοφύλακες βῶμιοί τ' ἐπιστάται,
 Θόας ἄναξ γῆς τῆσδε ποῦ κυρεῖ βεβώς; 1285
 καλεῖτ' ἀναπτύξαντες εὐρόμφοις πύλας
 ἔξω μελάθρων τῶνδε κοίρανον χθονός.
- ΧΟ. τί δ' ἔστιν; εἰ χορὴ μὴ κελευσθεῖσαν λέγειν;
- ΑΓΓ. βεβᾶσι φροῦδοι δίπτυχοι νεανῖαι 1290
 Ἀγαμεμνονείας παιδὸς ἐκ βουλευμάτων
 φυγόντες ἐκ γῆς τῆσδε καὶ σεμνὸν βρέτας
 λαβόντες ἐν κόλποισιν Ἑλλάδος νεώς.
- ΧΟ. ἄπιστον εἶπας μῦθον· ὃν δ' ἰδεῖν θέλεις
 ἄνακτα χώρας, φροῦδος ἐκ ναοῦ συθεῖς.

ποῖ; δεῖ γὰρ αὐτὸν εἰδέναι τὰ δρώμενα. 1295
 οὐκ ἴσμεν· ἀλλὰ στεῖχε καὶ δίδωκέ νιν
 ὅπου κυρήσας τούσδ' ἀπαγγελεῖς λόγους.
 ὀρᾷτ', ἄπιστον ὥς γυναικεῖον γένος,
 μέτεστί θ' ὑμῖν τῶν πεπραγμένων μέρος.
 μαίνει; τί δ' ἡμῖν τῶν ξένων δρασμοῦ μέτα; 1300
 οὐκ εἰ κρατούντων πρὸς πύλας ὅσον τάχος;
 οὐ πρίν γ' ἂν εἴπη τοῦπος ἐρμηνεὺς τόδε,
 εἴτ' ἔνδον εἴτ' οὐκ ἔνδον ἀρχηγὸς χθονός.
 ὦν χαλᾷτε κλῆθρα, τοῖς ἔνδον λέγω,
 καὶ δεσπότη σημύναθ' οὔνεκ' ἐν πύλαις 1305
 πάρειμι, καινῶν φόρτον ἀγγέλλων κακῶν.
 τίς ἀμφὶ δῶμα θεᾶς τόδ' ἴστησιν βοήν,
 πύλας ἀράξας καὶ ψόφον πέμψας ἔσω;
 ψευδῶς ἔλεγον αἶδε καὶ μ' ἀπήλαννον δόμων,
 ὥς ἐκτὸς εἴης· σὺ δὲ κατ' οἶκον ἦσθ' ἄρα. 1310
 τί προσδοκῶσαι κέρδος ἢ θηρώμεναι;
 αὐθις τὰ τῶνδε σημανῶ· τὰ δ' ἐν ποσὶ
 παρόντ' ἄκουσον. ἡ νεᾶνις ἡ ἔνθαδε
 βωμοῖς παρίστατ', Ἰφιγένει', ἔξω χθονὸς
 σὺν τοῖς ξένοισιν οἴχεται, σεμνὸν θεᾶς 1315
 ἄγαλμ' ἔχουσα· δόλια δ' ἦν καθάρματα.
 πῶς φῆς; τί πνεῦμα συμφορᾶς κεκτημένη;
 σώξουσ' Ὀρέστην· τοῦτο γὰρ σὺ θανμάσει.
 τὸν ποῖον; ἄρ' ὃν Τυνδαρεὶς τίκτει κόρη;
 ὃν τοῖσδε βωμοῖς θεὰ καθωσιώσατο. 1320
 ᾧ θαῦμα, πῶς σε μεῖζον ὀνομάσας τύχω;
 μὴ ἔνθαδε τρέψῃς σὴν φρέν', ἀλλ' ἄκουέ μου·
 σαφῶς δ' ἀθρήσας καὶ κλύων ἐκφρόντισον
 διωγμὸς ὅστις τοὺς ξένους θηράσεται.
 λέγ'· εὖ γὰρ εἶπας· οὐ γὰρ ἀγχίπλουν πόρον 1325
 φεύγουσιν, ὥστε διαφυγεῖν τοῦμὸν δόρυ.

ΑΓΓ. ἐπεὶ πρὸς ἄκτας ἦλθομεν θαλασσίας,
 οὗ ναῦς Ὀρέστου κορύφιος ἦν ὠρμισμένη,
 ἡμᾶς μὲν, οὓς σὺ δεσμὰ συμπέμπεις ξένων
 ἔχοντας, ἐξένευσ' ἀποστῆναι πρόσω 133
 Ἀγαμέμνονος παῖς, ὡς ἀπόρρητον φλόγα
 θύσουσα καὶ καθαυτὸν ὃν μετώχετο.
 αὐτὴ δ' ὀπισθε δέσμ' ἔχουσα τοῖν ξένοι
 ἔστειχε χερσί. καὶ τὰδ' ἦν ὑποπτά μοι,
 ἥρεσκε μέντοι σοῖσι προσπόλοις, ἀναξ. 133
 χρόνῳ δ', ἵν' ἡμῖν δοῶν τι δὴ δοκοῖ πλέον,
 ἀνωλόλυξε καὶ κατῆδε βάρβαρα
 μέλη μαγεύουσ', ὡς φόνον νύξουσα δῆ.
 ἐπεὶ δὲ δαρὸν ἤμεν ἤμενοι χρόνον,
 ἐσῆλθεν ἡμᾶς μὴ λυθέντες οἱ ξένοι 134
 κτάνοιεν αὐτὴν δραπέται τ' οἰχοίατο.
 φόβῳ δ' ἅ μὴ χοῖν εἰσορᾶν καθήμεθα
 σιγῇ, τέλος δὲ πᾶσιν ἦν αὐτὸς λόγος,
 στείχειν ἵν' ἦσαν, καίπερ οὐκ ἐωμένους.
 κἂνταῦθ' ὀρώμεν Ἑλλάδος νεὼς σκάφος 134
 ταρσῶ κατήρει πίτυλον ἐπτερωμένον,
 ναύτας τε πεντήκοντ' ἐπὶ σκαλμῶν πλάτας
 ἔχοντας, ἐκ δεσμῶν δὲ τοὺς νεανίας
 ἐλευθέρους πρύμνηθεν ἐστῶτας νεὼς.
 κοντοῖς δὲ προῶραν εἶχον, οἱ δ' ἐπωτίδων 135
 ἄγκυραν ἐξανῆπτον, οἱ δὲ κλίμακας
 σπεύδοντες ἦγον διὰ χειρῶν πρυμνήσια,
 πόντῳ δὲ δόντες τοῖν ξένοι κατίεσαν.
 ἡμεῖς δ' ἀφειδήσαντες, ὡς ἐσείδομεν
 δόλια τεχνήματ', εἰχόμεσθα τῆς ξένης 135
 πρυμνησίαν τε, καὶ δι' εὐθυνηθείας
 οἴακας ἐξηροῦμεν εὐπρύμνου νεὼς.
 λόγοι δ' ἐχώρουν· τί νι λόγῳ πορθμεύετε

κλέπτοντες ἐκ γῆς ξόανα καὶ θυηπόλους ;
 τίνος τίς ὢν σὺ τήνδ' ἀπεμπολᾷς χθονός ; 1360
 ὁ δ' εἶπ' · Ὁρέσσης τῆσδ' ὀμαιμος, ὥς μάθης,
 Ἀγαμέμνονος παῖς, τήνδ' ἐμὴν κομίζομαι
 λαβὼν ἀδελφὴν, ἣν ἀπώλεσ' ἐκ δόμων.
 ἀλλ' οὐδὲν ἦσσον εἰχόμεσθα τῆς ξένης
 [καὶ πρὸς σ' ἔπεσθαι διεβιαζόμεσθά νιν], 1365
 ὅθεν τὰ δεινὰ πλήγματ' ἦν γενειάδων.
 κείνοι τε γὰρ σίδηρον οὐκ εἶχον χερσῶν
 ἡμεῖς τε· πυγμαὶ δ' ἦσαν ἐγκροτούμεναι,
 καὶ κῶλ' ἀπ' ἀμφοῖν τοῖν νεανίαιν ἅμα
 εἰς πλευρὰ καὶ πρὸς ἥπαρ ἤκοντίζετο, 1370
 ὥστε ξυνάπτειν καὶ συναποκαμεῖν μέλη.
 δεινοῖς δὲ σημάτωντροισιν ἐσφραγισμένοι
 ἐφεύγομεν πρὸς κρημνόν, οἳ μὲν ἐν κάρῳ
 κάθαιμι' ἔχοντες τραύμαθ', οἳ δ' ἐν ὄμμασιν·
 ὄχθοις δ' ἐπισταθέντες εὐλαβεστέως 1375
 ἐμαρυνάμεσθα καὶ πέτρους ἐβάλλομεν.
 ἀλλ' εἶργον ἡμᾶς τοξόται πρύμνης ἐπι
 σταθέντες ἰοῖς, ὥστ' ἀναστεῖλαι πρόσσω.
 καὶν τῷδε, δεινὸς γὰρ κλύδων ὤκειλε ναῦν
 πρὸς γῆν, φόβος δ' ἦν ὥστε μὴ τέγξαι πόδα, 1380
 λαβὼν Ὁρέσσης ὦμον εἰς ἀριστερόν,
 βᾶς εἰς θάλασσαν καπλὶ κλίμακος θορῶν,
 ἔθηκ' ἀδελφὴν ἐντὸς εὐσέλμου νεώς,
 τό τ' οὐρανοῦ πέσσημα, τῆς Διὸς κόρης
 ἄγαλμα. ναὸς δ' ἐκ μέσης ἐφθέγξατο 1385
 βοή τις· ὦ γῆς Ἑλλάδος ναῦται νεώς,
 λάβεσθε κώπαις τε ῥόθια λευκαίνετε·
 ἔχομεν γὰρ ὧν περ οὔνεκ' ἄξιον πόρον
 Συμπληγάδων ἔσωθεν εἰσεπλεύσαμεν.
 οἳ δὲ στεναγμὸν ἡδὺν ἐκβρυχώμενοι 1390

- ἔπαισαν ἄλμην. ναῦς δ', ἕως μὲν ἐντὸς ἦν
 λιμένος, ἐχώρει· στόμια διαπερῶσα δὲ
 λάβρῳ κλύδωνι συμπεσοῦσ' ἠπείγετο·
 δεινὸς γὰρ ἐλθὼν ἄνεμος ἐξαίφνης νεὼς
 ὥθει παλιμπρουμνηδόν· οἱ δ' ἑκατέρουν 1395
 πρὸς κέντρα λακτίζοντες· εἰς γῆν δ' αὖ πάλιν
 κλύδων παλίσρους ἦγε ναῦν. σταθεῖσα δὲ
 Ἀγαμέμνονος παῖς εὗξατ'· ὦ Αἰητοῦς κόρη,
 σῶσόν με τὴν σὴν ἱερίαν πρὸς Ἑλλάδα
 ἐκ βαρβάρου γῆς καὶ κλοπαῖς σύγγνωθ' ἑμαῖς. 1400
 φιλεῖς δὲ καὶ σὺ σὸν κασίγνητον, θεά·
 φιλεῖν δὲ καμὲ τοὺς ὁμαίμονας δόκει.
 ναῦται δ' ἐπευφήμησαν εὐχαῖσιν κόρης
 παιᾶνα, γυμνὰς ἐκβαλόντες ὠλένας
 κώπη προσαρμόσαντες ἐκ κελεύσματος. 1405
 μᾶλλον δὲ μᾶλλον πρὸς πέτρας ἦει σκάφος·
 χῶ μὲν τις εἰς θάλασσαν ὠρμήθη ποσὶν,
 ἄλλος δὲ πλεκτὰς ἐξανῆπτεν ἀγκύλας.
 καὶ γὰρ μὲν εὐθὺς πρὸς σὲ δεῦρ' ἀπεστάλην,
 σοὶ τὰς ἐκείθεν σημανῶν, ἄναξ, τύχας. 1410
 ἀλλ' ἔρπε, δεσμὰ καὶ βρόχους λαβὼν χεροῖν·
 εἰ μὴ γὰρ οἶδμα νήνεμον γενήσεται,
 οὐκ ἔστιν ἐλπίς τοῖς ξένοις σωτηρίας.
 πόντου δ' ἀνάκτωρ Ἴλιόν τ' ἐπισκοπεῖ
 σεμνὸς Ποσειδῶν, Πελοπίδαις δ' ἐναντίος. 1415
 καὶ νῦν παρέξει τὸν Ἀγαμέμνονος γόνον
 σοὶ καὶ πολίταις, ὥς ἔοικεν, ἐν χεροῖν
 λαβεῖν τ' ἀδελφήν, ἣ φόνον τὸν Αὐλίδι
 ἀμνημόνευτον θεᾷ προδοῦσ' ἀλίσκεται.
- ΧΟ. ὦ τλήμον Ἰφιγένεια, συγγόνου μέτα 1420
 θανεῖ πάλιν μολοῦσα δεσποτῶν χέρας.
- ΘΟ. ὦ πάντες ἄστοι τῆσδε βαρβάρου χθονός,
 οὐκ εἶα πώλοισ ἐμβαλόντες ἡνίας
 παράκτιοι δραμεῖσθε κἀκβολὰς νεὼς
 Ἑλληνίδος δέξεσθε, σὺν δὲ τῇ θεῷ 1425
 σπεύδοντες ἄνδρας δυσσεβεῖς θηράσετε;
 οἱ δ' ὠκυπομποὺς ἔλξετ' εἰς πόντον πλάτας;
 ὥς ἐκ θαλάσσης ἐκ τε γῆς ἱππεύμασι
 λαβόντες αὐτοὺς ἢ κατὰ στύφλου πέτρας

ρίψωμεν, ἢ σκόλοπι πῆξωμεν δέμας. 1430

ὕμᾱς δὲ τὰς τῶνδ' ἱστορας βουλευμάτων
γυναικας αὐθις, ἥνικ' ἂν σχολὴν λάβω,
ποινασόμεσθα· νῦν δὲ τὴν προκειμένην
σπουδὴν ἔχοντες οὐ μενοῦμεν ἥσυχoi.

ΑΘ. ποῖ ποῖ διωγμὸν τόνδε πορθμεύεις, ἄναξ 1435

Θόας; ἄκουσον τῆσδ' Ἀθηναίας λόγους.

παῦσαι διώκων ῥεῦμά τ' ἐξορμῶν στρατοῦ·

πεπρωμένος γὰρ θεσφάτοισι Λοξίου
δεῦρ' ἦλθ' Ὀρέστης, τόν τ' Ἑρινύων χόλον
φρεύγων ἀδελφῆς τ' Ἄργος εἰσπέμψων δέμας 1440

ἄγαλμά θ' ἱερὸν εἰς ἐμὴν ἄξων χθόνα,

τῶν νῦν παρόντων πημάτων ἀναψυχάς.

πρὸς μὲν σ' ὅδ' ἡμῖν μῦθος· ὃν δ' ἀποκτενεῖν

δοκεῖς Ὀρέστην ποντίῳ λαβὼν σάλῳ,

ἤδη Ποσειδῶν χάριν ἐμὴν ἀκύμονα

πόντου τίθῃσι νῶτα πορθμεύων πλάτῃ. 1445

μαθὼν δ', Ὀρέστη, τὰς ἐμὰς ἐπιστολάς,

κλύεις γὰρ αὐδὴν καίπερ οὐ παρὼν θεᾶς,

χώρει λαβὼν ἄγαλμα σύγγονόν τε σῆν.

ὅταν δ' Ἀθήνας τὰς θεοδμήτους μόλῃς,

χωρὸς τίς ἐστίν Ἀτθίδος πρὸς ἐσχάτοις 1450

ὑδροῖσι, γείτων δειράδος Καρυστίας,

ἱερὸς, Ἀλᾶς νιν οὐμὸς ὀνομάζει λεώς·

ἐνταῦθα τεύξας ναὸν ἰδρυσαι βρέτας,

ἐπώνυμον γῆς Ταυρικῆς πόνων τε σῶν,

οὓς ἐξεμόχθεις περιπολῶν καθ' Ἑλλάδα 1455

οἰστροῖς Ἑρινύων. Ἄρτεμιν δέ νιν βροτοῖ

τὸ λοιπὸν ὑμνήσουσι Ταυροπόλον θεάν.

νόμον τε θῆς τόνδ'· ὅταν ἐορτάξῃ λεώς,

τῆς σῆς σφαγῆς ἄποιν' ἐπισχέτω ξίφος

δέρῃ πρὸς ἀνδρὸς αἰμά τ' ἐξανιέτω, 1460

ὀσίας ἔκατι θεᾶ θ' ὅπως τιμὰς ἔχῃ.

σὲ δ' ἀμφὶ σεμνὰς, Ἰφιγένεια, κλίμακας

Βραυρωνίας δεῖ τῆσδε κληδουχεῖν θεᾶς·

οὗ καὶ τεθάψει κατθανοῦσα, καὶ πέπλων

ἄγαλμα σοι θήσουσιν εὐπῆνους ὑφάς, 1465

ἃς ἂν γυναῖκες ἐν τόκοις ψυχορραγεῖς

λείπωσ' ἐν οἴκοις. τάσδε δ' ἐκπέμπειν χθονὸς

- Ἑλληνίδας γυναικας ἐξεφίεμαι
 γνώμης δικαίας οὔνεκ'. ἐξέσωσά σε
 καὶ πρὶν γ' Ἀρείοις ἐν πάροις ψήφους ἶσας 1470
 κρίνας, Ὀρέστα· καὶ νόμισμ' ἔστω τόδε,
 νικᾶν ἰσῆρεις ὅστις ἂν ψήφους λάβῃ.
 ἀλλ' ἐκκομίζου σὴν κασιγνήτην χθονός,
 Ἀγαμέμνονος παῖ, καὶ σὺ μὴ θυμοῦ, Θόας.
- ΘΟ. ἄνασσ' Ἀθάνα, τοῖσι τῶν θεῶν λόγοις 1475
 ὅστις κλύων ἄπιστος, οὐκ ὀρθῶς φρονεῖ.
 ἐγὼ δ' Ὀρέστη τ', εἰ φέρων βρέτας θεᾶς
 βέβηκ', ἀδελφῇ τ' οὐχὶ θυμοῦμαι· τί γὰρ
 πρὸς τοὺς σθένοντας θεοὺς ἀμιλλᾶσθαι καλόν;
 ἔτωσαν εἰς σὴν σὺν θεᾶς ἀγάλματι 1480
 γαῖαν, καθιδρύσαιντό τ' εὐτυχῶς βρέτας.
 πέμψω δὲ καὶ τάσδ' Ἑλλάδ' εἰς εὐδαίμονα
 γυναικας, ὥσπερ σὸν κέλευσμ' ἐφίεται.
 παύσω δὲ λόγχην ἣν ἐπαίρομαι ξένοις
 νεῶν τ' ἔρετμά, σοὶ τὰδ' ὥς δοκεῖ, θεά. 1485
- ΑΘ. [αἰνῶ· τὸ γὰρ χρεὼν σοῦ τε καὶ θεῶν κρατεῖ.]
 ἔτ' ὦ πνοαί, νανσθλοῦσθε τὸν Ἀγαμέμνονος
 παῖδ' εἰς Ἀθήνας· συμπορεύσομαι δ' ἐγώ,
 σῶζουσ' ἀδελφῆς τῆς ἐμῆς σεμνὸν βρέτας.
- ΧΟ. ἔτ' ἐπ' εὐτυχία τῆς σωζομένης 1490
 μοίρας εὐδαίμονες ὄντες.
 ἀλλ' ὦ σεμνὴ παρὰ τ' ἀθανάτοις
 καὶ παρὰ θνητοῖς, Παλλὰς Ἀθάνα,
 δράσομεν οὕτως ὥς σὺ κελεύεις.
 μάλα γὰρ τερπνὴν κἀνέλπιστον 1495
 φήμην ἀκοᾷσι δέδεγμαι.
 [ὦ μέγα σεμνὴ Νίκη, τὸν ἐμὸν
 βίοτον κατέχοις
 καὶ μὴ λήγοις στεφανοῦσα.]

I Ω N.

ΤΑ ΤΟΥ ΔΡΑΜΑΤΟΣ ΠΡΟΣΩΠΑ.

ΕΡΜΗΣ.

ΙΩΝ.

ΧΟΡΟΣ ΘΕΡΑΠΑΙΝΙΔΩΝ ΚΡΕΟΤΣΗΣ
ΚΡΕΟΤΣΑ.

ΞΟΥΘΟΣ.

ΠΡΕΣΒΥΤΗΣ ἢ ΠΑΙΔΑΓΩΓΟΣ.

ΘΕΡΑΠΩΝ ΚΡΕΟΤΣΗΣ.

ΠΥΘΙΑ ἦτοι ΠΡΟΦΗΤΙΣ.

ΑΘΗΝΑ.

Υ Π Ο Θ Ε Σ Ι Σ.

Κρέουσαν τὴν Ἐρεχθίδεωσ Ἀπόλλων φθείρας ἔγκνου
ἐποίησεν ἐν Ἀθήναις· ἡ δὲ τὸ γεννηθὲν ὑπὸ τὴν ἀκρό-
πολιν ἐξέεθηκε, τὸν αὐτὸν τόπον καὶ τοῦ ἀδικήματος καὶ
τῆς λοχείας μάρτυρα λαβοῦσα. τὸ μὲν οὖν βρέφος Ἐρ-
μῆς ἀνελόμενος εἰς Δελφοὺς ἤνεγκεν· εὐροῦσα δ' ἡ
προφήτις ἀνέθρεψε. τὴν Κρέουσαν δὲ Ξοῦθος ἔγρημε·
συμμαχήσας γὰρ Ἀθηναίοις τὴν βασιλείαν καὶ τὸν τῆς
προειρημένης γάμον ἔλαβε δῶρον. τούτῳ μὲν οὖν ἄλλος
παῖς οὐκ ἐγένετο· τὸν δ' ἐκτραφέντα ὑπὸ τῆς προφήτι-
δος οἱ Δελφοὶ νεωκόρον ἐποίησαν. ὁ δὲ ἀγνοῶν ἐδού-10
λευσε τῷ πατρί.

Ἡ σκηνὴ τοῦ δράματος ὑπόκειται ἐν Δελφοῖς.

ΕΥΡΥΠΙΔΟΥ

Ι Ω Ν.

ΕΡ. Ἄτλας, ὃ χαλκείοισι νώτοις οὐρανὸν
 θεῶν παλαιὸν οἶκον ἐκτρίβων, θεῶν
 μιᾶς ἔφυσε Μαῖαν, ἣ' μ' ἐγείνατο
 Ἑρμῆν μεγίστῳ Ζηνί, δαιμόνων λάτριν.
 ἦκω δὲ Δελφῶν τήνδε γῆν, ἵν' ὀμφαλὸν 5
 μέσον καθίζων Φοῖβος ὑμνωδεῖ βροτοῖς
 τὰ τ' ὄντα καὶ μέλλοντα θεσπίζων ἀεί.
 ἔστιν γὰρ οὐκ ἄσημος Ἑλλήνων πόλις,
 τῆς χρυσολόγχου Παλλάδος κεκλημένη,
 οὐ παῖδ' Ἑρεχθέως Φοῖβος ἔξευξεν γάμοις 10
 βία Κρέουσας, ἔνθα προσβόρρους πέτρας
 Παλλάδος ὑπ' ὄχθῳ τῆς Ἀθηναίων χθονὸς
 Μακρὰς καλοῦσι γῆς ἄνακτες Ἀττίδος.
 ἀγνώσ δὲ πατρί, τῷ θεῷ γὰρ ἦν φίλον,
 γαστροὺς διήνεγκ' ὄγκον· ὥς δ' ἦλθεν χρόνος, 15
 τεκοῦσ' ἐν οἴκοις παῖδ' ἀπήνεγκεν βρέφος
 εἰς ταῦτόν ἄντρον οὐπερ ἠνιάσθη θεῷ
 Κρέουσα, κακτίθησιν ὥς θανούμενον
 κοίλῃς ἐν ἀντίπηγος εὐτρόχῳ κύκλῳ,
 προγόνων νόμον σῶζουσα τοῦ τε γηγενοῦς 20
 Ἑριχθονίου· κείνῳ γὰρ ἡ Διὸς κόρη
 φρουρῶ παραξενύεσσα φύλακε σώματος

διδωσά δρᾶκοντε, παρθένους Ἀγραυλίσι
 δίδωσι σώζειν· ὅθεν Ἐρεχθεΐδαις ἔτι
 νόμος τις ἔστιν ὄφεσιν ἐν χρυσηλάτοις 25
 τρέφειν τέκν'. ἀλλ' ἦν εἶχε παρθένος χλιδὴν
 τέκνῳ προσάψας' ἔλιπεν, ὥς θανουμένῳ.
 καί μ' ὦν ἀδελφὸς Φοῖβος αἰτεῖται τάδε·
 ὦ σύγγον', ἐλθὼν λαὸν εἰς αὐτόχθονα
 κλεινῶν Ἀθηνῶν, οἷσθα γὰρ θεᾶς πόλιν, 30
 λαβὼν βρέφος νεογνὸν ἐκ κοίλης πέτρας
 αὐτῷ σὺν ἄγγει σπαργάνοισί θ' οἷς ἔχει
 ἔνεγκε Δελφῶν τὰμὰ πρὸς χρηστήρια
 καὶ θεῶς πρὸς αὐταῖς εἰσόδοις δόμων ἐμῶν.
 τὰ δ' ἄλλ', ἐμὸς γὰρ ἔστιν, ὥς εἰδῆς, ὁ παῖς, 35
 ἡμῖν μελήσει. Λοξία δ' ἐγὼ χάριν
 πράσσω ἀδελφῷ πλεκτὸν ἐξάρας κύτος
 ἦνεγκα καὶ τὸν παῖδα κρηπίδων ἐπι
 τίθημι ναοῦ τοῦδ', ἀναπτύξας κύτος
 ἐλικτὸν ἀντίπηγρος, ὥς ὀρῶθ' ὁ παῖς. 40
 κυρεῖ δ' ἅμ' ἱππεύοντος ἡλίου κύκλῳ
 προφῆτις εἰσβαίνουσα μαντεῖον θεοῦ·
 ὅψιν δὲ προσβαλοῦσα παιδὶ νηπίῳ
 ἐθαύμασ' εἴ τις Δελφίδων τλαίῃ κόρη
 λαθραῖον ὠδῖν' εἰς θεοῦ ῥῆψαι δόμον, 45
 ὑπὲρ δὲ θυμέλας διορίσαι πρόθυμος ἦν·
 οἷκτῳ δ' ἀφῆκεν ὠμότητα, καὶ θεὸς
 συνεργὸς ἦν τῷ παιδὶ μὴ' κπεσεῖν δόμων.
 τρέφει δὲ νιν λαβοῦσα· τὸν σπείραντα δὲ
 οὐκ οἶδε Φοῖβον οὐδὲ μητέρ' ἧς ἔφνυ, 50
 ὁ παῖς τε τοὺς τεκόντας οὐκ ἐπίσταται.
 νέος μὲν οὖν ὦν ἀμφιβωμίους τροφὰς
 ἡλᾷτ' ἀθύρων· ὥς δ' ἀπηνδρώθη δέμας,
 Δελφοί σφ' ἔθεντο χρυσοφύλακα τοῦ θεοῦ

ταμίαν τε πάντων πιστόν, ἐν δ' ἀνακτόροις 55
 θεοῦ καταξῆ δεῦρ' αἰεὶ σεμνὸν βίον.
 Κρέουσα δ' ἡ τεκοῦσα τὸν νεανίαν
 Ξούθῳ γαμεῖται συμφορᾶς τοιαῦσδ' ὑπο.
 ἦν ταῖς Ἀθήναις τοῖς τε Χαλκωδοντίδαις,
 οἷ γῆν ἔχουσ' Εὐβοῖδα, πολέμιος κλύδων· 60
 ὃν συμπονήσας καὶ ξυνεξελὼν δορὶ
 γάμων Κρεοῦσης ἀξίωμ' ἐδέξατο,
 οὐκ ἐγγενὴς ὢν, Αἰόλου δὲ τοῦ Διὸς
 γεγὼς Ἀχαιός· χρόνια δὲ σπείρας λέχη
 ἄτεκνός ἐστι, καὶ Κρέουσ'· ὢν οὖνεκα 65
 ἤκουσι πρὸς μαντεῖ' Ἀπόλλωνος τάδε,
 ἔρωτι παίδων. Λοξίας δὲ τὴν τύχην
 εἰς τοῦτ' ἐλεύνει, κοῦ λέληθεν, ὥς δοκεῖ.
 δώσει γὰρ εἰσελθόντι μαντεῖον τόδε
 Ξούθῳ τὸν αὐτοῦ παῖδα, καὶ πεφνέειναι 70
 κείνου σφε φήσει, μητρὸς ὥς ἐλθὼν δόμους
 γνωσθῆ Κρεοῦση, καὶ γάμοι τε Λοξίου·
 κρυπτοὶ γένωνται παῖς τ' ἔχη τὰ πρόσφορα.
 Ἴωνα δ' αὐτόν, κτίστορ' Ἀσιάδος χθονός,
 ὄνομα κεκλησθαι θήσεται καθ' Ἑλλάδα. 75
 ἀλλ' εἰς δαφνώδῃ γύαλα βήσομαι τάδε,
 τὸ κρανθὲν ὥς ἂν ἐκμάθῃ παιδὸς πέρι.
 ὁρῶ γὰρ ἐκβαίνοντα Λοξίου γόνου
 τόνδ', ὥς πρὸ ναοῦ λαμπρὰ θῆ πυλώματα
 δάφνης κλάδοισιν. ὄνομα δ', οὗ μέλλει τυχεῖν, 80
 Ἴων' ἐγὼ σφε πρῶτος ὀνομάζω θεῶν.
 ΙΩΝ. ἄρματα μὲν τάδε λαμπρὰ τεθρίππων
 ἥλιος ἤδη κάμπει κατὰ γῆν,
 ἄστρα δὲ φεύγει πυρὶ τῷδ' αἰθέρος
 εἰς νύχθ' ἱερᾶν,
 Παρνησιάδες δ' ἄβατοι κορυφαί

καταλαμπόμεναι τὴν ἡμερίαν
ἄψιδα βροτοῖσι δέχονται.
σμύρνης δ' ἀνύδρου καπνὸς εἰς ὀρόφους
Φοίβου πέτεται. 90
θάσσει δὲ γυνὴ τρίποδα ζάθεον
Δελφίς, αἰίδουσ' Ἑλλησι βοάς,
ἃς ἂν Ἀπόλλων κελαδήσῃ.
ἄλλ' ὦ Φοίβου Δελφοὶ θέραπες,
τὰς Κασταλίας ἀργυροειδεῖς 95
βαίνετε δίνας, καθαραῖς δὲ δρόσοις
ἀφυδρανάμενοι στείχετε ναοὺς·
στόμα τ' εὖφημον φρουρεῖτ' ἀγαθόν,
φῆμας τ' ἀγαθὰς
τοῖς ἐθέλουσιν μαντεύεσθαι 100
γλώσσης ἰδίας ἀποφαίνειν.
ἡμεῖς δὲ πόνους οὓς ἐκ παιδὸς
μοχθοῦμεν αἰεὶ, πτόρθοισι δάφνης
στέφεσιν θ' ἱεροῖς ἐσόδους Φοίβου
καθαρὰς θήσομεν ὑγραῖς τε πέδον 105
ξανίσιν νοτερόν, πτηνῶν τ' ἀγέλας,
αἱ βλάπτουσιν σέμν' ἀναθήματα,
τόξοισιν ἑμοῖς φνυγάδας θήσομεν·
ὥς γὰρ ἀμήτωρ ἀπάτωρ τε γεγῶς
τοὺς θρέψαντας 110
Φοίβου ναοὺς θεραπεύω.
ἄγ' ὦ νεηθαλὲς ὦ 112 στρ.
καλλίστας προπόλευμα δάφνας,
ἃ τὰν Φοίβου θυμέλαν
σαίρεις ὑπὸ ναοῖς 115
κήπων ἐξ ἀθανάτων,
ἵνα δρόσοι τέγγουσ' ἱερὰ

* τὰν ἄέναιον παγὰν
 ἐκπροΐεισαι,
 μυρσίνας ἱερὰν φόβαν,
 ᾧ σαίρω δάπεδον θεοῦ
 παναμέριος ἅμ' ἁλίου
 πτέρυγι θοᾷ
 λατρεύων τὸ κατ' ἡμᾶρ.
 ὦ Παιὰν ὦ Παιάν,
 εὐαίων εὐαίων
 εἴης, ὦ Λατοῦς παῖ.
 καλόν γε τὸν πόνον, ὦ
 Φοῖβε, σοὶ πρὸ δόμων λατρεύω
 τιμῶν μαντεῖον ἔδραν·
 κλεινὸς δ' ὁ πόνος μοι
 θεοῖσιν δούλαν χέρ' ἔχειν,
 οὐ θνατοῖς ἀλλ' ἀθανάτοις·
 εὐφάμους δὲ πόνους μοχθεῖν
 οὐκ ἀποκάμνω.
 Φοῖβός μοι γενέτωρ πατήρ·
 τὸν βόσκοντα γὰρ εὐλογῶ,
 τὸ δ' ὠφέλιμον ἐμοὶ πατέρος
 ὄνομα λέγω,
 Φοῖβον τὸν κατὰ ναόν.
 ὦ Παιὰν ὦ Παιάν,
 εὐαίων εὐαίων
 εἴης, ὦ Λατοῦς παῖ.
 ἀλλ' ἐκπαύσω γὰρ μόχθους
 δάφνας ὀλκοῖς,
 χρυσέων δ' ἐκ τευχέων ῥίψω
 γαίας παγάν,
 ἃν ἀποχεύονται
 Κασταλίας δῖναι,

120

125

ἀντ.

130

135

140

145

νοτερόν ὕδωρ βάλλων,
ὅσιος ἀπ' εὐνᾶς ὦν. 150

εἰθ' οὕτως ἀεὶ Φοῖβω
λατρεύων μὴ πανσαίμαν,
ἢ πανσαίμαν ἀγαθᾶ μοῖρα.
ἔα ἔα·

φοιτᾷς ἥδη λείπουσιν τε
πτανοὶ Παρνασοῦ κοίτας· 155

αὐδῶ μὴ χρίμπτειν θριγκοῖς
μηδ' εἰς χρυσήρεις οἴκους.

μάρω σ' αὖ τόξοις, ὧ Ζηνὸς
κῆρυξ, ὀρνίθων γαμφηλαῖς
ἰσχὺν νικῶν. 160

ὅδε πρὸς θυμέλας ἄλλος ἐρέσσει
κύκνος· οὐκ ἄλλα

φοινικοφαῖ πόδα κινήσεις;
οὐδέν σ' ἄ φόρμιγξ ἄ Φοῖβου
σύμμολπος τόξων ῥύσαιτ' ἄν· 165

πάραγε πτέρυγας,
λίμνας ἐπίβα τᾶς Δηλιάδος·
αἰμάξεις, εἰ μὴ πείσει,
τὰς καλλιφθόγγους ῥῥῆας.

ἔα ἔα· 170

τίς ὅδ' ὀρνίθων καινὸς προσέβα;

μῶν ὑπὸ θριγκοῦς εὐναίας

καρφηρὰς θήσων τέκνοις;

ψαλμοὶ σ' εἰρξουσιν τόξων.

οὐ πείσει; χωρῶν ἐν δύναις

ταῖς Ἀλφειοῦ παιδούργει 175

ἢ νάπος Ἰσθμιον,

ὥς ἀναθήματα μὴ βλάπτεται

ναοὶ θ' οἱ Φοῖβου.

- κτείνειν δ' ὑμᾶς αἰδοῦμαι
 τοὺς θεῶν ἀγγέλλοντας φήμας 180
 θνατοῖς· οἷς δ' ἔγκειμαι μόχθοις,
 Φοίβῳ δουλεύσω, κοῦ λήξω
 τοὺς βόσκοντας θεραπεύων.
- ΗΜΙΧ. οὐκ ἐν ταῖς ζαθέαις Ἀθά- στρ. 185
 ναις εὐκλίονες ἦσαν ἀν-
 λαί θεῶν μόνον, οὐδ' ἄγνι-
 ἀτιδες θεραπεῖαι·
 ἀλλὰ καὶ παρὰ Λοξία
 τῷ Λατοῦς διδύμων προσώ-
 πων καλλιβλέφαρον φῶς.
 ἰδοὺ τάνδ' ἄθρησον, 190
 Λερναῖον ὕδραν ἐναίρει
 χρυσέαις ἄρπαις ὁ Διὸς παῖς·
 φίλα, πρόσιδ' ὅσσοις.
- ΗΜΙΧ. ὁρῶ. καὶ πέλας ἄλλος ἀν- ἀντ. 195
 τοῦ παντὸν πυρίφλεκτον αἶ-
 ρει τις· ἄρ' ὃς ἐμαῖσι μυ-
 θεύεται παρὰ πῆναις
 ἀσπιστὰς Ἰόλαος, ὃς
 κοινοὺς αἰρόμενος πόνουσ
 Δίῳ παιδὶ συναντλεῖ; 200
- ΗΜΙΧ. καὶ μὰν τόνδ' ἄθρησον
 πτεροῦντος ἔφεδρον ἵππου·
 τὰν πῦρ πνέουσαν ἐναίρει
 τρισώματον ἀλκάν.
- ΗΜΙΧ. παντῶ τοι βλέφαρον διώ- στρ. 205
 κω. σκέψαι κλόνον ἐν τείχε-
 σι λαῖνοισι Γιγάντων.

184 — 193 == 194 — 204

205 — 218 == 219 — 236

- HMIX. ὦδε δερκόμεθ', ὦ φίλοι, *
- HMIX. λεύσσεις οὖν ἐπ' Ἐγκελάδῳ
γοργῶπιν πάλλουσαν ἵτυν; 210
- HMIX. λεύσσω Παλλάδ' ἑμὴν θεόν.
- HMIX. τί γάρ, κεραυνὸν
ἀμφίπυρον ὄβριμον ἐν Διὸς
ἐκηβόλοισι χερσίν;
- HMIX. ὄρῳ, τὸν δάιον
Μίμαντα πυρὶ καταιθαλοῖ.
καὶ Βρόμιος ἄλλον ἀπολέμοισι
κισσίοισι βάρκτροις
ἐναίρει Γᾶς τέκνων ὁ Βακχεύς. 215
- XO. σέ τοι τὸν παρὰ ναὸν αὐ-
δῶ· θέμις γυάλων ὑπερ-
βῆναι λευκῷ ποδὶ βαλόν; 220
- ΙΩΝ. οὐ θέμις, ὦ ξέναι.
- XO. οὐδ' ἂν ἐκ σέθεν ἂν πυθοίμαν,
ΙΩΝ. αὐτὰ· τί θέλεις;
- XO. ἄρ' ὄντως μεσομφάλιον
γᾶς Φοίβου κατέχει δόμος;
- ΙΩΝ. στέμμασί γ' ἐνδυτόν, ἀμφὶ δὲ Γοργόνες.
- XO. οὕτω καὶ φάτις αὐδᾶ. 225
- ΙΩΝ. εἰ μὲν ἐθύσατε πέλανον πρὸ δόμων
καὶ τι πυθέσθαι χρήξετε Φοίβου,
πάριτ' εἰς θυμέλας, ἐπὶ δ' ἀσφάκτοις
μήλοισι δόμων μὴ πάριτ' εἰς μυχόν.
- XO. ἔχω μαθοῦσα·
θεοῦ δὲ νόμον οὐ παραβαίνομεν·
ἃ δ' ἐκτός, ὅμμα τέρψει. 230
- ΙΩΝ. πάντα θεᾶσθ', ὅ τι καὶ θέμις, ὅμμασι.
- XO. μεθεῖσαν δεσπόται
με θεοῦ γύαλα τάδ' εἰσιδεῖν.

ΙΩΝ. δμῳαὶ δὲ τίνων κλήξουσθε δόμων;

ΧΟ. Παλλάδος ἔνοικα τρόφιμα μέλαθρα
τῶν ἑμῶν τυράννων.
παρούσας δ' ἄμφι τᾷσδ' ἐρωτᾷς.

235

ΙΩΝ. γενναιότης σοι, καὶ τρόπων τεκμήριον
τὸ σχῆμ' ἔχεις τόδ', ἥτις εἴ ποτ', ὦ γύναι.
γνοίῃ δ' ἂν ὥς τὰ πολλὰ γ' ἀνθρώπου πέρι
τὸ σχῆμ' ἰδὼν τις εἰ πέφυκεν εὐγενής.
ἔα·

240

ἀλλ' ἐξέπληξάς μ', ὄμμα συγκλήσασα σὸν
δακρύοις θ' ὑγράνας' εὐγενῇ παρηίδα,
ὥς εἶδες ἄγνὰ Λοξίου χρηστήρια.

τί ποτε μερίμνης εἰς τόδ' ἦλθες, ὦ γύναι;
οὐ πάντες ἄλλοι γύαλα λεύσσουντες θεοῦ
χαίρουσιν, ἐνταῦθ' ὄμμα σὸν δακρυρροεῖ;

245

ΚΡ. ὦ ξέने, τὸ μὲν σὸν οὐκ ἀπαιδεύτως ἔχει
εἰς θαύματ' ἐλθεῖν δακρύων ἑμῶν πέρι·
ἐγὼ δ' ἰδοῦσα τούσδ' Ἀπόλλωνος δόμους
μνήμην παλαιὰν ἀνεμετροησάμην τινά·
οἴκοι δὲ τὸν νοῦν ἔσχον ἐνθάδ' οὐσά περ.
ὦ τλήμονες γυναιῖκες· ὦ τολμήματα
θεῶν. τί δῆτα; ποῦ δίκην ἀνοίσομεν,
εἰ τῶν κρατούντων ἀδικίαις ὀλούμεθα;

250

ΙΩΝ. τί χρῆμ' ἀνερμήνευτα δυσθυμεῖ, γύναι;

255

ΚΡ. οὐδέν· μεθῆκα τόξα· τὰπὶ τῷδε δὲ
ἐγὼ τε σιγῶ καὶ σὺ μὴ φρόντιζ' ἔτι.

ΙΩΝ. τίς δ' εἶ; πόθεν γῆς ἦλθες; ἐκ ποίου πατρὸς
πέφυκας; ὄνομα τί σε καλεῖν ἡμᾶς χρεῶν;

ΚΡ. Κρέουσα μὲν μοι τοῦνομ', ἐκ δ' Ἐρεχθίδος
πέφυκα, πατρὶς γῆ δ' Ἀθηναίων πόλις.

260

ΙΩΝ. ὦ κλεινὸν οἰκοῦσ' ἄστν γενναίων τ' ἄπο
τραφεῖσα πατέρων, ὥς σε θαυμάζω, γύναι.

- ΚΡ. τοσαῦτα κεύτυχοῦμεν, ὦ ξέν', οὐ πέρα.
 ΙΩΝ. πρὸς θεῶν ἀληθῶς, ὡς μεμύθευται βροτοῖς, 265
 ΚΡ. τί χοῖμ' ἐρωτᾷς, ὦ ξέν'; ἐκμαθεῖν θέλω.
 ΙΩΝ. ἐκ γῆς πατρός σου πρόγονος ἐβλασθεν πατήρ;
 ΚΡ. Ἐριχθόνιός γε· τὸ δὲ γένος μ' οὐκ ὠφελεῖ.
 ΙΩΝ. ἦ καί σφ' Ἀθάνα γῆθεν ἐξανείλετο;
 ΚΡ. εἰς παρθένους γε χεῖρας, οὐ τεκοῦσά νιν. 270
 ΙΩΝ. δίδωσι δ', ὥσπερ ἐν γραφῇ νομίζεται;
 ΚΡ. Κέκροπός γε σῶζειν παισὶν οὐχ ὀρώμενον.
 ΙΩΝ. ἤκουσα λῦσαι παρθένους τεῦχος θεᾶς.
 ΚΡ. τοιγὰρ θανοῦσαι σκόπελον ἤμαξαν πέτρας.
 ΙΩΝ. εἶεν·
 τί δαὶ τόδ'; ἄρ' ἀληθὲς ἢ μάτην λόγος; 275
 ΚΡ. τί χοῖμ' ἐρωτᾷς; καὶ γὰρ οὐ κάμνω σχολῇ.
 ΙΩΝ. πατήρ Ἐρεχθεὺς σὰς ἔθυσσε συγγόνους;
 ΚΡ. ἔτλη πρὸ γαίης σφάγια παρθένους κτανεῖν.
 ΙΩΝ. σὺ δ' ἐξεσώθης πῶς κασιγνήτων μόνη;
 ΚΡ. βρέφος νεογνὸν μητρὸς ἦν ἐν ἀγκάλαις. 280
 ΙΩΝ. πατέρα δ' ἀληθῶς χάσμα σὸν κρύπτει χθονός;
 ΚΡ. πληγαὶ τριαίνης ποντίου σφ' ἀπώλεσαν.
 ΙΩΝ. Μακροὶ δὲ χῶρός ἐστ' ἐκεῖ κεκλημένος;
 ΚΡ. τί δ' ἱστορεῖς τόδ'; ὥς μ' ἀνέμνησάς τινος.
 ΙΩΝ. τιμᾷ σφε Πύθιος ἄστραπαί τε Πύθιαι; 285
 ΚΡ. τιμᾷ γ' ἄτιμ'· ὥς μήποτ' ὠφελόν σφ' ἰδεῖν.
 ΙΩΝ. τί δέ; στυγεῖς σὺ τοῦ θεοῦ τὰ φίλτατα;
 ΚΡ. οὐδέν· ξύνοιδ' ἄντροισιν αἰσχύνην τινά.
 ΙΩΝ. πόσις δὲ τίς σ' ἔγρημ' Ἀθηναίων, γύναι;
 ΚΡ. οὐκ ἄστος, ἀλλ' ἐπακτὸς ἐξ ἄλλης χθονός. 290
 ΙΩΝ. τίς; εὐγενῇ νιν δεῖ πεφυκέναι τινά.
 ΚΡ. Ξοῦθος, πεφυκὼς Αἰόλον Διός τ' ἄπο.
 ΙΩΝ. καὶ πῶς ξένος σ' ὦν ἔσχεν οὔσαν ἐγγενῇ;
 ΚΡ. Εὐβοί' Ἀθήναις ἔστι τις γείτων πόλις·

ΙΩΝ. ὄροις ὑγροῖσιν, ὥς λέγουσ', ὠρισμένη.

ΚΡ. ταύτην ἔπερσε Κεκροπίδαις κοινῷ δορί.

ΙΩΝ. ἐπίκουρος ἔλθων; κᾶτα σὸν γαμεῖ λέχος;

ΚΡ. φερνάς γε πολέμου καὶ δορὸς λαβὼν γέρας.

ΙΩΝ. σὺν ἀνδρὶ δ' ἥκεις ἢ μόνη χρηστήρια;

ΚΡ. σὺν ἀνδρὶ. σηκοῖς δ' ἐνστρέφει Τροφωνίου.

ΙΩΝ. πότερον θεατῆς, ἢ χάριν μαντευμάτων;

ΚΡ. κείνου τε Φοίβου θ' ἐν θέλων μαθεῖν ἔπος.

ΙΩΝ. καρποῦ δ' ὕπερ γῆς ἥκετ', ἢ παίδων πέρι;

ΚΡ. ἄπαιδές ἐσμεν, χρόνι' ἔχοντ' εὐνήματα.

ΙΩΝ. οὐδ' ἔτεκες οὐδὲν πώποτ', ἀλλ' ἄτεκνος εἶ;

ΚΡ. ὁ Φοῖβος οἶδε τὴν ἐμὴν ἀπαιδίαν.

ΙΩΝ. ὦ τλήμον, ὥς τᾶλλ' εὐτυχοῦσ' οὐκ εὐτυχεῖς.

ΚΡ. σὺ δ' εἶ τίς; ὥς σου τὴν τεκοῦσαν ὥλβισα.

ΙΩΝ. τοῦ θεοῦ καλοῦμαι δοῦλος εἰμί τ', ὦ γύναι.

ΚΡ. ἀνάθημα πόλεως, ἢ τινος παραθεῖς ὕπο;

ΙΩΝ. οὐκ οἶδα πλὴν ἔν' Ἀοξίου κεκλήμεθα.

ΚΡ. ἡμεῖς σ' ἄρ' αὐθις, ὦ ξέν', ἀντοικτείρομεν.

ΙΩΝ. ὥς μὴ εἰδόθ' ἥτις μ' ἔτεκεν ἐξ ὅτου τ' ἔφυν.

ΚΡ. ναοῖσι δ' οἰκεῖς τοισίδ' ἢ κατὰ στέγας;

ΙΩΝ. ἅπαν θεοῦ μοι δῶμ', ἴν' ἂν λάβῃ μ' ὕπνος.

ΚΡ. παῖς δ' ὦν ἀφίκου ναὸν ἢ νεανίας;

ΙΩΝ. βρέφος λέγουσιν οἱ δοκοῦντες εἰδέναι.

ΚΡ. καὶ τίς γάλακτί σ' ἐξέθρεψε Δελφίδων;

ΙΩΝ. οὐπώποτ' ἔγνων μαστόν· ἢ δ' ἔθρεψέ με.

ΚΡ. τίς, ὦ ταλαίπωρ'; ὥς νοσοῦσ' εὗρον νόσον.

ΙΩΝ. Φοίβου προφητῆς, μητέρ' ὥς νομίζομεν.

ΚΡ. εἰς δ' ἄνδρ' ἀφίκου τίνα τροφὴν κεκτημένον;

ΙΩΝ. βωμοί μ' ἔφερβον οὐπιῶν τ' αἰὲ ξένος.

ΚΡ. τάλαινά σ' ἢ τεκοῦσα, τίς ποτ' ἦν ἄρα.

ΙΩΝ. ἀδίκημά του γυναικὸς ἐγενόμην ἴσως.

ΚΡ. ἔχεις δὲ βίοντον; εὖ γὰρ ἥσκησαι πέπλοις.

ΙΩΝ. τοῖς τοῦ θεοῦ κοσμούμεθ', ὧ δουλεύομεν.

ΚΡ. οὐδ' ἤξας εἰς ἔρευναν ἐξευρεῖν γονάς;

ΙΩΝ. ἔχω γὰρ οὐδέν, ὧ γύναι, τεκμηρίον.

ΚΡ. φεῦ·

πέπονθέ τις σῇ μητρὶ ταῦτ' ἄλλη γυνή, 330

ΙΩΝ. τίς; εἰ πόνου μοι ξυλλάβοι, χαίροισιν ἄν.

ΚΡ. ἥς οὐνεκ' ἦλθον δεῦρο πρὶν πόσιν μολεῖν.

ΙΩΝ. ποῖόν τι χρήζουσ'; ὥς ὑπουργήσω, γύναι.

ΚΡ. μάντευμα κρυπτὸν δεομένη Φοίβου μαθεῖν.

ΙΩΝ. λέγοις ἄν· ἡμεῖς τᾶλλα προξενήσομεν. 335

ΚΡ. ἄκουε δὴ τὸν μῦθον· ἀλλ' αἰδούμεθα.

ΙΩΝ. οὐ τᾶρα πράξεις οὐδέν· ἀργὸς ἡ θεός.

ΚΡ. Φοίβῳ μιγῆναί φησί τις φίλων ἐμῶν,

ΙΩΝ. Φοίβῳ γυνή γεγῶσα; μὴ λέγ', ὧ ξένη.

ΚΡ. καὶ παῖδά γ' ἔτεκε τῷ θεῷ λάθρα πατρός. 340

ΙΩΝ. οὐκ ἔστιν· ἀνδρὸς ἀδικίαν αἰσχύνεται.

ΚΡ. οὐ φησιν αὐτῇ· καὶ πέπονθεν ἄθλια.

ΙΩΝ. τί χοῖμα δράσασ', εἰ θεῷ συνεζύγη;

ΚΡ. τὸν παῖδ' ὃν ἔτεκεν ἐξέσθηκε δωμάτων.

ΙΩΝ. ὁ δ' ἐκτεθεῖς παῖς ποῦ ὅστιν; εἰσορᾷ φάος; 345

ΚΡ. οὐκ οἶδεν οὐδεὶς. ταῦτα καὶ μαντεύομαι.

ΙΩΝ. εἰ δ' οὐκέτ' ἔστι, τί νι τρόπῳ διεφθάρη;

ΚΡ. θῆρας σφε τὸν δύστηνον ἐλπίζει κτανεῖν.

ΙΩΝ. ποῖω τόδ' ἔγνω χρωμένη τεκμηρίῳ;

ΚΡ. ἐλθοῦς ἴν' αὐτὸν ἐξέσθηκ', οὐχ εὖρ' ἔτι. 350

ΙΩΝ. ἦν δὲ σταλαγμὸς ἐν στίβῳ τις αἵματος;

ΚΡ. οὐ φησι· καίτοι πόλλ' ἐπεστράφη πέδον.

ΙΩΝ. χρόνος δὲ τίς τῷ παιδὶ διαπεπραγμένῳ;

ΚΡ. σοὶ ταῦτὸν ἦβης, εἶπερ ἦν, εἶχ' ἄν μέτρον.

ΙΩΝ. ἀδικεῖ νιν ὁ θεός· ἡ τεκοῦσα δ' ἄθλια. 355

ΚΡ. οὐκουν ἔτ' ἄλλον ὕστερον τίκτει γόνον.

ΙΩΝ. τί δ', εἰ λάθρα νιν Φοῖβος ἐκτρέφει λαβών;

ΚΡ. τὰ κοινὰ χαίρων οὐ δίκαια δοῦνός μόνος.

ΙΩΝ. οἴμοι· προσφῶδός ἡ τύχη τῷ μῶ πάθει.

ΚΡ. καὶ σ', ὦ ξέν', οἶμαι μητέρ' ἀθλίαν ποθεῖν. 360

ΙΩΝ. καὶ μή μ' ἐπ' οἶκτον ἔξαγ' οὐ' λελήσμεθα.

ΚΡ. σιγῶ· πέραινε δ' ὦν σ' ἀνιστορῶ πέρι.

ΙΩΝ. οἶσθ' οὖν ὃ κάμνει τοῦ λόγου μάλιστά σοι;

ΚΡ. τί δ' οὐκ ἐκείνη τῇ ταλαιπώρῳ νοσεῖ;

ΙΩΝ. πῶς ὁ θεὸς ὃ λαθεῖν βούλεται μαντεύσεται; 365

ΚΡ. εἶπερ καθίζει τρίποδα κοινὸν Ἑλλάδος.

ΙΩΝ. αἰσχύνεται τὸ πρᾶγμα· μὴ' ἐξελεγχέ νιν.

ΚΡ. ἀλγύνεται δὲ χῆ παθοῦσα τῇ τύχῃ.

ΙΩΝ. οὐκ ἔστιν ὅστις σοι προφητεύσει τάδε.

ἐν τοῖς γὰρ αὐτοῦ δώμασιν κακὸς φανεῖς 370

Φοῖβος δικαίως τὸν θεμιστεύοντά σοι

δράσειεν ἂν τι πῆμ'· ἀπαλλάσσου, γύναι·

τῷ γὰρ θεῷ τάναντί' οὐ μαντευτέον.

εἰς γὰρ τοσοῦτον ἀμαθίας ἔλθοιμεν ἂν,

εἰ τοὺς θεοὺς ἄκοντας ἐκπονήσομεν 375

φράζειν ἂ μὴ θέλουνσιν ἢ προβωμίῳις

σφαγαῖσι μήλων ἢ δι' οἰωνῶν περὶ τοῖς.

ἂν γὰρ βία σπεύδωμεν ἀκόντων θεῶν,

ἀνόνητα κεκτῆμεσθα τὰγάθ', ὦ γύναι·

ἂ δ' ἂν διδῶς' ἐκόντες, ὠφελοῦμεθα. 380

ΧΟ. πολλάί γε πολλοῖς εἰσι συμφοραὶ βροτοῖς,

μορφαὶ δὲ διαφέρουσιν. ἐν δ' ἂν εὐτυχὲς

μόλις ποτ' ἐξεύροι τις ἀνθρώπων βίῃ.

ΚΡ. ὦ Φοῖβε, κακεῖ κἀνθάδ' οὐ δίκαιος εἶ 385

εἰς τὴν ἀποῦσαν, ἧς πάρεισιν οἱ λόγοι.

σύ γ' οὔτ' ἔσωσας τὸν σὸν ὃν σῶσαί σ' ἐχρῆν,

οὔθ' ἴστορούσῃ μητρὶ μάντις ὦν ἐρεῖς,

ὥς εἰ μὲν οὐκέτ' ἔστιν, ὀγκωθῇ τάφῳ,

εἰ δ' ἔστιν, ἔλθῃ μητρὸς εἰς ὅψιν ποτέ.

ἄλλως ἔδη * χοῖν τὰδ', εἰ πρὸς τοῦ θεοῦ 390
κωλυόμεσθα μὴ μαθεῖν ἃ βούλομαι.

ἀλλ' ὦ ξέν', εἰσορῶ γὰρ εὐγενῇ πόσιν
Ξοῦθον πέλας δὴ τόνδε τὰς Τροφωνίου
λιπόντα θαλάμας, τοὺς λελεγμένους λόγους 395
σίγα πρὸς ἄνδρα, μὴ τιν' αἰσχύνῃ λάβω
διακονοῦσα κρυπτά, καποβῇ λόγος
οὐχ ἥπερ ἡμεῖς αὐτὸν ἐξειλίσσομεν.
τὰ γὰρ γυναικῶν δυσχερῇ πρὸς ἄρσενας,
κὰν ταῖς κακαῖσιν ἀγαθαὶ μεμιγμένα
μισούμεθ'· οὐτῶ δυστυχεῖς πεφύκαμεν. 400

ΞΟΤ. πρῶτον μὲν ὁ θεὸς τῶν ἐμῶν προσφθεγμάτων
λαβὼν ἀπαρχὰς χαιρέτω, σύ τ', ὦ γύναι.
μῶν χρόνιος ἐλθὼν σ' ἐξέπληξ' ὀρρωδία;

ΚΡ. οὐδέν γ'· ἀφίκου δ' εἰς μέριμναν. ἀλλὰ μοι 405
λέξον, τί θέσπισμ' ἐκ Τροφωνίου φέρεις,
παίδων ὅπως νῶν σπέρμα συγκραθήσεται;

ΞΟΤ. οὐκ ἤξιωσε τοῦ θεοῦ προλαμβάνειν
μαντεύμαθ'· ἐν δ' οὖν εἶπεν, οὐκ ἄπαιδά με
πρὸς οἶκον ἥξειν οὐδὲ σ' ἐκ χρηστηρίων.

ΚΡ. ὦ πότνια Φοίβου μήτερ, εἰ γὰρ αἰσίως 410
ἔλθοιμεν, ἅ τε νῶν συμβόλαια πρόσθεν ἦν
ἐς παῖδα τὸν σόν, μεταπέσοι βελτίονα.

ΞΟΤ. ἔσται τὰδ'· ἀλλὰ τίς προφητεύει θεοῦ;

ΙΩΝ. ἡμεῖς τὰ γ' ἔξω, τῶν ἔσω δ' ἄλλοις μέλει, 415
οἳ πλησίον θάσσουσι τρίποδος, ὦ ξένε,
Δελφῶν ἀριστῆς, οὓς ἐκλήρωσεν πάλος.

ΞΟΤ. καλῶς· ἔχω δὲ πάνθ' ὅσων ἐχορήξομεν.
στείχοιμ' ἂν εἴσω· καὶ γάρ, ὥς ἐγὼ κλύω,
χρηστήριον πέπτωκε τοῖς ἐπήλυσι 420
κοινὸν πρὸ ναοῦ· βούλομαι δ' ἐν ἡμέρᾳ
τῇδ', αἰσία γάρ, θεοῦ λαβεῖν μαντεύματα.

σὺ δ' ἀμφὶ βωμούς, ὦ γύναι, δαφνηφόρους
λαβοῦσα κλῶνας, εὐτέκνους εὖχου θεοῖς
χρησμούς μ' ἐνεργεῖν ἐξ Ἀπόλλωνος δόμων.

ΚΡ. ἔσται τὰδ' ἔσται. Λοξίας δ' ἔαν θέλῃ 425

νῦν ἀλλὰ τὰς πρὶν ἀναλαβεῖν ἁμαρτίας,
ἅπας μὲν οὐ γένοιτ' ἂν εἰς ἡμᾶς φίλος,
ὅσον δὲ χρήξει, θεὸς γάρ ἐστι, δέξομαι.

ΙΩΝ. τί ποτε λόγοισιν ἡ ξένη πρὸς τὸν θεὸν
κρυπτοῖσιν ἅει λοιδοροῦσ' αἰνίσσεται, 430

ἥτοι φιλοῦσά γ' ἥς ὕπερ μαντεύεται,
ἢ καὶ τι σιγῶσ' ὧν σιωπᾶσθαι χρεῶν;
ἀτὰρ θυγατρὸς τῆς Ἐρεχθίδος τί μοι
μέλει, προσῆκόν γ' οὐδέν; ἀλλὰ χρυσέαις

πρόχοισιν ἐλθὼν εἰς ἀπορραντήρια 435

δρόσον καθήσω. νουθετητέος δέ μοι
Φοῖβος, τί πάσχει· παρθένους βία γαμῶν
προδίδωσι, παῖδας ἐκτεκνούμενος λάθρα
θυήσκοντας ἀμελεῖ. μὴ σύ γ'· ἀλλ' ἐπεὶ κρατεῖς,
ἀρετὰς δίδωκε. καὶ γὰρ ὅστις ἂν βροτῶν 440

κακὸς πεφύκη, ζημιοῦσιν οἱ θεοί.

πῶς οὖν δίκαιον τοὺς νόμους ὑμᾶς βροτοῖς
γράψαντας αὐτοὺς ἀνομίαν ὀφλισκάνειν;

εἰ δ', οὐ γὰρ ἔσται, τῷ λόγῳ δὲ χρήσομαι,
δίκας βιαιῶν δώσεται ἀνθρώποις γάμων, 445

σὺ καὶ Ποσειδῶν Ζεὺς θ' ὃς οὐρανοῦ κρατεῖ,
ναοὺς τίνοντες ἀδικίας κενώσετε.

τὰς ἡδονὰς γὰρ τῆς προμηθίας πάρος
σπεύδοντες ἀδικεῖτ'. οὐκέτ' ἀνθρώπους κακοὺς
λέγειν δίκαιον, εἰ τὰ τῶν θεῶν κακὰ 450

μιμούμεθ', ἀλλὰ τοὺς διδάσκοντας τάδε.

ΧΟ. σὲ τὰν ὠδίνων λοχιᾶν 5τρ.

ἀνελείθιαν, ἐμὴν
 Ἀθάναν ἱκετεύω,
 Προμηθεῖ Τιτᾶνι λοχευ- 455
 θεῖσαν κατ' ἀκροτάτας
 κορυφᾶς Διός, ὧ πότνα Νίκα,
 μόλε Πύθιον οἶκον,
 Οὐλύμπου χροσέων θαλάμων
 πταμένα πρὸς ἀγνιάς, 460
 Φοιβήιος ἔνθα γᾶς
 μεσσόμφαλος ἐστία
 παρὰ χορευομένῳ τρίποδι
 μαντεύματα κραίνει,
 σὺ καὶ παῖς ἅ Λατογενής, 465
 δύο θεαὶ δύο παρθένοι,
 κασίγνηται σεμναὶ τοῦ Φοίβου.
 ἱκετεύσατε δ', ὧ κόραι,
 τὸ παλαιὸν Ἑρεχθεῶς
 γένος εὐτεκνίας χρονίου καθαροῖς 470
 μαντεύμασι κῦρσαι.
 ὑπερβαλλούσας γὰρ ἔχει ἄντ.
 θνατοῖς εὐδαιμονίας
 ἀκίνητον ἀφορμάν,
 τέκνων οἷς ἂν καρποτρόφοι 475
 λάμπωσιν ἐν θαλάμοις
 πατρίοισι νεάνιδες ἦβαι,
 διαδέκτορα πλουῦτον
 ὥς ἔξοντες ἐκ πατέρων
 ἑτέροις ἐπὶ τέκνοις. 480
 ἀλκά τε γὰρ ἐν κακοῖς
 σὺν τ' εὐτυχίαις φίλον,
 δορί τε γὰρ πατρίᾳ φέρει
 σωτήριον ἀλκάν.

ἔμοι μὲν πλούτου τε πάρος 485
 βασιλικῶν θαλάμων τ' εἶεν
 τροφαὶ κήδειοι κεδνῶν τέκνων.
 τὸν ἄπαιδα δ' ἀποστρυῶ
 βίον ᾧ τε δοκεῖ ψέγω·
 μετὰ δὲ κτεάνων μετρίων βιοτᾶς 490
 εὖπαιδος ἐχοίμαν.
 ᾧ Πανὸς θακῆματα καὶ
 παραυλίζουσα πέτρα
 μυχῶδεσι Μακρᾶϊς,
 ἵνα χοροὺς στείβουσι ποδοῦν 495
 Ἀργαύλου κόραι τρίγονοι
 στάδια χλοερὰ πρὸ Παλλάδος
 ναῶν, συρίγγων
 ὑπ' αἰόλας ἰαχᾶς
 ὕμνων, ὅταν αὐλίοις 500
 συρίζῃς, ᾧ Πάν,
 τοῖσι σοῖς ἐν ἄντροις,
 ἵνα τεκοῦσά τις
 παρθένος, ᾧ μελέα, βρέφος
 Φοῖβῳ, πτανοῖς ἐξώρισε θοῖναν
 θηρσί τε φοινίαν δαῖτα, πικρῶν γάμων 505
 ὕβριν. οὔτ' ἐπὶ κερκίσιν οὔτε λόγοις
 φάτιν αἶον εὐτυχίας μετέχειν
 θεόθεν τέκνα θνατοῖς.

ΙΩΝ. πρόσπολοι γυναῖκες, αἱ τῶνδ' ἀμφὶ κρηπίδας
 δόμων 510

θυοδόκων φρούρημ' ἔχουσαι δεσπότην φυλάσσετε,
 ἐκλέλοιπ' ἤδη τὸν ἱερὸν τρίποδα καὶ χρηστήριον
 Ξοῦθος, ἣ μῖμνει κατ' οἶκον ἱστορῶν ἀπαιδίαν;

ΧΟ. ἐν δόμοις ἔστ', ᾧ ξέν'· οὐπω δῶμ' ὑπερβαίνει
 τόδε.

ὥς δ' ἐπ' ἐξόδοισιν ὄντος τῶνδ' ἀκούομεν πυλῶν
δοῦπον, ἐξιόντα τ' ἤδη δεσπότην ὄρᾱν πάρα. 516

ΞΟΥ. ὦ τέκνον, χαῖρ'· ἡ γὰρ ἀρχὴ τοῦ λόγου πρό-
πουσά μοι.

ΙΩΝ. χαίρομεν· σὺ δ' εὖ φρόνει γε, καὶ δὴ δ' ὄντ' εὖ
πράξομεν.

ΞΟΥ. δὸς χερὸς φίλημά μοι σῆς σώματός τ' ἀμφιπτυχάς.

ΙΩΝ. εὖ φρονεῖς μέν; ἢ σ' ἔμηνε θεοῦ τις, ὦ ξένε,
βλάβη; 520

ΞΟΥ. οὐ φρονῶ, τὰ φίλταθ' εὐρὼν εἰ φιλεῖν ἐφίεμαι;

ΙΩΝ. παῦε· μὴ ψαύσας τὰ τοῦ θεοῦ στέμματα ῥήξης
χερὶ.

ΞΟΥ. ἄψομαι· κοῦ ῥυσιάζω, τὰμὰ δ' εὐρίσκω φίλα.

ΙΩΝ. οὐκ ἀπαλλάξει, πρὶν εἴσω τόξα πνευμόνων λαβεῖν;

ΞΟΥ. ὥς τί δὴ φεύγεις με σαντοῦ γνωρίσας τὰ φίλ-
τατα; 525

ΙΩΝ. οὐ φιλῶ φρενῶν ἀμοίρους καὶ μεμνηότας ξένους.

ΞΟΥ. κτεῖνε καὶ πίμπρη· πατρὸς γάρ, ἣν κτάνης, ἔσει
φονεύς.

ΙΩΝ. ποῦ δέ μοι πατήρ σύ; ταῦτ' οὖν οὐ γέλως [κλύειν
ἐμοί];

ΞΟΥ. οὐ· τρέχων ὁ μῦθος ἄν σοι τὰμὰ σημῆνυεν ἄν.

ΙΩΝ. καὶ τί μοι λέξεις; ΞΟΥ. πατήρ σός εἰμι καὶ σὺ
παῖς ἐμός. 530

ΙΩΝ. τίς λέγει τάδ'; ΞΟΥ. ὅς σ' ἐθρεψεν ὄντα Λοξίας
ἐμόν.

ΙΩΝ. μαρτυρεῖς σαντοῦ. ΞΟΥ. τὰ τοῦ θεοῦ γ' ἐκμαθὼν
χρηστήρια.

ΙΩΝ. ἐσφάλης αἰνιγμ' ἀκούσας. ΞΟΥ. οὐκ ἄρ' ὄρθ'
ἀκούομεν.

ΙΩΝ. ὁ δὲ λόγος τίς ἐστὶ Φοίβου; ΞΟΥ. τὸν συναντή-
σαντά μοι

IΩN. τίνα συνάντησιν; ΞΟΥ. δόμων τῶνδ' ἐξιόντι τοῦ
θεοῦ 535

IΩN. συμφορᾶς τίνος κυρῆσαι; ΞΟΥ. παῖδ' ἐμὸν πεφν-
κέναι.

IΩN. σὸν γεγῶτ', ἢ δῶρον ἄλλων; ΞΟΥ. δῶρον, ὅντα
δ' ἐξ ἐμοῦ.

IΩN. πρῶτα δῆτ' ἐμοὶ ξυνάπτεις πόδα σόν; ΞΟΥ. οὐκ
ἄλλῳ, τέκνον.

IΩN. ἢ τύχη πόθεν ποθ' ἦκει; ΞΟΥ. δύο μίαν θαυμά-
ζομεν.

IΩN. ἐκ τίνος δέ σοι πέφνκα μητρός; ΞΟΥ. οὐκ ἔχω
φράσαι. 540

IΩN. οὐδὲ Φοῖβος εἶπε; ΞΟΥ. τερφθεὶς τοῦτο, κεῖν'
οὐκ ἠρόμην.

IΩN. γῆς ἄρ' ἐκπέφνκα μητρός. ΞΟΥ. οὐ πέδον τίκτει
τέκνα.

IΩN. πῶς ἂν οὖν εἶην σός; ΞΟΥ. οὐκ οἶδ', ἀναφέρω δ'
εἰς τὸν θεόν.

IΩN. φέρε λόγων ἀψώμεθ' ἄλλων. ΞΟΥ. ταῦτ' ἄμει-
νον, ὦ τέκνον.

IΩN. ἦλθες εἰς νόθον τι λέκτρον; ΞΟΥ. μωρία γε τοῦ
νέου. 545

IΩN. πρὶν κόρην λαβεῖν Ἐρεχθέως; ΞΟΥ. οὐ γὰρ ὕστε-
ρόν γέ πω.

IΩN. ἄρα δῆτ' ἐκεῖ μ' ἔφυσας; ΞΟΥ. τῷ χρόνῳ γε συν-
τρέχει.

IΩN. καῖτα πῶς ἀφικόμεσθα δεῦρο; ΞΟΥ. ταῦτ' ἀμῆ-
χανῶ.

IΩN. διὰ μακρᾶς ἐλθὼν κελεύθου; ΞΟΥ. τοῦτο καὶ μ'
ἀπαιολᾷ.

IΩN. Πυθίαν δ' ἦλθες πέτραν πρὶν; ΞΟΥ. εἰς φανάς
γε Βακχίου. 550

ΙΩΝ. προξένων δ' ἐν του κατέσχεσ; ΞΟΥ. ὅς με Δελ-
φίσιν κόραις

ΙΩΝ. ἐθιάσενσ', ἢ πῶς τὰδ' αὐδᾶς; ΞΟΥ. Μαινάσιν γε
Βακχίου

ΙΩΝ. ἔμφορον' ἢ κάτοινον ὄντα; ΞΟΥ. Βακχίου πρὸς
ἡδοναῖς

ΙΩΝ. τοῦτ' ἐκεῖν' ἵν' ἐσπάρημεν. ΞΟΥ. ὁ πότμος ἐξεῦ-
ρεν, τέκνον.

ΙΩΝ. πῶς δ' ἀφικόμεσθα ναούς; ΞΟΥ. ἔκβολον κόρης
ἴσως. 555

ΙΩΝ. ἐκπεφεύγαμεν τὸ δοῦλον. ΞΟΥ. πατέρα νυν δέχου,
τέκνον.

ΙΩΝ. τῷ θεῷ γοῦν οὐκ ἀπιστεῖν εἰκός. ΞΟΥ. εὖ φρο-
νεῖς ἄρα.

ΙΩΝ. καὶ τί βουλόμεσθά γ' ἄλλο ΞΟΥ. [νῦν ὀρᾷς ἃ χρη-
σ' ὀρᾷν.]

ΙΩΝ. ἢ Διὸς παιδὸς γενέσθαι παῖς; ΞΟΥ. ὃ σοί γε γί-
γνεται.

ΙΩΝ. ἢ θίγω δῆθ' οἷ μ' ἔφυσαν; ΞΟΥ. πιθόμενός γε
τῷ θεῷ. 560

ΙΩΝ. χαῖρέ μοι, πάτερ, ΞΟΥ. φίλον γε φθέγμ' ἐδεξά-
μην τόδε.

ΙΩΝ. ἡμέρα θ' ἢ νῦν παροῦσα. ΞΟΥ. μακάριόν γ'
ἔθηκέ με.

ΙΩΝ. ὦ φίλη μῆτερ, πότ' ἄρα καὶ σὸν ὄψομαι δέμας;
νῦν ποθῶ σε μᾶλλον ἢ πρὶν ἥτις εἰ ποτ' εἰσιδεῖν.
ἀλλ' ἴσως τέθνηκας, ἡμεῖς δ' οὐδὲν ἂν δυναί-
μεθα. 565

ΧΟ. κοινὰ μὲν ἡμῖν δωμάτων εὐπραξίαι·
ὅμως δὲ καὶ δέσποιναν εἰς τέκν' εὐτυχεῖν
ἐβουλόμην ἂν τοὺς τ' Ἑρεχθίδας δόμους.

ΞΟΥ. ὦ τέκνον, εἰς μὲν σὴν ἀνεύρεσιν θεὸς

ὀρθῶς ἔκρανε, καὶ συνῆψ' ἐμοί τε σέ,
 σύ τ' αὖ τὰ φίλταθ' εὗρες οὐκ εἰδὼς πάρος.
 ὃ δ' ἦξας ὀρθῶς, τοῦτο κ' αἶμ' ἔχει πόθος,
 ὅπως σύ τ', ὦ παῖ, μητέρ' εὐρήσεις σέθεν,
 ἐγὼ θ' ὁποίας μοι γυναικὸς ἐξέφυς.
 χρόνῳ δὲ δόντες ταῦτ' ἴσως εὗρομεν ἄν.
 ἀλλ' ἐκλιπὼν θεοῦ δάπεδ' ἀλητείαν τε σὴν
 εἰς τὰς Ἀθήνας στεῖχε κοινόφρων πατρί,
 οὗ σ' ὀλβιον μὲν σκῆπτρον ἀναμένει πατρός,
 πολὺς δὲ πλοῦτος· οὐδὲ θάτερον νοσῶν
 δυοῖν κεκλήσει δυσγενὴς πένης θ' ἅμα,
 ἀλλ' εὐγενὴς τε καὶ πολυκτήμων βίου.
 σιγᾶς; τί πρὸς γῆν ὄμμα σὸν βαλὼν ἔχεις,
 εἰς φροντίδας δ' ἀπῆλθες, ἐκ δὲ χαρμονῆς
 πάλιν μεταστὰς δεῖμα προσβάλλεις πατρί;

ΙΩΝ. οὐ ταῦτόν εἶδος φαίνεται τῶν πραγμάτων
 πρόσωθεν ὄντων ἐγγύθεν θ' ὀρωμένων.
 ἐγὼ δὲ τὴν μὲν συμφορὰν ἀσπάζομαι,
 πατέρα σ' ἀνευρών· ὧν δὲ γιγνώσκω πέρι
 ἄκουσον. εἶναι φασὶ τὰς αὐτόχθονας
 κλεινὰς Ἀθήνας οὐκ ἐπείσακτον γένος,
 ἵν' εἰσπεσοῦμαι δύο νόσω κεκτημένος,
 πατρός τ' ἐπακτοῦ καὐτὸς ὧν νοθαγενής.
 καὶ τοῦτ' ἔχων τοῦναιδος, ἀσθενὴς μὲν ὦν,
 * * * μηδὲν κοῦδένων κεκλήσομαι·
 ἦν δ' εἰς τὸ πρῶτον πόλεος ὀρμηθεὶς ζυγὸν
 ζητῶ τις εἶναι, τῶν μὲν ἀδυνάτων ὑπο
 μισησόμεσθα· λυπρὰ γὰρ τὰ κρείσσονα·
 ὅσοι δὲ χρηστοὶ δυνάμενοί τ' εἶναι σοφοὶ
 σιγᾷσι κοῦ σπεύδουσιν εἰς τὰ πράγματα,
 γέλῳτ' ἐν αὐτοῖς μωρίαν τε λήψομαι
 οὐχ ἡσυχάζων ἐν πόλει φόβου πλέα.

τῶν δ' αὖ λογίων τε χρωμένων τε τῇ πόλει
 εἰς ἀξίωμα βὰς πλέον φρουρήσομαι
 ψήφοισιν. οὔτω γὰρ τάδ', ὦ πάτερ, φιλεῖ·
 οἱ τὰς πόλεις ἔχοντες ἀξιώματος 605
 τοῖς ἀνθαμίλλοις εἰσὶ πολεμιώτατοι.
 ἔλθων δ' ἐς οἶκον ἀλλότριον ἔπηλυσ ὦν
 γυναικὰ θ' ὥς ἄτεκνον, ἣ κοινουμένη
 τὰς συμφοράς σοι πρόσθεν, ἀπολαχοῦσα νῦν
 αὐτὴ καθ' αὐτὴν τὴν τύχην οἶσει πικρῶς, 610
 πῶς δ' οὐχ ὑπ' αὐτῆς εἰκότως μισήσομαι,
 ὅταν παραστῶ σοὶ μὲν ἐγγύθεν ποδός,
 ἣ δ' οὔσ' ἄτεκνος τὰ σὰ φίλ' εἰσορᾷ πικρῶς;
 ἄλλως τε τὴν σὴν ἄλοχον οἴκτειρω, πάτερ,
 ἄπαιδα γηράσκουσιν· οὐ γὰρ ἀξία
 πατέρων ἀπ' ἐσθλῶν οὔσ' ἀπαιδίᾳ νοσεῖν. 620
 τυραννίδος δὲ τῆς μάτην αἰνουμένης
 τὸ μὲν πρόσωπον ἡδύ, τὰν δόμοισι δὲ
 λυπηρά· τίς γὰρ μακάριος, τίς εὐτυχής,
 ὅστις δεδοικῶς καὶ παραβλέπων βίου
 αἰῶνα τείνει; δημότης ἂν εὐτυχής 625
 ξῆν ἂν θέλοιμι μᾶλλον ἢ τύραννος ὦν,
 ὧ τοὺς πονηροὺς ἡδονὴ φίλους ἔχειν,
 ἐσθλοὺς δὲ μισεῖ κατθανεῖν φοβούμενος.
 εἴποισ ἂν ὥς ὁ χρυσὸς ἐκνικᾷ τάδε,
 πλουτεῖν τε τερπνόν· οὐ φιλῶ ψόγους κλύειν 630
 ἐν χειρσὶ σῶζων ὕλβον οὐδ' ἔχειν πόνους·
 εἴη δ' ἔμοιγε μέτρια μὴ λυπουμένῳ.

κατ' ἣ προδοὺς σύ μ' ἐς δάμαρτα σὴν βλέπης
 ἣ τὰμὰ τιμῶν δῶμα συγγέας ἔχης; 615
 ὅσας σφαγὰς δὴ φαρμάκων θανάσιμων
 γυναικες εὖρον ἀνδράσιν διαφθοράς.

ἃ δ' ἐνθάδ' εἶχον ἀγάθ' ἄκουσόν μου, πάτερ·
 τὴν φιλιτάτην μὲν πρῶτον ἀνθρώπων σχολὴν
 ὄχλον τε μέτριον, οὐδέ μ' ἐξέπληξ' ὁδοῦ 635
 πονηρὸς οὐδεὶς· κείνο δ' οὐκ ἀνασχετόν,
 εἶκειν ὁδοῦ χαλῶντα τοῖς κακίῳσιν.
 θεῶν δ' ἐν εὐχαῖς ἢ λόγοισιν ἢ βροτῶν,
 ὑπηρετῶν χαίρουσιν, οὐ γοωμένοις.
 καὶ τοὺς μὲν ἐξέπεμπον, οἱ δ' ἦκον ξένοι, 640
 ὥσθ' ἡδὺς αἰὲν καινὸς ὢν καινοῖσιν ἦν.
 ὃ δ' εὐκτὸν ἀνθρώποισι, κἂν ἄκουσιν ἦ,
 δίκαιον εἶναι μ' ὁ νόμος ἢ φύσις θ' ἅμα
 παρείχε τῷ θεῷ. ταῦτα συννόουμένος
 κρείσσω νομίζω τάνθαδ' ἢ τάκει, πάτερ. 645
 ἔα δ' ἔμ' αὐτοῦ ζῆν· ἴση γὰρ ἡ χάρις,
 μεγάλοισι χαίρειν σμικρὰ θ' ἡδέως ἔχειν.

XO. καλῶς ἔλεξας, εἶπερ οὖς ἐγὼ φιλῶ
 ἐν τοῖσι σοῖσιν εὐτυχήσουσιν λόγοις.

ΞΟΥ. παῦσαι λόγων τῶνδ', εὐτυχεῖν δ' ἐπίστασο· 650
 θέλω γὰρ οὐπὲρ σ' εὖρον ἄρξασθαι, τέκνον,
 κοινῆς τραπέζης δαῖτα πρὸς κοινὴν πεσών,
 θῦσαι θ' ἅ σου πρὶν γενέθλι' οὐκ ἐθύσαμεν.
 καὶ νῦν μὲν ὥς δὴ ξένον ἄγων σ' ἐφέστιον 655
 δείπνοισι τέρω· τῆς δ' Ἀθηναίων χθονὸς
 ἄξω θεατὴν δῆθεν, ὥς οὐκ ὄντ' ἐμόν.
 καὶ γὰρ γυναικα τὴν ἐμὴν οὐ βούλομαι
 λυπεῖν ἄτεκνον οὔσαν αὐτὸς εὐτυχῶν.
 χρόνῳ δὲ καιρὸν λαμβάνων προσάξομαι
 δάμαρτ' ἔαν σε σκῆπτρα τᾶμ' ἔχειν χθονός. 660
 Ἴωνα δ' ὀνομάζω σε, τῇ τύχῃ πρέπον,
 ὀθούνεκ' ἀδύτων ἐξιόντι μοι θεοῦ
 ἶχνος συνῆψας πρῶτος. ἀλλὰ τῶν φίλων
 πλήρωμ' ἀθροίσας βουθύτῳ σὺν ἡδονῇ

πρόσειπε, μέλλων Δελφίδ' ἐκλιπεῖν πόλιν. 665
 ὑμῖν δὲ σιγαῖν, δμωίδες, λέγω τάδε,
 ἢ θάνατον εἰπούσαισι πρὸς δάμαρτ' ἐμήν.

ΙΩΝ. στείχοιμ' ἄν· ἐν δὲ τῆς τύχης ἄπεστί μοι·
 εἰ μὴ γὰρ ἦτις μ' ἔτεκεν εὐρήσω, πάτερ,
 ἀβίωτον ἤμῖν· εἰ δ' ἐπεύξασθαι χρεών, 670
 ἐκ τῶν Ἀθηναίων μ' ἢ τεκοῦσ' εἴη γυνή,
 ὥς μοι γένηται μητρόθεν παρρησία.
 καθαρὰν γὰρ ἦν τις εἰς πόλιν πέσῃ ξένος,
 καὶν τοῖς νόμοισιν ἀστὸς ἦ, τό γε στόμα
 δοῦλον πέπαται κοῦν ἔχει παρρησίαν. 675

ΧΟ. ὄρω δάκρυα καὶ πενθίμους στρ.
 ἀλάστων στεναγμάτων εἰσβολάς,
 ὅταν ἐμὰ τύραννος εὐπαιδίαν
 πόσιν ἔχοντ' εἰδῇ,
 αὐτὴ δ' ἅπαις ἦ καὶ λελειμμένη τέκνων. 680
 τίν', ὦ παῖ πρόμαντι Λατοῦς ἔχρη-
 σας ὑμνωδίαν;
 πόθεν ὁ παῖς ὅδ' ἀμφὶ ναοὺς σέθεν
 τρόφιμος ἐξέβα, γυναικῶν τίνος;
 οὐ γὰρ με σαίνει 685
 θέσφατα, μή τιν' ἔχῃ δόλον.
 δειμαίνω συμφορὰν
 ἐφ' ὃ ποτε βιάσεται.
 ἄτοπος ἄτοπα γὰρ παραδίδωσί μοι 690
 τάδε θεοῦ φήμα.
 ἔχει δόλον τύχαν θ' ὁ παῖς
 ἄλλων τραφεὶς ἐξ αἱμάτων.
 τίς οὐ τάδε ξυνοίσεται;
 φίλοι, πότερ' ἐμᾶ δεσποίνα 695
 τάδε τορῶς ἐς οὓς γεγωνήσομεν,

πόσιν, ἐν ᾧ τὰ πάντ' ἔχουσ' ἐλπίδων
μέτοχος ἦν τλάμων;
νῦν δ' ἣ μὲν ἔρρει συμφοραῖς, ὁ δ' εὐτυχεῖ,
πολιὸν εἰσπεσοῦσα γῆρας, πόσις δ' 700
ἀτίετος φίλων.

μέλεος, ὃς θυραῖος ἐλθὼν δόμους
μέγαν ἐς ὄλβον οὐκ ἔσωσεν τύχας.
ὅλοιτ' ὅλοιτ' ᾧ
πότνιαν ἑξαπαφῶν ἐμάν· 705

καὶ θεοῖσιν μὴ τύχοι
καλλίφλογα πέλανον ἐπὶ
πυρὶ καθαγνίσας· τὸ δ' ἐμὸν εἴσεται
* * * * * 710

* * τυραννίδος φίλα.
ἤδη πέλας δειπνῶν κυρεῖ
παῖς καὶ πατὴρ νέος νέων.
ἰὼ δειράδες Παρνασοῦ πέτρας
ἔχουσαι σκόπελον οὐράνιόν θ' ἔδραν, 715
ἵνα Βάκχιος ἀμφιπύρους ἀνέχων πεύκας
λαιψηρὰ πηδᾶ νυκτιπόλοις ἅμα σὺν Βάκχαις.
μή τί ποτ' εἰς ἐμὴν πόλιν ἵκοιθ' ὁ παῖς,
νέαν δ' ἀμέραν ἀπολιπὼν θάνοι. 720
στενομένη γὰρ ἂν πόλις ἔχοι σκῆψιν
ξενικὸν εἰσβολάν.

ἄλις δ' ὁ πάρος ἀρχαγὸς ὢν
Ἐρεχθεὺς ἄναξ.

KP. ᾧ πρέσβυ παιδαγῶγ' Ἐρεχθέως πατρὸς 725
τοῦμοῦ ποτ' ὄντος, ἥνίκ' ἦν ἔτ' ἐν φάει,
ἔπαιρε σαυτὸν πρὸς θεοῦ χρηστήρια,
ὥς μοι συνησθῆς, εἴ τι Λοξίας ἄναξ
θέσπισμα παίδων εἰς γονὰς ἐφθέγγετο·
σὺν τοῖς φίλοις γὰρ ἡδὺ μὲν πρᾶσσειν καλῶς· 730

ὃ μὴ γένοιτο δ', εἴ τι τυγχάνοι κακόν,
εἰς ὄμματ' εὖνου φωτὸς ἐμβλέψαι γλυκύ.
ἐγὼ δέ σ', ὥσπερ καὶ σὺ πατέρ' ἐμόν ποτε,
δέσποιν' ὅμως οὐσ' ἀντικηδεύω πατρός.

ΠΑΙ. ὦ θύγατερ, ἄξι' ἀξίων γεννητόρων 735

ἦδη φυλάσσεις κοῦ κατασχύνασ' ἔχεις
τοὺς σοὺς παλαιοὺς ἐκγόνους αὐτόχθονας.
ἔλχ' ἔλκε πρὸς μέλαθρα καὶ κόμιζέ με.
αἰπεινά τοι μαντεῖα· τοῦ γήρως δέ μοι
συνεκπονοῦσα κῶλον ἰατρὸς γενοῦ. 740

ΚΡ. ἔπου νυν· ἔχνος δ' ἐκφύλασσ' ὅπου τίθης.

ΠΑΙ. ἰδού.

τὸ τοῦ ποδὸς μὲν βραδύ, τὸ τοῦ δὲ νοῦ ταχύ.

ΚΡ. βάκτρῳ δ' ἐρείδου περιφερῇ στίβον χθονός.

ΠΑΙ. καὶ τοῦτο τυφλόν, ὅταν ἐγὼ βλέπω βραχύ.

ΚΡ. ὀρθῶς ἔλεξας· ἀλλὰ μὴ πάρες κόπῳ. 745

ΠΑΙ. οὐκουν ἐκὼν γε· τοῦ δ' ἀπόντος οὐ κρατῶ.

ΚΡ. γυναιῖκες, ἰστών τῶν ἐμῶν καὶ κερκίδος
δούλευμα πιστόν, τίνα τύχην λαβὼν πόσις
βέβηκε παίδων ὧνπερ οὖνεχ' ἤκομεν;
σημήνατ'· εἰ γὰρ ἀγαθὰ μοι μηνύσετε, 750
οὐκ εἰς ἄπιστον δεσπότης βαλεῖς χαράν.

ΧΟ. ἰὼ δαῖμον.

ΚΡ. τὸ φροῖμιον μὲν τῶν λόγων οὐκ εὐτυχές.

ΧΟ. ἰὼ τλάμον.

ΠΑΙ. ἀλλ' ἦ τι θεσφάτοισι δεσποτῶν νοσῶ; 755

ΧΟ. εἶεν· τί δρωμέν, θάνατος ὧν κεῖται πέρι;

ΚΡ. τίς ἦδε μοῦσα, χῶ φόβος τίνων πέρι;

ΧΟ. εἰπῶμεν ἢ σιγῶμεν; ἢ τί δράσομεν;

ΚΡ. εἴφ'· ὥς ἔχεις γε συμφοράν τιν' εἰς ἐμέ.

ΧΟ. εἰρήσεται τοι, κεί θανεῖν μέλλω διπλῇ. 760

οὐκ ἔστι σοι, δέσποιν', ἐπ' ἀγκάλαις λαβεῖν
τέκν' οὐδὲ μαστῶ σῶ προσαρμόσαι ποτέ.

ΚΡ. ὦμοι, θάνοιμι.

ΠΑΙ. θυγάτερ. ΚΡ. ὦ τάλαιν' ἐγὼ συμφορᾷς.
ἔλαβον, ἔπαθον ἄχος ἄβιον, ὦ φίλαι.

ΠΑΙ. διοιχόμεσθα, τέκνον.

765

ΚΡ. αἰαῦ αἰαῦ·

διανταῖος ἔτυπεν [ἔτυπεν] ὁδύνα με πνευ-
μόνων τῶνδ' ἔσω.

ΠΑΙ. μήπω στενάξης, ΚΡ. ἀλλὰ πάρεισι γόοι.

ΠΑΙ. πρὶν ἂν μάθωμεν, ΚΡ. ἀγγελίαν τίνα μοι;

770

ΠΑΙ. εἰ ταῦτά πράσσων δεσπότης τῆς συμφορᾷς
κοινωνός ἐστιν, ἢ μόνη σὺ δυστυχεῖς.

ΧΟ. κείνῳ μὲν, ὦ γεραίέ, παῖδα Λοξίας
ἔδωκεν, ἰδίᾳ δ' εὐτυχεῖ ταύτης δίχα.

775

ΚΡ. τόδ' ἐπὶ τῷδε κακὸν ἄκρον ἔλακες ἔλακες
ἄχος ἐμοὶ στένειν.

ΠΑΙ. πότερα δὲ φῦναι δεῖ γυναικὸς ἐκ τινος
τὸν παῖδ' ὃν εἶπας, ἢ γεγῶτ' ἐθέσπισεν;

ΧΟ. ἤδη πεφυκότ' ἐκτελῇ νεανίαν
δίδωσιν αὐτῷ Λοξίας· παρῆν δ' ἐγώ.

780

ΚΡ. πῶς φῆς; ἄφατον ἄφατον * ἀναύδητον
λόγον ἐμοὶ θροεῖς.

ΠΑΙ. ἅμους γε. πῶς δ' ὁ χρησμὸς ἐκπεραίνεται
σαφέστερόν μοι φράξε, χῶστις ἔσθ' ὁ παῖς.

785

ΧΟ. ὅτῳ ξυναντήσειεν ἐκ θεοῦ συθείς
πρώτῳ πόσις σός, παῖδ' ἔδωκ' αὐτῷ θεός.

ΚΡ. ὁτοτοτοῖ· τὸ δ' ἐμὸν ἄτεκνον ἄτεκνον ἔλα-
βεν ἔλαβεν ἄρα βίοντον, ἐν ἐρημίᾳ δ'
ὀρφανοὺς δόμους οἰκήσω.

790

ΠΑΙ. τίς οὖν ἐχρήσθη; τῷ συνῆψ' ἱχνος ποδὸς
πόσις ταλαίνης; πῶς δὲ ποῦ νιν εἰσιδῶν;

- ΧΟ. οἷσθ', ὦ φίλη δέσποινα, τὸν νεανίαν
ὃς τόνδ' ἔσαιρε ναόν; οὗτος ἔσθ' ὁ παῖς. 795
- ΚΡ. ἂν' ὑγρὸν ἀμπταίην αἰθέρα πόρσω γαί-
ας Ἑλλαντίας, ἀστέρας ἐσπέρους,
οἶον οἶον ἄλγος ἔπαθον φίλαι.
- ΠΑΙ. ὄνομα δὲ ποῖον αὐτὸν ὀνομάζει πατήρ;
οἷσθ', ἢ σιωπῇ τοῦτ' ἀκύρωτον μένει; 800
- ΧΟ. Ἴων', ἐπέπερ πρώτος ἦντησεν πατρί.
- ΠΑΙ. μητρός δ' ὁποίας ἐστίν; ΧΟ. οὐκ ἔχω φράσαι.
φροῦδος δ', ἴν' εἰδῆς πάντα τὰπ' ἐμοῦ, γέρον,
παιδὸς προθύσων ξένια καὶ γενέθλια, 805
σκηναὺς ἐς ἱερὰς τῆσδε λαθραίως πόσις,
κοινῇ ξυνάψων δαῖτα παιδὶ τῷ νέῳ.
- ΠΑΙ. δέσποινα, προδεδόμεσθα, σὺν γάρ σοι νοσῶ,
τοῦ σοῦ πρὸς ἀνδρὸς καὶ μεμηχανημένως
ὑβριζόμεσθα δωμάτων τ' Ἐρεχθέως 810
ἐκβαλλόμεσθα· καὶ σὸν οὐ στυγῶν πόσιν
λέγω, σὲ μέντοι μᾶλλον ἢ κεῖνον φιλῶν·
ὅστις σε γήμας ξένος ἐπείσελθὼν πόλιν
καὶ δῶμα καὶ σὴν παραλαβὼν παγκληρίαν,
ἄλλης γυναικὸς παῖδας ἐκκαρπούμενος 815
λάθρα πέφηνεν· ὥς λάθρα δ', ἐγὼ φράσω·
ἐπεὶ σ' ἄτεκνον ἦσθετ', οὐκ ἔστεργέ σοι
ὅμοιος εἶναι τῆς τύχης τ' ἴσον φέρειν,
λαβὼν δὲ δοῦλα λέκτρα νυμφεύσας λάθρα
τὸν παῖδ' ἔφυσεν, ἐξενωμένον δὲ τῷ 820
Δελφῶν δίδωσιν ἐκτρέφειν· ὁ δ' ἐν θεοῦ
δόμοισιν ἄφρετος, ὥς λάθροι, παιδεύεται.
νεανίαν δ' ὥς ἦσθετ' ἐκτεθραμμένον,
ἐλθεῖν σ' ἐπείσε δεῦρ' ἀπαιδίας χάριν.
καῖθ' ὁ θεὸς οὐκ ἐψεύσαθ', ὅδε δ' ἐψεύσατο 825
πάλλαι τρέφων τὸν παῖδα, κᾶπλεκεν πλοκάς

τοιιάσδ' · ἀλοὺς μὲν ἀνέφερ' εἰς τὸν δαίμονα,
 λαθὼν δὲ καὶ τὸν χρόνον ἀμύνεσθαι θέλων
 τυραννίδ' αὐτῷ περιβαλεῖν ἔμελλε γῆς.
 καινὸν δὲ τοῦνομ' ἀνὰ χρόνον πεπλασμένον, 830
 Ἴων, ἰόντι δῆθεν ὅτι συνήντετο.

ΧΟ. οἴμοι, κακούργους ἄνδρας ὡς αἰὲς στυγῶ,
 οἳ συντιθέντες τ'ἀδικ' εἴτα μηχαναῖς
 κοσμοῦσι. φαῦλον χρηστὸν ἂν λαβεῖν φίλον
 θέλοιμι μᾶλλον ἢ κακὸν σοφώτερον. 835

ΠΑΙ. καὶ τῶνδ' ἀπάντων ἔσχατον πείσει κακόν·
 ἀμήτορ', ἀναρίθμητον, ἐκ δούλης τινὸς
 γυναικός, εἰς σὸν δῶμα δεσπότην ἄγει.
 ἀπλοῦν ἂν ἦν γὰρ τὸ κακόν, εἰ παρ' εὐγενοῦς
 μητρός, πιθῶν σε, σὴν λέγων ἀπαιδίαν, 840
 ἐσφάκισ' οἴκους· εἰ δὲ σοὶ τόδ' ἦν πικρόν,
 τῶν Αἰόλου νιν χρῆν ὀρεχθῆναι γάμων.
 ἐκ τῶνδε δεῖ σε δὴ γυναικεῖόν τι δρᾶν·
 ἢ γὰρ ξίφος λαβοῦσαν ἢ δόλῳ τινὶ
 ἢ φαρμάκοισι σὸν κατακτεῖναι πόσιν 845
 καὶ παῖδα, πρὶν σοὶ θάνατον ἐκ κείνων μολεῖν.
 [εἰ γὰρ γ' ὑφήσεις τοῦδ', ἀπαλλάξει βίου·
 δυοῖν γὰρ ἐχθροῖν εἰς ἓν ἐλθόντοιν στέγος,
 ἢ θάτερον δεῖ δυστυχεῖν ἢ θάτερον.]
 ἐγὼ μὲν οὖν σοὶ καὶ συνεκπονεῖν θέλω, 850
 καὶ συμφονεύειν παῖδ' ἐπεισελθὼν δόμοις
 οὗ δαῖθ' ὀπλίζει, καὶ τροφεῖα δεσπότηαις
 ἀποδοὺς θανεῖν τε ζῶν τε φέγγος εἰσορᾶν.
 ἐν γὰρ τι τοῖς δούλοισιν αἰσχύνην φέρει,
 τοῦνομα· τὰ δ' ἄλλα πάντα τῶν ἐλευθέρων 855
 οὐδεὶς κακίων δοῦλος, ὅστις ἐσθλὸς ἦ.

ΧΟ. καὶ γὰρ, φίλη δέσποινα, συμφορὰν θέλω
 κοινουμένη τήνδ' ἢ θανεῖν ἢ ζῆν καλῶς.

- ΚΡ. ὦ ψυχά, πῶς σιγάσω;
 πῶς δὲ σκοτίας ἀναφήνω 860
 εὐνάς, αἰδοῦς δ' ἀπολειφθῶ;
 τί γὰρ ἐμπόδιον κώλυμ' ἔτι μοι;
 πρὸς τίν' ἀγῶνας τιθέμεσθ' ἀρετῆς,
 οὗ πόσις ἡμῶν προδότης γέγονεν;
 στέρομαι δ' οἴκων, στέρομαι παίδων, 865
 φροῦδαι δ' ἐλπίδες, ἃς διαθέσθαι
 χρήξουσα καλῶς οὐκ ἐδυνήθην,
 σιγῶσα γάμους,
 σιγῶσα τόκους πολυκλαύτους.
 ἀλλ' οὐ τὸ Διὸς πολύαστρον ἔδος 870
 καὶ τὴν ἐπ' ἑμοῖς σκοπέλοισι θεὸν
 λίμνης τ' ἐνύδρου Τριτωνιάδος
 πότνιαν ἀκτὰν
 οὐκέτι κρύψω λέχος, ὥς στέρωνων
 ἀπονησαμένη ῥάων ἔσομαι. 875
 σταῖζουσιν κόραι δακρύοισιν ἑμαί,
 ψυχὰ δ' ἀλγεῖ κακοβουληθεῖς'
 ἔκ τ' ἀνθρώπων ἔκ τ' ἀθανάτων,
 οὓς ἀποδείξω
 λέκτρων προδότας ἀχαρίστους. 880
 ὦ τᾶς ἐπιταφθόγγου μέλπων
 κιθάρας ἐνοπάν, ἅτ' ἀγρὰύλοις
 κέρασιν ἐν ἀψύχοις ἀχεῖ
 μουσᾶν ὕμνους εὐαχήτους,
 σοὶ μομφάν, ὦ Λατοῦς παῖ, 885
 πρὸς τάνδ' αὐγὰν αὐδάσω.
- * * * * *
- στρ.
 ἦλθές μοι χρυσῶ χαίταν
 μαρμαίρων, εὖτ' εἰς κόλπους

κρόκεα πέταλα φάρεσιν ἔδρεπον
 ἀνθίζειν χρυσανταυγῇ· 890
 λευκοῖς δ' ἔμφυς καρποῖς χειρῶν
 εἰς ἄντρου κοίτας
 κραυγάν, ὧ μᾶτέρ, μ' αὐδῶσαν
 θεὸς ὁμευνέτας ἄγες ἀναιδείᾳ 895
 Κύπριδι χάριν πράσσων.
 τίκτω δ' ἅ δύστηνός σοι ἀντ.
 κοῦρον, τὸν φρίκα ματρὸς
 εἰς εὐνὰν βάλλω τὰν σάν,
 ἵνα με λέχεσι μέλεα μέλεος 900
 ἐξεύξω τὰν δύστανον.
 οἴμοι μοι· καὶ νῦν ἔρρει πτανοῖς
 ἀρπασθεῖς θοίνα
 παῖς μοι καὶ σὸς τλάμων * *
 * * * * *
 σὺ δὲ κιθάρα κλάξεις παιᾶνας μέλπων. 905
 ὦή, τὸν Λατοῦς αὐδῶ,
 ὃς ὁμφὰν κληροῖς
 πρὸς χρυσέους θάκους καὶ
 γαίας μεσσήρεις ἔδρας, 910
 εἰς οὓς αὐδὰν καρύξω·
 ἰὼ κακὸς εὐνάτωρ,
 ὃς τῷ μὲν ἐμῷ νυμφεύτῃ
 χάριν οὐ προλαβὼν
 παῖδ' εἰς οἴκους οἰκίζεις· 915
 ὁ δ' ἐμὸς γενέτας καὶ σός γ' ἀμαθὴς
 οἰωνοῖς ἔρρει συλαθεῖς, [οἰκεῖα]
 σπάργαντα ματέρος ἐξαλλάξας.
 μισεῖ σ' ἅ Δᾶλος καὶ δάφνας
 ἔρνεα φοίνικα παρ' ἀβροκόμαν, 920

ἐνθα λοχεύματα σέμν' ἐλοχεύσατο
 Λατῶ Δίοισί σε καρποῖς.

ΧΟ. οἴμοι, μέγας θησαυρὸς ὥς ἀνοίγνυται
 κακῶν, ἐφ' οἷσι πᾶς ἂν ἐκβάλῃ δάκρυ.

ΠΑΙ. ὦ θύγατερ, οὔτοι σὸν βλέπων ἐμπίπλαμαι 925
 πρόσωπον, ἔξω δ' ἐγενόμην γνώμης ἐμῆς.
 κακῶν γὰρ ἄρτι κῦμ' ὑπεξαντλῶν φρενί,
 πρῦμνηθεν αἶρει μ' ἄλλο σῶν λόγων ὑπο,
 οὓς ἐκβαλοῦσα τῶν παρεστώτων κακῶν
 μετῆλθες ἄλλων πημάτων καινὰς ὁδοὺς. 930

τί φῆς; τίνα λόγον Λοξίου κατηγορεῖς;
 ποῖον τεκεῖν φῆς παῖδα; ποῦ θεῖναι πόλεως
 θηροσὶν φίλον τύμβευμ'; ἀνελθέ μοι πάλιν.

ΚΡ. αἰσχύνομαι μὲν σ', ὦ γέρον, λέξω δ' ὅμως.

ΠΑΙ. ὥς συστενάξειν γ' οἶδα γενναίως φίλοις. 935

ΚΡ. ἄκουε τοίνυν· οἶσθα Κεκροπίας πέτρας
 [πρόσβορον ἄντρον, ἃς Μακρὰς κικλήσκομεν];

ΠΑΙ. οἶδ', ἐνθα Πανὸς ἄδυτα καὶ βωμοὶ πέλας.

ΚΡ. ἐνταῦθ' ἀγῶνα δεινὸν ἡγωνίσμεθα.

ΠΑΙ. τίν'; ὥς ἀπαντᾷ δάκρυά μοι τοῖς σοῖς λόγοις. 940

ΚΡ. Φοίβῳ ξυνῆψ' ἄκουσα δύστηνον γάμον.

ΠΑΙ. ὦ θύγατερ· ἄρ' ἦν ταῦθ' ἃ γ' ἡσθόμην ἐγώ;

ΚΡ. οὐκ οἶδ'· ἀληθῆ δ' εἰ λέρεις φαίμεν ἄν.

ΠΑΙ. νόσον κρυφαίαν ἥνικ' ἔστενες λάθρα;

ΚΡ. τοῦτ' ἦν· ἃ νῦν σοι φανερὰ σημαίνω κακά. 945

ΠΑΙ. καῖτ' ἐξέκλεψας πῶς Ἀπόλλωνος γάμους;

ΚΡ. ἔτεκον· ἀνάσχον ταῦτ' ἐμοῦ κλύων, γέρον.

ΠΑΙ. ποῦ τίς λοχεύει σ'; ἢ μόνη μοχθεῖς τάδε;

ΚΡ. μόνη κατ' ἄντρον οὔπερ ἐξεύχθην γάμοις.

ΠΑΙ. ὁ παῖς δὲ ποῦ ἔστιν, ἵνα σὺ μηκέτ' ἧς ἄπαις; 950

ΚΡ. τέθνηκεν, ὦ γεραιέ, θηροσὶν ἐκτεθεῖς.

ΠΑΙ. τέθνηκ'; Ἀπόλλων δ' ὁ κακὸς οὐδὲν ἥρκεσεν;

- ΚΡ. οὐκ ἦρκεσ' Ἄιδου δ' ἐν δόμοις παιδεύεται.
 ΠΑΙ. τίς γάρ νιν ἐξέθηκεν; οὐ γὰρ δὴ σύ γε.
 ΚΡ. ἡμεῖς, ἐν ὄρφνῃ σπαργανώσαντες πέπλοις. 955
 ΠΑΙ. οὐδὲ ξυνήδει σοὶ τις ἐκθεσιν τέκνου;
 ΚΡ. αἰ ξυμφοραὶ γε καὶ τὸ λανθάνειν μόνον.
 ΠΑΙ. καὶ πῶς ἐν ἄνθρωπαις παῖδα σὸν λιπεῖν ἔτλης;
 ΚΡ. πῶς δ'; οἴκτρά πολλαὶ στόματος ἐκβαλοῦσ' ἔπη.
 ΠΑΙ. φεῦ·
 τλήμων σὺ τόλμης, ὃ δὲ θεὸς μᾶλλον σέθεν. 960
 ΚΡ. εἰ παῖδά γ' εἶδες χεῖρας ἐκτείνοντά μοι.
 ΠΑΙ. μαστὸν διώκοντ' ἢ πρὸς ἀγκάλαις πεσεῖν;
 ΚΡ. ἐνταῦθ', ἴν' οὐκ ὦν ἄδικ' ἔπασχεν ἐξ ἐμοῦ.
 ΠΑΙ. σοὶ δ' ἐς τί δόξ' εἰσῆλθεν ἐκβαλεῖν τέκνον;
 ΚΡ. ὥς τὸν θεὸν σώσονται τὸν γ' αὐτοῦ γόνον. 965
 ΠΑΙ. οἵμοι, δόμων σῶν ὄλβος ὥς χειμάζεται.
 ΚΡ. τί κρᾶτα κρύψας, ὦ γέρον, θακρυρροεῖς;
 ΠΑΙ. σὲ καὶ πατέρα σὸν δυστυχοῦντας εἰσορῶν.
 ΚΡ. τὰ θνητὰ τοιαῦτ'· οὐδὲν ἐν ταῦτῳ μένει.
 ΠΑΙ. μή νυν ἔτ' οἴκτων, θύγατερ, ἀντεχώμεθα. 970
 ΚΡ. τί γάρ με χρή δρᾶν; ἀπορία τὸ δυστυχεῖν.
 ΠΑΙ. τὸν πρῶτον ἀδικήσαντά σ' ἀποτίνου θεόν.
 ΚΡ. καὶ πῶς τὰ κρείσσω θνητὸς οὐς' ὑπερδράμω;
 ΠΑΙ. πίμπρη τὰ σεμνὰ Λοξίου χρηστήρια.
 ΚΡ. δέδοικα· καὶ νῦν πημάτων ἄδην ἔχω. 975
 ΠΑΙ. τὰ δυνατὰ νυν τόλμησον, ἄνδρα σὸν κτανεῖν.
 ΚΡ. αἰδοῦμεθ' εὐνάς τὰς πόθ' ἡνίκ' ἐσθλὸς ἦν.
 ΠΑΙ. σὺ δ' ἀλλὰ παῖδα τὸν ἐπὶ σοὶ πεφηνότα.
 ΚΡ. πῶς; εἰ γὰρ εἴη δυνατόν· ὥς θέλοιμί γ' ἄν.
 ΠΑΙ. ξιφηφόρους σοὺς ὀπλίσας' ὀπάοντας. 980
 ΚΡ. στείχοιμ' ἄν· ἀλλὰ ποῦ γενήσεται τόδε;
 ΠΑΙ. ἱεραῖσιν ἐν σκηναῖσιν, οὗθ' οἶνον φίλους.
 ΚΡ. ἐπίσημον ὁ φόνος, καὶ τὸ δοῦλον ἀσθενές.

- ΠΑΙ. ὦμοι, κακίξει. φέρε, σύ νυν βούλευέ τι.
 ΚΡ. καὶ μὴν ἔχω γε δόλια καὶ δραστήρια. 985
- ΠΑΙ. ἀμφοῖν ἂν εἴην τοῖνδ' ὑπηρέτης ἐγώ.
 ΚΡ. ἄκουε τοίνυν· οἶσθα γηγενῆ μάχην;
 ΠΑΙ. οἶδ', ἣν Φλέγρᾳ Γίγαντες ἔστησαν θεοῖς.
 ΚΡ. ἐνταῦθα Γοργόν' ἔτεκε Γῆ, δεινὸν τέρας.
 ΠΑΙ. ἧ παισὶν αὐτῆς σύμμαχον, θεῶν πόνον; 990
 ΚΡ. ναί· καὶ νιν ἔκτειν' ἡ Διὸς Παλλὰς θεά.
 ΠΑΙ. ποῖόν τι μορφῆς σχῆμ' ἔχουσαν ἀγρίας;
 ΚΡ. θώρακ' ἐχίδνης περιβόλοις ὠπλισμένον.
 ΠΑΙ. ἄρ' οὗτός ἐσθ' ὁ μῦθος ὃν κλύω πάλοι;
 ΚΡ. ταύτης Ἀθάναν δέρος ἐπὶ στέροισι ἔχειν. 995
 ΠΑΙ. ἣν αἰγίδ' ὀνομάζουσι, Παλλάδος στολήν;
 ΚΡ. τόδ' ἔσχεν ὄνομα θεῶν ὅτ' ἦλθεν εἰς δόρυ.
 ΠΑΙ. τί δῆτα, θύγατερ, τοῦτο σοῖς ἐχθροῖς βλάβος;
 ΚΡ. Ἐριχθόνιον οἶσθας, τί δ' οὐ μέλλεις, γέρον;
 ΠΑΙ. ὃν πρῶτον ὑμῶν πρόγονον ἐξανῆκε γῆ; 1000
 ΚΡ. τοῦτ' αὖ δίδωσι Παλλὰς ὄντι νεογόνῳ
 ΠΑΙ. τί χρῆμα; μέλλον γάρ τι προσφέρεις ἔπος.
 ΚΡ. δισσοῦς σταλαγμοὺς αἵματος Γοργοῦς ἄπο.
 ΠΑΙ. ἰσχὺν ἔχοντας τίνα πρὸς ἀνθρώπου φύσιν;
 ΚΡ. τὸν μὲν θανάσιμον, τὸν δ' ἀκεσφόρον νόσων. 1005
 ΠΑΙ. ἐν τῷ καθάψας' ἀμφὶ παιδὶ σώματος;
 ΚΡ. χρυσοῖσι δεσμοῖς· ὁ δὲ δίδωσ' ἐμῷ πατρί.
 ΠΑΙ. κείνου δὲ κατθανόντος εἰς σ' ἀφίκετο;
 ΚΡ. ναί· καὶ πὶ καρπῷ γ' αὐτ' ἐγὼ χερὸς φέρω.
 ΠΑΙ. πῶς οὖν κέκρανται δίπτυχον δῶρον θεᾶς; 1010
 ΚΡ. κοίλης μὲν ὅστις φλεβὸς ἀπέσταξεν φόνος
 ΠΑΙ. τί τῷδε χρῆσθαι; δύνασιν ἐκφέρει τίνα;
 ΚΡ. νόσους ἀπείργει καὶ τροφὰς ἔχει βίου.
 ΠΑΙ. ὁ δεύτερος δ' ἀριθμὸς ὃν λέγεις τί δρᾷ;
 ΚΡ. κτείνει, δρακόντων ἰὸς ὦν τῶν Γοργόνος. 1015

- ΠΑΙ. εἰς ἓν δὲ κραθέντ' αὐτὸν ἢ χωρὶς φορεῖς ;
 ΚΡ. χωρὶς· κακῷ γὰρ ἔσθλόν οὐ συμμίσγνυται.
 ΠΑΙ. ὦ φιλιτάτη παῖ, πάντ' ἔχεις ὅσων σε δεῖ.
 ΚΡ. τούτῳ θανεῖται παῖς· σὺ δ' ὁ κτείνων ἔσει.
 ΠΑΙ. ποῦ καὶ τί δράσας ; σὸν λέγειν, τολμᾷν δ' ἐμὸν
 ΚΡ. ἐν ταῖς Ἀθήναις, δῶμ' ὅταν τοῦμὸν μόλῃ. 1
 ΠΑΙ. οὐκ εὖ τόδ' εἶπας· καὶ σὺ γὰρ τοῦμὸν ψέγεις.
 ΚΡ. πῶς ; ἄρ' ὑπείδου τοῦθ' ὃ κ' ἄμ' εἰσέρχεται ;
 ΠΑΙ. σὺ παῖδα δόξεις διολέσαι, κεῖ μὴ κτενεῖς.
 ΚΡ. ὀρθῶς· φθονεῖν γάρ φασι μητρονίας τέκνοις. 1
 ΠΑΙ. αὐτοῦ νυν αὐτὸν κτεῖν', ἵν' ἄρνήσῃ φόρους.
 ΚΡ. προλάξυμαι γοῦν τῷ χρόνῳ τῆς ἡδονῆς.
 ΠΑΙ. καὶ σὸν γε λήσεις πόσιν ἅ σε σπεύδει λαθεῖν.
 ΚΡ. οἶσθ' οὖν ὃ δρᾶσον ; χειρὸς ἐξ ἐμῆς λαβὼν
 χρύσωμ' Ἀθάνας τόδε, παλαιὸν ὄργανον, 1
 ἐλθὼν ἵν' ἡμῖν βουθυτεῖ λάθρα πόσις,
 δείπνων ὅταν λήγῃσι καὶ σπονδὰς θεοῖς
 μέλλωσι λείβειν, ἐν πέπλοις ἔχων τόδε
 κάθες βαλὼν εἰς πῶμα τῷ νεανίᾳ,
 ἰδίᾳ δέ, μὴ τι πᾶσι, χωρίσας ποτὸν 1
 τῷ τῶν ἐμῶν μέλλοντι δεσπόζειν δόμων.
 κ' ἄνπερ διέλθῃ λαιμόν, οὐποθ' ἵξεται
 κλεινὰς Ἀθήνας, κατθανὼν δ' αὐτοῦ μενεῖ.
 ΠΑΙ. σὺ μὲν νυν εἶσω προξένων μέθες πόδα·
 ἡμεῖς δ' ἐφ' ᾧ τετάγμεθ' ἐκπονήσομεν. 1
 ἄγ', ὦ γεραιὲ πούς, νεανίας γενοῦ
 ἔργοισι, κεῖ μὴ τῷ χρόνῳ πάρεστί σοι.
 ἐχθρὸν δ' ἐπ' ἄνδρα στεῖχε δεσποτῶν μέτα,
 καὶ συμφόνευε καὶ συνεξαίρει δόμων.
 τὴν δ' εὐσέβειαν εὐτυχοῦσι μὲν καλὸν 1
 τιμᾶν· ὅταν δὲ πολεμίους δρᾶσαι κακῶς
 θέλῃ τις, οὐδεὶς ἐμποδὼν κεῖται νόμος.

- ΧΟ. *Εἰνοδία θύγατερ Δάματρος, ἃ τῶν στρ.*
νυκτιπόλων ἐφόδων ἀνάσσεις
καὶ μεθαμερίων, ὅδωσον δυσθανάτων 1050
κρατήρων πληρώματ', ἐφ' οἷσι πέμπει
πότνια πότνι' ἐμὰ χθονίας
Γοργοῦς λαιμοτόμων ἀπὸ σταλαγμῶν 1055
τῷ τῶν Ἑρεχθιδᾶν
δόμων ἐφαπτομένῳ·
μηδέ ποτ' ἄλλος ἄλλων ἀπ' οἴκων
πόλεως ἀνάσσει
πλὴν τῶν εὐγενετᾶν Ἑρεχθιδᾶν. 1060
εἰ δ' ἀτελὴς θάνατος σπουδαί τε δεσποί- ἀντ.
νας, ὅ τε καιρὸς ἅπεισι τόλμας,
ἃ τε νῦν φέρετ' ἐλπίς, ἣ θηκτὸν ξίφος ἣ
λαιμῶν ἐξάψει βρόχον ἀμφὶ δειρήν, 1065
πάθεσι πάθεα δ' ἐξανύτους'
εἰς ἄλλας βίотου μορφὰς κάτεισιν.
οὐ γὰρ δόμων γ' ἑτέρους
ἄρχοντας ἀλλοδαποὺς 1070
ξῶσά ποτ' ὁμμάτων ἐν φαενναῖς
ἀνέχοιτ' ἂν αὐγαῖς
ἃ τῶν εὐπατριδᾶν γεγῶσ' οἴκων.
αἰσχύνομαι τὸν πολύνυμνον στρ.
θεόν, εἰ παρὰ καλλιχόροισι παραῖς 1075
λαμπάδα θεωρὸν εἰκάδων
ὄψεται ἐννύχιος ἄνπνος ὦν,
ὅτε καὶ Διὸς ἀστερωπὸς
ἀνεχόρευσεν αἰθήρ,
χορεύει δὲ σελάνα 1080
καὶ πεντήκοντα κόραι

1048—1060 = 1061—1073

1074—1089 = 1090—1105

- Νηρέος, αἰ κατὰ πόντον
 ἀενάων τε ποταμῶν
 δίνας χορευόμεναι,
 τὰν χρυσοστέφανον κόραν 1085
 καὶ ματέρα σεμνάν·
 ἴν' ἐλπίζει βασιλεύσειν
 ἄλλων πόνον εἰσπεσῶν
 ὁ Φοῖβειος ἀλάτας.
 ὀρᾷθ' ὅσοι δυσκελάδοισιν 1090
 κατὰ μοῦσαν λόντες αἰδέεθ' ὕμνοις
 ἀμέτερα λέχεα καὶ γάμους
 Κύπριδος ἀθεμίτους ἀνοσίους,
 ὅσον εὐσεβία κρατοῦμεν
 ἄδικον ἄροτον ἀνδρῶν. 1095
 παλίμφραμος ἀοιδὰ
 καὶ μοῦσ' εἰς ἄνδρας ἵτω
 δυσκέλαδος ἀμφὶ λέκτρων.
 δείκνυσι γὰρ ὁ Διὸς ἐκ
 παίδων ἀμνημοσύναν, 1100
 οὐ κοινὰν τεκέων τύχαν
 οἴκοισι φυτεύσας
 δεσποίνα· πρὸς δ' Ἀφροδίταν
 ἄλλαν θέμενος χάριν
 νόθου παιδὸς ἔκνρσεν. 1105
- ΘΕ. κλεινήν, γυναῖκες, ποῦ κόρην Ἐρεχθέως
 δέσποιναν εὖρω; πανταχῇ γὰρ ἄστεως
 ζητῶν νιν ἐξέπλησα κοῦκ ἔχω λαβεῖν.
- ΧΟ. τί δ' ἔστιν, ὦ ξύνδουλε; τίς προθυμία
 ποδῶν ἔχει σε, καὶ λόγους τίνας φέρεις; 1110
- ΘΕ. θηρώμεθ' ἄρχαι δ' ἀπιχώριοι χθονὸς
 ζητοῦσιν αὐτήν, ὥς θάνη πετρουμένη.

- ΧΟ. οἷμοι, τί λέξεις; οὔτι που λελήμμεθα
κρυφαῖον εἰς παῖδ' ἐκπορίζουσαι φόνον;
- ΘΕ. ἔγνωσ' μεθέξεις δ' οὐκ ἐν ὑστάτοις κακοῦ. 1115
- ΧΟ. ὥφθη δὲ πῶς τὰ κρυπτὰ μηχανήματα;
- ΘΕ. τὸ μὴ δίκαιον τῆς δίκης ἡσώμενον
ἔξεῦρεν ὁ θεός, οὐ μιανθῆναι θέλων.
- ΧΟ. πῶς; ἀντιάζω σ' ἰκέτις ἔξιπεῖν τάδε.
πεπυσμέναι γὰρ εἰ θανεῖν ἡμᾶς χρεῶν, 1120
ἥδιον ἂν θάνοιμεν, εἴθ' ὄρᾱν φάος.
- ΘΕ. ἐπεὶ θεοῦ μαντεῖον ὥχετ' ἐκλιπὼν
πόσις Κρεούσης, παῖδα τὸν καινὸν λαβὼν
πρὸς δεῖπνα θυσίας θ' ἄς θεοῖς ὠπλίζετο,
Ἡοῦθος μὲν ὥχετ' ἐνθα πῦρ πηδᾷ θεοῦ 1125
βακχεῖον, ὡς σφαγαῖσι Διονύσου πέτρας
δεύσειε δισσὰς παιδὸς ἀντ' ὀπτηρίων,
λέξας· σὺ μὲν νῦν, τέκνον, ἀμφῆρεις μένων
σκηναὺς ἀνίστη τεκτόνων μοχθήμασιν.
θύσας δὲ γενέταις θεοῖσιν ἦν μακρὸν χρόνον 1130
μένω, παροῦσι δαῖτες ἔστωσαν φίλοις.
λαβὼν δὲ μόσχους ὥχεθ'· ὁ δὲ νεανίας
σεμνῶς ἀτοίχους περιβολὰς σκηνωμάτων
ὀρθοστάταις ἰδρύνεθ' ἡλίου φλόγα
καλῶς φυλάξας, οὔτε πρὸς μέσας βολὰς 1135
ἄκτινος, οὔτ' αὖ πρὸς τελευτώσας βίον,
πλέθρου σταθμήσας μῆκος εἰς εὐγωνίαν,
μέτροιμ' ἔχουσιν τοῦν μέσῳ γε μυρίων
ποδῶν ἀριθμόν, ὡς λέγουσιν οἱ σοφοί,
ὡς πάντα Δελφῶν λαὸν εἰς θοίνην καλῶν. 1140
λαβὼν δ' ὑφάσμαθ' ἱερὰ θησαυρῶν πάρα
κατεσκίαξε, θαύματ' ἀνθρώποις ὄρᾱν.
πρῶτον μὲν ὀρόφῳ πτέρυγα περιβάλλει πέπλων,
ἀνάθημα Δίου παιδός, οὓς Ἥρακλῆς

Ἀμαζόνων σκυλεύματ' ἤνεγκεν θεῶ.
 1143
 ἐνῆν δ' ὕφανται γράμμασιν τοιαίδ' ὕφαι·
 Οὐρανὸς ἀθροίζων ἄστρ' ἐν αἰθέρος κύκλῳ·
 ἵππους μὲν ἤλανν' εἰς τελευταίαν φλόγα
 Ἥλιος, ἐφέλκων λαμπρὸν Ἑσπέρου φάος.
 1150
 μελάμπεπλος δὲ Νυξ ἀσεύρωτον ζυγοῖς
 ὄχημ' ἐπαλλεν· ἄστρα δ' ὠμάρτει θεᾷ.
 Πλειὰς μὲν ἦει μεσοπόρου δι' αἰθέρος,
 ὃ τε ξιφήρης Ὠρίων· ὕπερθε δὲ
 Ἀρκτος στρέφουσ' οὐραῖα χρυσήρει πόλῳ.
 1155
 κύκλος δὲ πανσέληνος ἠκόντιζ' ἄνω
 μηνὸς διχήρης, Τάδες τε ναυτίλοις
 σαφέστατον σημεῖον, ἥ τε φωσφόρος
 Ἔως διώκουσ' ἄστρα. τοίχοισιν δ' ἐπι
 ἤμπισχεν ἄλλα βαρβάρων ὑφάσματα,
 1160
 εὐηρέτους ναῦς ἀντίας Ἑλληνίσιν,
 καὶ μιξόθηρας φῶτας ἱππείας τ' ἄγρας,
 ἐλάφων λεόντων τ' ἀγρίων θηράματα.
 κατ' εἰσόδους δὲ Κέκροπα θυγατέρων πέλας
 σπείραισιν εἰλίσσοντ', Ἀθηναίων τινὸς
 1165
 ἀνάθημα, χρυσέους τ' ἐν μέσῳ συσσιτίῳ
 κρατήρας ἔστησ'· ἐν δ' ἄκροισι βὰς ποσὶ
 κῆρυξ ἀνείπε τὸν θέλοντ' ἐγχωρίων
 εἰς δαῖτα χωρεῖν. ὥς δ' ἐπληρώθη στέγη,
 στεφάνοισι κοσμηθέντες, εὐόχθου βορᾶς
 1170
 ψυχὴν ἐπλήρουν. ὥς δ' ἀνεῖσαν ἡδονήν,
 * * παρελθὼν πρέσβυς εἰς μέσον πέδον
 ἔσθη, γέλων δ' ἔθηκε συνδείπνοις πολύν,
 πρόθυμα πράσσω· ἔκ τε γὰρ κρῶσσῶν ὕδωρ
 χεροῖν ἔπεμπε νίπτρα κᾶξεθυμῖα
 1175
 σμύρνης ἰδρωῖτα χρυσέων τ' ἐκπωμάτων
 ἦρχ', αὐτὸς αὐτῷ τόνδε προστάξας πόνον.

ἐπεὶ δ' ἐς αὐλοὺς ἤκον ἐς κρατῆρά τε
 κοινόν, γέρων ἔλεξ'· ἀφαρπάζειν χρεῶν
 οἴνηρά τεύχη σμικρά, μέγала δ' εἰσφέρειν,
 ὡς θαῖσσον ἔλθωσ' οἷδ' ἐς ἡδονὰς φρενῶν. 1180
 ἦν δὲ φερόντων μόχθος ἀργυρηλάτους
 χρυσέας τε φιάλας· ὁ δὲ λαβὼν ἐξαίρετον,
 ὡς τῷ νέῳ δὴ δεσπότῃ χάριν φέρων,
 ἔδωκε πλήρες τεῦχος, εἰς οἶνον βαλὼν
 ὅ φασι δοῦναι φάρμακον δραστήριον 1185
 δέσποιναν, ὡς παῖς ὁ νέος ἐκλίποι φάος·
 κούδεις τὰδ' ἦδιν· ἐν χεροῖν ἔχοντι δὲ
 σπονδὰς μετ' ἄλλων παιδὶ τῷ πεφηνότι
 βλασφημίαν τις οἴκετ' ἐφθέγγετο·
 ὁ δ' ὡς ἐν ἱερῷ μάντεσιν τ' ἐσθλοῖς τραφεῖς, 1190
 οἶωνόν ἐθετο κακέλευσ' ἄλλον νέον
 κρατῆρα πληροῦν· τὰς δὲ πρὶν σπονδὰς θεοῦ
 δίδωσι γαῖα, πᾶσί τ' ἐκσπένδειν λέγει.
 σιγῇ δ' ὑπῆλθεν. ἐκ δ' ἐπίμπλαμεν δρόσου
 κρατῆρας ἱεροὺς Βιβλίνου τε πώματος. 1195
 κὰν τῷδε μόχθῳ πτηνὸς εἰσπίπτει δόμοις
 κῶμος πελειῶν· Λοξίου γὰρ ἐν δόμοις
 ἄτρεστα ναίουσ'· ὡς δ' ἀπέσπεισαν μέθυ,
 εἰς αὐτὸ χεῖλη πώματος κεχημέναι
 καθῆκαν, εἵλκον δ' εὐπτέρους ἐς αὐχένας. 1200
 καὶ ταῖς μὲν ἄλλαις ἄνοσος ἦν λοιβὴ θεοῦ·
 ἢ δ' ἔξετ' ἔνθ' ὁ καινὸς ἔσπεισεν γόνος,
 ποτοῦ τ' ἐγέυσατ', εὐθύς εὐπτερον δέμας
 ἔσεισε καβάκχευσεν, ἐκ δ' ἔκλαγξ' ὅπα
 ἀξύνετον αἰάζουσ'· ἐθάμβησεν δὲ πᾶς 1205
 θοινατόρων ὅμιλος ὄρνιθος πόνοους·
 θνήσκει δ' ἀπασπαίρουσα, φοινικοσκελεῖς
 χηλὰς παρεῖσα. γυμνὰ δ' ἐκ πέπλων μέλη

- ὑπὲρ τραπέξης ἥχ' ὁ μαντευτὸς γόνος,
 βοᾷ δέ· τίς μ' ἔμελλεν ἀνθρώπων κτανεῖν; 1210
 σήμαινε, πρέσβυ· σὴ γὰρ ἡ προθυμία,
 καὶ πῶμα χειρὸς σῆς ἐδεξάμην πάρα.
 εὐθὺς δ' ἐρευνᾷ γραῖαν ὠλένην λαβών,
 ἐπ' αὐτοφώρῳ πρέσβυν ὥς ἔχονθ' ἔλοι.
 ὦφθη δὲ καὶ κατεῖπ' ἀναγκασθεὶς μόγισ 1215
 τόλμας Κρεούσης πώματός τε μηχανάς.
 θεῖ δ' εὐθὺς ἔξω συλλαβὼν θοινάτορας
 ὁ πυθόχρηστος Αοξίου νεανίας,
 καὶν κοιράνοισι Πυθικοῖς σταθεὶς λέγει·
 ὦ γαῖα σεμνή, τῆς Ἐρεχθέως ὑπο 1220
 ξένης γυναικὸς φαρμάκοισι θνήσκομεν.
 Δελφῶν δ' ἄνακτες ὥρισαν πετρορριφῇ
 θανεῖν ἐμὴν δέσποιναν οὐ ψήφῳ μιᾷ,
 τὸν ἱερὸν ὥς κτείνουσαν ἐν τ' ἀνακτόροις
 φόνον τιθεῖσαν. πᾶσα δὲ ζητεῖ πόλις 1225
 τὴν ἀθλίως σπεύσασαν ἀθλίαν ὁδόν·
 παίδων γὰρ ἐλθοῦσ' εἰς ἔρον Φοίβου πάρα,
 τὸ σῶμα κοινῇ τοῖς τέκνοις ἀπώλεσεν.
- ΧΟ. οὐκ ἔστ' οὐκ ἔστιν θανάτου
 παρατροπὰ μελέα μοι· 1230
 φανερὰ γὰρ φανερὰ τάδ' ἦδη
 σπονδᾶς ἐκ Διουύσου
 βοτρυῶν θοᾶς ἐχίδνας
 σταγόσι μιγνυμένας φόνῳ·
 φανερὰ θύματα νερτέρων, 1235
 συμφοραὶ μὲν ἐμῷ βίῳ,
 λεύσιμοι δὲ καταφθοραὶ δεσποῖνα.
 τίνα φυχὰν πετρόεσσαν ἦ
 χθονὸς ὑπὸ σκοτίων μυχῶν
 πορευθῶ, θανάτου λεύσιμον ἄταν 1240

ἀποφεύγουσα, τεθρίππων
ὠκίσταν χαλὰν ἐπιβᾶσ',
ἢ πρύμνας ἐπὶ ναῶν;
οὐκ ἔστι λαθεῖν, ὅτε μὴ χρήζων
θεὸς ἐκκλέπτει.

1245

τί ποτ', ὦ μελέα δέσποινα, μένει
ψυχῇ σε παθεῖν; ἄρα θέλουσαι
δραῖσαι τι κακὸν τοὺς πέλας αὐταὶ
πεισόμεθ', ὥσπερ τὸ δίκαιον;

1249

KP. πρόσπολοι, διωκόμεσθα θανασίμους ἐπὶ σφαγᾶς,
Πυθίᾳ ψήφῳ κρατηθεῖς, ἔκδοτος δὲ γίγνομαι.

XO. ἴσμεν, ὦ τάλαινα, τὰς σὰς συμφοράς, ἔν' εἰ
τύχης.

KP. ποῦ φύγω δῆτ'; ἐκ γὰρ οἴκων προύλαβον μόγισ
πόδα,
μὴ θανεῖν· κλοπῇ δ' ἀφῆγμαι διαφυγοῦσα πολε-
μίους.

XO. ποῦ δ' ἂν ἄλλος' ἢ πλὶ βωμόν; KP. καὶ τί μοι
πλέον τόδε;

1255

XO. ἰκέτιν οὐ θέμις φονεύειν. KP. τῷ νόμῳ δέ γ'
ὄλλυμαι.

XO. χειρὶά γ' ἄλουσα. KP. καὶ μὴν οἶδ' ἀγωνισταὶ
πικροὶ

δεῦρ' ἐπείγονται ξιφήρεις. XO. ἴξε νυν πυρᾶς ἐπι.
κἂν θάνης γὰρ ἐνθάδ' οὖσα, τοῖς ἀποκτείνασί σε
προστρόπαιον αἶμα θήσεις· οἷστέον δὲ τὴν τύχην.

ΙΩ. ὦ ταυρόμορφον ὄμμα Κηφισοῦ πατρός,

1261

οἶαν ἔχιδναν τήνδ' ἔφυσας ἢ πυρὸς
δράκοντ' ἀναβλέποντα φοινίαν φλόγα,
ἧ τόλμα πᾶς' ἔνεστιν, οὐδ' ἥσσων ἔφω

Γοργοῦς σταλαγμαῶν, οἷς ἔμελλέ με κτανεῖν. 1265
λάξυσθ', ἔν' αὐτῆς τοὺς ἀκηράτους πλόκους

- κόμης καταξήνωσι Παρνασοῦ πλάκες,
 ὅθεν πετραῖον ἄλμα δισκηθήσεται.
 ἐσθλοῦ δ' ἔκνρσα δαίμονος, πρὶν ἐς πόλιν
 μολεῖν Ἀθηναίων χυπὸ μητροιὰν πεσεῖν. 1270
 ἐν συμμάχοις γὰρ ἀνεμετροησάμην φρένας
 τὰς σάς, ὅσον μοι πῆμα δυσμενῆς τ' ἔφυς·
 εἴσω γὰρ ἄν με περιβαλοῦσα δωμάτων
 ἄρδην ἄν ἐξέπεμψας εἰς Ἄιδου δόμους.
 ἀλλ' οὔτε βωμὸς οὔτ' Ἀπόλλωνος δόμος 1275
 σώσει σ'· ὁ δ' οἶκτος ὁ σὸς ἐμοὶ κρείσσων πάρα
 καὶ μητρὶ τῇ μῇ· καὶ γὰρ εἰ τὸ σῶμά μοι
 ἄπεστιν αὐτῆς, τοῦνομ' οὐκ ἄπεστί πω.
 ἴδесθε τὴν πανοῦργον, ἐκ τέχνης τέχνην
 οἶαν ἐπλέξε· βωμὸν ἔπτηξεν θεοῦ, 1280
 ὥς οὐ δίκην δώσουσα τῶν εἰργασμένων.
 ΚΡ. ἀπεννέπω σε μὴ κατακτείνειν ἐμὲ
 ὑπέρ τ' ἐμαυτῆς τοῦ θεοῦ θ' ἵν' ἔσταμεν.
 ΙΩΝ. τί δ' ἐστὶ Φοῖβῳ σοί τε κοινὸν ἐν μέσῳ;
 ΚΡ. ἱερὸν τὸ σῶμα τῷ θεῷ δίδωμ' ἔχειν. 1285
 ΙΩΝ. καὶ τ' ἔκτανες σὺ φαρμάκοις τὸν τοῦ θεοῦ;
 ΚΡ. ἀλλ' οὐκέτ' ἦσθα Λοξίου, πατρὸς δὲ σοῦ.
 ΙΩΝ. ἀλλ' ἐγενόμεσθα, πατρὸς δ' οὐσίαν λέγω.
 ΚΡ. οὐκοῦν τότ' ἦσθα· νῦν δ' ἐγώ, σὺ δ' οὐκέτ' εἶ.
 ΙΩΝ. οὐκ εὐσεβῆς γε· τὰμὰ δ' εὐσεβῆ τότ' ἦν. 1290
 ΚΡ. ἐκτεινά σ' ὄντα πολέμιον δόμοις ἐμοῖς.
 ΙΩΝ. οὔτοι σὺν ὅπλοις ἦλθον εἰς τὴν σὴν χθόνα;
 ΚΡ. μάλιστα· κἀπίμπρας γ' Ἐρεχθέως δόμους.
 ΙΩΝ. ποίοισι πανοῖς ἢ πυρὸς ποίᾳ φλογί;
 ΚΡ. ἔμελλες οἰκεῖν τᾶμ', ἐμοῦ βίᾳ λαβών. 1295
 ΙΩΝ. κᾶπειτα τοῦ μέλλειν μ' ἀπέκτεινες φόβῳ;
 ΚΡ. ὥς μὴ θάνοιμί γ', εἰ σὺ μὴ μέλλων τύχοις.
 ΙΩΝ. φθονεῖς ἅπαις οὐς, εἰ πατὴρ ἐξεῦρέ με. 1300

ΚΡ. συ τῶν ἀτέκνων δῆτ' ἀναρπάσεις δόμους; 1303

ΙΩΝ. πατρός γε γῆν διδόντος ἦν ἐκτῆσατο. 1296

ΚΡ. τοῖς Αἰόλου δὲ πῶς μετῆν τῆς Παλλάδος;

ΙΩΝ. ὅπλοισιν αὐτὴν οὐ λόγοις ἐρρύσατο.

ΚΡ. ἐπίκουρος οἰκήτωρ γ' ἂν οὐκ εἴη χθονός. 1299

ΙΩΝ. ἡμῖν δέ γ' ἀλλὰ πατρικῆς οὐκ ἦν μέρος;

ΚΡ. ὅς' ἀσπὶς ἔργχος θ'· ἦδε σοὶ παμπησία. 1305

ΙΩΝ. ἐκλειπε βωμὸν καὶ θεηλάτους ἔδρας.

ΚΡ. τὴν σὴν ὅπου σοι μητέρ' ἐστὶ νουθέτει.

ΙΩΝ. σὺ δ' οὐχ ὑφέξεις ζημίαν, κτείνουσ' ἐμέ;

ΚΡ. ἦν γ' ἐντὸς ἀδύτων τῶνδ' ἐμε σφάξαι θέλῃς.

ΙΩΝ. τίς ἡδονὴ σοι θεοῦ θανεῖν ἐν στέμμασι; 1310

ΚΡ. λυπήσομέν τιν', ὧν λελυπήμεσθ' ὕπο.

ΙΩΝ. φεῦ.

δεινὸν γε, θνητοῖς τοὺς νόμους ὥς οὐ καλῶς

ἔθηκεν ὁ θεὸς οὐδ' ἀπὸ γνώμης σοφῆς·

τοὺς μὲν γὰρ ἀδίκους βωμὸν οὐχ ἔξιεν ἐχοῖν,

ἀλλ' ἐξελαύνειν· οὐδὲ γὰρ ψάυειν καλὸν 1315

θεῶν πονηρὰν χεῖρα, τοῖσι δ' ἐνδίκοις

ἱερὰ καθίζειν, ὅστις ἡδικεῖτ', ἐχοῖν,

καὶ μὴ πλὶ ταὐτὸ τοῦτ' ἰόντ' ἔχειν ἴσον

τόν τ' ἐσθλὸν ὄντα τόν τε μὴ θεῶν πάρα.

ΠΥ. ἐπίσχες, ὦ παῖ· τρίποδα γὰρ χρηστήριον 1320

λιποῦσα θριγκοῦ τοῦδ' ὑπερβάλλω πόδα

Φοίβου προφῆτις, τρίποδος ἀρχαῖον νόμον

σώζουσα, πασῶν Δελφίδων ἑξαίρετος.

ΙΩΝ. χαῖρ' ὦ φίλη μοι μήτερ, οὐ τεκοῦσά περ.

ΠΥ. ἀλλ' οὖν ἐλεγόμεσθ'· ἡ φάτις δ' οὗ μοι πικρά.

ΙΩΝ. ἤκουσας ὥς μ' ἔκτεινεν ἦδε μηχαναῖς; 1326

ΠΥ. ἤκουσα· καὶ σύ γ' ὦμὸς ὦν ἀμαρτάνεις.

ΙΩΝ. οὐ χρή με τοὺς κτείνοντας ἀνταπολλύναι;

ΠΥ. προγονοῖς δάμαρτες δυσμενεῖς αἰεὶ ποτε.

- ΙΩΝ. ἡμεῖς δὲ μητρυνιαῖς γε πάσχοντες κακῶς. 1330
- ΠΥ. μὴ ταῦτα· λείπων ἱερὰ καὶ στείχων πάτραν
- ΙΩΝ. τί δὴ με δρᾶσαι νουθετούμενον χρεῶν;
- ΠΥ. καθαρὸς Ἀθήνας ἔλθ' ὑπ' οἰωνῶν καλῶν.
- ΙΩΝ. καθαρὸς ἅπας τοι πολεμίους ὃς ἂν κτάνῃ. 1334
- ΠΥ. μὴ σὺ γε· παρ' ἡμῶν δ' ἔκλαβ' οὓς ἔχω λόγους.
- ΙΩΝ. λέγοις ἂν· εὐνους δ' οὐς' ἐρεῖς ὅς' ἂν λέγῃς.
- ΠΥ. ὀρᾷς τόδ' ἄγρος χερὸς ὑπ' ἀγκάλαις ἐμαῖς;
- ΙΩΝ. ὀρῶ παλαιὰν ἀντίπηγ' ἐν στέμμασιν.
- ΠΥ. ἐν τῇδέ σ' ἔλαβον νεόγονον βρέφος ποτέ.
- ΙΩΝ. τί φῆς; ὁ μῦθος εἰσενήνεκται νέος. 1340
- ΠΥ. σιγῇ γὰρ εἶχον αὐτά· νῦν δὲ δέλκνυμεν.
- ΙΩΝ. πῶς οὖν ἔκρυπτες τότε λαβοῦς' ἡμᾶς πάλαι;
- ΠΥ. ὁ θεὸς ἐβούλετ' ἐν δόμοις σ' ἔχειν λάτριν.
- ΙΩΝ. νῦν δ' οὐχὶ χρῆζει; τῷ τόδε γυνῶναί με χρή;
- ΠΥ. πατέρα κατειπὼν τῇσδέ σ' ἐκπέμπει χθονός. 1345
- ΙΩΝ. σὺ δ' ἐκ κελευσμῶν ἢ πόθεν σῴζεις τάδε;
- ΠΥ. ἐνθυμίον μοι τότε τίθησι Λοξίας
- ΙΩΝ. τί χρῆμα δρᾶσαι; λέγε, πέραινε σοὺς λόγους.
- ΠΥ. σῶσαι τόδ' εὖρημ' εἰς τὸν ὄντα νῦν χρόνον.
- ΙΩΝ. ἔχει δέ μοι τί κέρδος ἢ τίνα βλάβην; 1350
- ΠΥ. ἐνθάδε κέκρυπται σπάργαν' οἷς ἐνῆσθα σύ.
- ΙΩΝ. μητρὸς τάδ' ἡμῖν ἐκφέρεις ζητήματα;
- ΠΥ. ἐπεὶ γ' ὁ δαίμων βούλεται· πάροιθε δ' οὔ.
- ΙΩΝ. ὦ μακαρίων μοι φασμάτων ἦδ' ἡμέρα.
- ΠΥ. λαβὼν νῦν αὐτὰ τὴν τεκοῦσαν ἐκπύνει. 1355
- παῖσαν δ' ἐπελθὼν Ἀσιάδ' Εὐρώπης θ' ὄρους
γνώσει τάδ' αὐτός. τοῦ θεοῦ δ' ἑκατί σε
ἔθρεψά τ', ὦ παῖ, καὶ τάδ' ἀποδίδωμί σοι,
ἃ κείνος ἀκέλευστόν μ' ἐβουλήθη λαβεῖν
σῶσαί θ'· ὅτου δ' ἐβούλετ', οὐκ ἔχω λέγειν. 1360
ἧδει δὲ θνητῶν οὔτις ἀνθρώπων τάδε

ἔχοντας ἡμᾶς, οὐδ' ἴν' ἦν κεκρυμμένα.
καὶ χαῖρ'· ἴσον γάρ σ' ὥς τεκοῦς' ἀσπάξομαι.
ἄρξαι δ' ὅθεν σὴν μητέρα ζητεῖν σε χρή·
πρωτον μὲν εἴ τις Δελφίδων τεκοῦσά σε 1365
εἰς τούσδε ναοὺς ἐξέεθηκε παρθένος,
ἔπειτα δ' εἴ τις Ἑλλάς· ἐξ ἡμῶν δ' ἔχεις
ἅπαντα Φοῖβου θ', ὃς μετέσχε τῆς τύχης.

ΙΩΝ. φεῦ φεῦ· κατ' ὅσων ὥς ὑγρὸν βάλλω δάκρυ,
ἐκεῖσε τὸν νοῦν δούς, ὅθ' ἡ τεκοῦσά με 1370
κρυφαῖα νυμφευθεῖς' ἀπημποῖα λάθρα
καὶ μαστὸν οὐχ ὑπέσχευ· ἀλλ' ἀνώνυμος
ἐν θεοῦ μελάθροις εἶχον οἰκέτην βίον.
τὰ τοῦ θεοῦ μὲν χρηστά, τοῦ δὲ δαίμονος
βαρέα· χρόνον γάρ ὃν μ' ἐχοῖν ἐν ἀγκάλαις 1375
μητρὸς τρυφῆσαι καὶ τι τερφθῆναι βίου,
ἀπεστερήθη φιλάτης μητρὸς τροφῆς.
τλήμων δὲ χῆ τεκοῦσά μ', ὥς ταῦτόν πάθος
πέπονθε, παιδὸς ἀπολέσασα χαρμονάς.
καὶ νῦν λαβὼν τήνδ' ἀντίπηγ' οἶσω θεῶ 1380
ἀνάθημ', ἴν' εὕρω μηδὲν ὦν οὐ βούλομαι.
εἰ γάρ με δούλη τυγχάνει τεκοῦσά τις,
εὕρεῖν κάκιον μητέρ' ἢ σιγῶντ' ἔαν.
ὦ Φοῖβε, ναοῖς ἀνατίθηναι τήνδε σοῖς.
καίτοι τί πάσχω; τοῦ θεοῦ προθυμία 1385
πολεμῶ, τὰ μητρὸς σύμβολ' ὃς σέσωκέ μοι.
ἀνοικτέον τάδ' ἐστὶ καὶ τολμητέον.
τὰ γὰρ πεπρωμέν' οὐδ' ὑπερβαίνειν ποτ' ἄν.
ὦ στέμμαθ' ἱερά, τί ποτέ μοι κεκεύθατε,
καὶ σύνδεθ', οἷσι τᾶμ' ἐφρουρήθη φίλα; 1390
ἰδοὺ περιπτυγμ' ἀντίπηγος εὐκύκλου
ὥς οὐ γεγήρακ' ἐκ τινος θεηλάτου,

εὐρώς τ' ἄπεστι πλεγμάτων· ὁ δ' ἐν μέσῳ
χρόνος πολὺς δὴ τοῖσδε θησαυρίσμασιν.

KP. τί δῆτα φάσμα τῶν ἀνελπίστων ὄρω; 1395

ΙΩΝ. σίγα σύ· πολλὴ καὶ πάροιθεν ἦσθαι μοι.

KP. οὐκ ἐν σιωπῇ τὰμά· μή με νουθέτει.
ὄρω γὰρ ἄγγος οὗ ἑξέθηκ' ἐγὼ ποτε
σέ γ' ὦ τέκνον μοι, βρέφος ἔτ' ὄντα νήπιον,
Κέκροπος ἐς ἄντρα καὶ Μακρὰς πετρηρεφεῖς. 1400
λείψω δὲ βωμὸν τόνδε, κελὶ θανεῖν με χρή.

ΙΩΝ. λάζυσθε τήνδε· θεομανῆς γὰρ ἦλατο
βωμοῦ λιποῦσα ξόανα· δεῖτε δ' ὠλένας.

KP. σφάζοντες οὐ λήγοιτ' ἄν· ὥς ἀνθέξομαι
καὶ τῆσδε καὶ σοῦ τῶν τε σῶν κεκρυμμένων. 1405

ΙΩΝ. τὰδ' οὐχὶ δεινά; θυσιάζομαι λόγῳ.

KP. οὔκ· ἀλλὰ σοῖς φίλοισιν εὐρίσκει φίλος.

ΙΩΝ. ἐγὼ φίλος σός; καὶτά μ' ἔκτεινες λάθρᾳ;

KP. παῖς γ', εἰ τόδ' ἐστὶ τοῖς τεκοῦσι φίλτατον.

ΙΩΝ. παῦσαι πλέκουσα· λήψομαί σ' ἐγὼ καλῶς. 1410

KP. εἰς τοῦθ' ἱκοίμην, τοῦδε τοξεύω, τέκνον.

ΙΩΝ. κενὸν τόδ' ἄγγος ἢ στέγει πλήρωμά τι;

KP. σά γ' ἐνδυθ', οἷσί σ' ἑξέθηκ' ἐγὼ ποτε.

ΙΩΝ. καὶ τοῦνομ' αὐτῶν ἐξερεῖς πρὶν εἰσιδεῖν;

KP. καὶν μὴ φράσω γε, κατθανεῖν ὑφίσταμαι. 1415

ΙΩΝ. λέγ'. ὥς ἔχει τι δεινὸν ἢ τόλμη γέ σου.

KP. σκέψασθ' ὃ παῖς ποτ' οὐσ' ὕφασμ' ὕφην' ἐγώ.

ΙΩΝ. ποῖόν τι; πολλὰ παρθένων ὑφάσματα.

KP. οὐ τέλεον, οἷον δ' ἐκδίδαγμα κερκίδος.

ΙΩΝ. μορφὴν ἔχον τίν'; ὥς με μὴ ταύτη λάβῃς. 1420

KP. Γοργῶν μὲν ἐν μέσοισιν ἡτρίοις πέπλων.

ΙΩΝ. ὦ Ζεῦ, τίς ἡμᾶς ἐκκυνηγετεῖ πότμος;

KP. κεκρασπέδωται δ' ὄφρ' εἰς αἰγίδος τρόπον.

ΙΩΝ. ἰδοῦ.

τόδ' ἔσθ' ὕφασμα δεσμά θ', ὥς εὐρίσκομεν.

ΚΡ. ὦ χρόνιον ἰστῶν παρθένευμα τῶν ἐμῶν. 1425

ΙΩΝ. ἔστιν τι πρὸς τῷδ', ἢ μόνῳ τῷδ' εὐτυχεῖς;

ΚΡ. δράκοντε μαρμαίροντε παγχρόσῳ γέννι.

ΙΩΝ. δώρημ' Ἀθάνας, ἢ τέκν' ἐντρέφειν; λέγε.

ΚΡ. Ἐριχθονίου γε τοῦ πάλαι μιμήματα.

ΙΩΝ. τί δρᾶν, τί χοῖσθαι, φράξε μοι, χρυσώματι; 1430

ΚΡ. δέροιαι παιδὶ νεογόνῳ φέρειν, τέκνον.

ΙΩΝ. ἔνιαισιν οἶδε· τὸ δὲ τρίτον ποθῶ μαθεῖν.

ΚΡ. στέφανον ἐλαίας ἀμφέθηκά σοι τότε,
ἦν πρῶτ' Ἀθάνας σκόπελος ἐξηνέγκατο,
ὅς, εἴπερ ἔστιν, οὐποτ' ἐκλείπει χλόην 1435
θάλλει δ' ἐλαίας ἐξ ἀγηράτου γεγῶς.

ΙΩΝ. ὦ φιλτάτῃ μοι μῆτερ, ἄσμενός σ' ἰδὼν
πρὸς ἄσμενας πέπτωκα σὰς παρηίδας.

ΚΡ. ὦ τέκνον, ὦ φῶς μητρὶ κρεῖσσον ἡλίου,
συγγνώσεται γὰρ ὁ θεός, ἐν χεροῖν σ' ἔχω, 1440
ἄελπτον εὔρημ', ὃν κατὰ γᾶς ἐνέρων
χθόνιον μετὰ Περσεφόνας τ' ἐδόκουν ναίειν.

ΙΩΝ. ἀλλ' ὦ φίλῃ μοι μῆτερ, ἐν χεροῖν σέθεν
ὁ κατθανών τε κοῦ θανὼν φαντάζομαι.

ΚΡ. ἰὼ ἰώ, λαμπρᾶς αἰθέρος ἀμπτυχαί, 1445
τίν' αὐδὲν αὐσῶ
βοάσω; πόθεν μοι
συνέκυρσ' ἀδόκητος ἄδονά; πόθεν
ἐλάβομεν χαράν;

ΙΩΝ. ἐμοὶ γενέσθαι πάντα μᾶλλον ἂν ποτε, 1450
μῆτερ, παρέστη τῶνδ' ὅπως σός εἰμ' ἐγώ.

ΚΡ. ἔτι φόβῳ τρέμω.

ΙΩΝ. μῶν οὐκ ἔχειν μ' ἔχουσα; ΚΡ. τὰς γὰρ ἐλπίδας
ἀπέβαλον πρόσω.

- ἰὼ γύναι, πόθεν πόθεν ἔλαβες ἐμὸν
 βρέφος ἐς ἀγκάλας;
 τίν' ἀνὰ χεῖρα δόμους ἔβα Λοξίου; 1455
- ΙΩΝ. θεῖον τόδ'· ἀλλὰ τὰπίλοιπα τῆς τύχης
 εὐδαιμονοῖμεν, ὥς τὰ πρόσθε δυστυχή.
- ΚΡ. τέκνον, οὐκ ἀδάκρυτος ἐκλοχεύει,
 γόοις δὲ ματρὸς ἐκ χειρῶν ὀρίζει·
 νῦν δὲ γενειάσιν παρὰ σέθεν πνέω 1460
 μακαριωτάτας τυχοῦσ' ἄδονᾶς.
- ΙΩΝ. τοῦμόν λεγούσα καὶ τὸ σὸν κοινῶς λέγεις.
- ΚΡ. ἄπαιδες οὐκέτ' ἐσμέν οὐδ' ἄτεκνοι·
 δῶμ' ἐστιοῦται, γὰρ δ' ἔχει τυράννους·
 ἀνηβᾶ δ' Ἐρεχθεύς, 1465
 ὃ τε γηγενέτας δόμος οὐκέτι νύκτα
 δέρεται, ἀελίου δ' ἀναβλέπει λαμπάσιν.
- ΙΩΝ. μῆτερ, παρῶν μοι καὶ πατὴρ μετασχέτω
 τῆς ἡδονῆς τῇσδ' ἧς ἔδωχ' ὑμῖν ἐγώ.
- ΚΡ. ὦ τέκνον, τί φῆς; οἶον οἶον ἀνελέγχομαι. 1470
- ΙΩΝ. πῶς εἶπας; ΚΡ. ἄλλοθεν γε γέγονας, ἄλλοθεν.
- ΙΩΝ. ὦ μοι· νόθον με παρθένευμ' ἔτικτε σόν;
- ΚΡ. οὐχ ὑπὸ λαμπάδων οὐδὲ χορευμάτων
 ὑμέναιος ἐμός, 1475
 τέκνον, ἔτικτε σὸν κᾶρα.
- ΙΩΝ. αἰαῖ· πέφυκα δυσγενής, μῆτερ, πόθεν;
- ΚΡ. ἴστω Γοργοφόνα, ΙΩΝ. τί τοῦτ' ἔλεξας;
- ΚΡ. ἃ σκοπέλοις ἐπ' ἐμοῖς
 τὸν ἐλαιοφυῇ πάγον θάσσει. 1480
- ΙΩΝ. λέγεις λέγεις μοι δόλια κοῦ σαφῇ τάδε.
- ΚΡ. παρ' ἀηδόνιον πέτραν Φοῖβον
- ΙΩΝ. τί Φοῖβον αὐδᾶς;
- ΚΡ. κρυπτόμενον λέχος ἡνύασθην.
- ΙΩΝ. λέγ'· ὥς ἐρεῖς τι κεδνὸν εὐτυχές τέ μοι. 1485

ΚΡ. δεκάτῳ δέ σε μηνὸς ἐν
κύκλῳ κρύφιον ὠδῖν' ἔτεκον Φοίβῳ.

ΙΩΝ. ὦ φίλτατ' εἰποῦς', εἰ λέγεις ἐτήτυμα.

ΚΡ. παρθένια δ' ἐμᾶς ματέρος
σπάργαν' ἀμφίβολά σοι τάδ' ἔξ- 1490
ῆψα, κερκίδος ἐμᾶς πλάνους.
γάλακτι δ' οὐκ ἐπέσχον, οὐδὲ μαστῶ
τροφεῖα ματρὸς οὐδὲ λουτρὰ χειροῖν,
ἀνὰ δ' ἄντρον ἔρημον οἰωνῶν
γαμφηλαῖς φόνευμα θοίναμά τ' εἰς 1495
Ἄιδαν ἐκβάλλει.

ΙΩΝ. ὦ δεινὰ τλᾶσα μῆτερ.

ΚΡ. ἐν φόβῳ καταδεθεῖσα σάν
ψυχὰν ἀπέβαλον, τέκνον·
ἔκτεινά σ' ἄκουσ'. 1500

ΙΩΝ. ἐξ ἐμοῦ τ' οὐχ ὅσι' ἔθνησκες.

ΚΡ. ἰὼ· δειναὶ μὲν τότε τύχαι,
δεινὰ δὲ καὶ τάδ'· ἐλίσσόμεσθ' ἐκείθεν
ἐνθάδε δυστυχίαισιν 1505
εὐτυχίαις τε πάλιν,
μεθίσταται δὲ πνεύματα.
μενέτω· τὰ πάροιθεν ἄλις κακὰ· νῦν δ'
ἐγένετό τις οὔρος ἐκ κακῶν, ὦ παῖ.

ΧΟ. μηδεὶς δοκεῖτω μηδὲν ἀνθρώπῳ ποτὲ 1510
ἄελπτον εἶναι πρὸς τὰ τυγχάνοντα νῦν.

ΙΩΝ. ὦ μεταβαλοῦσα μυρίους ἤδη βροτῶν
καὶ δυστυχῆσαι καὶ τοῖς αὖ πρᾶξαι καλῶς,
τύχῃ, παρ' οἴαν ἦλθομεν στάθμην βίου,
μητέρα φονεῦσαι καὶ παθεῖν ἀνάξια. 1515
φεῦ·

ἄρ' ἐν φαενναῖς ἡλίου περιπτυχαῖς
ἔνεστι πάντα τάδε καθ' ἡμέραν μαθεῖν;

- φίλον μὲν οὖν σ' εὖρημα, μῆτερ, εὖρομεν,
καὶ τὸ γένος οὐδὲν μεμπτόν ὡς ἡμῖν τόδε·
τὰ δ' ἄλλα πρὸς σέ βούλομαι μόνην φράσαι. 1520
δεῦρ' ἔλθ'· ἐς οὓς γὰρ τοὺς λόγους εἰπεῖν θέλω
καὶ περικαλύψαι τοῖσι πράγμασι σκότον.
ὄρα σύ, μῆτερ, μὴ σφαλεῖς' ἃ παρθένους
ἐγγίγνεται νοσηματ' εἰς κρυπτοὺς γάμους,
ἔπειτα τῷ θεῷ προστίθης τὴν αἰτίαν, 1525
καὶ τοῦμόν αἰσχροὺν ἀποφυγεῖν πειρωμένη,
Φοῖβω τεκεῖν με φῆς, τεκοῦς' οὐκ ἐκ θεοῦ.
ΚΡ. μὰ τὴν παρασπίζουσαν ἄρμασιν ποτε
Νίκην Ἀθάναν Ζηνὶ γηγενεῖς ἔπι,
οὐκ ἔστιν ὅστις σοι πατὴρ θνητῶν, τέκνον, 1530
ἀλλ' ὅσπερ ἐξέθρεψε Λοξίας σ' ἀνάξ.
ΙΩΝ. πῶς οὖν τὸν αὐτοῦ παῖδ' ἔδωκ' ἄλλω πατρὶ
Ξούθου τέφρῃσι παῖδά μ' ἐκπεφυκέναι;
ΚΡ. πεφυκέναι μὲν οὐχί, δωρεῖται δέ σε
αὐτοῦ γεγῶτα· καὶ γὰρ ἂν φίλος φίλῳ 1535
δοίη τὸν αὐτοῦ παῖδα δεσπότην δόμων.
ΙΩΝ. ὁ θεὸς ἀληθής, ἣ μάτην μαντεύεται,
ἔμοῦ ταράσσει, μῆτερ, εἰκότως φρένα.
ΚΡ. ἄκουε δὴ νυν ἅμ' ἐσῆλθεν, ὦ τέκνον·
εὐεργετῶν σε Λοξίας ἐς εὐγενῆ 1540
δόμον καθίζει· τοῦ θεοῦ δὲ λεγόμενος,
οὐκ ἔσχες ἂν ποτ' οὔτε παγκλήρους δόμους
οὔτ' ὄνομα πατρός. πῶς γὰρ, οὐ γ' ἐγὼ γάμους
ἐκρυπτον αὐτὴ καὶ σ' ἀπέκτεινον λάθρα;
ὁ δ' ὠφελῶν σε προστίθης' ἄλλω πατρὶ. 1545
ΙΩΝ. οὐχ ὥδε φανύλως αὐτ' ἐγὼ μετέρχομαι,
ἀλλ' ἱστορήσω Φοῖβον εἰσελθὼν δόμους,
εἴτ' εἰμὶ θνητοῦ πατρὸς εἴτε Λοξίου.
ἔα· τίς οἴκων θυροδόκων ὑπερτελὴς
ἀντήλιον πρόσσωπον ἐκφαίνει θεῶν; 1550
φεύγωμεν, ὦ τεκοῦσα, μὴ τὰ δαιμόνων
ὀρῶμεν, εἰ μὴ καιρός ἐσθ' ἡμᾶς ὀρᾶν.
ΑΘ. μὴ φεύγετ'· οὐ γὰρ πολεμίαν με φεύγετε,
ἀλλ' ἐν τ' Ἀθήναις ἀνθ' ἃδ' οὔσαν εὐμενῆ.
ἐπώνυμος δὲ σῆς ἀφικόμην χθονός, 1555
Παλλὰς, δρόμῳ σπένσας' Ἀπόλλωνος πάρα,

ὃς εἰς μὲν ὕψιν σφῶν μολεῖν οὐκ ἤξιον,
 μὴ τῶν πάροιθε μέμψις εἰς μέσον μόλη,
 ἡμᾶς δὲ πέμπει τοὺς λόγους ὑμῖν φράσαι,
 ὥς ἦδε τίκτει σ' ἐξ Ἀπόλλωνος πατρός, 1560
 δίδωσι δ' οἷς ἔδωκεν, οὐ φύσασί σε,
 ἀλλ' ὥς νομίζης οἶκον εὐγενέστατον.
 ἐπεὶ δ' ἀνέωχθη προᾶγμα μηνυθὲν τόδε,
 θανεῖν σε δείσας μητρὸς ἐκ βουλευμάτων
 καὶ τήνδε πρὸς σοῦ, μηχαναῖς ἐρρύσατο. 1565
 ἔμελλε δ' αὐτὰ διασιωπήσας ἀναξ
 ἐν ταῖς Ἀθήναις γνωριεῖν ταύτην τε σήν,
 σέ θ' ὥς πέφυκας τῆσδε καὶ Φοῖβον πατρός.
 ἀλλ' ὥς περαίνω προᾶγμα, καὶ χρησμούς θεῶν,
 ἐφ' οἷσιν ἔξενξ' ἄρματ', εἰσακούσατον. 1570
 λαβοῦσα τόνδε παῖδα Κεκροπίαν χθόνα
 χώρει, Κρέουσα, κεῖς θρόνους τυραννικούς
 ἰδρυσον· ἐκ γὰρ τῶν Ἑρεχθίδεωσ γενῶς
 δίκαιος ἄρχειν τῆς γ' ἐμῆς ὅδε χθονός.
 ἔσται δ' ἂν Ἑλλάδ' εὐκλεής· οἱ τοῦδε γὰρ 1575
 παῖδες γενόμενοι τέσσαρες ῥίξης μιᾶς,
 ἐπώννυμοι γῆς κάπιφυλίου χθονός
 λαῶν ἔσονται, σκόπελον οἱ ναίουσ' ἐμόν.
 Γελέων μὲν ἔσται πρῶτος· εἴτα δεύτερον
 Ὀπλητες Ἀργαδῆς τ' ἐμῆς τ' ἀπ' αἰγίδος 1580
 ἐν φυλὸν ἔξουσ' Αἰγικορῆς. οἱ τῶνδε δ' αὖ
 παῖδες γενόμενοι σὺν χρόνῳ πεπρωμένῳ
 Κυκλάδας ἐποικήσουσι νησαίας πόλεις
 χέρσους τε παράλους, ὃ σθένος τῇ μὴ χθονὶ
 δίδωσιν· ἀντίπορθμα δ' ἡπείροιν δυοῖν 1585
 πεδία κατοικήσουσιν, Ἀσιάδος τε γῆς
 Εὐρωπίας τε· τοῦδε δ' ὀνόματος χάριν
 Ἴωνες ὀνομασθέντες ἔξουσιν κλέος.
 Ξούθῳ δὲ καὶ σοὶ γίγνεται κοινὸν γένος,
 Δῶρος μὲν, ἐνθεν Δωρὶς ὑμνηθήσεται 1590
 πόλις· κατ' αἶαν Πελοπίαν δ' ὁ δεύτερος
 Ἀχαιός, ὃς γῆς παραλίας Ῥίον πέλας
 τύραννος ἔσται, κάπισημανθήσεται
 κείνου κεκληῆσθαι λαὸς ὄνομ' ἐπώννυμος.
 καλῶς δ' Ἀπόλλων πάντ' ἐπραξε· πρῶτα μὲν 1595

ἄνοσον λοχεύει σ', ὥστε μὴ γινῶναι φίλους·
 ἐπεὶ δ' ἔτικτες τόνδε παῖδα κἀπέθου
 ἐν σπαργάνοισιν, ἀρπάσαντ' ἐς ἀγκάλας
 Ἑρμῆν κελεύει δεῦρο πορθμεῦσαι βρέφος,
 ἔθροψέ τ' οὐδ' εἴασεν ἐκπνεῦσαι βίον. 1600
 νῦν οὖν σιώπα, παῖς ὅδ' ὥς πέφυκε σός,
 ἴν' ἡ δόκησις Ξοῦθον ἠδέως ἔχη,
 σύ τ' αὖ τὰ στυγρὰ ἀγάθ' ἔχουσ' ἱῆς, γύναι.
 καὶ χαίρει· ἐκ γὰρ τῆσδ' ἀναψυχῆς πόνων
 εὐδαίμων· ὑμῖν πότμον ἐξαγγέλλομαι. 1605

ΙΩΝ. ὦ Διὸς Παλλὰς μεγίστου θύγατερ, οὐκ ἀπιστία
 σοὺς λόγους ἐνδεξόμεσθα· πεῖθομαι δ' εἶναι πατρός
 Λοξίου καὶ τῆσδε· καὶ πρὶν τοῦτο δ' οὐκ ἄπιστον ἦν.

ΚΡ. τὰ μὰ νῦν ἄκουσον· αἰνῶ Φοῖβον οὐκ αἰνοῦσα πρὶν,
 οὔνεχ' οὐ ποτ' ἠμέλῃσε παιδὸς ἀποδίδωσί μοι. 1610
 αἶδε δ' εὐωποὶ πύλαι μοι καὶ θεοῦ χρηστήρια,
 δυσμενῇ πάροιθεν ὄντα. νῦν δὲ καὶ ῥόπτρων χέρας
 ἠδέως ἐκκρημνάμεσθα καὶ προσεννέπω πύλας.

ΑΘ. ἦνεσ' οὔνεκ' εὐλογεῖς θεὸν μεταβαλοῦς· αἰεὶ ποτε
 χρόνια μὲν τὰ τῶν θεῶν πως, εἰς τέλος δ' οὐκ
 ἀσθενῇ. 1615

ΚΡ. ὦ τέκνον, στείχωμεν οἴκους. ΑΘ. στείχεθ', ἔψομαι
 δ' ἐγώ.

ΙΩΝ. ἀξία γ' ἡμῶν ὁδοῦρός. ΚΡ. καὶ φιλοῦσά γε πτόλιν.

ΑΘ. εἰς θρόνους δ' ἵζου παλαιούς. ΙΩΝ. ἄξιον τὸ
 κτῆμά μοι.

ΧΘ. ὦ Διὸς Αἰητοῦς τ' Ἀπολλων, χαῖρ'· ὅτῳ δ' ἐλαύν-
 νεται

συμποραῖς οἶκος, σέβοντα δαίμονας θαρσεῖν χρεών·
 εἰς τέλος γὰρ οἱ μὲν ἐσθλοὶ τυγχάνουσιν ἀξίων, 1621
 οἱ κακοὶ δ', ὥσπερ πεφύκασ', οὐ ποτ' εὖ πράξειαν
 ἄν.

K Y K A Ω Ψ.

ΤΑ ΤΟΥ ΔΡΑΜΑΤΟΣ ΠΡΟΣΩΠΑ.

ΣΕΙΛΗΝΟΣ.

ΧΟΡΟΣ ΣΑΤΥΡΩΝ.

ΟΔΥΣΣΕΥΣ.

ΚΥΚΛΩΨ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ.

Ὀδυσσεὺς ἀναχθεὶς ἐξ Ἰλίου εἰς Σικελίαν ἀπερρίφη, ἔνθα ὁ Πολύφημος· εὐρῶν δὲ δουλεύοντας ἐκεῖ τοὺς Σατύρους, οἶνον δοὺς ἄρνας ἤμελλε λαμβάνειν καὶ γάλα παρ' αὐτῶν. ἐπιφανεὶς δ' ὁ Πολύφημος ζητεῖ τὴν αἰτίαν τῆς τῶν ἰδίων ἐκφορήσεως. ὁ Σειληνὸς δὲ τὸν ξένον ληστεύοντα καταλαβεῖν φησι. * * *

ΕΥΡΥΠΙΔΟΥ
Κ Υ Κ Α Ω Ψ.

ΣΕΙ. ὦ Βρόμιε, διὰ σὲ μυρίους ἔχω πόνους
 νῦν χῶτ' ἐν ἥβῃ τοῦμόν εὐσθένει δέμας·
 πρῶτον μὲν ἡνίκ' ἐμμανὴς Ἥρας ὑπο
 Νύμφας ὀρείας ἐκλιπὼν ὄχου τροφούς·
 ἔπειθ' ὅτ' ἀμφὶ γηγενῇ μάχην δορὸς 5
 ἐνδέξιός σῳ ποδὶ παρασπιστῆς γεγώς
 Ἐγκέλαδον ἱτέαν μέσσην θένων δορὶ
 ἔκτεινα. φέρ' ἴδω, τοῦτ' ἰδὼν ὄναρ λέγω;
 οὐ μὰ Δί', ἐπεὶ καὶ σκυλ' ἔδειξα Βακχίῳ.
 καὶ νῦν ἐκείνων μείζον' ἔξαντλῶ πόνον. 10
 ἐπεὶ γὰρ Ἥρα σοι γένος Τυρσηνικὸν
 ληστῶν ἐπῶρσεν, ὥς ὀδηθείης μακράν,
 ἐγὼ πυθόμενος σὺν τέκνοισι ναυστολῶ
 σέθεν κατὰ ζήτησιν. ἐν πρύμνῃ δ' ἄκρα
 αὐτὸς λαβὼν εὐθυνον ἀμφῆρες δόρυ, 15
 παῖδές τ' ἐρετμοῖς ἤμενοι, γλαυκὴν ἄλα
 ῥοθίοισι λευκαίνοντες, ἐξήτουν σ' ἄναξ.
 ἦδη δὲ Μαλέας πλησίον πεπλευκότας
 ἀπηλιώτης ἄνεμος ἐμπνεύσας δορὶ
 ἐξέβαλεν ἡμᾶς τήνδ' ἐς Αἰτναίαν πέτραν, 20
 ἵν' οἱ μονῶπες ποντίου παῖδες θεοῦ
 Κύκλωπες οἰκοῦσ' ἄντρο' ἔρημ' ἀνδροκτόνοι.

τούτων ἐνὸς ληφθέντες ἐσμὲν ἐν δόμοις
 δοῦλοι· καλοῦσι δ' αὐτὸν ᾧ λατρεύομεν
 Πολύφημον. ἀντὶ δ' εὐίων βακχευμάτων 25
 ποιμένας Κύκλωπος ἀνοσίου ποιμαίνομεν.
 παῖδες μὲν οὖν μοι κλιτύων ἐν ἐσχάτοις
 νέμουσι μῆλα νέα νέοι πεφυκότες,
 ἐγὼ δὲ πληροῦν πίστρα καὶ σαίρειν στέγας
 μένων τέταγμαί τάσδε, τῷ τε δυσσεβεῖ 30
 Κύκλωπι δείπνων ἀνοσίων διάκονος.
 καὶ νῦν τὰ προσταχθέντ' ἀναγκαίως ἔχει,
 σαίρειν σιδηρᾷ τῇδέ μ' ἄρπάγῃ δόμους,
 ὥς τόν τ' ἀπόντα δεσπότην Κύκλωπ' ἐμὸν
 καθαροῖσιν ἄντροις μῆλά τ' εἰσδεχώμεθα. 35
 ἤδη δὲ παῖδας προσνέμοντας εἰσορᾷ
 ποιμένας. τί ταῦτα; μῶν κρότος σικινίδων
 ὅμοιος ὑμῖν νῦν τε ᾗτε Βακχίῳ
 κώμῳ συνασπίζοντες Ἀλθαΐας δόμους
 προσῆτ' αἰοιδαῖς βαρβίτων σαυλούμενοι; 40
 XO. πᾶ μοι γενναίων πατέρων στρ.
 γενναίων τ' ἐκ τοκάδων,
 πᾶ δὴ μοι νίσσει σκοπέλους;
 οὐ τᾶδ' ὑπὴνεμος αὔρα
 καὶ ποιηρὰ βοτάνα, 45
 δινᾶέν θ' ὕδωρ ποταμῶν
 ἐν πίστραις κεῖται πέλας ἄν-
 τρων, οὐ σοι βλαχαὶ τεκέων;
 ψύττα, σὺ τὰδ' οὐ, κοῦ τὰδε νεμεῖ,
 οὐδ' αὖ κλιτὺν δροσεράν; 50
 ὦή, ῥίψω πέτρον τάχα σου·
 ὕπαγ' ὦ ὕπαγ' ὦ κεράστα,
 μηλοβότα στασίωρον

Κύκλωπος ἀγροβότα.

σπαργῶντας μᾶστονς χάλασον·

ἀντ. 55

δέξαι θηλαῖσι σποράς,

ᾧς λείπεις ἄρνων θαλάμοις.

ποθοῦσί σ' ἄμερόκοιτοι

βλαχαὶ σμικρῶν τεκέων.

εἰς αὐλάν ποτ', ἀμφιθαλεῖς

60

ποιηροὺς λείπουσα νομούς,

Αἰτναίων εἴσει σκοπέλων;

οὐ τάδε Βρόμιος, οὐ τάδε χοροὶ

Βάκχαι τε θυρσοφόροι,

οὐ τυπάνων ἀραγμοί,

65

οὐκ οἴνου χλωρὰ σταγόνες

67

κρήναις παρ' ὑδροχύτοις,

66

οὐ λυσσάματα Νυμφᾶν.

Ἰακχον Ἰακχον ᾧδαν

μέλπω πρὸς τὰν Ἀφροδίταν,

70

ἂν θηρεύων πετόμαν

Βάκχαις σὺν λευκόποσιν.

ᾧ φίλος ᾧ φίλε Βακχεῖε, ποῖ οἰοπολεῖς

ξανθὰν χαίταν σείων;

75

ἐγὼ δ' ὁ σὸς πρόπολος

θητεύω Κύκλωπι

τῷ μονοδέρκτῃ, δοῦλος ἀλαίνων

σὺν τᾷδε τράγου χλαῖνα μελέα

80

σᾶς χωρὶς φιλίας.

ΣΕΙ. σιγήσατ', ᾧ τέκν', ἄντρα δ' εἰς πετρηρεφῇ
ποιμνας ἀθροῖσαι προσπόλοις κελεύσατε.

ΧΟ. χωρεῖτ'· ἀτὰρ δὴ τίνα, πάτερ, σπουδὴν ἔχεις;

ΣΕΙ. ὁρῶ πρὸς ἀκταῖς ναὸς Ἑλλάδος σκάφος
κώπης τ' ἄνακτας σὺν στρατηλάτῃ τινὶ
στείχοντας εἰς τόδ' ἄντρον, ἀμφὶ δ' αὐχέσι

85

τεύχη φέρονται κενά, βορᾶς κεχρημένοι,
κρωσσούς θ' ὑδρηλούς. ὧ ταλαίπωροι ξένοι.
τίνες πότ' εἰσιν; οὐκ ἴσασι δεσπότην 90
Πολύφημον οἷός ἐστιν, ἄξενον στέγην
τήνδ' ἐμβεβῶτες καὶ Κυκλωπίαν γνάθον
τὴν ἀνδροβορῶτα δυστυχῶς ἀφιγμένοι.
ἀλλ' ἥσυχοι γίγνεσθ', ἵν' ἐκπνυθώμεθα
πόθεν πάρεισι Σικελὸν Αἰτναῖον πάγον. 95

ΟΔ. ξένοι, φράσαιτ' ἂν νᾶμα ποτάμιον πόθεν
δίψης ἄκος λάβοιμεν; εἴτε τις θέλει
βορὰν ὁδησαι ναυτίλοις κεχρημένοις;
τί χρῆμα; Βρομίον πόλιν ἔοιγμεν εἰσβαλεῖν.
Σατύρων πρὸς ἄντροις τόνδ' ὅμιλον εἰσορῶ. 100
χαίρειν προσεῖπα πρῶτα τὸν γεραίτατον.

ΣΕΙ. χαῖρ', ὦ ξέν', ὅστις δ' εἰ φράσον πάτραν τε σήν.

ΟΔ. Ἴθακος Ὀδυσσεύς, γῆς Κεφαλλήνων ἀνάξ.

ΣΕΙ. οἶδ' ἄνδρα κρόταλον, δριμὺν Σισύφου γένος.

ΟΔ. ἐκεῖνος οὗτός εἰμι· λοιδορεῖ δὲ μῆ. 105

ΣΕΙ. πόθεν Σικελίαν τήνδε ναυστολῶν πάρει;

ΟΔ. ἐξ Ἰλίου γε καπὸ Τρωικῶν πόνων.

ΣΕΙ. πῶς; πορθμὸν οὐκ ἤδειςθα πατρῴας χθονός;

ΟΔ. ἀνέμων θύελλαι δεῦρό μ' ἤρπασαν βίᾱ.

ΣΕΙ. παπαῖ· τὸν αὐτὸν δαίμον' ἐξαντλεῖς ἐμοί. 110

ΟΔ. ἦ καὶ σὺ δεῦρο πρὸς βίαν ἀπεστάλης;

ΣΕΙ. ληστὰς διώκων, οἷ Βρόμιον ἀνῆρπασαν.

ΟΔ. τίς δ' ἦδε χώρα, καὶ τίνες ναίουσί νιν;

ΣΕΙ. Αἰτναῖος ὄχθος Σικελίας ὑπέρτατος.

ΟΔ. τείχη δὲ ποῦ ἔστι καὶ πόλεως πυργώματα; 115

ΣΕΙ. οὐκ εἶς· ἔρημοι πρῶνες ἀνθρώπων, ξένε.

ΟΔ. τίνες δ' ἔχουσι γαῖαν; ἢ θηρῶν γένος;

ΣΕΙ. Κύκλωπες ἄντρ' οἰκοῦντες, οὐ στέγας δόμων.

ΟΔ. τίνος κλύοντες; ἢ δεδήμευται κράτος;

- ΣΕΙ. νομάδες· ἀκούει δ' οὐδὲν οὐδεὶς οὐδενός. 120
 ΟΔ. σπείρουσι δ', ἢ τῷ ξῶσι, Δήμητρος στάχυν;
 ΣΕΙ. γάλακτι καὶ τυροῖσι καὶ μήλων βορᾷ.
 ΟΔ. Βρομίου δὲ πῶμ' ἔχουσιν, ἀμπέλου ῥοάς;
 ΣΕΙ. ἦκιστα· τοιγὰρ ἄχορον οἰκοῦσι χθόνα.
 ΟΔ. φιλόξενοι δὲ ᾧσίοι περὶ ξένους; 125
 ΣΕΙ. γλυκύτατά φασι τὰ κρέα τοὺς ξένους φορεῖν.
 ΟΔ. τί φής; βορᾷ χαίρουσιν ἀνθρωποκτόνῳ;
 ΣΕΙ. οὐδεὶς μολῶν δεῦρ' ὅστις οὐ κατεσφάγη.
 * * * * *
- ΟΔ. αὐτὸς δὲ Κύκλωψ ποῦ'στιν; ἢ δόμων ἔσω;
 ΣΕΙ. φροῦδος πρὸς Αἴτνη θήρας ἰχνεύων κυσίν. 130
 ΟΔ. οἶσθ' οὖν ὃ δρᾷσον, ὥς ἀπαίρωμεν χθονός;
 ΣΕΙ. οὐκ οἶδ', Ὀδυσσεῦ· πᾶν δέ σοι δρῶημεν ἄν.
 ΟΔ. ὁδησον ἡμῖν σῖτον, οὗ σπανίζομεν.
 ΣΕΙ. οὐκ ἔστιν, ὥσπερ εἶπον, ἄλλο πλὴν κρέας.
 ΟΔ. ἀλλ' ἡδὺ λιμοῦ καὶ τόδε σχετήριον. 135
 ΣΕΙ. καὶ τυρὸς ὀπίας ἔστι καὶ βοὸς γάλα.
 ΟΔ. ἐκφέρετε· φῶς γὰρ ἐμπολήμασιν πρέπει.
 ΣΕΙ. σὺ δ' ἀντιδώσεις, εἰπέ μοι, χρυσὸν πόσον;
 ΟΔ. οὐ χρυσόν, ἀλλὰ πῶμα Διονύσου φέρω.
 ΣΕΙ. ὦ φίλτατ' εἰπών, οὗ σπανίζομεν πάλαι. 140
 ΟΔ. καὶ μὴν Μάρων μοι πῶμ' ἔδωκε, παῖς θεοῦ.
 ΣΕΙ. ὃν ἐξέθρεψα ταῖσδ' ἐγὼ ποτ' ἀγκάλαις;
 ΟΔ. ὁ Βακχίου παῖς, ὥς σαφέστερον μάθης.
 ΣΕΙ. ἐν σέλμασι νεῶς ἔστιν, ἢ φέρεις σύ νιν;
 ΟΔ. ὅδ' ἀσκός, ὃς κεύθει νιν· εἰσορᾷς, γέρον; 145
 ΣΕΙ. οὔτος μὲν οὐδ' ἂν τὴν γνάθον πλησείέ μου.
 ΟΔ. ναὶ δις τόσον πῶμ' ὅσον ἂν ἐξ ἀσκοῦ ῥυῇ.
 ΣΕΙ. καλήν γε κρήνην εἶπας ἡδεῖάν τ' ἐμοί.
 ΟΔ. βούλει σε γεύσω πρῶτον ἄκρατον μέθυ;
 ΣΕΙ. δίκαιον· ἢ γὰρ γεῦμα τὴν ὤνῃν καλεῖ. 150

- ΟΔ. καὶ μὴν ἐφέλκω καὶ ποτῆρ' ἄσκοῦ μέτα.
 ΣΕΙ. φέρ' ἐγκάναξον, ὥς ἀναμνησθῶ πιῶν.
 ΟΔ. ἰδού. ΣΕΙ. παπαιάξ, ὥς καλὴν ὀσμὴν ἔχει.
 ΟΔ. εἶδες γὰρ αὐτήν; ΣΕΙ. οὐ μὰ Δί', ἀλλ' ὀσφραί-
 νομαι.
 ΟΔ. γεῦσαί νυν, ὥς ἂν μὴ λόγῳ 'παινῆς μόνον. 155
 ΣΕΙ. βαβαί· χορεῦσαι παρακαλεῖ μ' ὁ Βάκχιος.
 ᾶ ᾶ ᾶ.
 ΟΔ. μῶν τὸν λάρυγγα διεκάναξέ σου καλῶς;
 ΣΕΙ. ὥστ' εἰς ἄκρους γε τοὺς ὄνυχας ἀφίκετο.
 ΟΔ. πρὸς τῷδε μέντοι καὶ νόμισμα δώσομεν. 160
 ΣΕΙ. χάλα τὸν ἄσκον μόνον· ἔα τὸ χρυσίον.
 ΟΔ. ἐκφέρετέ νυν τυρεύματ' ἢ μῆλων τόκον.
 ΣΕΙ. δράσω τάδ', ὀλίγον φροντίσας γε δεσποτῶν.
 ὥς ἐκπιεῖν γ' ἂν κύλικα μαινοίμην μίαν,
 πάντων Κυκλώπων ἀντιδοὺς βοσκήματα, 165
 ῥῖψαί τ' ἐς ἄλμην λευκάδος πέτρας ἄπο,
 ἅπαξ μεθυσθεὶς καταβαλὼν τε τὰς ὀφρῦς.
 ὥς ὅς γε πίνων μὴ γέγηθε μαίνεται·
 ἵν' ἔστι τουτί τ' ὀρθὸν ἐξανιστάναι
 μαστοῦ τε δραγμὸς καὶ παρεσκευασμένου 170
 ψαῦσαι χεροῖν λειμῶνος, ὀρχηστὺς θ' ἅμα
 κακῶν τε λῆστις. εἴτ' ἐγὼ οὐ κυνήσομαι
 τοιόνδε πῶμα, τὴν Κύκλωπος ἀμαθίαν
 κλαίειν κελεύων καὶ τὸν ὀφθαλμὸν μέσον;
 ΧΟ. ἄκου', Ὀδυσσεῦ, διαλαλήσωμέν τί σοι. 175
 ΟΔ. καὶ μὴν φίλοι γε προσφέρεσθε πρὸς φίλον.
 ΧΟ. ἐλάβετε Τροίαν τὴν Ἑλένην τε χειρίαν;
 ΟΔ. καὶ πάντα γ' οἶκον Πριαμίδων ἐπέρσαμεν.
 ΧΟ. οὐκουν ἐπειδὴ τὴν νεᾶνιν εἴλετε,
 ἅπαντες αὐτὴν διεκροτήσατ' ἐν μέρει, 180
 ἐπεὶ γε πολλοῖς ἥδεται γαμουμένη;

- τὴν προδότιν, ἣ τοὺς θυλάκους τοὺς ποικίλους
περὶ τοῖν σκελοῖν ἰδοῦσα καὶ τὸν χρύσειον
κλοιὸν φοροῦντα περὶ μέσον τὸν αὐχένα
ἔξεπτοήθη, Μενέλεων ἀνθρώπιον 185
λῶστον λιποῦσα. μηδαμοῦ γένος ποτὲ
φῦναι γυναικῶν ὥφελ', εἰ μὴ' μοὶ μόνῳ.
- ΣΕΙ. ἰδοὺ τάδ' ὑμῖν ποιμνίων βοσκήματα,
ἄναξ Ὀδυσσεῦ, μηκάδων ἀρνῶν τροφαί,
πηκτοῦ γάλακτός τ' οὐ σπάνια τυρεύματα. 190
φέρεισθε, χωρεῖθ' ὥς τάχιστ' ἄντρων ἄπο,
βότρυος ἐμοὶ πῶμ' ἀντιδόντες εὐίου.
οἴμοι· Κύκλωψ ὅδ' ἔρχεται· τί δράσομεν;
- ΟΔ. ἀπολώλαμεν γάρ, ὦ γέρον· ποῖ χρὴ φυγεῖν;
- ΣΕΙ. ἔσω πέτρας τῆσδ', οὐπερ ἂν λάθοιτέ γε. 195
- ΟΔ. δεινὸν τόδ' εἶπας, ἀρκύων μολεῖν ἔσω.
- ΣΕΙ. οὐ δεινόν· εἰσὶ καταφυγαὶ πολλαὶ πέτρας.
- ΟΔ. οὐ δῆτ'· ἐπεὶ τὰν μεγάλ' ἂν ἡ Τροία στένοι,
εἰ φευξόμεσθ' ἐν' ἄνδρα· μυρίον δ' ὄχλον
Φρυγῶν ὑπέστην πολλάκις σὺν Ἀσπίδι. 200
ἀλλ' εἰ θανεῖν δεῖ, κατθανούμεθ' εὐγενῶς,
ἢ ζῶντες αἶνον τὸν πάρος γε σώσομεν.
- ΚΥ. ἄνεχε, πάρεχε, τί τάδε; τίς ἢ ῥαθυμία;
τί βακχιάζετ'; οὐχὶ Διόνυσος τάδε,
οὐ κρόταλα χαλκοῦ τυμπάνων τ' ἀράγματα. 205
πῶς μοι κατ' ἄντρα νεόγονα βλαστήματα;
ἢ πρὸς τε μαστοῖς εἰσι χυτὸ μητέρων
πλευρὰς τρέχουσι, σχοινίοις τ' ἐν τεύχεσι
πλήρωμα τυρῶν ἐστὶν ἐξημελγμένον;
τί φατε; τί λέγετε; τάχα τις ὑμῶν τῷ ξύλῳ 210
δάκρυα μεθήσει· βλέπετ' ἄνω καὶ μὴ κάτω.
- ΧΟ. ἰδοὺ, πρὸς αὐτὸν τὸν Δί' ἀνακεκύφαμεν,
τά τ' ἄστρα καὶ τὸν Ὠρίωνα δέρομαι.

- ΚΤ. ἄριστόν ἐστιν εὖ παρεσκευασμένον;
- ΧΟ. πάρεστιν. ὁ φάρυγξ εὐτρεπῆς ἔστω μόνον. 215
- ΚΤ. ἧ καὶ γάλακτός εἰσι κρατῆρες πλέω;
- ΧΟ. ὥστ' ἐκπείειν γέ σ', ἦν θέλῃς, ὅλον πίθον.
- ΚΤ. μήλειον ἢ βόειον ἢ μεμιγμένον;
- ΧΟ. ὃν ἂν θέλῃς σύ· μὴ' μὲ καταπίῃς μόνον.
- ΚΤ. ἦκιστ'· ἐπεὶ μ' ἂν ἐν μέσῃ τῇ γαστέρι 220
 πηδῶντες ἀπολέσαιτ' ἂν ὑπὸ τῶν σχημάτων.
 ἕα· τίς τὸν ὄχλον τόνδ' ὄρω πρὸς αὐλίοις;
 λησταί τινες κατέσχον ἢ κλωπες χθόνα;
 ὄρω γέ τοι τοῦσδ' ἄρνας ἐξ ἄντρων ἐμῶν
 στρεπταῖς λύγοισι σῶμα συμπεπλεγμένους, 225
 τεύχη τε τυρῶν συμμιγῇ, γέροντά τε
 πληγαῖς πρόσωπον φαλακρὸν ἐξωδηκότα.
- ΣΕΙ. ὦμοι, πυρέσσω συγκεκομμένος τάλας.
- ΚΤ. ὑπὸ τοῦ; τίς εἰς σὸν κρατ' ἐπύκτευσεν, γέρον;
- ΣΕΙ. ὑπὸ τῶνδε, Κύκλωψ, ὅτι τὰ σ' οὐκ εἶων φέρειν.
- ΚΤ. οὐκ ἦσαν ὄντα θεόν με καὶ θεῶν ἄπο; 231
- ΣΕΙ. ἔλεγον ἐγὼ τάδ'· οἱ δ' ἐφόρουν τὰ χρήματα
 καὶ τὸν γε τυρὸν οὐκ ἐῶντος ἦσθιον
 τοὺς τ' ἄρνας ἐξεφοροῦντο· δῆσαντες δὲ σὲ
 κλωῶ τριπῆχει κατὰ τὸν ὀμφαλὸν μέσον 235
 τὰ σπλάγχυν' ἔφασκον ἐξαμήσεσθαι βία,
 μάστιγι τ' εὖ τὸ νῶτον ἀποθλίψειν σέθεν,
 κᾶπειτα συνδήσαντες ἐς θάδῳλια
 τῆς νηὸς ἐμβαλόντες ἀποδώσειν τινὶ
 πέτρους μοχλεύειν, ἢ 'ς μυλῶνα καταβαλεῖν. 240
- ΚΤ. ἄληθες; οὐκ οὖν κοπίδας ὥς τάχιστ' ἰὼν
 θήξεις μαχαίρας καὶ μέγαν φάκελον ξύλων
 ἐπιθείς ἀνάψεις; ὥς σφαγέντες αὐτίκα
 πληθούσι νηδὺν τὴν ἐμὴν ἀπ' ἀνθρακος
 θερμὴν ἔδοντας δαῖτ' ἄτερ κρεανόμων, 245

- τὰ δ' ἐκ λέβητος ἐφθὰ καὶ τετηγότα·
 ὥς ἔκπλεώς γε δαιτός εἰμ' ὀρεσκόου·
 ἄλλης λεόντων ἐστί μοι θοινωμένῃ
 ἐλάφῳ τε, χρόνιος δ' εἰμ' ἀπ' ἀνθρώπων βορᾶς.
- ΣΕΙ. τὰ καινὰ γ' ἐκ τῶν ἡθάδων, ᾧ δέσποτα, 250
 ἡδίων' ἐστίν. οὐ γὰρ αὖ νεωστί γε
 ἄλλοι πρὸς ἄντρα τὰ σά γ' ἀφίκοντο ξένοι.
- ΟΔ. Κύκλωψ, ἄκουσον ἐν μέρει καὶ τῶν ξένων.
 ἡμεῖς βορᾶς χρήζοντες ἐμπολὴν λαβεῖν
 σῶν ἄσσον ἄντρων ἦλθομεν νεὼς ἄπο. 255
 τοὺς δ' ἄρνας ἡμῖν οὗτος ἀντ' οἴνου σκύφου
 ἀπημπόλα τε κἀδίδου πιεῖν λαβών,
 ἐκὼν ἐκοῦσι, κοῦδὲν ἦν τούτων βίᾳ.
 ἀλλ' οὗτος ὑγίης οὐδὲν ὦν φησιν λέγει,
 ἐπεὶ κατελήφθη σοῦ λάθρα πωλῶν τὰ σά. 260
- ΣΕΙ. ἐγὼ; κακῶς γὰρ ἐξόλοι'. ΟΔ. εἰ ψεύδομαι.
- ΣΕΙ. μὰ τὸν Ποσειδῶ τὸν τεκόντα σ', ᾧ Κύκλωψ,
 μὰ τὸν μέγαν Τρίτωνα καὶ τὸν Νηρέα,
 μὰ τὴν Καλυψὶν τὰς τε Νηρέως κόρας,
 μὰ θ' ἱερὰ κύματ' ἰχθύων τε πᾶν γένος, 265
 ἀπώμοσ', ᾧ κάλλιστον ᾧ Κυκλώπιον,
 ᾧ δεσποτίσκε, μὴ τὰ σ' ἐξοδᾶν ἐγὼ
 ξένοισι χρήματ'. ἢ κακῶς οὗτοι κακοὶ
 οἱ παῖδες ἀπόλουνθ', οὓς μάλιστ' ἐγὼ φιλῶ.
- ΧΟ. αὐτὸς ἔχ'. ἔγωγε τοῖς ξένοις τὰ χρήματα 270
 περνάντα σ' εἶδον· εἰ δ' ἐγὼ ψευδῇ λέγω,
 ἀπόλοιθ' ὁ πατήρ μου, τοὺς ξένους δὲ μὴ ἀδίκει.
- ΚΥ. ψεύδεσθ'· ἔγωγε τῷδε τοῦ Παδαμάνθους
 πλείω πέποιθα καὶ δικαιότερον λέγω.
 θέλῳ δ' ἐρέσθαι· πόθεν ἐπλεύσατ', ᾧ ξένοι; 275
 ποδαποί, τίς ὑμᾶς ἐξεπαίδευσεν πόλις;
- ΟΔ. Ἰθακῆσιοι μὲν τὸ γένος, Ἰλίου δ' ἄπο,

πέρσαντες ἄστυ, πνεύμασιν θαλασσίοις
σὴν γαῖαν ἐξωσθέντες ἤκομεν, Κύκλωψ.

ΚΤ. ἢ τῆς κακίστης οἱ μετήλθεθ' ἄρπαγὰς 280

Ἑλένης Σκαμάνδρου γείτον' Ἰλίου πόλιν;

ΟΔ. οὔτοι, πόνον τὸν δεινὸν ἐξηντληκότες.

ΚΤ. αἰσχρὸν στράτευμά γ', οὔτινες μιᾶς χάριν
γυναικὸς ἐξεπλεύσατ' εἰς γαῖαν Φρυγῶν.

ΟΔ. θεοῦ τὸ πρᾶγμα· μηδέν' αἰτιῶ βροτῶν. 285

ἡμεῖς δέ σ', ὦ θεοῦ ποντίου γενναῖε παῖ,
ἱκετεύομέν τε καὶ λέγομεν ἐλευθέρως,

μὴ τλῆς πρὸς ἄντρα σοὺς ἀφιγμένους φίλους
κτανεῖν βοράν τε δυσσεβῇ θέσθαι γνάθοις·
οἱ τὸν σόν, ὦναξ, πατέρ' ἔχειν ναῶν ἔδρας 290

ἰδρυσάμεσθα γῆς ἐν Ἑλλάδος μυχοῖς.

ἱερός τ' ἄθραυστος Ταινάρου μένει λιμὴν

Μαλέας τ' ἄκροι κευθμῶνες ἢ τε Σουνίου

δίας Ἀθάνας σῶς ὑπάργυρος πέτρα

Γεραίστιοί τε καταφυγαί, τά θ' Ἑλλάδος 295

δύσφορά γ' ὀνειδή Φρυξὶν οὐκ ἐδώκαμεν·

ὦν καὶ σὺ κοινοῖ· γῆς γὰρ Ἑλλάδος μυχοὺς

οἰκεῖς ὑπ' Αἴτνῃ, τῇ πυριστάκτῳ πέτρῃ.

νόμος δὲ θνητοῖς, εἰς λόγους ἀποστρέφῃ,

ἱέτας δέχεσθαι ποντίους ἐφθαρμένους, 300

ξενία τε δοῦναι καὶ πέπλοις ἐπαρκέσαι,

οὐκ ἄμφι βουπόροισι πηχθέντας μέλη

ὀβελοῖσι νηδὺν καὶ γνάθον πλήσαι σέθεν.

ἄλλῃς δὲ Πριάμου γαῖ' ἐχήρωσ' Ἑλλάδα,

πολλῶν νεκρῶν πιούσα δορυπετῇ φόνον, 305

ἄλόχους τ' ἀνάνδρους γραῦς τ' ἄπαιδας ὄλεσε

πολιούς τε πατέρας. εἰ δὲ τοὺς λελειμμένους

σὺ συμπυρώσας δαῖτ' ἀναλώσεις πικράν,

ποῦ τρέφεται τις; ἀλλ' ἐμοὶ πιθοῦ, Κύκλωψ,

πάρες τὸ μάργον σῆς γνάθου, τὸ δ' εὐσεβὲς 310
τῆς δυσσεβείας ἀνθελοῦ· πολλοῖσι γὰρ
κέρδη πονηρὰ ζημίαν ἡμείψατο.

ΣΕΙ· παραινέσαι σοι βούλομαι· τῶν μὲν κρεῶν
μηδὲν λίπης τοῦδ'· ἦν δὲ τὴν γλῶσσαν δάκης,
κοιψὸς γενήσῃ καὶ λαλίστατος, Κύκλωψ. 315

ΚΥ· ὁ πλοῦτος, ἀνθρωπίσκε, τοῖς σοφοῖς θεός·
τὰ δ' ἄλλα κόμποι καὶ λόγων εὐμορφίαι.
ἄκρας δ' ἐναλίας ἄς κἀθ' ἴδρυται πατήρ
χαίρειν κελεύω· τί τάδε προυστήσω λόγῳ;
Ζηνὸς δ' ἐγὼ κεραυνὸν οὐ φρίσσω, ξένε, 320
οὐδ' οἶδ' ὅ τι Ζεὺς ἐστ' ἐμοῦ κρείσσων θεός.
οὐ μοι μέλει τὸ λοιπόν· ὥς δ' οὐ μοι μέλει
ἄκουσον. ὅταν ἄνωθεν ὄμβρον ἐκχέῃ,
ἐν τῇδε πέτρᾳ στέγν' ἔχω σκηνώματα,
ἣ μόνον ὅπτεον ἣ τι θήρειον δάκος 325
δαινύμενος, εὖ τέγγων τε γαστέρ' ὑπτίαν,
ἐπεκπιὼν γάλακτος ἀμφορέα, πέπλον
κρούω, Διὸς βρονταῖσιν εἰς ἔριον κτυπῶν.
ὅταν δὲ βορρᾶς χιόνα Θρήκιος χέῃ,
δοραῖσι θηρῶν σῶμα περιβαλὼν ἐμὸν 330
καὶ πῦρ ἀναίθων, χιόνος οὐδέν μοι μέλει.
ἣ γῆ δ' ἀνάγκη, κἄν θέλῃ κἄν μὴ θέλῃ,
τίκτουσα ποίαν τὰμὰ πιαίνει βοτά.
ἀγὼ οὔτινι θύω πλὴν ἐμοί, θεοῖσι δ' οὔ,
καὶ τῇ μερίστη γαστρὶ τῇδε δαιμόνων· 335
ὥς τοῦμπιεῖν γε καὶ φαγεῖν τοῦφ' ἡμέραν,
Ζεὺς οὗτος ἀνθρώποισι τοῖσι σώφροσι,
λυπεῖν δὲ μηδὲν αὐτόν· οἱ δὲ τοὺς νόμους
ἔθεντο ποικίλλοντες ἀνθρώπων βίον,
κλαίειν ἄνωγα· τὴν δ' ἐμὴν ψυχὴν ἐγὼ 340
οὐ παύσομαι δρῶν εὖ κατεσθίων τε σέ.

ξένια δὲ λήψει τοιάδ', ὥς ἄμεμπτος ὦ,
 πῦρ καὶ πατρῶον τόδε λέβητά θ', ὅς ξέσας
 σὴν σάρκα διαφόρητον ἀμφέξει καλῶς.
 ἀλλ' ἔρπετ' εἴσω, τῷ κατ' αὖλιον θεῷ 345
 ἔν' ἀμφὶ βωμὸν στάντες εὐωχῆτέ με.

ΟΔ. αἰαῖ, πόνους μὲν Τρωικοὺς ὑπεξέδυν
 θαλασσίους τε, νῦν δ' ἐς ἀνδρὸς ἀνοσίλου
 γνώμην κατέσχον ἀλίμενόν τε καρδίαν.
 ὦ Παλλὰς, ὦ δέσποινα Διογενὲς θεά, 350
 νῦν νῦν ἄρηξον· κρείσσονας γὰρ Ἴλιου
 πόνους ἀφῖγμαι κἀπὶ κινδύνου βάρθρα.
 σύ τ', ὦ φραεννῶν ἀστέρων οἰκῶν ἔδρας
 Ζεῦ ξένι', ὅρα τάδ'· εἰ γὰρ αὐτὰ μὴ βλέπεις,
 ἄλλως νομίζει Ζεὺς, τὸ μηδὲν ὦν, θεός. 355

ΧΟ. εὐρείας φάρυγγος, ὦ Κύκλωψ,
 ἀναστόμου τὸ χεῖλος· ὥς ἔτοιμά σοι
 ἐφθά καὶ ὀπτὰ καὶ ἀνθρακιᾶς ἅπο χναύειν,
 βρούκειν, κρεοκοπεῖν μέλη ξένων,
 δασυμάλλω ἐν αἰγίδι κλινομένῳ. 360
 μή μοι μὴ προδίδου·
 μόνος μόνῳ κόμιζε πορθμίδος σκάφος.
 χαιρέτω μὲν αὖλις ἦδε,
 χαιρέτω δὲ θυμάτων
 ἀποβώμιος ἃν ἔχει θυσίαν 365
 Κύκλωψ Αἰτναῖος ξενικῶν
 κρεῶν κεχαρμένος βορᾶ·
 νηλῆς ὁ τλάμων, ὅστις
 δωμάτων ἐφρεστίους ξενικοὺς 370
 ἱκτῆρας ἐκθύει δόμων,
 κόπτων βρούκων,
 ἐφθά τε δαινύμενος μυσαιοῖσιν ὁδοῦσιν
 ἀνθρώπων θέρμ' ἀπ' ἀνθρώκων κρέα.

- ΟΔ. ὦ Ζεῦ, τί λέξω, δεῖν' ἰδὼν ἄντρων ἔσω 375
 κοῦ πιστά, μύθοις εἰκότ' οὐδ' ἔργοις βροτῶν;
- ΧΟ. τί δ' ἔστ', Ὀδυσσεῦ; μῶν τεθοίνονται σέθεν
 φίλους ἐταίρους ἀνοσιώτατος Κύκλωψ;
- ΟΔ. δισσοὺς γ' ἀθρήσας κάπιβαστιάσας χερσίν,
 οὐ σαρκὸς εἶχον εὐτρεφέστατον πάχος. 380
- ΧΟ. πῶς, ὦ ταλαίπωρ', ἦτε πάσχοντες τάδε;
- ΟΔ. ἐπεὶ πετραίαν τήνδ' ἐσῆλθομεν [χθόνα],
 ἀνέκανσε μὲν πῦρ πρῶτον, ὑψηλῆς δρυὸς
 κορμούς πλατείας ἐσχάρας βαλὼν ἐπι,
 τρισσῶν ἀμαξῶν ὥς ἀγώγιμον βάρος. 385
 ἔπειτα φύλλων ἐλατίνων χαμαιπετῇ
 ἔννησεν εὐνὴν πλησίον πυρὸς φλογί.
 κρατῆρα δ' ἐξέπλησεν ὥς δεκάμφορον,
 μύσχοις ἀμέλξας, λευκὸν εἰσχέας γάλα.
 σκύφος τε κισσοῦ παρέθετ' εἰς εὖρος τριῶν 390
 πήχεων, βάθος δὲ τεσσάρων ἐφαίνετο.
 καὶ χάλκεον λέβητ' ἐπέξεσεν πυρί,
 ὀβελούς τ' ἄκρους μὲν ἐγκεκαυμένους πυρί,
 ξεστοὺς δὲ δρεπάνῳ γ', ἀλλὰ παλιούρου κλάδῳ,
 Αἰτναῖά τε σφαγεῖα πελέκεων γνάθοις. 395
 ὥς δ' ἦν ἔτοιμα πάντα τῷ θεοστυγεῖ
 Αἶδου μαγείρῳ, φῶτε συμμάρψας δ' οὐ
 ἔσφαζ' ἐταίρων τῶν ἐμῶν θυθμῷ τινι
 τὸν μὲν λέβητος εἰς κύτος χαλκῆλατον,
 τὸν δ' αὖ, τένοντος ἀρπάσας ἄκρου ποδός, 400
 παίων πρὸς ὀξὺν στόνυχᾳ πετραίου λίθου,
 ἐγκέφαλον ἐξέρρανε, καὶ καθαρπάσας
 λάβρῳ μαχαίρᾳ σάρκας ἐξώπτα πυρί,
 τὰ δ' εἰς λέβητ' ἐφῆκεν ἔψεσθαι μέλη.
 ἐγὼ δ' ὁ τλήμων δάκρυ' ἀπ' ὀφθαλμῶν χέων 405
 ἐχριμπτόμεν Κύκλωπι κἀδιακόνουν·

ἄλλοι δ' ὅπως ὄρνιθες ἐν μυχοῖς πέτρας
 πτήξαντες εἶχον, αἶμα δ' οὐκ ἐνῆν χροῖ.
 ἐπεὶ δ' ἐταίρων τῶν ἐμῶν πλησθεὶς βορᾶς
 ἀνέπεσε, φάρυγος αἰθέρ' ἐξανεῖς βαρύν, 410
 εἰσῆλθέ μοί τι θεῖον· ἐμπλήσας σκύφος
 Μάρωνος αὐτῷ τοῦδε προσφέρω πιεῖν,
 λέγων τάδ'· ὦ παῖ ποντίου θεοῦ, Κύκλωψ,
 σκέψαι τόδ' οἶον Ἑλλὰς ἀμπέλων ἅπο
 θεῖον κομίζει πῶμα, Διονύσου γάνος. 415
 ὁ δ' ἐκπλεως ὢν τῆς ἀναισχύντου βορᾶς
 ἐδέξατ' ἔσπασέν τ' ἄμυστιν ἐλκύσας
 κἀπήνεσ' ἄρας χεῖρα· φίλτατε ξένων,
 καλὸν τὸ πῶμα δαιτὶ πρὸς καλῇ δίδως.
 ἡσθέντα δ' αὐτὸν ὥς ἐπησθόμην ἐγώ, 420
 ἄλλην ἔδωκα κύλικα, γινώσκων ὅτι
 τρώσει νιν οἶνος καὶ δίκην δώσει τάχα.
 καὶ δὴ πρὸς ῥῥᾶς εἶρπ'. ἐγὼ δ' ἐπεργχέων
 ἄλλην ἐπ' ἄλλη σπλάγχν' ἐθέρμαινον ποτῶ.
 ἄδει δὲ παρὰ κλαίουσι συνναύταις ἐμοῖς 425
 ἄμους', ἐπήχει δ' ἄντρον. ἐξελθὼν δ' ἐγὼ
 σιγῇ, σὲ σῶσαι κἄμ', ἐὰν βούλῃ, θέλω.
 ἀλλ' εἶπατ' εἶτε χορήζετ' εἴτ' οὐ χορήσετε
 φεύγειν ἄμικτον ἄνδρα καὶ τὰ Βακχίου
 ναίειν μέλαθρα Ναϊδων νυμφῶν μέτα. 430
 ὁ μὲν γὰρ ἔνδον σὸς πατὴρ τάδ' ἤνεσεν.
 ἀλλ' ἀσθενὴς γὰρ κάποκερδαίνων ποτοῦ,
 ὥσπερ πρὸς ἱξῶ τῇ κύλικι λελημμένος
 πτέρυγας ἀλύει· σὺ δέ, νεανίας γὰρ εἶ,
 σῶθητι μετ' ἐμοῦ καὶ τὸν ἀρχαῖον φίλον 435
 Διόνυσον ἀνάλαβ', οὐ Κύκλωπι προσφερῇ.

ΧΟ. ὦ φίλτατ', εἰ γὰρ τήνδ' ἰδοιμεν ἡμέραν,
 Κύκλωπος ἐκφυγόντες ἀνόσιον ἀρά.

- ὥς διὰ μακροῦ γε τὸν σίφωνα τὸν φίλον
 χηρεύομεν, τὸν δ' οὐκ ἔχομεν καταφαγεῖν. 440
- ΟΔ. ἄκουε δὴ νυν ἣν ἔχω τιμωρίαν
 θηρὸς πανούργου σῆς τε δουλείας φυγῆν.
- ΧΟ. λέγ', ὥς Ἀσιάδος οὐκ ἂν ἥδιον ψόφον
 κιθάρας κλύοιμεν ἢ Κύκλωπ' ὀλωλότα.
- ΟΔ. ἐπὶ κῶμον ἔρπειν πρὸς κασιγνήτους θέλει 445
 Κύκλωπας ἥσθεις τῷδε Βακχίου ποτῶ.
- ΧΟ. ξυνῆκ', ἔρημον ξυλλαβῶν δρυμοῖσί νιν
 σφάξαι μενοινᾷς ἢ πετρῶν ὥσαι κάτω.
- ΟΔ. οὐδὲν τοιοῦτον, δόλιος ἢ πιθυμία.
- ΧΟ. πῶς δαί; σοφόν τοί σ' ὄντ' ἀκούομεν πάλαι. 450
- ΟΔ. κῶμον μὲν αὐτὸν τοῦδ' ἀπαλλάξαι, λέγων
 ὥς οὐ Κύκλωψι πῶμα χορὴ δοῦναι τόδε,
 μόνον δ' ἔχοντα βίοτον ἡδέως ἄγειν.
 ὅταν δ' ὑπνώσῃ Βακχίου νικῶμενος,
 ἀκρεμῶν ἐλαίας ἐστὶν ἐν δόμοισί τις, 455
 ὃν φασγάνῳ τῷδ' ἐξαποξύνας ἄκρον,
 εἰς πῦρ καθήσω· κᾶθ' ὅταν κεκαυμένον
 ἴδω νιν, ἄρας θερμὸν εἰς μεσην βαλὼν
 Κύκλωπος ὄψιν ὄμματ' ἐκτήξω πυρί.
 ναυπηγίαν δ' ὥσεί τις ἀρμόξων ἀνὴρ 460
 διπλοῖν χαλινοῖν τρύπανον κωπηλατεῖ,
 οὔτῳ κυκλώσω δαλὸν ἐν φασφόρῳ
 Κύκλωπος ὄψει καὶ συναυανῶ κόρας.
- ΧΟ. ἰοῦ ἰοῦ,
 γέγηθα, μαινόμεσθα τοῖς εὐρήμασιν. 465
- ΟΔ. κᾶπείτα καὶ σὲ καὶ φίλους γέροντά τε
 νεὼς μελαίνης κοιλον ἐμβήσας σκάφος
 διπλαῖσι κώπαις τῆσδ' ἀποστελεῶ χθονός.
- ΧΟ. ἔστ' οὖν ὅπως ἂν ὥσπερ ἐκ σπονδῆς θεοῦ

καὶ γὰρ λαβοίμην τοῦ τυφλοῦντος ὄμματα 470
δαλοῦ; φόνου γὰρ τοῦδε κοινωνεῖν θέλω.

ΟΔ. δεῖ γοῦν· μέγας γὰρ δαλός, ὃν ξυλληπτέον.

ΧΟ. ὥς καὶ ἅμαξῶν ἑκατὸν ἀροίμην βάρους,
εἰ τοῦ Κύκλωπος τοῦ κακῶς ὀλουμένου
ὀφθαλμὸν ὥσπερ σφηκιὰν ἐκτρίψομεν. 475

ΟΔ. σιγαῖτέ νυν· δόλον γὰρ ἐξεπίστασαι·
χῶτάν κελεύω, τοῖσιν ἀρχιτέκτοσι
πείθεσθ'· ἐγὼ γὰρ ἄνδρας ἀπολιπὼν φίλους
τοὺς ἔνδον ὄντας οὐ μόνος σωθήσομαι.
καίτοι φύγοιμ' ἄν, κακβέβηκ' ἄντρου μυχῶν· 480
ἀλλ' οὐ δίκαιον ἀπολιπόντ' ἐμοὺς φίλους,
ξὺν οἷσπερ ἦλθον δεῦρο, σωθῆναι μόνον.

ΗΜ. ἄγε, τίς πρῶτος; τίς δ' ἐπὶ πρῶτῳ
ταχθεὶς δαλοῦ κώπην ὀχμάσας
Κύκλωπος ἔσω βλεφάρων ὥσας 485
λαμπρὰν ὄψιν διακναίσει;

ΗΜ. σίγα σίγα. καὶ δὴ μεθύων
ἄχαριν κέλαδον μουσιζόμενος
σκαῖος ἀπρὸς καὶ κλαυσόμενος 490
χωρεῖ πετρίνων ἔξω μελάθρων.
φέρε νιν κώμοις παιδεύσωμεν
τὸν ἀπαίδευτον.

πάντως μέλλει τυφλὸς εἶναι.

ΧΟ. μάκαρ ὅστις εὐιάζει στρ. 495

βοτρυῶν φίλαισι πηγαῖς
ἐπὶ κῶμον ἐκπετασθεῖς,
φίλον ἄνδρ' ὑπαγκαλίζων,
ἐπὶ δεμνίοισι τ' ἄνθος
χλιδανῆς ἔχων ἑταίρας 500

- μυρόχοριστος λιπαρόν βό-
 στρυχον, αὐδᾶ δέ· θύραν τίς οἷξει μοι;
 ΚΥ. παπαπαῖ, πλέως μὲν οἴνου, ἀντ.
 γάνυμαι δὲ δαιτὸς ἥβη,
 σκάφος ὀλκᾶς ὥς γεμισθεὶς 505
 ποτὶ σέλμα γαστροῦς ἄκρας.
 ὑπάγει μ' ὁ χόρτος εὐφρων
 ἐπὶ κῶμον ἦρος ὥραις,
 ἐπὶ Κύκλωπας ἀδελφούς.
 φέρε μοι, ξεῖνε, φέρ', ἄσκον ἔνδος μοι. 510
 ΧΟ. καλὸν ὄμμασιν δεδορκῶς ἀντ. β'
 καλὸς ἐκπερᾶ μελάθρων.
 * * φιλεῖ τις ἡμᾶς.
 λύχνα δ' ἀμμένει δαία σὸν
 χρῶα χῶς τέρεινα νύμφα 515
 δροσερῶν ἔσωθεν ἄντρων.
 στεφάνων δ' οὐ μία χοιρὰ
 περὶ σὸν κροῖτα τάχ' ἐξομιλήσει.
 ΟΔ. Κύκλωψ, ἄκουσον, ὥς ἐγὼ τοῦ Βακχίου
 τούτου τρίβων εἶμ', ὃν πιεῖν ἔδωκά σοι. 520
 ΚΥ. ὁ Βάκχιος δὲ τίς; θεὸς νομίζεται;
 ΟΔ. μέγιστος ἀνθρώποισιν εἰς τέρψιν βίου.
 ΚΥ. ἐρυγγάνω γοῦν αὐτὸν ἡδέως ἐγώ.
 ΟΔ. τοιόσδ' ὁ δαίμων· οὐδένα βλάπτει βροτῶν.
 ΚΥ. θεὸς δ' ἐν ἄσκῳ πῶς γέγηθ' οἴκους ἔχων; 525
 ΟΔ. ὅπου τιθῇ τις, ἐνθάδ' ἐστὶν εὐπετής.
 ΚΥ. οὐ τοὺς θεοὺς χοῖν σῶμ' ἔχειν ἐν δέσμασιν.
 ΟΔ. τί δ', εἴ σε τέρπει γ'; ἢ τὸ δέσμα σοι πικρόν;
 ΚΥ. μισῶ τὸν ἄσκον· τὸ δὲ ποτὸν φιλῶ τόδε.
 ΟΔ. μένων νυν αὐτοῦ πῖνε κεῦθύμει, Κύκλωψ. 530
 ΚΥ. οὐ χρή μ' ἀδελφοῖς τοῦδε προσδοῦναι ποτοῦ;
 ΟΔ. ἔχων γὰρ αὐτὸς τιμιώτερος φανεῖ.

- ΚΥ. διδούς δὲ τοῖς φίλοισι χρησιμώτερος.
 ΟΔ. πυγμαῖς ὁ κῶμος λοῖδορόν τ' ἔριν φιλεῖ.
 ΚΥ. μεθύωμεν· ἔμπας δ' οὔτις ἂν ψαύσειέ μου. 535
 ΟΔ. ὦ τᾶν, πεπωκότ' ἐν δόμοισι χρὴ μένειν.
 ΚΥ. ἡλίθιος ὅστις μὴ πιὼν κῶμον φιλεῖ.
 ΟΔ. ὅς δ' ἂν μεθυσθεῖς γ' ἐν δόμοις μέινῃ, σοφός.
 ΚΥ. τί δρῶμεν, ὦ Σειληνέ; σοὶ μένειν δοκεῖ;
 ΣΕΙ. δοκεῖ. τί γὰρ δεῖ συμποτῶν ἄλλων, Κύκλωψ; 540
 ΚΥ. καὶ μὴν λαχνῶδές γ' οὔδας ἀνθηρᾶς χλόης.
 ΣΕΙ. καὶ πρὸς γε θάλλπος ἡλίου πίνειν καλόν.
 κλίθητί νῦν μοι πλευρὰ θεῖς ἐπὶ χθονός.
 ΚΥ. ἰδού·
 τί δῆτα τὸν κρατῆρ' ὅπισθ' ἐμὸν τίθης; 545
 ΣΕΙ. ὥς μὴ παριῶν τις καταλάβῃ. ΚΥ. πίνειν μὲν οὖν
 κλέπτων σὺ βούλει· κάτθες αὐτὸν εἰς μέσον.
 σὺ δ', ὦ ξέν', εἰπὲ τούνομ' ὅ τι σε χρὴ καλεῖν.
 ΟΔ. Οὔτιν' χάριν δὲ τίνα λαβὼν σ' ἐπαινέσω;
 ΚΥ. πάντων σ' ἐταίρων ὕστατον θοινάσομαι. 550
 ΣΕΙ. καλὸν γε τὸ γέρας τῷ ξένῳ δίδως, Κύκλωψ.
 ΚΥ. οὔτος, τί δρᾷς; τὸν οἶνον ἐκπίνεις λάθρα;
 ΣΕΙ. οὐκ, ἀλλ' ἐμ' οὔτος ἐκυσεν, ὅτι καλὸν βλέπω.
 ΚΥ. κλαύσει, φιλῶν τὸν οἶνον οὐ φιλοῦντά σε.
 ΣΕΙ. ναὶ μὰ Δί', ἐπεὶ μού φησ' ἐρᾶν ὄντος καλοῦ. 555
 ΚΥ. ἔγχει, πλέων δὲ τὸν σκύφον. δίδου μόνον.
 ΣΕΙ. πῶς οὖν κέκρται; φέρε διασκεψώμεθα.
 ΚΥ. ἀπολεῖς· δὸς οὔτως. ΣΕΙ. ναὶ μὰ Δί' οὐ πρὶν ἂν
 γε σὲ
 στέφανον ἰδῶ λαβόντα, γεύσωμαί τέ τι.
 ΚΥ. ὦνοχόος ἄδικος. ΣΕΙ. οὐ μὰ Δί', ἀλλ' ὧνος γλυ-
 κύς. 560
 ἀπομυκτέον δέ σοί γ', ὅπως λήψει πιεῖν.
 ΚΥ. ἰδού, καθαρὸν τὸ χεῖλος αἱ τρίχες τέ μου.

ΣΕΙ. θεῖς νυν τὸν ἀγκῶν' εὐρύθμως, καὶτ' ἔκπιδε,
ὥσπερ μ' ὀρεῖς πίνοντα χῶσπερ οὐκέτι.

ΚΥ. ᾧ ᾧ, τί δράσεις; ΣΕΙ. ἡδέως ἡμύστισα.

565

ΚΥ. λάβον, ξέν', αὐτὸς οἶνοχόος τέ μοι γενοῦ.

ΟΔ. γιγνώσκεται γοῦν ἡ ἄμπελος τῇ' μῇ χειρί.

ΚΥ. φέρ' ἔργχεόν νυν. ΟΔ. ἐργχέω, σίγα μόνον.

ΚΥ. χαλεπὸν τόδ' εἶπας, ὅστις ἂν πίνῃ πολύν.

ΟΔ. ἰδοὺ λαβὼν ἔκπιθι καὶ μηδὲν λίπης.

570

συνεκθανεῖν δὲ σπῶντα χορὴ τῷ πώματι.

ΚΥ. παπαῖ, σοφόν γε τὸ ξύλον τῆς ἀμπέλου.

ΟΔ. καὶν μὲν σπάσης γε δαιτὶ πρὸς πολλῇ πολύν,

τέρξας ἄδιψον νηδύν, εἰς ὕπνον βαλεῖ·

ἦν δ' ἐκλίπης τι, ξηρανεῖ σ' ὁ Βάκχιος.

575

ΚΥ. ἰοὺ ἰοὺ,

ὥς ἐξένευσα μόγισ· ἄκρατος ἡ χάρις·

ὁ δ' οὐρανός μοι συμμεμιγμένος δοκεῖ

τῇ γῇ φέρεσθαι, τοῦ Διὸς τε τὸν θρόνον

λεύσσω τὸ πᾶν τε δαιμόνων ἀγνὸν σέβας.

580

οὐκ ἂν φιλήσαιμ'· αἱ Χάριτες πειρώσιν με.

ἄλλης Γανυμήδην τόνδ' ἔχων ἀναπαύσομαι

κάλλιστα νῆ τὰς Χάριτας. ἤδομαι δέ πως

τοῖς παιδικοῖσι μᾶλλον ἢ τοῖς θήλεσιν.

ΣΕΙ. ἐγὼ γὰρ ὁ Διὸς εἰμι Γανυμήδης, Κύκλωψ;

585

ΚΥ. ναὶ μὰ Δι', ὃν ἀρπάξω γ' ἐγὼ ἢ τῆς Δαρδάνου.

ΣΕΙ. ἀπόλωλα, παῖδες· σχέτλια πείσομαι κακά.

ΧΟ. μέμφει τὸν ἐραστὴν κἀντροφῆς πεπωκότα;

ΣΕΙ. οἴμοι· πικρότατον οἶνον ὄψομαι τάχα.

ΟΔ. ἄγε δῆ, Διονύσου παῖδες, εὐγενῇ τέκνα,

590

ἔνδον μὲν ἀνὴρ· τῷ δ' ὕπνῳ παρειμένους

τάχ' ἐξ ἀναιδοῦς φάρυγος ὠθήσει κρέα.

δαλὸς δ' ἔσωθεν αὐλίων ὠθεῖ καπνόν.

παρεντρέπεται δ' οὐδὲν ἄλλο πλὴν πυροῦν
Κύκλωπος ὄψιν· ἀλλ' ὅπως ἀνὴρ ἔσει. 595

ΧΟ. πέτρας τὸ λῆμα κἀδάμαντος ἔξομεν.
χώρει δ' ἐς οἴκους, πρίν τι τὸν πατέρα παθεῖν
ἀπάλαμνον, ὥς σοι τὰνθάδ' ἐστὶν εὐτρεπῆ.

ΟΔ. Ἦφαιστ' ἀναξ Αἰτναῖε, γείτονος κακοῦ
λαμπρὸν πυρώσας ὅμυ' ἀπαλλάχθηθ' ἅπαξ, 600
σύ τ' ὦ μελαίνης Νυκτὸς ἐκπαίδευμ', Ἴπνε,
ἄκρατος ἐλθὲ θηρὶ τῷ θεοστυγεῖ,
καὶ μὴ' πλὶ καλλίστοισι Τρωικοῖς πόνοις
αὐτόν τε ναύτας τ' ἀπολέσῃτ' Ὀδυσσέα
ὑπ' ἀνδρός, ᾧ θεῶν οὐδὲν ἢ βροτῶν μέλει. 605
ἢ τὴν τύχην μὲν δαίμον' ἡγεῖσθαι χρεῶν,
τὰ δαιμόνων δὲ τῆς τύχης ἐλάσσουνα.

ΧΟ. λήψεται τὸν τράχηλον
ἐντόνως ὁ καρκίνος
τοῦ ξένων δαιτυμόνος· πυρὶ γὰρ τάχα 610
φωσφόρους ὀλεῖ κόρας·
ἤδη δαλὸς ἠνθρακωμένος
κρύπτεται εἰς σποδιάν, δρυὸς ἄσπετον ἔρνος. 615
ἀλλ' ἴτω Μάρων, πρᾶσσέτω·
μαιομένου' ξελέτω βλέφαρον
Κύκλωπος, ὥς πῖη κακῶς.
κἀγὼ τὸν φιλοκισσοφόρον Βρόμιον 620
ποθεινὸν εἰσιδεῖν θέλω,
Κύκλωπος λιπῶν ἐρημίαν.
ἄρ' ἐς τοσόνδ' ἀφίξομαι;

ΟΔ. σιγάτε πρὸς θεῶν, θῆρες, ἡσυχάζετε,
συνθέντες ἄρθρα στόματος· οὐδὲ πνεῖν ἔω, 625
οὐ σκαρδαμύσσειν οὐδὲ χρέμπεσθαί τινα,
ὥς μὴ' ἔξεγερθῇ τὸ κακόν, ἔστ' ἂν ὄμματος
ὄψις Κύκλωπος ἐξαμιλληθῇ πυρὶ.

- ΧΟ. σιγῶμεν ἐγκάψαντες αἰθέρα γνάθοις.
- ΟΔ. ἄγε νυν ὅπως ἄψεσθε τοῦ δαλοῦ χεροῖν 630
ἔσω μολόντες· διάπυρος δ' ἐστὶν καλῶς.
- ΧΟ. οὐκοῦν σὺ τάξεις οὔστινας πρώτους χρεῶν
καντὸν μοχλὸν λαβόντας ἐκκαίειν τὸ φῶς
Κύκλωπος, ὥς ἂν τῆς τύχης κοινώμεθα.
- ΗΜ. ἡμεῖς μὲν ἐσμεν μακρότερον πρὸ τῶν θυρῶν 635
ἐστῶτες ὠθεῖν ἐς τὸν ὀφθαλμὸν τὸ πῦρ.
- ΗΜ. ἡμεῖς δὲ χωλοὶ γ' ἀρτίως γεγενήμεθα.
- ΗΜ. ταῦτὸν πεπόνθατ' ἄρ' ἐμοί. ΗΜ. τοὺς γὰρ πόδας
ἐστῶτες ἐσπάσθημεν οὐκ οἶδ' ἐξ ὅτου.
- ΟΔ. ἐστῶτες ἐσπάσθητε; ΗΜ. καὶ τά γ' ὄμματα 640
μέστ' ἐστὶν ἡμῶν κόνεος ἢ τέφρας ποθέν.
- ΟΔ. ἄνδρες πονηροὶ κοῦδὲν οἶδε σύμμαχοι.
- ΧΟ. ὅτι ἡ τὸ νῶτον τὴν ῥάχιν τ' οἰκτείρομεν,
καὶ τοὺς ὀδόντας ἐκβαλεῖν οὐ βούλομαι
τυπτόμενος, αὕτη γίγνεται πονηρία; 645
ἀλλ' οἶδ' ἐπρωδὴν Ὀρφέως ἀγαθὴν πάνυ,
ὥς αὐτόματον τὸν δαλὸν εἰς τὸ κρανίου
στείχονθ' ὑφάπτειν τὸν μονῶπα παῖδα γῆς.
- ΟΔ. πάλαι μὲν ἦδεν σ' ὄντα τοιοῦτον φύσει,
νῦν δ' οἶδ' ἄμεινον. τοῖσι δ' οἰκείοις φίλοις 650
χρησθαί μ' ἀνάγκη. χειρὶ δ' εἰ μὴδὲν σθένεις,
ἀλλ' οὖν ἐπεγκέλευέ γ', ὥς εὐψυχίαν
φίλων κελευσμοῖς τοῖσι σοῖς κτησώμεθα.
- ΧΟ. δράσω τάδ'. ἐν τῷ Καρὶ κινδυνεύσομεν.
κελευσμάτων δ' ἕκατι τυφέσθω Κύκλωψ. 655
ὦ ὦ,
γενναιότατ' ὠθεῖτε, σπεύδετε.
ἐκκαίετε τὴν ὀφρὺν
θηρὸς τοῦ ξενοδαίτα.
τύφειτ' ὦ, καίετ' ὦ

τὸν Αἴτνας μηλονόμον.

660

τόρνευ', ἔλκε, μή σ' ἐξοδυνηθεῖς
δράσῃ τι μάταιον.

ΚΥ. ὦμοι, κατηνθρακώμεθ' ὀφθαλμοῦ σέλας.

ΧΟ. καλὸς γ' ὁ παιάν· μέλπε μοι τόνδ', ὦ Κύκλωψ.

ΚΥ. ὦμοι μάλ', ὥς ὑβρίσμεθ', ὥς ὀλώλαμεν. 665

ἀλλ' οὔτι μὴ φύγητε τῆσδ' ἔξω πέτρας
χαίροντες, οὐδὲν ὄντες· ἐν πύλαισι γὰρ
σταθεῖς φάραγγος τῆσδ' ἐναρμόσω χέρας.

ΧΟ. τί χρῆμ' ἀντεῖς, ὦ Κύκλωψ; ΚΥ. ἀπωλόμην.

ΧΟ. αἰσχρὸς γε φαίνει. ΚΥ. καὶ τοῖσδέ γ' ἄθλιος. 670

ΧΟ. μεθύων κατέπεσες εἰς μέσους τοὺς ἀνθρακας;

ΚΥ. Οὐτίς μ' ἀπώλεσ'. ΧΟ. οὐκ ἄρ' οὐδεὶς σ' ἠδίκηι;

ΚΥ. Οὐτίς με τυφλοῖ βλέφαρον. ΧΟ. οὐκ ἄρ' εἶ τυ-
φλός;

ΚΥ. ὥς δὴ σὺ ΧΟ. καὶ πᾶς σ' οὔτις ἂν θείῃ τυφλόν;

ΚΥ. σκώπτεις. ὁ δ' Οὐτίς ποῦ 'στιν; ΧΟ. οὐδαμοῦ,
Κύκλωψ. 675

ΚΥ. ὁ ξένος, ἴν' ὀρθῶς ἐκμάθῃς, μ' ἀπώλεσεν,
ὁ μισρός, ὅς μοι δοὺς τὸ πῶμα κατέκλυσεν.

ΧΟ. δεινὸς γὰρ οἶνος καὶ παλαίεσθαι βαρύν.

ΚΥ. πρὸς θεῶν, πεφεύγασ' ἢ μένουσ' εἴσω δόμων;

ΧΟ. οὗτοι σιωπῇ τὴν πέτραν ἐπήλυρα 680
λαβόντες ἐστήκασι. ΚΥ. ποτέρας τῆς χερός;

ΧΟ. ἐν δεξιᾷ σου. ΚΥ. ποῦ; ΧΟ. πρὸς αὐτῇ τῇ πέτρᾳ.
ἔχεις; ΚΥ. κακόν γε πρὸς κακῷ· τὸ κρανίον
παίσας κατέαρα. ΧΟ. καὶ σε διαφεύγουσί γε;

ΚΥ. οὐ τῆδ' ἐπείγειν εἶπας; ΧΟ. οὐ· ταύτῃ λέγω. 685

ΚΥ. πῇ γάρ; ΧΟ. περιάγου, κεῖσε, πρὸς τὰριστερὰ.

ΚΥ. οἴμοι γελωμαι· κερτομεῖτέ μ' ἐν κακοῖς.

ΧΟ. ἄλλου μετὰλλα· πρόσθεν ΟΥΤΙΣ ἐστί σου.

- ΚΤ. ὦ παγκάκιστε, ποῦ ποτ' εἶ; ΟΔ. τηλοῦ σέθεν
φυλακαῖσι φρουρῶ σῶμ' Ὀδυσσέως τόδε. 690
- ΚΤ. πῶς εἶπας; ὄνομα μεταβαλὼν καινὸν λέγεις;
ΟΔ. ὅπερ μ' ὁ φύσας ὠνόμαξ' Ὀδυσσεά.
δώσειν δ' ἔμελλες ἀνοσίου δαιτὸς δίκας·
κακῶς γὰρ ἂν Τροίαν γε διεπυρῶσαμεν,
εἰ μὴ σ' ἐταίρων φόνον ἐτιμωρησάμην. 695
- ΚΤ. αἰαῖ· παλαιὸς χρησμὸς ἐκπεραίνεται.
τυφλὴν γὰρ ὅψιν ἐκ σέθεν σχήσειν μ' ἔφη
Τροίας ἀφορμηθέντος. ἀλλὰ καὶ σέ τοι
δίκας ὑφέξειν ἀντὶ τῶνδ' ἐθέσπισεν,
πολὺν θαλάσση χρόνον ἐναιωρούμενον. 700
- ΟΔ. κλαίειν σ' ἄνωγα· καὶ δέδραχ' ὅπερ λέγω.
ἐγὼ δ' ἐπ' ἀκτὰς εἶμι καὶ νεῶς σκάφος
ἦσω πλὶ πόντον Σικελὸν ἔς τ' ἐμὴν πάτραν.
- ΚΤ. οὐ δῆτ', ἐπεὶ σε τῆσδ' ἀπορρήξας πέτρας
ἀντοῖσι συνναύταισι συντρίψω βαλὼν. 705
ἄνω δ' ἐπ' ὄχθον εἶμι, καίπερ ὦν τυφλός;
δι' ἀμφιτρῆτος τῆσδε προσβαίνων ποδί.
- ΧΟ. ἡμεῖς δὲ συνναῦταί γε τοῦδ' Ὀδυσσέως
ὄντες τὸ λοιπὸν Βακχίῳ δουλεύσομεν.

ΟΡΕΣΤΗΣ.

ΤΑ ΤΟΥ ΔΡΑΜΑΤΟΣ ΠΡΟΣΩΠΑ.

ΗΛΕΚΤΡΑ.

ΕΛΕΝΗ.

ΕΡΜΙΟΝΗ.

ΧΟΡΟΣ.

ΟΡΕΣΤΗΣ.

ΜΕΝΕΛΑΟΣ.

ΤΤΝΔΑΡΕΩΣ.

ΠΥΛΛΑΔΗΣ.

ΑΓΓΕΛΟΣ.

ΦΡΤΞ.

ΑΠΟΛΛΩΝ.

Υ Π Ο Θ Ε Σ Ι Σ.

Ὁρέστης τὸν φόνον τοῦ πατρὸς μεταπορευόμενος
 ἀνεῖλεν Αἴγισθον καὶ Κλυταιμνήστραν· μητροκτονή-
 σαι δὲ τολμήσας, παραχρῆμα τὴν δίκην ἔδωκεν ἑμπα-
 νὴς γενόμενος. Τυνδάρεω δὲ τοῦ πατρὸς τῆς ἀνηρη-
 μένης κατηγορήσαντος κατ' αὐτοῦ, ἔμελλον κοινὴν 5
 Ἀργεῖοι ψῆφον ἐκφέρεισθαι περὶ τοῦ τί δεῖ παθεῖν
 τὸν ἀσεβήσαντα· κατὰ τύχην δὲ Μενέλαος ἐκ τῆς
 πλάνης ὑποστρέψας, νυκτὸς μὲν Ἑλένην εἰσαπέστειλε,
 μεθ' ἡμέραν δὲ αὐτὸς ἦλθε. καὶ παρακαλούμενος ὑπ'
 Ὁρέστου βοηθῆσαι αὐτῷ, ἀντιλέγοντα Τυνδάρεων 10
 μᾶλλον ἡύλαβήθη. λεχθέντων δὲ λόγων ἐν τοῖς ὄχλοις,
 ἐπηνέχθη τὸ πλῆθος ἀποκτείνειν Ὁρέστην. *** συνὼν
 δὲ τούτοις ὁ Πυλάδης ὁ φίλος αὐτοῦ συνεβούλευσε
 πρῶτον Μενελάου τιμωρίαν λαβεῖν, Ἑλένην ἀποκτεί-
 ναντας. αὐτοὶ μὲν οὖν ἐπὶ τούτοις ἐλθόντες διεψεύ- 15
 σθησαν τῆς ἐλπίδος, θεῶν τὴν Ἑλένην ἀρπασάντων·
 Ἠλέκτρα δὲ Ἑρμιόνην ἐπιφανεῖσαν ἔδωκεν εἰς χεῖρας
 αὐτοῖς· οἱ δὲ ταύτην φονεύειν ἔμελλον. ἐπιφανεῖς
 δὲ Μενέλαος καὶ βλέπων ἑαυτὸν ἅμα γυναικὸς καὶ
 τέκνου στερούμενον ὑπ' αὐτῶν, ἐπεβάλετο τὰ βασι- 20
 λεια πορθεῖν· οἱ δὲ φθάσαντες ὑφάψειν ἠπειλήσαν.
 ἐπιφανεῖς δὲ Ἀπόλλων Ἑλένην μὲν ἔφησεν εἰς θεοὺς
 διακομίζειν, Ὁρέστη δὲ Ἑρμιόνην ἐπέταξε λαβεῖν,
 Πυλάδην δὲ Ἠλέκτραν συνοικίσαι, καθαρθέντι δὲ τοῦ
 φόνου Ἀργούς ἄρχειν.

Ἡ μὲν σκηνὴ τοῦ δράματος ὑπόκειται ἐν Ἀργεὶ·
 ὁ δὲ χορὸς συνέστηκεν ἐκ γυναικῶν Ἀργείων, ἡλικιω-
 τίδων Ἠλέκτρας, αἱ καὶ παραγίνονται ὑπὲρ τῆς τοῦ
 Ὀρέστου πυνθανόμεναι συμφορᾶς. προλογίζει δὲ
 5 Ἠλέκτρα. τὸ δὲ δράμα κωμικωτέραν ἔχει τὴν κατα-
 στροφὴν. ἡ δὲ διασκευὴ τοῦ δράματός ἐστι τοιαύτη.
 πρὸς τὰ τοῦ Ἀγαμέμνονος βασιλεία ὑπόκειται Ὀρέ-
 στης κάμνων καὶ κείμενος ὑπὸ μανίας ἐπὶ κλινιδίου,
 ᾧ προσκαθεζέται πρὸς τοῖς ποσὶν Ἠλέκτρα. διαπορεῖ-
 10 ται δὲ τί δήποτε οὐ πρὸς τῇ κεφαλῇ καθέζεται· οὕτω
 δὲ μᾶλλον ἂν ἐδόκει τὸν ἀδελφὸν τημελεῖν, πλησιαί-
 τερον προσκαθεζομένη. ἔοικεν οὖν διὰ τὸν χορὸν ὁ
 ποιητὴς διασκευάσαι· διηγέσθη γὰρ ἂν ὁ Ὀρέστης,
 ἄρτι καὶ μόγις καταδραθεῖς, πλησιαίτερον αὐτῷ τῶν
 15 κατὰ τὸν χορὸν γυναικῶν παρισταμένων. ἔστι δὲ ὑπο-
 νοῆσαι τοῦτο ἐξ ὧν φησιν Ἠλέκτρα τῷ χορῷ· 'σίγα
 σίγα, λεπτὸν ἔχνος ἀρβύλης'. πιθανὸν οὖν ταύτην
 εἶναι τὴν πρόφασιν τῆς τοιαύτης διαθέσεως. τὸ δράμα
 τῶν ἐπὶ σκηνῆς εὐδοκιμούντων, χεῖριστον δὲ τοῖς
 20 ἡθέσει· πλὴν γὰρ Πυλάδου πάντες φαῦλοί εἰσιν.

Α Λ Λ Ω Σ.

Ὅτε κατὰ τῶν Τρώων ἡ Ἑλλὰς ὥρμησεν, Ἀγα-
 μέμνων στρατηγὸς ἡρέσθη παντὸς τοῦ στόλου, ἅτε τῶν
 ἄλλων προέχειν δοκῶν ἀρχῆς τε μεγέθει καὶ πλήθει
 25 νεῶν· ἑκατὸν γὰρ ναῦς εἰς τὴν τοῦ στόλου συντέλειαν
 εἰσέφερε. καὶ ὃς μέλλων ἀνάγεσθαι καταλείπει τῶν
 οἴκοι πραγμάτων αὐτοῦ ἐπιμελητὴν καὶ προστάτην
 Αἴγισθον. ἐπεὶ δὲ πολὺς ἦν ὁ χρόνος καὶ Ἀγαμέ-
 μνων οὐκέτ' ἐπανήει, οἷα δὲ [πολλὰ] γίνεται, συνῆλ-
 30 θεν ἀθέσμως Αἴγισθος Κλυταιμνήστρᾳ τῇ τοῦ Ἀγα-

μέμνονος γυναικί. μαθόντες δὲ Κλυταιμνήστρα καὶ
 Αἴγισθος τὴν τε Τροίαν ἀλοῦσαν καὶ Ἀγαμέμνονα
 μετὰ τῶν ἄλλων οἴκαδε πλέοντα, βουλευόμενοι τοῦτον
 τῆς οἰκίας ἐπειλημμένον ἀποκτενεῖν, ἵνα μὴ τοῦτω
 γνωσθέντος τοῦ σφῶν πονηρεύματος αὐτοὶ παραδο- 5
 θεῖεν θανάτῳ· ὃ δὴ καὶ ἤνυσαν καὶ ἐπανελθόντα τὸν
 Ἀγαμέμνονα ἀποκτείνουσι. χιτῶνα γὰρ μὴ διεξόδους
 κεφαλῆς καὶ χειρῶν ἔχοντα μετὰ τὸ λουτρὸν ἐνδι-
 δύσκουσι καὶ ἐν τῷ πελέκει τοῦτον φονεύουσι. με-
 ταξὺ γοῦν τοῦ Ἀγαμέμνονειοῦ φόνου Ἡλέκτρα τὸν 10
 ἀδελφὸν Ὀρέστην, ἵνα μὴ καὶ οὗτος ἀναιρεθῇ,
 κλέψασα καὶ τινι δοῦσα παιδαγωγῶ εἰς Φωκίδα παρὰ
 Στρώφιον πέμπει, φίλον καὶ συγγενῆ τοῦ πατρὸς αὐ-
 τῆς τυγχάνοντα. Ὀρέστης δὲ εἰς ἄνδρας ἦκων, παρα-
 λαβὼν Πυλάδην τὸν παῖδα Στροφίου, ἐφ' ᾧ μετ' αὐ- 15
 τοῦ Αἴγισθον καὶ Κλυταιμνήστραν τιμωρήσαιο, κα-
 ταλαμβάνει λάθρα τὸ Ἄργος. καὶ χρησμὸν παρὰ τοῦ
 Πυθίου δεξάμενος τοῦτο ποιεῖν, πρῶτον μὲν ἔρχεται
 πρὸς τὸν τοῦ πατρὸς τάφον καὶ θύει, εἰτά τι μηχανᾶ-
 ται τοιόνδε. τὸν γὰρ παιδαγωγὸν ᾧ παρὰ τῆς Ἡλέκ- 20
 τρας πάλαι πιστευθεὶς ἦκεν, ὥς ἔφημεν, εἰς τὴν
 Φωκίδα, τοῦτον προπέμπει εἰς Αἴγισθον καὶ Κλυται-
 μνήστραν λέγοντα ὥς Ὀρέστης ἐν Πυθικοῖς ἄθλοις
 ἀνηρέθη καὶ νῦν ἄνδρες τὰ τούτου ὅστις ἐν κιβωτίῳ
 κομίζουσιν, ἵνα πατρῶων γοῦν τάφων τύχη. ὑπαχθέν- 25
 τες δὲ τῇ τοιαύτῃ ἀπάτῃ Κλυταιμνήστρα καὶ Αἴγι-
 σθος, ἵνα μὴ μακρολογῶ, ἀναιροῦνται ὑπὸ Ὀρέστου
 καὶ Πυλάδου, πρώτη μὲν Κλυταιμνήστρα, ὕστερος δὲ
 Αἴγισθος. μητροκτονήσας τοίνυν Ὀρέστης Ἐρινύσι
 παραχρῆμα τὴν δίκην ἔδωκε μανείς. Μενέλαος δὲ 30
 ἐκ Τροίας ἐλθὼν, ὕστερος γὰρ Ἀγαμέμνονος ἐπανῆκε,
 καὶ τῷ Ναυπλίῳ λιμένι προσσχών, νυκτὸς μὲν Ἑλέ-

νην εἰσπέμπει πρὸς Μυκῆνας, μεθ' ἡμέραν δὲ αὐ-
 τὸς εἰσῆει, καὶ τὸν Ὀρέστην μεμνηνότα εὐρῶν, πα-
 ρακαλεῖται μὲν ὑπὸ Ὀρέστου καὶ Ἠλέκτρας σῶσαι
 αὐτούς· ὁ γὰρ τῆς Κλυταιμνήστρας πατὴρ Τυνδά-
 5 ρεως πάντα τὰς Ἀργεῖους κατ' αὐτῶν ἐκίνησεν, ἵνα
 τούτους ὥς μητροκτόνους ἀνέλοιεν· ὥς δὲ τὸν Τυν-
 δάρεω ἀντιλέγοντα εὗρε, καὶ ἅμα καὶ αὐτὸς ὑπολο-
 γιζόμενος ὥς εἰ Ὀρέστης ἀναιρεθεῖη βασιλεὺς αὐτὸς
 ἔσται τοῦ Ἄργους, οὐκ ᾔθελεν Ὀρέστη τε καὶ τῇ
 10 ἀδελφῇ συμμαχεῖν, ἀλλὰ τὸ τῶν Ἀργείων πλῆθος
 ἔλεγεν εὐλαβεῖσθαι. πρῶτον μὲν οὖν Ὀρέστης καὶ
 Τυνδάρεως διελέχθησαν πρὸς ἀλλήλους, ὁ μὲν ὥς οὐ
 δικαίως ἀνείλετο Κλυταιμνήστραν δεικνύς, Ὀρέστης
 δὲ ὥς καὶ μάλα δικαίως, εἰ καὶ μυριάκις αὐτὴν ἔδει
 15 τεθνάναι. ἔπειτα ἐκκλησίας ἐν ἀκροπόλει Μυκηνῶν
 γενομένης καὶ συνιόντων τῶν προυχόντων ἐν Ἄργει,
 Ὀρέστης ὑπὸ Πυλάδου φοράδην ἐκέῖσε κομίζεται. λό-
 γων δὲ πολλῶν γινομένων καὶ τῶν μὲν βοηθούντων
 Ὀρέστη, τῶν δὲ ἐναντιουμένων, τέλος ἐνίκησαν οἱ
 20 κακοί, καὶ κατακρίνεται Ὀρέστης αὐτὸς τε καὶ ἡ
 ἀδελφὴ λίθοις βληθέντες ἀποθανεῖν. Ὀρέστης δὲ
 ἐπηγγείλατο πρὸς τὸ πλῆθος αὐτοχειρίᾳ ἑαυτὸν καὶ
 τὴν ἀδελφὴν ἀποσφάξαι. καὶ ὁ φίλος Πυλάδης καὶ
 παρὰ τὴν συμφορὰν φίλος ἔμεινε καὶ κοινωνεῖν αὐτῷ
 25 τῆς τελευτῆς ἠξίωσεν προθυμότατα. ἐπεὶ δὲ σφίσι τοῦτο
 παθεῖν πρὸς αὐτοὺς, συμβουλεύει Πυλάδης, Μενέλεω
 πρῶτον τιμωρίαν λαβεῖν, λέγων ὥς οὐ δεῖ τοῦτον
 τρυφᾶν ἡμῶν ἀπιόντων. ὅθεν εἰσελθόντες εἶδω τῶν
 βασιλείων Ἑλένης δῆθεν δεησόμενοι, ἵνα μὴ περιίδῃ
 30 σφᾶς ὀλλυμένους, ἀλλὰ χεῖρα ὀρέξῃ καὶ Μενέλεω καὶ
 ἅκοντα πρὸς σωτηρίαν κινήσῃ, ἐπεὶ ταύτην φονεῦειν
 ἔμελλον, ταύτης μὲν ἡμαρτον, ὑπὸ Ἀπόλλωνος ἀρ-

πασθείσης κελεύσει Διός, Ἑρμιόνην δὲ συλλαμβά-
 νουσιν ἐκ τοῦ τῆς Κλυταιμνήστρας τάφου ἐπανή-
 κουσιν· πρώην γὰρ αὐτὴν Ἑλένη πεπόμεναι τῇ ἀδελ-
 φῇ θύσουσαν. λαβόντες δὲ Ἑρμιόνην καὶ ἐνδοθεν
 τὰς τῶν βασιλείων ἀσφαλίσαντες πύλας, ἀνῆλθον ἐν 5
 μετεώρῳ τῶν βασιλείων, ἔχοντες τε τὴν Ἑρμιόνην καὶ
 ξίφος πρὸς τῇ δέρῃ αὐτῆς καὶ μέλλοντες μετὰ τὴν
 ταύτης διαχείρισιν, ἂν μὴ σφᾶς Μενέλεως σώσῃ, καὶ
 τοὺς δόμους ὑφάψειν πυρί. Μενέλεως μὲν ὑπὸ τού-
 των Ἑλένην τεθνάναι μαθὼν, ἵνα καὶ σῶσῃ τὴν παῖδα 10
 ἐλθὼν, ἤρξατο πορθεῖν τὰ βασίλεια· ἐπιφανεῖς δὲ
 Ἀπόλλων διήλλαξε τούτους, Ἑλένην μὲν εἰς οὐρανούς
 φήσας διακομίσαι, Μενέλεων δὲ ἑτέραν λαβεῖν κελεύ-
 σας γυναῖκα, Ὀρέστη δὲ Ἑρμιόνην συνάψαι μετὰ τὴν
 τοῦ φόνου κάθαρσιν· ἧς Ἀθήνησιν ἔτυχε μετὰ Ἑρι- 15
 νύων εἰς Ἄρειον πάγον κριθεῖς, ὅτε καὶ καταδικα-
 σθῆναι μέλλοντα ὑπὸ πάντων θεῶν Ἀθηνᾶ ψῆφον
 βαλοῦσα νικῆσαι τοῦτον ἐποίησε. καὶ οὕτως Ὀρέστης
 ὕστερον Ἑρμιόνην γυναῖκα λαμβάνει κατὰ τὸ τοῦ
 Ἀπόλλωνος θέσπισμα καὶ Ἄργους κρατεῖ, Πυλάδῃ δὲ 20
 Ἥλέκτραν δίδωσι τὴν καὶ πρότερον ὑπ' αὐτοῦ κατεγ-
 γυηθεῖσαν τούτῳ. ἰστέον δὲ ὅτι πᾶσα τραγωδία σύμ-
 φωνον ἔχει καὶ τὸ τέλος· ἐκ λύπης γὰρ ἄρχεται καὶ
 εἰς λύπην τελευτᾷ· τὸ παρὸν δὲ δρᾶμά ἐστιν ἐκ τραγι-
 κοῦ κωμικόν· λήγει γὰρ εἰς τὰς παρ' Ἀπόλλωνος διαλ- 25
 λαγὰς ἐκ συμφορῶν εἰς εὐθυμίαν κατηντηγός· ἡ δὲ
 κωμωδία γέλωσι καὶ εὐφροσύναις ἐνύφανται.

ΕΥΡΙΠΙΔΟΥ

ΟΡΕΣΤΗΣ.

ΗΛ. Οὐκ ἔστιν οὐδὲν δεινὸν ὧδ' εἰπεῖν ἔπος
 οὐδὲ πάθος οὐδὲ συμφορὰ θεήλατος,
 ἧς οὐκ ἂν ἄραιτ' ἄχθος ἀνθρώπου φύσις.
 ὁ γὰρ μακάριος, κούκ ὀνειδίζω τύχας,
 Διὸς πεφνκῶς, ὡς λέγουσι, Τάνταλος 5
 κορυφῆς ὑπερτέλλοντα δειμαίνων πέτρον
 ἄερι ποτᾶται καὶ τίνει ταύτην δίκην,
 ὡς μὲν λέγουσιν, ὅτι θεοῖς ἀνθρώπος ὢν
 κοινῆς τραπέξης ἀξίωμ' ἔχων ἴσον,
 ἀκόλαστον ἔσχε γλῶσσαν, αἰσχίστην νόσον. 10
 οὗτος φυτεύει Πέλοπα, τοῦ δ' Ἀτρεὺς ἔφνυ,
 ὧ στέμματα ξήνασ' ἐπέκλωσεν θεὰ
 ἔριν Θυέστη πόλεμον ὄντι συγγόνῳ
 θέσθαι· τί τᾶρρητ' ἀναμετροῦσασθαί με δεῖ;
 ἔδαισε δ' οὖν νιν τέκν' ἀποκτείνας Ἀτρεὺς· 15
 Ἀτρεὺς δέ, τὰς γὰρ ἐν μέσῳ σιγῷ τύχας,
 ὁ κλεινὸς εἰ δὴ κλεινὸς Ἀγαμέμνων ἔφνυ
 Μενελέως τε Κρήσσης μητρὸς Ἀερόπης ἄπο.
 γαμεῖ δ' ὁ μὲν δὴ τὴν θεοῖς στυγουμενήν
 Μενέλαος Ἑλένην, ὁ δὲ Κλυταιμνήστρας λέχος 20
 ἐπίσημον εἰς Ἑλληνας Ἀγαμέμνων ἀνάξ·
 ὧ παρθένοι μὲν τρεῖς ἔφνυμεν ἐκ μιᾶς,

Χρυσόθεμις Ἰφιγένειά τ' Ἡλέκτρα τ' ἐγώ,
 ἄρσην τ' Ὀρέστης, μητρὸς ἀνοσιωτάτης,
 ἣ πόσιν ἀπείρῳ περιβαλοῦσ' ὑφάσματι 25
 ἔκτεινεν· ὦν δ' ἕκατι, παρθένῳ λέρειν
 οὐ καλόν· ἔῳ τοῦτ' ἀσαφὲς ἐν κοινῷ σκοπεῖν.
 Φοίβου δ' ἀδικίαν μὲν τί δεῖ κατηγορεῖν;
 πεῖθει δ' Ὀρέστην μητέρ' ἢ σφ' ἐγείνατο
 κτεῖναι, πρὸς οὐχ ἅπαντας εὐκλειαν φέρουν. 30
 ὅμως δ' ἀπέκτειν' οὐκ ἀπειθήσας θεῶ·
 κἀγὼ μετέσχον, οἷα δὴ γυνή, φόνου
 Πυλάδης θ' ὃς ἡμῖν συγκατείρογασται τάδε.
 ἐντεῦθεν ἀγρία συντακεῖς νόσῳ νοσεῖ
 τλήμων Ὀρέστης ὅδε πεσὼν τ' ἐν δεμνίοις 35
 κεῖται, τὸ μητρὸς δ' αἷμά νιν τροχηλατεῖ
 μανίαισιν· ὀνομάζειν γὰρ αἰδοῦμαι θεὰς
 Εὐμενίδας, αἱ τόνδ' ἐξαμιλλῶνται φόβῳ.
 ἔκτον δὲ δὴ τόδ' ἡμᾶρ ἐξ ὅτου σφαγαῖς
 θανοῦσα μήτηρ πυρὶ καθήγνισται δέμας, 40
 ὦν οὔτε σῖτα διὰ δέξης ἐδέξατο,
 οὐ λούτρ' ἐδωκε χρωτί· χλανιδίων δ' ἔσω
 κρυφθεῖς, ὅταν μὲν σῶμα κουφισθῇ νόσου,
 ἔμφρων δακρύει, ποτὲ δὲ δεμνίων ἄπο
 πηδᾶ δρομαῖος, πῶλος ὥς ἀπὸ ζυγοῦ. 45
 ἔδοξε δ' Ἄργει τῷδε μήθ' ἡμᾶς στέγαις,
 μὴ πυρὶ δέχεσθαι, μήτε προσφωνεῖν τινα
 μητροκτονοῦντας· κυρία δ' ἦδ' ἡμέρα,
 ἐν ἣ διοίσει ψῆφον Ἀργείων πόλις,
 εἰ χορὴ θανεῖν νῶ λευσίμῳ πετρώματι, 50
 ἢ φάσγανον θήξαντ' ἐπ' αὐχένος βαλεῖν.
 ἐλπίδα δὲ δὴ τιν' ἔχομεν ὥστε μὴ θανεῖν·
 ἥκει γὰρ εἰς γῆν Μενέλεως Τροίας ἄπο,
 λιμένα δὲ Ναυπλίου ἐκπληρῶν πλάτῃ

- ἀκταῖσιν ὄρμεϊ, δαρὸν ἐκ Τροίας χρόνον 55
 ἄλαιοι πλαγχθεῖς· τὴν δὲ δὴ πολύστονον
 Ἑλένην, φυλάξας νύκτα, μή τις εἰσιδὼν
 μεθ' ἡμέραν στείχουσιν, ὧν ὑπ' Ἰλίου
 παῖδες τεθναῖσιν, εἰς πέτρων ἔλθῃ βολάς,
 προὔπεμψεν εἰς δῶμ' ἡμέτερον· ἔστιν δ' ἔσω 60
 κλαίουσ' ἀδελφὴν ξυμφοράς τε δωμάτων.
 ἔχει δὲ δὴ τιν' ἀλγέων παραψυχὴν·
 ἦν γὰρ κατ' οἴκους ἔλιφ', ὅτ' ἐς Τροίαν ἔπλει,
 παρθένον ἐμῇ τε μητρὶ παρέδωκεν τρέφειν
 Μενέλαος ἀγαγὼν Ἑρμιόνην Σπάρτης ἄπο, 65
 ταύτῃ γέγρηθε κἀπιλήθεται κακῶν.
 βλέπω δὲ πᾶσαν εἴσοδον, πότ' ὄψομαι
 Μενέλαον ἦκονθ'· ὥς τά γ' ἄλλ' ἐπ' ἀσθενοῦς
 ῥώμης ὀχοῦμεθ', ἦν τι μὴ κείνου πάρα
 σωθῶμεν. ἄπορον χρῆμα δυστυχῶν δόμος. 70
- ΕΛ. ὦ παῖ Κλυταιμνήστρας τε κἀγαμέμνονος,
 παρθένε μακρὸν δὴ μῆκος Ἥλέκτρα χρόνου,
 πῶς, ὦ τάλαινα, σύ τε κασίγνητός τε σὸς
 τλήμων Ὀρέστης μητρὸς ὅδε φονεὺς ἔφν;
 προσφθέγμασιν γὰρ οὐ μιαῖνομαι σέθεν, 75
 εἰς Φοῖβον ἀναφέρουσα τὴν ἁμαρτίαν.
 καίτοι στένω γε τὸν Κλυταιμνήστρας μόρον
 ἐμῆς ἀδελφῆς, ἦν, ἐπεὶ πρὸς Ἴλιον
 ἔπλευσ' ὅπως ἔπλευσα θεομανεῖ πότμῳ,
 οὐκ εἶδον, ἀπολειφθεῖσα δ' αἰάξω τύχας. 80
- ΗΛ. Ἑλένη, τί σοι λέγοιμ' ἂν ἅ γε παροῦς' ὄρᾳς,
 ἐν συμφοραῖσι τὸν Ἀγαμέμνονος γόνον;
 ἐγὼ μὲν ἄνπνος πάρεδρος ἀθλίῳ νεκρῷ,
 νεκρὸς γὰρ οὗτος οὔνεκα σμικρᾷς πνοῆς,
 θάσσω· τὰ τούτου δ' οὐκ ὄνειδίζω κακά· 85

σὺ δ' εἰ μακαρία μακάριός θ' ὁ σος πόσις,
ἦκετον ἐφ' ἡμᾶς ἀθλίως πεπραγότας.

ΕΛ. πόσον χρόνον δὲ δεμνίοις πέπτωχ' ὄδε;

ΗΛ. ἐξ οὐπερ αἶμα γενέθλιον κατήνυσεν.

ΕΛ. ὦ μέλεος, ἡ τεκοῦσά θ', ὥς διώλετο. 90

ΗΛ. οὕτως ἔχει τάδ', ὥστ' ἀπείρηκεν κακοῖς.

ΕΛ. πρὸς θεῶν, πίθοι' ἂν δῆτά μοι τι, παρθένε;

ΗΛ. ὥς ἄσχολός γε συγγόνου προσεδριά.

ΕΛ. βούλει τάφον μοι πρὸς κασιγνήτης μολεῖν;

ΗΛ. μητρὸς κελεύεις τῆς ἐμῆς; τίνος χάριν; 95

ΕΛ. κόμης ἀπαρχὰς καὶ χοὰς φέρουσ' ἐμάς.

ΗΛ. σοὶ δ' οὐχὶ θεμιτὸν πρὸς φίλων στείχειν τάφον;

ΕΛ. δεῖξαι γὰρ Ἀργείοισι σῶμ' αἰσχύνομαι.

ΗΛ. ὁψέ γε φρονεῖς εὖ, τότε λιποῦσ' αἰσχροῦς δόμους.

ΕΛ. ὀρθῶς ἔλεξας, οὐ φίλως δέ μοι λέγεις. 100

ΗΛ. αἰδῶς δὲ δὴ τίς σ' ἐς Μυκηναίους ἔχει;

ΕΛ. δέδοικα πατέρας τῶν ὑπ' Ἰλίῳ νεκρῶν.

ΗΛ. δεινὸν γὰρ Ἀργεὶ γ' ἀναβοᾷ διὰ στόμα.

ΕΛ. σύ νυν χάριν μοι τὸν φόβον λύσασα δός.

ΗΛ. οὐκ ἂν δυναίμην μητρὸς εἰσβλέψαι τάφον. 105

ΕΛ. αἰσχροὺν γε μέντοι προσπόλους φέρειν τάδε.

ΗΛ. τί δ' οὐχὶ θυγατρὸς Ἑρμιόνης πέμπεις δέμας;

ΕΛ. εἰς ὄχλον ἔρπειν παρθένοισιν οὐ καλόν.

ΗΛ. καὶ μὴν τίνοι γ' ἂν τῇ τεθνηκυῖα τροφάς.

ΕΛ. καλῶς ἔλεξας, πείθομαί τέ σοι, κόρη. 110

ὦ τέκνον ἐξελθ', Ἑρμιόνη, δόμων πάρος

καὶ λαβὲ χοὰς τάσδ' ἐν χεροῖν κόμας τ' ἐμάς·

ἐλθοῦσα δ' ἀμφὶ τὸν Κλυταιμνήστρας τάφον

μελίκρατ' ἄφες γάλακτος οἶνωπόν τ' ἄχνην, 115

καὶ στᾶσ' ἐπ' ἄκρου χώματος λέξον τάδε·

καὶ πέμφομαί γε θυγατέρ'· εὖ γάρ τοι λέγεις.

111

- Ἑλένη σ' ἀδελφὴ ταῖσδε δωρεῖται χοαῖς,
 φόβῳ προσελθεῖν μνηῆμα σόν, ταρβοῦσά τε
 Ἀργεῖον ὄχλον. εὐμενῇ δ' ἄνωγέ νιν
 ἔμοί τε καὶ σοὶ καὶ πόσει γνώμην ἔχειν 120
 τοῖν τ' ἀθλίῳιν τοῖνδ' οὓς ἀπώλεσεν θεός.
 ἃ δ' εἰς ἀδελφὴν καιρὸς ἐκπονεῖν ἐμέ,
 ἅπανθ' ὑπισχνοῦ νερτέρων δωρήματα.
 ἴθ' ὦ τέκνον μοι, σπεῦδε καὶ χοὰς τάφῳ
 δοῦσ' ὡς τάχιστα τῆς πάλιν μέμνησ' ὁδοῦ. 125
ΗΛ. ὦ φύσις, ἐν ἀνθρώποισιν ὡς μέγ' εἴ κακόν,
 σωτήριόν τε τοῖς καλῶς κекητημένοις.
 εἶδετε παρ' ἄκρας ὡς ἀπέθρισεν τρίχας,
 σῶζουσά κάλλος; ἔστι δ' ἡ πάλαι γυνή.
 θεοὶ σε μισήσειαν, ὥς μ' ἀπώλεσας 130
 καὶ τόνδε πᾶσάν θ' Ἑλλάδ'. ὦ τάλαιν' ἐγώ.
 αἶδ' αὖ πάρεισι τοῖς ἐμοῖς θρηνηήμασι
 φίλαι ξυνωδοί· τάχα μεταστήσους' ὕπνου
 τόνδ' ἡσυχάζοντ', ὅμμα δ' ἐκτῆξουσ' ἐμὸν
 δακρύοις, ἀδελφὸν ὅταν ὁρῶ μεμνηνότα. 135
 ὦ φίλταται γυναιῖκες, ἡσύχῳ ποδὶ
 χωρεῖτε, μὴ ψοφεῖτε, μηδ' ἔστω κτύπος.
 φιλία γὰρ ἡ σὴ πρεσμενῆς μέν, ἀλλ' ἐμοὶ
 τόνδ' ἐξεγεῖραι ξυμφορὰ γενήσεται.
ΧΟ. σῖγα σῖγα, λεπτόν ἔχνος ἀρβύλης στρ. 140
 τίθετε, μὴ κτυπεῖτ'.
ΗΛ. ἀποπρὸ βᾶτ' ἐκεῖσ', ἀποπρὸ μοι κοίτας.
ΧΟ. ἰδού, πείθομαι.
ΗΛ. ἁἶ σύριγγος ὅπως πνοὰ 145
 λεπτοῦ δόνακος, ὦ φίλα, φώνει μοι.
ΧΟ. ἴδ', ἀτρεμαίαν ὡς ὑπόροφον φέρω
 βοάν. **ΗΛ.** ναὶ οὕτως

κάταγε κάταγε, πρόσιθ' ἀτρέμας, ἀτρέμας ἔθι·
 λόγον ἀπόδος ἐφ' ὅ τι χρέος ἐμόλετέ ποτε. 150
 χρόνια γὰρ πεσὼν ὃδ' εὐνάζεται.

ΧΟ. πῶς ἔχει; λόγου μετάδος, ὦ φίλα, ἀντ.
 [τίνα τύχαν εἶπω;] τίνα δὲ συμφορὰν;

ΗΛ. ἔτι μὲν ἐμπνέει, βραχὺ δ' ἀναστένει. 155

ΧΟ. τί φῆς; ὦ τάλας.

ΗΛ. ὀλεῖς, εἰ βλέφαρα κινήσεις
 ὕπνου γλυκυτάταν φερομένῳ χάριν.

ΧΟ. μέλεος ἐχθίστων θεόθεν ἐργμάτων, 160
 τάλας. ΗΛ. φεῦ μόχθων.

ἄδικος ἄδικα τότε ἄρ' ἔλακεν ἔλακεν, ἀπό-
 φουον ὅτ' ἐπὶ τρίποδι Θέμιδος ἄρ' ἐδίκασε
 φόνον ὁ Λοξίας ἐμᾶς ματέρος. 165

ΧΟ. ὄρᾱς; ἐν πέπλοισι κινεῖ δέμας. στρ.

ΗΛ. σὺ γάρ νιν, ὦ τάλαινα,
 θωῦξας' ἔβαλες ἐξ ὕπνου.

ΧΟ. εὔθειν μὲν οὖν ἔδοξα.

ΗΛ. οὐκ ἀφ' ἡμῶν, οὐκ ἀπ' οἰκῶν 170
 πάλιν ἄρα μεθεμένα κτύπου
 πόδα σὸν εἰλίξεις;

ΧΟ. ὑπνώσσει. ΗΛ. λέγεις εὔ.

πότνια, πότνια νύξ,
 ὑπνοδότειρα τῶν πολυπόνων βροτῶν, 175
 ἐρεβόθεν ἔθι, μόλε μόλε κατάπτερος
 τὸν Ἀγαμεμνόνιον ἐπὶ δόμον.

ὑπὸ γὰρ ἀλγέων ὑπὸ τε συμφορᾶς 180
 διοιχόμεθ', οἰχόμεθα. κτύπον ἡγάγετ'· οὐχὶ σῖγα
 σῖγα φυλασσομένα

στόματος ἀνακέλαδον ἄπο λέχεος ἥ - 185
 συχον ὕπνου χάριν παρέξεις, φίλα;

- ΧΟ. θρόει, τίς κακῶν τελευτὰ μένει; ἀντ.
- ΗΛ. θανεῖν· τί δ' ἄλλο γ' ; ἔμπας
οὐδὲν γὰρ πόθον ἔχει βορᾶς.
- ΧΟ. πρόδηλος ἄρ' ὁ πότμος. 190
- ΗΛ. ἐξέθυσ' ὁ Φοῖβος ἡμᾶς
μέλεον ἀπόφονον αἷμα δούς
πατροφόνου ματρός.
- ΧΟ. δίκη μὲν. ΗΛ. καλῶς δ' οὔ.
ἔθανες ἔθανες, ὦ
τεκομένα με μᾶτερ, ἀπὸ δ' ὠλεσας 195
πατέρα τέκνα τε τάδε σέθεν ἀφ' αἵματος·
ὀλόμεθ' ἰσονέκνες, ὀλόμεθα. 200
σύ τε γὰρ ἐν νεκροῖς, τό τ' ἐμὸν οἴχεται
βίου τὸ πλεόν μέρος ἐν στοναχαῖσί τε καὶ γόοισι
δάκρυσί τ' ἐννυχίοις· 205
ἄγαμος, ἔπιδ', ἄτεκνος ἄτε βίοτον ἅ
μέλεος εἰς τὸν αἰὲν ἔλκω χρόνον.
- ΧΟ. ὄρα παροῦσα, παρθέν' Ἥλέκτρα, πέλας,
μὴ κιατθανῶν σε σύγγονος λέληθ' ὅδε·
οὐ γάρ μ' ἀρέσκει τῷ λίαν παρειμένῳ. 210
- ΟΡ. ὦ φίλον ὕπνου θέλγητρον, ἐπίκουρον νόσου,
ὥς ἡδύ μοι προσῆλθες ἐν δέοντί τε.
ὦ πότνια λήθη τῶν κακῶν, ὥς εἰ σοφὴ
καὶ τοῖσι δυστυχοῦσιν εὐκταία θεός.
πόθεν ποτ' ἦλθον δεῦρο; πῶς δ' ἀφικόμην; 215
ἀμνημονῶ γάρ, τῶν πρὶν ἀπολειφθεῖς φρενῶν.
- ΗΛ. ὦ φίλταθ', ὥς μ' εὐφρανas εἰς ὕπνον πεσῶν.
βούλει θίγω σου κἀνακουφίσω δέμας;
- ΟΡ. λαβοῦ λαβοῦ δῆτ', ἐκ δ' ὄμορξον ἀθλίου
στόματος ἀφρώδη πέλανον ὀμμάτων τ' ἐμῶν. 220
- ΗΛ. ἰδὸν τὸ δούλευμ' ἡδύ, κοῦκ ἀναίνομαι
ἀδέλφ' ἀδελφῇ χειρὶ θεραπεύειν μέλη.

- ΟΡ. ὑπόβαλε πλευροῖς πλευρά, καὺχμῶδη κόμην
ἄφελε προσώπου· λεπτὰ γὰρ λεύσσω κόραις.
- ΗΛ. ὦ βοστρύχων πινῶδες ἄθλιον κάρα, 225
ὡς ἡγρίωσαι διὰ μακροῦς ἀλουσίας.
- ΟΡ. κλινόν μ' ἐς εὐνὴν αὐθις· ὅταν ἀνῆ νόσος
μανιάς, ἀναρθρός εἰμι κᾶσθενῶ μέλη.
- ΗΛ. ἰδού. φίλον τοι τῷ νοσοῦντι δέμνιον,
ἀνιαρόν ὃν τὸ κτῆμ', ἀναγκαῖον δ' ὅμως. 230
- ΟΡ. αὐθις μ' ἐς ὀρθὸν στῆσον, ἀνακύκλει δέμας·
δυσάρεστον οἱ νοσοῦντες ἀπορίας ὕπο.
- ΗΛ. ἢ καπὶ γαίας ἀρμόσαι πόδας θέλεις,
χρόνιον ἵχνος θείς; μεταβολὴ πάντων γλυκύ.
- ΟΡ. μάλιστα· δόξαν γὰρ τόδ' ὑγείας ἔχει. 235
κρεῖσσον δὲ τὸ δοκεῖν, καὶ ἀληθείας ἀπῆ.
- ΗΛ. ἄκουε δὴ νῦν, ὦ κασίγνητον κάρα,
ἕως ἑῷσί σ' εὖ φρονεῖν Ἑρινύες.
- ΟΡ. λέξεις τι καινόν; κεί μὲν εὖ, χάριν φέρεις·
εἰ δ' εἰς βλάβην τιν', ἄλῃς ἔχω τοῦ δυστυχεῖν. 240
- ΗΛ. Μενέλαος ἦκει, σοῦ κασίγνητος πατρός,
ἐν Ναυπλίᾳ δὲ σέλμαθ' ὥρμιστα νεῶν.
- ΟΡ. πῶς εἶπας; ἦκει φῶς ἐμοῖς καὶ σοῖς κακοῖς,
ἀνὴρ ὁμογενὴς καὶ χάριτας ἔχων πατρός;
- ΗΛ. ἦκει, τὸ πιστὸν τόδε λόγων ἐμῶν δέχου, 245
Ἑλένην ἀρόμενος Τρωικῶν ἐκ τειχέων.
- ΟΡ. εἰ μόνος ἐσώθη, μᾶλλον ἂν ζηλωτὸς ᾔην·
εἰ δ' ἄλοχον ἄγεται, κακὸν ἔχων ἦκει μέγα.
- ΗΛ. ἐπίσημον ἔτεκε Τυνδάρεως γὰρ εἰς ψόγον
γένος θυγατέρων δυσκλεές τ' ἂν Ἑλλάδα. 250
- ΟΡ. σύ νυν διάφερε τῶν κακῶν· ἔξεστι γάρ·
καὶ μὴ μόνον λέγ', ἀλλὰ καὶ φρόνει τάδε.
- ΗΛ. οἴμοι, κασίγνητ', ὅμμα σὸν ταράσσεται,
ταχὺς δὲ μετέθου λύσσαν, ἄρτι σωφρονῶν.

- OP. ὦ μῆτερ, ἱκετεύω σε, μὴ 'πίσειέ μοι
 τὰς αἱματοποῦς καὶ δρακοντώδεις κόρας·
 αὐταὶ γὰρ αὐταὶ πλησίον θρώσκουσί μου. 255
- ΗΛ. μὲν', ὦ ταλαίπωρ', ἀτρέμα σοῖς ἐν δεμνίοις.
 ὄρᾱς γὰρ οὐδὲν ὦν δοκεῖς σάφ' εἰδέναι.
- OP. ὦ Φοῖβ', ἀποκτενοῦσί μ' αἱ κυνώπιδες 260
 γοργῶπες ἐνέρων ἱερῖαι, δειναὶ θεαί.
- ΗΛ. οὔτοι μεθήσω· χεῖρα δ' ἐμπλέξασ' ἐμὴν
 σχήσω σὲ πηδᾶν δυστυχῇ πηδήματα.
- OP. μέθες· μί' οὔσα τῶν ἐμῶν Ἑρινύων,
 μέσον μ' ὀχμάξεις, ὥς βάλῃς εἰς Τάρταρον. 265
- ΗΛ. οὐ' γὰρ τάλαινα, τίν' ἐπικουρίαν λάβω,
 ἐπεὶ τὸ θεῖον δυσμενὲς κεκτῆμεθα;
- OP. δὸς τόξα μοι κερουλκά, δῶρα Δοξίου,
 οἷς μ' εἶπ' Ἀπόλλων ἐξαμύνεσθαι θεάς,
 εἴ μ' ἐκφοβοῖεν μανιάσιν λυσσήμασιν. 270
 βεβλήσεται τις θεῶν βροτησίᾳ χειρί,
 εἰ μὴ' ξαμείψει χωρὶς ὀμμάτων ἐμῶν.
 οὐκ εἰσακούετ'; οὐχ ὄρᾳθ' ἐκηβόλων
 τόξων περωτὰς γλυφίδας ἐξορμωμένας;
 ᾧ ᾧ·
- τί δῆτα μέλλετ'; ἐξακρίζετ' αἰθέρα 275
 πτεροῖς· τὰ Φοῖβον δ' αἰτιᾶσθε θέσφατα.
 ἔα·
- τί χρῆμ' ἄλύω, πνεῦμ' ἀνείς ἐκ πνευμόνων;
 ποῖ ποῖ ποθ' ἡλάμεσθα δεμνίων ἄπο;
 ἐκ κυμάτων γὰρ αὐθις αὐτὴ γαλήν' ὄρω.
 σύγγonne, τί κλαίεις κρᾶτα θεῖσ' εἴσω πέπλων; 280
 αἰσχύνομαί σοι μεταδιδούς πόνων ἐμῶν
 ὄχλον τε παρέχων παρθένω νόσοις ἐμαῖς.
 μὴ τῶν ἐμῶν ἕκατι συντήκου κακῶν·
 σὺ μὲν γὰρ ἐπένευσας τάδ', εἴργασται δ' ἐμοὶ

μητροῶν αἵμα· Λοξία δὲ μέμφομαι, 285
 ὅστις μ' ἐπάρας ἔργον ἀνοσιώτατον,
 τοῖς μὲν λόγοις εὖφρανε, τοῖς δ' ἔργοισιν οὐ.
 οἶμαι δὲ πατέρα τὸν ἐμόν, εἰ κατ' ὄμματα
 ἐξιστόρουν νιν, μητέρ' εἰ κτεῖναί με χρή, 290
 πολλὰς γενεῖου τοῦδ' ἂν ἐκτεῖναι λιτὰς
 μήποτε τεκούσης εἰς σφαγὰς ὥσαι ξίφος,
 εἰ μήτ' ἐκεῖνος ἀναλαβεῖν ἔμελλε φῶς,
 ἐγὼ δ' ὁ τλήμων τοιάδ' ἐκπλήσειν κακά.
 καὶ νῦν ἀνακάλυπτ', ὃ κασίγνητον κἄρα,
 ἐκ δακρύων τ' ἄπελθε, κεί μάλ' ἀθλίως 295
 ἔχομεν· ὅταν δὲ τᾶμ' ἀθυμήσαντ' ἴδῃς,
 σύ μου τὸ δεινὸν καὶ διαφθαρὲν φρενῶν
 ἴσχναινε παραμυθοῦ θ'· ὅταν δὲ σὺ στένης,
 ἡμᾶς παρόντας χρή σε νουθετεῖν φίλα·
 ἐπικουρίαι γὰρ αἶδε τοῖς φίλοις καλαί. 300
 ἀλλ', ὃ τάλαινα, βᾶσα δωμάτων ἔσω
 ὕπνω τ' ἄυπνον βλέφαρον ἐκταθεῖσα δός,
 σῆτόν τ' ὄρεξαι λουτρά τ' ἐπιβαλοῦ χροῖ.
 εἰ γὰρ προλείψεις μ' ἢ προσεδρία νόσον
 κτήσει τιν', οἰχόμεσθα· σὲ γὰρ ἔχω μόνην 305
 ἐπίκουρον, ἄλλων ὥς ὄρεᾷς ἔρημος ὢν.
 ΗΛ. οὐκ ἔστι· σὺν σοὶ καὶ θανεῖν αἰρήσομαι
 καὶ ζῆν· ἔχει γὰρ ταῦτόν· ἦν σὺ κατθανῆς,
 γυνὴ τί δράσω; πῶς μόνη σωθήσομαι,
 ἀνάδελφος ἀπάτωρ ἄφιλος; εἰ δὲ σοὶ δοκεῖ, 310
 δρᾶν χρή τὰδ'. ἀλλὰ κλῖνον εἰς εὐνὴν δέμας,
 καὶ μὴ τὸ ταρβοῦν κἄκφοβοῦν σ' ἐκ δεμνίων
 ἄγαν ἀποδέχου, μένε δ' ἐπὶ στρωτοῦ λέχους.
 καὶ μὴ νοσῇ γὰρ, ἀλλὰ δοξάζῃ νοσεῖν,
 κάματος βροτοῖσιν ἀπορία τε γίγνεται. 315

- ΧΟ. αἰᾶ, στρ.
 δρομάδες ὦ πτεροφόροι
 ποτιιάδες θεαί,
 ἄβράκχευτον αἰ θίασον ἐλλάχετε
 δάκρυσι καὶ γόοις, 320
 μελάγχρωτες Εὐμενίδες, αἵ τε τὸν
 ταναὸν αἰθέρ' ἀμπάλλεσθ', αἵματος
 τινύμεναι δίκαν, τινύμεναι φόνον,
 καθικετεύομαι καθικετεύομαι,
 τὸν Ἀγαμέμνωνος 325
 γόνον ἐάσατ' ἐκλαθέσθαι λύσας
 μανιάδος φοιταλέου. κακῶν φεῦ μόχθων,
 οἴων, ὦ τάλας, ὄρεχθεις ἔρρεις,
 τρίποδος ἄπο φάτιν, ἃν ὁ Φοῖβος
 ἔλακεν ἔλακε, δεξάμενος ἀνὰ δάπεδον, 330
 ἵνα μεσόμεφαλοι λέγονται μυχοί.
 ὦ Ζεῦ, ἀντ.
 τίς ἔλεος, τίς ὄδ' ἀγῶν
 φόνιος ἔρχεται,
 θοάζων σε τὸν μέλεον, ᾧ δάκρυα 335
 δάκρυσι συμβάλλει
 πορεύων τις εἰς δόμον ἀλαστόρων
 ματέρος αἷμα σᾶς, ὅ σ' ἀναβακχεύει;
 κατολοφύρομαι κατολοφύρομαι.
 ὁ μέγας ὄλβος οὐ μόνιμος ἐν βροτοῖς 340
 ἀνὰ δὲ λαῖφος ὥς
 τις ἀκάτου θοᾶς τινάξας δαίμων
 κατέκλυσεν δεινῶν πόνων, ὥς πόντου
 λάβροις ὀλεθρίοισιν ἐν κύμασιν.
 τίνα γὰρ ἔτι πάρος οἶκον ἄλλον 345
 ἕτερον ἢ τὸν ἀπὸ θεογόνων γάμων

τὸν ἀπὸ Ταντάλου, σέβεσθαι με χρή;
καὶ μὴν βασιλεὺς ὅδε δὴ στείχει,
Μενέλαος ἄναξ, πολλῇ ἄβροσύνῃ
δῆλος ὀρᾶσθαι 350

τῶν Τανταλιδῶν ἐξ αἵματος ὦν.
ὦ χιλιόναυον στρατὸν ὀρμήσας
εἰς γῆν Ἀσίαν,
χαῖρ', εὐτυχίᾳ δ' αὐτὸς ὁμιλεῖς,
θεόθεν πράξας ἅπερ ἡΰχου. 355

ME. ὦ δῶμα, τῇ μὲν σ' ἡδέως προσδέρομαι
Τροίαθεν ἐλθὼν, τῇ δ' ἰδὼν καταστένω·
κύκλῳ γὰρ ἐλιχθεῖσαν ἀθλίους κακοῖς
οὐπώποτ' ἄλλην μᾶλλον εἶδον ἐστίαν.

Ἀγαμέμνωνος μὲν γὰρ τύχας ἡπιστάμην 360
καὶ θάνατον, οἷω πρὸς δάμαρτος ὦλετο,
Μαλέα προσίσχων προῶραν· ἐκ δὲ κυμάτων
ὁ ναυτίλοισι μάντις ἐξηγγεilé μοι

Νηρέως προφήτης Γλαῦκος ἀψευδῆς θεός,
ὅς μοι τάδ' εἶπεν ἐμφανῶς παρασταθεῖς· 365

Μενέλαε, κεῖται σὸς κασίγνητος θανὼν,
λουτροῖσιν ἀλόχου περιπεσὼν ἀρκυστάτοις.
δακρύων δ' ἔπλησεν ἐμέ τε καὶ ναύτας ἐμοὺς
πολλῶν. ἐπεὶ δὲ Ναυπλίας ψαύω χθονός,
ἤδη δάμαρτος ἐνθάδ' ἐξορμωμένης, 370

δοκῶν Ὀρέστην παῖδα τὸν Ἀγαμέμνωνος
φίλαισι χερσὶ περιβαλεῖν καὶ μητέρα,
ὥς εὐτυχοῦντας, ἔκλυον ἀλιτύπων τινὸς
τῆς Τυνδαρείας θυγατρὸς ἀνόσιον φόνου.
καὶ νῦν ὅπου στὶν εἶπατ', ὦ νεάνιδες, 375
Ἀγαμέμνωνος παῖς, ὅς τὰ δεῖν' ἔτλη κακά.
βρέφος γὰρ ἦν τότε ἐν Κλυταιμνήστρας χεροῖν,

- ὅτ' ἐξέλειπον μέλαθρον εἰς Τροίαν ἰών,
 ὥστ' οὐκ ἂν αὐτὸν γνωρίσαιμ' ἂν εἰσιδών.
 OP. ὅδ' εἴμ' Ὀρέστης, Μενέλεως, ὃν ἱστορεῖς. 380
 ἐκὼν ἐγὼ σοι τὰμὰ σημανῶ κακά.
 τῶν σῶν δὲ γονάτων πρωτόλεια θυγγάνω
 ἱκέτης, ἀφύλλου στόματος ἐξάπτων λιτᾶς·
 σῶσόν μ'· ἀφῆξαι δ' αὐτὸν εἰς καιρὸν κακῶν.
 ME. ὦ θεοί, τί λεύσσω; τίνα δέδορκα νερτέρων; 385
 OP. εὖ γ' εἶπας· οὐ γὰρ ξῶ κακοῖς, φάος δ' ὀρῶ.
 ME. ὥς ἡγρίωσαι πλόκαμον αὐχμηρόν, τάλας,
 OP. οὐχ ἢ πρόσοψίς μ', ἀλλὰ τᾶργ' αἰκίζεται.
 ME. δεινὸν δὲ λεύσσεις ὀμμάτων ξηραῖς κόραις.
 OP. τὸ σῶμα φροῦδον· τὸ δ' ὄνομ' οὐ λέλοιπέ με. 390
 ME. ὦ παρὰ λόγον μοι σὴ φανεῖς ἀμορφία.
 OP. ὅδ' εἰμὶ μητρὸς τῆς ταλαιπώρου φονεύς.
 ME. ἤκουσα· φείδου δ' ὀλιγάκις λέγειν κακά.
 OP. φειδόμεθ'· ὁ δαίμων δ' εἰς με πλούσιος κακῶν.
 ME. τί χρῆμα πάσχεις; τίς σ' ἀπόλλυσιν νόσος; 395
 OP. ἢ σύνεσις, ὅτι σύνοιδα δεῖν· εἰργασμένους.
 ME. πῶς φῆς; σοφόν τοι τὸ σαφές, οὐ τὸ μὴ σαφές.
 OP. λύπη μάλιστά γ' ἢ διαφθείρουσά με,
 ME. δεινὴ γὰρ ἢ θεός, ἀλλ' ὅμως ἰάσιμος.
 OP. μανίαι τε, μητρὸς αἵματος τιμωρίαι. 400
 ME. ἤρξω δὲ λύσσης πότε; τίς ἡμέρα τότ' ἦν;
 OP. ἐν ἣ τάλαιναν μητέρ' ἐξώγκουν τάφῳ.
 ME. πότερα κατ' οἴκους ἢ προσεδρεύων πυρᾷ;
 OP. νυκτὸς φυλάσσω ὁστέων ἀναίρεσιν.
 ME. παρῆν τις ἄλλος, ὃς σὸν ὥρθευεν δέμας; 405
 OP. Πυλάδης, ὁ συνδρῶν αἷμα καὶ μητρὸς φόνον.
 ME. φαντασμάτων δὲ τάδε νοσεῖς ποίῳ ὑπο;
 OP. ἔδοξ' ἰδεῖν τρεῖς νυκτὶ προσφερεῖς κόρας.
 ME. οἶδ' ἄς ἔλεξας, ὀνομάσαι δ' οὐ βούλομαι.

- OP. σεμναὶ γάρ· εὐπαίδευτα δ' ἀποτρέπει λέγειν. 410
 ME. αὐταὶ σε βακχεύουσι συγγενεῖ φόνῳ;
 OP. οἴμοι διωγμῶν, οἷς ἐλαύνομαι τάλας.
 ME. οὐ δεινὰ πάσχειν δεινὰ τοὺς εἰργασμένους.
 OP. ἀλλ' ἔστιν ἡμῖν ἀναφορὰ τῆς ξυμφορᾶς
 ME. μὴ θάνατον εἴπης· τοῦτο μὲν γὰρ οὐ σοφόν. 415
 OP. Φοῖβος, κελεύσας μητρὸς ἐκπρᾶξαι φόνον.
 ME. ἀμαθέστερός γ' ὢν τοῦ καλοῦ καὶ τῆς δίκης.
 OP. δουλεύομεν θεοῖς, ὅ τι ποτ' εἰσὶν οἱ θεοί.
 ME. καὶτ' οὐκ ἀμύνει Λοξίας τοῖς σοῖς κακοῖς;
 OP. μέλλει· τὸ θεῖον δ' ἔστι τοιοῦτον φύσει. 420
 ME. πόσον χρόνον δὲ μητρὸς οἴχονται πνοαί;
 OP. ἕκτον τόδ' ἡμαρ· ἔτι πυρὰ θερμὴ τάφου.
 ME. ὥς ταχὺ μετῆλθόν σ' αἷμα μητέρος θεαί.
 OP. οὐ σοφός, ἀληθὴς δ' εἰς φίλους ἔφυν φίλος.
 ME. πατρὸς δὲ δὴ τι σ' ὠφελεῖ τιμωρία; 425
 OP. οὐπω· τὸ μέλλον δ' ἴσον ἀπραξίᾳ λέγω.
 ME. τὰ πρὸς πόλιν δὲ πῶς ἔχεις δράσας τάδε;
 OP. μισούμεθ' οὕτως ὥστε μὴ προσεννέπειν.
 ME. οὐδ' ἡγνισαὶ σὸν αἷμα κατὰ νόμους χεροῖν;
 OP. ἐκκλείομαι γὰρ δωμάτων ὅπη μόλω. 430
 ME. τίνες πολιτῶν ἐξαμιλλῶνταί σε γῆς;
 OP. Οἶαξ, τὸ Τροίας μῖσος ἀναφέρων πατρί.
 ME. ξυνῆκα· Παλαμήδους σε τιμωρεῖ φόνος.
 OP. οὐ γ' οὐ μετῆν μοι· διὰ τριῶν δ' ἀπόλλυμαι.
 ME. τίς δ' ἄλλος; ἢ που τῶν ἀπ' Αἰγίσθου φίλων; 435
 OP. οὐτοί μ' ὑβρίζουσ', ὧν πόλις τὰ νῦν κλύει.
 ME. Ἀγαμέμνωνος δὲ σκῆπτρ' ἔᾱ σ' ἔχειν πόλις;
 OP. πῶς, οἵτινες ζῆν οὐκ ἔῶσ' ἡμᾶς ἔτι;
 ME. τί δρῶντες ὅ τι καὶ σαφεὲς ἔχεις εἰπεῖν ἐμοί;
 OP. ψῆφος καθ' ἡμῶν οἴσεται τῇδ' ἡμέρᾳ. 440
 ME. φεύγειν πόλιν τήνδ' ἢ θανεῖν ἢ μὴ θανεῖν;

- ΟΡ. θανεῖν ὑπ' ἀστῶν λευσίμῳ πετρώματι.
 ΜΕ. καὶ τ' οὐχὶ φεύγεις γῆς ὑπερβαλὼν ὄρους;
 ΟΡ. κύκλῳ γὰρ εἰλισσόμεθα παγχάλκοις ὅπλοις.
 ΜΕ. ἰδίᾳ πρὸς ἐχθρῶν ἢ πρὸς Ἀργείας χερός; 445
 ΟΡ. πάντων πρὸς ἀστῶν, ὥς θάνω· βραχὺς λόγος.
 ΜΕ. ὦ μέλεος, ἦκεις συμφορᾶς πρὸς τοῦσχατον.
 ΟΡ. εἰς σ' ἐλπίς ἡμῇ καταφυγὰς ἔχει κακῶν.
 ἀλλ' ἀθλίως πράσσουσιν εὐτυχῆς μολῶν
 μετάδος φίλοισι σοῖσι σῆς εὐπραξίας, 450
 καὶ μὴ μόνος τὸ χρηστὸν ἀπολαβὼν ἔχε,
 ἀλλ' ἀντιλάζου καὶ πόνων ἐν τῷ μέρει,
 χάριτας πατρῶας ἐκτίνων εἰς οὓς σε δεῖ.
 ὄνομα γάρ, ἔργον δ' οὐκ ἔχουσιν οἱ φίλοι
 οἱ μὴ πλὶ ταῖσι συμφορᾶς ὄντες φίλοι. 455
 ΧΟ. καὶ μὴν γέροντι δεῦρ' ἀμιλλᾶται ποδὶ
 ὁ Σπαρτιάτης Τυνδάρεως, μελάμπεπλος
 κουρᾶ τε θυγατρὸς πενθίμῳ κεκαρμένος.
 ΟΡ. ἀπωλόμην, Μενέλαε· Τυνδάρεως ὅδε
 στείχει πρὸς ἡμᾶς, οὗ μάλιστ' αἰδῶς μ' ἔχει 460
 εἰς ὅμματ' ἐλθεῖν τοῖσιν ἐξειργασμένοις.
 καὶ γάρ μ' ἔθρεψε μικρὸν ὄντα, πολλὰ δὲ
 φιλήματ' ἐξέπλησε, τὸν Ἀγαμέμνωνος
 παῖδ' ἀγκάλαισι περιφέρων, Ἀθήδᾳ θ' ἄμα,
 τιμῶντέ μ' οὐδὲν ἡῶσον ἢ Διοσκόρῳ· 465
 οἷς, ὦ τάλαινα καρδία ψυχὴ τ' ἐμῇ,
 ἀπέδωκ' ἀμοιβὰς οὐ καλὰς. τίνα σκότον
 λάβω προσώπῳ; ποῖον ἐπίπροσθεν νέφος
 θᾶμαι, γέροντος ὁμμάτων φεύγων κόρας;
 ΤΥ. ποῦ ποῦ θυγατρὸς τῆς ἐμῆς ἴδω πόσιν, 470
 Μενέλαον; ἐπὶ γὰρ τῷ Κλυταιμνήστρας τάφῳ
 χοὰς χέομενος ἔκλυον ὥς εἰς Ναυπλίαν
 ἦκοι σὺν ἀλόχῳ πολυετὴς σεσωσμένος.

ἄγετέ με· πρὸς γὰρ δεξιὰν αὐτοῦ θέλω
στὰς ἀσπασσθαι, χρόνιον εἰσιδὼν φίλον. 475

ΜΕ. ὦ πρέσβυ χαῖρε, Ζηνὸς ὁμόλεκτρον κάρα.

ΤΥ. ὦ χαῖρε καὶ σὺ Μενέλεως, κήδευμ' ἐμόν.
ἔα· τὸ μέλλον ὥς κακὸν τὸ μὴ εἰδέναι.
ὁ μητροφόντης ὅδε πρὸ δωμαίων δράκων
στίλβει νοσώδεις ἀστραπάς, στύγημ' ἐμόν. 480
Μενέλαε, προσφθέγγει νιν ἀνόσιον κάρα;

ΜΕ. τί γάρ; φίλου μοι πατρός ἐστιν ἔκγονος.

ΤΥ. κείνου γὰρ ὅδε πέφυκε, τοιοῦτος γεγώς;

ΜΕ. πέφυκεν· εἰ δὲ δυστυχεῖ, τιμητέος.

ΤΥ. βεβαρβάρωσαι, χρόνιος ὦν ἐν βαρβάροις. 485

ΜΕ. Ἑλληνικόν τοι τὸν ὁμόθεν τιμᾶν αἶε.

ΤΥ. καὶ τῶν νόμων γε μὴ πρότερον εἶναι θέλειν.

ΜΕ. πᾶν τοῦξ ἀνάγκης δοῦλόν ἐστ' ἐν τοῖς σοφοῖς.

ΤΥ. κέκτησό νυν σὺ τοῦτ', ἐγὼ δ' οὐ κτήσομαι.

ΜΕ. ὀργὴ γὰρ ἅμα σου καὶ τὸ γῆρας οὐ σοφόν. 490

ΤΥ. πρὸς τόνδ' ἄγων ἂν τί σοφίας εἶη πέρι;
εἰ τὰ καλὰ πᾶσι φανερά καὶ τὰ μὴ καλὰ,
τούτου τίς ἀνδρῶν ἐρένετ' ἀσυνετώτερος,
ὅστις τὸ μὲν δίκαιον οὐκ ἐσκέψατο
οὐδ' ἦλθεν ἐπὶ τὸν κοινὸν Ἑλλήνων νόμον; 495

ἐπεὶ γὰρ ἐξέπνευσεν Ἀγαμέμνων βίον
πληγείς θυγατρὸς τῆς ἐμῆς ὑπαὶ κάρα,
αἰσχιστον ἔργον, οὐ γὰρ αἰνέσω ποτέ,
χορὴν αὐτὸν ἐπιθεῖναι μὲν αἵματος δίκην 500
ὀσίαν διώκοντ' ἐκβαλεῖν τε δωμαίων
μητέρα· τὸ σῶφρόν τ' ἔλαβεν ἀντὶ συμφορᾶς,
καὶ τοῦ νόμου τ' ἂν εἶχετ' εὐσεβῆς τ' ἂν ᾦν.
νῦν δ' εἰς τὸν αὐτὸν δαίμον' ἦλθε μητέρι.
κακὴν γὰρ αὐτὴν ἐνδίκως ἡγούμενος, 505
αὐτὸς κακίων γέγονε μητέρα κτανών.

ἐρήσομαι δὲ Μενέλεως τοσόνδε σε·
 εἰ τόνδ' ἀποκτείνειεν ὁμόλεκτρος γυνή,
 χῶ τοῦδε παῖς αὖ μητέρ' ἀνταποκτενεῖ,
 κ' ἄπειθ' ὁ κείνου γενόμενος φόνω φόνον 510
 λύσει, πέρας δὴ ποῖ κακῶν προβήσεται;
 καλῶς ἔθεντο ταῦτα πατέρες οἱ πάλοι·
 εἰς ὁμμάτων μὲν ὄψιν οὐκ εἶων περᾶν
 οὐδ' εἰς ἀπάντημ', ὅστις αἰμ' ἔχων κυρεῖ,
 φυγαῖσι δ' ὅσιον, ἀνταποκτείνειν δὲ μή. 515
 ἀεὶ γὰρ εἷς ἔμελλεν ἔξεσθαι φόνου,
 τὸ λοῖσθιον μῖασμα λαμβάνων χεροῖν.
 ἐγὼ δὲ μισῶ μὲν γυναῖκας ἀνοσίους,
 πρώτην δὲ θυγατέρ', ἣ πόσιν κατέκτανεν·
 Ἑλένην τε τὴν σὴν ἄλοχον οὔ ποτ' αἰνέσω 520
 οὐδ' ἂν προσείποιμ'· οὐδὲ σὲ ξηλῶ, κακῆς
 γυναικὸς ἐλθόνθ' οὔνεκ' ἐς Τροίας πέδον.
 ἄμυνῶ δ' ὅσον περ δυνατός εἰμι τῷ νόμῳ,
 τὸ θηριῶδες τοῦτο καὶ μισαιφόνον
 παύων, ὃ καὶ γῆν καὶ πόλεις ὄλκυσ' ἀεί. 525
 ἐπεὶ τίν' εἶχες, ὦ τάλας, ψυχὴν τότε
 ὅτ' ἐξέβαλλε μαστὸν ἱκετεύουσά σε
 μήτηρ; ἐγὼ μὲν οὐκ ἰδὼν τὰ κεῖ κακά,
 δακρύοις γέροντ' ὀφθαλμὸν ἐκτήκω τάλας.
 ἐν οὖν λόγοισι τοῖς ἐμοῖς ὁμορροθεῖ· 530
 μισεῖ γε πρὸς θεῶν καὶ τίνεις μητρὸς δίκας,
 μανίαις ἀλαίνων καὶ φόβοις. τί μαρτύρων
 ἄλλων ἀκούειν δεῖ μ', ἃ γ' εἰσορᾶν πάρα;
 ὡς οὖν ἂν εἰδῆς, Μενέλεως, τοῖσιν θεοῖς
 μὴ προᾶσθ' ἐναντί', ὥφελειν τοῦτον θέλων. 535
 * * * * *

ἔα δ' ὅπ' ἀστῶν καταφονευθῆναι πέτροις, 536
 ἢ μὴ πῖβαινε Σπαρτιάτιδος χθονός.

θυγάτηρ ἐμὴ θανοῦς' ἔπραξεν ἔνδικα·
 ἀλλ' οὐχὶ πρὸς τοῦδ' εἰκὸς ἦν αὐτὴν θανεῖν.
 ἐγὼ δὲ τᾶλλα μακάριος πέφυκ' ἀνὴρ, 540
 πλὴν εἰς θυγατέρας· τοῦτο δ' οὐκ εὐδαιμονῶ.

ΧΟ. ξηλωτὸς ὅστις εὐτύχησεν εἰς τέκνα
 καὶ μὴ' πισημούς συμφορὰς ἐκτήσατο.

ΟΡ. ᾧ γέρον, ἐγὼ τοι πρὸς σὲ δειμαίνω λέγειν,
 ὅπου γε μέλλω σὴν τι λυπήσειν φρένα. 545

ἐγὼ δ', ἀνόσιός εἰμι μητέρα κτανών,
 ὅσιος δέ γ' ἕτερον ὄνομα, τιμωρῶν πατρί.
 ἀπελθέτω δὴ τοῖς λόγοισιν ἐκποδῶν
 τὸ γῆρας ἡμῖν τὸ σόν, ὃ μ' ἐκπλήσσει λόγου,
 καὶ καθ' ὁδὸν εἰμι· νῦν δὲ σὴν ταρβῶ τρίχα. 550
 τί χρῆν με δρᾶσαι; δύο γὰρ ἀντίθεες δυοῖν·
 πατὴρ μὲν ἐφύτευσέν με, σὴ δ' ἔτικτε παῖς,
 τὸ σπέρμ' ἄρουρα παραλαβοῦς' ἄλλου πάρα·
 ἄνευ δὲ πατρὸς τέκνον οὐκ εἴη ποτ' ἄν.

ἐλογισάμην οὖν τῷ γένους ἀρχηγέτῃ 555
 μᾶλλον μ' ἀμῦναι τῆς ὑποστάσης τροφάς·
 ἢ σὴ δὲ θυγάτηρ, μητέρ' αἰδοῦμαι λέγειν,
 ἰδίοισιν ὕμεναίοισι κοῦχλ' σώφροσιν
 εἰς ἀνδρὸς ἦει λέκτρ'· ἐμαυτόν, ἦν λέγω
 κακῶς ἐκείνην, ἐξερῶ· λέξω δ' ὅμως. 560

Αἰγισθος ἦν ὁ κρυπτὸς ἐν δόμοις πόσις.
 τοῦτον κατέκτειν', ἐπὶ δ' ἔθυσα μητέρα,
 ἀνόσια μὲν δρῶν, ἀλλὰ τιμωρῶν πατρί.
 ἐφ' οἷς δ' ἀπειλεῖς ὥς πετραθῆναι με δεῖ,
 ἄκουσον ὥς ἄπασαν Ἑλλάδ' ὠφελῶ. 565

εἰ γὰρ γυναιῖκες εἰς τόδ' ἥξουσιν θράσους,
 ἄνδρας φονεύειν, καταφυγὰς ποιούμεναι
 εἰς τέκνα, μαστοῖς τὸν ἔλεον θηρώμεναι,
 παρ' οὐδὲν αὐταῖς ἦν ἂν ὀλλύναι πόσεις

ἐπὶ κλημ' ἐχούσαις ὅτι τύχοι. δράσας δ' ἐγὼ 570
 δειν', ὥς σὺ κομπεῖς, τόνδ' ἔπαυσα τὸν νόμον.
 μισῶν δὲ μητέρ' ἐνδίκως ἀπώλεσα,
 ἥτις μεθ' ὅπλων ἄνδρ' ἀπόντ' ἐκ δωμάτων
 πάσης ὑπὲρ γῆς Ἑλλάδος στρατηλάτην
 προὔδωκε κοῦκ ἔσωσ' ἀκήρατον λέχος· 575
 ἐπεὶ δ' ἀμαρτοῦσ' ἥσθητ', οὐχ ἀντὶ δίκην
 ἐπέθηκεν, ἀλλ' ὥς μὴ δίκην δοίῃ πόσει,
 ἐξημῖωσε πατέρα καπέκτειν' ἐμόν.
 πρὸς θεῶν, ἐν οὐ καλῷ μὲν ἐμνήσθην θεῶν,
 φόνον δικάζων, εἰ δὲ δὴ τὰ μητέρος 580
 σιγῶν ἐπῆνουν, τί μ' ἂν ἔδρασ' ὁ κατθανών;
 οὐκ ἂν με μισῶν ἀνεχόρευ' Ἐρινύσιν;
 ἢ μητρὶ μὲν πάρεισι σύμμαχοι θεαί,
 τῷ δ' οὐ πάρεισι μᾶλλον ἡδίκημένῳ;
 σύ τοι φυτεύσας θυγατέρ', ὧ γέρον, κακὴν 585
 ἀπώλεσάς με· διὰ τὸ γὰρ κείνης θράσος
 πατρὸς στερηθεὶς, ἐγενόμην μητροκτόνος·
 ὄρᾳς Ὀδυσσεῶς ἄλοχον· οὐ κατέκτανε
 Τηλέμαχος· οὐ γὰρ ἐπεγάμει πόσει πόσιν,
 μένει δ' ἐν οἴκοις ὑγιὲς εὐναστήριον. 590
 ὄρᾳς, Ἀπόλλων ὃς μεσομφάλους ἔδρας
 ναίων βροτοῖσι στόμα νέμει σαφέστατον,
 ᾧ πειθόμεσθα πάνθ' ὅσ' ἂν κείνος λέγῃ,
 τούτῳ πιθόμενος τὴν τεκοῦσαν ἔκτανεν.
 ἐκεῖνον ἡγρεῖσθ' ἀνόσιον καὶ κτείνετε· 595
 ἐκεῖνος ἡμαρτ', οὐκ ἐγώ. τί χρῆν με δρᾶν;
 ἢ οὐκ ἀξιόχρεως ὁ θεὸς ἀναφέροντί μοι
 μίασμα λῦσαι; ποῦ τις οὖν ἔτ' ἂν φύγοι,
 εἰ μὴ ὁ κελεύσας ῥύσεται με μὴ θανεῖν;
 ἀλλ' ὥς μὲν οὐκ εὖ μὴ λέγ' εἴργασται τάδε, 600
 ἡμῖν δὲ τοῖς δράσασιν οὐκ εὐδαιμόνως.

γάμοι δ' ὅσοις μὲν εὖ καθεστᾶσιν βροτῶν,
μακάριος αἰών· οἷς δὲ μὴ πίπτουσιν εὖ,
τά τ' ἔνδον εἰσὶ τά τε θύραζε δυστυχεῖς.

ΧΟ. αἰ γυναικες ἐμποδὼν ταῖς ξυμφοραῖς 605
ἔφυσαν ἀνδρῶν πρὸς τὸ δυστυχέστερον.

ΤΤ. ἐπεὶ θρασύνει κούχ ὑποστέλλει λόγῳ,
οὔτω δ' ἀμείβει μ' ὥστε μ' ἀλγῆσαι φρένα,
μᾶλλον μ' ἀνάψεις ἐπὶ σὸν ἐξελθεῖν φόνον· 610
καλὸν πάρεργον δ' αὐτὸ θήσομαι πόνων

ᾧν οὔνεκ' ἦλθον θυγατρὶ κοσμήσων τάφον.
μολῶν γὰρ εἰς ἔκκλητον Ἀργείων ὄχλου
ἐκοῦσαν οὐχ ἐκοῦσαν ἐπισεῖσω πόλιν
σοὶ σῆ τ' ἀδελφῇ, λεύσιμον δοῦναι δίκην.

μᾶλλον δ' ἐκείνη σοῦ θανεῖν ἐστ' ἀξία, 615

ἢ τῇ τεκούσῃ σ' ἡγρίωσ', εἰς οὓς αἰεὶ
πέμπουσα μύθους ἐπὶ τὸ δυσμενέστερον,
ὀνείρατ' ἀγγέλλουσα τὰ γαμέμνονος,
καὶ τοῦθ' ὃ μισήσειαν Αἰγίσθου λέχος
οἱ νεώτεροι θεοί, καὶ γὰρ ἐνθάδ' ἦν πικρόν, 620
ἕως ὑφήψε δῶμ' ἀνηφαιστῶ πυρί.

Μενέλαε, σοὶ δὲ τάδε λέγω δράσω τε πρὸς·
εἰ τοῦμόν ἐχθος ἐναριθμεῖ κῆδός τ' ἐμόν,
μὴ τῷδ' ἀμύνειν φόνον ἐναντίον θεοῖς·

ἕα δ' ὑπ' ἀστῶν καταφονευθῆναι πέτρους, 625
ἢ μὴ ὑπίβαινε Σπαρτιάτιδος χθονός.

τοσαῦτ' ἀκούσας ἴσθι, μηδὲ δυσσεβεῖς
ἔλη παρώσας εὐσεβεστέρους φίλους·
ἡμᾶς δ' ἀπ' οἴκων ἄγετε τῶνδε, πρόσπολοι.

ΟΡ. στεῖχ', ὥς ἀθορύβως οὐπιῶν ἡμῖν λόγος 630

πρὸς τόνδ' ἵκηται, γῆρας ἀποφυγὼν τὸ σόν.
Μενέλαε, ποῖ σὸν πόδ' ἐπὶ συννοίᾳ κυκλεῖς,
διπλῆς μερίμνης διπτύχους ἰὼν ὁδοῦς;

- ΜΕ. ἔασον· ἐν ἑμαντῷ τι συννοούμενος,
 ὅποι τράπωμαι τῆς τύχης ἀμηχανῷ. 635
- ΟΡ. μή νυν πέραινε τὴν δόκησιν, ἀλλ' ἐμοὺς
 λόγους ἀκούσας πρόσθε, βουλευού τότε.
- ΜΕ. λέγ'· εὖ γὰρ εἶπας. ἔστι δ' οὗ σιγῇ λόγου
 κρείσσων γένοιτ' ἄν, ἔστι δ' οὗ σιγῆς λόγος.
- ΟΡ. λέγοιμ' ἂν ἤδη. τὰ μακρὰ τῶν σμικρῶν λόγων 640
 ἐπίπροσθ' ἐστι καὶ σαφῇ μᾶλλον κλύειν.
 ἐμοὶ σὺ τῶν σῶν, Μενέλεως, μηδὲν δίδου,
 ἃ δ' ἔλαβες ἀπόδος πατρὸς ἐμοῦ λαβὼν πάρα.
 οὐ χρήματ' εἶπον· χρήματ', ἣν ψυχὴν ἐμὴν
 σώσης, ἅπερ μοι φίλτατ' ἐστὶ τῶν ἐμῶν. 645
 ἀδικῶ· λαβεῖν χρή μ' ἀντὶ τοῦδε τοῦ κακοῦ
 ἀδικόν τι παρὰ σοῦ· καὶ γὰρ Ἀγαμέμνων πατὴρ
 ἀδίκως ἀθροίσας Ἑλλάδ' ἤλθ' εἰς Ἴλιον,
 οὐκ ἐξαμαρτῶν αὐτός, ἀλλ' ἀμαρτίαν
 τῆς σῆς γυναικὸς ἀδικίαν τ' ἰώμενος. 650
 ἐν μὲν τόδ' ἡμῖν ἀνθ' ἐνὸς δοῦναί σε χρή·
 ἀπέδοτο δ', ὥς χρή τοῖς φίλοισι τοὺς φίλους,
 τὸ σῶμ' ἀληθῶς, σοὶ παρ' ἀσπίδ' ἐκπονῶν,
 ὅπως σὺ τὴν σὴν ἀπολάβοις ξυνάρορον.
 ἀπότισον οὖν μοι ταῦτ' οὗτο' ἐκεῖ λαβὼν, 655
 μίαν πονήσας ἡμέραν ἡμῶν ὕπερ
 σωτήριος στάς, μὴ δέκ' ἐκπλήσας ἔτη.
 ἃ δ' Ἀνῆλις ἔλαβε σφάγι' ἐμῆς ὁμοσπόρου,
 ἔω σ' ἔχειν ταῦθ'· Ἑρμιόνην μὴ κτεῖνε σύ.
 δεῖ γὰρ σ' ἐμοῦ πράσσοντος ὡς πράσσω τὰ νῦν 660
 πλέον φέρεσθαι, καὶ με συγγνώμην ἔχειν.
 ψυχὴν δ' ἐμὴν δὸς τῷ ταλαιπώρῳ πατρὶ
 καμῆς ἀδελφῆς, παρθένου μακρὸν χρόνον·
 θανὼν γὰρ οἶκον ὀρφανὸν λείψω πατρός.
 ἐρεῖς, ἀδύνατον; αὐτὸ τοῦτο· τοὺς φίλους 665

ἐν τοῖς κακοῖς χορὴ τοῖς φίλοισιν ὠφελεῖν·
 ὅταν δ' ὁ δαίμων εὖ διδῶ, τί δεῖ φίλων;
 ἄρκεϊ γὰρ αὐτὸς ὁ θεὸς ὠφελεῖν θέλων.
 φιλεῖν δάμαρτα πᾶσιν Ἑλλησιν δοκεῖς·
 κούχ ὑποτρέχων σε τοῦτο θωπεῖα λέγω· 670

ταύτης ἱκνοῦμαι σ'. ὦ μέλεος ἐμῶν κακῶν,
 εἰς οἶον ἦκω. τί δὲ ταλαιπωρεῖν με δεῖ;
 ὑπὲρ γὰρ οἴκου παντὸς ἵκετεύω τάδε.
 ὦ πατρός ὅμαιμε θεῖε, τὸν κατὰ χθονὸς
 θανόντ' ἀκούειν τάδε δόκει, ποτωμένην 675
 ψυχὴν ὑπὲρ σοῦ, καὶ λέγειν ἄγῶ λέγω.
 ταῦτ' εἰς τε δάκρυα καὶ γόους καὶ συμφορὰς
 εἴρηκα, ἀπῆτηκα τὴν σωτηρίαν,
 θηρῶν δ' πάντες κούχ ἐγὼ ζητῶ μόνος.

ΧΟ. κἀγὼ σ' ἱκνοῦμαι καὶ γυνή περ οὔσ' ὅμως 680
 τοῖς δεομένοισιν ὠφελεῖν· οἶός τε δ' εἶ.

ΜΕ. Ὅρεστ', ἐγὼ τοι σὸν καταιδοῦμαι κἄρα
 καὶ ξυμπονῆσαι σοῖς κακοῖσι βούλομαι·
 καὶ χορὴ γὰρ οὕτω τῶν ὀμαιμόνων κακὰ
 ξυνεκκομίζειν, δύναμιν ἣν διδῶ θεός 685
 [θυήσκοντα καὶ κτείνοντα τοὺς ἐναντίους].
 τὸ δ' αὖ δύνασθαι πρὸς θεῶν χρηῖζω τυχεῖν.
 ἦκω γὰρ ἀνδρῶν συμμάχων κενὸν δόρυ
 ἔχων, πόνοισι μυρίοις ἀλώμενος,

σμικρᾷ ξὺν ἀλκῇ τῶν λελειμμένων φίλων. 690

μάχη μὲν οὖν ἂν οὐχ ὑπερβαλοίμεθα
 Πελασγὸν Ἄργος· εἰ δὲ μαλθακοῖς λόγοις
 δυναίμεθ', ἐνταῦθ' ἐλπίδος προσήκομεν.
 σμικροῖσι γὰρ τὰ μεγάλα πῶς ἔλοι τις ἂν
 πόνοισιν; ἀμαθὲς καὶ τὸ βούλεσθαι τάδε. 695

ὅταν γὰρ ἡβᾷ δῆμος εἰς ὀργὴν πεσών,
 ὅμοιον ὥστε πῦρ κατασβέσαι λάβρον·

εἰ δ' ἡσύχως τις αὐτὸς ἐντείνονται μὲν
χαλῶν ὑπείκοι καιρὸν εὐλαβούμενος,
ἴσως ἂν ἐκπνεύσει· ὅταν δ' ἀνῆ πνοάς,
τύχοις ἂν αὐτοῦ ῥαδίως ὅσον θέλεις.
ἔνεστι δ' οἶκτος, ἐνὶ δὲ καὶ θυμὸς μέγας,
καρδοκοῦντι κτῆμα τιμιώτατον.

ἔλθων δὲ Τυνδάρεών τέ σοι πειράσομαι
πόλιν τε πεῖσαι τῷ λίαν χρῆσθαι καλῶς.
καὶ ναῦς γὰρ ἐνταθεῖσα πρὸς βίαν ποδὶ
ἔβαψεν, ἔσθῃ δ' αὖθις, ἣν χαλᾷ πόδα.
μισεῖ γὰρ ὁ θεὸς τὰς ἄγαν προθυμίας,
μισοῦσι δ' ἄστοί· δεῖ δέ μ', οὐκ ἄλλως λέγω,
σώζειν σε σοφίᾳ, μὴ βίᾳ τῶν κρεισσόνων.
ἀλκῇ δέ σ' οὐκ ἄν, ἥ σὺ δοξάζεις ἴσως,
σώσαιμ' ἄν· οὐ γὰρ ῥάδιον λόγῃ μιᾷ
στῆσαι τρόπαια τῶν κακῶν ἅ σοι πάρα.
οὐ γάρ ποτ' Ἄργους γαῖαν εἰς τὸ μαλθακὸν
προσηρόμεσθα· νῦν δ' ἀναγκαιῶς ἔχει
δούλοισιν εἶναι τοῖς σοφοῖσι τῆς τύχης.

ΟΡ. ὦ πλήν γυναικὸς οὔνεκα στρατηλατεῖν
τᾶλλ' οὐδέν, ὦ κάκιστε τιμωρεῖν φίλοις·
φεύγεις ἀποστραφεῖς με, τὰ δ' Ἀγαμέμνωνος
φροῦδ' ; ἄφιλος ἦσθ' ἄρ', ὦ πάτερ, πρᾶσσω
κακῶς.

οἷμοι προδέδομαι, κοῦκέτ' εἰσὶν ἐλπίδες,
ὅποι τραπόμενος θάνατον Ἀργείων φύγω·
οὗτος γὰρ ἦν μοι καταφυγὴ σωτηρίας.
ἀλλ' εἰσορῶ γὰρ τόνδε φίλτατον βροτῶν
Πυλάδην δρόμῳ στείχοντα Φωκέων ἄπο,
ἠδεῖαν ὄψιν· πιστὸς ἐν κακοῖς ἀνὴρ
κρείσσω γαλήνης ναυτίλοισιν εἰσορᾶν.

ΠΥ. θᾶσσον ἢ μ' ἐχρῆν προβαίνων ἰκόμην δι' ἄστεως,

ξύλλογον πόλεως ἀκούσας, τὸν δ' ἰδὼν αὐτὸς σα-
φῶς, 730

ἐπὶ σὲ σύγγονόν τε τὴν σὴν, ὥς κτενοῦντας αὐ-
τίκα.

τί τάδε; πῶς ἔχεις, τί πράσσεις; φίλταθ' ἡλίκων
ἔμοι

καὶ φίλων καὶ συγγενείας· πάντα γὰρ τάδ' εἴ σύ
μοι.

ΟΡ. οἰχόμεσθ', ὥς ἐν βραχεῖ σοι τὰμὰ δηλώσω κακά.

ΠΥ. συγκατασκάπτοις ἂν ἡμᾶς· κοινὰ γὰρ τὰ τῶν
φίλων. 735

ΟΡ. Μενέλεως κάκιστος εἷς με καὶ κασιγνήτην ἐμήν.

ΠΥ. εἰκότως, κακῆς γυναικὸς ἄνδρα γίγνεσθαι κακόν.

ΟΡ. ὥσπερ οὐκ ἐλθὼν ἔμοιγε ταῦτόν ἀπέδωκεν μο-
λῶν.

ΠΥ. ἧ γὰρ ἐστὶν ὥς ἀληθῶς τήνδ' ἀφιγμένος χθόνα;

ΟΡ. χρόνιος· ἀλλ' ὅμως τάχιστα κακὸς ἐφωράθη φί-
λοις. 740

ΠΥ. καὶ δάμαρτα τὴν κακίστην ναυστολῶν ἐλήλυθεν;

ΟΡ. οὐκ ἐκεῖνος, ἀλλ' ἐκείνη κεῖνον ἐνθάδ' ἤγαγεν.

ΠΥ. ποῦ'στιν ἢ πλείστους Ἀχαιῶν ὥλεσεν γυνὴ μία;

ΟΡ. ἐν δόμοις ἐμοῖσιν, εἰ δὴ τούσδ' ἐμοὺς καλεῖν
χρεῶν.

ΠΥ. σὺ δὲ τίνας λόγους ἔλεξας σοῦ κασιγνήτῳ πα-
τρός; 745

ΟΡ. μή μ' ἰδεῖν θανόνθ' ὑπ' ἀστῶν καὶ κασιγνήτην
ἐμήν.

ΠΥ. πρὸς θεῶν, τί πρὸς τάδ' εἶπε; τόδε γὰρ εἰδέναι
θέλω.

ΟΡ. εὐλαβεῖθ', ὃ τοῖς φίλοισι δρῶσιν οἱ κακοὶ φίλοι.

ΠΥ. σκῆψιν εἰς ποίαν προβαίνων; τοῦτο πάντ' ἔχω
μαθών.

ΟΡ. οὗτος ἦλθ' ὃ τὰς ἀρίστους θυγατέρας σπείρων
πατήρ. 750

ΠΥ. Τυνδάρεων λέγεις; ἴσως σοι θυγατέρος θυμού-
μενος.

ΟΡ. αἰσθάνει. τὸ τοῦδε κῆδος μᾶλλον εἴλετ' ἢ πα-
τρός.

ΠΥ. κοῦκ ἐτόλμησεν πόνων σῶν ἀντιλάζυσθαι παρῶν;

ΟΡ. οὐ γὰρ αἰχμητῆς πέφυκεν, ἐν γυναιξὶ δ' ἄλκιμος.

ΠΥ. ἐν κακοῖς ἄρ' εἰ μεγίστοις, καὶ σ' ἀναγκαῖον θα-
νεῖν. 755

ΟΡ. ψῆφον ἄμφ' ἡμῶν πολίτας ἐπὶ φόνῳ θέσθαι
χρεῶν.

ΠΥ. ἢ κρινεῖ τί χρῆμα; λέξον· διὰ φόβου γὰρ ἐρ-
χομαι.

ΟΡ. ἢ θανεῖν ἢ ζῆν· ὃ μῦθος οὐ μακρὸς μακρῶν πέρι.

ΠΥ. φεῦγέ νυν λιπὼν μέλαθρα σὺν κασιγνήτῃ σέθεν.

ΟΡ. οὐχ ὁρᾷς; φυλασσόμεσθα φρουρίοισι πανταχῇ. 760

ΠΥ. εἶδον ἄστεως ἀγνιάς τεύχεσιν πεφραγμένους.

ΟΡ. ὥσπερ εἰ πόλις πρὸς ἐχθρῶν σῶμα πυρρῆγρούμεθα.

ΠΥ. καμέ νυν ἐροῦ τί πάσχω· καὶ γὰρ αὐτὸς οἴχομαι.

ΟΡ. πρὸς τίνας; τοῦτ' ἂν προσείη τοῖς ἐμοῖς κακοῖς
κακόν.

ΠΥ. Στρόφιος ἦλασέν μ' ἀπ' οἴκων φυγάδα θυμωθεὶς
πατήρ. 765

ΟΡ. ἴδιον ἢ κοινὸν πολίταις ἐπιφέρων ἐγκλημά τι;

ΠΥ. ὅτι συνηράμην φόνον σοι μητρός, ἀνόσιον λέγων.

ΟΡ. ὦ τάλας, εἴοικε καὶ σὲ τὰμὰ λυπήσειν κακά.

ΠΥ. οὐχὶ Μενέλεω τρόποισι χρώμεθ'· οἰστέον τάδε.

ΟΡ. οὐ φοβεῖ μή σ' Ἄργος ὥσπερ καμ' ἀποκτεῖναι
θέλῃ; 770

ΠΥ. οὐ προσήκομεν κολάζειν τοῖσδε, Φωκέων δὲ γῆ.

- ΟΡ. δεινὸν οἱ πολλοί, κακούργους ὅταν ἔχωσι προ-
στάτας.
- ΠΥ. ἀλλ' ὅταν χρηστοὺς λάβωσι, χρηστὰ βουλευούσ'
αἰεί.
- ΟΡ. εἶεν. εἰς κοινὸν λέγειν χρή. ΠΥ. τίνος ἀναγκαίου
πέρι;
- ΟΡ. εἰ λέγοιμ' ἀστοῖσιν ἔλθων ΠΥ. ὥς ἔπραξας ἔν-
δικα; 775
- ΟΡ. πατρὶ τιμωρῶν ἐμαντοῦ; ΠΥ. μὴ λάβωσί σ'
ἄσμενοι.
- ΟΡ. ἀλλ' ὑποπτήξας σιωπῇ κατθανῶ; ΠΥ. δειλὸν τόδε.
- ΟΡ. πῶς ἂν οὖν δρώην; ΠΥ. ἔχεις τιν', ἣν μένης, σω-
τηρίαν;
- ΟΡ. οὐκ ἔχω. ΠΥ. μολόντα δ' ἐλπίς ἐστι σωθῆναι κα-
κῶν;
- ΟΡ. εἰ τύχοι, γένοιτ' ἄν. ΠΥ. οὐκοῦν τοῦτο κρεῖσσον
ἢ μένειν. 780
- ΟΡ. ἀλλὰ δῆτ' ἔλθω. ΠΥ. θανὼν γοῦν ὥδε κάλλιον
θανεῖ.
- ΟΡ. καὶ τὸ προᾶγμά γ' ἐνδικόν μοι. ΠΥ. τῷ δοκεῖν
εὖχου μόνον.
- ΟΡ. εὖ λέγεις· φεύγω τὸ δειλὸν τῇδε. ΠΥ. μᾶλλον ἢ
μένων.
- ΟΡ. καί τις ἂν γέ μ' οἰκτίσειε ΠΥ. μέγα γὰρ ἡγένηιιά
σου.
- ΟΡ. θάνατον ἀσχάλλων πατρῷον. ΠΥ. πάντα ταῦτ' ἐν
ὄμμασιν. 785
- ΟΡ. ἰτέον, ὥς ἄνανδρον ἀκλεῶς κατθανεῖν. ΠΥ. αἰνῶ
τάδε.
- ΟΡ. ἢ λέγωμεν οὖν ἀδελφῇ ταῦτ' ἐμῇ; ΠΥ. μὴ πρὸς
θεῶν.

- ΟΡ. δάκρυα γοῦν γένοιτ' ἄν. ΠΥ. οὐκοῦν οὗτος οἶω-
νὸς μέγας.
- ΟΡ. δηλαδὴ σιγαῶν ἄμεινον. ΠΥ. τῷ χρόνῳ δὲ κερ-
δανεῖς.
- ΟΡ. κεῖνός μοι μόνον πρόσαντες, ΠΥ. τί τόδε καινὸν
αὐτὸ λέγεις; 790
- ΟΡ. μὴ θεαί μ' οἴστωρ κατὰσχῶσ'. ΠΥ. ἀλλὰ κηδεύσω
σ' ἐγώ.
- ΟΡ. δυσχερὲς ψάμειν νοσοῦντος ἀνδρός. ΠΥ. οὐκ ἔμοιγε
σοῦ.
- ΟΡ. εὐλαβοῦ λύσσης μετασχεῖν τῆς ἐμῆς. ΠΥ. τόδ' οὖν
ἴτω.
- ΟΡ. οὐκ ἄρ' ὀκνήσεις; ΠΥ. ὄκνος γὰρ τοῖς φίλοις κα-
κὸν μέγα.
- ΟΡ. ἔρπε νυν οἷαξ ποδός μοι. ΠΥ. φίλα γ' ἔχων κη-
δεύματα. 795
- ΟΡ. καί με πρὸς τύμβον πόρευσον πατρός. ΠΥ. ὥς τί
δὴ τόδε;
- ΟΡ. ὥς νιν ἱκετεύσω με σῶσαι. ΠΥ. τό γε δίκαιον ὧδ'
ἔχει.
- ΟΡ. μητέρος δὲ μηδ' ἰδοίμι μνηῆμα. ΠΥ. πολεμία γὰρ
ἦν.
- ἀλλ' ἔπειγ', ὥς μὴ σε πρόσθε ψῆφος Ἀργείων
ἔλῃ, 799
- περιβαλὼν πλευροῖς ἐμοῖσι πλευρὰ νωχελῇ νόσῳ,
ὥς ἐγὼ δι' ἄστεώς σε σμικρὰ φροντίζων ὄχλου
οὐδὲν αἰσχυνθεὶς ὀχλήσω. ποῦ γὰρ ὦν δεῖξω φίλος,
εἴ σε μὴ 'ν δειναῖσιν ὄντα συμφοραῖς ἐπαρκέσω;
- ΟΡ. τοῦτ' ἐκέينو, κτᾶσθ' ἐταίρους, μὴ τὸ συγγενὲς
μόνον·
- ὥς ἀνὴρ ὅστις τρόποισι συντακῇ, θυραῖος ὦν 805
μυρρίων κρείσσων ὁμαίμων ἀνδρὶ κεκτῆσθαι φίλος.

- ΧΟ. ὁ μέγας ὄλβος ἃ τ' ἀρετὰ στρ.
 μέγα φρονοῦς' ἄν' Ἑλλάδα καὶ
 παρὰ Σιμωνυτίοις ὀχετοῖς
 πάλιν ἀνῆλθ' ἐξ εὐτυχίας Ἀτρεΐδαις 810
 πάλαι παλαιᾷς ἀπὸ συμφορᾶς δόμων,
 ὁπότε χρυσείας ἔρις ἀρνὸς
 ἦλυθε Τανταλίδαις,
 οἰκτρότατα θοινάματα καὶ
 σφάγια γενναίων τεκέων· 815
 ὅθεν φόνω φόνος ἔξαμεί-
 βων δι' αἵματος οὐ προλεί-
 πει δισσοῖσιν Ἀτρεΐδαις.
 τὸ καλὸν οὐ καλόν, τοκέων
 πυριγενεῖ τεμεῖν παλάμα', 820
 χρόα, μελάνδετον δὲ φόνω
 ξίφος ἐς αὐγὰς ἀελίοιο δεῖξαι·
 τὸ δ' αὖ κακουργεῖν ἀσέβεια μαινόλις
 κακοφρόνων τ' ἀνδρῶν παράνοια.
 θανάτου γὰρ ἀμφὶ φόβω 825
 Τυνδαρις ἰάχησε τάλαι-
 να· τέκνον, οὐ τολμᾷς ὅσια·
 κτείνων σὺ ματέρα, μὴ πατρῶ-
 αν τιμῶν χάριν ἔξανά-
 ψη δύσκληϊαν ἔσαι. 830
 τίς νόσος ἢ τίνα δάκρυα καὶ
 τίς ἔλεος μείζων κατὰ γᾶν
 ἢ ματροκτόνον αἷμα χειρὶ θέσθαι;
 οἶον ἔργον τελέσας
 βεβάκχεται μανίαις, 835
 Εὐμενίσιν θήραμα φόνω
 δρομάσι δινεύων βλεφάροις

Ἀγαμεμνόνιος παῖς.
ὦ μέλεος, ματρὸς ὅτε
χρυσεοπηνήτων φαρέων
μάστιγόν ὑπερτέλλοντ' ἐσιδὼν
σφάγιον ἔθετο ματέρα, πατρῶ-
ων παθέων ἀμοιβάν. 840

ΗΛ. γυναιῖκες, ἧ̃ που τῶνδ' ἀφώρμηται δόμων
τλήμων Ὀρέστης θεομανεῖ λύσση δαμείς; 845

ΧΟ. ἦκιστα· πρὸς δ' Ἀργεῖον οἴχεται λεών,
ψυχῆς ἀγῶνα τὸν προκείμενον πέρι
δώσω, ἐν ᾧ ζῆν ἢ θανεῖν ὑμᾶς χρεών.

ΗΛ. οἴμοι· τί χοῖμ' ἔδρασε; τίς δ' ἐπεισέ νιν;

ΧΟ. Πυλάδης· ἔοικε δ' οὐ μακρὰν ὅδ' ἄγγελος
λέξειν τὰ κεῖθεν σοῦ κασιγνήτου πέρι. 850

ΑΓ. ὦ τλήμων, ὦ δύστηνε τοῦ στρατηλάτου
Ἀγαμέμνονος παῖ, πότνι' Ἠλέκτρα, λόγους
ἄκουσον οὓς σοι δυστυχεῖς ἦκω φέρων.

ΗΛ. αἰαῖ, διοιχόμεσθα· δῆλος εἰ λόγῳ. 855
[κακῶν γὰρ ἦκεις, ὥς ἔοικεν, ἄγγελος.]

ΑΓ. ψήφῳ Πελασγῶν σὸν κασίγνητον θανεῖν
καὶ σ', ὦ τάλαιν', ἔδοξε τῇδ' ἐν ἡμέρᾳ.

ΗΛ. οἴμοι· προσῆλθεν ἐλπίς, ἣν φοβουμένη
πάλαι τὸ μέλλον ἐξετηκόμην γόοις. 860

ἀτὰρ τίς ἀγών, τίνες ἐν Ἀργείοις λόγοι
καθεῖλον ἡμᾶς ἀπεκύρωσαν θανεῖν;
λέγ', ὦ γεραιέ, πότερα λευσίμῳ χειρὶ
ἢ διὰ σιδήρου πνεῦμ' ἀπορρηξαί με δεῖ,
κοινὰς ἀδελφῷ συμφορὰς κεκτημένην. 865

ΑΓ. ἐτύγχανον μὲν ἀγρόθεν πυλῶν ἔσω
βαίνων, πυθέσθαι δεόμενος τὰ τ' ἀμφὶ σοῦ
τά τ' ἀμφ' Ὀρέστου· σῶ γὰρ εὐνοίαν πατρὶ
αἰεί ποτ' εἶχον, καὶ μ' ἔφερβε σὸς δόμος

πένητα μὲν, χρῆσθαι δὲ γενηαῖον φίλοις. 870
 ὁρῶ δ' ὄχλον στείχοντα καὶ θάσσοντ' ἄκραν,
 οὗ φασι πρῶτον Δαναὸν Αἰγύπτῳ δίκας
 διδόντ' ἄθροϊσαι λαὸν εἰς κοινὰς ἔδρας.
 ἄστων δὲ δὴ τιν' ἡρόμην ἄθροισμ' ἰδὼν·
 τί καινὸν Ἄργει; μῶν τι πολεμίων πάρα 875
 ἄγγελμ' ἀνεπτέρωκε Δαναῖδων πόλιν;
 ὁ δ' εἶπ'· Ὀρέστην κείνον οὐχ ὁρᾷς πέλας
 στείχοντ', ἄγωνά θανάσιμον δραμούμενον;
 ὁρῶ δ' ἄελπτον φάσμ', ὃ μήποτ' ὄφελον,
 Πυλάδην τε καὶ σὸν σύγγγονον στείχονθ' ὁμοῦ, 880
 τὸν μὲν κατηφῇ καὶ παρειμένον νόσῳ,
 τὸν δ' ὥστ' ἀδελφὸν ἴσα φίλῳ λυπούμενον,
 νόσημα κηδεύοντα παιδαγωγία.
 ἐπεὶ δὲ πλήρης ἐγένετ' Ἀργείων ὄχλος,
 κῆρυξ ἀναστάς εἶπε· τίς χρήξει λέγειν, 885
 πότερον Ὀρέστην κατθανεῖν ἢ μὴ χρεῶν
 μητροκτονοῦντα; καπὶ τῷδ' ἀνίσταται
 Ταλθύβιος, ὃς σῶ πατρὶ συνεπόρθει Φρύγας.
 ἔλεξε δ' ὑπὸ τοῖς δυναμένοισιν ὦν ἀεὶ
 διχόμυνθα, πατέρα μὲν σὸν ἐκπαγλούμενος, 890
 σὸν δ' οὐκ ἐπαινῶν σύγγγονον, καλοῖς κακοῦς
 λόγους ἐλίσσων, ὅτι καθισταίῃ νόμους
 εἰς τοὺς τεκόντας οὐ καλοῦς· τὸ δ' ὅμῳ ἀεὶ
 παιδρωπὸν ἐδίδου τοῖσιν Αἰγίσθου φίλοις.
 τὸ γὰρ γένος τοιοῦτον· ἐπὶ τὸν εὐτυχῇ 895
 πηδῶσ' ἀεὶ κήρυκες· ὅδε δ' αὐτοῖς φίλος,
 ὃς ἂν δύνηται πόλεος ἔν τ' ἀρχαῖσιν ἧ.
 ἐπὶ τῷδε δ' ἡγόρευε Διομήδης ἄναξ.
 οὗτος κτανεῖν μὲν οὔτε σ' οὔτε σύγγγονον
 εἶα, φυγῇ δὲ ξημιοῦντας εὐσεβεῖν. 900
 ἐπερρόθησαν δ' οἱ μὲν ὡς καλῶς λέγοι,

οἱ δ' οὐκ ἐπῆνουν. καὶ πλὶ τῷ δ' ἀνίσταται
 ἀνὴρ τις ἀθυρόγλωσσος, ἰσχύων θράσει,
 Ἀργεῖος οὐκ Ἀργεῖος, ἠναγκασμένος,
 905
 θορούβῳ τε πλύννος κάμαθ' εἰ παρορησία,
 πιθανὸς ἔτ' αὐτοὺς περιβαλεῖν κακῷ τινι.
 ὅταν γὰρ ἡδὺς τοῖς λόγοις φρονῶν κακῶς
 πεῖθῃ τὸ πλῆθος, τῇ πόλει κακὸν μέγα·
 ὅσοι δὲ σὺν νῷ χρηστὰ βουλευούσ' αἰεὶ,
 910
 καὶ μὴ παραντίκ', αὐθις εἰσι χρήσιμοι
 πόλει. θεᾶσθαι δ' ὧδε χρὴ τὸν προστάτην
 ἰδόνθ'· ὁμοῖον γὰρ τὸ χοῖμα γίνεται
 τῷ τοὺς λόγους λέγοντι καὶ τιμωμένῳ.
 ὃς εἶπ' Ὀρέστην καὶ σ' ἀποκτεῖναι πέτραις
 βάλλοντας· ὑπὸ δ' ἔτεινε Τυνδάρεως λόγους 915
 τῷ σφῶ κατακτείνοντι τοιούτους λέγειν.
 ἄλλος δ' ἀναστὰς ἔλεγε τῷ δ' ἐναντία,
 μορφῇ μὲν οὐκ εὐώπός, ἀνδρείος δ' ἀνὴρ,
 ὀλιγάκις ἄστν κάγορᾶς χραίνων κύκλον,
 920
 αὐτουργός, οἵπερ καὶ μόνοι σῴξουσιν γῆν,
 ξυνετὸς δὲ χωρεῖν ὁμόσε τοῖς λόγοις θέλων
 ἀκέραιος, ἀνεπίπληκτον ἡσκηκὼς βίον·
 ὃς εἶπ' Ὀρέστην παῖδα τὸν Ἀγαμέμνονος
 στεφανοῦν, ὃς ἡθέλησε τιμωρεῖν πατρί,
 925
 κακὴν γυναῖκα κάθ' εὖ κατακτανών,
 ἣ κεν' ἀφήρει, μήθ' ὀπλίξεσθαι χεῖρα
 μήτε στρατεύειν ἐκλιπόντα δώματα,
 εἰ τᾶνδον οἴκουρῆμαθ' οἱ λελειμμένοι
 φθειρούσιν, ἀνδρῶν εὐνιδας λωβώμενοι.
 καὶ τοῖς γε χρηστοῖς εὖ λέγειν ἐφαίνετο, 930
 κούδεις ἔτ' εἶπε. σὸς δ' ἐπῆλθε σύγγονος,
 ἔλεξε δ'· ὧ γῆν Ἰνάχου κεκτημένοι,

πάλλαι Πελαγοί, Δαναῖδαι δεύτερον,

933

ὑμῖν ἀμύνων οὐδὲν ἤσسون ἢ πατρὶ
 ἔκτεινα μητέρ'. εἰ γὰρ ἀρσένων φόνος 935
 ἔσται γυναιξὶν ὅσιος, οὐ φθάνοιτ' ἔτ' ἂν
 θνήσκοντες, ἢ γυναιξὶ δουλεύειν χρεῶν.
 τοῦναντίον δὲ δράσετ' ἢ δρᾶσαι χρεῶν.
 νῦν μὲν γὰρ ἢ προδοῦσα λέκτρ' ἐμοῦ πατρὸς
 τέθνηκεν· εἰ δὲ δὴ κατακτενεῖτέ με, 940
 ὁ νόμος ἀνεῖται, κοῦ φθάνοι θνήσκων τις ἄν,
 ὥς τῆς γε τόλμης οὐ σπάνις γενήσεται.
 ἀλλ' οὐκ ἔπειθ' ὅμιλον, εὖ δοκῶν λέγειν.
 νικᾷ δ' ἐκεῖνος ὁ κακὸς ἐν πλήθει λέγων,
 ὃς ἡγόρευε σύγγονον σέ τε κτανεῖν. 945
 μόλις δ' ἔπεισε μὴ πετρούμενος θανεῖν
 τλήμων Ὀρέστης· αὐτόχειρι δὲ σφαγῇ
 ὑπέσχετ' ἐν τῇδ' ἡμέρᾳ λείψειν βίον
 σὺν σοί. πορεύει δ' αὐτὸν ἐκκλήτων ἄπο
 Πυλάδης δακρύων· σὺν δ' ὁμαρτοῦσιν φίλοι 950
 κλαίοντες οἰκτείροντες· ἔρχεται δέ σοι
 πικρὸν θέαμα καὶ πρόσοψις ἀθλίᾳ.
 ἀλλ' εὐτρέπιξε φάσγαν' ἢ βρόχον δέσρῃ,
 ὥς δεῦ' λιπεῖν σε φέγγος· ἡγύγνευα δὲ
 οὐδέν σ' ἐπαφέλησεν, οὐδ' ὁ Πύθιος 955
 τρίποδα καθίζων Φοῖβος, ἀλλ' ἀπώλεσεν.
 XO. ὦ δυστάλαινα παρθέν', ὥς ξυνηρεφές
 πρόσωπον εἰς γῆν σὸν βαλοῦσ' ἄφθογγος εἶ,
 ὥς εἰς στεναγμοὺς καὶ γόους δραμουμένη.
 HA. κατάρχομαι στεναγμόν, ὦ Πελασγία, στρ. 960
 τιθεῖσα λευκὸν ὄνυχά διὰ παρηίδων,
 τὰν αἵματηρόν ἄταν,
 κτύπον τε κρατός, ὃν ἔλαχ' ἅ κατὰ χθονὸς
 νερετέρων Περσέφασσα καλλίπαις θεά.

ἰαχεῖτω δὲ γὰρ Κυκλωπία, 965
 σίδαρον ἐπὶ κάρα τιθεῖσα κούριμον,
 πήματ' οἴκων.
 ἔλεος ἔλεος ὅδ' ἔρχεται
 τῶν θανουμένων ὕπερ,
 στρατηλατῶν Ἑλλάδος ποτ' ὄντων. 970
 βέβακε γὰρ βέβακεν, οἴχεται τέκνων ἄντ.
 πρόπασα γέννα Πέλοπος ὅ τ' ἐπὶ μακαρίοις
 ζηλωτὸς ὢν ποτ' οἶκος·
 φθόνος νιν εἴλε θεόθεν, ἃ τε δυσμενὴς
 φοινία ψῆφος ἐν πολίταις. 975
 ἰὼ ἰὼ, πανδάκρυτ' ἐφαμέρων
 ἔθνη πολύπονα, λεύσσεθ', ὥς παρ' ἐλπίδας
 μοῖρα βαίνει.
 ἔτερα δ' ἕτερος ἀμείβεται
 πήματ' ἐν χρόνῳ μακρῷ· 980
 βροτῶν δ' ὁ πᾶς ἀστάθμητος αἰών.
 μόλοιμι τὰν οὐρανοῦ
 μέσον χθονός τε τεταμέναν αἰωρήμασι
 πέτραις ἀλύσεσι χρυσέαισι φερομένην
 δίναισι βῶλον ἐξ Ὀλύμπου,
 ἵν' ἐν θρήνοισιν ἀναβοάσω
 γέροντι πατρὶ Ταντάλῳ 985
 ὃς ἔτεκεν ἔτεκε γενέτορας ἐμέθεν δόμων,
 οἱ κατεῖδον ἄτας,
 ποτανὸν μὲν δῖωγμα πώλων
 τεθριπποβάμονι στόλῳ Πέλοψ ὅτε
 πελάγεσι διεδίφρευσε, Μυρτίλου φόνον 990
 δικῶν ἐς οἶδμα πόντου,
 λευκοκύμοσιν
 πρὸς Γεραιστίαις
 ποντίων σάλων

ἥόσιν ἄρματεύσας.

ὅθεν δόμοισι τοῖς ἐμοῖς

995

ἦλθ' ἀρὰ πολύστονος,

λόχενμα ποιμνίοισι Μαιάδος τόκου,

τὸ χρυσόμαλλον ἄρνὸς ὁπότ'

ἐγένετο τέρας ὁλοὸν ὁλοὸν

Ἀτρεὺς ἱπποβώτα·

1000

ὅθεν Ἔρις τό τε πτερωτὸν

ἁλίου μετέβαλεν ἄρμα,

τὰν πρὸς ἐσπέραν κέλευθον

οὐρανοῦ προσαρμόσασα

μονόπῳλον ἐς Ἀῶ,

ἐπταπόρου τε δρόμημα Πελειάδος

1005

εἰς ὁδὸν ἄλλαν Ζεὺς μεταβάλλει,

τῶνδ' ἐτ' ἀμείβει αἰὲ θανάτους θανά-

των τά τ' ἐπώνυμα δεῖπνα Θυέστου

λέκτρα τε Κρήσας Ἀερόπας δολί-

ας δολίοισι γάμοις· τὰ πανύστατα δ'

1010

εἰς ἐμὲ καὶ γενέταν ἐμὸν ἦλυθε

δόμων πολυπόνοις ἀνάγκαις.

ΧΟ. καὶ μὴν ὅδε σὸς ξύγγονος ἔρπει

ψήφῳ θανάτου κατακυρωθείς,

ὃ τε πιστότατος πάντων Πυλάδης

ἰσάδελφος ἀνὴρ,

1015

ἰθύνων νοσερὸν κῶλον Ὀρέστου,

ποδὶ κηδοσύνῳ παράσειρος.

ΗΛ. οἶ' γὰρ πρὸ τύμβου γάρ σ' ὄρωσ' ἀναστένω,

ἀδελφέ, καὶ πάροιθε νερτέρων πυρᾶς.

οἶ' γὰρ μάλ' αὐτίς· ὥς σ' ἰδοῦσ' ἐν ὄμμασι

1020

πανυστάτην πρόσοψιν ἐξέστην φρενῶν.

ΟΡ. οὐ σῖγ' ἀφείσα τοὺς γυναικείους γόους

στέρξεις τὰ κρανθέντ' ; οἴκτρα μὲν τὰδ', ἀλλ'
ὅμως

φέρειν ἀνάγκη τὰς παρεστώσας τύχας.

ΗΛ. καὶ πῶς σιωπῶ ; φέγγος εἰσορᾷν θεοῦ 1025
τόδ' οὐκέθ' ἡμῖν τοῖς ταλαιπώροις μέτα.

ΟΡ. σὺ μὴ μ' ἀπόκτειν' · ἄλλις ὑπ' Ἀργείας χειρὸς
τέθνηχ' ὁ τλήμων· τὰ δὲ παρόντ' ἔα κακά.

ΗΛ. ὦ μέλεος ἥβης σῆς, Ὀρέστα, καὶ πότμου
θανάτου τ' ἁώρου. ζῆν ἐχρῆν σ', ὅτ' οὐκέτ' εἶ.

ΟΡ. μὴ πρὸς θεῶν μοι περιβάλλης ἀνανδρίαν, 1031
εἰς δάκρυα πορθμεύουσ' ὑπομνήσει κακῶν.

ΗΛ. θανούμεθ' · οὐχ οἷόν τε μὴ στένειν κακά.
πᾶσιν γὰρ οἴκτρον ἢ φίλη ψυχὴ βροτοῖς.

ΟΡ. τόδ' ἡμαρ ἡμῖν κύριον· δεῖ δ' ἢ βρόχους 1035
ἅπτειν κρεμαστούς ἢ ξίφος θήγειν χειρί.

ΗΛ. σύ νῦν μ', ἀδελφέ, μὴ τις Ἀργείων κτάνῃ
ὑβρισμα θέμενος τὸν Ἀγαμέμνονος γόνου.

ΟΡ. ἄλλις τὸ μητρὸς αἵμ' ἔχω· σὲ δ' οὐ κτενῶ,
ἀλλ' αὐτόχειρι θνήσχ' ὅτῳ βούλει τρόπῳ. 1040

ΗΛ. ἔσται τὰδ' · οὐδὲν σοῦ ξίφους λελεΐψομαι·
ἀλλ' ἀμφιθεῖναι σῇ δέρῃ θέλω χέρας.

ΟΡ. τέρπου κενὴν ὄνησιν, εἰ τερπνὸν τόδε
θανάτου πέλας βεβῶσι, περιβαλεῖν χέρας.

ΗΛ. ὦ φίλτατ', ὦ ποθεινὸν ἥδιστόν τ' ἔχων 1045
τῆς σῆς ἀδελφῆς ὄνομα καὶ ψυχὴν μίαν.

ΟΡ. ἔκ τοι με τήξεις· καὶ σ' ἀμείψασθαι θέλω
φιλότῃ χειρῶν. τί γὰρ ἔτ' αἰδοῦμαι τάλας ;
ὦ στέρν' ἀδελφῆς, ὦ φίλον πρόσπτυγμ' ἐμόν,
τάδ' ἀντὶ παίδων καὶ γαμηλίου λέχους 1050
προσφθέγματ' ἀμφὶ τοῖς ταλαιπώροις πάρα.

ΗΛ. φεῦ·

πῶς ἂν ξίφος νῶ ταῦτόν, εἰ θέμις, κτάνοι
καὶ μνηῆμα δέξαιθ' ἔν, κέδρου τεχνάσματα;

ΟΡ. ἥδιστ' ἂν εἶη ταῦθ' · ὀρᾶς δὲ δὴ φίλων
ὥς ἐσπανίσμεθ', ὥστε κοινωνεῖν τάφου. 1055

ΗΛ. οὐδ' εἴφ' ὑπὲρ σοῦ, μὴ θανεῖν σπουδὴν ἔχων,
Μενέλαος ὁ κακός, ὁ προδότης τοῦμοῦ πατρός;

ΟΡ. οὐδ' ὅμμ' ἔδειξεν, ἀλλ' ἐπὶ σκήπτροις ἔχων
τὴν ἐλπίδ', εὐλαβεῖτο μὴ σῶζειν φίλους.
ἀλλ' εἰ' ὅπως γενναῖα κἀγαμέμνονος 1060
δράσαντε κατθανούμεθ' ἀξιώτατα.

κἀγὼ μὲν εὐγένειαν ἀποδείξω πόλει,
παίσας πρὸς ἥπαρ φασγάνῳ· σὲ δ' αὖ χρεὼν
ὅμοια πράσσειν τοῖς ἑμοῖς τολμήμασι.

Πυλάδῃ, σὺ δ' ἡμῖν τοῦ φόνου γενοῦ βραβεύς,
καὶ κατθανόντοιν εὖ περιστείλον δέμας 1066
θάψον τε κοινῇ πρὸς πατρός τύμβον φέρων.
καὶ χαῖρ' · ἐπ' ἔργον δ', ὥς ὀρᾶς, πορεύομαι.

ΠΥ. ἐπίσχες. ἔν μὲν πρῶτά σοι μομφὴν ἔχω,
εἰ ζῆν με χρήζειν σοῦ θανόντος ἥλπισας. 1070

ΟΡ. τί γὰρ προσήκει κατθανεῖν σ' ἑμοῦ μέτα;

ΠΥ. ἥρου; τί δὲ ζῆν σῆς ἐταιρείας ἄτερ;

ΟΡ. οὐκ ἔκτανες σὺ μητέρ', ὥς ἐγὼ τάλας.

ΠΥ. σὺν σοί γε κοινῇ· ταῦτ' αὖ καὶ πάσχειν με δεῖ.

ΟΡ. ἀπόδος τὸ σῶμα πατρί, μὴ σύνθνησκέ μοι. 1075

σοὶ μὲν γάρ ἐστι πόλις, ἑμοὶ δ' οὐκ ἔστι δῆ,
καὶ δῶμα πατρός καὶ μέγας πλούτου λιμὴν.

γάμων δὲ τῆς μὲν δυσπότμου τῆσδ' ἐσφάλης,
ἦν σοι κατηγγύησ', ἐταιρείαν σέβων·

σὺ δ' ἄλλο λέκτρον παιδοποίησαι λαβών, 1080
κῆδος δὲ τοῦμόν καὶ σὸν οὐκέτ' ἔστι δῆ.

ἀλλ' ὦ ποθεινὸν ὄνομ' ὀμιλίας ἐμῆς,

- χαῖρ' · οὐ γὰρ ἡμῖν ἔστι τοῦτο, σοί γε μὴν ·
οἱ γὰρ θανόντες χαρμάτων τητώμεθα.
- ΠΥ. ἢ πολὺν λέλειψαι τῶν ἐμῶν βουλευμάτων. 1085
μῆθ' αἰμά μου δέξαιτο κάρπιμον πῆδον,
μὴ λαμπρὸς αἰθήρ, εἴ σ' ἐγὼ προδοῦς ποτε
ἐλευθερώσας τοῦμὸν ἀπολίποιμί σε.
καὶ συγκατέκτανον γὰρ, οὐκ ἀρνήσομαι,
καὶ πάντ' ἐβούλευσ' ὧν σὺ νῦν τίνεις δίκας · 1090
καὶ συνθανεῖν οὖν δεῖ με σοὶ καὶ τῇδ' ὁμοῦ.
ἐμὴν γὰρ αὐτήν, ἧς γε λέχος ἐπῆνεσα,
κρίνω δάμαρτα · τί γὰρ ἐρῶ καλόν ποτε
τὴν Δελφίδ' ἐλθὼν Φωκέων ἀκρόπολιν,
ὃς πρὶν μὲν ὑμᾶς δυστυχεῖν φίλος παρῆν, 1095
νῦν δ' οὐκέτ' εἰμι δυστυχοῦντί σοι φίλος;
οὐκ ἔστιν, ἀλλὰ ταῦτα μὲν κάμοι μέλει.
ἐπεὶ δὲ κατθανοῦμεθ', εἰς κοινοὺς λόγους
ἔλθωμεν, ὥς ἂν Μενέλεως ξυνδυστυγῇ.
- ΟΡ. ὦ φίλτατ', εἰ γὰρ τοῦτο κατθανοίμ' ἰδῶν. 1100
- ΠΥ. πιθοῦ νυν, ἀνάμεινον δὲ φασγάνου τομάς.
- ΟΡ. μενῶ, τὸν ἐχθρὸν εἴ τι τιμωρήσομαι.
- ΠΥ. σίγα νυν · ὥς γυναιξὶ πιστεύω βραχύ.
- ΟΡ. μηδὲν τρέσῃς τάσδ' · ὥς πάρεις' ἡμῖν φίλαι.
- ΠΥ. Ἑλένην κτάνωμεν, Μενέλεω λύπην πικράν. 1105
- ΟΡ. πῶς; τὸ γὰρ ἔτοιμον ἔστιν, εἴ γ' ἔσται καλῶς.
- ΠΥ. σφάξαντες. ἐν δόμοις δὲ κρύπτεται σέθεν.
- ΟΡ. μάλιστα · καὶ δὴ πάντ' ἀποσφραγίζεται.
- ΠΥ. ἀλλ' οὐκέθ', Αἰδὴν νυμφίον κεκτημένην.
- ΟΡ. καὶ πῶς; ἔχει γὰρ βαρβάρους ὀπάοντας. 1110
- ΠΥ. τίνας; Φρυγῶν γὰρ οὐδέν' ἂν τρέσαιμ' ἐγώ.
- ΟΡ. οἷους ἐνόπτρων καὶ μύρων ἐπιστάτας.
- ΠΥ. τρυφὰς γὰρ ἦκει δεῦρ' ἔχουσα Τρωικάς;
- ΟΡ. ὥσθ' Ἑλλάς αὐτῇ σμικρὸν οἰκητήριον.

- ΠΥ. οὐδὲν τὸ δοῦλον πρὸς τὸ μὴ δοῦλον γένος. 1115
 ΟΡ. καὶ μὴν τόδ' ἔρξας δις θανεῖν οὐχ ἄξιμαί.
 ΠΥ. ἀλλ' οὐδ' ἐγὼ μὴν, σοί γε τιμωρούμενος.
 ΟΡ. τὸ πρᾶγμα δῆλου καὶ πέραιν', ὅπως λέγεις.
 ΠΥ. εἴσιμεν ἐς οἴκους δῆθεν, ὥς θανούμενοι.
 ΟΡ. ἔχω τοσοῦτον, τὰπίλοιπα δ' οὐκ ἔχω. 1120
 ΠΥ. γόους πρὸς αὐτὴν θησόμεσθ' ἃ πάσχομεν.
 ΟΡ. ὥστ' ἐκδακρῦσαί γ' ἔνδοθεν κεχαρμένην.
 ΠΥ. καὶ νῦν παρέσται ταῦθ' ἅπερ κείνη τότε.
 ΟΡ. ἔπειτ' ἀγῶνα πῶς ἀγωνιούμεθα;
 ΠΥ. κρύπτ' ἐν πέπλοισι τοισίδ' ἔξομεν ξίφη. 1125
 ΟΡ. πρόσθεν δ' ὀπαδῶν τίς ὕλεθρος γενήσεται;
 ΠΥ. ἐκκλείσομεν σφᾶς ἄλλον ἄλλοσε στέγης.
 ΟΡ. καὶ τόν γε μὴ σιγῶντ' ἀποκτείνειν χρεῶν.
 ΠΥ. εἴτ' αὐτὸ δηλοῖ τοῦργον οἷ τείνειν χρεῶν.
 ΟΡ. Ἑλένην φονεύειν· μανθάνω τὸ σύμβολον. 1130
 ΠΥ. ἔγνωσ' ἄκουσον δ' ὥς καλῶς βουλευόμαι.
 εἰ μὲν γὰρ εἰς γυναῖκα σωφρονεστέραν
 ξίφος μεθεῖμεν, δυσκλεῆς ἂν ᾦν φόνος·
 νῦν δ' ὑπὲρ ἀπάσης Ἑλλάδος δώσει δίκην,
 ὧν πατέρας ἔκτειν' ὧν τ' ἀπώλεσεν τέκνα, 1135
 νύμφας τ' ἔθηκεν ὀρφανὰς ξυναόρων.
 ὀλολυγμὸς ἔσται, πῦρ τ' ἀνάψουσιν θεοῖς,
 σοὶ πολλὰ κἄμοι κέδν' ἀρώμενοι τυχεῖν,
 κακῆς γυναικὸς οὔνεχ' αἷμ' ἐπράξαμεν.
 ὁ μητροφόντης δ' οὐ καλεῖ ταύτην κτανών, 1140
 ἀλλ' ἀπολιπὼν τοῦτ' ἐπὶ τὸ βέλτιον πεσεῖ,
 Ἑλένης λεγόμενος τῆς πολυκτόνου φονεύς.
 οὐ δεῖ ποτ' οὐ δεῖ Μενέλεων μὲν εὐτυχεῖν,
 τὸν σὸν δὲ πατέρα καὶ σὲ κάδεληφὴν θανεῖν,

μητέρα τ', ἐῷ τοῦτ', οὐ γὰρ εὐπρεπὲς λέγειν, 1145

- δόμους τ' ἔχειν σούς, δι' Ἀγαμέμνονος δόρυ 1146
 λαβόντα νύμφην· μὴ γὰρ οὖν ζώην ἔτι,
 εἰ μὴ π' ἐκείνη φάσγαμον σπάσω μέλαν.
 ἦν δ' οὖν τὸν Ἑλένης μὴ κατὰσχουμεν φόνον,
 πρήσαντες οἴκους τούσδε κατθανούμεθα. 1150
 [ένος γὰρ οὐ σφαλέντες ἔξομεν κλέος,
 καλῶς θανόντες ἢ καλῶς σεσσωσμένοι.]
- XO. πάσαις γυναιξὶν ἄξια στυγεῖν ἔφν
 ἢ Τυνδαρίδαι παῖς, ἢ κατήσχυεν γένος.
- OP. φεῦ·
 οὐκ ἔστιν οὐδὲν κρεῖσσον ἢ φίλος σαφής, 1155
 οὐ πλοῦτος, οὐ τυραννίς· ἀλόγιστον δέ τι
 τὸ πληθὸς ἀντάλλαγμα γενναίου φίλου.
 σὺ γὰρ τά τ' εἰς Αἰγισθον ἔξευρες κακὰ
 καὶ πλησίον παρῆσθα κινδύνων ἐμοί,
 νῦν τ' αὖ δίδως μοι πολεμίων τιμωρίαν 1160
 κοῦκ ἐκποδὼν εἶ. παύσομαι σ' αἰνῶν, ἐπεὶ
 βάρος τι καὶ τῷδ' ἔστιν, αἰνεῖσθαι λίαν.
 ἐγὼ δὲ πάντως ἐκπνέων ψυχὴν ἐμὴν
 δράσας τι χρήζω τοὺς ἐμοὺς ἐχθροὺς θανεῖν,
 ἵν' ἀνταναλώσω μὲν οἷ με προύδοσαν, 1165
 στένωσι δ' οἷπερ ἡμ' ἔθηκαν ἄθλιον.
 Ἀγαμέμνονός τοι παῖς πέφυχ', ὃς Ἑλλάδος
 ἥρξ' ἀξιώθεις, οὐ τύραννος, ἀλλ' ὅμως
 ῥώμην θεοῦ τιν' ἔσχ'· ὃν οὐ καταισχυνῶ
 δοῦλον παρασχὼν θάνατον, ἀλλ' ἐλευθέρως 1170
 ψυχὴν ἀφήσω, Μενέλεων δὲ τίσομαι.
 ἐνὸς γὰρ εἰ λαβοίμεθ', εὐτυχοῖμεν ἄν,
 εἴ ποθεν ἄελπτος παραπέσοι σωτηρία
 κτανοῦσι μὴ θανοῦσιν· εὐχομαι τάδε.
 ὃ βούλομαι γὰρ ἡδὺ καὶ διὰ στόμα 1175
 πτηνοῖσι μύθοις ἀδαπάνως τέρψαι φρένα.

- ΗΛ. ἐγὼ, κασίγνητ', αὐτὸ τοῦτ' ἔχειν δοκῶ,
σωτηρίαν σοὶ τῷδέ τ' ἐκ τρίτων τ' ἐμοί.
- ΟΡ. θεοῦ λέγεις πρόνοιαν. ἀλλὰ ποῦ τόδε;
ἐπεὶ τὸ συνετὸν οἶδα σῇ ψυχῇ παρόν. 1180
- ΗΛ. ἄκουε δὴ νυν καὶ σὺ δεῦρο νοῦν ἔχε.
- ΟΡ. λέγ'· ὥς τὸ μέλλειν ἀγάθ' ἔχει τιν' ἡδονήν.
- ΗΛ. Ἐλένης κάτοισθα θυγατέρ'; εἰδότηρ ἡρόμην.
- ΟΡ. οἶδ', ἣν ἔθρεψεν Ἑρμιόνην μήτηρ ἐμή.
- ΗΛ. αὕτη βέβηκε πρὸς Κλυταιμνήστρας τάφον. 1185
- ΟΡ. τί χοῆμα δράσους; ὑποτίθης τίν' ἐλπίδα;
- ΗΛ. χοῆς κατασπείσους ὑπὲρ μητρὸς τάφω.
- ΟΡ. καὶ δὴ τί μοι τοῦτ' εἶπας εἰς σωτηρίαν;
- ΗΛ. συλλάβεθ' ὄμηρον τήνδ', ὅταν στείλῃ πάλιν.
- ΟΡ. τίνος τόδ' εἶπας φάρμακον τρισσοῖς φίλοις; 1190
- ΗΛ. Ἐλένης θανούσης, ἣν τι Μενέλεως σὲ δοῶ
ἢ τόνδε κάμέ, πᾶν γὰρ ἐν φίλον τόδε,
λέγ' ὥς φονεύσεις Ἑρμιόνην· ξίφος δὲ χοῇ
δέρῃ πρὸς αὐτῇ παρθένου σπάσαντ' ἔχειν.
κἂν μὲν σε σῶξῃ μὴ θανεῖν χοῆζων κόρην 1195
Μενέλαος, Ἐλένης πτωῖμ' ἰδὼν ἐν αἵματι,
μέθες πεπᾶσθαι πατρὶ παρθένου δέμας·
ἣν δ' ὀξυθύμου μὴ κρατῶν φρονήματος
κτείνῃ σε, καὶ σὺ σφάζε παρθένου δέρην.
καὶ νιν δοκῶ, τὸ πρῶτον ἦν πολὺς παρῇ, 1200
χρόνῳ μαλάξειν σπλάγχχνον· οὔτε γὰρ θρασὺς
οὔτ' ἄλκιμος πέφυκε· τήνδ' ἡμῖν ἔχω
σωτηρίας ἑπαλξιν. εἴρηται λόγος.
- ΟΡ. ᾧ τὰς φρένας μὲν ἄρσενας κεκτημένη,
τὸ σῶμα δ' ἐν γυναιξὶ θηλείαις πρόπον, 1205
ὥς ἀξία ξῆν μᾶλλον ἢ θανεῖν ἔφους.
Πυλάδῃ, τοιαύτης ἄρ' ἀμαρτήσῃ τάλας
γυναικὸς ἢ ζῶν μακάριον κτήσῃ λέχος.

- ΠΤ. εἰ γὰρ γένοιτο, Φωκέων δ' ἔλθοι πόλιν
καλοῦσιν ὕμεναίοισιν ἄξιουμένη. 1210
- ΟΡ. ἥξει δ' ἐς οἴκους Ἑρμιόνη τίνος χρόνου;
ὥς τᾶλλα γ' εἶπας, εἶπερ εὐτυχήσομεν,
κάλλισθ', ἐλόντες σκύμνον ἀνοσίου πατρός.
- ΗΛ. καὶ δὴ πέλας νιν δωμάτων εἶναι δοκῶ·
τοῦ γὰρ χρόνου τὸ μῆκος αὐτὸ συντρέχει. 1215
- ΟΡ. καλῶς· σὺ μὲν νυν, σύγγρον' Ἠλέκτρα, δόμων
πάρος μένουσα παρθένου δέχου πόδα·
φύλασσε δ' ἦν τις, πρὶν τελευτηθῇ φόνος,
ἢ ξύμμαχος τις ἢ κασίγνητος πατρός
ἐλθὼν ἐς οἴκους φθῇ, γέγωνέ τ' εἰς δόμους, 1220
ἢ σανίδα παίσας' ἢ λόγους πέμψας' ἔσω.
ἡμεῖς δ' ἔσω στείχοντες ἐπὶ τὸν ἔσχατον
ἄγων' ὀπλιζώμεσθα φασγάνῳ χέρας
[Πυλάδῃ· σὺ γὰρ δὴ συμπονεῖς ἐμοὶ πόνουσ].
ὦ δῶμα ναίων νυκτὸς ὀρφναίας πάτερ, 1225
καλεῖ σ' Ὀρέστης παῖς σὸς ἐπίκουρον μολεῖν
τοῖς δεομένοισι. διὰ σὲ γὰρ πάσχω τάλας
ἀδίκως· προδέδομαι δ' ὑπὸ κασιγνήτου σέθεν,
δίκαια πράξας· οὐ θέλω δάμαρθ' ἐλὼν
κτεῖναι· σὺ δ' ἡμῖν τοῦδε συλλήπτωρ γενοῦ. 1230
- ΗΛ. ὦ πάτερ, ἰκοῦ δῆτ', εἰ κλύεις εἴσω χθονὸς
τέκνων καλούντων, οἳ σέθεν θνήσκουσ' ὕπερ.
- ΠΤ. ὦ συγγένεια πατρός ἐμοῦ, κἀμὰς λιτάς,
Ἀγάμεμνον, εἰσάκουσον, ἔκσωσον τέκνα.
- ΟΡ. ἔκτεινα μητέρ', ΠΤ. ἠψάμην δ' ἐγὼ ξίφους. 1235
- ΗΛ. ἐγὼ δ' ἐπενεκέλευσα κἀπέλυσ' ὄκνου.
- ΟΡ. σοί, πάτερ, ἀρήγων. ΗΛ. οὐδ' ἐγὼ προῦδωκά σε.
- ΠΤ. οὐκοῦν ὀνειδῇ τάδε κλύων ρῦσαι τέκνα.
- ΟΡ. δακρύοις κατασπένδω σ'. ΗΛ. ἐγὼ δ' οἴκτοισί γε.
- ΠΤ. παύσασθε, καὶ πρὸς ἔργον ἐξορμώμεθα. 1240

εἶπερ γὰρ εἴσω γῆς ἀκοντίζουσ' ἀραί,
 κλύει. σὺ δ', ὦ Ζεῦ πρόγονε καὶ Δίκης σέβας,
 δότ' εὐτυχῆσαι τῷδ' ἐμοί τε τῇδέ τε·
 τρισσοῖς φίλοις γὰρ εἷς ἀγών, δίκη μία
 [ἢ ξῆν ἅπασιν ἢ θανεῖν ὀφείλεται]. 1245

ΗΛ. Μυκηνίδες ὦ φίλαιοι, στρ.
 τὰ πρῶτα κατὰ Πελασγὸν ἔδος Ἀργείων.

ΧΟ. τίνα θροεῖς αὐδάν, πότνια; παραμένει
 γὰρ ἔτι σοι τόδ' ἐν Δαναϊδῶν πόλει. 1250

ΗΛ. στήθ' αἰ μὲν ὑμῶν τόνδ' ἀμαξήρη τρίβον,
 αἰ δ' ἐνθάδ' ἄλλον οἶμον εἰς φρουρὰν δόμων.

ΧΟ. τί δέ με τόδε χρέος ἀπύεις,
 ἔνεπέ μοι, φίλα.

ΗΛ. φόβος ἔχει με μή τις ἐπὶ δώμασι 1255
 σταθεῖς ἐπὶ φοῖνιον αἶμα
 πήματα πήμασιν ἐξεύρη.

ΗΜΙΧ. χωρεῖτ', ἐπειγώμεσθ'· ἐγὼ μὲν οὖν τρίβον
 τόνδ' ἐκφυλάξω, τὸν πρὸς ἡλίου βολάς.

ΗΜΙΧ. καὶ μὴν ἐγὼ τόνδ', ὃς πρὸς ἐσπέραν φέρει. 1260

ΗΛ. δόχημά νυν κόρας διάφερ' ὁμμάτων
 ἐκεῖθεν ἐνθάδ', εἴτα παλινσκοπιάν.

ΗΜΙΧ. ἔχομεν ὥς θροεῖς. 1265

ΗΛ. ἐλίσσσετέ νυν βλέφαρον ἀντ.
 κόρας διάδοτε διὰ βοτρυχῶν πάντη.

ΗΜΙΧ. ὅδε τίς ἐν τρίβῳ; πρόσεχε, τίς ὅδ' ἄρ' ἀμ-
 φι μέλαθρον πολεῖ σὸν ἀγρότας ἀνῆρ; 1270

ΗΛ. ἀπωλόμεσθ' ἄρ', ὦ φίλαιοι· κεκρυμμένους
 θῆρας ξιφήρεις αὐτίκ' ἐχθροῖσιν φανεῖ.

ΗΜΙΧ. ἄφοβος ἔχε· κενός, ὦ φίλα,
 στίβος ὃν οὐ δοκεῖς.

ΗΛ. τί δέ; τὸ σὸν βέβαιον ἔτι μοι μένει; 1275

1246 — 1265 = 1266 — 1285

- δὸς ἀγγελίαν ἀγαθάν τιν',
εἰ τὰδ' ἔρημα τὰ πρόσθ' αὐλᾶς.
- ΗΜΙΧ. καλῶς τὰ γ' ἔνθεν· ἀλλὰ τὰπὶ σοῦ σκοπεῖ·
ὥς οὔτις ἡμῖν Δαναϊδῶν πελάζεται.
- ΗΜΙΧ. εἰς ταῦτόν ἦκεις· καὶ γὰρ οὐδὲ τῇδ' ὄχλος. 1280
- ΗΛ. φέρε νυν ἐν πύλαισιν ἀκοὰν βάλω·
τί μέλλεθ' οἱ κατ' οἶκον ἐν ἡσυχίᾳ
σφάγια φοινίσσειν;
οὐκ εἰσακούουσ'· ὦ τάλαιν' ἐγὼ κακῶν.
ἄρ' ἐς τὸ κάλλος ἐκκεκώφηται ξίφη;
τάχα τις Ἀργείων ἔνοπλος ὀρμήσας
ποδὶ βοηθρόμῳ μέλαθρα προσμίξει. 1285
σκέψασθ' ἐν νυν ἄμεινον· οὐχ ἔδρας ἀγών·
ἀλλ' αἱ μὲν ἐνθάδ', αἱ δ' ἐκεῖσ' ἐλίσσετε.
- ΧΟ. ἀμείβω κέλευθον σκοποῦσα πάντα. 1295
- ΕΛ. ἰὼ Πελασγὸν Ἄργος, ὅλλυμαι κακῶς.
- ΗΜΙΧ. ἠκούσαθ'; ἄνδρες χεῖρ' ἔχουσιν ἐν φόνῳ.
- ΗΜΙΧ. Ἑλένης τὸ κῶκυμ' ἐστίν, ὥς ἀπεικάσαι.
- ΗΛ. ὦ Διός, ὦ Διὸς ἀέναον κράτος,
ἔλθ' ἐπίκουρον ἐμοῖς φίλοισι πάντως. 1300
- ΕΛ. Μενέλαε, θνήσκω· σὺ δὲ παρών μ' οὐκ ὠφελεῖς.
- ΗΛ. φονεύετε καίνετε [θείνετε] ὅλλυτε,
δίπτυχα δίστομα φάσγανα [πέμπετε]
ἐκ χερὸς ἰέμε-
νοι λιποπάτορα λιπόγαμόν θ', ἃ πλείστους 1305
ἔκανεν Ἑλλάνων
δόρει παρὰ ποταμὸν ὀλομένους, ὅπόθι
δάκρυα δάκρυσι συνέπεσε σιδαρέοις
βέλεσιν ἀμφὶ τὰς Σκαμάνδρου δίνας. 1310
- ΧΟ. σιγᾶτε σιγᾶτ'· ἡσθόμην κτύπου τινὸς
κέλευθον εἰσπεσόντος ἀμφὶ δώματα.
- ΗΛ. ὦ φίλταται γυναικες, εἰς μέσον φόνον

- ἥδ' Ἑρμιόνη πάρεστι· παύσωμεν βοήν.
 στείχει γὰρ εἰσπεσοῦσα δικτύων βρόχους. 1315
 καλὸν τὸ θήραμ', ἦν ἁλῶ, γενήσεται.
 πάλιν κατάστηθ' ἡσύχω μὲν ὄμματι,
 χροῶ τ' ἀδήλω τῶν δεδραμένων πέρι·
 κἀγὼ σκυθρωποὺς ὀμμάτων ἔξω κόρας,
 ὥς δῆθεν οὐκ εἰδυῖα τάξειργασμένα. 1320
 ὦ παρθέν', ἦκεις τὸν Κλυταιμνήστρας τάφον
 στέψασα καὶ σπείσασα νερτέροις χοάς;
 ΕΡ. ἦκω, λαβοῦσα πρευμένειαν. ἀλλὰ μοι
 φόβος τις εἰσελήλυθ', ἦντιν' ἐν δόμοις
 τηλουρὸς οὔσα δωμαίων κλύω βοήν. 1325
 ΗΛ. τί δ'; ἄξι' ἡμῖν τυγχάνει στεναγμάτων.
 ΕΡ. εὖφημος ἴσθι· τί δὲ νεώτερον λέγεις;
 ΗΛ. θανεῖν Ὀρέστην κἄμ' ἔδοξε τῇδε γῇ.
 ΕΡ. μὴ δῆτ', ἐμούς γε συγγενεῖς πεφνκότας.
 ΗΛ. ἄραρ'· ἀνάγκης δ' ἐς ζυγὸν καθέσταμεν. 1330
 ΕΡ. ἦ τοῦδ' ἔκατι καὶ βοή κατὰ στέγας;
 ΗΛ. ἱκέτης γὰρ Ἑλένης γόνασι προσπεσὼν βοᾷ
 ΕΡ. τίς; οὐδὲν οἶδα μᾶλλον, ἦν σὺ μὴ λέγῃς.
 ΗΛ. τλήμων Ὀρέστης μὴ θανεῖν, ἐμοῦ θ' ὕπερ.
 ΕΡ. ἐπ' ἀξίοισι τᾶρ' ἀνευφημεῖ δόμος. 1335
 ΗΛ. περὶ τοῦ γὰρ ἄλλου μᾶλλον ἂν φθέγξαιτό τις;
 ἀλλ' ἐλθὲ καὶ μετάσχες ἱκεσίας φίλοις,
 σῇ μητρὶ προσπεσοῦσα τῇ μέγ' ὀλβία,
 Μενέλαον ἡμᾶς μὴ θανόντας εἰσιδεῖν.
 ἀλλ' ὦ τραφεῖσα μητρὸς ἐν χεροῖν ἐμῆς, 1340
 οἴκτειρον ἡμᾶς ἀποκούφισον κακῶν.
 ἴθ' εἰς ἀγῶνα δεῦρ', ἐγὼ δ' ἡγήσομαι·
 σωτηρίας γὰρ τέρμ' ἔχεις ἡμῖν μόνῃ.
 ΕΡ. ἰδοῦ, διώκω τὸν ἐμὸν εἰς δόμους πόδα.
 σώθηθ' ὅσον γε τοῦτ' ἐμ'. ΗΛ. ὦ κατὰ στέγας 1345

- φίλοι ξιφήρεις, οὐχὶ συλλήψεσθ' ἄγραν;
 ΕΡ. οἶ' γώ· τίνας τούσδ' εἰσορῶ; ΟΡ. σιγᾶν χρεών·
 ἡμῖν γὰρ ἦκεις, οὐχὶ σοί, σωτηρία.
 ΗΛ. ἔχεσθ' ἔχεσθε· φάσγανον δὲ πρὸς δέρη
 βαλόντες ἡσυχάζεσθ', ὥς εἰδῇ τόδε 1350
 Μενέλαος, οὔνεκ' ἄνδρας, οὐ Φρύγας κακούς,
 εὐρὼν ἐπραξεν οἷα χρὴ πράσσειν κακούς.
 ΧΟ. ἰὼ ἰὼ φίλαι, στρ.
 κτύπον ἐγείρετε, κτύπον καὶ βοᾶν
 πρὸ μελάθρων, ὅπως ὁ πραχθεὶς φόνος
 μὴ δεινὸν Ἀργείοισιν ἐμβάλλῃ φόβον, 1355
 βοηδρομῆσαι πρὸς δόμους τυραννικούς,
 πρὶν ἐτύμως ἰδῶ τὸν Ἑλένας φόνον
 καθαιμακτὸν ἐν δόμοις κείμενον,
 ἢ καὶ λόγον του προσπόλων πυθώμεθα·
 τὰς μὲν γὰρ οἶδα συμφοράς, τὰς δ' οὐ σαφῶς. 1360
 διὰ δίκας ἔβα θεῶν
 νέμεσις ἐς Ἑλέναν.
 δακρύοισι γὰρ Ἑλλάδα πᾶσαν ἐπλησε,
 διὰ τὸν ὀλόμενον ὀλόμενον Ἰδαῖον
 Πάριον, ὃς ἄγαγ' Ἑλλάδ' εἰς Ἴλιον. 1365
 ἀλλὰ κτυπεῖ γὰρ κληῖθρα βασιλείων δόμων,
 σιγήσατ'· ἔξω γὰρ τις ἐκβαίνει Φρυγῶν,
 οὗ πευσόμεσθα τᾶν δόμοις ὅπως ἔχει.
 ΦΡ. Ἀργεῖον ξίφος ἐκ θανάτου πέφευγα
 βαρβάρους εὐμάρισιν, 1370
 κεδρωτὰ παστᾶδων ὑπὲρ τέρεμνα
 Δωρικός τε τριγλύφους,
 φροῦδα φροῦδα, γᾶ γᾶ,
 βαρβάροισι δρασμοῖς.

- αἰαῖ· πᾶ φύγω, ξέναι, 1375
πολιὸν αἰθέρ' ἄμ-
πτάμενος ἢ πόντον, Ὀκεανὸς ὄν
ταυρόκρανος ἀγκάλαις ἐλίσ-
σων κυκλοῖ χθόνα;
- ΧΟ. τί δ' ἔστιν, Ἑλένης πρόσπολ', Ἰδαῖον κῆρα; 1380
- ΦΡ. Ἴλιον Ἴλιον, ὦμοι μοι, Φρύγιον
ἄστν καλλίβωλον, Ἴδας
ὄρος θ' ἱερὸν, ὥς σ' ὀλόμενον στένω,
ἀρμάτειον ἀρμάτειον
μέλος βαρβάρῳ βοᾷ, διὰ τὸ τᾶς 1385
ὀρνιθόγονον ὄμμα κυκνόπτερον
καλλοσύνας Αἰήδας σκύμνου δυσελένας,
ξεστῶν περγάμων Ἀπολλωνίων
ἐρινύν· ὅτοτοῖ·
ἰαλέμων ἰαλέμων 1390
Δαρδανία τλάμων Γανυμήδεος
ἱπποσύνα Διὸς εὐνέτα.
- ΧΟ. σαφῶς λέγ' ἡμῖν αὖθ' ἕκαστα τὰν δόμοις·
τὰ γὰρ πρὶν οὐκ εὖγνωστα συμβαλοῦσ' ἔχω.
- ΦΡ. αἴλινον αἴλινον ἀρχὰν θανάτου 1395
βάρβαροι λέγουσιν, αἰαῖ,
Ἀσιάδι φωνᾷ,
βασιλέων ὅταν αἶμα χυθῇ κατὰ γαῖαν
ξίφεσι σιδαρέοισιν Ἄιδα.
ἦλθον εἰς δόμους, ἵν' αὖθ' ἕκαστά σοι λέγω, 1400
λέοντες Ἕλλανες δύο διδύμῳ·
τῷ μὲν ὁ στρατηλάτας πατὴρ ἐκλήζετο,
ὁ δὲ παῖς Στροφίου, κακόμεντις ἀνήρ,
οἶος Ὀδυσσεύς, σιγᾷ δόλιος,
πιστὸς δὲ φίλοις, θρασὺς εἰς ἀλκάν, 1405
ξυνετὸς πολέμου, φόνιός τε δράκων.

- ἔρροι τᾶς ἡσύχου προνοί-
 ας κακοῦργος ὦν.
 οἱ δὲ πρὸς θρόνους ἕσω
 μολόντες ᾗς ἔγρημ' ὁ τοξότας Πάρις
 γυναικός, ὄμμα δακρύοις 1410
 πεφυρμένοι, ταπεινοὶ
 ἕξονθ', ὁ μὲν τὸ κεῖθεν, ὁ δὲ
 τὸ κεῖθεν, ἄλλος ἄλλοθεν πεφραγμένοι.
 περὶ δὲ γόνυ χέρας ἱκεσίους
 ἔβαλον ἔβαλον Ἑλένας ἄμφω. 1415
 ἀνὰ δὲδρομάδες ἔθορον ἔθορον
 ἀμφίπολοι Φρύγες·
 προσεῖπε δ' ἄλλος ἄλλον πεσὼν ἐν φόβῳ,
 μή τις εἴη δόλος.
 κἀδόκει τοῖς μὲν οὔ,
 1420 τοῖς δ' ἔς ἀρκυστάταν
 μηχανὰν ἐμπλέκειν
 παῖδα τὰν Τυνδαρίδ' ὁ
 μητροφόντας δράκων.
 ΧΟ. σὺ δ' ἦσθα ποῦ τότ', ἢ πάλοι φεύγεις φόβῳ; 1425
 ΦΡ. Φρυγίοις ἔτυχον Φρυγίοισι νόμοις
 παρὰ βόστρυχον αὔραν αὔραν
 Ἑλένας Ἑλένας εὐπᾶγι κύκλῳ
 περὶ νῶ πρὸ παρηίδος ἄσσω
 βαρβάροις νόμοισιν. 1430
 ἅ δὲ λίνον ἡλακάτα
 δακτύλοις ἔλισσε,
 νῆμά θ' ἔτετο πέδῳ,
 σκύλων Φρυγίων ἐπὶ τύμβον ἀγά-
 ματα συστολίσαι χορήξουσα λίνῳ, 1435
 φάρεα πορφύρεα, δῶρα Κλυταιμνήστρα.
 προσεῖπε δ' ὦδ' Ὀρέστας Λάκαιναν κόραν·

ὦ Διὸς παῖ, θῆς ἱ-
 χνος πέδῳ δεῦρ' ἀπο-
 στᾶσα κλισμοῦ, Πέλοπος 1440
 ἐπὶ προπάτορος παλαι-
 ᾱς ἔδραν ἐστίας,
 ἵν' εἰδῆς λόγους ἐμούς.
 ἄγρι δ' ἄγρι νιν· ἅ δ' ἐφεί-
 πετ', οὐ πρόμαντις ὦν ἔμελ- 1445
 λεν· ὁ δὲ συννεργὸς ἄλλ' ἐπρασσ'
 ἰὼν κακὸς Φωκεύς·
 οὐκ ἐκποδὼν ἵτ', ἀλλ' αἰὲ κακοὶ Φρύγες;
 ἔκλησε δ' ἄλλον ἄλλοσε στέγης·
 τοὺς μὲν ἐν σταθμοῖσιν ἱππικοῖς,
 τοὺς δ' ἐν ἐξέδραισι, τοὺς δ' ἐκεῖσ' ἐκεῖθεν 1450
 ἄλλον ἄλλοσε διαρμόσας ἀποπρὸ δεσποίνας.
 ΧΟ. τί τοῦπὶ τῷδε συμφορᾷς ἐγίγνετο;
 ΦΡ. Ἰδαία μᾶτερ μᾶτερ
 ὀβρίμα ὀβρίμα, αἰαῖ,
 φονίων παθέων ἀνόμων τε κακῶν 1455
 ἄπερ ἔδρακον ἔδρακον ἐν δόμοις τυράννων.
 ἀμφὶ πορφυρέων πέπλων ὑπὸ σκότου
 ξίφῃ σπάσαντες ἐν χεροῖν,
 ἄλλος ἄλλοσε
 δίνασεν ὄμμα, μή τις παρὼν τύχοι.
 ὥς κάπροι δ' ὀρέστεροι γυναικὸς ἀντίοι στα-
 θέντες 1460
 ἐννέπουσι· κατθανεῖ
 κατθανεῖ, κακὸς σ' ἀποκτείνει πόσις,
 τὸν κασιγνήτου προδοῦς
 ἐν Ἄργει θανεῖν γόνον.
 ἅ δ' ἴαχεν ἴαχεν, ὦμοι μοι· 1465
 λευκὸν δ' ἐμβαλοῦσα πῆχυν στέφνοις,

κτύπησε κραῖτα μέλεον πλαγάν·
 φυγᾷ δὲ ποδὶ τὸ χρυσοσάνδαλον
 ἶχνος ἔφερεν ἔφερεν·
 ἐς κόμας δὲ δακτύλους δικῶν Ὀρέστας,
 Μυκηνίδ' ἀρβύλαν προβάς,
 ὦμοις ἀριστεροῖσιν ἀνακλάσας δέσρην,
 παίειν λαιμὸν ἔμελλεν
 ἔσω μέλαν ξίφος.

1470

ΧΟ. ποῦ δῆτ' ἀμύνειν οἱ κατὰ στέγας Φρύγες;
 ΦΡ. ἰαχᾷ δόμων θύρετρα καὶ σταθμοὺς
 μοχλοῖσιν ἐκβαλόντες, ἔνθ' ἐμίμνομεν,
 βοηδρομοῦμεν ἄλλος ἄλλοθεν στέγης,
 ὁ μὲν πέτρους, ὁ δ' ἀγκύλας,
 ὁ δὲ ξίφος πρόκωπον ἐν χεροῖν ἔχων.
 ἔναντα δ' ἦλθεν

1475

Πυλάδης ἀλίαςτος, οἶος οἶος
 Ἔκτωρ ὁ Φρύγιος ἢ τρικόρυθος Αἴας,
 ὃν εἶδον εἶδον ἐν πύλαισι Πριαμίδει·
 φασγάνων δ' ἀκμὰς ξυνήψαμεν.
 τότε δὲ τότε διαπρεπεῖς ἐγένοντο Φρύγες,
 ὅσον Ἄρεος ἀλκὰν ἦσσαν Ἑλλάδος
 ἐγενόμεσθ' αἰχμᾶς.

1480

1485

ὁ μὲν οἰχόμενος φυγὰς, ὁ δὲ νέκυς ὦν,
 ὁ δὲ τραῦμα φέρων, ὁ δὲ λισσόμενος,
 θανάτου προβολάν·

ὑπὸ σκότον δ' ἐφεύγομεν·

νεκροὶ δ' ἐπιπτον, οἱ δ' ἔμελλον, οἱ δ' ἔκειντ'.

ἔμολε δ' ἅ τάλαιν' Ἑρμιόνα δόμους

1490

ἐπὶ φόνῳ χαμαιπετεῖ ματρός, ἃ νιν ἔτεκεν τλά-
 μων.

ἄθνηρσοι δ' οἷά νιν δραμόντε βᾶκχαι
 σκύμνον ἐν χεροῖν ὀρεΐαν

ξυνήρπασαν· πάλιν δὲ τὰν Διὸς κόραν
 ἐπὶ σφαγὰν ἔτεινον· ἅ δ' ἐκ θαλάμων
 ἐγένετο διαπρὸ δωμάτων ἄφαντος, 1495
 ὦ Ζεῦ καὶ γὰ καὶ φῶς καὶ νύξ,
 ἦτοι φαρμάκοισιν ἢ μάγων
 τέχναισιν ἢ θεῶν κλοπαῖς.
 τὰ δ' ὕστερ' οὐκέτ' οἶδα· δρα-
 πέτην γὰρ ἐξέκλεπτον ἐκ δόμων πόδα.
 πολύπονα δὲ πολύπονα πάθεια 1500
 Μενέλαος ἀνασχόμενος ἀνόνητον ἀπὸ
 Τροίας ἔλαβε τὸν Ἑλένας γάμον.

ΧΟ. καὶ μὴν ἀμείβει καινὸν ἐκ καινῶν τόδε·
 ξιφηφόρον γὰρ εἰσορῶ πρὸ δωμάτων
 βαίνοντ' Ὀρέστην ἐπτοημένῳ ποδί. 1505

ΟΡ. ποῦ ᾽στιν οὗτος ὃς πέφενγεν ἐκ δόμων ἐμὸν
 ξίφος;

ΦΡ. προσκυνῶ σ', ἄναξ, νόμοισι βαρβάροισι προσ-
 πίτνων.

ΟΡ. οὐκ ἐν Ἰλίῳ τάδ' ἐστίν, ἀλλ' ἐν Ἀργεῖα χθονί.

ΦΡ. πανταχοῦ ζῆν ἡδὺ μᾶλλον ἢ θανεῖν τοῖς σώ-
 φροσιν.

ΟΡ. οὔτι που κραυγὴν ἔθηκες Μενέλεω βοηδρομεῖν;

ΦΡ. σοὶ μὲν οὖν ἔγωγ' ἀμύνειν· ἀξιώτερος γὰρ εἶ. 1511

ΟΡ. ἐνδίκως ἢ Τυνδάρειος ἄρα παῖς διώλετο;

ΦΡ. ἐνδικώτατ', εἴ γε λαιμοὺς εἶχε τριπτύχους θα-
 νεῖν.

ΟΡ. δειλίᾳ γλώσση χαρίζει, τᾶνδον οὐχ οὔτω φρο-
 νῶν.

ΦΡ. οὐ γάρ, ἥτις Ἑλλάδ' αὐτοῖς Φρυξὶ διελυμήνατο;

ΟΡ. ὅμοσον, εἰ δὲ μή, κτενῶ σε, μὴ λέγειν ἐμὴν
 χάριν. 1516

ΦΡ. τὴν ἐμὴν ψυχὴν κατώμοσ', ἣν ἂν εὐορκοῖμ' ἐγώ.

- ΟΡ. ὦδε καὶν Τροία σίδηρος πᾶσι Φρυξὶν ἦν φόβος;
ΦΡ. ἄπεχε φάσγανον· πέλας γὰρ δεινὸν ἀνταυγεῖ
φόνον.
- ΟΡ. μὴ πέτρος γένη δέδοικας, ὥστε Γοργόν' εἰσιδών;
ΦΡ. μὴ μὲν οὖν νεκρός· τὸ Γοργοῦς δ' οὐ κάτοιδ' ἐγὼ
κάρα. 1521
- ΟΡ. δοῦλος ὢν φοβεῖ τὸν Ἴδην, ὅς σ' ἀπαλλάξει κα-
κῶν;
ΦΡ. πᾶς ἀνὴρ, καὶν δοῦλος ἤ τις, ἥδεται τὸ φῶς ὀρώων.
ΟΡ. εὖ λέγεις, σῶζει σε σύνεσις· ἀλλὰ βαῖν' εἴσω
δόμων.
- ΦΡ. οὐκ ἄρα κτενεῖς μ'; ΟΡ. ἀφείσαι. ΦΡ. καλὸν ἔπος
λέγεις τόδε. 1525
- ΟΡ. ἀλλὰ μεταβουλευσόμεσθα. ΦΡ. τοῦτο δ' οὐ καλῶς
λέγεις.
- ΟΡ. μῶρος εἶ δοκῶν με τλῆναι σὴν καθαιμάξει δέρην·
οὔτε γὰρ γυνὴ πέφυκας οὔτ' ἐν ἀνδράσιν σύ
γ' εἶ.
τοῦ δὲ μὴ στῆσαι σε κραυγὴν οὔνεκ' ἐξῆλθον
δόμων·
ὄξυν γὰρ βοῆς ἀκοῦσαν Ἄργος ἐξεγείρεται. 1530
Μενέλεων δ' οὐ τάρβος ἡμῖν ἀναλαβεῖν εἴσω ξί-
φους·
ἀλλ' ἴτω ξανθοῖς ἐπ' ὤμων βοστρύχοις γαυροῦ-
μενος·
εἰ γὰρ Ἀργείους ἐπάξει τοῖσδε δώμασιν λαβών,
τὸν Ἑλένης φόνον διώκων, καμὲ μὴ σῶζειν θέλῃ
ξύγγονόν τ' ἐμὴν Πυλάδην τε τὸν τάδε ξυνδρῶν-
τά μοι, 1535
παρθένον τε καὶ δάμαρτα δύο νεκρὰ κατόψεται.
- ΧΟ. ἰὼ ἰὼ τύχα, ἀντ.

ἕτερον εἰς ἀγῶν', ἕτερον αὖ δόμος
φοβερόν ἀμφὶ τοὺς Ἀτρείδας πίτνει.

ΗΜΙΧ. τί δρωμεν; ἀγγέλλωμεν εἰς πόλιν τάδε;
ἢ σῖγ' ἔχωμεν; ΗΜΙΧ. ἀσφαλέστερον, φίλαι. 1540

ΗΜΙΧ. ἴδε πρὸ δωμαίων ἴδε προκηρύσσει
θοάζων ὃδ' αἰθέρος ἄνω καπνός.

ΗΜΙΧ. ἄπτουσι πένκας ὥς πυρώσοντες δόμους
τοὺς Τανταλείους, οὐδ' ἀφίστανται φόνου.

ΧΟ. τέλος ἔχει δαίμων βροτοῖς, 1545
τέλος ὅπα θέλει.

μεγάλα δέ τις ἅ δύναιμι· δι' ἀλάστορ'
ἔπεσ' ἔπεσε μέλαθρα τάδε δι' αἱμάτων
διὰ τὸ Μυρτίλου πέσημ' ἐκ δίφρου.

ἀλλὰ μὴν καὶ τόνδε λεύσσω Μενέλεων δόμων
πέλας

ὀξύπουν, ἥσθημένον που τὴν τύχην ἢ νῦν πάρα.
οὐκέτ' ἂν φθάνοιτε κληῖθρα συμπεραίνοντες μο-
κλοῖς, 1551

ὦ κατὰ στέγας Ἀτρείδαι. δεινὸν εὐτυχῶν ἀνὴρ
πρὸς κακῶς πράσσοντας, ὥς σὺ νῦν Ὀρέστα δυσ-
τυχεῖς.

ΜΕ. ἦκω κλύων τὰ δεινὰ καὶ δραστήρια
δισσοῖν λεόντοιν· οὐ γὰρ ἄνδρ' αὐτῷ καλῷ. 1555

ἦκουσα γὰρ δὴ τὴν ἐμὴν ξυνάορον
ὥς οὐ τέθνηκεν, ἀλλ' ἄφαντος οἴχεται,
κενὴν ἀκούσας βάξιν, ἣν φόβῳ σφαλεῖς
ἦγγειλέ μοί τις. ἀλλὰ τοῦ μητροκτόνου
τεχνάσματ' ἐστὶ ταῦτα καὶ πολλὺς γέλως. 1560

ἀνοιγέτω τις δῶμα· προσπόλοις λέγω
ὠθεῖν πύλας τάσδ', ὥς ἂν ἀλλὰ παῖδ' ἐμὴν
ῥυσώμεθ' ἀνδρῶν ἐκ χειρῶν μαιφόνων
καὶ τὴν τάλαιναν ἀθλίαν δάμαρτ' ἐμὴν

- λάβωμεν, ἥ δ'εἰ ξυνθανεῖν ἐμῇ χειρὶ 1565
 τοὺς διολέσαντας τὴν ἐμὴν ξυνάορον.
- OP. οὗτος σύ, κλείθρων τῶνδε μὴ ψαύσης χειρί,
 Μενέλαον εἶπον, ὅς πεπύργωσαι θράσει·
 ἢ τῶδε θριγκῶ κρᾶτα συνθραύσω σέθεν,
 ῥήξας παλαιὰ γεῖσα τεκτόνων πόνον. 1570
 μοχλοῖς δ' ἄραρε κλεῖθρα, σῆς βοηδρόμου
 σπουδῆς ἅ σ' εἴρξει, μὴ δόμων εἴσω περᾶν.
- ME. ἔα, τί χοῆμα; λαμπάδων ὀρῶ σέλας,
 δόμων δ' ἐπ' ἄκρων τούσδε πυργηρουμένους,
 ξίφος δ' ἐμῆς θυγατρὸς ἐπίφρουρον δέρη. 1575
- OP. πότερον ἐρωτᾶν ἢ κλύειν ἐμοῦ θέλεις;
- ME. οὐδέτερό· ἀνάγκη δ', ὥς ἔοικε, σοῦ κλύειν.
- OP. μέλλω κτανεῖν σου θυγατέρ', εἰ βούλει μαθεῖν.
- ME. Ἑλένην φονεύσας ἐπὶ φόνῳ πράσσεις φόνον;
- OP. εἰ γὰρ κατέσχον μὴ θεῶν κλεφθεῖς ὕπο. 1580
- ME. ἄρνεῖ κατακτὰς κάφ' ὕβρει λέγεις τάδε;
- OP. λυπρὰν γε τὴν ἄρνησιν· εἰ γὰρ ὠφελον
- ME. τί χοῆμα δρᾶσαι; παρακαλεῖς γὰρ εἰς φόβον.
- OP. τὴν Ἑλλάδος μιάστορ' εἰς Αἰδου βαλεῖν.
- ME. ἀπόδος δάμαρτος νέκυν, ὅπως χώσω τάφῳ. 1585
- OP. θεοὺς ἀπαίτει· παῖδα δὲ κτενῶ σέθεν.
- ME. ὁ μητροφόντης ἐπὶ φόνῳ πράσσει φόνον.
- OP. ὁ πατρὸς ἀμύντωρ, ὃν σὺ προῦδωκας θανεῖν.
- ME. οὐκ ἤρκεσέν σοι τὸ παρὸν αἷμα μητέρος;
- OP. οὐκ ἂν κάμοιμι τὰς κακὰς κτείνων αἰεί. 1590
- ME. ἢ καὶ σὺ Πυλάδῃ τοῦδε κοινωνεῖς φόνου;
- OP. φησὶν σιωπῶν· ἀρκέσω δ' ἐγὼ λέγων.
- ME. ἀλλ' οὔτι χαίρων, ἦν γε μὴ φύγῃς πετροῖς.
- OP. οὐ φευξόμεσθα· πυρὶ δ' ἀνάψομεν δόμους.
- ME. ἢ γὰρ πατρῴον δῶμα πορθήσεις τόδε; 1595
- OP. ὥς μὴ γ' ἔχῃς σύ, τήνδ' ἐπισφάξας πυρὶ.

- ΜΕ. κτεῖν' ὥς κτανών γε τῶνδ' ἐμοὶ δώσεις δίκην.
 ΟΡ. ἔσται τάδ'. ΜΕ. ᾧ ᾧ, μηδαμῶς δράσῃς τάδε.
 ΟΡ. σίγα νυν, ἀνέχου δ' ἐνδίκως πράσσω κακῶς.
 ΜΕ. ἦ γὰρ δίκαιον ζῆν σε; ΟΡ. καὶ κρατεῖν γε γῆς. 1600
 ΜΕ. ποίας; ΟΡ. ἐν Ἄργει τῷδε τῷ Πελασγικῷ.
 ΜΕ. εὖ γοῦν θίγοις ἂν χερνίβων ΟΡ. τί δὴ γὰρ οὐ;
 ΜΕ. καὶ σφάγια πρὸ δορὸς καταβάλοις. ΟΡ. σὺ δ' ἂν
 καλῶς;
 ΜΕ. ἄγνός γάρ εἰμι χεῖρας. ΟΡ. ἀλλ' οὐ τὰς φρένας.
 ΜΕ. τίς δ' ἂν προσείποι σ'; ΟΡ. ὅστις ἐστὶ φιλοπά-
 τωρ. 1605
 ΜΕ. ὅστις δὲ τιμᾷ μητέρ'; ΟΡ. εὐδαίμων ἔφν.
 ΜΕ. οὐκ οὖν σύ γ'. ΟΡ. οὐ γὰρ ἀνδάνουσιν αἱ κακαί.
 ΜΕ. ἅπαιρε θυγατρὸς φάσγανον. ΟΡ. ψευδὴς ἔφνς.
 ΜΕ. ἀλλὰ κτενεῖς μου θυγατέρ'; ΟΡ. οὐ ψευδὴς ἔτ' εἰ.
 ΜΕ. οἷμοι, τί δράσω; ΟΡ. πεῖθ' ἐς Ἀργεῖους μο-
 λῶν 1610
 ΜΕ. πειθῶ τίν'; ΟΡ. ἡμᾶς μὴ θανεῖν αἰτοῦ πόλιν.
 ΜΕ. ἦ παῖδά μου φονεύσεθ'; ΟΡ. ᾧδ' ἔχει τάδε.
 ΜΕ. ᾧ τλήμον Ἑλένη, ΟΡ. τὰμὰ δ' οὐχὶ τλήμονα;
 ΜΕ. σοὶ σφάγιον ἐκόμισ' ἐκ Φρυγῶν, ΟΡ. εἰ γὰρ τόδ'
 ἦν.
 ΜΕ. πόνοὺς πονήσας μυρίους. ΟΡ. πλὴν εἰς ἐμέ. 1615
 ΜΕ. πέπονθα δεινά. ΟΡ. τότε γὰρ ἦσθ' ἀνωφελής.
 ΜΕ. ἔχεις με. ΟΡ. σαυτὸν σύ γ' ἔλαβες κακὸς γεγώς.
 ἀλλ' εἴ, ὕφαπτε δώματ', Ἥλέκτρα, τάδε·
 σύ τ', ᾧ φίλων μοι τῶν ἐμῶν σαφέστατε,
 Πυλάδῃ, κάταιθε γεῖσα τειχέων τάδε. 1620
 ΜΕ. ᾧ γαῖα Δαναῶν ἱππίου τ' Ἄργους κτίται,
 οὐκ εἴ' ἐνόπλῳ ποδὶ βοηδρομήσετε;
 πᾶσαν γὰρ ὑμῶν ὅδε βιάζεται πόλιν
 ζῆν, αἶμα μητρὸς μυσαρὸν ἐξειργασμένος.

ΑΠ. Μενέλαε, παῦσαι λῆμ' ἔχων τεθηγμένον, 1625
 Φοῖβός σ' ὁ Αἰτοῦς παῖς ὅδ' ἐγγὺς ὦν καλῶ,
 σὺ θ' ὅς ξιφήρης τῆδ' ἐφεδρεύεις κόρη
 Ὅρέσθ', ἔν' εἰδῆς οὓς φέρων ἦκω λόγους·
 Ἑλένην μὲν ἦν σὺ διολέσαι πρόθυμος ὦν
 ἡμαρτες, ὀργὴν Μενέλεω ποιούμενος, 1630
 [ἦδ' ἐστίν, ἦν ὀρᾷτ' ἐν αἰθέρος πτυχαῖς,]
 σεσωσμένη τε κοῦ θανοῦσα πρὸς σέθεν.
 ἐγὼ νιν ἐξέσωσα κάπὸ φασγάνου
 τοῦ σοῦ κελευσθεὶς ἦρπας' ἐκ Διὸς πατρός.
 Ζηνὸς γὰρ οὕσαν ζῆν νιν ἄφθιτον χρεῶν, 1635
 Κάστορι τε Πολυδεύκει τ' ἐν αἰθέρος πτυχαῖς
 ξύνθακος ἔσται, ναυτίλοις σωτήριος.
 ἄλλην δὲ νύμφην εἰς δόμους κτῆσαι λαβών,
 ἐπεὶ θεοὶ τῷ τῆσδε καλλιστεύματι
 Ἑλλήνας εἰς ἓν καὶ Φρύγας ξυνήγαγον, 1640
 θανάτους τ' ἔθηκαν, ὥς ἀπαντλοῖεν χθονὸς
 ὕβρισμα θνητῶν ἀφθόνου πληρώματος.
 τὰ μὲν καθ' Ἑλένην ὦδ' ἔχει· σὲ δ' αὖ χρεῶν,
 Ὅρέστα, γαίης τῆσδ' ὑπερβαλόνθ' ὄρους
 Παρράσιον οἴκειν δάπεδον ἐνιαυτοῦ κύκλον. 1645
 κεκλήσεται δὲ σῆς φυγῆς ἐπώνυμον
 Ἀῶσιν Ἀρκάσιν τ' Ὅρέστειον καλεῖν.
 ἐνθένδε δ' ἐλθὼν τὴν Ἀθηναίων πόλιν
 δίκην ὑπόσχεσ αἵματος μητροκτόνου
 Εὐμενίσιν τρισαῖς· θεοὶ δέ σοι δίκης βραβεῖς 1650
 πάγοισιν ἐν Ἀρείοισιν εὐσεβεστάτην
 ψῆφον διοίσουσ', ἔνθα νικῆσαί σε χρή.
 ἐφ' ἧς δ' ἔχεις, Ὅρέστα, φάσγανον δέρον,
 γῆμαι πέπρωταί σ' Ἑρμιόνην· ὅς δ' οἶεται
 Νεοπτόλεμος γαμεῖν νιν, οὐ γαμεῖ ποτε. 1655
 θανεῖν γὰρ αὐτῷ μοῖρα Δελφικῷ ξίφει,

δίκας Ἀχιλλέως πατρὸς ἐξαιτοῦντί με.

Πυλάδῃ δ' ἀδελφῆς λέκτρον, ὥς ποτ' ἦνεσας,
δός· ὁ δ' ἐπιὼν νιν βίोटος εὐδαίμων μένει.

Ἄργους δ' Ὀρέστην, Μενέλεως, ἔα κρατεῖν, 1660

ἐλθὼν δ' ἄνασσε Σπαρτιάτιδος χθονός,

φερνὰς ἔχων δάμαρτος, ἥ σε μυρίοις

πόνοις διδοῦσα δεῦρ' αἰὲ διήνυσσε.

τὰ πρὸς πόλιν δὲ τῷδ' ἐγὼ θήσω καλῶς,

ὅς νιν φονεῦσαι μητέρ' ἐξηνάγκασα.

1665

ΟΡ. ὦ Λοξία μαντεῖε σῶν θεσπισμάτων·

οὐ ψευδόμαντις ἦσθ' ἄρ', ἀλλ' ἐτήτυμος.

καίτοι μ' ἐσῆει δεῖμα μή τινος κλύων

ἀλαστόρων δόξαιμι σὴν κλύειν ὅπα.

ἀλλ' εὖ τελεῖται, πείσομαι δὲ σοῖς λόγοις.

1670

ἰδοὺ μεθίημ' Ἐρμιόνην ἀπὸ σφαγῆς,

καὶ λέκτρ' ἐπήνεσ', ἡνίκ' ἂν διδῷ πατήρ.

ΜΕ. ὦ Ζηνὸς Ἑλένη χαῖρε παῖ· ζηλῶ δέ σε

θεῶν κατοικήσασαν ὄλβιον δόμον.

Ὀρέστα, σοὶ δὲ παῖδ' ἐγὼ κατεγγυῶ,

1675

Φοίβου λέγοντος· εὐγενῆς δ' ἀπ' εὐγενοῦς

γῆμας ὄναιο καὶ σὺ χῶ διδοὺς ἐγώ.

ΑΠ. χωρεῖτέ νυν ἕκαστος οἷ προστάσσομεν,

νείκους τε διαλύεσθε. ΜΕ. πείθεσθαι χρεών.

ΟΡ. καὶ γὰρ τοιοῦτος· σπένδομαι δὲ συμφοραῖς,

1680

Μενέλαε, καὶ σοῖς Λοξία θεσπίσμασιν.

ΑΠ. ἴτε νυν καθ' ὁδόν, τὴν καλλίστην

θεῶν Εἰρήνην τιμῶντες· ἐγὼ δ'

Ἑλένην Δίοις μελάθροισ πελάσω,

λαμπρῶν ἄστρον πόλον ἐξανύσας,

1685

ἔνθα παρ' Ἥρᾳ τῇ θ' Ἡρακλέους

Ἥβῃ πάρεδρος θεὸς ἀνθρώποις

ἔσται σπονδαῖς ἔντιμος αἰεί,

σὺν Τυνδαρίδαις τοῖς Διὸς υἱοῖς,
ναύταις μεδέουσα θαλάσσης·

1690

ΧΟ. ὦ μέγα σεμνὴ Νίκη, τὸν ἐμὸν
βίοτον κατέχοις
καὶ μὴ λήγοις στεφανοῦσα.

P H Σ O Σ.

ΤΑ ΤΟΥ ΔΡΑΜΑΤΟΣ ΠΡΟΣΩΠΑ.

ΧΟΡΟΣ ΦΥΛΑΚΩΝ ΤΡΩΙΚΩΝ.

ΕΚΤΩΡ.

ΑΙΝΕΙΑΣ.

ΔΟΛΩΝ.

ΑΓΓΕΛΟΣ.

ΡΗΣΟΣ.

ΟΔΥΣΣΕΥΣ.

ΔΙΟΜΗΔΗΣ.

ΑΘΗΝΑ.

ΠΑΡΙΣ.

ΡΗΣΟΥ ΗΝΙΟΧΟΣ.

ΜΟΤΣΑ.

Υ Π Ο Θ Ε Σ Ι Σ Ρ Η Σ Ο Υ.

Ἐκτωρ τοῖς Ἑλλησιν ἐπικοιτῶν ἀκούσας αὐτοὺς
 πυρκαΐειν, εὐλαβήθη μὴ φύγωσιν. ἐξοπλίζειν δὲ διε-
 γνωκῶς τὰς δυνάμεις μετενόησεν Αἰνείου συμβουλεύ-
 σαντος ἡσυχάζειν, κατάσκοπον δὲ πέμψαντας δι' ἐκεί-
 νου τὴν ἀλήθειαν ἱστορῆσαι. Δόλωνα δὲ πρὸς τὴν 5
 χρείαν ὑπακούσαντα ἐκπέμπεσθαι [καὶ] τόπον εἰς τὴν
 παρεμβολὴν ἀφώρισεν αὐτῷ. ἐπιφανέντες δὲ οἱ περὶ
 τὸν Ὀδυσσεά, καὶ Δόλωνα μὲν ἀνηρηκότες, ἐπὶ δὲ τὴν
 Ἑκτορος κοίτην ἐλθόντες πάλιν ὑπέστρεφον οὐχ εὐρόν-
 τες τὸν στρατηγόν. οὓς Ἀθηναῖ ἐπιφανεῖσα κατέσχευ.¹⁰
 καὶ τὸν μὲν Ἑκτορα ἐκέλευσε μὴ ζητεῖν, Ῥῆσον δὲ ἀναι-
 ρεῖν ἐπέταξε· τὸν γὰρ ἐκ τούτου κίνδυνον μείζονα ἔσε-
 σθαι τοῖς Ἑλλησιν, εἰὰν βιώσῃ. τούτων δὲ ἐπιφανεῖς
 Ἀλέξανδρος
 πολέμου παρουσίαν. ἑξαπατηθεὶς δὲ ὑπὸ Ἀθηναῖς, ὥς 15
 δῆθεν ὑπὸ Ἀφροδίτης, ἄπρακτος ὑπέστρεψε· οἱ δὲ
 περὶ Διομήδην φονεύσαντες Ῥῆσον ἐχωρίσθησαν. καὶ
 ἡ συμφορὰ τῶν ἀνηρημένων καθ' ὅλον ἦλθε τὸ στρά-
 τευμα. παραγενομένου δὲ Ἑκτορος ἵνα αὐτὸς περιγίνη-
 ται τῶν πεπραγμένων, τετρωμένος ὁ τοῦ Ῥῆσου ἐπιμε- 20
 λητῆς δι' αὐτοῦ . . . Ἑκτορος φόνον γεγενῆσθαι. τοῦ

δὲ Ἑκτορος ἀπολογουμένου τὴν ἀλήθειαν αὐτοῖς ἐμή-
 νυσεν ἢ τοῦ Ῥήσου μήτηρ ἢ Μοῦσα νεκρὸν κομίζειν τὸ
 σῶμα, ἀποδυρομένη δὲ καὶ τὸν ἐπιπλακέντα αὐτῇ
 Στρυμόνα διὰ τὸ τοῦ παιδὸς πένθος· καὶ τὸν ἐξ ἐκείνου
 5 γεγεννημένον Ῥῆσον οὐδ' Ἀχιλλεῖ φησιν ἀδάκρυτον ἔσε-
 σθαι, τῶν κοινῶν φανερωθ' θανάτῳ τὴν ἰδίαν παραμυ-
 θουμένη λύπην.

Τοῦτο τὸ δρᾶμα ἔνιοι νόθον ὑπενόησαν, Εὐριπί-
 δου δὲ μὴ εἶναι· τὸν γὰρ Σοφόκλειον μᾶλλον ὑποφαί-
 10 νειν χαρακτῆρα. ἐν μέντοι ταῖς διδασκαλίαις ὥς γνήσιον
 ἀναγέγραπται, καὶ ἡ περὶ τὰ μετάρσια δὲ ἐν αὐτῷ πολυ-
 πραγμοσύνη τὸν Εὐριπίδην ὁμολογεῖ.

Πρόλογοι δὲ διττοὶ φέρονται. ὁ γοῦν Δικαίαρχος
 ἐκτιθεὶς τὴν ὑπόθεσιν τοῦ Ῥήσου γράφει κατὰ λέξιν
 15 οὕτως·

Νῦν εὐσέληνον φέγγος ἡ διαφορήλατος.
 ἐν ἐνίοις δὲ τῶν ἀντιγράφων ἑτερός τις φέρεται πρόλο-
 γος, πεζὸς πάνυ καὶ οὐ πρόπων Εὐριπίδῃ· καὶ τάχα ἄν
 τινες τῶν ὑποκριτῶν διεσκευακότες εἶεν αὐτόν. ἔχει δὲ
 20 οὕτως·

ὦ τοῦ μεγίστου Ζηνὸς ἄλκιμον τέκος
 Παλλὰς, παρῶμεν· οὐκ ἐχρῆν ἡμᾶς ἔτι
 μέλλειν Ἀχαιῶν ὠφελεῖν στρατεύματα.
 νῦν γὰρ κακῶς πράσσουσιν ἐν μάχῃ δορός,
 25 λόγῃ βιαίως Ἑκτορος τροβοῦμενοι.
 ἔμοι γὰρ οὐδέν ἐστιν ἄλγιον βάρος,
 ἐξ οὗ γ' ἔκρινε Κύπριν Ἀλέξανδρος θεὰν
 κάλλει προήκειν τῆς ἐμῆς εὐμορφίας
 καὶ σῆς, Ἀθάνᾃ, φιλάτης ἔμοι θεῶν,
 30 εἰ μὴ κατασκαφεῖσαν ὄψομαι πόλιν
 Πριάμου βίᾃ πρόρριζον ἐκτετριμμένην.

ΑΡΙΣΤΟΦΑΝΟΥΣ ΥΠΟΘΕΣΙΣ.

Ῥῆσος μὲν ἦν Στρυμόνος τοῦ ποταμοῦ καὶ Τερψι-
 χόρης Μουσῶν μιᾷς παῖς, Θρακῶν δὲ ἡγούμενος εἰς
 Ἴλιον παραγίνεται νυκτός, στρατευομένων Τρώων παρὰ
 ταῖς ναυσὶ τῶν Ἑλλήνων. τοῦτον Ὀδυσσεὺς καὶ Διο-
 μήδης κατάσκοποι ὄντες ἀναιροῦσιν, Ἀθηνᾶς αὐτοῖς 5
 ὑποθεμένης· μέγαν γὰρ ἔσεσθαι τοῖς Ἑλλησι κίνδυνον
 ἐκ τούτου. Τερψιχόρη δὲ ἐπιφανεῖσα τὸ τοῦ παιδὸς
 σῶμα ἀνείλετο. [ὥς ἐν παρόδῳ δὲ διαλαμβάνει καὶ περὶ
 τοῦ φόνου τοῦ Δόλωνος.]

Ἡ σκηνὴ τοῦ δράματος ἐν Τροίᾳ. ὁ χορὸς συνέ- 10
 στηκεν ἐκ φυλάκων Τρωικῶν, οἳ καὶ προλογίζουσι.
 περιέχει δὲ τὴν νυκτεγερεσίαν.

ΕΥΡΥΠΙΔΟΥ

Ρ Η Σ Ο Σ.

- ΧΟ. Βᾶθι πρὸς εὐνάς
τὰς Ἑκτορέους τις ὑπασπιστῶν
ἄγρουπνος βασιλέως ἢ τευχοφόρων,
δέξαιτο νέων κληδόνα μύθων,
οἳ τετράμοιρον νυκτὸς φυλακὴν 5
πάσης στρατιᾶς προκάθηνται.
ὄρθου κεφαλὴν πῆχυν ἐρείσας,
λῦσον βλεφάρων γοργωπὸν ἔδραν,
λείπε χαμεύνας φυλλοστρώτους,
Ἑκτορ· καιρὸς γὰρ ἀκοῦσαι. 10
- ΕΚ. τίς ὄδ' ; ἢ φίλιος φθόγγος ; τίς ἀνὴρ ;
τί τὸ σῆμα θρόει·
τίνες ἐκ νυκτῶν τὰς ἀμετέρας
κοίτας πλάθουσ' ἐνέπειν χροή.
- ΧΟ. φύλακες στρατιᾶς. ΕΚ. τί φέρει θορύβῳ ; 15
- ΧΟ. θάρσει. ΕΚ. θαρσῶ.
μῶν τις λόχος ἐκ νυκτῶν ; ΧΟ. οὐκέτι.
- ΕΚ. τί σὺ γὰρ φυλακὰς προλιπὼν κινεῖς
στρατιάν ; τί ν' ἔχων νυκτηγορίαν ;
οὐκ οἶσθα δορὸς πέλας Ἀργείου 20
νυχίαν ἡμᾶς
κοίταν πανόπλους κατέχοντας ;

- ΧΟ. ὀπλίζου χεῖρα, συμμαχων,
 Ἔκτορ, βᾶθι πρὸς εὐνάς,
 ὅτρυνον ἐγγχος αἰείρειν, ἀφύπνισον,
 πέμπε φίλους ἰέναι ποτὶ σὸν λόχον,
 ἀρμόσατε ψαλίοις ἵππους.
 τίς εἶς' ἐπὶ Πανθοῖδαν,
 ἥ τὸν Εὐρώπας, Λυκίων ἀγὸν ἀνδρῶν;
 ποῦ σφαγίων ἔφοροι;
 ποῦ δὲ γυμνήτων μόναρχοι;
 τοξοφόροι δὲ Φρυγῶν
 ξεύγνυτε κερόδετα τόξα νευραῖς.
 ΕΚ. τὰ μὲν ἀγγέλλεις δείματ' ἀκούειν,
 τὰ δὲ θαρσύνεις, κούδεν καθαρῶς·
 ἀλλ' ἦ Κρονίου Πανὸς τρομερᾷ
 μάστιγι φοβεῖ; [φυλακὰς δὲ λιπὼν
 κινεῖς στρατιάν·] τί θροεῖς; τί σε φῶ
 νέον ἀγγέλλειν; πολλὰ γὰρ εἰπὼν
 οὐδὲν τρανῶς ἀπέδειξας.
 ΧΟ. πύρ' αἰθεῖ στρατὸς Ἀργόλας,
 Ἔκτορ, πᾶσαν ἂν' ὄρφναν,
 διυπετῇ δὲ νεῶν πυρσοῖς σταθμά.
 πᾶς δ' Ἀγαμεμνονίαν προσέβα στρατὸς
 ἐννύχιος θορύβῳ σκηνάν,
 νέαν τιν' ἐφιέμενοι
 βάξιν. οὐ γάρ πω πάρος ᾧδ' ἐφοβήθη
 ναυσιπόρος στρατιά.
 σοὶ δ', ὑποπτεύων τὸ μέλλον,
 ἦλυθον ἄγγελος, ὥς
 μήποτε τιν' ἐς ἐμὲ μέμψιν εἶπης.
 ΕΚ. εἰς καιρὸν ἦλθες, καίπερ ἀγγέλλων φόβον·
 ἄνδρες γὰρ ἐκ γῆς τῆσδε νυκτέρῳ πλάτῃ

λαθόντες ὄμμα τοῦμὸν αἵρεσθαι φυγὴν
 μέλλουσι· σαίνει μ' ἐννυχος φρυκτωρία. 55
 ὦ δαῖμον, ὅστις μ' εὐτυχοῦντ' ἐνόσφισας
 θοίνης λέοντα, πρὶν τὸν Ἀργείων στρατὸν
 σύρδην ἅπαντα τῷδ' ἀναλῶσαι δορί.
 εἰ γὰρ φαεννοὶ μὴ ξυνέσχον ἡλίου
 λαμπτήρες, οὐκ ἂν ἔσχον εὐτυχοῦν δόρυ, 60
 πρὶν ναῦς πυρῶσαι καὶ διὰ σκηνῶν μολεῖν
 κτείνων Ἀχαιοὺς τῇδε πολυφόνῳ χειρί.
 καὶ γὰρ μὲν ἦν πρόθυμος ἰέναι δόρυ
 ἐν νυκτὶ χοῆσθαί τ' εὐτυχεῖ ῥύμη θεοῦ·
 ἀλλ' οἱ σοφοί με καὶ τὸ θεῖον εἰδότες 65
 μάντεις ἔπεισαν ἡμέρας μεῖναι φάος,
 κἄπειτ' Ἀχαιῶν μηδέν' ἐν χέρσῳ λιπεῖν.
 οἱ δ' οὐ μένουσι τῶν ἐμῶν θυοσκόων
 βουλάς· ἐν ὄρφνῃ δραπέτης μέγα σθένει.
 ἀλλ' ὥς τάχιστα χοῆ παραγγέλλειν στρατῷ 70
 τεύχη πρόχειρα λαμβάνειν λῆξαι θ' ὕπνου,
 ὥς ἂν τις αὐτῶν καὶ νεῶς θρωσκῶν ἐπι
 νῶτον χαραχθεῖς κλίμακας ῥάνη φόνῳ,
 οἱ δ' ἐν βρόχοισι δέσμιοι λελημμένοι
 Φρυγῶν ἀρούρας ἐκμάθωσι γαπονεῖν. 75

XO. Ἐκτορ, ταχύνεις πρὶν μαθεῖν τὸ δρῶμενον·
 ἄνδρες γὰρ εἰ φεύγουσιν οὐκ ἴσμεν τορῶς.

EK. τίς γὰρ πύρ' αἰθεῖν πρόφασις Ἀργείων στρατόν;

XO. οὐκ οἶδ'· ὕποπτον δ' ἐστὶ κάρτ' ἐμῇ φρενί.

EK. πάντ' ἂν φοβηθεῖς ἴσθι, δειμαίνων τόδε. 80

XO. οὐπω πρὶν ἦψαν πολέμιοι τοσόνδε φῶς.

EK. οὐδ' ὧδέ γ' αἰσχυρῶς ἔπεσον ἐν τροπῇ δορός.

XO. σὺ ταῦτ' ἔπραξας· καὶ τὰ λοιπὰ νῦν σκόπει.

EK. ἀπλοῦς ἐπ' ἐχθροῖς μῦθος ὀπλίζειν χέρα.

- ΧΟ. καὶ μὴν ὄδ' Αἰνέας καὶ μάλα σπουδῇ ποδὸς 85
στείχει, νέον τι πρᾶγμ' ἔχων φίλοις φράσαι.
- ΑΙ. Ἐκτορ, τί χρῆμα νύκτεροι κατὰ στρατὸν
τὰς σὰς πρὸς εὐνὰς φύλακες ἔλθόντες φόβῳ
νυκτηγοροῦσι καὶ κεκίνηται στρατός;
- ΕΚ. Αἰνέα, πυκάζου τεύχεσιν δέμας σέθεν. 90
- ΑΙ. τί δ' ἔστι; μῶν τις πολεμίων ἀγγέλλεται
δόλος κρυφαῖος ἐστάναι κατ' εὐφρόνην;
- ΕΚ. φεύγουσιν ἄνδρες κάπιβαίνουσιν νεῶν.
- ΑΙ. τί τῶνδ' ἂν εἴποις ἀσφαλὲς τεκμήριον;
- ΕΚ. αἶθουσι πᾶσαν νύκτα λαμπάδας πυρός· 95
κάμοι δοκοῦσιν οὐ μενεῖν ἐς αὔριον,
ἀλλ' ἐκκέαντες πύρσ' ἐπ' εὐσέλμων νεῶν
φυγῇ πρὸς οἴκους τῇσδ' ἀφορμήσειν χθονός.
- ΑΙ. σὺ δ' ὥς τί δράσων πρὸς τὰδ' ὀπλίξει χέρα;
- ΕΚ. φεύγοντας αὐτοὺς κάπιθρώσκοντας νεῶν 100
λόγῃ καθεξῶ κάπικέισομαι βαρύς·
αἰσχροὺν γὰρ ἡμῖν καὶ πρὸς αἰσχύνη κακὸν
θεοῦ διδόντος πολεμίους ἄνευ μάχης
φεύγειν ἔᾶσαι πολλὰ δρᾶσαντας κακά.
- ΑΙ. εἴθ' ἦσθ' ἀνὴρ εὐβουλος, ὥς δρᾶσαι χερί. 105
ἀλλ' οὐ γὰρ αὐτὸς πάντ' ἐπίστασθαι βροτῶν
πέφυνκεν· ἄλλω δ' ἄλλο πρόσκειται γέρας,
σὲ μὲν μάχεσθαι, τοὺς δὲ βουλεύειν καλῶς.
ὅστις πυρὸς λαμπτήρας ἐξήρθη κλύων
φεύγειν Ἀχαιοὺς, καὶ στρατὸν μέλλεις ἄγειν 110
τάφρους ὑπερβὰς νυκτὸς ἐν καταστάσει.
καίτοι περάσας κοῖλον αὐλώνων βάθος,
εἰ μὴ κυρήσεις πολεμίους ἀπὸ χθονὸς
φεύγοντας, ἀλλὰ σὸν βλέποντας εἰς δόρυ,
νικώμενος μὲν τήνδε μὴ οὐ μόλῃς πόλιν· 115
πῶς γὰρ περάσεις σκόλοπας ἐν τροπῇ δορός;

- πῶς δ' αὖ γεφύρας διαβαλοῦσ' ἱππηλάται,
 ἦν ἄρα μὴ θραύσαντες ἀντύγων χνόας;
 νικῶν δ' ἔφειδρον παῖδ' ἔχεις τὸν Πηλέως,
 ὅς σ' οὐκ ἔάσει ναυσὶν ἐμβαλεῖν φλόγα 120
 οὐδ' ὦδ' Ἀχαιοὺς ὥς δοκεῖς ἀναρπάσαι.
 αἰθῶν γὰρ ἀνὴρ καὶ πεπύργωται θράσει.
 ἀλλὰ στρατὸν μὲν ἥσυχον παρ' ἀσπίδας
 εὔδειν ἐῷμεν ἐκ κόπων ἀρειφάτων,
 κατάσκοπον δὲ πολεμίων, ὅς ἂν θέλῃ, 125
 πέμπειν δοκεῖ μοι· καὶ μὲν αἴρωνται φυγὴν,
 στείχοντες ἐμπέσωμεν. Ἀργείων στρατῷ·
 εἰ δ' εἰς δόλον τιν' ἦδ' ἄγει φρυκτωρία,
 μαθόντες ἐχθρῶν μηχανὰς κατασκόπον
 βουλευσόμεσθα· τήνδ' ἔχω γνώμην ἐγώ. 130
- ΧΟ. τάδε δοκεῖ, τάδε μεταθέμενος νόει. στρ.
 σφαλερὰ δ' οὐ φιλῶ στρατηγῶν κράτη.
 τί γὰρ ἄμεινον ἢ
 ταχυβάταν νεῶν κατόπταν μολεῖν
 πέλας ὅ τί ποτ' ἄρα δαῖοις 135
 πυρὰ κατ' ἀντίπρῳρα ναυστάθμων δαίεται.
- ΕΚ. νικᾷτ', ἐπειδὴ πᾶσιν ἀνδάνει τάδε.
 στείχων δὲ κόσμει συμμάχους· τάχ' ἂν στρατὸς
 κινοῖτ' ἀκούσας νυκτέρους ἐκκλησίας.
 ἐγὼ δὲ πέμψω πολεμίων κατάσκοπον. 140
 καὶ μὲν τιν' ἐχθρῶν μηχανὴν πυθώμεθα,
 σὺ πάντ' ἀκούσει καὶ παρῶν εἴσει λόγους·
 ἐὰν δ' ἀπαίρωσ' εἰς φυγὴν ὀρμώμενοι,
 σάλπιγγος αὐδὴν προσδοκῶν καραδόκει,
 ὥς οὐ μενοῦντά μ'· ἀλλὰ προσμίξω νεῶν 145
 ὀλκοῖσι νυκτὸς τῆσδ' ἐπ' Ἀργείων στρατῷ.

- ΑΙ. πέμφ' ὥς τάχιστα· νῦν γὰρ ἀσφαλῶς φρονεῖς.
 σὺν σοὶ δ' ἔμ' ὄψει καρτεροῦνθ', ὅταν δέῃ.
- ΕΚ. τίς δῆτα Τρώων οἷ πάρεισιν ἐν λόχῳ
 θέλει κατόπτῃς ναῦς ἐπ' Ἀργείων μολεῖν; 150
 τίς ἂν γένοιτο τῆσδε γῆς εὐεργέτης;
 τίς φησιν; οὔτοι πάντ' ἐγὼ δυνήσομαι
 πόλει πατρώᾳ συμμαχοῖς θ' ὑπηρετεῖν.
- ΔΟ. ἐγὼ πρὸ γαίᾳς τόνδε κίνδυνον θέλω
 δίψας κατόπτῃς ναῦς ἐπ' Ἀργείων μολεῖν, 155
 καὶ πάντ' Ἀχαιῶν ἐκμαθὼν βουλευμάτων
 ἥξω· πλὶ τούτοις τόνδ' ὑφίσταμαι πόνον.
- ΕΚ. ἐπάνυμος μὲν κάρτα καὶ φιλόπολις
 Δόλων· πατρὸς δὲ καὶ πρὶν εὐκλεᾶ δόμον
 νῦν δις τόσῳ τέθεικας εὐκλεέστερον. 160
- ΔΟ. οὐκοῦν πονεῖν μὲν χρή, πονοῦντα δ' ἄξιον
 μισθὸν φέρεσθαι. παντὶ γὰρ προκείμενον
 κέρδος πρὸς ἔργῳ τὴν χάριν τίκτει διπλῆν.
- ΕΚ. ναί, καὶ δίκαια ταῦτα κοῦκ ἄλλως λέγω.
 τάξαι δὲ μισθὸν πλὴν ἐμὴν τυραννίδα. 165
- ΔΟ. οὐ σῆς ἐρῶμεν πολιοχου τυραννίδος.
- ΕΚ. σὺ δ' ἀλλὰ γήμας Πριαμιδῶν γαμβρὸς γενοῦ.
- ΔΟ. οὐκ ἐξ ἐμαντοῦ μειζόνων γαμεῖν θέλω.
- ΕΚ. χρυσὸς πάρεστιν, εἰ τόδ' αἰτήσῃ γέρας.
- ΔΟ. ἀλλ' ἔστ' ἐν οἴκοις· οὐ βίου σπανίζομεν. 170
- ΕΚ. τί δῆτα χρήξεις ὧν κέκευθεν Ἴλιος;
- ΔΟ. ἐλὼν Ἀχαιοὺς δῶρά μοι ξυναίνεσον.
- ΕΚ. δώσω· σὺ δ' αἶτει πλὴν στρατηλάτας νεῶν.
- ΔΟ. κτεῖν', οὗ σ' ἀπαιτῶ Μενέλεω σχέσθαι χέρα.
- ΕΚ. οὐ μὲν τὸν Ἰλέως παῖδά μ' ἐξαίτετ' λαβεῖν; 175
- ΔΟ. κακαὶ γεωργεῖν χεῖρες εὖ τεθραμμέναι.
- ΕΚ. τίν' οὖν Ἀχαιῶν ζῶντ' ἀποινᾶσθαι θέλεις;
- ΔΟ. καὶ πρόσθεν εἶπον· ἔστι χρυσὸς ἐν δόμοις.

- ΕΚ. καὶ μὴν λαφύρων γ' αὐτὸς αἰρήσει παρών.
ΔΟ. θεοῖσιν αὐτὰ πασδάλευε πρὸς δόμους. 180
- ΕΚ. τί δῆτα μείζον τῶνδ' ἐμ' αἰτήσῃ γέρας;
ΔΟ. ἵππους Ἀχιλλέως· χορὴ δ' ἐπ' ἀξίοις πονεῖν
ψυχὴν προβάλλοντ' ἐν κύβοις δαίμονος.
ΕΚ. καὶ μὴν ἐρῶντί γ' ἀντερῶς ἵππων ἐμοί·
ἐξ ἀφθίτων γὰρ ἀφθιτοὶ πεφυκότες 185
τὸν Πηλέως φέρουσι θούριον γόνον·
δίδωσι δ' αὐτοὺς πωλοδαμνήσας ἄναξ
Πηλεΐ Ποσειδῶν, ὥς λέγουσι, πόντιος.
ἀλλ' οὐ σ' ἐπάρας ψεύσομαι· δώσω δέ σοι
κάλλιστον οἴκοις κτήμ' Ἀχιλλέως ὄχον. 190
- ΔΟ. αἰνῶ· λαβὼν δέ φημι κάλλιστον Φρυγῶν
δῶρον δέχεσθαι τῆς ἐμῆς εὐσπλαγχνίας.
σὲ δ' οὐ φθονεῖν χρή· μυρὶ' ἔστιν ἄλλα σοί,
ἐφ' οἷσι τέρψει τῆσδ' ἀριστεύων χθονός.
ΧΟ. μέγας ἄγων, μεγάλα δ' ἐπινοεῖς ἐλεῖν· ἀντ. 195
μακάριός γε μὴν κυρήσας ἔσει.
πόνος ὅδ' εὐκλεής·
μέγα δὲ κοιράνοισι γαμβρὸν πέλειν.
τὰ θεόθεν ἐπιδέτω Δίκα,
τὰ δὲ παρ' ἀνδράσιν τέλειά σοι φαίνεται. 200
- ΔΟ. στείχοιμ' ἄν· ἐλθὼν ἐς δόμους ἐφέστιος
σκευῇ προπόντως σῶμ' ἐμὸν καθάψομαι,
κἀκεῖθεν ἦσω ναῦς ἐπ' Ἀργείων πόδα.
ΧΟ. εἴπ' εἴ τιν' ἄλλην ἀντὶ τῆσδ' ἔξεις στολήν.
ΔΟ. πρέπουσαν ἔργῳ κλωπικοῖς τε βήμασιν. 205
ΧΟ. σοφοῦ παρ' ἀνδρὸς χορὴ σοφόν τι μανθάνειν·
λέξον, τίς ἔσται τοῦδε σώματος σάγη;
ΔΟ. λύκειον ἀμφὶ νῶτον ἄψομαι δορὰν
καὶ χάσμα θηρὸς ἀμφ' ἐμῷ θήσω κάρα,
βάσιν τε χερσὶ προσθίαν καθαρμοῦσας 210

καὶ κῶλα κώλοις, τετράπουν μιμήσομαι
 λύκον κέλευθον πολεμίοις δυσεύρετον,
 τάφροις πελάζων καὶ νεῶν προβλήμασιν.
 ὅταν δ' ἔρημον χῶρον ἐμβαίνω ποδί,
 δίβαμος εἶμι· τῇδε σύγκειται δόλος. 215

ΧΟ. ἀλλ' εὖ σ' ὁ Μαίας παῖς ἐκεῖσε καὶ πάλιν
 πέμψειεν Ἑρμῆς, ὅς γε φηλητῶν ἄναξ.

ΔΟ. ἔχεις δὲ τοῦργον, εὐτυχεῖν μόνον σε χρή.
 σωθήσομαί τε καὶ κτανὼν Ὀδυσσέως
 οἴσω κάρα σοι, σύμβολον δ' ἔχων σαφές 220
 φήσεις Δόλωνα ναῦς ἐπ' Ἀργείων μολεῖν,
 ἢ παῖδα Τυδέως· οὐδ' ἀναιμάκτῳ χειρὶ
 ἦξω πρὸς οἴκους πρὶν φάος μολεῖν χθόνα.

ΧΟ. Θυμβραῖε καὶ Δάλιε καὶ Λυκίας στρ.
 ναὸν ἐμβατεύων, 225

Ἀπολλον, ὦ δία κεφαλά, μόλε τοξήρης, ἱκοῦ ἐν-
 νύχιος

καὶ γενοῦ σωτήριος ἀνέρι πομπᾶς
 ἄγεμὼν καὶ ξύλλαβε Δαρδανίδαις, 230

ὦ παγκρατές, ὦ Τροῖας
 τείχη παλαιὰ δειμάς.

μόλοι δὲ ναυκλήρια, καὶ στρατιᾶς ἀντ.

Ἑλλάδος διόπτας
 ἵκοιτο, καὶ κάμψειε πάλιν θυμέλας οἴκων πατρὸς
 Ἰλιάδας. 235

Φθιάδων δ' ἵππων ποτ' ἐπ' ἄντυγα βαίη,
 δεσπότην πέρσαντος Ἀχαιὸν Ἀρη,
 τὰς πόντιος Αἰακίδας 240

Πηλεῖ δίδωσι δαίμων.

ἐπεὶ πρό τ' οἴκων πρό τε γᾶς ἔτλα μόνος στρ.

224 — 232 = 233 — 241

242 — 252 = 253 — 263

- ναύσταθμα βὰς κατιδεῖν· ἄγαμαι
 λήματος· ἧ σπανία 245
 τῶν ἀγαθῶν, ὅταν ἧ
 δυσάλιον ἐν πελάγει καὶ σαλεύῃ
 πόλιν. ἔστι Φρυγῶν τις ἔστιν ἄλκιμος· 250
 ἐνὶ δὲ θράσος ἐν αἰχμᾷ· ποτὶ Μυσῶν, ὃς ἐμὴν
 συμμαχίαν ἀτίζει.
 τίν' ἄνδρ' Ἀχαιῶν ὁ πεδοστιβῆς σφαγεὺς ἀντ.
 οὐτάσει ἐν κλισίαις, τετράπουν 255
 μῆμον ἔχων ἐπὶ γᾶν
 θηρός; ἔλοι Μενέλαν,
 κτανὼν δ' Ἀγαμεμνόνιον κρᾶτ' ἐνέγκοι
 Ἑλένα κακόγαμβρον ἐς χέρας γόον, 260
 ὃς ἐπὶ πόλιν, ὃς ἐς γᾶν Τροῖαν χιλιόναυον ἦλυθ'
 ἔχων στρατείαν.
- ΑΓΓ. ἄναξ, τοιούτων δεσπότησιν ἄγγελος
 εἶην τὸ λοιπὸν οἷά σοι φέρω μαθεῖν. 265
- ΕΚ. ἧ πόλλ' ἀγρώσταις σκαιὰ πρόσκειται φρενί·
 καὶ γὰρ σὺ ποίμνας δεσπότης τελεσφόρους
 ἦκειν ἔοικας ἀγγελῶν ἵν' οὐ πρόπει.
 οὐκ οἶσθα δῶμα τοῦμὸν ἢ θρόνους πατρός,
 οἷ χρῆν γεγωνεῖν σ' εὐτυχοῦντα ποιμνίων; 270
- ΑΓΓ. σκαιοὶ βοτῆρές ἐσμεν· οὐκ ἄλλως λέγεις.
 ἄλλ' οὐδὲν ἥσόν σοι φέρω κεννοὺς λόγους.
- ΕΚ. παῦσαι λέγων μοι τὰς προσαυλείους τύχας·
 μάχας πρὸ χειρῶν καὶ δόρη βαστάζομεν.
- ΑΓΓ. τοιαῦτα κἀγὼ σημανῶν ἐλήλυθα· 275
 ἀνὴρ γὰρ ἀρχῆς μυρίας στρατηλατῶν
 στείχει φίλος σοὶ σύμμαχος τε τῇδε γῇ.
- ΕΚ. ποίας πατρώας γῆς ἐρημώσας πέδον;
- ΑΓΓ. Θρηῆκης· πατὴρ δὲ Στρυμόνος κικλήσκεται.
- ΕΚ. Ῥῆσον τιθέντ' ἔλεξας ἐν Τροίᾳ πόδα; 280

ΑΓΓ. ἔγνωσ· λόγον δὲ δις τόσου μ' ἐκούφισας.

ΕΚ. καὶ πῶς πρὸς Ἰδης ὀργάδας πορεύεται,
πλαγχθεὶς πλατείας πεδιάδος θ' ἀμαξίτου;

ΑΓΓ. οὐκ οἶδ' ἀκριβῶς, εἰκάσαι γε μὴν πάρα.
νυκτὸς γὰρ οὔτι φαῦλον ἐμβαλεῖν στρατόν, 285

κλύοντα πλήρη πεδία πολεμίας χερός.

φόβον δ' ἀγρώσταις, οἳ κατ' Ἰδαῖον λέπας
οἰκοῦμεν ἀντόρριζον ἐστίαν χθονός,
παρέσχε δρυμὸν νυκτὸς ἐνθηρον μολών. 290

πολλῇ γὰρ ἡχῇ Θρηῆκιος ῥέων στρατὸς
ἔστειχε· θάμβει δ' ἐκπλαγέντες ἔμεν

ποιίμνας πρὸς ἄκρας, μὴ τις Ἀργείων μόλη
λεηλατήσων καὶ σὰ πορθήσων σταθμά,
πρὶν δὴ δι' ὧτων γῆρυν οὐχ Ἑλληνικὴν
ἐδεξάμεσθα καὶ μετέστημεν φόβον. 295

στείχων δ' ἀνακτος προυξερευνητὰς ὁδοῦ
ἀνιστόρησα Θρηῆκίοις προσφθέγμασιν,

τίς ὁ στρατηγὸς καὶ τίνος κεκλημένος
στείχει πρὸς ἄστν Πριαμίδαισι σύμμαχος.

καὶ πάντ' ἀκούσας ὦν ἐφριέμην μαθεῖν, 300
ἔστην· ὁρῶ δὲ Ῥῆσον ὥστε δαίμονα

ἐστῶτ' ἐν ἱππείοισι Θρηῆκίοις ὄχοις.

χρυσῇ δὲ πλάστιγξ ἀνχένα ζυγηφόρον

πῶλων ἔκλῃε χιόνος ἐξαυγεστέρων.

πέλτῃ δ' ἐπ' ὦμων χρυσοκολλήτοις τύποις 305

ἔλαμπε· Γοργῶν δ' ὥς ἀπ' αἰγίδος θεᾶς

χαλκῇ μετώποις ἱππικοῖσι πρόσδετος

πολλοῖσι σὺν κώδωσιν, ἐκτύπει φόβον.

στρατοῦ δὲ πλῆθος οὐδ' ἂν ἐν ψήφου λόγῳ 310

θέσθαι δύναι' ἂν, ὥς ἄπλατον ἦν ἰδεῖν,

πολλοὶ μὲν ἱππεῖς, πολλὰ πελταστῶν τέλη,

πολλοὶ δ' ἀτράκτων τοξόται, πολὺς δ' ὄχλος

- γυμνῆς ὁμαρτῇ, Θρηκίαν ἔχων στολὴν.
 τοιόσδε Τροία σύμμαχος πάρεστ' ἀνὴρ,
 ὃν οὔτε φεύγων οὔθ' ὑποσταθεὶς δορὶ 315
 ὁ Πηλέως παῖς ἐκφυγεῖν δυνήσεται.
- ΧΟ. ὅταν πολίταις εὐσταθῶσι δαίμονες,
 ἔρπει κατάντης ξυμφορὰ πρὸς τὰγαθὰ.
- ΕΚ. πολλοὺς, ἐπειδὴ τοῦμὸν εὐτυχεῖ δόρυ
 καὶ Ζεὺς πρὸς ἡμῶν ἐστιν, εὐρήσω φίλους. 320
 ἀλλ' οὐδὲν αὐτῶν δεόμεθ', οἵτινες πάλαι
 μὴ ξυμπονοῦσιν, ἥνίκ' ἐξώστης Ἄρης
 ἔθραυε λαίφῃ τῇσδε γῆς μέγας πνέων.
 Ῥῆσος δ' ἔδειξεν οἶος ἦν Τροία φίλος·
 ἥκει γὰρ εἰς δαῖτ', οὐ παρῶν κυνηγέταις 325
 αἰρουῦσι λείαν οὐδὲ συγκαμῶν δορί.
- ΧΟ. ὀρθῶς ἀτίξεις ἀπίμομπος εἰ φίλοις·
 δέχου δὲ τοὺς θέλοντας ὠφελεῖν πόλιν.
- ΕΚ. ἀρκοῦμεν οἱ σῶζοντες Ἴλιον πάλαι.
- ΧΟ. πέποιθας ἤδη πολεμίους ἡρηνεῖν; 330
- ΕΚ. πέποιθα· δείξει τοῦπιὸν σέλας θεοῦ.
- ΧΟ. ὄρα τὸ μέλλον· πόλλ' ἀναστρέφει θεός.
- ΕΚ. μισῶ φίλοισιν ὕστερον βοηδρομεῖν.
 ὁ δ' οὖν ἐπέπερ ἦλθε, σύμμαχος μὲν οὔ,
 ξένος δὲ πρὸς τράπεξαν ἠκέτω ξένων· 336
 χάρις γὰρ αὐτῷ Πριαμίδων διώλετο.
- ΧΟ. ἄναξ, ἀπαθεῖν συμμάχους ἐπίφθονον. 334
- ΑΓΓ. φόβος γένοιτ' ἂν πολεμίους ὀφθεῖς μόνον. 335
- ΕΚ. σὺ τ' εὖ παραινεῖς καὶ σὺ καιρίως σκοπεῖς. 339
 ὁ χρυσοτευχῆς οὖν ὅδ' ἀγγέλου λόγῳ 340
 Ῥῆσος παρέσται τῇδε σύμμαχος χθονί.
- ΧΟ. Ἀδράστεια μὲν ἅ Διὸς παῖς 342
 εἰργοὶ στομάτων φθόρον· 350

στρ.

φράσω γὰρ δὴ ὅσον μοι
 ψυχᾷ προσφιλές ἐστὶν εἰπεῖν. 345

ἦκεις, ὦ ποταμοῦ παῖ,
 ἦκεις, ἐπλάθης Φρυγίαν πρὸς αὐλὰν
 ἀσπαστός, ἐπεὶ σε χρόνῳ
 Πιερίς μάτηρ ὅ τε καλλιγέφυ-
 ρος ποταμὸς πορεύει 350

Στρυμών, ὅς ποτε τᾷς μελωδοῦ
 Μούσας δι' ἀκηράτων
 δινηθεὶς ὑδροειδῆς
 κόλπων σὰν ἐφύτευσεν ἦβαν.

σύ μοι Ζεὺς ὁ φαναῖος 355
 ἦκεις διφρεύων βαλιαῖσι πώλοις.
 νῦν, ὦ πατρίς ὦ Φρυγία,
 ξὺν θεῷ νῦν σοι τὸν ἐλευθέριον
 Ζῆνα πάρεστιν εἰπεῖν.

ἄρά ποτ' αὐτίς ἅ παλαιὰ στρ. 360

Τροία τοὺς προπότας παναμερεύσει
 θιάσους ἐρώτων
 ψαλμοῖσι καὶ κυλίκων οἶνοπλανήτοις
 ἐπιθεξίαις ἀμίλλαις,
 κατὰ πόντον Ἀτρειδᾶν 365

Σπάρταν οἰχομένων Ἰλιάδος παρ' ἀκτᾶς;
 ὦ φίλος, εἶθε μοι
 σᾶ χειρὶ καὶ σῷ δορὶ πρά-
 ξας τάδ' ἐς οἶκον ἔλθοις.

ἐλθέ, φάνηθι, τὰν ζάχρυσον
 Πηλεΐδα προβαλοῦ κατ' ὄμμα πέλταν,
 δοχμίαν πεδαίρων
 σχιστὰν παρ' ἄντυγα, πώλους ἐρεθίζων
 δίβολόν τ' ἄκοντα πάλλων. 370

360 — 369 = 370 — 379

σὲ γὰρ οὐτίς ὑποστάς 375
 Ἄργείας ποτ' ἐν Ἑρας δαπέδοις χορεύσει·
 ἀλλὰ νιν ἄδε γὰ
 καταφθίμενον Θρηκὶ μόρφῳ
 φίλτατον ἄχθος οἶσει.
 ἰὼ ἰὼ. 380

μέγας ὦ βασιλεῦ, καλόν, ὦ Θρήκη,
 σκύμνον ἔθρεψας πολίαρχον ἰδεῖν.
 ἶδε χρυσόδετον σώματος ἀλκήν,
 κλύε καὶ κόμπους κωδωνοκρότους,
 παρὰ πορπάκων κελαδοῦντας. 385
 θεός, ὦ Τροία, θεὸς αὐτὸς Ἄρης,
 ὁ Στρυμόνιος πῶλος ἀοιδοῦ
 Μούσης ἥκων καταπνεῖ σε.

PH. χαῖρ', ἐσθλὸς ἐσθλοῦ παῖ, τύραννε τῆσδε γῆς,
 Ἑκτορ· παλαιᾷ σ' ἡμέρᾳ προσενέπω. 390
 χαίρω δέ σ' εὐτυχοῦντα καὶ προσήμενον
 πύργοισιν ἐχθρῶν· συγκατασκάψων δ' ἐγὼ
 τείχῃ πάρειμι καὶ νεῶν πρήσων σκάφη.

EK. παῖ τῆς μελῶδοῦ μητέρος Μουσῶν μιᾶς
 Θρηκὸς τε ποταμοῦ Στρυμόνος, φιλῶ λέγειν 395
 τάληθές ἀεὶ κοῦ διπλοῦς πέφυκ' ἀνὴρ.
 πάλαι πάλαι χρῆν τῇδε συγκάμνειν χθονὶ
 ἐλθόντα, καὶ μὴ τοῦπὶ σ' Ἀργείων ὑπο
 Τροίαν ἔᾶσαι πολεμίων πεσεῖν δορί.
 οὐ γάρ τι λέξεις ὥς ἄκλητος ὢν φίλοις
 οὐκ ἦλθες οὐδ' ἡμυνας οὐδ' ἐπεστράφης. 400
 τίς γάρ σε κῆρυξ ἢ γερουσία Φρυγῶν
 ἐλθοῦς ἀμύνειν οὐκ ἐπέσκηπεν πόλει;
 ποίων δὲ δώρων κόσμον οὐκ ἐπέμψαμεν;
 σὺ δ' ἐγγενὲς ὢν βάρβαρός τε βαρβάρου
 Ἑλλησιν ἡμᾶς προὔπιες τὸ σὸν μέρος. 405

καίτοι σε μικρᾶς ἐκ τυραννίδος μέγαν
 Θρηκῶν ἄνακτα τῇδ' ἔθηκ' ἐγὼ χερί,
 ὅτ' ἀμφὶ Πάργαιόν τε Παιόνων τε γῆν
 Θρηκῶν ἀρίστοις ἐμπεσὼν κατὰ στόμα
 ἔρρηξα πέλτην, σοὶ δὲ δουλώσας λεῶν 410
 παρέσχον· ὧν σὺ λακτίσας πολλὴν χάριν,
 φίλων νοσοῦντων ὕστερον βοηδρομεῖς.
 οἱ δ' οὐδὲν ἡμῖν ἐγγενεῖς πεφυκότες,
 πάλαι παρόντες, οἱ μὲν ἐν χωστοῖς τάφοις
 κεῖνται πεσόντες, πίστις οὐ σμικρὰ πόλει, 415
 οἱ δ' ἐν θ' ὅπλοισι καὶ παρ' ἱππέοις ὅχοις
 ψυχρὰν ἄησιν δίψιον τε πῦρ θεοῦ
 μένουσι καρτεροῦντες, οὐκ ἐν δεμνίοις
 πυκνὴν ἄμυστιν ὥς σὺ δεξιούμενοι.
 ταῦθ', ὥς ἂν εἰδῆς Ἑκτορ' ὄντ' ἐλεύθερον, 420
 καὶ μέμφομαί σοι καὶ λέγω κατ' ὄμμα σόν.

PH. τοιοῦτός εἰμι καὐτός, εὐθεῖαν λόγων
 τέμνων κέλευθον, κοῦ διπλοῦς πέφυκ' ἀνὴρ.
 ἐγὼ δὲ μεῖζον ἢ σὺ τῆσδ' ἀπὼν χθονὸς
 λύπη πρὸς ἥπαρ δυσφορῶν ἐτειρόμην· 425
 ἀλλ' ἀρχιτέρω γαῖά μοι, Σκύθης λεώς,
 μέλλοντι νόστον τὸν πρὸς Ἴλιον περᾶν
 ξυνῆψε πόλεμον· Εὐξένου δ' ἀφικόμην
 πόντου πρὸς ἀκτὰς, Θρηῖκα πορθμεύσας στρατόν.
 ἐνθ' αἵματηρὸς πέλανος εἰς γαῖαν Σκύθης 430
 ἦντλειῖτο λόγχῃ Θρηῖ τε συμμιγῆς φόνος.
 τοιάδε τοί μ' ἀπεῖργε συμφορὰ πέδον
 Τροίας ἰκέσθαι σύμμαχόν τέ σοι μολεῖν.
 ἐπεὶ δ' ἔπερσα, τῶνδ' ὀμηρεύσας τέκνα,
 τάξας ἔτειον δασμὸν εἰς δόμους φέρειν, 435
 ἥκω περάσας ναυσὶ πόντιον στόμα,
 τὰ δ' ἄλλα πεζὸς γῆς περῶν ὀρίσματα,

οὐχ ὥς σὺ κομπεῖς τὰς ἐμὰς ἀμύστιδας,
 οὐδ' ἐν ξαγχύσοις δώμασιν κοιμώμενος,
 ἀλλ' οἷα πόντον Θορήκιον φνυγήματα 440
 κρυσταλλόπηκτα Παίονάς τ' ἐπεξάρει,
 ξὺν τοῖσδ' ἄνπνος οἶδα τλὰς πορπάμασιν.
 ἀλλ' ὕστερον μὲν ἦλθον, ἐν καιρῷ δ' ὅμως·
 σὺ μὲν γὰρ ἤδη δέκατον αἰχμάξεις ἔτος
 κούδεν περαίνεις, ἡμέραν δ' ἐξ ἡμέρας 445
 ῥίπτεις κυβεύων τὸν πρὸς Ἀργείους Ἄρην·
 ἐμοὶ δὲ φῶς ἐν ἡλίου καταρκέσει
 πέρσαντι πύργους ναυστάθμοις ἐπεισπεσεῖν
 κτεῖναι τ' Ἀχαιοὺς· θατέρω δ' ἀπ' Ἰλίου
 πρὸς οἶκον εἶμι, συντεμῶν τοὺς σοὺς πόνους. 450
 ὑμῶν δὲ μή τις ἀσπίδ' ἄρῃται χερί·
 ἐγὼ γὰρ ἔξω τοὺς μέγ' αὐχοῦντας δορὶ
 πέρσας Ἀχαιοὺς, καίπερ ὕστερος μολών.

ΧΟ. ἰὼ ἰὼ.

στρ.

φίλα θροεῖς, φίλος Διόθεν εἶ· μόνον 455
 φθόνον ἄμαχον ὕπατος
 Ζεὺς ἐθέλοι τὸν ἀμφὶ
 σοῖσι λόγοισιν εἶργειν.
 τὸ δὲ νάιον Ἀργόθεν δόρυ
 οὔτε πρὶν τιν' οὔτε νῦν τιν' 460
 ἀνδρῶν ἐπόρευσε σέθεν κρείσσω. πῶς μοι
 Ἀχιλεὺς τὸ σὸν ἔγχος ἂν δύναιτο,
 πῶς δ' Αἴας ὑπομεῖναι;
 εἰ γὰρ ἐγὼ τόδ' ἤμαρ εἰσίδοιμ', ἄναξ,
 ὅτῳ πολυφόνου 465
 χειρὸς ἀποινάσαιο λόγχα.

ΡΗ. τοιαῦτα μὲν σοι τῆς μακροῆς ἀπουσίας
 προᾶξαι παρέξω· σὺν δ' Ἀδραστεία λέγω,

ἐπειδὴν ἐχθρῶν τήνδ' ἐλευθέραν πόλιν
 θῶμεν θεοῖσί τ' ἀκροθίνι' ἐξέλης, 470
 ξὺν σοὶ στρατεύειν γῆν ἐπ' Ἀργείων θέλω
 καὶ πᾶσαν ἐλθὼν Ἑλλάδ' ἐκπέρσαι δορί,
 ὥς ἂν μάθωσιν ἐν μέρει πάσχειν κακῶς.

EK. εἰ τοῦ παρόντος τοῦδ' ἀπαλλαχθεὶς κακοῦ
 πόλιν νεμοίμην ὥς τὸ πρὶν ποτ' ἀσφαλῆ, 475
 ἢ κάρτα πολλὴν θεοῖς ἂν εἰδείην χάριν.
 τὰ δ' ἀμφὶ τ' Ἄργος καὶ νομὸν τὸν Ἑλλάδος
 οὐχ ὧδε πορθεῖν ῥάδι', ὥς λέγεις, δορί.

PH. οὐ τοῦσδ' ἀριστεῖς φασιν Ἑλλήνων μολεῖν;
 EK. κοῦ μεμφόμεσθ' ἄ γ', ἀλλ' ἄδην ἐλαύνομεν. 480

PH. οὐκοῦν κτανόντες τοῦσδε πᾶν εἰργάσμεθα.

EK. μή νυν τὰ πόρρω τάγγύθεν μεθεὶς σκόπει.

PH. ἀρκεῖν ἔοικέ σοι παθεῖν, δρᾶσαι δὲ μή.

EK. πολλῆς γὰρ ἄρχω κἀνθάδ' ὦν τυραννίδος.
 ἀλλ' εἴτε λαιὸν εἴτε δεξιὸν κέρας, 485

εἴτ' ἐν μέσοισι συμμάχοις, πάρεστί σοι
 πέλτην ἑρεῖσαι καὶ καταστῆσαι στρατόν.

PH. μόνος μάχεσθαι πολεμίοις, Ἐκτορ, θέλω.
 εἰ δ' αἰσχρὸν ἦγεῖ μὴ συνεμπρῆσαι νεῶν
 πρύμνας, πονήσας τὸν πάρος πολὺν χρόνον, 490
 τάξον μ' Ἀχιλλέως καὶ στρατοῦ κατὰ στόμα.

EK. οὐκ ἔστ' ἐκείνῳ θοῦρον ἐντάξαι δόρυ.

PH. καὶ μὴν λόγος γ' ἦν ὥς ἔπλευσ' ἐπ' Ἴλιον.

EK. ἔπλευσε καὶ πάρεστιν· ἀλλὰ μηνίων
 στρατηλάταισιν οὐ συναίρεται δόρυ. 495

PH. τίς δὴ μετ' αὐτὸν ἄλλος εὐδοξεῖ στρατοῦ;

EK. Αἴας ἐμοὶ μὲν οὐδὲν ἡσσᾶσθαι δοκεῖ
 χῶ Τυδέως παῖς· ἔστι δ' αἰμυλώτατον
 κρότημ' Ὀδυσσεύς, λῆμά τ' ἀρκούντως θρασὺς
 καὶ πλεῖστα χώραν τήνδ' ἀνὴρ καθυβρίσας. 500

- ὅς εἰς Ἀθάνας σῆκόν ἔννυχος μολὼν
 κλέψας ἄγαλμα ναῦς ἐπ' Ἀργείων φέρει.
 ἦδη δ' ἀγύρτης πτωχικὴν ἔχων στολὴν
 εἰσῆλθε πύργους, πολλὰ δ' Ἀργείοις κακὰ
 ἤρᾱτο, πεμφθεὶς Ἰλίου κατάσκοπος· 505
 κτανὼν δὲ φρουροὺς καὶ παραστάτας πυλῶν
 ἐξῆλθεν· αἰεὶ δ' ἐν λόχοις εὐρίσκεται
 Θυμβραῖον ἀμφὶ βωμόν ἄστεως πέλας
 θάσσω· κακῷ δὲ μερμέρῳ παλαιομέν·
- PH. οὐδείς ἀνὴρ εὐψυχος ἀξιοῖ λάθρα 510
 κτεῖναι τὸν ἐχθρόν, ἀλλ' ἰὼν κατὰ στόμα.
 τοῦτον δ' ὃν ἵξειν φῆς σὺ κλωπικὰς ἔδρας
 καὶ μηχανᾶσθαι, ζῶντα συλλαβὼν ἐγὼ
 πυλῶν ἐπ' ἐξόδοισιν ἀμείρας ῥάχιν
 στήσω πετεινοῖς γυψὶ θοινατήριον. 515
 ληστήν γάρ ὄντα καὶ θεῶν ἀνάκτορα
 συλῶντα δεῖ νιν τῷδε καθανεῖν μόρῳ.
- EK. νῦν μὲν καταυλίσθητε· καὶ γὰρ εὐφρόνη·
 δείξω δ' ἐγὼ σοι χῶρον, ἔνθα χρὴ στρατὸν
 τὸν σὸν νυχεῦσαι τοῦ τεταγμένου δίχα. 520
 ξύνθημα δ' ἡμῖν Φοῖβος, ἦν τι καὶ δέη,
 μέμνησ' ἀκούσας Θορηκί τ' ἄγγελον στρατῷ.
 ὑμᾶς δὲ βάντας χρὴ προταινὶ τάξεων
 φρουρεῖν ἐγερτὶ καὶ νεῶν κατάσκοπον
 δέχθαι Δόλωνα· καὶ γὰρ εἶπερ ἔστι σῶς, 525
 ἦδη πελάζει στρατοπέδοισι Τρωικοῖς.
- XO. τίνος ἂ φυλακὰ; τίς ἀμείβει 530
 τὰν ἐμάν; πρῶτα
 δύεται σημεῖα καὶ ἐπτάποροι
 Πλειάδες αἰθέριαι·
 μέσα δ' αἰετὸς οὐρανοῦ ποτᾶται.

ἔγρεσθε, τί μέλλετε; κοιτᾶν
 ἔγρεσθε πρὸς φυλακάν.
 οὐ λεύσσετε μηνάδος αἶγλαν;
 ἄως δὴ πέλας ἄως
 γίγνεται, καὶ τις προδρομῶν
 ὅδε γ' ἐστὶν ἀστήρ.

535

ΗΜΙΧΟ. τίς ἐκηρύχθη πρώτην φυλακὴν;

* * * *

ΗΜ. Μυγδόνος ὄν φασι Κόροιβον.

ΗΜ. τίς γὰρ ἐπ' αὐτῷ; ΗΜ. Κίλικας Παίων
 στρατὸς ἡγείρεν. ΗΜ. Μυσοὶ δ' ἡμᾶς.

540

ΗΜ. οὐκοῦν Λυκίους πέμπτην φυλακὴν
 βάντας ἐγείρειν

καιρὸς κλήρου κατὰ μοῖραν.

545

ΧΟ. καὶ μὴν αἶω Σιμόεντος
 ἡμένα κοιτάς

ἀντ.

φοινίας ὕμνεϊ πολυχορδοτάτᾳ

γήρυϊ παιδολέτῳ

μελοποιὸς ἀηδονὶς μέριμνα·

550

ἤδη δὲ νέμουσι κατ' Ἴδαν

ποίμνια· νυκτιβρόμου

σύριγγος ἴαν κατακούω·

θέλγει δ' ὄμματος ἔδραν

ὕπνος· ἄδιστος γὰρ ἔβα

555

βλεφάροις πρὸς αὐτοῖς.

ΗΜ. τί ποτ' οὐ πελάθει σκοπός, ὃν ναῶν
 ἔκτωρ ὥτρυνε κατόπταν;

ΗΜ. ταρβῶ· χρόνιος γὰρ ἄπεστιν.

ΗΜ. ἀλλ' ἣ κρυπτὸν λόχον εἰσπαίσας

560

διόλωλε; τάχ' ἂν εἴη φοβερόν [μοι].

ΗΜ. αὐδῶ Λυκίους πέμπτην φυλακὴν

βάντας ἐγείρειν
 ἡμᾶς κλήρου κατὰ μοῖραν.

- ΟΔ. Διόμηδες, οὐκ ἤκουσας — ἢ κενὸς ψόφος 565
 στάξει δι' ὧτων; — τευχέων τινὰ κτύπον;
 ΔΙ. οὐκ, ἀλλὰ δεσμὰ πωλικῶν ἐξ ἀντύγων
 κλάζει σιδήρου· καμέ τοι, πρὶν ἡσθόμην
 δεσμῶν ἀραγμὸν ἱππικῶν, ἔδν φόβος.
 ΟΔ. ὄρα κατ' ὄρφνην μὴ φύλαξιν ἐντύχης. 570
 ΔΙ. φυλάξομαί τοι καὶν σκότῳ τιθεὶς πόδα.
 ΟΔ. ἦν δ' οὖν ἐγείρης, οἷσθα σύνθημα στρατοῦ;
 ΔΙ. Φοῖβον Δόλωνος οἶδα σύμβολον κλύων.
 ΟΔ. ἔα·
 εὐνὰς ἐρήμους τάσδε πολεμίων ὄρῳ.
 ΔΙ. καὶ μὴν Δόλων γε τάσδ' ἔφραζεν Ἑκτορος 575
 κοιτάς, ἐφ' ὧπερ ἔγχος εἴλκυσται τόδε.
 ΟΔ. τί δῆτ' ἂν εἴη; μῶν λόχος βέβηκέ ποι;
 ΔΙ. ἴσως ἐφ' ἡμῖν μηχανὴν στήσων τινά.
 ΟΔ. θρασὺς γὰρ Ἑκτωρ νῦν ἐπεὶ κρατεῖ, θρασύς.
 ΔΙ. τί δῆτ', Ὀδυσσεῦ, δρῶμεν; οὐ γὰρ εὕρομεν 580
 τὸν ἄνδρ' ἐν εὐναῖς, ἐλπίδων δ' ἡμάρτομεν.
 ΟΔ. στείχωμεν ὥς τάχιστα ναυστάθμων πέλας.
 σῶζει γὰρ αὐτὸν ὅστις εὐτυχῇ θεῶν
 τίθησιν· ἡμῖν δ' οὐ βιαστέον τύχην.
 ΔΙ. οὐκοῦν ἐπ' Αἰνέαν ἢ τὸν ἔχθιστον Φρυγῶν 585
 Πάριν μολόντε χρὴ καρατομεῖν ξίφει.
 ΟΔ. πῶς οὖν ἐν ὄρφνῃ πολεμίων ἀνὰ στρατὸν
 ζητῶν δυνήσκει τούσδ' ἀκινδύνως κτανεῖν;
 ΔΙ. αἰσχροὺν γε μέντοι ναῦς ἐπ' Ἀργείων μολεῖν,
 δρᾶσαντε μηδὲν πολεμίους νεώτερον. 590
 ΟΔ. πῶς δ' οὐ δέδρακας; οὐ κτανόντε ναυστάθμων
 κατάσκοπον Δόλωνα σῶζομεν τάδε

σκυλεύματ' ; ἢ πᾶν στρατόπεδον πέρσειν δοκεῖς ;
 πείθου, πάλιν στείχωμεν· εὐ δ' εἴη τυχεῖν.

ΑΘ. ποῖ δὴ λιπόντε Τρωικῶν ἐκ τάξεων 595

χωρεῖτε, λύπη καρδίαν δεδηγμένοι,
 εἰ μὴ κτανεῖν σφῶν Ἑκτορ' ἢ Πάριν θεὸς
 δίδωσιν; ἄνδρα δ' οὐ πέπυσθε σύμμαχον
 Τροίᾳ μολόντα Ῥῆσον οὐ φάυλῳ τρόπῳ ;

ὃς εἰ διοίσει νύκτα τήνδ' ἐς αὔριον, 600

οὔτ' ἂν σφ' Ἀχιλλέως οὔτ' ἂν Αἴαντος δόρου
 μὴ πάντα πέρσαι ναύσταθμ' Ἀργείων σχέθαι,
 τείχη κατασκάψαντα καὶ πυλῶν ἔσω

λόγχῃ πλατεῖαν εἰσδρομὴν ποιούμενον·

τοῦτον κατακτὰς πάντ' ἔχεις. τὰς δ' Ἑκτορος 605

εὐνὰς ἔασον καὶ καρατόμους σφαγὰς·

ἔσται γὰρ αὐτῷ θάνατος ἐξ ἄλλης χειρός.

ΟΔ. δέσποιν' Ἀθάνα, φθέγματος γὰρ ἡσθόμην

τοῦ σοῦ συνήθη γῆρυν· ἐν πόνοισι γὰρ

παροῦσ' ἀμύνεις τοῖς ἐμοῖς αἰεί ποτε· 610

τὸν ἄνδρα δ' ἡμῖν ποῦ κατεύνασται φράσον,

πόθεν τέτακται βαρβάρου στρατεύματος.

ΑΘ. ὃδ' ἐγγὺς ἦσται κοῦ συνήθροισται στρατῷ,

ἀλλ' ἐκτὸς αὐτὸν τάξεων κατεύνασεν

Ἑκτωρ, ἕως ἂν νυξ ἀμείψηται φάος. 615

πέλας δὲ πῶλοι Θρηκίων ἐξ ἁρμάτων

λευκαὶ δέδενται, διαπρεπεῖς ἐν εὐφρόνῃ·

στίλβουσι δ' ὥστε ποταμίου κύκνου πτερόν.

ταύτας κτανόντες δεσπότην κομίζετε,

κάλλιστον οἴκοις σκυῶν· οὐ γὰρ ἔσθ' ὅπου 620

τοιούνδ' ὄχημα χθὼν κέκενθε πωλικόν.

ΟΔ. Διόμηδες, ἢ σὺ κτεῖνε Θρήκιον λεῶν,

ἢ ἴμοι πάρες γε, σοὶ δὲ χορὴ πῶλων μέλειν.

ΔΙ. ἐγὼ φονεύσω, πωλοδαμνήσεις δὲ σύ.

- τρίβων γὰρ εἶ τὰ κομπὰ καὶ νοεῖν σοφός. 625
 χρὴ δ' ἄνδρα τάσσειν οὗ μάλιστ' ἂν ὠφελῇ.
 ΑΘ. καὶ μὴν καθ' ἡμᾶς τόνδ' Ἀλέξανδρον βλέπω
 στείχοντα, φυλάκων ἔκ τινος πεπυσμένον
 δόξας ἀσήμεους πολεμίων μεμβλωκότων.
 ΔΙ. πότερα σὺν ἄλλοις ἢ μόνος πορεύεται; 630
 ΑΘ. μόνος· πρὸς εὐνὰς δ', ὥς ἔοικεν, Ἑκτορος
 χωρεῖ, κατόπτας σημανῶν ἤκειν στρατοῦ.
 ΔΙ. οὐκ οὖν ὑπάρχειν τόνδε κατθανόντα χρὴ;
 ΑΘ. οὐκ ἂν δύναιο τοῦ πεπρωμένου πλέον.
 τοῦτον δὲ πρὸς σῆς χειρὸς οὐ θέμις θανεῖν. 635
 ἀλλ' ὥπερ ἤκεις μορσίμους φέρων σφαγὰς,
 τάχυν'· ἐγὼ δὲ τῷδε σύμμαχος Κύπρις
 δοκοῦσ' ἄρωγός ἐν πόνοις παραστατεῖν,
 σαθροῖς λόγοισιν ἐχθρὸν ἄνδρ' ἀμείψομαι.
 καὶ ταῦτ' ἐγὼ μὲν εἶπον· ὃν δὲ χρὴ παθεῖν, 640
 οὐκ οἶδεν οὐδ' ἤκουσεν ἐγγὺς ὦν λόγου.
 ΠΑ. σὲ τὸν στρατηγὸν καὶ κασίγνητον λέγω,
 Ἑκτορ, καθεύδεις; οὐκ ἐγείρεσθαί σ' ἐχρῆν;
 ἐχθρῶν τις ἡμῖν χρίμπτεται στρατεύματι,
 ἢ κλωπες ἄνδρες ἢ κατάσκοποί τινες. 645
 ΑΘ. θάρσει· φυλάσσει σ' ἥδε πρευμαμένης Κύπρις.
 μέλει δ' ὁ σός μοι πόλεμος, οὐδ' ἀμνημονῶ
 τιμῆς, ἐπαινῶ δ' εὖ παθοῦσα πρὸς σέθεν.
 καὶ νῦν ἐπ' εὐτυχοῦντι Τρωικῶ στρατῷ
 ἦκω πορεύουσ' ἄνδρα σοι μέγαν φίλον, 650
 τῆς ὑμνοποιοῦ παῖδα Θορήκιον θεᾶς
 Μούσης, πατὴρ δὲ Στρυμόνος κικλήσκεται.
 ΠΑ. αἰέ ποτ' εὖ φρονοῦσα τυγχάνεις πόλει
 καί μοι, μέγιστον δ' ἐν βίῳ κειμήλιον
 κρίνας σέ φημι τῇδε προσθέσθαι πόλει. 655
 ἦκω δ' ἀκούσας οὐ τορῶς, φήμη δέ τις

φύλαξιν ἐμπέπτωκεν ὥς κατάσκοποι
ἦκουσ' Ἀχαιῶν. χῶ μὲν οὐκ ἰδὼν λέγει,
ὃ δ' εἰσιδὼν μολόντας οὐκ ἔχει φράσαι,
ὧν οὐνεκ' εὐνὰς ἦλυθον πρὸς Ἑκτορος. 660

ΑΘ. μηδὲν φοβηθῆς· οὐδὲν ἐν στρατῷ νέον·
Ἑκτωρ δὲ φρουῶδος Θρηῖκα κοιμήσων στρατόν.

ΠΑ. σύ τοί με πείθεις, σοῖς δὲ πιστεύων λόγοις
τάξιν φυλάξων εἴμ' ἐλεύθερος φόβου.

ΑΘ. χώρει· μέλειν γὰρ πάντ' ἐμοὶ δόκει τὰ σά,
ὥστ' εὐτυχοῦντας συμμάχους ἐμοὺς ὄραῖν. 665

γνώσει δὲ καὶ σὺ τὴν ἐμὴν προθυμίαν.
ὕμᾱς δ' αὐτῷ τοὺς ἄγαν ἐρωμένους,
Λαερτίου παῖ, θηκτὰ κοιμίσαι ξίφη.

κεῖται γὰρ ἡμῖν Θρηῖκιος στρατηλάτης, 670

ἵπποι τ' ἔχονται, πολέμιοι δ' ἡσθημένοι
χωροῦσ' ἐφ' ὑμᾱς· ἀλλ' ὅσον τάχιστα χρὴ
φεύγειν πρὸς ὀλκοὺς ναυστάθμων. τί μέλλετε
σκηπτοῦ πῖόντος πολεμίων σῶσαι βίον;

ΧΟ. ἔα ἔα·

βάλε βάλε βάλε βάλε, 675

θένε θένε· τίς ὃδ' ἀνήρ;

λεύσσετε, τοῦτον αὐδῶ.

κλῶπες οἴτινες κατ' ὄρφνην

τόνδε κινοῦσι στρατόν.

δεῦρο δεῦρο πᾶς. 680

τούσδ' ἔχω καὶ τούσδ' ἔμαρψα.

τίς ὁ λόχος; πόθεν ἔβας; ποδαπὸς εἶ;

[ΟΔ. οὐ σε χρὴ εἰδέναι· θανεῖ γὰρ σήμερον δράσας
κακῶς.]

ΗΜ. οὐκ ἐρεῖς ξύνθημα, λόγχην πρὶν διὰ στέρονων μο-
λεῖν;

ΟΔ. ἴστω. θάρσει. ΗΜ. πέλας ἴθι. παῖε πᾶς. 685

ΗΜ. ἦ σὺ δὴ Ῥῆσον κατέκτας; ΟΔ. ἀλλὰ τὸν κτε-
νοῦντα σέ.

ΟΔ. ἴσχε πᾶς τις. ΗΜ. οὐ μὲν οὖν. ΟΔ. ᾗ, φίλιον
ἄνδρα μὴ θένῃς.

ΧΟ. καὶ τί δὴ τὸ σῆμα; ΟΔ. Φοῖβος. ΧΟ. ἔμαθον· ἴσχε
πᾶς δόρυ.

ΗΜ. οἶσθ' ὅποι βεβᾶσιν ἄνδρες; ΗΜ. τῇδ' ἐπη κατεί-
δομεν.

ΗΜ. ἔρπε πᾶς κατ' ἔχνος αὐτῶν, ἣ βοὴν ἐγερετόν. 690

ΗΜ. ἀλλὰ συμμάχους ταράσσειν δεινὸν ἐννύχῳ φόβῳ.

ΧΟ. τίς ἀνδρῶν ὁ βᾶς; στρ.

τίς δ' μέγα θράσος ἐπεύξεται,

χέρα φυγῶν ἐμάν;

πόθεν νιν κυρήσω;

695

τίνι προσεικάσω,

ὅστις δι' ὄρφνης ἦλθ' ἀδειμάντῳ ποδὶ

διὰ τε τάξεων καὶ φυλάκων ἔδρας;

Θεσσαλὸς ἦ

παραλίαν Λοκρῶν νερόμενος πόλιν;

700

ἦ νησιώτην σποράδα κέκτηται βίον;

τίς ἦν πόθεν ποίᾳς πάτρας;

ποῖον ἐπεύχεται τὸν ὕπατον θεῶν;

ΗΜ. ᾗρ' ἔστ' Ὀδυσσέως τοῦργον ἦ τίνος τόδε;

ΗΜ. εἰ τοῖς πάροιθε χρὴ τεκμαίρεσθαι, δοκεῖ. 705

ΗΜ. δοκεῖ γάρ;

ΗΜ. τί μὲν οὖν;

ΗΜ. θρασὺς γοῦν ἐς ἡμᾶς.

ΗΜ. τίν' ἀλκὴν; τίν' αἰνεῖς; ΗΜ. Ὀδυσσῆ.

ΗΜ. μὴ κλωπὸς αἶνει φωτὸς αἰμύλον δόρυ.

ΧΟ. ἔβα καὶ πάρος ἀντ. 710

κατὰ πόλιν, ὕπαφρον ὄμμ' ἔχων

ῥακοδύτη στολᾷ

πυκασθεῖς, ξιφήρης

κρύφιος ἐν πέπλοις.

βίον δ' ἐπαιτῶν εἶρπ' ἀγύρτης τις λάτρεις, 715

ψαφαρόχροον κάρα πουλυπινές τ' ἔχων·

πολλὰ δὲ τὰν

βασιλίδ' ἐστίαν Ἀτρειδᾶν κακῶς

ἔβαξε δῆθεν ἐχθρὸς ὢν στρατηλάταις.

ὅλοιτ' ὅλοιτο πανδίκως, 720

πρὶν ἐπὶ γὰν Φρυγῶν ποδὸς ἔχνος βαλεῖν.

HM. εἴτ' οὖν Ὀδυσσέως εἴτε μή, φόβος μ' ἔχει.

HM. Ἐκτωρ γὰρ ἡμῖν τοῖς φύλαξι μέμψεται.

HM. τί λάσκων; HM. δυσοίζων.

HM. τί δρᾶσαι; τί ταρβεῖς; 725

HM. καθ' ἡμᾶς περᾶσαι HM. τίν' ἀνδρῶν;

HM. οἱ τῆσδε νυκτὸς ἦλθον εἰς Φρυγῶν στρατόν.

HN. ἰώ, δαίμονος τύχα βαρεῖα. φεῦ φεῦ.

XO. ἔα· σίγα πᾶς.

ὕφρις· ἴσως γὰρ εἰς βόλον τις ἔρχεται. 730

HN. ἰὼ ἰώ,

συμφορὰ βαρεῖα Θρηκῶν. XO. συμμάχων τις ὁ
στένων;

HN. ἰώ.

δύστηνος ἐγὼ σύ τ', ἄναξ Θρηκῶν,

ὦ στρυγνοτάτην Τροίαν ἐσιδών·

οἶόν σε βίου τέλος εἶλεν. 735

XO. τίς εἶ ποτ' ἀνδρῶν συμμάχων; κατ' εὐφρόνην

ἀμβλῶπες αὐγαί, κοῦ σε γινώσκω τορῶς.

HN. ποῦ τιν' ἀνάκτων Τρωικῶν εὔρω;

ποῦ δῆθ' Ἐκτωρ

τὸν ὑπασπίδιον κοῖτον ἰάνει; 740

τίνι σημῆνω διόπων στρατιᾶς;

οἶα πεπόνθαμεν, οἶά τις ἡμᾶς

δράσας ἀφανῆ φροῦδος, φανερόν
Θρηξιν πένθος τολυπεύσας.

ΧΟ. κακὸν κυρεῖν τι Θρηκίῳ στρατεύματι 745
ἔοικεν, οἷα τοῦδε γιγνώσκω κλύων.

ΗΝ. ἔρρει στρατιά, πέπτωκεν ἄναξ
δολίῳ πληγῇ.

ᾶ ᾶ ᾶ ᾶ,

οἷα μ' ὀδύνη τείρει φονίου 750
τραύματος εἶσω. πῶς ἂν ὀλοίμην.

χοῖν γάρ μ' ἀκλεῶς Ῥῆσόν τε θανεῖν,
Τροία κέλσαντ' ἐπίκουρον;

ΧΟ. τάδ' οὐκ ἐν αἰνιγμοῖσι σημαίνει κακά· 755
σαφῶς γὰρ αὐδᾶ συμμάχους ὀλωλότας.

ΗΝ. κακῶς πέπρακται ἅπλ' τοῖς κακοῖσι πρὸς
αἰσχιστα· καίτοι δις τόσον κακὸν τόδε·
θανεῖν γὰρ εὐκλεῶς μὲν, εἰ θανεῖν χρεῶν,
λυπρὸν μὲν οἶμαι τῷ θανόντι· πῶς γὰρ οὐ;
τοῖς ζῶσι δ' ὄγκος καὶ δόμων εὐδοξία. 760

ἡμεῖς δ' ἀβούλως ἀκλεῶς ὀλώλαμεν.
ἐπεὶ γὰρ ἡμᾶς εὐνας Ἐκτόρεια χεῖρ,
ξύνθημα λέξας, εὐδομεν πεδοστιβεῖς,
κόπῳ δαμέντες, οὐδ' ἐφρουρεῖτο στρατὸς
φυλακαῖσι νυκτέροισιν, οὐδ' ἐν τάξεσιν 765

ἔκειτο τεύχη, πληκτρά τ' οὐκ ἐπὶ ζυγοῖς
ἵππων καθήρμοςθ', ὥς ἄναξ ἐπεύθετο
κρατοῦντας ὑμᾶς ἀφεδρεύοντας νεῶν
πρύμναισι· φαύλως δ' εὐδομεν πεπτωκότες.
ἀγῶ μελουσῇ καρδίᾳ λήξας ὕπνου 770

πῶλοισι χόρτον, προσδοκῶν ἐωθινήν
ξεύξειν ἐς ἀλκήν, ἀφθόνῳ μετρῶ χερί.
λεύσσω δὲ φῶτε περιπολοῦνθ' ἡμῶν στρατὸν
πυκνῆς δι' ὄρφνης· ὥς δ' ἐκινήθην ἐγώ,

ἐπτηξάτην τε κἀνεχωρείτην πάλιν· 775

ἦπνυσα δ' αὐτοῖς μὴ πελάζεσθαι στρατῷ,
κλῶπας δοκήσας συμμάχων πλάθειν τινάς.
οἱ δ' οὐδέν· οὐ μὴν οἶδ' ἐγὼ τὰ πλείονα,
εὖδον δ' ἀπελθὼν αὖθις εἰς κοίτην πάλιν.
καί μοι καθ' ὕπνον δόξα τις παρίσταται· 780

ἵππους γὰρ ἄς ἔθρεψα κἀδιφρηλάτουν
Ῥήσῳ παρεστώς, εἶδον, ὥς ὄναρ δοκῶν,
λύκους ἐπεμβεβῶτας ἐδραΐαν ῥάχιν·
θεΐνουντε δ' οὐρᾷ πωλικῆς ῥινοῦ τρίχα,
ἦλαννον, αἱ δ' ἔρρεγκον ἐξ ἀντηριδῶν 785
θυμὸν πνέουσαι κἀνεχαίτιζον φόβῳ.
ἐγὼ δ' ἀμύνων θῆρας ἐξεγείρομαι
πῶλοισιν· ἔννυχος γὰρ ἐξώρμα φόβος.

κλύω δ' ἐπάρας κραῖτα μυχθισμὸν νεκρῶν.
θερμὸς δὲ κρουνὸς δεσπότου παρὰ σφαγαῖς 790
βάλλει με δυσθνητοῦντος αἵματος νέου.
ὀρθὸς δ' ἀνᾶσσω χειρὶ σὺν κενῇ δορός.
καὶ μ' ἔγχος ἀνγάζοντα καὶ θηρώμενον
παίει παραστὰς νεῖραν εἰς πλευρὰν ξίφει
ἀνὴρ ἀκμάζων· φασγάνου γὰρ ἡσθόμην 795
πληγὴν, βαθεῖαν ἄλοκα τραύματος λαβών.
πίπτω δὲ προηνῆς· οἱ δ' ὄχημα πωλικὸν
λαβόντες ἵππων ἴεσαν φυγῇ πόδα.

ᾠ ᾠ.

ὀδύνη με τείρει, κοῦκέτ' ὀρθοῦμαι τάλας.
καὶ ξυμφορὰν μὲν οἶδ' ὀρῶν, τρόπῳ δ' ὅτῳ 800
τεθνηῶσιν οἱ θανόντες οὐκ ἔχω φράσαι,
οὐδ' ἐξ ὁποίας χειρός. εἰκάσαι δέ μοι
πάρεστι λυπρὰ πρὸς φίλων πεπονθέναι.

ΧΟ. ἡνίοχε Θρηκὸς τοῦ κακῶς πεπραγότος,
μηδὲν δύσοιξ' οὐ πολεμίους δρᾶσαι τάδε. 805

- Ἐκτῶρ δὲ καὐτὸς συμφορᾷς πεπυσμένος
χωρεῖ· συναλγεῖ δ', ὥς ἔοικε, σοῖς κακοῖς.
- EK. πῶς οἱ μέγιστα πῆματ' ἐξειργασμένοι
μολόντες ὑμᾶς πολεμίων κατάσκοποι
λήθουσιν αἰσχροῦς, καὶ κατεσφάγη στρατός, 810
κοῦτ' εἰσιόντας στρατόπεδ' ἐξαπώσατε
οὔτ' ἐξιόντας; τῶνδε τίς δώσει δίκην
πλὴν σοῦ; σὲ γὰρ δὴ φύλακά φημ' εἶναι στρατοῦ.
φροῦδοι δ' ἄπληκτοι, τῇ Φρυγῶν κακανδρίᾳ
πόλλ' ἐγγελῶντες τῷ στρατηλάτῃ τ' ἐμοί. 815
εὖ νυν τόδ' ἴστε, Ζεὺς ὁμώμοται πατὴρ,
ἦτοι μάραννά γ' ἢ καραμιστῆς μόρος
μένει σε δρωῶντα τοιάδ', ἢ τὸν Ἐκτορα
τὸ μῆδ' εἶναι καὶ κακὸν νομίζετε.
- XO. ἰὼ ἰώ, 820
μέγα σύ μοι μέγ' ὦ πολίοχον κράτος·
τότ' ἔρ' ἔμολον, ὅτε σοι
ἄγγελος ἦλθον, ἀμφὶ
ναυσὶ πύρ' αἰθεῖν Ἀργείων [στρατόν],
ἐπεὶ ἄγρουπνον ὅμ' ἐν εὐφρόνῃ 825
οὔτ' ἐκοίμισ' οὔτ' ἐβριξεν,
οὐ τὰς Σιμοεντιάδας πηγὰς· μή μοι
κότον, ὦ ἄνα, θῆς· ἀναίτιος γὰρ
ἔγωγε πάντων.
ἦν δὲ χρόνῳ παράκαιρον ἔργον ἢ λόγον 830
πύθῃ, κατὰ με γὰρ
ζῶντα πόρευσον· οὐ παραιτοῦμαι.
- HN. τί τοῖσδ' ἀπειλεῖς, βάρβαρός τε βαρβάρου
γνώμην ὑφαιρεῖ τὴν ἐμήν, πλέκων λόγους;
σὺ ταῦτ' ἔδρασας· οὐδέν' ἂν δεξαίμεθα 835
οὔθ' οἱ παθόντες οὔτ' ἂν οἱ τετρωμένοι
ἄλλον· μακροῦ γε δεῖ σε καὶ σοφοῦ λόγου,

- ὅτῳ με πείσεις μὴ φίλους κατακτανεῖν,
 ἵππων ἐρασθεῖς, ὧν ἕκατι συμμάχους
 τοὺς σοὺς φονεύεις, πόλλ' ἐπισκῆπτων μολεῖν.
 ἦλθον, τεθναῖσιν· εὐπρεπέστερον Πάρις 841
 ξενίαν κατήσχυν' ἢ σὺ συμμάχους κτανῶν.
 μὴ γάρ τι λέξης ὥς τις Ἀργείων μολῶν
 διώλεσ' ἡμᾶς· τίς δ' ὑπερβαλὼν λόχους
 Τρώων ἐφ' ἡμᾶς ἦλθεν, ὥστε καὶ λαθεῖν; 845
 σὺ πρόσθεν ἡμῶν ἦσο καὶ Φρυγῶν στρατός.
 τίς οὖν τέτρωται, τίς τέθνηκε συμμάχων
 τῶν σῶν, μολόντων ὡς σὺ πολεμίων λέγεις;
 ἡμεῖς δὲ καὶ τετρώμεθ', οἱ δὲ μειζόνως
 παθόντες οὐχ ὀρῶσιν ἡλίου φάος. 850
 ἀπλῶς δ' Ἀχαιῶν οὐδέν' αἰτιώμεθα.
 τίς δ' ἂν χαμεύνας πολεμίων κατ' εὐφρόνην
 Ῥήσου μολὼν ἐξεῦρεν, εἰ μὴ τις θεῶν
 ἔφραξε τοῖς κτανοῦσιν; οὐδ' ἀφιγμένον
 τὸ πάμπαν ἦσαν· ἀλλὰ μηχανᾷ τάδε. 855
 ΕΚ. χρόνον μὲν ἤδη συμμάχοισι χρώμεθα
 ὅσον περ ἐν γῇ τῇδ' Ἀχαιικὸς λεώς,
 κούδεν πρὸς αὐτῶν οἶδα πλημμελὲς κλύων·
 ἐν σοὶ δ' ἄρ' ἀρχώμεσθα; μὴ μ' ἔρως ἔλοι
 τοιοῦτος ἵππων ὥστ' ἀποκτείνειν φίλους. 860
 καὶ ταῦτ' Ὀδυσσεύς· τίς γὰρ ἄλλος ἂν ποτε
 ἔδρασεν ἢ βούλευσεν Ἀργείων ἀνῆρ;
 δέδοικα δ' αὐτὸν καὶ τί μου θράσσει φρένας,
 μὴ καὶ Δόλωνα συντηχῶν κατακτάνῃ·
 χρόνον γὰρ ἤδη φροῦδος ὦν οὐ φαίνεται. 865
 ΗΝ. οὐκ οἶδα τοὺς σοὺς οὓς λέγεις Ὀδυσσέας·
 ἡμεῖς δ' ὑπ' ἐχθρῶν οὐδενὸς πεπλήγμεθα.
 ΕΚ. σὺ δ' οὖν νόμιζε ταῦτ', ἐπέπερ σοι δοκεῖ.
 ΗΝ. ὦ γαῖα πατρίς, πῶς ἂν ἐνθάνοιμί σοι.

- EK. μὴ θνήσχ'· ἄλλῃς γὰρ τῶν τεθνηκότων ὄχλος. 870
 HN. ποῖ δὴ τράπωμαι δεσποτῶν μονούμενος;
 EK. οἷκός σε κεύθων οὐμὸς ἐξιάσεται.
 HN. καὶ πῶς με κηδεύουσιν ἀνθεντῶν χέρες;
 EK. ὅδ' αὖ τὸν αὐτὸν μῦθον οὐ λήξει λέγων.
 HN. ὅλοιθ' ὁ δράσας. οὐ γὰρ εἰς σὲ τείνεται 875
 γλῶσσο', ὥς σὺ κομπεῖς· ἡ Δίκη δ' ἐπίσταται.
 EK. λάξυσθ' ἄγοντες αὐτὸν εἰς δόμους ἐμούς,
 οὕτως ὅπως ἂν μὴ ῥγκαλῇ πορσύνετε·
 ὑμᾶς δ' ἰόντας τοῖσιν ἐν τείχει χρεῶν
 Πριάμῳ τε καὶ γέρουσι σημήναι νεκροὺς 880
 θάπτειν κελεύειν λεωφόρου πρὸς ἐκτροπᾶς.
 XO. τί ποτ' εὐτυχίας ἐκ τῆς μεγάλης
 Τροίαν ἀνάγει πάλιν εἰς πένθος
 θαίμων ἄλλος, τί φυτεύων;
 ἔα ἔα. ὦ ὦ.
 τίς ὑπὲρ κεφαλῆς θεός, ὦ βασιλεῦ,
 τὸν νεόδμητον νεκρὸν ἐν χειροῖν
 φορᾶδην πέμπει;
 ταρβῶ λεύσσω τὸδε πῆμα.
 ΜΟΥ. ὄρᾱν πάρεστι, Τρῶες· ἡ γὰρ ἐν σοφοῖς 890
 τιμὰς ἔχουσα Μοῦσα συγγρόνων μία
 πάρειμι, παῖδα τόνδ' ὄρῶσ' οἰκτρῶς φίλον
 θανόνθ' ὑπ' ἐχθρῶν· ὃν ποθ' ὁ κτείνας χρόνῳ
 δόλιος Ὀδυσσεὺς ἀξίαν τίσει δίκην.
 ἱαλέμῳ ἀνθυγενεῖ 895
 τέκνον σ' ὀλοφύρομαι, ὦ
 ματρὸς ἄλγος, οἶαν
 ἔκελσας ὁδὸν ποτὶ Τροίαν,
 ἧ δυσδαίμονα καὶ μελέαν,

ἀπὸ μεμψαμένηας ἐμοῦ πορευθεῖς, 900
 ἀπὸ δ' ἀντομένου πατρὸς βιαίως.
 ὦμοι ἐγὼ σέθεν, ὦ φίλῖα
 φίλῖα κεφαλὰ, τέκνον, ὦμοι.

ΧΟ. ὅσον προσήκει μὴ γένους κοινωνίαν 905
 ἔχοντι, λύπη τὸν σὸν οἰκτεῖρω γόνον.

ΜΟΥ. ὅλοιτο μὲν Οἰνεΐδας, ἀντ.

ὅλοιτο δὲ Λαρτιάδας,
 ὅς μ' ἄπαιδα γέννας
 ἔθηκεν ἀριστοτόκοιο·
 ἅ θ' Ἑλένα προλιποῦσα δόμον 910

Φρυγίων λεχέων ἐπλευσε πλαθεῖς·
 ὑπ' Ἰλίῳ ὤλεσε μὲν [σέ] κατὰ Τροίας,
 φίλτατε, μυριάδας τε πόλεις
 ἀνδρῶν ἀγαθῶν ἐκένωσεν.
 ἦ πολλὰ μὲν ζῶν, πολλὰ δ' εἰς Αἶδον μολών, 915

Φιλάμμονος παῖ, τῆς ἐμῆς ἥψω φρενός·
 ὕβρις γάρ, ἥ σ' ἔσφηλε, καὶ Μουσῶν ἔρις
 τεκεῖν μ' ἔθηκε τόνδε δύστηνον γόνον.
 περῶσα γάρ δὴ ποταμίους διὰ ῥοὰς
 λέκτροις ἐπλάθην Στρυμόνος φυταλμίους, 920
 ὅτ' ἦλθομεν γῆς χρυσόβωλον εἰς λέπας
 Πάργαιον ὀργάνοισιν ἐξησκημέναι

Μοῦσαι μεγίστην εἰς ἔριν μελωδίας
 κλεινῷ σοφιστῇ Θρηκί, κἀτυφλώσαμεν
 Θάμυριν, ὃς ἡμῶν πόλλ' ἐδέυνασεν τέχνην. 925
 κἀπὲι σὲ τίκτω, συγγόνους αἰδουμένη
 καὶ παρθενείαν, ἥκ' ἐς εὐύδρου πατρὸς
 δίνας· τρέφειν δέ σ' οὐ βρότειαν ἐς χέρα
 Στρυμῶν δίδωσιν, ἀλλὰ πηγαίαις κόραις.
 ἔνθ' ἐκτραφεῖς κάλλιστα παρθένων ὕπο, 930

- Θρήκης ἀνάσσω· πρῶτος ἦσθ' ἀνδρῶν, τέκνον.
 καί σ' ἀμφὶ γῆν μὲν πατρίαν φιλαϊμάτους
 ἀλκὰς κορύσσοντ' οὐκ ἐδείμεινον θανεῖν·
 Τροίας δ' ἀπηύδων ἄστρ' μὴ κέλσαι ποτέ,
 εἰδυῖα τὸν σὸν πότμον· ἀλλὰ σ' Ἑκτορος 935
 πρὸς βεβύμαθ' αἶ τε μυρῖαι γερούσιαι
 ἔπεισαν ἐλθεῖν ἀπικουρῆσαι φίλοις.
 καὶ τοῦδ' Ἀθάν' παντὸς αἰτία μόρου,
 οὐδὲν δ' Ὀδυσσεὺς οὐδ' ὁ Τυδέως τόκος
 ἔδρασε δράσας· μὴ δόκει λεληθέναι. 940
 καί τοι πόλιν σὴν σύγγονοι πρὸς βεβύμεν
 Μοῦσαι μάλιστα ἀπικουρώμεθα χθονί,
 μυστηρίων τε τῶν ἀπορρήτων φανὰς
 ἔδειξεν Ὀρφεύς, αὐτανέψιος νεκροῦ
 τοῦδ' ὃν κατακτείνεις σύ· Μουσαῖόν τε σὸν 945
 σεμνὸν πολίτην ἀπὶ πλεῖστον ἄνδρ' ἔνα
 ἐλθόντα, Φοῖβος σύγγονοί τ' ἠσκήσαμεν.
 καὶ τῶνδε μισθὸν παῖδ' ἔχουσ' ἐν ἀγκάλαις
 θορηνῶ· σοφιστὴν δ' ἄλλον οὐκ ἐπάξομαι.
 ΧΟ. μάτην ἄρ' ἡμᾶς Θρήκιος τροχηλάτης 950
 ἐδέυννασ', Ἑκτορ, τῶνδε βουλευῆσαι φόνον.
 ΕΚ. ἤδη τάδ' οὐδὲν μάντεως ἔδει φράσαι
 Ὀδυσσεὺς τέχναισι τόνδ' ὀλωλότα.
 ἐγὼ δὲ γῆς ἔφεδρον Ἑλλήνων στρατὸν
 λεύσσω, τί μὲν ἔμελλον οὐ πέμψειν φίλοις 955
 κήρυκας, ἐλθεῖν ἀπικουρῆσαι χθονί;
 ἔπεμψ' ὀφείλων δ' ἦλθε συμπονεῖν ἐμοί.
 οὐ μὲν θανόντι γ' οὐδαμῶς συνήδομαι.
 καὶ νῦν ἔτοιμος τῶνδε καὶ τεῦξαι τάφον
 καὶ ξυμπυρῶσαι μυρῖων πέπλων χλιδὴν· 960
 φίλος γὰρ ἐλθὼν δυστυχῶς ἀπέρχεται.

- ΜΟΥ.** οὐκ εἶσι γαίᾳς εἰς μελάγχμιον πέδον·
 τοσούνδε Νύμφην τὴν ἔνερθ' αἰτήσομαι
 τῆς καρποποιοῦ παῖδα Δήμητρος θεᾶς,
 ψυχὴν ἀνεῖναι τοῦδ'· ὀφειλέτις δέ μοι 965
 τοὺς Ὀρφέως τιμῶσα φαίνεσθαι φίλους.
 καί μοι μὲν ὥς θανῶν τε κοῦ λεύσσω φάος
 ἔσται τὸ λοιπόν· οὐ γὰρ ἐς ταῦτόν ποτε
 οὔτ' εἶσιν οὔτε μητρὸς ὄψεται δέμας,
 κρυπτός δ' ἐν ἄντροις τῆς ὑπαργύρου χθονὸς 970
 ἀνθρωποδαίμων κείσεται βλέπων φάος,
 Βάκχου προφήτης ὥστε Παργαίου πέτραν
 ὦκησε σεμνὸς τοῖσιν εἰδόσιν θεός.
 ῥᾶον δὲ πένθος τῆς θαλασσίας θεοῦ
 οἶσω· θανεῖν γὰρ καὶ τὸν ἐκ κείνης χρεῶν. 975
 θρήνοις δ' ἀδελφαὶ πρῶτα μὲν σ' ὑμνήσομεν,
 ἔπειτ' Ἀχιλλέα Θέτιδος ἐν πένθει ποτέ.
 οὐ ρύσεται νιν Παλλὰς, ἥ σ' ἀπέκτανε·
 τοῖον φαρέτρα Λοξίου σώζει βέλος.
 ὦ παιδοποιοὶ συμφοραί, πόνοι βροτῶν, 980
 ὥς ὅστις ὑμᾶς μὴ κακῶς λογίζεται,
 ἅπαις διοίσει κοῦ τεκῶν θάψει τέκνα.
- ΧΟ.** οὗτος μὲν ἤδη μητρὶ κηδεύειν μέλει·
 σὺ δ' εἴ τι πράσσειν τῶν προκειμένων θέλεις,
 Ἴκτορ, πάρεστι· φῶς γὰρ ἡμέρας τόδε. 985
- ΕΚ.** χωρεῖτε, συμμάχους δ' ὀπλίξεσθαι τάχος
 ἄνωχθε πληροῦν τ' αὐχένας ξυνωρίδων.
 πανοὺς δ' ἔχοντας χρὴ μένειν Τυρσηνικῆς
 σάλπιγγος ἀνδρῶν· ὥς ὑπερβαλὼν στρατὸν
 τείχη τ' Ἀχαιῶν ναυσὶν αἶθρον ἐμβαλεῖν 990
 πέποιθα Τρῳσὶ θ' ἡμέραν ἐλευθέραν
 ἀκτινα τὴν στείχουσαν ἡλίου φέρειν.

ΧΟ. πείθου βασιλεῦ· στείλωμεν ὅπλοις
κοσμησάμενοι καὶ ξυμμαχίᾳ
τάδε φράζωμεν· τάχα δ' ἂν νίκην
δοίῃ δαίμων ὁ μεθ' ἡμῶν.

ΤΡΩΙΑΔΕΣ.

ΤΑ ΤΟΥ ΔΡΑΜΑΤΟΣ ΠΡΟΣΩΠΑ.

ΠΟΣΕΙΔΩΝ.

ΑΘΗΝΑ.

ΕΚΑΒΗ.

ΧΟΡΟΣ ΑΙΧΜΑΛΩΤΙΔΩΝ ΤΡΩΙΑΔΩΝ.

ΤΑΛΘΥΒΙΟΣ.

ΚΑΣΑΝΔΡΑ.

ΑΝΔΡΟΜΑΧΗ.

ΜΕΝΕΛΑΟΣ.

ΕΛΕΝΗ.

Τ Π Ο Θ Ε Σ Ι Σ.

*Μ*ετὰ τὴν Ἰλίου πόρθησιν ἔδοξεν Ἀθηνᾶ τε καὶ Πο-
σειδῶνι τὸ τῶν Ἀχαιῶν στράτευμα διαφθεῖραι, τοῦ
μὲν εὐνοοῦντος τῇ πόλει διὰ τὴν κτίσιν, τῆς δὲ μι-
σησάσης τοὺς Ἕλληνας διὰ τὴν Αἴαντος εἰς Κασάνδραν
ὔβριν. οἱ δὲ Ἕλληνες κληρωσάμενοι περὶ τῶν αἵμα- 5
λώτων γυναικῶν τὰς ἐν ἀξιώμασιν ἔδωκαν Ἀγαμέ-
μνονι μὲν Κασάνδραν, Ἀνδρομάχην δὲ Νεοπτολέμῳ,
Πολυξένην δὲ [τῷ] Ἀχιλλεῖ. ταύτην μὲν οὖν ἐπὶ τοῦ
τοῦ Ἀχιλλέως τάφου κατέσφαξαν, Ἀστύνακτα δὲ τὸν
τοῦ Ἑκτορος ἀπὸ τῶν τειχέων ἔρριψαν, Ἑλένην δὲ ὥς 10
ἀποκτενῶν Μενέλαος ἤγαγεν, Ἀγαμέμνων δὲ τὴν
χρησμῶδὸν ἐνυμφαγώγησεν. Ἑκάβη δὲ τῆς μὲν Ἑλέ-
νης κατηγορήσασα, τοὺς ἀναιρεθέντας δὲ κατοδυ-
ραμένη τε καὶ θρηνήσασα καὶ κηδεύσασα, πρὸς τὰς
Ὀδυσσέως ἦχθη σκηνᾶς, τούτῳ λατρεύειν δοθεῖσα. 15

ΕΥΡΥΠΙΔΟΥ
Τ Ρ Ω Ι Α Δ Ε Σ.

ΠΟ. Ἦκω λιπὼν Αἴγαιον ἄλμυρόν βάθος
 πόντου Ποσειδῶν, ἔνθα Νηρηίδων χοροὶ
 κάλλιστον ἔχρος ἐξελίσσουσιν ποδός.
 ἐξ οὗ γὰρ ἀμφὶ τήνδε Τρωικὴν χθόνα
 Φοῖβός τε καὶ γὰρ λαῖνους πύργους πέριξ 5
 ὀρθοῖσιν ἔθεμεν κανόσιν, οὗ ποτ' ἐκ φρενῶν
 εὖ νοί' ἀπέστη τῶν ἐμῶν Φρυγῶν πόλει,
 ἣ νῦν καπνοῦται καὶ πρὸς Ἀργείου δορός
 ὄλωλε πορθηθεῖς. ὁ γὰρ Παρνάσιος
 Φωκεὺς Ἐπειὸς μηχαναῖσι Παλλάδος 10
 ἐγκύμον' ἵππον τευχέων συναρμόσας
 πύργων ἐπεμψεν ἐντὸς ὀλέθριον βρέτας·
 ὅθεν πρὸς ἀνδρῶν ὑστέρων κεκλήσεται
 δούρειος ἵππος, κρυπτὸν ἀμπισχὼν δόρυ.
 ἔρημα δ' ἄλση καὶ θεῶν ἀνάκτορα 15
 φόνῳ καταρρεῖ· πρὸς δὲ κρηπίδων βάθροις
 πέπτωκε Πρίαμος Ζηνὸς Ἐρκείου θανών.
 πολὺς δὲ χρυσὸς Φρύγιά τε σκυλεύματα
 πρὸς ναῦς Ἀχαιῶν πέμπεται· μένουσι δὲ
 πρύμνηθεν οὖρον, ὥς δεκασπόρῳ χρόνῳ 20
 ἀλόχους τε καὶ τέκν' εἰσίδωσιν ἄσμενοι,
 οἳ τήνδ' ἐπεστράτευσαν Ἑλληνες πόλιν.

- ἐγὼ δέ, νικῶμαι γὰρ Ἀργείας θεῶς
 Ἦρας Ἀθάνας θ', αἰὲν συνεξεῖλον Φρύγας,
 λείπω τὸ κλεινὸν Ἴλιον βωμούς τ' ἐμούς· 25
 ἐρημία γὰρ πόλιν ὅταν λάβῃ κακή,
 νοσεῖ τὰ τῶν θεῶν οὐδὲ τιμᾶσθαι θέλει.
 πολλοῖς δὲ κωκυτοῖσιν αἰχμαλωτίδων
 βοᾷ Σκάμανδρος δεσπότης κληρουμένων.
 καὶ τὰς μὲν Ἀρκάς, τὰς δὲ Θεσσαλὸς λεῶς 30
 εἶληχ' Ἀθηναίων τε Θησεῖδαι πρόμοι.
 ὅσαι δ' ἄκληροι Τρωάδων, ὑπὸ στέγαις
 ταῖσδ' εἰσὶ τοῖς πρώτοισιν ἐξηρημέναι
 στρατοῦ, σὺν αὐταῖς δ' ἡ Λάκαινα Τυνδαρὶς
 Ἑλένη, νομισθεῖσ' αἰχμάλωτος ἐνδίκως. 35
 τὴν δ' ἀθλίαν τήνδ' εἴ τις εἰσορᾷν θέλει,
 πάρεστιν, Ἑκάβην κειμένην πυλῶν πάρος,
 δάκρυα χέουσαν πολλὰ καὶ πολλῶν ὑπερ·
 ἧ παῖς μὲν ἀμφὶ μνημ' Ἀχιλλεῖου τάφου
 λάθρα τέθνηκε τλημόνως Πολυξένη, 40
 φροῦδος δὲ Πρίαμος καὶ τέκν'· ἦν δὲ παρθένον
 μεθ' ἧκ' Ἀπόλλων δρομάδα Κασάνδραν ἄναξ,
 τὸ τοῦ θεοῦ τε παραλιπὼν τό τ' εὖσεβὲς
 γαμεῖ βιαίως σκότιον Ἀγαμέμνων λέχος.
 ἀλλ' ὦ ποτ' εὐτυχοῦσα, χαῖρέ μοι, πόλις 45
 ξεστονὸν τε πύργωμ'· εἴ σε μὴ διώλεσε
 Παλλὰς Διὸς παῖς, ἧσθ' ἂν ἐν βάθροισι ἔτι.
- ΑΘ. ἔξεστι τὸν γένει μὲν ἄγχιστον πατρὸς
 μέγαν τε daίμον' ἐν θεοῖς τε τίμιον
 λύσασαν ἔχθραν τὴν πάρος προσεννέπειν; 50
- ΠΟ. ἔξεστιν· αἱ γὰρ συγγενεῖς ὁμιλίας,
 ἄνασθ' Ἀθάνα, φίλτρον οὐ σμικρὸν φρενῶν.
- ΑΘ. ἐπήνεσ' ὀργὰς ἡπίους· φέρω δὲ σοὶ
 κοινούς ἐμαντῇ τ' εἰς μέσον λόγους, ἄναξ.

- ΠΟ. μῶν ἐκ θεῶν του καινὸν ἀγγελεῖς ἔπος, 55
 ἢ Ζηνὸς ἢ καὶ δαιμόνων τινὸς πάρα;
 ΑΘ. οὐκ, ἀλλὰ Τροίας οὔνεκ', ἐνθα βαίνομεν,
 πρὸς σὴν ἀφῖγμαι δύναμιν, ὥς κοινὴν λάβω.
 ΠΟ. ἢ ποὺ νιν ἔχθραν τὴν πρὶν ἐκβαλοῦσα νῦν
 εἰς οἶκτον ἤλθες πυρὶ κατηθαλωμένης; 60
 ΑΘ. ἐκεῖσε πρῶτ' ἄνελθε· κοινώσει λόγους
 καὶ συνθελήσεις ἂν ἐγὼ πρᾶξι θέλω;
 ΠΟ. μάλιστ'· ἀτὰρ δὴ καὶ τὸ σὸν θέλω μαθεῖν·
 πότερον Ἀχαιῶν ἤλθες οὔνεκ' ἢ Φρυγῶν;
 ΑΘ. τοὺς μὲν πρὶν ἐχθροὺς Τρῶας εὐφραῖναι θέλω, 65
 στρατῷ δ' Ἀχαιῶν νόστον ἐμβαλεῖν πικρόν.
 ΠΟ. τί δ' ὥδε πηδᾶς ἄλλοτ' εἰς ἄλλους τρόπους
 μισεῖς τε λῖαν καὶ φιλεῖς ὃν ἂν τύχῃς;
 ΑΘ. οὐκ οἶσθ' ὑβρισθεῖσάν με καὶ ναοὺς ἐμούς;
 ΠΟ. οἶδ', ἥνίκ' Αἴας εἶλκε Κασάνδραν βίᾳ. 70
 ΑΘ. κούδ' ἐν Ἀχαιῶν ἔπαθεν οὐδ' ἦκουσ' ὕπο.
 ΠΟ. καὶ μὴν ἔπερσάν γ' Ἴλιον τῷ σῷ σθένει.
 ΑΘ. τοιγάρ σφε σὺν σοὶ βούλομαι δρᾶσαι κακῶς.
 ΠΟ. ἔτοιμ' ἂ βούλει τὰπ' ἐμοῦ. δράσεις δὲ τί;
 ΑΘ. δύστηνον αὐτοῖς νόστον ἐμβαλεῖν θέλω. 75
 ΠΟ. ἐν γῇ μενόντων ἢ καθ' ἄλμυρὰν ἅλα;
 ΑΘ. ὅταν πρὸς οἴκους ναυστολῶς ἀπ' Ἰλίου.
 καὶ Ζεὺς μὲν ὄμβρον καὶ χάλαζαν ἄσπετον
 πέμψει γνωφώδη τ' αἰθέρος φυσήματα,
 ἐμοὶ δὲ δώσειν φησὶ πῦρ κεραύνιον, 80
 βάλλειν Ἀχαιοὺς ναῦς τε πιμπράναι πυρί.
 σὺ δ' αὖ τὸ σὸν παράσχεις Αἴγαιον πόρον
 τρικυμiais βρέμοντα καὶ δίναις ἁλός,
 πληῆσον δὲ νεκρῶν κοῖλον Εὐβοίας μυχόν,
 ὥς ἂν τὸ λοιπὸν τᾶμ' ἀνάκτορ' εὐσεβεῖν 85
 εἰδῶς Ἀχαιοὶ θεοὺς τε τοὺς ἄλλους σέβειν.

ΠΟ. ἔσται τὰδ' ἢ χάρις γὰρ οὐ μακρῶν λόγων
 δεῖται· ταράξω πέλαγος Αἰγαίας ἁλός.
 ἄκται δὲ Μυκόνου Δῆλιοί τε χοιράδες
 Σκυρὸς τε Αἰμυνὸς θ' αἰ Καφῆρειοί τ' ἄκραι 90
 πολλῶν θανόντων σῶμαθ' ἔξουσιν νεκρῶν.
 ἀλλ' ἔρπ' Ὀλυμπον καὶ κεραινίους βολὰς
 λαβοῦσα πατρὸς ἐκ χειρῶν καραδόκει,
 ὅταν στράτευμ' Ἀργεῖον ἐξίῃ κάλως.
 μῶρος δὲ θνητῶν ὅστις ἐμπορθεῖ πόλεις, 95
 ναοὺς τε τύμβους θ', ἱερὰ τῶν κεκμηκότων,
 ἐρημιά δοὺς αὐτὸς ὦλεθ' ὕστερον.

ΕΚ. ἄνα δύσδαιμον πεδόθεν κεφαλὴν,
 ἐπάειρε δέρην· οὐκέτι Τροία
 τάδε καὶ βασιλεῖς ἐσμεν Τροίας. 100
 μεταβαλλομένου δαίμονος ἀνέχου.
 πλεῖ κατὰ πορθμὸν, πλεῖ κατὰ δαίμονα,
 μηδὲ προσίστω προῦσαν βιότου
 πρὸς κῆμα πλέουσα τύχαισιν.
 αἰαῖ αἰαῖ. 105
 τί γὰρ οὐ πάρα μοι μελέα στενάχειν,
 ἧ πατρὶς ἔρρει καὶ τέκνα καὶ πόσις;
 ὦ πολὺς ὄγκος συστελλόμενος
 προγόνων, ὥς οὐδὲν ἄρ' ἦσθα.
 τί με χρή σιγᾶν; τί δὲ μὴ σιγᾶν; 110
 τί δὲ θρηνηῆσαι;
 δύστηνος ἐγὼ τῆς βαρυδαίμονος
 ἄρθρων κλίσεως, ὥς διάκειμαι,
 νῶτ' ἐν στεροῦς λέκτροισι ταθεῖς'.
 οἴμοι κεφαλῆς, οἴμοι κροτάφων 115
 πλευρῶν θ', ὥς μοι πόθος εἰλίξαι
 καὶ διαδοῦναι νῶτον ἄκανθάν τ'
 εἰς ἀμφοτέρους τοίχους μελέων

ἐπὶ τοὺς αἰὲ δακρύων ἐλέγους.
 μοῦσα δὲ καὐτῇ τοῖς δυστήνοισι 120
 ἄτας κελαδεῖν ἀχορεύτους.
 προῶραι ναῶν ὠκεῖαι,
 Ἴλιον ἱερὸν αἰὲ κώπαις
 δι' ἄλλα πορφυροειδέα καὶ λιμένας
 Ἑλλάδος εὐόρμους 125
 αὐλῶν παιᾶνι στυγνῶ
 συρίγγων τ' εὐφθόγγων φωναῖς
 βαίνουσαι πλεκτὰν Αἰγύπτου
 παιδείαν ἐξηροτήσασθ',
 αἰαῖ, Τροίας ἐν κόλποις 130
 τὰν Μενελάου μετανισσόμεναι
 στυγνὰν ἄλοχον, Κάστορι λῶβαν
 τῶ τ' Εὐρώτῃ δυσκλείαν,
 αἰ σφάζει μὲν
 τὸν πεντήκοντ' ἀροτῆρα τέκνων 135
 Πριάμον, ἐμέ τε μελέαν Ἑκάβαν
 εἰς τάνδ' ἐξώκειλ' ἄταν.
 ὦμοι θάκους οἴους θάσσω
 σκηναῖς ἔφεδρος Ἀγαμεμνονίαις.
 δούλα δ' ἄρομαι γραῦς ἐξ οἴκων, 140
 κουρᾷ ξυρήκει πενθήρει
 κρᾶτ' ἐκπορθηθεῖς οἰκτρῶς.
 ἀλλ' ὦ τῶν χαλκεγχεῶν Τρώων
 ἄλοχοι μέλεια καὶ [κόραι] δύσνυμφοι
 τύφεται Ἴλιον, αἰάζωμεν· 145
 μάτηρ δ' ὥσει πτανοῖς κλαγγὰν
 ὄρνισιν ὅπως ἐξάρξω ἔγω
 μολπὰν οὐ τὰν αὐτὰν
 οἶαν ποτὲ δῆ
 σκήπτρῳ Πριάμου διερειδομένα 150

ποδὸς ἀρχεχόρου πλαγαῖς Φρυγίαις
εὐκόμποις ἐξῆρχον θεοῦς.

ΗΜΙΧ. Ἐκάβη, τί θροεῖς; τί δὲ θωῦσσεῖς; στρ.

ποῖ λόγος ἦκει; διὰ γὰρ μελάθρων
ἄιον οἴκτους οὖς οἰκτίζει. 155

διὰ δὲ στέρνων φόβος αἰσσει
Τρωάσιν, αἰ τῶνδ' οἴκων εἶσω
δουλείαν αἰάζουσιν.

ΕΚ. [ῶ] τέκν', Ἀργείων πρὸς ναῦς ἤδη
κινεῖται κωπήρης χεῖρ. 160

ΗΜΙΧ. οἷ γὰρ τλάμων, τί θέλουσ'; ἦ πού μ' ἤδη
ναυσθλώσουσιν πατρῶας ἐκ γᾶς;

ΕΚ. οὐκ οἶδ', εἰκάζω δ' ἄταν.

ΗΜΙΧ. ἰὼ ἰὼ.

μέλει μοχθῶν ἐπακουσόμεναι 165
Τρωάδες, ἔξω κομίσασθ' οἴκων·
στελλουσ' Ἀργεῖοι νόστον.

ΕΚ. ἔ ἔ.

μή νύν μοι τὰν 170
ἐμβακχεύουσαν Κασάνδραν
πέμψητ' ἔξω,
αἰσχύναν Ἀργεῖοισιν,
μαινάδ', ἐπ' ἄλγει δ' ἀλγυνθῶ.
ἰὼ

Τροία Τροία δύσταν', ἔρρεῖς,
δύστανοι δ' οἷ σ' ἐκλείποντες
καὶ ζῶντες καὶ δμαθέντες. 175

ΗΜΙΧ. οἷμοι. τρομερὰ σκηναὺς ἔλιπον 180
τάσδ' Ἀγαμέμνονος ἐπακουσομένα,
βασίλεια, σέθεν, μή με κτείνειν
δοξ' Ἀργείων κεῖται μελέαν,

- ἢ κατὰ πρύμνας ἤδη ναῦται
στέλλονται κινεῖν κώπας. 180
- EK. ὦ τέκνον, ὀρθρεύου σὰν ψυχάν,
ἐκπληχθεῖς ἦλθον φρίκα.
- HMIX. ἤδη τις ἔβα Δαναῶν κῆρυξ;
τῷ πρόσκειμαι δούλα τλάμων; 185
- EK. ἐγγύς που κεῖσθαι κλήρου.
- HMIX. ἰὼ ἰὼ.
τίς μ' Ἀργείων ἢ Φθιωτῶν
ἢ νησαίαν μ' ἄξει χώραν
δύστανον πόρσω Τροίας;
- EK. φεῦ φεῦ.
τῷ δ' ἅ τλάμων 190
ποῦ πᾶ γαίης δουλεύσω γραῦς,
ὥς κηφήν, ἅ
δειλαία νεκροῦ μορφή,
νεκύων ἀμενηνὸν ἄγαλμα, ἢ
τὰν παρὰ προθύροις φυλακὰν κατέχουσ'
ἢ παίδων θρόεπτειρ', ἃ Τροίας 195
ἀρχαγούς εἶχον τιμᾶς;
- XO. αἰαῖ αἰαῖ. ποίοις δ' οἴκοις στρ.
τὰν σὰν λύμαν ἐξαιάξεις·
οὐκ Ἰδαίοις ἰστοῖς κερκίδα
δινεύουσ' ἐξαλλάξω. 200
νέατον τεκέων σώματα λεύσσω,
νέατον· μόχθους ἔξω κρείσσους,
ἢ λέκτροις πλαθεῖς Ἑλλάνων·
ἔρροι νύξ αὐτὰ καὶ δαίμων·
ἢ Πειρήνας ὑδρευσομένα 205
πρόπολος σεμνῶν ὑδάτων ἔσομαι.
τὰν κλεινὰν εἶθ' ἔλθοιμεν

- Θησέως εὐδαίμονα χώραν.
 μὴ γὰρ δὴ δίναν γ' Εὐρώτα, 210
 τὰν ἐχθίσταν θεράπναν Ἑλένας,
 ἔνθ' ἀντάσω Μενέλα δούλα,
 τῷ τᾶς Τροίας πορθητᾷ.
 τὰν Πηνειοῦ σεμνὰν χώραν, 215
 κρηπιδ' Οὐλύμπου καλλίσταν,
 ὄλβῳ βροίθειν φάμαν ἥκουσ'
 εὐθαλεῖ τ' εὐκαρπεία·
 τάδε δεύτερά μοι μετὰ τὰν ἱερὰν
 Θησέως ξαθῆαν ἐλθεῖν χώραν.
 καὶ τὰν Αἰτναίαν Ἡφαίστου 220
 Φοινίκας ἀντήρη χώραν,
 Σικελῶν ὀρέων ματέρ', ἀκούω
 κηρύσσεσθαι στεφάνοις ἀρετᾶς.
 τὰν τ' ἀγχιστεύουσαν γᾶν
 Ἴονίῳ ναύταις πόντῳ, 225
 ἂν ὑγραίνει καλλιστεύων
 ὁ ξανθὰν χαίταν πυρσαίνων
 Κροῶτις ξαθῆαις παγαῖσι τρέφων
 εὐανδρόν τ' ὀλβίζων γᾶν.
 καὶ μὴν Δαναῶν ὅδ' ἀπὸ στρατιᾶς 230
 κῆρυξ νεοχμῶν μύθων ταμίας
 στείχει ταχύπουν ἶχνος ἐξανύων.
 τί φέρει; τί λέρει; δοῦλαι γὰρ δὴ
 Δωριδὸς ἐσμέν χθονὸς ἥδη.
 ΤΑ. Ἐκάβη, πυκνὰς γὰρ οἶσθ' αὖ εἰς Τροίαν ὁδοὺς
 ἐλθόντα κῆρυκ' ἐξ Ἀχαϊκοῦ στρατοῦ, 236
 ἐγνωσμένος δὲ καὶ πάροιθέ σοι, γύναι,
 Ταλθύβιος ἦκω καινὸν ἀγγελῶν λόγον.
 ΕΚ. τόδε τόδε, φίλαι γυναῖκες, ὃ φόβος ἦν πάλαι.
 ΤΑ. ἥδη κεκλήρωσθ', εἰ τόδ' ἦν ὑμῖν φόβος. 240

- ΕΚ. αἰαῖ, τίν' ἢ Θεσσαλίας πόλιν ἢ
Φθιάδος εἶπας ἢ Καδμείας χθονός;
- ΤΑ. κατ' ἄνδρ' ἐκάστη κοῦχ' ὁμοῦ λελόγγατε.
- ΕΚ. τίν' ἄρα τίς ἔλαχε; τίνα πότμος εὐτυχῆς
Ἰλιάδων μένει; 245
- ΤΑ. οἶδ'· ἀλλ' ἕκαστα πυνθάνου, μὴ πάνθ' ὁμοῦ.
- ΕΚ. τοῦμὸν τίς τίς ἔλαχε τέκος, ἔννεπε,
τλάμονα Κασάνδραν;
- ΤΑ. ἐξαίρετόν νιν ἔλαβεν Ἀγαμέμνων ἄναξ.
- ΕΚ. ἦ τᾷ Λακεδαιμονίᾳ νύμφα δούλαν; 250
ἰὼ μοί μοι.
- ΤΑ. οὐκ, ἀλλὰ λέκτρων σκότια νυμφευτήρια.
- ΕΚ. ἦ τὰν τοῦ Φοίβου παρθένον, ἧ γέρας ὁ
χρυσοκόμας ἔδωκ' ἄλεκτρον ζωάν;
- ΤΑ. ἔρως ἐτόξευσ' αὐτὸν ἐνθέου κόρης. 255
- ΕΚ. ῥῖπτε, τέκνον, ζαθέους
κλειῖδας, ἀπὸ χροὺς ἐν-
δυτῶν στεφάνων ἱεροῦς στολμούς.
- ΤΑ. οὐ γὰρ μέγ' αὐτῇ βασιλικῶν λέκτρων τυχεῖν; 259
- ΕΚ. τί δ' ὃ νεοχμὸν ἀπ' ἐμέθεν ἐλάβετε τέκος [ποῦ μοι];
- ΤΑ. Πολυξένην ἔλεξας, ἢ τίν' ἰστορεῖς;
- ΕΚ. [ταύταν] τῷ πάλος ἔξευξεν;
- ΤΑ. τύμβω τέτακται προσπολεῖν Ἀχιλλέως.
- ΕΚ. οἴμοι ἐγὼ· τάφῳ πρόσπολον ἐτεκόμαν. 265
ἀτὰρ τίς ὅδ' ἢ νόμος ἢ
τί θέσμιον, ὦ φίλος, Ἑλλάνων;
- ΤΑ. εὐδαιμόνιζε παῖδα σὴν· ἔχει καλῶς.
- ΕΚ. τί τόδ' ἔλακες; ἄρά μοι ἀέλιον λεύσσει;
- ΤΑ. ἔχει πότμος νιν, ὥστ' ἀπηλλάχθαι πόνων. 270
- ΕΚ. τί δ' ἢ τοῦ χαλκεομήστορος Ἐκτορος δάμαρ,
Ἀνδρομάχα τάλαινα, τίν' ἔχει τύχαν;
- ΤΑ. καὶ τήνδ' Ἀχιλλέως ἔλαβε παῖς ἐξαίρετον.

ΕΚ. ἐγὼ δὲ τῷ πρόσπολος ἅ τριτοβάμονος χερὶ 275
δευομένα βάκτρον γεραιῷ κάρῃ;

ΤΑ. Ἰθάκης Ὀδυσσεὺς ἔλαχ' ἄναξ δούλην σ' ἔχειν.

ΕΚ. ἔ. ἔ.

ἄρασσε κρᾶτα κούριμον,
ἔλκ' ὀνύχεσσι δίπτυχον παρειάν. 280
ἰὼ μοί μοι.

μυσαρῷ δολίῳ λέλογχα φωτὶ δουλεύειν,
πολεμίῳ δίκας, παρανόμῳ δάκει,
ὃς πάντα τᾷκεῖθεν ἐνθάδ' 285
ἀντίπαλ' αὖθις ἐκεῖσε διπτύχῳ γλώσσοι
φίλα τὰ πρότερόν' ἄφιλα τιθέμενος. πάντως
γοᾷσθ', ὦ Τρῳάδες, με.

βέβακα δύσποτμος, οἴχομαι
ἅ τάλαινα, δυστυχεστάτῳ 290
προσέπεσον κλήρῳ.

ΧΟ. τὸ μὲν σὸν οἶσθα, πότνια, τὰς δ' ἐμὰς τύχας
τίς ἄρ' Ἀχαιῶν ἢ τίς Ἑλλήνων ἔχει;

ΤΑ. ἴτ', ἐκκομίζειν δεῦρο Κασάνδραν χρεῶν 295
ὅσον τάχιστα, δμῶες, ὥς στρατηλάτῃ
εἰς χεῖρα δῶμεν· εἶτα τὰς εἰληγμένας
καὶ τοῖσιν ἄλλοις αἰχμαλωτίδων ἄγω.

ἔα, τί πεύκης ἔνδον ἴσταται σέλας;
πιμπρᾶσιν ἢ τί δρῶσι Τρῳάδες μυχούς,
ὥς ἐξάγεσθαι τῇσδε μέλλουσαι χθονὸς 300
πρὸς Ἄργος, αὐτῶν τ' ἐκπυροῦσι σώματα
θανεῖν θέλουσαι; κάρτα τοι τούλεύτερον
ἐν τοῖς τοιούτοις δυσλόφως φέρει κακὰ.

ἄνοιγ' ἄνοιγε, μὴ τὸ ταῖσδε πρόσφορον,
ἐχθρὸν δ' Ἀχαιοῖς, εἰς ἔμ' αἰτίαν βάλλῃ. 305

ΕΚ. οὐκ ἔστιν, οὐ πιμπρᾶσιν, ἀλλὰ παῖς ἐμὴ
μαινὰς θοάζει δεῦρο Κασάνδρα δρόμῳ.

- ΚΑ. ἄνεχε, πάρεχε, φῶς φέρε· σέβω, φλέγω στρ.
 λαμπάσι τόδ' ἱερὸν.
 ῥυήν, ὦ ῥυέναι' ἄναξ, ἰὸν ἰού. 310
 μακάριος ὁ γαμέτας,
 μακαρία δ' ἐγὼ βασιλικοῖς λέκτροις
 κατ' Ἄργος ἅ γαμουμένα.
 ῥυήν, ὦ ῥυέναι' ἄναξ.
 ἐπεὶ σύ, μάτερ, ἐπὶ δάκρυσι καὶ 315
 γόοισι τὸν θανόντα πατέρα πατρίδα τε
 φίλαν καταστένουσ' ἔχεις,
 ἐγὼ τόδ' ἐπὶ γάμοις ἐμοῖς
 ἀναφλέγω πυρὸς φῶς 320
 ἐς αὐγάν, ἐς αἴγλαν,
 διδοῦσ' ὦ ῥυέναιε σοί,
 διδοῦσ' ὦ Ἐκάτα φάος,
 παρθένων ἐπὶ λέκτροις ἅ νόμος ἔχει.
 πάλλε πόδ' αἰθέριον, ἄνεχε χορόν, εὐὰν εὐοῖ, ἀντ.
 ὥς ἐπὶ πατρὸς ἐμοῦ 326
 μακαριωτάταις τύχαις.
 ὁ χορὸς ὅσιος,
 ἄγε σὺ Φοῖβέ νυν· κατὰ σὸν ἐν δάφναις
 ἀνάκτορον θυηπολῶ, 330
 ῥυήν, ὦ ῥυέναι', ῥυήν.
 χόρευε, μάτερ, ἄναγε, πόδα σὸν
 ἔλισσε τᾷδ' ἐκεῖσε μετ' ἐμέθεν ποδῶν
 φέρουσα φιλτάταν βάσιν.
 βοᾷτε τὸν ῥυέναιον, ὦ, 335
 μακαρίαις ἀοιδαῖς
 ἰαχαῖς τε νύμφαν.
 ἴτ', ὦ καλλίπεπλοι Φρυγῶν

κόραι, μέλπετ' ἐμῶν γάμων
τὸν πεπρωμένον εὐνᾷ πόσιν ἐμέθεν. 340

ΧΟ. βασίλεια, βακχεύουσας οὐ λήψει κόρην,
μὴ κοῦφον αἶρη βῆμ' ἐς Ἀργείων στρατόν;

ΕΚ. Ἦφαιστε, δαδουχεῖς μὲν ἐν γάμοις βροτῶν,
ἅτὰρ λυγρὰν γε τήνδ' ἀναιθύσσεις φλόγα
ἔξω τε μεγάλων ἐλπίδων. οἴμοι, τέκνον, 345
ὥς οὐχ ὑπ' αἰχμῆς σ' οὐδ' ὑπ' Ἀργείου δορός
γάμους γαμεῖσθαι τούσδ' ἐδόξαζόν ποτε.

παράδος ἐμοὶ φῶς· οὐ γὰρ ὀρθὰ πυρφορεῖς
μαινὰς θοάζουσ', οὐδὲ σαὶ τύχαι, τέκνον,
σεσωφρουήκασ', ἀλλ' ἐτ' ἐν ταύτῳ μένεις. 350
εἰσφέρετε πεύκας δάκρυά τ' ἀνταλλάσσετε
τοῖς τῆσδε μέλεσι, Τρῳάδες, γαμηλίοις.

ΚΑ. μῆτερ, πύκαζε κρᾶτ' ἐμὸν νικηφόρον
καὶ χαῖρε τοῖς ἐμοῖσι βασιλικοῖς γάμοις
καὶ πέμπε, κἂν μὴ τὰμά σοι πρόθυμά γ' ἦ. 355
ᾧθι βιαίως· εἰ γὰρ ἔστι Λοξίας,

Ἐλένης γαμεῖ με δυσχερέστερον γάμον
ὁ τῶν Ἀχαιῶν κλεινὸς Ἀγαμέμνων ἀνάξ.
κτενῶ γὰρ αὐτὸν κἀντιπορθήσω δόμους
ποινὰς ἀδελφῶν καὶ πατρὸς λαβοῦσ' ἐμοῦ. 360

ἀλλ' αὖτ' ἐάσω· πέλεκυν οὐχ ὑμνήσομεν,
ὃς εἰς τράχηλον τὸν ἐμὸν εἴσι χάτέρων,
μητροκτόνους τ' ἀγῶνας, οὓς οὐμοὶ γάμοι
θήσουσιν, οἴκων τ' Ἀτρέως ἀνάστασιν·
πόλιν δὲ δείξω τήνδε μακαριωτέραν 365

ἢ τοὺς Ἀχαιοὺς, ἔνθεος μὲν, ἀλλ' ὅμως
τοσόνδε γ' ἔξω στήσομαι βακχευμάτων·
οἳ διὰ μίαν γυναῖκα καὶ μίαν Κύπριν
θηρῶντες Ἐλένην μυρίους ἀπώλεσαν.
ὁ δὲ στρατηγὸς ὁ σοφὸς ἐχθίστων ὕπερ 370

τὰ φίλτατ' ὤλεσ', ἡδονὰς τὰς οἰκοθεν
 τέκνων ἀδελφῶ δούς γυναικὸς οὔνεκα
 καὶ ταῦθ' ἐκούσης κοῦ βία λελησμένης.
 ἐπεὶ δ' ἐπ' ἀκτὰς ἦλυθον Σκαμανδρίους,
 ἔθνησκον, οὐ γῆς ὄρι' ἀποστερούμενοι 375
 οὐδ' ὑψιπύργου πατρίδος· οὐς δ' Ἄρης ἔλοι,
 οὐ παῖδας εἶδον, οὐ δάμαρτος ἐν χερσὶν
 πέπλοις συνεστάλησαν, ἐν ξένη δὲ γῇ
 κεῖνται. τὰ δ' οἴκοι τοῖσδ' ὅμοι' ἐρίγνετο·
 χῆραί τ' ἔθνησκον, οἱ δ' ἄπαιδες ἐν δόμοις 380
 ἄλλοις τέκν' ἐκθρέψαντες, οὐδὲ πρὸς τάφους
 ἔσθ' ὅστις αὐτοῖς αἶμα γῇ δωρήσεται.
 ἦ τοῦθ' ἐπαίνου τὸ στράτευμ' ἐπάξιον.
 σιγᾶν ἄμεινον τᾶσχαρά, μηδὲ μοῦσά μοι
 γένοιτ' ἀοιδὸς ἥτις ὑμνήσει κακὰ. 385
 Τρῶες δὲ πρῶτον μὲν, τὸ κάλλιστον κλέος,
 ὑπὲρ πάτρας ἔθνησκον· οὐς δ' ἔλοι δόρυ,
 νεκροὶ γ' ἐς οἴκους φερόμενοι φίλων ὑπο
 ἐν γῇ πατρῷα περιβολὰς εἶχον χθονός,
 χερσὶν περισταλέντες ὧν ἐχρῆν ὑπο· 390
 ὅσοι δὲ μὴ θάνοιεν ἐν μάχῃ Φρυγῶν,
 αἰὲ κατ' ἡμαρ σὺν δάμαρτι καὶ τέκνοις
 ὦκουν, Ἀχαιοῖς ὧν ἀπῆσαν ἡδοναί.
 τὰ δ' Ἑκτορός σοι λύπρ' ἄκουσον ὥς ἔχει·
 δόξας ἀνὴρ ἄριστος οἴχεται θανών, 395
 καὶ ταῦτ' Ἀχαιῶν ἥξις ἐξεργάζεται·
 εἰ δ' ἦσαν οἴκοι, χρηστὸς ἔλαθεν ἂν γεγώς.
 Πάρις τ' ἐγρημε τὴν Αἰός· γήμας δὲ μή,
 σιγώμενον τὸ κῦδος εἶδεν ἐν δόμοις. 399
 φεύγειν μὲν οὖν χρὴ πόλεμον ὅστις εὖ φρονεῖ·
 εἰ δ' εἰς τόδ' ἔλθοι, στέφανος οὐκ αἰσχρὸς πόλει
 καλῶς ὀλέσθαι, μὴ καλῶς δὲ δυσκλεές.

ᾧν οὔνεκ' οὐ χροή, μήτερ, οἴκτειρειν σε γῆν,
οὐ τὰμὰ λέκτρα· τοὺς γὰρ ἐχθίστους ἐμοὶ
καὶ σοὶ γάμοισι τοῖς ἐμοῖς διαφθερῶ. 405

ΧΟ. ὥς ἡδέως κακοῖσιν οἰκείοις γελᾷς
μέλπεις θ' ἃ μέλπονσ' οὐ σαφῇ δειξίεις ἴσως.

ΤΑ. εἰ μή σ' Ἀπόλλων ἐξεβάκχευσεν φρένας,
οὐκ ἂν ἀμισθὶ τοὺς ἐμοὺς στρατηλάτας
τοιαῖσδε φήμαις ἐξέπεμπες ἂν χθονός. 410

ἀτὰρ τὰ σεμνὰ καὶ δοκήμασιν σοφὰ
οὐδέν τι κρείσσω τῶν τὸ μηδὲν ἦν ἄρα.
ὁ γὰρ μέγιστος τῶν Πανελλήνων ἄναξ,
Ἄτρεως φίλος παῖς, τῆσδ' ἔρωτ' ἐξαίρετον
μαινάδος ὑπέστη· καὶ πένης μέν εἰμ' ἐγώ, 415
ἀτὰρ λέχος γε τῆσδ' ἂν οὐκ ἐκτησάμην.

καὶ σοὶ μέν, οὐ γὰρ ἀρτίας ἔχεις φρένας,
Ἀργεῖ' ὀνειδῆ καὶ Φρυγῶν ἐπαινέσεις
ἀνέμοις φέρεσθαι παραδίδωμ'· ἔπου δέ μοι
πρὸς ναῦς, καλὸν νύμφευμα τῷ στρατηλάτῃ. 420

σὺ δ', ἡνίκ' ἂν σε Λαρτίου χορῆς τόκος
ἄγειν, ἔπεσθαι· σῶφρονος δ' ἔσει λάτρης
γυναικός, ὥς φασ' οἱ μολόντες Ἴλιον.

ΚΑ. ἦ δεινὸς ὁ λάτρης. τί ποτ' ἔχουσι τοῦνομα
κῆρυκες; ἐν ἀπέχθιμα πάγκοινωνον βροτοῖς 425
οἱ περὶ τυράννους καὶ πόλεις ὑπηρέται.

σὺ τὴν ἐμὴν φῆς μητέρ' εἰς Ὀδυσσέως
ἥξιν μέλαθρα; ποῦ δ' Ἀπόλλωνος λόγοι,
οἳ φασιν αὐτὴν εἰς ἔμ' ἡρμηνευμένοι
αὐτοῦ θανεῖσθαι; τᾶλλα δ' οὐκ ὀνειδιῶ. 430

δύστηνος, οὐκ οἶδ' οἷά νιν μένει παθεῖν·
ὥς χροσὸς αὐτῷ τὰμὰ καὶ Φρυγῶν κακὰ
δόξει ποτ' εἶναι. δέκα γὰρ ἐκπλήσας ἔτη
πρὸς τοῖσιν ἐνθάδ', ἔξεται μόνος πάτραν.

οὗ δὴ στενὸν διάυλον ᾧκισται πέτρας 435
 δεινὴ Χάρυβδις, ὠμόφρων τ' ἐπιστάτης
 Κύκλωψ, Αἰγυσις θ' ἡ συῶν μορφώτρια
 Κίρκη, θαλάσσης θ' ἄλμυρᾶς νανάγια,
 λωτοῦ τ' ἔρωτες, Ἥλιον θ' ἄγναι βόες,
 αἰὲν σάρκα φωνήεσσιν ἦσουσιν ποτε, 440
 πικρὰν Ὀδυσσεὶ γῆρυν. ὥς δὲ συντέμω,
 καὶ ζῶν ἐς Ἴδην κἄκφυγὼν λίμνης ὕδωρ
 κἄκ' ἐν δόμοισι μυρὶ εὐρήσει μολῶν.
 ἀλλὰ γὰρ τί τοὺς Ὀδυσσέως ἐξακοντίζω πόνοους;
 στεῖχ' ὅπως τάχιστ'· ἐς Ἴδου νυμφίῳ γαμώ-
 μεθα. 445
 ἣ κακὸς κακῶς ταφήσει νυκτός, οὐκ ἐν ἡμέρᾳ,
 ὃ δοκῶν σεμνόν τι πράσσειν, Δαναῖδων ἀρχη-
 γέτα.
 καμέ τοι νεκρὸν φάραγγες γυμνάδ' ἐκβεβλημένην
 ὕδατι χειμάρρῳ ῥέουσai νυμφίου πέλας τάφου
 θηρσὶ δώσουσιν δάσασθαι, τὴν Ἀπόλλωνος λά-
 τριν. 450
 ὦ στέφη τοῦ φιλτάτου μοι θεῶν, ἀγάματ' εὖια,
 χαίρετ'· ἐκλέλοιπα δ' ὀρτάς, αἷς πάροιθ' ἡγαλ-
 λόμην.
 ἔτ' ἀπ' ἐμοῦ χρωτὸς σπαραγμοῖς, ὥς ἔτ' οὐσ'
 ἄγνῃ χροά
 δῶ θοαῖς αὖραις φέρεσθαί σοι τάδ', ὦ μαντεῖ'
 ἄναξ.
 ποῦ σκάφος τὸ τοῦ στρατηγοῦ; ποῦ ποτ' ἐμβαί-
 νειν με χροή; 455
 οὐκέτ' ἂν φθάνοις ἂν αὖραν ἰστίοις καραδοκῶν,
 ὥς μίαν τριῶν Ἑρινὺν τῆσδέ μ' ἐξάξων χθονός.
 χαῖρέ μοι, μῆτερ, δακρύσης μηδέν, ὦ φίλη πα-
 τρίς·

οὔτε γῆς ἔνερθ' ἀδελφοὶ χῶ τεκῶν ἡμᾶς πατήρ,
οὐ μακρὰν δέξεσθ' ἐμ'· ἥκω δ' εἰς νεκροὺς νικη-
φόρος 460
καὶ δόμους πέρσας' Ἀτρειδῶν, ὧν ἀπωλόμεσθ'
ὑπο.

ΧΟ. Ἐκάβης γεραιᾶς φύλακες, οὐ δεδόρκατε
δέσποιναν ὥς ἄναυδος εἰς πέδον πίτνει;
οὐκ ἀντιλήψεσθ'· ἢ μεθήσεται, ὦ κακαί,
γραῖαν πεσοῦσαν; αἶρετ' εἰς ὄρθον δέμας. 465

ΕΚ. ἔατέ μ', οὔτοι φίλα τὰ μὴ φίλ', ὦ κόραι,
κεῖσθαι πεσοῦσαν· πτωμάτων γὰρ ἄξια
πάσχω τε καὶ πέπονθα κᾶτι πείσομαι.
ὦ θεοί· κακοὺς μὲν ἀνακαλῶ τοὺς συμμάχους,
ὅμως δ' ἔχει τι σχῆμα κικλήσκειν θεούς, 470
ὅταν τις ἡμῶν δυστυχῇ λάβῃ τύχην.
πρῶτον μὲν οὖν μοι τάγάθ' ἐξᾶσαι φίλον·
τοῖς γὰρ κακοῖσι πλείον' οἶκτον ἐμβαλῶ.
ἦμην τύραννος κεῖς τύρανν' ἐγῆμάμην,
κάνταῦθ' ἀριστεύοντ' ἐγείνάμην τέκνα, 475
οὐκ ἀριθμὸν ἄλλως, ἀλλ' ὑπερτάτους Φρυγῶν·
οὐ Τρωᾶς οὐδ' Ἑλληνὶς οὐδὲ βάρβαρος
γυνὴ τεκοῦσα κομπάσειεν ἄν ποτε.
κἀκεῖνά τ' εἶδον δορὶ πεσόνθ' Ἑλληνικῶ,
τρίχας δ' ἐτμήθην τάσδε πρὸς τύμβοις νεκρῶν, 480
καὶ τὸν φυτουργὸν Πρίαμον οὐκ ἄλλων πάρα
κλύουσ' ἔκλαυσα, τοῖσδε δ' εἶδον ὄμμασιν
αὐτὴ κατασφαγέντ' ἐφ' ἐρκειῶ πυρᾷ,
πόλιν θ' ἀλοῦσαν. ἄς δ' ἔθρεψα παρθένους
εἰς ἀξίωμα νυμφίων ἐξαίρετον, 485
ἄλλοισι θρέψας' ἐκ χειρῶν ἀφηρέθην.
κοὔτ' ἐξ ἐκείνων ἐλπὶς ὥς ὀφθήσομαι,
αὐτὴ τ' ἐκείνας οὐκέτ' ὄψομαί ποτε.

τὸ λοισθιον δὲ θριγκὸς ἀθλίων κακῶν,
 δοῦλῃ γυνὴ γρᾶυς Ἑλλάδ' εἰσαφίξομαι. 490

ἃ δ' ἐστὶ γῆρα τῷδ' ἀσυμφορώτατα,
 τούτοις με προσθήσουσιν, ἣ θυρῶν λάτριν
 κλειῖδας φυλάσσειν, τὴν τεκοῦσαν Ἑκτορα,
 ἣ σιτοποιεῖν, κἂν πέδῳ κοίτας ἔχειν
 ῥυσοῖσι νώτοις βασιλικῶν ἐκ δεμνίων, 495

τρουχηρὰ περὶ τρουχηρὸν εἰμένην χρῶα
 πέπλων λακίσματ', ἀδόκιμ' ὀλβίοις ἔχειν.
 οὐ γὰρ τάλαινα, διὰ γάμον μιᾶς ἔνα
 γυναικὸς οἶον ἔτυχον ὧν τε τεύξομαι.

ὦ τέκνον, ὦ σύμβακχε Κασάνδρα θεοῖς, 500
 οἷαις ἔλυσας συμφοραῖς ἄγνευμα σόν.

σύ τ' ὦ τάλαινα, ποῦ ποτ' εἶ, Πολυξένη;
 ὥς οὔτε μ' ἄρσῃν οὔτε θήλεια σπορὰ
 πολλῶν γενομένων τὴν τάλαιναν ὠφελεῖ.
 τί δῆτά μ' ὀρθοῦτ'; ἐλπίδων ποίων ὕπο; 505

ἄγετε τὸν ἄβρὸν δήποτ' ἐν Τροίᾳ πόδα,
 νῦν δ' ὄντα δοῦλον, στιβάδα πρὸς χαμαιπετῇ
 πέτρινά τε κρήδεμν', ὥς πεσοῦς' ἀποφθαρῶ
 δακρύοις καταξανθεῖσα. τῶν δ' εὐδαιμόνων
 μηδένα νομίζετ' εὐτυχεῖν πρὶν ἂν θάνῃ. 510

ΧΟ. ἀμφὶ μοι Ἴλιον, ὦ στρ.

Μοῦσα, καινῶν ὕμνων
 ἄεισον ἐν δακρύοις
 ᾧδ' ἐπικήδειον.

νῦν γὰρ μέλος εἰς Τροίαν 515
 ἰαχῆσω,

τετραβάμονος ὥς ὑπ' ἀπήνας
 Ἀργείων ὀλόμαν τάλαινα δοριάλωτος,
 ὅτ' ἔλιπον ἵππον οὐράνια

βρέμονται χρυσεοφάλαρον ἔνοπλον 520

ἐν πύλαις Ἀχαιοί·

ἀνὰ δ' ἐβόασεν λεῶς

Τρωάδος ἀπὸ πέτρας σταθείς·

ἴτ' ὦ πεπαυμένοι πόνων,

τόδ' ἱερὸν ἀγάγετε ξόανον 525

Ἰλιάδι Διογενεῖ κόρα.

τίς οὐκ ἔβα νεανίδων,

τίς οὐ γεραιὸς ἐκ δόμων;

κεχαρμένοι δ' αἰοιδαῖς

δόλιον ἔσχον ἄταν. 530

πᾶσα δὲ γέννα Φρυγῶν ἄντ.

πρὸς πύλας ὠρμάθη,

πεύκη ἐν οὐρείᾳ

ξεστὸν λόχον Ἀργείων

καὶ Δαρδανίας ἄταν 535

θεᾶ δώσων

χάριν ἄξυγος ἀμβροτοπώλου·

κλωστοῦ δ' ἀμφιβόλοις λίνιοι, ναὸς ὥσει

σκάφος κελαινὸν εἰς ἔδρανα

· λάινα δάπεδά τε φόνια πατρίδι 540

Παλλάδος θέσαν θεᾶς.

ἐν δὲ πόνῳ καὶ χαρᾷ

νύχιον ἐπὶ κνέφας παρῆν,

Αἰβυς τε λωτὸς ἐκτύπει

Φρύγιά τε μέλεα, παρθένοι δ' 545

ἄεριον ἀνὰ κρότον ποδῶν

βοᾶν τ' ἔμελπον εὖφρον'· ἐν

δόμοις δὲ παμφαῆς σέλας

πυρὸς μέλαιναν αἶγλαν

* * ἔδωκεν ὕπνῳ. 550

ἐγὼ δὲ τὰν ὄρεστέραν

- τότε ἄμφι μέλαθρα παρθένου,
 Διὸς κόραν ἐμελπόμαν
 χοροῖσι· φοινία δ' ἄνὰ 555
 πτόλιν βοὰ κατεῖχε Περ-
 γάμων ἔδρας· βρέφη δὲ φίλι-
 α περὶ πέπλους ἔβαλλε μα-
 τρὶ χεῖρας ἐπτοημένας·
 λόχου δ' ἐξέβαιν' Ἄρης, 560
 κόρας ἔργα Παλλάδος.
 σφαγαὶ δ' ἄμφιβώμιοι
 Φρυγῶν, ἐν τε δεμνίοις
 καράτομος ἐρημία
 νεανίδων στέφανον ἔφερεν 565
 Ἑλλάδι κουροτρόφον,
 Φρυγῶν δὲ πατρίδι πένθος.
 Ἑκάβη, λεύσσεις τήνδ' Ἀνδρομάχην
 ξενικοῖς ἐπ' ὄχοις πορθμευομένην;
 παρὰ δ' εἰρεσία μαστῶν ἔπεται 570
 φίλος Ἀστυάναξ, Ἑκτορος ἱνις.
- ΕΚ. ποῖ ποτ' ἀπήνης νώτοισι φέρει,
 δύστανε γύναι, πάρεδρος χαλκίοις
 Ἑκτορος ὅπλοις σκύλοις τε Φρυγῶν
 δοριθηράτοις,
 οἷσιν Ἀχιλλέως παῖς Φθιώτας 575
 στέψει ναοὺς ἀπὸ Τροίας;
- ΑΝ. Ἀχαιοὶ δεσπότες μ' ἄγρουσιν. στρ.
- ΕΚ. ὦμοι. ΑΝ. τί παιᾶν' ἐμὸν στενάξεις
- ΕΚ. αἰαῖ. ΑΝ. τῶνδ' ἀλγέων
- ΕΚ. ὦ Ζεῦ. ΑΝ. καὶ συμφορᾶς; 580
- ΕΚ. τέκεα, ΑΝ. πρὶν ποτ' ἦμεν.
- ΕΚ. βέβακ' ὄλβος, βέβακε Τροία 581
 577 — 581 = 582 — 586 582
 583
 584
 585
 586
 587
 588
 589
 590
 591
 592
 593
 594
 595
 596
 597
 598
 599
 600
 601
 602
 603
 604
 605
 606
 607
 608
 609
 610
 611
 612
 613
 614
 615
 616
 617
 618
 619
 620
 621
 622
 623
 624
 625
 626
 627
 628
 629
 630
 631
 632
 633
 634
 635
 636
 637
 638
 639
 640
 641
 642
 643
 644
 645
 646
 647
 648
 649
 650
 651
 652
 653
 654
 655
 656
 657
 658
 659
 660
 661
 662
 663
 664
 665
 666
 667
 668
 669
 670
 671
 672
 673
 674
 675
 676
 677
 678
 679
 680
 681
 682
 683
 684
 685
 686
 687
 688
 689
 690
 691
 692
 693
 694
 695
 696
 697
 698
 699
 700
 701
 702
 703
 704
 705
 706
 707
 708
 709
 710
 711
 712
 713
 714
 715
 716
 717
 718
 719
 720
 721
 722
 723
 724
 725
 726
 727
 728
 729
 730
 731
 732
 733
 734
 735
 736
 737
 738
 739
 740
 741
 742
 743
 744
 745
 746
 747
 748
 749
 750
 751
 752
 753
 754
 755
 756
 757
 758
 759
 760
 761
 762
 763
 764
 765
 766
 767
 768
 769
 770
 771
 772
 773
 774
 775
 776
 777
 778
 779
 780
 781
 782
 783
 784
 785
 786
 787
 788
 789
 790
 791
 792
 793
 794
 795
 796
 797
 798
 799
 800
 801
 802
 803
 804
 805
 806
 807
 808
 809
 810
 811
 812
 813
 814
 815
 816
 817
 818
 819
 820
 821
 822
 823
 824
 825
 826
 827
 828
 829
 830
 831
 832
 833
 834
 835
 836
 837
 838
 839
 840
 841
 842
 843
 844
 845
 846
 847
 848
 849
 850
 851
 852
 853
 854
 855
 856
 857
 858
 859
 860
 861
 862
 863
 864
 865
 866
 867
 868
 869
 870
 871
 872
 873
 874
 875
 876
 877
 878
 879
 880
 881
 882
 883
 884
 885
 886
 887
 888
 889
 890
 891
 892
 893
 894
 895
 896
 897
 898
 899
 900
 901
 902
 903
 904
 905
 906
 907
 908
 909
 910
 911
 912
 913
 914
 915
 916
 917
 918
 919
 920
 921
 922
 923
 924
 925
 926
 927
 928
 929
 930
 931
 932
 933
 934
 935
 936
 937
 938
 939
 940
 941
 942
 943
 944
 945
 946
 947
 948
 949
 950
 951
 952
 953
 954
 955
 956
 957
 958
 959
 960
 961
 962
 963
 964
 965
 966
 967
 968
 969
 970
 971
 972
 973
 974
 975
 976
 977
 978
 979
 980
 981
 982
 983
 984
 985
 986
 987
 988
 989
 990
 991
 992
 993
 994
 995
 996
 997
 998
 999
 1000

AN. τλάμων. EK. ἐμῶν τ' εὐγένεια παίδων.

AN. φεῦ φεῦ. EK. φεῦ δῆτ' ἐμῶν

AN. κακῶν. EK. οἰκτρὰ τύχα 585

AN. πόλεος, EK. ἃ καπνοῦται.

AN. μόλοις ὧ πόσις μοι, 590

EK. βοᾷς τὸν παρ' Ἴδου
παῖδ' ἐμόν, ὧ μελέα.

AN. σᾶς δάμαρτος ἄλκαρ. 590

EK. σύ τ' ὧ λῦμ' Ἀχαιῶν, 595

AN. τέκνων δέσποθ' ἐμῶν
προσβυγενὲς Πρίαμε.

EK. κοίμισαί μ' ἐς Ἴδου.

AN. οἶδε πόθοι μεγάλοι· σχετλία, τάδε πάσχομεν
ἄλγη, 595

οἰχομένηας πόλεως, ἐπὶ δ' ἄλγεσιν ἄλγεα κεῖνται
δυσφροσύναισι θεῶν, ὅτε σὸς γόνος ἔκφυγεν
ἄδαν,

ὃς λεχέων στυγερῶν χάριν ὦλεσε πέργαμα Τροίας.
αἵματόεντα δὲ θεᾶ παρὰ Παλλάδι σώματα νεκρῶν
γυψὶ φέρειν τέταται· ζυγὰ δ' ἤνυσε δούλια Τροία.
EK. ὧ πατρὶς ὧ μελέα, καταλειπομένην σε δακρύω, 601
νῦν τέλος οἰκτρὸν ὄρα, καὶ ἐμὸν δόμον ἔνθ'
ἐλοχεύθην.

ὧ τέκν', ἐρημόπολις μάτηρ ἀπολείπεται ὑμῶν.

οἶος ἰάλεμος οἶά τε πένθη * * * * *

δάκρυά τ' ἐκ δακρύων καταλείβεται * * * * * 605

ἀμετέροισι δόμοις. ὁ θανὼν δ' ἐπι- * * * * *

[λάθεται ἀλγέων ἀδάκρυτος.]

XO. ὥς ἡδὺν δάκρυα τοῖς κακῶς πεπραγόσι

θρήνων τ' ὀδυρμοὶ μοῦσά θ' ἢ λύπας ἔχει.

- AN. ὦ μήτερ ἀνδρός, ὅς ποτ' Ἀργείων δορὶ 610
 πλείστους διώλεσ', Ἑκτορος, τὰδ' εἰσορᾷς;
 EK. ὁρῶ τὰ τῶν θεῶν, ὥς τὰ μὲν πυργοῦσ' ἄνω
 τὰ μηδὲν ὄντα, τὰ δὲ δοκοῦντ' ἀπώλεσαν.
 AN. ἀρόμεθα λεία σὺν τέκνῳ, τὸ δ' εὐγενὲς
 εἰς δοῦλον ἦκει, μεταβολὰς τοιάσδ' ἔχον. 615
 EK. τὸ τῆς ἀνάγκης δεινόν· ἄρτι κἀπ' ἐμοῦ
 βέβηκ' ἀποσπασθεῖσα Κασάνδρα βία.
 AN. φεῦ φεῦ·
 ἄλλος τις Αἴας, ὥς ἔοικε, δεύτερος
 παιδὸς πέφηνε σῆς· νοσεῖς δὲ χᾶτερα.
 EK. ὦν γ' οὔτε μέτρον οὔτ' ἀριθμὸς ἐστὶ μοι· 620
 κακῷ κακὸν γὰρ εἰς ἄμιλλαν ἔρχεται.
 AN. τέθνηκέ σοι παῖς πρὸς τάφῳ Πολυξένη
 σφαγεῖσ' Ἀχιλλέως, δῶρον ἀψύχῳ νεκρῷ.
 EK. οἴ γ' ὦ τάλαινα. τοῦτ' ἐκεῖνό μοι πάλαι
 Ταλθύβιος αἰνιγμ' οὐ σαφῶς εἶπεν σαφές. 625
 AN. εἰδὼν νιν αὐτὴ κἀποβᾶσα τῶνδ' ὄχων
 ἔκρουσα πέπλοις κἀπεκοψάμην νεκρόν.
 EK. αἰαῖ, τέκνον, σὼν ἀνοσίων προσφαγμάτων·
 αἰαῖ μάλ' αὐθις, ὥς κακῶς διόλλυσαι.
 AN. ὄλωλεν ὥς ὄλωλεν, ἀλλ' ὅμως ἐμοῦ 630
 ζώσης γ' ὄλωλεν εὐτυχεστέρῳ πότμῳ.
 EK. οὐ ταῦτόν, ὦ παῖ, τῷ βλέπειν τὸ κατθανεῖν·
 τὸ μὲν γὰρ οὐδέν, τῷ δ' ἐνείσιν ἐλπίδες.
 AN. ὦ μήτερ ὦ τεκοῦσα, κάλλιστον λόγον
 ἄκουσον, ὥς σοι τέρψιν ἐμβάλω φρενί. 635
 τὸ μὴ γενέσθαι τῷ θανεῖν ἴσον λέγω,
 τοῦ ξῆν δὲ λυπρῶς κρεῖσσόν ἐστι κατθανεῖν.
 ἀλγεῖ γὰρ οὐδὲν τῶν κακῶν ἡσθημένος·
 ὁ δ' εὐτυχήσας εἰς τὸ δυστυχεῖς πεσὼν
 ψυχὴν ἀλᾶται τῆς πάροιθ' εὐπραξίας. 640

κείνη δ' ὁμοίως ὥσπερ οὐκ ἰδοῦσα φῶς
 τέθνηκε κούδ' ἐν οἶδε τῶν αὐτῆς κακῶν.
 ἐγὼ δὲ τοξεύσασα τῆς εὐδοξίας
 λαχοῦσα πλεῖον τῆς τύχης ἡμάρτανον.
 ἃ γὰρ γυναιξὶ σῶφρον' ἔσθ' εὖρημένα, 645
 ταῦτ' ἐξεμόχθουν Ἑκτορος κατὰ στέρας.
 πρῶτον μὲν, ἔνθα καὶ προσῆ καὶ μὴ προσῆ
 ψόγος γυναιξίν, αὐτὸ τοῦτ' ἐφέλκεται
 κακῶς ἀκούειν, ἥτις οὐκ ἔνδον μένει,
 τούτου παρεῖσα πόθον ἔμιμνον ἐν δόμοις 650
 εἶσω μελάθρων· κομπᾶ ῥηλειῶν ἔπη
 οὐκ εἰσεφρούμην, τὸν δὲ νοῦν διδάσκαλον
 οἴκοθεν ἔχουσα χρηστὸν ἐξήρκοι ἐμοί.
 γλώσσης τε σιγῇν ὄμμα θ' ἥσυχον πόσει
 παρεῖχον· ἦθ' οὐδ' ἄμ' ἐχρῆν νικᾶν πόσιν, 655
 κείνῳ τε νίκην ὧν ἐχρῆν παριέναι.
 καὶ τῶνδε κληδῶν εἰς στράτευμ' Ἀχαιῶν
 ἐλθοῦσ' ἀπώλεσέν μ'· ἐπεὶ γὰρ ἠρέθην,
 Ἀχιλλέως με παῖς ἐβουλήθη λαβεῖν
 δάμαρτα· δουλεύσω δ' ἐν αὐθεντῶν δόμοις. 660
 κεί μὲν παρώσας Ἑκτορος φίλον κἄρα
 πρὸς τὸν παρόντα πόσιν ἀναπτύξω φρένα,
 κακὴ φανοῦμαι τῷ θανόντι· τόνδε δ' αὖ
 στυγοῦσ' ἐμαυτῆς δεσπόταις μισήσομαι.
 καίτοι λέγουσιν ὡς μὲν εὐφρόνη χαλᾷ 665
 τὸ δυσμενὲς γυναικὸς εἰς ἀνδρὸς λέχος·
 [ἀπέπτυσ' αὐτήν, ἥτις ἄνδρα τὸν πάρος
 καινοῖσι λέκτροις ἀποβαλοῦσ' ἄλλον φιλεῖ.]
 ἀλλ' οὐδὲ πῶλος ἥτις ἂν διαζυγῇ
 τῆς συντραφείσης, ῥαδίως ἔλξει ζυγόν. 670
 καίτοι τὸ θηριῶδες ἄφθογγόν τ' ἔφν
 ξυνέσει τ' ἄχρηστον τῇ φύσει τε λείπεται.

σέ δ', ὦ φίλ' Ἴκτορ, εἶχον ἄνδρ' ἀρκοῦντά μοι
 ξυνέσει γένει πλούτῳ τε κἀνδρεία μέγαν·
 ἀκήρατον δέ μ' ἐκ πατρὸς λαβὼν δόμων 675
 πρῶτος τὸ παρθένειον ἐξεύξω λέχος.
 καὶ νῦν ὅλωλας μὲν σύ, ναυσθλοῦμαι δ' ἐγὼ
 πρὸς Ἑλλάδ' αἰχμάλωτος εἰς δοῦλον ζυγόν.
 ἄρ' οὐκ ἐλάσσω τῶν ἐμῶν ἡγεῖ κακῶν
 Πολυξένης ὀλεθρον, ἣν καταστένεις; 680
 ἐμοὶ γὰρ οὐδ' ὃ πᾶσι λείπεται βροτοῖς
 ξύνεστιν ἐλπίς, οὐδὲ κλέπτομαι φρένας
 πράξειν τι κεδνόν· ἡδὺ δ' ἐστὶ καὶ δοκεῖν.
 XO. εἰς ταῦτόν ἥκεις συμφορᾶς· θρηνηοῦσα δὲ
 τὸ σὸν διδάσκεις μ' ἐνθα πημάτων κυρῶ. 685
 EK. αὐτὴ μὲν οὕτω ναὸς εἰσέβην σκάφος,
 γραφῇ δ' ἰδοῦσα καὶ κλύουσ' ἐπίσταμαι.
 ναύταις γὰρ ἦν μὲν μέτριος ἦ χειμῶν φέρειν,
 προθυμίαν ἔχουσι σωθῆναι πόνων,
 ὃ μὲν παρ' οἴαχ', ὃ δ' ἐπὶ λαΐφεσιν βεβῶς, 690
 ὃ δ' ἄντλον εἰργων ναός· ἦν δ' ὑπερβάλη
 πολὺς ταραχθεὶς πόντος, ἐνδόντες φορᾶ
 παρεῖσαν αὐτοὺς κυμάτων δρομήμασιν.
 οὕτω δὲ καγὼ πόλλ' ἔχουσα πῆματα
 ἄφθογγός εἰμι καὶ παρεῖς' ἐῷ στόμα· 695
 νικᾷ γὰρ οὐκ θεῶν με δύστηνος κλύδων.
 ἀλλ' ὦ φίλη παῖ, τὰς μὲν Ἴκτορος τύχας
 ἔασον· οὐ γὰρ δάκρυά νιν σώσει τὰ σά·
 τίμα δὲ τὸν παρόντα δεσπότην σέθεν,
 φίλον διδοῦσα δέλεαρ ἀνδρὶ σῶν τρόπων. 700
 κἂν δρᾷς τὰδ', εἰς τὸ κοινὸν εὐφρανεῖς φίλους
 καὶ παῖδα τόνδε παιδὸς ἐκθρέψειας ἄν
 Τροίᾳ μέγιστον ὠφέλημ', ἣν ἄν ποτε
 ἐκ σοῦ γενόμενοι παῖδες ὕστερον πάλιν

κατοικίσειαν, καὶ πόλις γένοιτ' ἔτι. 705

ἀλλ' ἐκ λόγου γὰρ ἄλλος ἐκβαίνει λόγος,
τὶν' αὖ δέδορκα τόνδ' Ἀχαιῶν λάτρην
στείχοντα καινῶν ἄγγελον βουλευμάτων;

ΤΑ. Φρυγῶν ἀρίστου πρίν ποθ' Ἑκτορος δάμαρ,
μὴ' μὲ στυγῆσης· οὐχ ἐκὼν γὰρ ἄγγελῶ 710
Δαναῶν τε κοινὰ Πελοπιδῶν τ' ἀγγέλλματα.

ΑΝ. τί δ' ἔστιν; ὥς μοι φροϊμίων ἄρχει κακῶν.

ΤΑ. ἔδοξε τόνδε παῖδα — πῶς εἶπω λόγον;

ΑΝ. μῶν οὐ τὸν αὐτὸν δεσπότην ἡμῖν ἔχειν;

ΤΑ. οὐδεὶς Ἀχαιῶν τοῦδε δεσπόσει ποτέ. 715

ΑΝ. ἀλλ' ἐνθάδ' αὐτοῦ λείψανον Φρυγῶν λιπεῖν;

ΤΑ. οὐκ οἶδ' ὅπως σοι ῥαδίως εἶπω κακά.

ΑΝ. ἐπήνεσ' αἰδῶ, πλὴν ἐὰν λέγῃς καλά.

ΤΑ. κτενουῖσι σὸν παῖδ', ὥς πύθῃ κακὸν μέγα.

ΑΝ. οἴμοι, γάμων τόδ' ὥς κλύω μεῖζον κακόν. 720

ΤΑ. νικᾷ δ' Ὀδυσσεὺς ἐν Πανέλλησιν λέγων.

ΑΝ. αἰαῖ μάλ', οὐ γὰρ μέτρια πάσχομεν κακά.

ΤΑ. λέξας ἀρίστου παῖδα μὴ τρέφειν πατρός,

ΑΝ. τοιαῦτα νικήσεις τῶν αὐτοῦ πέρι.

ΤΑ. ῥῖψαι δὲ πύργων δεῖν σφε Τρωικῶν ἄπο. 725

ἀλλ' ὥς γενέσθω, καὶ σοφωτέρα φανεῖ·

μήτ' ἀντέχου τοῦδ', εὐγενῶς δ' ἄλγει κακοῖς,

μήτε σθένουσα μηδὲν ἰσχύσειν δόκει.

ἔχεις γὰρ ἀλκὴν οὐδαμῇ· σκοπεῖν δὲ χρή·

πόλις τ' ὕλωλε καὶ πόσις, κρατεῖ δὲ σύ, 730

ἡμεῖς τε πρὸς γυναῖκα μάρονασθαι μίαν

οἰοί τε· τούτων οὔνεκ' οὐ μάχης ἐρᾷν

οὐδ' αἰσχρὸν οὐδὲν οὐδ' ἐπίφθονόν σε δρᾷν,

οὔτ' αὖ σ' Ἀχαιῶν βούλομαι ῥίπτειν ἀράς.

εἰ γὰρ τι λέξεις ᾧ χολώσεται στρατός, 735

οὔτ' ἂν ταφείῃ παῖς ὅδ' οὔτ' οἴκτου τύχοι.

σιγῶσα δ' εὖ τε τὰς τύχας κεκτημένη
τὸν τοῦδε νεκρὸν οὐκ ἄθαρπτον ἂν λίποις
αὐτὴ τ' Ἀχαιῶν πρηνεμενεστέρων τύχοις.

AN. ὦ φίλτατ', ὦ περισσὰ τιμηθεὶς τέκνον,
θανεῖ πρὸς ἐχθρῶν μητέρ' ἀθλίαν λιπών.
[ἢ τοῦ πατρὸς δέ σ' εὐγένει' ἀπώλεσεν,
ἢ τοῖσιν ἄλλοις γίγνεται σωτηρία,]
τὸ δ' ἐσθλὸν οὐκ εἰς καιρὸν ἦλθε σοὶ πατρός.
ὦ λέκτρα τὰμὰ δυστυχῇ τε καὶ γάμοι,
οἷς ἦλθον εἰς μέλαθρον Ἑκτορός ποτε,
οὐ σφάγιον υἱὸν Δαναΐδαις τέξουσ' ἐμόν,
ἀλλ' ὥς τύραννον Ἀστιάδος πολυσπόρου.
ὦ παῖ, δακρύεις; αἰσθάνει κακῶν σέθεν,
τί μου δέδραξαι χερσὶ κἀντέχει πέπλων,
νεοσσὸς ὥσεί πτέρυγας εἰσπίτνων ἐμάς;
οὐκ εἶδιν Ἑκτωρ κλεινὸς ἀρπάσας δόρυ
γῆς ἐξανελθὼν σοὶ φέρων σωτηρίαν,
οὐ συγγένεια πατρός, οὐκ ἰσχυρὸς Φρυγῶν.
λυγρὸν δὲ πῆδημ' εἰς τράχηλον ὑψόθεν
πεσὼν ἀνοίκτως, πνεῦμ' ἀπορρήξεις σέθεν.
ὦ νέον ὑπαγκάλισμα μητρὶ φίλτατον,
ὦ χρωτὸς ἡδὺ πνεῦμα· διὰ κενῆς ἄρα
ἐν σπαργάνοις σε μαστὸς ἐξέθρεψ' ὅδε,
μάτην δ' ἐμόχθουν καὶ κατεξάνθη πόνοις.
νῦν, οὔ ποτ' αὖτις, μητέρ' ἀσπάζου σέθεν,
πρόσπιτνε τὴν τεκοῦσαν, ἀμφὶ δ' ὠλένας
ἔλισσ' ἐμοῖς νῶτοισι καὶ στόμ' ἄρμωσιν.
ὦ βάρβαρ' ἐξευρόντες Ἕλληνες κακά,
τί τόνδε παῖδα κτείνειτ' οὐδὲν αἷτιον;
ὦ Τυνδάρειον ἔρνος, οὔ ποτ' εἶ Διός,
πολλῶν δὲ πατέρων φημί σ' ἐκπεφυκέναι,
Ἀλάστορος μὲν πρῶτον, εἶτα δὲ Φθόονου,

740

745

750

755

760

765

Φόνου τε Θανάτου θ' ὅσα τε γῇ τρέφει κακά.
 οὐ γάρ ποτ' ἀνχῶ Ζῆνά γ' ἐκφῦσαι σ' ἐγώ, 770
 πολλοῖσι κῆρα βαρβάροις Ἑλλησί τε.
 ὅλοιο· καλλίστων γὰρ ὁμμάτων ἄπο
 αἰσχυρῶς τὰ κλεινὰ πεδί' ἀπώλεσας Φρυγῶν.
 ἀλλ' ἄγετε φέρετε ῥίπτειτ', εἰ ῥίπτειν δοκεῖ·
 δαίνυσθε τοῦδε σάρκας. ἔκ τε γὰρ θεῶν 775
 διολλύμεσθα παιδί τ' οὐ δυναίμεθ' ἄν
 θάνατον ἀρῆξαι. κρύπτειτ' ἄθλιον δέμας
 καὶ ῥίπτειτ' εἰς ναῦς· ἐπὶ καλὸν γὰρ ἔρχομαι
 ὑμέναιον, ἀπολέσασα τοῦμαντιῆς τέκνον.

ΧΟ. τάλαινα Τροία, μυρίους ἀπώλεσας 780
 μιᾶς γυναικὸς καὶ λέχους στυγνοῦ χάριν.

ΑΝ. ἄγε παῖ, φίλιον πρόσπτυγμα μεθεῖς
 [μητρὸς μογερᾶς, βαῖνε πατρῶων]
 πύργων ἐπ' ἄκρας στεφάνας, ὅτι σοι
 πνεῦμα μεθεῖναι ψῆφος ἐκράνθη. 785
 λαμβάνετ' αὐτόν. τὰ δὲ τοιάδε χροῖ
 κηρυκεύειν, ὅστις ἄνοικτος
 καὶ ἀναιδείᾳ τῆς ὑμετέρας
 γνώμης μᾶλλον φίλος ἐστίν.

ΕΚ. ᾧ τέκνον, ᾧ παῖ παιδὸς μογεροῦ, 790
 σὺλώμεθα σὴν ψυχὴν ἀδίκως
 μήτηρ ἀγῶ. τί πάθω; τί σ' ἐγὼ
 δύσμορε δράσω; τάδε σοι δίδομεν
 πλήγματα κρατὸς στέρνων τε κόπους·
 τῶνδε γὰρ ἄρχομεν· οἷ' γὰρ πόλεως, 795
 οἷμοι δὲ σέθεν· τί γὰρ οὐκ ἔχομεν,
 τίνος ἐνδέομεν μὴ οὐ πανσυδία
 χωρεῖν ὀλέθρου διὰ παντός;

ΧΟ. μελισσοτρόφου Σαλαμῖνος ᾧ βασιλεῦ Τελαμών, στρ.

νάσου περικύμονος οἰκήσας ἔδρας 800
 τᾶς ἐπικεκλιμένας ὄχθοις ἱεροῖς, ἵν' ἐλαίας
 πρῶτον ἔδειξε κλάδον γλανκᾶς Ἀθήνα,
 οὐράνιον στέφανον λιπαραῖσι τε κόσμον Ἀθή-
 ναις,

ἔβας ἔβας τῷ τοξοφόρῳ συναρι-
 στεύων ἅμ' Ἀλκμήνας γόνῳ 805
 Ἴλιον Ἴλιον ἐκπέρσων πόλιν ἀμετέραν
 [τὸ πάροιθεν ὅτ' ἔβας ἀφ' Ἑλλάδος].
 ὅθ' Ἑλλάδος ἄγαγε πρῶτον ἄνθος ἀνυξόμε-
 νος ἀντ.

πώλων, Σιμόεντι δ' ἐπ' εὐρείῃ πλάταν 810
 ἔσχασε ποντοπόρον καὶ ναύδετ' ἀνήψατο πρυ-
 μνᾶν

καὶ χερὸς εὐστοχίαν ἐξεῖλε ναῶν,
 Λαομέδοντι φόνον· κανόνων δὲ τυκίσματα Φοίβου
 * * πυρὸς φοίνικι πνοᾷ καθελὼν 815

Τροίας ἐπόρθησε χθόνα,
 δῖς δὲ δυοῖν πιτύλοιν τείχη περὶ Λαρδανίας
 φοινία κατέλυσεν αἰχμά.
 μάταν ἄρ', ὦ χρυσέαις 820

ἐν οἰνοχόαις ἄβρὰ βαίνων,
 Λαομεδόντιε παῖ,
 Ζηνὸς ἔχεις κυλίκων
 πλήρωμα, καλλίσταν λατρείαν·
 ἃ δέ σε γειναμένα πυρὶ δαίεται· 825
 ἡμίονες δ' ἄλλαι

ἱαχον· οἶον οἰωνὸς
 * ὑπὲρ τεκέων βοᾷ, 830
 αἱ μὲν ἄορας, αἱ δὲ παῖδας,

αἱ δὲ ματέρας γεραίας.

τὰ δὲ σὰ δροσόεντα λουτρὰ

γυμνασίων τε δρόμοι

βεβᾶσι· σὺ δὲ πρόσωπα νεα-

835

ρὰ χάρισι παρὰ Διὸς θρόνοις

καλλιγάλανα τρέφεις·

Πριάμοιο δὲ γαῖαν

Ἑλλὰς ὤλεσ' αἰχμὰ.

Ἔρως Ἔρως, ὃς τὰ Δαρ-

ἀντ. 840

δάνεια μέλαθρά ποτ' ἤλθες

οὐρανίδαισι μέλων·

ὥς τότε μὲν μεγάλως

Τροίαν ἐπύργωσας, θεοῖσιν

κῆδος ἀναψάμενος. τὸ μὲν οὖν Διὸς

845

οὐκέτ' ὄνειδος ἐρῶ·

τὸ τᾶς δὲ λευκοπτέρου

ἀμέρας φίλιον βροτοῖς

φέγγος ὀλοὸν εἶδε γαῖαν,

850

εἶδε περγάμων ὄλεθρον,

τεκνοποιὸν ἔχουσα τᾶσδε

γᾶς πόσιν ἐν θαλάμοις,

ὃν ἀστέρων τέθριππος ἔλα-

855

βε χρύσεος ὄχος ἀναρπάσας,

ἐλπίδα γὰ πατρίᾳ

μεγάλαν· τὰ θεῶν δὲ

φίλτρα φροῦδα Τροίᾳ.

ME. ὦ καλλιφεγγὲς ἡλίου σέλας τόδε,

860

ἐν ᾧ δάμαρτα τὴν ἐμὴν χειρῶσομαι

Ἑλένην· ὁ γὰρ δὴ πολλὰ μοχθήσας ἐγὼ

Μενέλαός εἰμι καὶ στράτευμ' Ἀχαιῶν.

ἤλθον δὲ Τροίαν οὐχ ὅσον δοκοῦσί με

γυναικὸς οὔνεκ', ἀλλ' ἐπ' ἄνδρ' ὃς ἐξ ἐμῶν

865

- δόμων δάμαρτα ξυναπάτης ἐλήσατο.
 κείνος μὲν οὖν ἔδωκε σὺν θεοῖς δίκην
 αὐτός τε καὶ γῇ δορὶ πεσοῦσ' Ἑλληνικῶ.
 ἦκα δὲ τὴν τάλαιναν, οὐ γὰρ ἠδέως
 ὄνομα δάμαρτος ἢ ποτ' ἦν ἐμὴ λέγω, 870
 ἄξων· δόμοις γὰρ τοῖσδ' ἐν αἰχμαλωτικοῖς
 κατηγρίθμηται Τρωάδων ἄλλων μέτα.
 οἵπερ γὰρ αὐτὴν ἐξεμόχθησαν δορί,
 κτανεῖν ἐμοί νιν ἔδοσαν, εἴτε μὴ κτανῶν
 θέλοιμ' ἄγεσθαι πάλιν ἐς Ἀργείων χθόνα. 875
 ἐμοὶ δ' ἔδοξε τὸν μὲν ἐν Τροίᾳ μόρον
 Ἑλένης ἑᾶσαι, ναυπόρῳ δ' ἄγειν πλάτη
 Ἑλληνίδ' εἰς γῆν κατ' ἐκεῖ δοῦναι κτανεῖν,
 ποινὰς ὅσων τεθνᾶσ' ἐν Ἰλίῳ φίλοι.
 ἀλλ' εἰα χωρεῖτ' εἰς δόμους, ὅπαονες, 880
 κομίζετ' αὐτὴν τῆς μισαιφονωτάτης
 κόμης ἐπισπᾶσαντες· οὔριοι δ' ὅταν
 πρὸαὶ μόλωσι, πέμψομέν νιν Ἑλλάδα.
 ΕΚ. ὦ γῆς ὄχημα καπλὶ γῆς ἔχων ἔδραν,
 ὅστις ποτ' εἴ σύ, δυστόπαστος εἰδέναι, 885
 Ζεὺς, εἴτ' ἀνάγκη φύσεος εἴτε νοῦς βροτῶν,
 προσευξάμην σε· πάντα γὰρ δι' ἀψόφου
 βαίνων κελεύθου κατὰ δίκην τὰ θνήτ' ἄγεις.
 ΜΕ. τί δ' ἔστιν; εὐχὰς ὥς ἐκαίνισας θεῶν.
 ΕΚ. αἰνῶ σε, Μενέλα', εἰ κτενεῖς δάμαρτα σῆν. 890
 ὁρῶν δὲ τήνδε φεῦγε, μὴ σ' ἔλῃ πόθῳ.
 αἶρεῖ γὰρ ἀνδρῶν ὄμματ', ἐξαίρεῖ πόλεις,
 πῖμπρησι δ' οἴκους· ὧδ' ἔχει κηλήματα.
 ἐγὼ νιν οἶδα καὶ σὺ χοῖ πεπονθότες.
 ΕΛ. Μενέλαε, φροίμιον μὲν ἄξιον φόβου 895
 τόδ' ἐστίν· ἐν γὰρ χερσὶ προσπόλων σέθεν
 βία πρὸ τῶνδε δωμάτων ἐκπέμπομαι.

ἀτὰρ σχεδὸν μὲν οἶδά σοι στυγουμένη,
 ὅμως δ' ἐρέσθαι βούλομαι· γυνῶμαι τίνες
 Ἑλλησι καὶ σοὶ τῆς ἐμῆς ψυχῆς πέρι; 900

ME. οὐκ εἰς ἀκριβὲς ἦλθες, ἀλλὰ πᾶς στρατὸς
 κτανεῖν ἐμοί σ' ἔδωκεν, ὅνπερ ἠδίκηεις.

EA. ἔξεστιν οὖν πρὸς ταῦτ' ἀμείψασθαι λόγῳ,
 ὥς οὐ δικάως, ἣν θάνω, θανούμεθα;

ME. οὐκ εἰς λόγους ἐλήλυθ', ἀλλὰ σε κτενῶν. 905

EK. ἄκουσον αὐτῆς, μὴ θάνῃ τοῦδ' ἐνδεής,
 Μενέλαε, καὶ δὸς τοὺς ἐναντίους λόγους
 ἡμῖν κατ' αὐτῆς· τῶν γὰρ ἐν Τροίᾳ κακῶν
 οὐδὲν κάτοισθα. συντεθεὶς δ' ὁ πᾶς λόγος
 κτενεῖ νιν οὕτως ὥστε μηδαμοῦ φυγεῖν. 910

ME. σχολῆς τὸ δῶρον· εἰ δὲ βούλεται λέγειν,
 ἔξεστι. τῶν σῶν δ' οὕνεχ', ὥς μάθῃ, λόγων
 δώσω τόδ' αὐτῇ, τῇσδε δ' οὐ δώσω χάριν.

EA. ἴσως με, κἂν εὖ κἂν κακῶς δόξω λέγειν,
 οὐκ ἀνταμείψει πολεμίαν ἡγούμενος. 915

ἐγὼ δ', ἅ σ' οἶμαι διὰ λόγων ἰόντ' ἐμοῦ
 κατηγορήσειν, ἀντιθεῖς' ἀμείψομαι
 τοῖς σοῖσι τὰ μὰ καὶ τὰ σ' αἰτιάματα.
 πρῶτον μὲν ἀρχὰς ἔτεκεν ἥδε τῶν κακῶν
 Πάριον τεκοῦσα· δεύτερον δ' ἀπώλεσε 920

Τροίαν τε κἄμ' ὁ πρέσβυς οὐ κτανὼν βρέφος,
 θαλοῦ πικρὸν μίμημ', Ἀλέξανδρόν ποτε.
 ἐνθὲνδε τὰπίλοιπ' ἄκουσον ὥς ἔχει.

ἔκρινε τρισδὸν ξεῦγος ὅδε τρισσῶν θεῶν·
 καὶ Παλλάδος μὲν ἦν Ἀλεξάνδρῳ δόσις 925

Φρυγῇ στρατηγοῦνθ' Ἑλλάδ' ἐξανιστάναι,
 Ἥρα δ' ὑπέσχετ' Ἀσιάδ' Εὐρώπῃς θ' ὄρους
 [τυραννίδ' ἔξειν, εἰ σφε κρίνειεν Πάρις]·
 Κύπρις δὲ τοῦμὸν εἶδος ἐκπαγλουμένη

- δώσειν ὑπέσχετ', εἰ θεὰς ὑπερδράμοι 930
 κάλλει. τὸν ἐνθένδ' ὥς ἔχει σκέψαι λόγον·
 νικᾷ Κύπρις θεά, καὶ τοσόνδ' οὔμοι γάμοι
 ὤνησαν Ἑλλάδ', οὐ κρατεῖσθ' ἐκ βαρβάρων,
 οὔτ' εἰς δόρυ σταθέντες, οὐ τυραννίδι.
 ἃ δ' εὐτύχησεν Ἑλλάς, ὠλόμην ἐγὼ 935
 εὐμορφίᾳ πραθεῖσα κῶνειδίξομαι
 ἐξ ὧν ἐχρῆν με στέφανον ἐπὶ κάρᾳ λαβεῖν.
 οὔπω με φήσεις αὐτὰ τὰν ποσὶν λέγειν,
 ὅπως ἀφώρμησ' ἐκ δόμων τῶν σῶν λάθρα.
 ἦλθ' οὐχὶ μικρὰν θεὸν ἔχων αὐτοῦ μέτα 940
 ὁ τῆσδ' ἀλάστωρ, εἴτ' Ἀλέξανδρον θέλεις
 ὀνόματι προσφωνεῖν νιν εἴτε [καὶ Πάριν].
 οὔ, ὦ κάκιστε, σοῖσιν ἐν δόμοις λιπὼν
 Σπάρτης ἀπῆρας νηὶ Κρησίαν χθόνα.
 εἶεν.
 οὐ σ', ἀλλ' ἐμαυτὴν τοῦπὶ τῷδ' ἐρήσομαι· 945
 τί δὴ φρονήσας' ἐκ δόμων ἅμ' ἐσπόμην
 ξένῳ προδοῦσα πατρίδα καὶ δόμους ἐμούς;
 τὴν θεὸν κόλαξε καὶ Διὸς κρείσσαν γενοῦ,
 ὅς τῶν μὲν ἄλλων δαιμόνων ἔχει κράτος,
 κείνης δὲ δοῦλός ἐστι· συγγνώμη δ' ἐμοί. 950
 ἐνθεν δ' ἔχοις ἂν εἰς ἔμ' εὐπρεπῆ λόγον·
 ἐπεὶ θανὼν γῆς ἦλθ' Ἀλέξανδρος μυχούς,
 χρῆν μ', ἥνίκ' οὐκ ἦν θεοπόνητά μου λέχη,
 λιποῦσαν οἴκους ναῦς ἐπ' Ἀργείων μολεῖν.
 ἔσπευδον αὐτὸ τοῦτο· μάρτυρες δέ μοι 955
 πύργων πυλωροὶ ἀπὸ τειχέων σκοποί,
 οἳ πολλάκις μ' ἐφεῦρον ἐξ ἐπάλξεων
 πλεκταῖσιν εἰς γῆν σῶμα κλέπτουσιν τόδε.
 βία δ' ὁ καινός μ' οὔτος ἀρπάσας πόσιν
 Δηίφοβος ἄλοχον εἶχεν ἀκόντων Φρυγῶν. 960

πῶς οὖν ἔτ' ἂν θνήσκοιμ' ἂν ἐνδίκως, πόσι,
 πρὸς σοῦ δικαίως, ἣν ὁ μὲν βία γαμεῖ,
 τὰ δ' οἴκοθεν κεῖν' ἀντὶ νικητηρίων
 πικρῶς ἐδούλευσ' ; εἰ δὲ τῶν θεῶν κρατεῖν
 βούλει, τὸ χρήζειν ἀμαθές ἐστί σοι τόδε. 965

ΧΟ. βασίλει', ἄμυνον σοῖς τέκνοισι καὶ πάτρᾳ
 πειθῶ διαφθείρουσα τῇσδ', ἐπεὶ λέγει
 καλῶς κακοῦργος οὕσα· δεινὸν οὖν τόδε.
 ΕΚ. ταῖς θεαῖσι πρῶτα σύμμαχος γενήσομαι
 καὶ τήνδε δείξω μὴ λέγουσαν ἐνδίκως. 970

ἐγὼ γὰρ Ἦραν παρθένον τε Παλλάδα
 οὐκ εἰς τοσοῦτον ἀμαθίας ἐλθεῖν δοκῶ,
 ὥσθ' ἡ μὲν Ἄργος βαρβάροις ἀπημποῖα,
 Παλλὰς δ' Ἀθήνας Φρυγῇ δουλεύειν ποτέ.
 αἱ παιδιαῖσι καὶ χλιδῇ μορφῆς πέρι 975

ἦλυνθον ἐπ' Ἴδην. τοῦ γὰρ οὐνεκ' ἂν θεὰ
 Ἦρα τοσοῦτον ἔσχ' ἔρωτα καλλονῆς;
 πότερον ἀμείνον' ὥς λάβοι Διὸς πόσιν,
 ἢ γάμον Ἀθάνᾳ θεῶν τινος θηρωμένη,
 ἢ παρθενεῖαν πατρὸς ἐξητήσατο 980

φεύγουσα λέκτρα; μὴ ἀμαθεὺς ποίει θεὰς
 τὸ σὸν κακὸν κοσμοῦσα· μὴ οὐ πείσῃς σοφούς.
 Κύπριν δ' ἔλεξας, ταῦτα γὰρ γέλως πολὺς,
 ἐλθεῖν ἐμῷ ξὺν παιδὶ Μενέλεω δόμους.
 οὐκ ἂν μένους' ἂν ἥσυχός σ' ἐν οὐρανῷ 985

αὐταῖς Ἀμύκλαις ἦγαγεν πρὸς Ἴλιον;
 ἦν οὐμὸς υἱὸς κάλλος ἐκπρεπέστατος,
 ὁ σὸς δ' ἰδὼν νιν νοῦς ἐποιήθη Κύπρις·
 τὰ μῶρα γὰρ πάντ' ἐστὶν Ἀφροδίτῃ βροτοῖς,
 καὶ τοῦνομ' ὀρθῶς ἀφροσύνης ἄρχει θεᾶς. 990
 ὃν εἰσιδοῦσα βαρβάροις ἐσθήμασι
 χρυσῷ τε λαμπρὸν ἐξεμαργώθης φρένας.

ἐν μὲν γὰρ Ἄργει μίκρ' ἔχουσ' ἀνестρέφου,
 Σπάρτης δ' ἀπαλλαχθεῖσα τὴν Φρυγῶν πόλιν
 χρυσῷ ῥέουσας ἥλπισας κατακλύσειν 995
 θαπάναισιν· οὐδ' ἦν ἱκανά σοι τὰ Μενέλεω
 μέλαθρα ταῖς σαῖς ἐγκαθυβρίζειν τρυφαῖς.
 εἶεν, βία γὰρ παῖδα φῆς σ' ἄγειν ἐμόν·
 τίς Σπαρτιατῶν ἦσθετ', ἣ ποῖαν βοὴν
 ἀνωλόλυσας, Κάστορος νεανίου 1000
 τοῦ συζύγου τ' ἔτ' ὄντος οὐ κατ' ἄστρα πω;
 ἐπεὶ δὲ Τροίαν ἦλθες Ἀργεῖοί τέ σου
 κατ' ἔχνος, ἦν δὲ δοριπετῆς ἀγωνία,
 εἰ μὲν τὰ τοῦδε κρείσσον' ἀργέλλοιτό σοι,
 Μενέλαον ἦνεις, παῖς ὅπως λυποῖτ' ἐμὸς 1005
 ἔχων ἔρωτος ἀνταγωνιστὴν μέγαν·
 εἰ δ' εὐτυχοῖεν Τρῶες, οὐδὲν ἦν ὄδε.
 εἰς τὴν τύχην δ' ὀρῶσα τοῦτ' ἦσκεις ὅπως
 ἔποι' ἄμ' αὐτῇ, τάρετῃ δ' οὐκ ἤθελες.
 κἄπειτα πλεκταῖς σῶμα σὸν κλέπτειν λέγεις 1010
 πύργων καθιεῖσ' ὥς μένουσ' ἀκουσίως;
 ποῦ δῆτ' ἐλήφθης ἢ βρόχους ἀρωμένῃ
 ἢ φάσγανον θήγους, ἃ γενναία γυνὴ
 δράσειεν ἂν ποθοῦσα τὸν πάρος πόσιν;
 καίτοι γ' ἐνουθέτουν σε πολλὰ πολλάκις· 1015
 ὦ θύρατερ' ἔξελθ', οἱ δ' ἐμοὶ παῖδες γάμους
 ἄλλους γαμοῦσι, σὲ δ' ἐπὶ ναῦς Ἀχαῖκας
 πέμψω συνεκκλέψασα, καὶ παῦσον μάχης
 Ἑλληνας ἡμᾶς τ'. ἀλλὰ σοὶ τόδ' ἦν πικρόν.
 ἐν τοῖς Ἀλεξάνδρου γὰρ ὕβριζες δόμοις 1020
 καὶ προσκυνεῖσθαι βαρβάρων ὕπ' ἠθελες.
 μεγάλη γὰρ ἦν σοι· κἀπὶ τοῖσδε σὸν δέμας
 ἐξῆλθες ἀσκήσασα κἄβλεψας πόσει
 τὸν αὐτὸν αἰθέρ', ὦ κατάπτυστον κάρα·

ἦν χοῆν ταπεινὴν ἐν πέπλων ἐρειπίοις 1025
 φρίκη τρέμουσαν κρᾶτ' ἀπεσκυθισμένην
 ἔλθεῖν, τὸ σῶφρον τῆς ἀναιδείας πλέον
 ἔχουσαν ἐπὶ τοῖς πρόσθεν ἡμαρτημένοις.

Μενέλα', ἔν' εἰδῆς οἱ τελευτήσω λόγον,
 στεφάνωσον Ἑλλάδ' ἀξίως τήνδε κτανὼν 1030
 σαυτοῦ, νόμον δὲ τόνδε ταῖς ἄλλαισι θῆς
 γυναιξί, θνήσκεῖν ἥτις ἂν προδῶ πόσιν.

ΧΟ. Μενέλαε, προγόνων ἀξίως δόμων τε σῶν
 τιῖσαι δάμαρτα κάφελου πρὸς Ἑλλάδος
 ψόγον τὸ θῆλυ τ', εὐγενὴς ἐχθροῖς φανείς. 1035

ΜΕ. ἐμοὶ σὺ συμπέπτωκας εἰς ταῦτον λόγον,
 ἐκουσίως τήνδ' ἐκ δόμων ἔλθεῖν ἐμῶν
 ξένας ἐς εὐνάς, χῆ Κύπρις κόμπου χάριν
 λόγοις ἐνεῖται. βαῖνε λευστήρων πέλας
 πόνους τ' Ἀχαιῶν ἀπόδος ἐν μικρῷ μακροῦς 1040
 θανοῦς', ἔν' εἰδῆς μὴ καταισχύνειν ἐμέ.

ΕΛ. μῆ, πρὸς σε γονάτων, τὴν νόσον τὴν τῶν θεῶν
 προσθεῖς ἐμοὶ κτάνης με, συγγίγνωσκε δέ.

ΕΚ. μηδ' οὐς ἀπέκτειν' ἦδε συμμάχους προδῶς·
 ἐγὼ πρὸ κείνων καὶ τέκνων σε λίσσομαι. 1045

ΜΕ. παῦσαι, γεραιά· τῆσδε δ' οὐκ ἐφρόντισα.
 λέγω δὲ προσπόλοισι πρὸς πρύμνας νεῶν
 τήνδ' ἐκκομίζειν, ἔνθα ναυστολήσεται.

ΕΚ. μῆ νυν νεῶς σοὶ ταῦτον εἰσβήτω σκάφος.

ΜΕ. τί δ' ἔστι; μεῖζον βριῖθος ἢ πάροιθ' ἔχει; 1050

ΕΚ. οὐκ ἔστ' ἐραστῆς ὅστις οὐκ αἰεὶ φιλεῖ.

ΜΕ. ὅπως ἂν ἐκβῇ τῶν ἐρωμένων ὁ νοῦς.
 ἔσται δ' ἂ βούλει· ναῦν γὰρ οὐκ εἰσβήσεται
 εἰς ἥνπερ ἡμεῖς· καὶ γὰρ οὐ κακῶς λέγεις·
 ἔλθοῦσα δ' Ἄργος ὥσπερ ἀξία κακῶς 1055
 κακὴ θανεῖται καὶ γυναιξὶ σῶφρονεῖν

πάσαισι θήσει. ῥάδιον μὲν οὐ τόδε·
 ὅμως δ' ὁ τῆσδ' ὄλεθρος εἰς φόβον βαλεῖ
 τὸ μῶρον αὐτῶν, κἄν ἔτ' ὦσ' αἰσχίονες.

ΧΟ. οὕτω δὴ τὸν ἐν Ἰλίῳ στρ. 1060

ναὸν καὶ θυόεντα βω-
 μὸν προύδωκας Ἀχαιοῖς,
 ὦ Ζεῦ, καὶ πελάνων φλόγα
 σμύρνης αἰθερίας τε κα-
 πνὸν καὶ Πέργαμον ἱρὰν 1065

Ἰδαῖά τ' Ἰδαῖα κισσοφόρα νάπη
 χιόνι κατάρυτα ποταμῖα
 τέρμονά τε πρωτόβολον ἀελίῳ
 τὰν καταλαμπομένην ζαθέαν θεράπνυν. 1070

φροῦδαί σοι θυσίαι χορῶν τ' ἀντ.

εὖφημοι κέλαδοι κατ' ὄρ-
 φναν τε παννυχίδες θεῶν
 χρυσέων τε ξοάνων τύποι
 Φρυγῶν τε ζάθεοι σελαῖ- 1075

ναι συνδῶδεκα πλήθει.
 μέλει μέλει μοι τάδ' εἰ φρονεῖς, ἄναξ,
 οὐράνιον ἔδρανον ἐπιβεβῶς
 αἰθέρα τ' ἐμᾶς πόλεος ὀλομένης,
 ἂν πυρὸς αἰθομένα κατέλυσεν ὀρμά. 1080

ὦ φίλος ὦ πόσι μοι, στρ.

σὺ μὲν φθίμενος ἀλαίνεις
 ἄθραπτος ἄνυδρος, ἐμὲ δὲ πόντιον σκάφος 1085

αἰσσον πτεροῖσι πορεύσει
 ἱππόβοτον Ἄργος, ἵνα τείχεα
 λάινα Κυκλώπι' οὐράνια νέμονται.
 τέκνων δὲ πληῆθος ἐν πύλαις

1060 — 1070 = 1071 — 1080

1081 — 1099 = 1100 — 1117

δάκρυσι κατάθορα στένει, βοᾷ βοᾷ·
 μᾶτερ, ὦμοι, μόναν δὴ μ' Ἀχαιοὶ κομί-
 ζουσι σέθεν ἀπ' ὁμμάτων

1090

κυανέαν ἐπὶ ναῦν

εἰναλίοισι πλάταις

1095

ἢ Σαλαμῖν' ἱερὰν

ἢ δίπορον κορυφὰν

Ἴσθμιον, ἔνθα πύλας

Πέλοπος ἔχουσιν ἔδραι.

εἴθ' ἀκάτου Μενέλα

ἀντ. 1100

μέσον πέλαγος ἰούσας,

δίπαλτον ἱερὸν ἀνὰ μέσον πλάταν πέσοι

Αἰγαίου κεραυνοφαῆς πῦρ,

Ἰλιόθεν ὅς με πολύδακρυν

1105

Ἑλλάδι λάτρευμα γᾶθεν ἔξορίζει·

χρύσεια δ' ἔνοπτρα, παρθένων

χάριτας, ἔχουσα τυγχάνει Διὸς κόρα·

μηδὲ γαῖάν ποτ' ἔλθοι Λάκαιναν πατρῶ-

1110

ὀν τε θάλαμον ἐστίας,

μηδὲ πόλιν Πιτάνας

χαλκόπυλόν τε θεάν,

δύσγαμον αἵσχος ἑλὼν

Ἑλλάδι τᾶ μεγάλα

1115

καὶ Σιμοεντιάσιν

μέλεα πάθεα ῥοαῖσιν.

ὠὸ ὠὸ,

καιναὶ καινῶν μεταβάλλουσαι

χθονὶ συντυχίαι. λεύσσετε Τρώων

τόνδ' Ἀστυάνακτ' ἄλοχοι μέλεια

1120

νεκρὸν, ὃν πύργων δίσκημα πικρὸν

Δαναοὶ κτείναντες ἔχουσιν.

ΤΑ. Ἐκάβη, νεῶς μὲν πίτυλος εἷς λελειμμένος

λάφυρα τ' ἀπίλοιπ' Ἀχιλλείου τόκου
 μέλλει πρὸς ἅκτας ναυστολεῖν Φθιώτιδας· 1125
 αὐτὸς δ' ἀνῆκται Νεοπτόλεμος, καινὰς τινας
 Πηλέως ἀκούσας συμφοράς, ὥς νιν χθονὸς
 Ἄκαστος ἐκβέβληκεν ὁ Πελίου γόνος.
 οὐ̃ θάσσον οὐ̃νεκ' ἧ χάριν μονῆς ἔχων
 φροῦδος, μετ' αὐτοῦ δ' Ἀνδρομάχη, πολλῶν
 ἔμοι 1130
 δακρύων ἄρωγός, ἥνικ' ἐξώρμα χθονὸς
 πάτραν τ' ἀναστένουσα καὶ τὸν Ἑκτορος
 τύμβον προσεννέπουσα. καί σφ' ἠτήσατο
 θάψαι νεκρὸν τόνδ', ὃς πεσὼν ἐκ τειχέων
 ψυχὴν ἀφῆκεν Ἑκτορος τοῦ σοῦ γόνος, 1135
 φόβον τ' Ἀχαιῶν, χαλκόνωτον ἀσπίδα
 τήνδ', ἣν πατήρ τοῦδ' ἄμφι πλευρ' ἐβάλλετο,
 μή νιν πορεῦσαι Πηλέως ἐφ' ἐστίαν,
 μηδ' εἰς τὸν αὐτὸν θάλαμον, οὐ̃ νυμφεύσεται
 μήτηρ νεκροῦ τοῦδ' Ἀνδρομάχη, λύπας ὀρᾶν, 1140
 ἀλλ' ἀντὶ κέδρου περιβόλων τε λαῖνων
 ἐν τῇδε θάψαι παῖδα· σὰς δ' ἐς ὠλένας
 δοῦναι, πέπλοισιν ὥς περιστείλῃς νεκρὸν
 στεφάνοις θ', ὅση σοι δύναμις, ὥς ἔχει τὰ σά,
 ἐπεὶ βέβηκε καὶ τὸ δεσπότητος τάχος 1145
 ἀφείλετ' αὐτὴν παῖδα μὴ δοῦναι τάφῳ.
 ἡμεῖς μὲν οὖν, ὅταν σὺ κοσμήσῃς νέκυν,
 γῆν τῷδ' ἐπαμπισχόντες ἀροῦμεν δόρυ·
 σὺ δ' ὥς τάχιστα πρᾶσσε τὰ πεσταλμένα.
 ἐνὸς μὲν οὖν μόχθου σ' ἀπαλλάξας ἔχω· 1150
 Σκαμανδρίους γὰρ τάσδε διαπερῶν ῥοὰς
 ἔλουσα νεκρὸν κἀπένιψα τραύματα.
 ἀλλ' εἴμ' ὀρυκτὸν τῷδ' ἀναρρήξω τάφον,

ΕΚ.

ὥς σὺντομ' ἡμῖν τὰπ' ἐμοῦ τε καὶ ποδὸ σου
εἰς ἔν ξυνελθόντ' οἴκαδ' ὀρμήσῃ πλάτην. 1155

θῆσθ' ἀμφίτονον ἀσπίδ' Ἑκτορος πέδῳ,
λυπρὸν θέαμα κοῦ φίλον λεύσσειν ἐμοί.
ὦ μείζον' ὄγκον δορὸς ἔχοντες ἢ φρενῶν,
τί τόνδ', Ἀχαιοί, παῖδα δειδαντες φόνον
καινὸν διειργάσασθε; μὴ Τροίαν ποτὲ 1160
πεσοῦσαν ὀρθώσειεν; οὐδὲν ἦτ' ἄρα·

ὅθ' Ἑκτορος μὲν εὐτυχοῦντος εἰς δόρυ
διολλύμεσθα μυρίου τ' ἄλλης χειρός·
πόλεως δ' ἀλούσης καὶ Φρυγῶν ἐφθαρμένων
βρέφος τοσόνδ' ἐδείσατ'; οὐκ αἰνῶ φόβον, 1165
ὅστις φοβεῖται μὴ διεξελθὼν λόγῳ.

ὦ φίλταθ', ὥς σοι θάνατος ἦλθε δυστυχῆς.
εἰ μὲν γὰρ ἔθανες πρὸ πόλεως, ἥβης τυχὼν
γάμων τε καὶ τῆς ἰσοθέου τυραννίδος,
μακάριος ἦσθ' ἄν, εἴ τι τῶνδε μακάριον. 1170

νῦν αὖτ' ἰδὼν μὲν γνούς τε σῇ ψυχῇ, τέκνον,
οὐκ οἶσθ', ἐχρήσω δ' οὐδὲν ἐν δόμοις ἔχων.
δύστηνε, κρατὸς ὥς σ' ἔκειρεν ἀθλίως
τείχη πατρῴα, Λοξίου πυργώματα,
ὃν πόλλ' ἐκήπευσ' ἢ τεκοῦσα βόστροχον 1175

φιλήμασιν τ' ἔδωκεν, ἔνθεν ἐκγελαῖ
ὀστέων ραγέντων φόνος, ἵν' αἰσχροῖα μὴ λέγω.
ὦ χεῖρες, ὥς εἰκούς μὲν ἠδείας πατρὸς
κένκτησθ', ἐν ἄρθροισι δ' ἐκλυτοι πρόκεισθ' [μοι].

ὦ πολλὰ κόμπους ἐκβαλὼν φίλον στόμα, 1180
ὄλωλας, ἐψεύσω μ', ὅτ' εἰσπίπτων λέχος,
ὦ μητερ, ἡὔδας, ἢ πολὺν σοι βοστρούχων
πλόκαμον κεροῦμαι πρὸς τάφον θ' ὀμηλίκων
κώμους ἀπάξω, φίλα διδοὺς προσφθέγματα.

σὺ δ' οὐκ ἔμ', ἀλλ' ἐγὼ σὲ τὸν νεώτερον 1185

- γραῦς ἄπολις ἄτεκνος ἄθλιον θάπτω νεκρόν.
 οἶμοι, τὰ πόλλ' ἀσπάσμαθ' αἶ τ' ἐμαὶ τροφαὶ
 ὕπνοι τ' ἐκεῖνοι φροῦδά μοι. τί καὶ ποτε
 γράψειεν ἄν σε μουσοποιὸς ἐν τάφῳ;
 τὸν παῖδα τόνδ' ἔκτειναν Ἀργεῖοί ποτε 1190
 δείσαντες; αἰσχροὺς τοῦ πύγμα μῦθ' ἔλεγε
 ἄλλ' οὖν πατρώων οὐ λαχὼν ἔξεις ὅμως
 ἐν ἧ ταφῇ χαλκόνωτον ἰτέαν.
 ὦ καλλίπηχυν Ἑκτορος βραχίονα
 σῶξουσ', ἄριστον φύλακ' ἀπώλεσας σέθεν. 1195
 ὥς ἡδὺς ἐν πόρπακι σὸς κεῖται τύπος
 ἱτύος τ' ἐν εὐτόρνοισι περιδρομοῖς ἰδρώς,
 ὃν ἐκ μετώπου πολλάκις πόρους ἔχων
 ἔσταξεν Ἑκτωρ προστιθεὶς γενειάδι.
 φέρετε, κομίζετ' ἄθλίῳ κόσμον νεκρῷ 1200
 ἐκ τῶν παρόντων· οὐ γὰρ εἰς κάλλος τύχας
 θαίμων δίδωσιν· ὧν δ' ἔχω, λήψει τάδε.
 θνητῶν δὲ μῶρος ὅστις εὖ πράσσειν δοκῶν
 βέβαια χαίρει· τοῖς τρόποις γὰρ αἶ τύχαι
 ἔμπληκτος ὥς ἄνθρωπος, ἄλλοτ' ἄλλοσε 1205
 πηδῶσι, κούδεις αὐτὸς εὐτυχεῖ ποτε.
- XO. καὶ μὴν πρὸ χειρῶν αἶδε σοι σκυλευμάτων
 Φρυγίων φέρουσι κόσμον ἐξάπτειν νεκρῷ.
- EK. ὦ τέκνον, οὐχ ἵπποισι νικήσαντά σε
 οὐδ' ἡλικας τόξοισιν, οὓς Φρύγες νόμους 1210
 τιμῶσιν, οὐκ εἰς πλησμονὰς θηρώμενοι,
 μήτηρ πατρός σοι προστίθης ἀγάματα
 τῶν σῶν ποτ' ὄντων, νῦν δέ σ' ἡ θεοστυγῆς
 ἀφείλεθ' Ἑλένη, πρὸς δὲ καὶ ψυχὴν σέθεν
 ἔκτεινε καὶ πάντ' οἶκον ἐξαπώλεσεν. 1215
- XO. ἔῃ, φρενῶν

ἔθιγες ἔθιγες· ὦ μέγας ἐμοί ποτ' ὦν
ἀνάκτωρ πόλεως.

ΕΚ. ἂ δ' ἐν γάμοις ἐχρῆν σε προσθέσθαι χοῦ
'Ἀσιατίδων γήμαντα τὴν ὑπερτάτην,
Φρύγια πέπλων ἀγάματ' ἐξάπτω χροός. 1220
σύ τ' ὦ ποτ' οὔσα καλλίνικε μυρίων
μῆτερ τροπαίων, Ἐκτορος φίλον σάκος,
στεφανοῦ· θανεῖ γὰρ οὐ θανοῦσα σὺν νεκρῷ·
ἐπεὶ σὲ πολλῷ μᾶλλον ἢ τὰ τοῦ σοφοῦ
κακοῦ τ' Ὀδυσσέως ἄξιον τιμᾶν ὅπλα. 1225

ΧΟ. αἰαῖ αἰαῖ,
πικρὸν ὄδυρμα γαῖά σ', ὦ
τέκνον, δέξεται.
στέναξον, μάτηρ, ΕΚ. αἰαῖ.

ΧΟ. νεκρῶν ἱακχον. ΕΚ. οἴμοι μοι. 1230

ΧΟ. οἴμοι δῆτα σῶν ἀλάστων κακῶν.

ΕΚ. τελαμῶσιν ἔλκη τὰ μὲν ἐγὼ σ' ἰάσομαι,
τλήμων ἱατρὸς ὄνομ' ἔχουσα, τᾶργα δ' οὔ·
τὰ δ' ἐν νεκροῖσι φροντιεῖ πατὴρ σέθεν.

ΧΟ. ἄρασσ' ἄρασσε κραῖτα 1235
πιτύλους διδοῦσα χειρός, ἰὼ μοί μοι.

ΕΚ. ὦ φίλταται γυναικες.

ΧΟ. * * * ἔνεπε, τίνα θροεῖς αὐδάν;

ΕΚ. οὐκ ἦν ἄρ' ἐν θεοῖσι πλὴν οὐμοὶ πόνοι 1240
Τροία τε πόλεων ἔκκριτον μισουμένη,
μάτην δ' ἐβουθυτοῦμεν. εἰ δ' ἡμᾶς θεὸς
ἔστρεψε τᾶνω περιβαλὼν κάτῳ χθονός,
ἀφανεῖς ἂν ὄντες οὐκ ἂν ὑμνηθείμεν ἂν
μούσαις ἀοιδὰς δόντες ἀφθίτους βροτῶν. 1245
χωρεῖτε, θάπτειτ' ἀθλίῳ τύμβῳ νεκρόν·
ἔχει γὰρ οἷα δεῖ γε νεοτέρων στέφη.

δοκῶ δὲ τοῖς θανοῦσι διαφέρειν βραχύ,

εἰ πλουσίῳν τις τεύξεται κτερισμάτων.
κενὸν δὲ γαύρωμ' ἐστὶ τῶν ζώντων τόδε.

1250

ΧΟ. ἰὼ ἰὼ·

μελέα μάτηρ, ἥ τὰς μεγάλας
ἐλπίδας ἐν σοὶ κατέκαμψε βίου.
μέγα δ' ὀλβισθεὶς ὥς ἐκ πατέρων
ἀγαθῶν ἐγένου,
δεινῷ θανάτῳ διόλωλας.

1255

ἔα ἔα·

τίνας Ἰλιάσιν ταῖσδ' ἐν κορυφαῖς
λεύσσω φλογέας δαλοῖσι χέρας
διερέσσοντας; μέλλει Τροία
καινὸν τι κακὸν προσέσσεσθαι.

ΤΑ. αὐτῷ λοχαγοῖς, οἳ τέταχθε πιμπράναι

1260

Πριάμου τόδ' ἄστν, μηκέτ' ἀργοῦσαν φλόγα
ἐν χερσὶ σῶζειν, ἀλλὰ πῦρ ἐνιέναι,
ὥς ἂν κατασκάψαντες Ἰλίου πόλιν
στελλώμεθ' οἴκαδ' ἄσμενοι Τροίας ἄπο.

ὕμεῖς δ', ἵν' αὐτὸς λόγος ἔχη μορφὰς δύο,
χωρεῖτε Τρώων παῖδες, ὀρθίαν ὅταν
σάλπιγγος ἡχῶ δῶσιν ἀρχηγοὶ στρατοῦ,
πρὸς ναῦς Ἀχαιῶν, ὥς ἀποστέλλησθε γῆς.

1265

σύ τ' ὦ γεραιὰ δυστυχεστάτη γύναι,
ἔπου. μεθήκουσιν σ' Ὀδυσσέως πάρα
οἷδ', ᾧ σε δούλην κληῖρος ἐκπέμπει χθονός.

1270

ΕΚ. οἷ γὼ τάλαινα· τοῦτο δὴ τὸ λοίσθιον
καὶ τέρμα πάντων ἦλθε τῶν ἐμῶν κακῶν·
ἔξειμι πατρίδος, πόλις ὑφάπτεται πυρὶ.

ἀλλ' ὦ γεραιὲ πούς, ἐπίσπευσον μόλις,
ὥς ἀσπάζωμαι τὴν ταλαίπωρον πόλιν.

1275

ὦ μεγάλα δὴ ποτ' ἐμπνέουσ' ἐν βαρβάροις
Τροία, τὸ κλεινὸν ὄνομ' ἀφαιρήσει τάχα.

πιμπρᾶσί σ', ἡμᾶς δ' ἐξάγουσ' ἤδη χθονὸς
 δούλας· ἰὼ θεοί. καὶ τί τοὺς θεοὺς καλῶ; 1280
 καὶ πρὶν γὰρ οὐκ ἤκουσαν ἀνακαλούμενοι.
 φέρ' εἰς πυρὰν δράμωμεν, ὥς ἀλλιστά μοι
 σὺν τῇδε πατρίδι κατθανεῖν πυρουμένη.

ΤΑ. ἐνθουσιᾶς, δύστηνε, τοῖς σαντῆς κακοῖς·
 ἀλλ' ἄγετε, μὴ φείδεσθ'· Ὀδυσσέως δὲ χρὴ 1285
 εἰς χεῖρα δοῦναι τήνδε καὶ πέμπειν γέρας.

ΕΚ. ὀτοτοτοτοτοῖ.

Κρόνιε, πρύτανι Φρύγιε, γενέτα
 πάτερ, ἀνάξια τᾶς Δαρδάνου
 γονᾶς τὰδ' οἷα πάσχομεν δέδορκας; 1290

ΧΟ. δέδορκεν, ἅ δὲ μεγαλόπολις
 ἄπολις ὅλωλεν οὐδ' ἔτ' ἔστι Τροία.

ΕΚ. ὀτοτοτοτοτοῖ.

λέλαμπεν Ἴλιος περ- 1295
 γάμων τε πυρὶ καταίθεται τέραμνα
 καὶ πόλις ἄκρα τε τειχέων.

ΧΟ. πτέρυγι δὲ καπνὸς ὥς τις οὐ-
 ρανία πεσοῦσα δορὶ καταφθίνει γᾶ.
 μαλερὰ μέλαθρα πυρὶ κατάδρομα 1300
 δαῖτω τε λόγχῃ.

ΕΚ. ἰὼ γᾶ τρόφιμε τῶν ἐμῶν τέκνων. στρ.

ΧΟ. ἔ ἔ.

ΕΚ. ὦ τέκνα, κλύετε, μάθετε ματρὸς αὐδάν.

ΧΟ. ἱαλέμῳ τοὺς θανόντας ἀπύεις.

ΕΚ. γεραῖά τ' εἰς πέδον τιθεῖσα μέλεα, 1305
 καὶ χερσὶ γαῖαν κτυποῦσα δισσαῖς.

ΧΟ. διάδοχά σοι γόνυ τίθημι γαῖα
 τοὺς ἐμούς καλοῦσα νέρθην
 ἀθλίους ἀκοίτας.

- ΕΚ. ἀγόμεθα φερόμεθ' ΧΟ. ἄλγος ἄλγος βοᾷς. 1310
ΕΚ. δούλειον ὑπὸ μέλαθρον ἐκ πάτρας γ' ἐμᾶς.
ὠὖ ὠὖ.
Πρίαμε Πρίαμε, σὺ μὲν ὀλόμενος
ἄταφος ἄφιλος
ἄτας ἐμᾶς ἄιστος εἶ.
ΧΟ. μέλας γὰρ ὅσσε κατακαλύπτει 1315
θάνατος ὅσιον ἀνοσίαις σφαγαῖσιν.
ΕΚ. ὠὖ θεῶν μέλαθρα καὶ πόλις φίλα. ἀντ.
ΧΟ. ἔ ἔ.
ΕΚ. τὰν φόνιον ἔχετε φλόγα δορός τε λόγχαν.
ΧΟ. τάχ' εἰς φίλαν γᾶν πεσεῖσθ' ἀνώνυμοι.
ΕΚ. κόνις δ' ἴσα καπνῷ πτέρυγι πρὸς αἰθέρ' 1320
ἄιστον οἴκων ἐμῶν με θήσει.
ΧΟ. ὄνομα δὲ γᾶς ἀφανὲς εἶσιν· ἄλλα δ'
ἄλλο φροῦδον, οὐδ' ἔτ' ἔστιν
ἂ τάλαινα Τροία.
ΕΚ. ἐμάθετ', ἐκλύετε; ΧΟ. περγάμων κτύπον. 1325
ΕΚ. ἔνοσις ἅπασαν ἔνοσις ἐπικλύσει πόλιν.
ὠὖ ὠὖ,
τρομερὰ τρομερὰ μέλεα, φέρετ' ἐ-
μὸν ἵχνος. ἴτ' ἐπὶ [τάλαιναν]
δούλειον ἀμέραν βίον. 1330
ΧΟ. ὠὖ τάλαινα πόλις· ὅμως δὲ
πρόφερε πόδα σὸν ἐπὶ πλάτας Ἀχαιῶν.

ΦΟΙΝΙΣΣΑΙ.

ΤΑ ΤΟΥ ΔΡΑΜΑΤΟΣ ΠΡΟΣΩΠΑ.

ΙΟΚΑΣΤΗ.

ΠΑΙΔΑΓΩΓΟΣ.

ΑΝΤΙΓΟΝΗ.

ΧΟΡΟΣ ΦΟΙΝΙΣΣΩΝ ΓΥΝΑΙΚΩΝ.

ΠΟΛΥΤΡΕΪΚΗΣ.

ΕΤΕΟΚΛΗΣ.

ΚΡΕΩΝ.

ΜΕΝΟΙΚΕΥΣ.

ΤΕΙΡΕΣΙΑΣ.

ΑΓΓΕΛΟΣ.

ΕΤΕΡΟΣ ΑΓΓΕΛΟΣ.

ΟΙΔΙΠΟΥΣ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ.

Ἐτεοκλῆς παραλαβὼν τὴν Θηβῶν βασιλείαν ἀπο-
 στερεῖ τοῦ μέρους τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ Πολυνείκην·
 φυγὰς δ' ἐκεῖνος εἰς Ἄργος παραγενόμενος ἔγημε τὴν
 θυγατέρα τοῦ βασιλέως Ἀδράστου. κατελθεῖν δὲ εἰς
 τὴν πατρίδα φιλοτιμούμενος καὶ πείσας τὸν πενθε-
 ρόν, συνήθροισεν ἀξιόχρεων στρατὸν κατὰ τοῦ ἀδελ- 5
 φοῦ καὶ εἰς Θήβας ἐλήλυθεν. ἡ δὲ μήτηρ αὐτοῦ Ἰοκά-
 στη ἔπεισεν αὐτὸν ὑπόσπονδον ἐλθεῖν εἰς τὴν πόλιν
 καὶ διαλεχθῆναι πρότερον τῷ ἀδελφῷ περὶ τῆς ἀρ-
 χῆς· δεινοπροσώπήσαντος δὲ ὑπὸ τῆς τυραννίδος τοῦ
 Ἐτεοκλέους ἡ μὲν Ἰοκάστη τὰ τέκνα εἰς φιλίαν συν- 10
 αγαγεῖν οὐκ ἠδύνατο· Πολυνείκης δὲ ὥς πρὸς πολέ-
 μιον λοιπὸν παραταξάμενος ἀνεχώρησε τῆς πόλεως.
 ἔχρησε δὲ ὁ Τειρεσίας νικήσειν τοὺς ἐκ τῆς πόλεως,
 ἐὰν ὁ παῖς Κρέοντος Μενοικεὺς σφάγιον Ἄρει γένη-
 ται. ὁ μὲν οὖν Κρέων ἠρνήσατο ἐπιδοῦναι τῇ πόλει 15
 τὸν παῖδα· ὁ δὲ νεανίσκος ἐβούλετο καὶ τοῦ πατρὸς
 αὐτοῦ φυγὴν μετὰ χρημάτων διδόντος ἑαυτὸν ἀπέ-
 σφαξε. Θηβαῖοι δὲ τοὺς ἡγεμόνας τῶν Ἀργείων ἔσφα-
 ξαν. Ἐτεοκλῆς δὲ καὶ Πολυνείκης μονομαχήσαντες
 ἀνείλον ἀλλήλους. ἡ μὲν οὖν μήτηρ αὐτῶν εὐροῦσα 20
 νεκροὺς τοὺς υἱοὺς κατέσφαξεν ἑαυτήν· ὁ δὲ ταύτης
 ἀδελφὸς Κρέων παρέλαβε τὴν δυναστείαν. οἱ δὲ Ἀρ-
 γεῖοι νικηθέντες τῆς μάχης ἀνεχώρησαν. Κρέων δὲ
 δυσχερῶς φέρων τοὺς μὲν ὑπὸ τῇ Καδμείᾳ τῶν πο-

λεμίων πεσόντας οὐκ ἔδωκεν εἰς ταφήν, Πολυνείκην
δὲ ἀκήδευτον ἔρριψεν, Οἰδίπουν δὲ φυγάδα τῆς πα-
τρίδος ἀπέπεμψεν, ἐφ' ὧν μὲν οὐ φυλάξας τὸν ἀν-
θρώπινον νόμον, ἐφ' ὧν δὲ τὴν ὀργὴν λογοποιήσας
5 οὐδὲ παρὰ τὴν δυστυχίαν ἐλεήσας.

ΑΛΛΩΣ.

Περιπαθεῖς ἄγαν αἱ Φοίνισσαι τῇ τραγωδίᾳ.
ἀπώλετο γὰρ ὁ Κρέοντος υἱὸς ἀπὸ τοῦ τείχους ὑπὲρ
10 τῆς πόλεως ἀποθανών· ἀπέθανον δὲ καὶ οἱ δύο ἀδελ-
φοὶ ὑπ' ἀλλήλων, καὶ Ἰοκάστη ἡ μήτηρ αὐτῶν ἐαυ-
τὴν ἀνεῖλεν ἐπὶ τοῖς παισὶ, καὶ οἱ ἐπὶ Θήβας στρα-
τευόμενοι Ἀργεῖοι ἀπώλοντο, καὶ ἄταφος Πολυνεί-
κης πρόκειται, καὶ Οἰδίπους τῆς πατρίδος ἐκβάλλεται
15 καὶ σὺν αὐτῷ ἡ θυγάτηρ Ἀντιγόνη. ἔστι δὲ τὸ δρᾶμα
καὶ πολυπρόσωπον καὶ γνωμῶν πολλῶν μεστὸν καὶ
καλῶν. [ὁ χορὸς ἐκ Φοινισσῶν παρθένων, ὅθεν καὶ
τὸ δρᾶμα ἐπεκλήθη, τῶν ἐκ τῆς Παλαιτύρου.]

20

ΑΛΛΩΣ.

Ἔστι μὲν ταῖς σκηνικαῖς ὅψεσι καλὸν τὸ δρᾶμα
* * * ἐπεὶ καὶ παραπληρωματικόν. ἢ τε ἀπὸ τῶν τει-
χέων Ἀντιγόνη θεωροῦσα μέρος οὐκ ἔστι τοῦ δρᾶμα-
τος, καὶ ὑπόσπονδος Πολυνείκης οὐδενὸς ἕνεκα πα-
25 ραγίνεται, ὃ τε ἐπὶ πᾶσι μετ' ὧδῆς ἀδολέσχου φυγα-
δενόμενος Οἰδίπους προσέρριπται διὰ κενῆς.

ΑΛΛΩΣ.

Ἀρπασθείσης Εὐρώπης ὑπὸ Διὸς γενομένου
30 ταύρου καὶ μετακομισθείσης ἀπὸ Φοινίκης διὰ θα-
λάττης εἰς Κρήτην, ὁ μὲν πατήρ αὐτῆς Ἀγήμερος
ἐπέμψεν τὸν υἱὸν Κάδμον ἐπὶ ζήτησιν τῆς κόρης εἰ-

πάν, εἰ μὴ ταύτην εὐρώων ἄξιοι, μηδ' ἂν αὐτὸν ἐπανε-
 λθεῖν οἴκαδε. Κάδμος δὲ οὐκ ἔχων ὅ τι καὶ δράσειε,
 μόνην ἔγνω τῆς ἀπορίας λύσιν καταφυγεῖν εἰς Ἀπόλλω
 καὶ τούτου γνῶναι τί δεῖ ποιεῖν. ἔλθων οὖν εἰς Δελ-
 φούς ἤρετο τοῦτον περὶ τῆς ἀδελφῆς· καὶ ὃς χρᾶ μὲν 5
 οὐδὲν αὐτῷ περὶ τῆς Εὐρώπης, λέγει δὲ ὡς ἐξελθόντα
 ἐκεῖθεν, ἀκολουθήσαντα βοῖ, οἳ ἂν αὕτη γε πέσῃ,
 κάκεϊ κτίζειν πόλιν. ὁ δὲ πεισθεὶς τῷ χρησμῷ τὴν μὲν
 πρὸς τὴν πατρίδα ἐπάνοδον εἶασε, βοῦν δὲ κατὰ
 τύχην εὐρώων ἡγεμόνα τῆς ὁδοῦ ἐποίησατο. ἔλθούσης 10
 δὲ αὐτῆς ἐν ᾧ νῦν ἐστήκασι τόπῳ αἱ Θῆβαι κάκεϊ πα-
 ραχρῆμα πεσοῦσης, ἔγνω τε οὗτος τὸν χρησμὸν τελεσ-
 φόρον καὶ πόλιν ἐπτάπυλον κτίζει τὰς Θήβας ὁμο-
 νύμους τῶν ἑκατονταπύλων Αἰγυπτίων Θηβῶν, χρη-
 σάμενος ἐπιστήμονι τῆς οἰκοδομῆς καὶ ἐργάτῃ Ἀμ- 15
 φίονι τῷ μουσικῷ· τοῦτον γάρ φασιν ἀνακρουόμενον
 μέλος θέλγειν τε τῷ μέλει τοὺς λίθους καὶ ἄλλεπαλ-
 λήλως αὐτῶν τιθεμένων ἀποδειξάμεναι τὰ τείχη· πύλας
 δὲ ἔχειν τὴν πόλιν ἐπτά, ἐπειδὴ καὶ οἱ τῆς λύρας
 τόνοι ἐπτά εἰσι. καὶ τὸ μὲν μυθῶδες τοιοῦτον· πέ- 20
 πλασται δὲ διὰ τὸ ἄκρως ἡρμόσθαι τὰ τείχη πρὸς ἄλ-
 ληλα· ἡ γὰρ ἁρμονία μουσικῆς ἴδιον.

Κάδμος οὖν γήμας τὴν Ἀφροδίτης καὶ Ἄρεως
 παῖδα Ἀρμονίαν ἐγέννησε Πολύδωρον, ὁ δὲ Λάβδα-
 κον, ὁ δὲ Λάιον. οὗτος ἀφικόμενός ποτε εἰς Ἥλιν καὶ 25
 τὸν τοῦ Πέλοπος υἱὸν Χρῦσιππον ἰδὼν, ὃς ἦν ἐξ ἄλ-
 λης αὐτῷ γυναικὸς καὶ οὐκ ἐκ τῆς θυγατρὸς Οἰνο-
 μάου Ἰπποδαμείας, καὶ ἄλους τούτου κατάκρας τῷ
 ἔρωτι, ἀρπάσας εἰς Θήβας ἤνεγκε καὶ συνῆν αὐτῷ τὰ
 ἐρωτικά, πρῶτος ἐν ἀνθρώποις τὴν ἀρρενοφθορίαν 30
 εὐρώων, καθὼς δὴ καὶ ὁ Ζεὺς ἐν θεοῖς τὸν Γανυμήδην
 ἀρπάσας. ὁ δὲ Πέλοψ μαθὼν τοῦτο κατηράσατο Λαῖω

μηδέποτε μὲν παῖδα τεκεῖν, εἰ δ' ἄρα καὶ συμβαίη,
 ὑπ' αὐτοῦ τούτου ἀναιρεθήσεσθαι. διὰ ταῦτα πολὺν
 ἤδη χρόνον ὁ Λάιος ἄπαις ὢν παραγίνεται εἰς Πυ-
 θίαν καὶ παίδων αἰτεῖ γονήν. καὶ ἀκούει τοιούνδε χρη-
 5 σμόν·

Λαίε Λαβδακίδη, παίδων γένος ὄλβιον αἰτεῖς;
 τέξεις μὲν φίλον υἱόν, ἀτὰρ τόδε σοι μόρος ἔσται,
 παιδὸς ἐοῦ χεῖρεςσι λιπεῖν βίον· ὥς γὰρ ἔνευσε
 Ζεὺς Κρονίδης Πέλοπος στυγεραῖς ἀραῖσι πιθήσας,
 10 οὗ φίλον ἦρπασας υἱόν· ὁ δ' ἠΰξαστό σοι τάδε
 πάντα.

ὧντινων θεσπισμάτων τῇ τῆς γυναικὸς Ἰοκάστης ἐπι-
 θυμία καὶ ἡδονῇ ὥσπερ ἐκλαθόμενος Λάιος, ἢ ὥς
 τινὲς φασὶ μιᾷ τῶν ἡμερῶν βαρυνθεὶς τῷ ὄνῳ καὶ
 15 συνελθὼν τῇ αὐτοῦ γυναικὶ Οἰδίποδα σπείρει, καὶ
 μετὰ τὸ τεχθῆναι αὐτὸν ἀναπεμπάσας τοὺς χρησμούς
 καὶ φόβον λαβὼν, διατορήσας τοὺς πόδας αὐτοῦ καὶ
 χρυσέους κρίκους διαπερυνθόμενος ῥίπτει διὰ τῶν
 οἰκείων βουκόλων εἰς τὸ ὄρος τὸν Κιθαιρῶνα, ὥς
 20 ὑπὸ θηρίων ἐνταῦθα ἀναιρεθησόμενον. ἔτυχε δὲ κατ'
 ἐκεῖνο καιροῦ καὶ τοὺς Πολύβου νομέας βασιλέως Κο-
 ρίνθου βόσκειν ἐκεῖ. οἱ καὶ τὸ βρέφος εὐρόντες καὶ
 ἀνελόμενοι φέρουσι πρὸς τὴν Πολύβου γυναῖκα Με-
 ρόπην· ἣν γὰρ ἀπαιδία δυστυχοῦσα καὶ πῶς πείθει
 25 τὸν ἄνδρα Πόλυβον αὐτῇ τοῦτο τεκεῖν. ἀνδρωθεὶς δὲ
 ὁ παῖς καὶ τινι τῶν ἐκεῖ συνελθὼν εἰς ἔριν, οἷα δὴ
 γίνεται, ὥς οὐκ εἴη Πολύβου παῖς ὄνειδος ἔσχε παρ'
 αὐτοῦ. ὅθεν ἀναστὰς ἀφικνεῖται πρὸς τὸν Ἀπόλλω
 πευσόμενος περὶ τούτου. καὶ ὥς ἔσται φονεὺς τοῦ πα-
 30 τρός μανθάνει καὶ ὥς τῇ τεκούσῃ συνέδοιτο, ταυτὶ
 μόνον· τίνες δὲ εἶεν αὐτῷ οἱ γονεῖς, σαφῶς οὐ μαν-
 θάνει. ἐπανιὼν δὲ ἐκεῖθεν ὑπήντησε Λαῖῳ, ἀφικνου-

μένω καὶ αὐτῷ πρὸς Ἀπόλλω ἐφ' ᾧ περὶ τοῦ ἐκτε-
 θέντος παιδὸς γυνῶναι εἰ τέθνηκε. καὶ ὁ τοῦ Λαΐου
 θεράπων αὐτῷ κελεύει μικρὸν ὑποχωρῆσαι τῷ βασι-
 λεϊ. Οἰδίπους δὲ ὑπεροψία κρατούμενος καὶ τοῦτο
 μηδὲν ἐνεγκῶν κτείνει τε τὸν θεράποντα καὶ σὺν αὐ- 5
 τῷ τὸν δεσπότην οὐκ εἰδὼς ὥς πατροκτόνος γέγονεν,
 ἐνὸς μόνου τῶν συνεπομένων Λαΐω διαφυγόντος, ὃς
 δὴ καὶ τὸν φόνου ὕστερον διεσάφησεν, ὥς φησι Σο-
 φοκλῆς ἐν Οἰδίποδι τυράννῳ. τότε οὖν Οἰδίπους τοὺς
 τοῦ Λαΐου ἵππους λαβὼν καὶ πάντα τὰ αὐτοῦ, κατα- 10
 λαμβάνει τὴν Κόρινθον καὶ διδοὺς ταῦτα πάντα Πο-
 λύβῳ τροφᾶς ἐκείθεν ἀναχωρεῖ, τὸν περὶ τῆς πατρο-
 κτονίας καὶ τῆς τῇ μητρὶ συνελεύσεως χρησμὸν δε-
 διῶς· ὥετο γὰρ πατέρας αὐτοῦ τῷ ὄντι Πόλυβον καὶ
 τὴν ἐκείνου γυναῖκα εἶναι. καὶ ἀφικνεῖται πρὸς Θή- 15
 βας, αἱ δὴ καὶ ὑπὸ τῆς Σφιγγὸς ἐχειμάζοντο τότε,
 χρησμούς τε ῥαψωδούσης καὶ ὅντινα βούλοιτο τῶν
 πολιτῶν ἀρπαξούσης καὶ διαφθειρούσης διὰ τὸ μὴ
 συνιέναι σφᾶς τῶν ὑπ' αὐτῆς λεγομένων χρησμῶν.
 ἐπήγαγε δὲ ταύτην ὁ Ἄρης Θηβαίοις, ἀμυνόμενος 20
 αὐτοὺς διὰ τὸν τοῦ παιδὸς δράκοντος φόνου, ὃν ὁ
 Κάδμος ἀνείλε καὶ τοὺς ὀδόντας αὐτοῦ ἔσπειρεν, ἐξ
 ὧν ἀνεφάνησαν οἱ Γίγαντες. ἦν δὲ τέρας ἡ Σφίγξ
 πρόσωπον μὲν ἔχουσα παρθένου, στήθος δὲ καὶ χεῖ-
 ρας καὶ πόδας καὶ ὄνυχας λέοντος, οὐραίαν δὲ δρά- 25
 κοντος, πτερὰ δὲ ὄρνιθος, δι' ὧν ἵπτατο. ἔτυχε δὲ
 τοῦτο εἰποῦσα τοιοῦτό τι τοῖς Θηβαίοις τότε αἰνιγμα,
 ὥς Ἀσκληπιάδης ἀναγράφει·

ἔστι δίπουν ἐπὶ γῆς καὶ τετράπον, οὗ μία φωνή,
 καὶ τρίπον· ἀλλάσσει δὲ φύην μόνου, ὅσ' ἐπὶ 30
 γαῖαν

ἐρπετὰ γίνονται ἀνά τ' αἰθέρα καὶ κατὰ πόντον.

ἀλλ' ὁπότεν πλεόνεσσιν ἐρειδόμενον ποσὶ βαίνη,
 ἔνθα μένος γυίοισιν ἀφαιρότερον πέλει αὐτοῦ.
 οὔπερ ἀγνοούμενον ἐκήρυξε Κρέων ὁ ἀδελφὸς Ἰοκά-
 στης τῆς βασιλίσσης, ὥς ὅστις εὗροι τὸ αἰνιγμα, τού-
 5 τῳ συνάψει τὴν ἀδελφὴν. Οἰδίπους δέ, ὥς ἔφημεν,
 διάγων ἐκεῖ τότε, ἀκούσας τὰ κηρύγματα λύει τε τὸ
 αἰνιγμα τῆς Σφιγγὸς καὶ τὴν μητέρα οὐκ εἰδὼς εἰς
 γυναιῖκα λαμβάνει. ἔλυσε δὲ οὕτως, ὥς φασι·

κλῦθι καὶ οὐκ ἐθέλουσα, κακότερε Μοῦσα θανόν-
 10 των,

φωνῆς ἡμετέρης σὸν τέλος ἀμπλακίης.
 ἄνθρωπον κατέλεξας, ὃς ἡνίκα γαῖαν ἐφέρεται,
 πρῶτον ἔφν τετράπους νήπιος ἐκ λαγόνων·
 γηραλέος δὲ πέλων τρίτατον πόδα βάκτρον ἐρείδει,
 15 αὐχένα φορτίζων, γήραϊ καμπτόμενος.

ἀκούσασα δὲ τὴν λύσιν ἡ Σφίγξ ἑαυτὴν ἀναιρεῖ πα-
 ραχρῆμα ῥίψασα τοῦ ἄερος. Οἰδίπους δὲ συνὼν τῇ
 μητρὶ καὶ παιῖδας ἐξ αὐτῆς φύσας τέσσαρας, ἄρρενας
 μὲν Ἐτεοκλέα καὶ Πολυνείκην, θηλείας δὲ Ἀντιγόνην
 20 καὶ Ἰσμήνην, ὥς ἔγνω τὸ μῖασμα ὕστερον, ἐτύφλω-
 σεν ἑαυτόν. Ἐτεοκλῆς δὲ καὶ Πολυνείκης, θέλοντές
 πως ἀφανίσαι τὸ ὄνειδος, κατακλείουσιν αὐτὸν ἐν
 οἰκίσκῳ, ἵν' ὑπὸ μηδενὸς θεωρούμενος εἰς λήθην
 ἦξοι τὸ κατ' ἐκείνου. καὶ ὃς τοῦτο ὑπεραλγῆσας ἀρᾶ-
 25 ται τούτοις τὴν βασιλείαν σιδήρῳ μερίσαι. οἱ δὲ τὰς
 τοῦ πατρὸς ἀρὰς δεδιότες μηχανῶνται τοιόνδε· ἔχε-
 σθαι τῆς ἀρχῆς ἓνα παρ' ἓνα καὶ ταύτης παραχωρεῖν
 θατέρῳ θάτερον. ὁ τοίνυν Ἐτεοκλῆς, ἅτε πρῶτος ὢν
 τοῦ ἀδελφοῦ καὶ πρῶτος τῆς ἀρχῆς ἦψατο, Πολυνεί-
 30 κης δὲ ὑπεχώρησε καὶ τελεσθέντος ἐνιαυτοῦ ἀφίκετο
 πρὸς τὸν ἀδελφὸν αἰτῶν καὶ αὐτὸς ἄρξειν ἐνιαυτόν.
 Ἐτεοκλῆς δὲ οὔτε ἐξέστη τῆς ἀρχῆς καὶ ἄτιμον τὸν

ἀδελφὸν ἀπέπεμψεν. ὃς καὶ πλανώμενος ἦλθεν εἰς
 Ἄργος καὶ τὴν τοῦ βασιλέως Ἀδράστου λαβὼν θυγα-
 τέρα πείθει τὸν κηδεστὴν συνάρασθαι τούτῳ πρὸς
 τὴν τῆς βασιλείας ἀνάληψιν, καὶ πλείστην ὄσπην πα-
 ραλαβὼν στρατιὰν ἐπιστρατεύει τῷ ἀδελφῷ. ὅπως δὲ ὁ
 ἡ μήτηρ ἐθέλουσα πρὸ τῆς συμπλοκῆς διαλλάξαι τοὺς
 παῖδας οὐδὲν ἴσχυσε, καὶ ὥς ἔχρησε Τειρεσίᾳς, εἰ ὁ
 Κρέοντος υἱὸς Μενοικεὺς ἀνέλοι ἑαυτὸν ἐπὶ τὸν τοῦ
 δράκοντος φωλεόν, κρατήσῃν Ἀργείων Θηβαίους,
 καὶ ὥς γέγονε ταῦτα, καὶ οἱ τῶν Ἀργείων ἡγεμόνες 10
 πεπτῶκασιν πάντες πλὴν Ἀδράστου, καὶ ὥς μονομα-
 χήσαντες πρὸς ἀλλήλους Ἐτεοκλῆς καὶ Πολυνεΐκης
 ὑπ' ἀλλήλων ἐκάτεροι ἀνηρέθθησαν, καὶ ὥς ἐλθοῦσα
 πρὸς αὐτοὺς Ἰοκάστη καὶ τεθνηκότας εὐροῦσα συν-
 ἀπέσφαξεν ἑαυτήν, καὶ ὥς Κρέων ἀψάμενος τῆς ἀρχῆς 15
 Ἐτεοκλῆν μὲν θάπτει, Πολυνεΐκην δὲ ἄταφον εἶασε
 καὶ Οἰδίπουν τῆς πόλεως ἐξήλασε, πάντα ταῦτα Εὐ-
 ριπίδης ἔνδον κατὰ λεπτὸν διηγεῖται. ἔστι δὲ τὸ παρ-
 ὄν δραῖμα τῶν ἄγαν ἐξαιρέτων, διανοίαις καὶ γνώ-
 μαις πολλαῖς καὶ καλαῖς καὶ ποικίλαις ἀνθοῦν καὶ 20
 μεταχειρίσει ἀρίστη καὶ διὰ πάντων ἀκμάζον, εἰ καὶ
 ἀπίθανον ἔχει τὴν εἰς Θήβας Πολυνεΐκους εἴσοδον.
 ἐπιγέγραπται δὲ ἀπὸ τοῦ χοροῦ Εὐριπίδου Φοίνισσαι
 πρὸς ἀντιδιαστολὴν τῶν ἐπὶ ἐπὶ Θήβας Αἰσχύλου.
 ταύτῃ γὰρ τῇ ὑποθέσει κἀκεῖνος χρῆται ἐν τῷ δευ- 25
 τέρῳ. αὐτὰς δὲ τὰς παρθένους ἐκ Φοινίκης Ἀγνηνο-
 ρίδαι θυσίαν τῷ Ἀπόλλωνι ἔπεμψαν, αἵτινες καὶ πρὸς
 Δελφοὺς ἐρχόμεναι παρέβαλον ταῖς Θήβαις διὰ τὸ καὶ
 τὸν Κάδμουν, ὥς ἔφημεν, ἐκ Φοινίκης εἶναι, καὶ κα-
 ταλαβόντος τοῦ πολέμου ἠναγκάσθησαν μένειν αὐ- 30
 τόθι, μέχρις ἂν ἡ μάχη λωφῇ.

ΕΥΡΥΠΙΛΟΥ

Φ Ο Ι Ν Ι Σ Σ Α Ι.

- IO. ὦ τὴν ἐν ἄστροις οὐρανοῦ τέμνων ὁδὸν
 καὶ χρυσοκολλήτοισιν ἐμβεβῶς δίφροις
 Ἥλιε, θοαῖς ἵπποισιν εἰλίσσων φλόγα,
 ὥς δυστυχῇ Θήβαισι τῇ τόθ' ἡμέρᾳ
 ἀκτῖν' ἐφῆκας, Κάδμος ἥνικ' ἦλθε γῆν 5
 τήνδ', ἐκλιπὼν Φοίνισσαν ἐναλίαν χθόνα·
 ὃς παῖδα γήμας Κύπριδος Ἀρμονίαν ποτὲ
 Πολύδωρον ἐξέφυνσε, τοῦ δὲ Λάβδακον
 φῦναι λέγουσιν, ἐκ δὲ τοῦδε Λάιον.
 ἐγὼ δὲ παῖς μὲν κλήζομαι Μενοικέως, 10
 Κρέων τ' ἀδελφὸς μητρὸς ἐκ μιᾶς ἔφν·
 καλοῦσι δ' Ἰοκάστην με, τοῦτο γὰρ πατήρ
 ἔθετο, γαμεῖ δὲ Λαίος μ'· ἐπεὶ δ' ἄπαις
 ἦν χρόνια λέκτρα τ' ἄμ' ἔχων ἐν δώμασιν,
 ἐλθὼν ἐρωτᾷ Φοῖβον ἐξαιτεῖ θ' ἅμα 15
 παίδων ἐς οἶκους ἀρσένων κοινωνίαν.
 ὁ δ' εἶπεν· ὦ Θήβαισιν εὐίπποις ἄναξ,
 μὴ σπεῖρε τέκνων ἄλοκα δαιμόνων βία·
 εἰ γὰρ τεκνώσεις παῖδ', ἀποκτενεῖ σ' ὁ φύς,
 καὶ πᾶς σὸς οἶκος βήσεται δι' αἵματος. 20
 ὁ δ' ἡδονῇ δοὺς εἰς τε βακχεῖον πεσὼν
 ἔσπειρεν ἡμῖν παῖδα, καὶ σπείρας βρέφος,
 γνοὺς τὰμπλάκημα τοῦ θεοῦ τε τὴν φάτιν,

λειμῶν' ἐς Ἥρας καὶ Κιθαιρώνος λέπας
 δίδωσι βουκόλοισιν ἐκθεῖναι βρέφος, 25
 σφυρῶν σιδηρᾷ κέντρα διαπείρας μέσων.
 Πολύβου δέ νιν λαβόντες ἵπποβουκόλοι
 φέρουσ' ἐς οἴκους εἷς τε δεσποίνης χέρας
 ἔθηκαν. ἥ δὲ τὸν ἐμὸν ᾠδίνων πόνον 30
 μαστοῖς ὑφεῖτο καὶ πόσιν πεῖθει τεκεῖν.
 ἥδη δὲ πυρσαῖς γένυσιν ἔξανδρούμενος
 παῖς οὐμός ἢ γνοὺς ἢ τινος μαθὼν πάρα
 ἔστειχε τοὺς φύσαντας ἐκμαθεῖν θέλων
 πρὸς δῶμα Φοίβου, Λαίος θ' οὐμός πόσις 35
 τὸν ἐκτεθέντα παῖδα μαστεύων μαθεῖν
 εἰ μηκέτ' εἴη. καὶ ξυνάπτετον πόδα
 εἰς ταύτῳ ἄμφω Φωκίδος σχιστῆς ὁδοῦ.
 καὶ νιν κελεύει Λαῖου τροχηλάτης·
 ᾧ ξένε, τυράννοισ ἐκποδῶν μεθίστασο. 40
 ὁ δ' εἶρπ' ἄναυδος, μέγα φρονῶν· πῶλοι δέ νιν
 χηλαῖς τένοντας ἐξεφοίνισσον ποδῶν.
 ὅθεν — τί τὰκτὸς τῶν κακῶν με δεῖ λέγειν; —
 παῖς πατέρα καίνει καὶ λαβῶν ὀχήματα
 Πολύβῳ τροφεὶ δίδωσιν. ὥς δ' ἐπεξάρει 45
 Σφιγξ ἄρπαγαῖσι πόλιν, ἐμός τ' οὐκ ἦν πόσις,
 Κρέων ἀδελφὸς τὰμὰ κηρύσσει λέχη,
 ὅστις σοφῆς αἰνιγμα παρθένου μάθοι,
 τοῦτ' ὃ ξυνάψειν λέκτρα. τυγχάνει δέ πως
 αἰνιγμ' ἐμὸς παῖς Οἰδίπους Σφριγγὸς μαθὼν, 50
 ὅθεν τύραννος τῆσδε γῆς καθίσταται
 [καὶ σκῆπτρ' ἑπαθλα τῆσδε λαμβάνει χθονός].
 γαμεῖ δὲ τὴν τεκοῦσαν, οὐκ εἰδὼς τάλας
 οὐδ' ἢ τεκοῦσα παιδὶ συγκοιμωμένη.
 τίκτω δὲ παῖδας παιδὶ δύο μὲν ἄρσενας, 55
 ὅθεν νιν Ἑλλὰς ὠνόμαζεν Οἰδίπουν. 27

Ἔτεοκλέα κλεινὴν τε Πολυνείκους βίαν,
 κόρας τε δισσάς· τὴν μὲν Ἰσμήνην πατὴρ
 ὠνόμασε, τὴν δὲ πρόσθεν Ἀντιγόνην ἐγώ.
 μαθὼν δὲ τὰμὰ λέκτρα μητρῶων γάμων
 ὁ πάντ' ἀνατλὰς Οἰδίπους παθήματα 60
 εἰς ὄμμαθ' αὐτοῦ δεινὸν ἐμβάλλει φόνον,
 χρυσηλάτοις πόρπαισιν αἰμάξας κόρας.
 ἐπεὶ δὲ τέκνων γένυς ἐμῶν σκιάζεται,
 κλείθροισι ἐκρυψαν πατέρ', ἵν' ἀμνήμων τύχη
 γένοιτο πολλῶν δεομένη σοφισμάτων. 65
 ξῶν δ' ἔστ' ἐν οἴκοις, πρὸς δὲ τῆς τύχης νοσῶν
 ἄρᾳς ἄρᾶται παισὶν ἀνοσιωτάτας,
 θηκτῷ σιδήρῳ δῶμα διαλαχεῖν τόδε.
 τῷ δ' εἰς φόβον πεσόντε μὴ τελεσφόρους
 εὐχὰς θεοὶ κραίνωσιν οἰκούντων ὁμοῦ, 70
 ξυμβάντ' ἔταξαν τὸν νεώτερον πάρος
 φεύγειν ἐκόντα τήνδε Πολυνείκην χθόνα,
 Ἔτεοκλέα δὲ σκῆπτρ' ἔχειν μένοντα γῆς
 ἐνιαυτὸν ἀλλάσσοντ'. ἐπεὶ δ' ἐπὶ ζυγοῖς
 καθέζετ' ἀρχῆς, οὐ μεθίσταται θρόνων, 75
 φυγάδα δ' ἀπωθεῖ τῆσδε Πολυνείκην χθονός.
 ὁ δ' Ἄργος ἐλθὼν, κῆδος Ἀδράστου λαβὼν,
 πολλὴν ἀθροίσας ἀσπίδ' Ἀργείων ἄγει·
 ἐπ' αὐτὰ δ' ἐλθὼν ἐπτάπυλα τείχη τάδε,
 πατρῷ' ἀπαιτεῖ σκῆπτρα καὶ μέρη χθονός. 80
 ἐγὼ δ' ἔριν λύσουσ' ὑπόσπονδον μολεῖν
 ἔπεισα παιδὶ παῖδα πρὶν ψαῦσαι δορός.
 ἦξιεν δ' ὁ πεμφθεὶς φησιν αὐτὸν ἄγγελος.
 ἀλλ' ὦ φαεινὰς οὐρανοῦ ναίων πτύχας
 Ζεῦ, σῶσον ἡμᾶς, δὸς δὲ σύμβασιν τέκνοις. 85
 χρὴ δ', εἰ σοφὸς πέφυκας, οὐκ ἔαν βροτὸν
 τὸν αὐτὸν ἀεὶ δυστυχῇ καθεστάναι.

ΠΑΙ. ὦ κλεινὸν οἴκοις Ἀντιγόνη θάλος πατρί,
 ἐπεὶ σε μήτηρ παρθενῶνας ἐκλιπεῖν
 μεθῆκε μελάρθρων ἐς διῆρες ἔσχατον 90
 στρατεύμ' ἰδεῖν Ἀργεῖον ἰκεσίαισι σαῖς,
 ἐπίσχες, ὥς ἂν προυξερευνήσω στίβον,
 μή τις πολιτῶν ἐν τρίβῳ φαντάζεται,
 κάμοι μὲν ἔλθῃ φαῦλος ὥς δούλῳ ψόγος,
 σοὶ δ' ὥς ἀνάσση· πάντα δ' ἐξιδῶς φράσω 95
 ἅ τ' εἶδον εἰσήκουσά τ' Ἀργείων πάρα,
 σπονδὰς ὅτ' ἦλθον σῶ κασιγνήτῳ φέρων
 ἐνθένδ' ἐκεῖσε δευρό τ' αὖ κείνου πάρα.
 ἀλλ' οὔτις ἀστῶν τοῖσδε χρίμπτεται δόμοις,
 κέδρου παλαιὰν κλίμακ' ἐκπέρα ποδί· 100
 σκόπει δὲ πεδία καὶ παρ' Ἰσμηνοῦ ῥοὰς
 Δίρκης τε νᾶμα, πολεμίων στρατεύμ' ὅσον.

ΑΝ. ὄρεγέ νυν ὄρεγε γεραιὰν νέα
 χεῖρ' ἀπὸ κλιμάκων, ποδὸς
 ἵχνος ἐπαντέλλων. 105

ΠΑΙ. ἰδοὺ ξύναψον, παρθέν'· εἰς καιρὸν δ' ἔβης·
 κινούμενον γὰρ τυγχάνει Πελασγικὸν
 στρατεύμα, χωρίζουσι δ' ἀλλήλων λόχους.

ΑΝ. ἰὼ πότνια παῖ Λατοῦς
 Ἑκάτα, κατὰχαλκον ἅπαν
 πεδῖον ἀστράπτει. 110

ΠΑΙ. οὐ γάρ τι φαύλως ἦλθε Πολυνείκης χθόνα,
 πολλοῖς μὲν ἵπποις, μυρίοις δ' ὅπλοις βρέμων.

ΑΝ. ἄρα πύλαι κλείθροισι χαλκόδετ' ἔμβολά τε
 λαῖνέοισιν Ἀμφίονος ὀργάνοις 115
 τείχεος ἥρμοσται;

ΠΑΙ. θάρσει· τά γ' ἔνδον ἀσφαλῶς ἔχει πόλις.
 ἀλλ' εἰσόρα τὸν πρῶτον, εἰ βούλει μαθεῖν.

ΑΝ. τίς οὗτος ὁ λευκολόφος,

- πρόπαρ ὅς ἀγείται στρατοῦ
 πάγκαλκον ἀσπίδ' ἀμφὶ βρα- 120
 χίονα κουφίζων;
- ΠΑΙ. λοχαγός, ὃ δέσποινα. ΑΝ. τίς πόθεν γεγώς;
 αὖδασον, ὃ γεραιέ, τίς ὀνομάζεται;
- ΠΑΙ. οὔτος Μυκηναῖος μὲν αὐδᾷται γένος, 125
 Λερναῖα δ' οἰκεῖ νάμαθ', Ἰππομέδων ἄναξ.
- ΑΝ. ἔἴ ὥς γαῦρος, ὥς φοβερὸς εἰσιδεῖν,
 γίγαντι γηγενέτα προσόμοιος,
 ἀστερωπὸς ἐν γραφαῖσιν, οὐχὶ πρόσφορος
 ἀμερίῳ γέννα. 130
- ΠΑΙ. τὸν δ' ἐξαμείβοντ' οὐχ ὀρᾶς Δίρκης ὕδωρ
 [λοχαγόν]; ΑΝ. ἄλλος ἄλλος ὅδε τευχέων τρόπος.
 τίς δ' ἐστὶν οὔτος; ΠΑΙ. παῖς μὲν Οἰνέως ἔφν
 Τυδεύς, Ἄρην δ' Αἰτωλὸν ἐν στέροιν ἐχει.
- ΑΝ. οὔτος ὁ τᾶς Πολυνείκεος, ὃ γέρον, 135
 αὐτοκασιγνήτας νύμφας
 ὁμόγαμος κυρεῖ;
 ὥς ἀλλόχρως ὅπλοισι μιξοβάρβαρος.
- ΠΑΙ. σακεσφόροι γὰρ πάντες Αἰτωλοί, τέκνον,
 λόγχαις τ' ἀκοντιστήρες εὐστοχώτατοι. 140
- ΑΝ. σὺ δ', ὃ γέρον, πῶς αἰσθάνει σαφῶς τάδε;
- ΠΑΙ. σημεῖ' ἰδὼν τότε' ἀσπίδων ἐγνώρισα,
 [σπονδὰς ὅτ' ἦλθον σῶ κασιγνήτῳ φέρων·]
 ἃ προσδεδορκῶς οἶδα τοὺς ὀπλισμένους.
- ΑΝ. τίς δ' οὔτος ἀμφὶ μνημα τὸ Ζήθου περᾶ 145
 καταβόστρυχος, ὅμμασι γοργὸς εἰς-
 ιδεῖν νεανίας
 λοχαγός; ὥς ὄχλος νιν ὑστέρω ποδὶ
 πάνοπλος ἀμφέπει.
- ΠΑΙ. ὅδ' ἐστὶ Παρθενοπαῖος, Ἀταλάντης γόνος. 150
- ΑΝ. ἀλλὰ νιν ἅ κατ' ὄρη μετὰ ματέρος

Ἄρτεμις ἱεμένα τόξοις δαμάσασ' ὀλέσειεν,
ὃς ἐπ' ἐμὴν πόλιν ἔβα πέρσων.

ΠΑΙ. εἴη τάδ', ὦ παῖ· σὺν δίκη δ' ἤκουσι γῆν,
ὃ καὶ δέδοικα μὴ σκοπῶς ὀρθῶς θεοί. 155

ΑΝ. ποῦ δ' ὃς ἐμοὶ μιᾶς ἐγένετ' ἐκ ματρὸς
πολυπόνῳ μοίρᾳ;
ὦ φίλτατ', εἰπέ, ποῦ ἔστι Πολυνείκης, γέρον.

ΠΑΙ. ἐκεῖνος ἐπὶ παρθένων τάφου πέλας
Νιόβης Ἀδράστῳ πλησίον παραστατεῖ. 160

ὄρᾱς; ΑΝ. ὄρῳ δῆτ' οὐ σαφῶς, ὄρῳ δέ πως
μορφῆς τύπωμα στέρνα τ' ἐξεικασμένα.

ἀνεμώκεος εἶθε δρόμον νεφέλας
ποσὶν ἐξανύσαιμι δι' αἰθέρος
πρὸς ἐμὸν ὁμογενέτορα, περὶ δ' ὠλένας 165
δέρα φιλτάτα βάλοιμι χρόνῳ
φυγάδα μέλεον. ὥς

ὅπλοισι χρυσέοισιν ἐκπρεπής, γέρον,
ἑώοις ὅμοια φλεγέθων βολαῖς ἀελίου.

ΠΑΙ. ἤξει δόμους τούσδ', ὥστε σ' ἐκπλήσαι χαρᾶς, 170
ἔνσπονδος. ΑΝ. οὗτος δ', ὦ γεραίέ, τίς κυρεῖ,
ὃς ἄρμα λευκὸν ἡνιοστροφεῖ βεβῶς;

ΠΑΙ. ὁ μάντις Ἀμφιάραος, ὦ δέσποιν', ὅδε·
σφάγια δ' ἅμ' αὐτῷ, γῆς φιλαίματοι ῥοαί.

ΑΝ. ὦ λιπαροζώνου θυγάτερ ἅ Λατοῦς 175
Σελαναία, χρυσεόκυκλον φέγγος,
ὥς ἀτρεμαῖα κέντρα καὶ σῶφρονα
πῶλοις μεταφέρων ἰθύνει.

ποῦ δ' ὃς τὰ δεινὰ τῇδ' ἐφρυβρίζει πόλει
Καπανεύς; ΠΑΙ. ἐκεῖνος προσβάσεις τεκμαίρεται
πύργων ἄνω τε καὶ κάτω τείχη μετρῶν. 181

ΑΝ. ἰώ,
Νέμεσι καὶ Διὸς βαρύβρομοι βρονταί,

κεραυνῶν τε φῶς αἰθαλόεν, σὺ τοι
 μεγαλαγορίαν ὑπεράνορα κοιμίζεις·
 ὄδ' ἐστίν, αἰχμαλώτιδας 185
 ὃς δορὶ Θηβαίας Μυκῆναισι
 Λερναίᾳ τε δώσειν τριαίνα,
 Ποσειδωνίοις Ἀμυμωνίοις
 ὕδασι, δουλείαν περιβαλὼν;
 μήποτε μήποτε τάνδ', ὦ πότνια, 190
 χρυσεοβόστρυχον ὦ Διὸς ἔρνος
 Ἄρτεμι, δουλοσύναν τλαίην.

ΠΑΙ. ὦ τέκνον, εἴσβα δῶμα καὶ κατὰ στέγας
 ἐν παρθενῶσι μέμνε σοῖς, ἐπεὶ πόθου
 εἰς τέρψιν ἤλθες ὧν ἔχορξες εἰσιδεῖν. 195
 ὄχλος γάρ, ὥς ταραγμὸς εἰσῆλθεν πόλιν,
 χωρεῖ γυναικῶν πρὸς δόμους τυραννικούς.
 φιλόφρογον γὰρ χρῆμα θηλειῶν ἔφνυ,
 σμικρὰς τ' ἀφορμὰς ἦν λάβωσι τῶν λόγων,
 πλείους ἐπείσφेरουσιν· ἡδονὴ δέ τις 200
 γυναιξὶ μηδὲν ὑγίης ἀλλήλαις λέγειν.

ΧΘ. Τύριον οἶδμα λιποῦσ' ἔβαν στρ.
 ἀκροθίνια Λοξία
 Φοινίσσας ἀπὸ νέσου
 Φοίβῳ δούλα μελάθρων, 205
 ἵν' ὑπὸ δειράσι νιφοβόλοις
 Παρνασοῦ κατενάσθην,
 Ἴονιον κατὰ πόντον ἐλά-
 τᾳ πλεύσασα περιρρύτων
 ὑπὲρ ἀκαρπίστων πεδίων 210
 Σικελίας Ζεφύρου πνοαῖς
 ἱππεύσαντος ἐν οὐρανῷ
 κάλλιστον κελάδημα.

πόλεος ἐκπροκριθεῖς' ἐμᾶς ἀντ.
 καλλιστεύματα Λοξία 215
 Καδμείων ἔμολον γᾶν,
 κλεινῶν Ἀγηνοριδᾶν
 ὁμογενεῖς ἐπὶ Λαῖου
 πεμφθεῖς' ἐνθάδε πύργους.
 ἴσα δ' ἀγάλμασι χρυσοτεύ- 220
 κτοῖς Φοίβῳ λάτρεις γενόμαν.
 ἔτι δὲ Κασταλίας ὕδωρ
 ἐπιμένει με κόμας ἐμᾶς
 δεῦσαι παρθένιον χλιδὰν
 Φοιβεΐαισι λατρεῖαις. 225
 ὦ λάμπουσα πέτρα πυρὸς
 δικόρυφον σέλας ὑπὲρ ἄκρων
 Βακχείων Διονύσου
 οἶνα θ', ἃ καθαμέριον
 στάξεις τὸν πολύκαρπον 230
 οἰνάνθας ἰεῖσα βότρυν,
 ζάθεά τ' ἄντρα δράκοντος οὐ-
 ρεαί τε σκοπιαὶ θεῶν
 νιφόβολόν τ' ὄρος ἱερὸν, εἰ-
 λίσσων ἀθανάτας θεοῦ 235
 χορὸς γενοίμαν ἄφοβος
 παρὰ μεσόμεφαλα γύαλα Φοί-
 βου Δίρκαν προλιποῦσα.
 νῦν δέ μοι πρὸ τειχέων στρ.
 θούριος μολῶν Ἀρης 240
 αἶμα δάιον φλέγει
 τᾷδ', ὃ μὴ τύχοι, πόλει·
 κοινὰ γὰρ φίλων ἄχῃ·
 κοινὰ δ', εἴ τι πείσεται

ἐπτάπυργος ἄδε γὰ,
Φοινίσσα χώρα. φεῦ φεῦ.

κοινὸν αἶμα, κοινὰ τέκνα
τᾶς κερασφόρου πέφυκεν Ἰοῦς·
ὧν μέτεστί μοι πόνων.

ἀμφὶ δὲ πτόλιν νέφος
ἀσπίδων πυκνὸν φλέγει

σχῆμα φοινίου μάχης,
ἂν Ἄρης τάχ' εἴσεται
παισὶν Οἰδίπου φέρων
πημονὰν Ἑρινύων.

Ἄργος ὦ Πελασγικόν,

δαιμαίνω τὰν σὰν ἀλκὰν
καὶ τὸ θεόθεν· οὐ γὰρ ἄδικον
εἰς ἀγῶνα τόνδ' ἔνοπλος ὤρμασθ',
ὃς μετέρχεται δόμους.

ΠΟ. τὰ μὲν πυλωρῶν κληῖθρά μ' εἶσεδέξατο
δι' εὐπετείας, τειχέων εἶσω μολεῖν.
ὃ καὶ δέδοικα μὴ με δικτύων ἔσω
λαβόντες οὐκ ἐκφρῶσ' ἀναίμακτον χρῶα.
ὧν οὔνεκ' ὄμμα πανταχῇ διοιστέον
κἀκεῖσε καὶ τὸ δεῦρο, μὴ δόλος τις ἦ.

ὥπλισμένος δὲ χεῖρα τῷδε φασγάνῳ
τὰ πίστ' ἐμαντῶ τοῦ θράσους παρῆξομαι.
ὦ ἢ τίς οὔτος; ἦ κτύπον φοβούμεθα;
ἅπαντα γὰρ τολμῶσι δεινὰ φαίνεται,

ὅταν δι' ἐχθρᾶς πούς ἀμείβηται χθονός.
πέποιθα μέντοι μητρὶ κοῦ πέποιθ' αἶμα,
ἥ τις μ' ἐπεισε δεῦρ' ὑπόσπονδον μολεῖν.
ἀλλ' ἐγγὺς ἀλκή· βῶμιοι γὰρ ἐσχάροι
πέλας πάρεισι, κοῦκ ἔρημα δῶματα.

φέρ' ἐς σκοτεινὰς περιβολὰς μεθ' ὧ ξίφος

καὶ τάσδ' ἔρωμαι, τίνες ἐφεςτᾶσιν δόμοις.
ξέναι γυναῖκες, εἶπατ', ἐκ ποίας πάτρας
Ἑλληνικοῖσι δώμασιν πελάξετε;

ΧΟ. Φοίνισσα μὲν γῇ πατρὶς ἢ θρέψασά με, 280
Ἀγήνορος δὲ παῖδες ἐκ παίδων δορὸς
Φοίβῳ μ' ἐπεμψαν ἐνθάδ' ἀκροθίνιον.
μέλλων δὲ πέμπειν μ' Οἰδίπου κλεινὸς γόνος
μαντεῖα σεμνὰ Λοξίου τ' ἐπ' ἐσχάρας,
ἐν τῷδ' ἐπεστράτευσαν Ἀργεῖοι πόλιν. 285
σὺ δ' ἀντάμειπαί μ', ὅστις ὦν ἐλήλυθας
ἐπτάστομον πύργωμα Θηβαίας χθονός.

ΠΟ. πατὴρ μὲν ἡμῖν Οἰδίπους ὁ Αἰῖου,
ἔτικτε δ' Ἰοκάστη με παῖς Μενοικέως·
καλεῖ δὲ Πολυνείκην με Θηβαῖος λεώς. 290

ΧΟ. ὦ συγγένεια τῶν Ἀγήνορος τέκνων,
ἐμῶν τυράννων ὧν ἀπεστάλην ὕπο,
γонуπετεῖς ἔδρας προσπίτνω σ',
ἄναξ, τὸν οἶκοθεν νόμον σέβουσα.
ἔβας ἔβας ὦ χρόνῳ γᾶν πατρῶαν. 295
ἰὼ πότνια, μόλε πρόδρομος,
ἀμπέτασον πύλας.

κλύεις, ὦ τεκοῦσα τόνδε μᾶτερ;
τί μέλλεις ὑπώροφα μέλαθρα περᾶν,
θιγεῖν τ' ὠλέναις τέκνου; 300

ΙΟ. Φοίνισσαν, ὦ νεάνιδες,
βοᾶν ἔσω δόμων κλύουσα τῶνδε
γῆρα τρομερὰν ἔλκω ποδὸς βάσιν.
ἰὼ τέκνον,
χρόνῳ σὸν ὄμμα μυρίαις ἐν ἡμέραις 305
προσεῖδον· ἀμφίβαλλε μα-
στὸν ὠλέναισι ματέρος,
παρηγίδων τ' ὄρεγμα βο-

στρύχων τε κυανόχρωτα χαί-
 τας πλόκαμον, σκιάζων δέραν ἐμάν
 ἰὼ ἰώ, μόλις φανείς 310
 ἄελπτα κἀδόκητα ματρὸς ὠλέναις.
 τί φῶ σε; πῶς ἅπαντα
 καὶ χερσὶ καὶ λόγοισι
 πολυέλικτον ἄδονᾶν
 ἐκείσε καὶ τὸ δεῦρο 315
 περιχορεύουσα τέρψιν παλαιᾶν λάβω
 χαρμονᾶν; ἰὼ τέκος,
 ἔρημον πατρῴον ἔλιπες δόμον
 φυγὰς ἀποσταλεις ὁμαίμου λῶβα,
 ἧ ποθεινὸς φίλοις, 320
 ἧ ποθεινὸς Θήβαις.
 ὅθεν ἐμάν τε λευκόχροα κείρομαι
 δακρυόεσσ' ἀνεῖσα πένθει κόμαν,
 ἄπεπλος φαρέων λευκῶν, τέκνον,
 δυσόρφναια δ' ἀμφὶ τρύχη τάδε 325
 σκότι' ἀμείβομαι.
 ὁ δ' ἐν δόμοισι πρέσβυς ὁμματοστερῆς
 ἀπήνας ὁμοπτέρου τᾶς ἀπο-
 ζυγείσας δόμων
 πόθον ἀμφιδάκρυτον αἰὲ κατέχων 330
 ἀνῆξε μὲν ξίφους
 ἐπ' αὐτόχειρά τε σφαγάν,
 ὑπὲρ τέρεμνά τ' ἀγχόνας,
 στενάζων ἄρᾳς τέκνοις·
 σὺν ἀλαλαῖσι δ' αἰὲν αἰαγμάτων 335
 σκότια κρύπτεται.
 σὲ δ', ὦ τέκνον, καὶ γάμοισι δὴ
 κλύω ζυγέντα παιδοποιὸν ἄδονᾶν
 ξένοισιν ἐν δόμοις ἔχειν

ξένον τε κῆδος ἀμφέπειν, 340

ἄλαστα ματρὶ τᾷδε Λα-

ίῳ τε τῷ παλαιγενεῖ,

γάμων ἐπακτὸν ἄταν.

ἐγὼ δ' οὔτε σοι πυρὸς ἀνῆψα φῶς

νόμιμον ἐν γάμοις, 345

ὥς πρέπει ματέρι μακαρία·

ἀννυμέναια δ' Ἰσμηνὸς ἐκηδεύθη

λουτροφόρου χλιδᾶς· ἀνὰ δὲ Θηβαίαν

πόλιν ἐσιγάθη σᾶς ἔσοδος νύμφας.

ὅλοιτο, τὰδ' εἴτε σίδαρος 350

εἴτ' ἔρις εἴτε πατὴρ ὁ σὸς αἵτιος,

εἴτε τὸ δαιμόνιον κατεκώμασε

δῶμασιν Οἰδιπόδα·

πρὸς ἐμὲ γὰρ κακῶν ἔμολε τῶνδ' ἄχῃ.

ΧΟ. δεινὸν γυναιξὶν αἰ δι' ὠδίνων γοναί, 355

καὶ φιλότεκνόν πως πᾶν γυναικεῖον γένος.

ΠΟ. μῆτερ, φρονῶν εὖ κοῦ φρονῶν ἀφικόμην

ἐχθροὺς ἐς ἄνδρας· ἄλλ' ἀναγκαίως ἔχει

πατρίδος ἐρᾶν ἅπαντας· ὅς δ' ἄλλως λέγει,

λόγοισι χαίρει, τὸν δὲ νοῦν ἐκείσ' ἔχει. 360

οὔτω δὲ τάρβος εἰς φόβον τ' ἀφικόμην,

μή τις δόλος με πρὸς κασιγνήτου κτάνῃ,

ὥστε ξιφήρη χεῖρ' ἔχων δι' ἄστεως

κυκλῶν πρόσωπον ἦλθον. ἐν δέ μ' ὠφελεῖ,

σπονδαί τε καὶ σὴ πίστις, ἥ μ' εἰσήγαγε 365

τείχη πατρῷα· πολύδακρυς δ' ἀφικόμην,

χρόνιος ἰδὼν μέλαθρα καὶ βωμοὺς θεῶν

γυμνάσιά θ' οἷσιν ἐνετράφην, Δίρκης θ' ὕδαρ·

ὧν οὐ δικαίως ἀπελαθεὶς ξένην πόλιν

ναίω, δι' ὅσων ὅμ' ἔχων δακρυρροοῦν. 370

ἀλλ' ἐκ γὰρ ἄλγους ἄλγος αὖ σὲ δέρομαι

κάρα ξυρῆκες καὶ πέπλους μελαγχίμους
 ἔχουσαν, οἷμοι τῶν ἐμῶν ἐγὼ κακῶν.
 ὥς δεινὸν ἔχθρα, μῆτερ, οἰκείων φίλων
 καὶ δυσλύτους ἔχουσα τὰς διαλλαγὰς. 375

τί γὰρ πατήρ μοι πρέσβυς ἐν δόμοισι δρᾷ,
 σκότον δεδορκώς; τί δὲ κασίγνηται δύο;
 ἧ που στένουσι τλήμονας φυγὰς ἐμάς;
 ΙΟ. κακῶς θεῶν τις Οἰδίπου φθείρει γένος·
 οὔτω γὰρ ἤρξατ', ἄνομα μὲν τεκεῖν ἐμέ, 380
 κακῶς δὲ γῆμαι πατέρα σὸν φῦναί τε σέ.
 ἀτὰρ τί ταῦτα; δεῖ φέρειν τὰ τῶν θεῶν.
 ὅπως δ' ἔρωμαι, μή τι σὴν δάκω φρένα,
 δέδοιχ' ἃ χρήζω· διὰ πόθου δ' ἐλήλυθα.

ΠΟ. ἀλλ' ἐξερώτα, μηδὲν ἐνδεὲς λίπης· 385
 ἃ γὰρ σὺ βούλει, ταῦτ' ἐμοί, μῆτερ, φίλα.

ΙΟ. καὶ δὴ σ' ἐρωτῶ πρῶτον ὦν χρήζω τυχεῖν,
 τί τὸ στέρεσθαι πατρίδος; ἧ κακὸν μέγα;
 ΠΟ. μέγιστον· ἔργῳ δ' ἐστὶ μεῖζον ἢ λόγῳ.
 ΙΟ. τίς ὁ τρόπος αὐτοῦ; τί φυγάσιν τὸ δυσχερές; 390

ΠΟ. ἐν μὲν μέγιστον, οὐκ ἔχει παρορησίαν.
 ΙΟ. δούλου τόδ' εἶπας, μὴ λέγειν ἅ τις φρονεῖ.
 ΠΟ. τὰς τῶν κρατούντων ἀμαθίας φέρειν χρεών.
 ΙΟ. καὶ τοῦτο λυπρόν, συνασοφεῖν τοῖς μὴ σοφοῖς.

ΠΟ. ἀλλ' εἰς τὸ κέρδος παρὰ φύσιν δουλευτέον. 395
 ΙΟ. αἱ δ' ἐλπίδες βόσκουσι φυγάδας, ὥς λόγος.

ΠΟ. καλοῖς βλέπουσί γ' ὄμμασιν, μέλλουσι δέ.
 ΙΟ. οὐδ' ὁ χρόνος αὐτὰς διεσάφησ' οὔσας κενάς;
 ΠΟ. ἔχουσιν Ἀφροδίτην τιν' ἠδεῖαν κακῶν.
 ΙΟ. πόθεν δ' ἐβόσκου πρὶν γάμοις εὐρεῖν βίον; 400

ΠΟ. ποτὲ μὲν ἐπ' ἡμαρ εἶχον, εἴτ' οὐκ εἶχομεν.
 ΙΟ. φίλοι δὲ πατρὸς καὶ ξένοι σ' οὐκ ὠφέλουν;
 ΠΟ. εὖ πρᾶσσε· τὰ φίλων δ' οὐδέν, ἦν τι δυστυχήσ.

- ΙΟ. οὐδ' ἠϋγένειά σ' ἦρεν εἰς ὕψος μέγα;
- ΠΟ. κακὸν τὸ μὴ ἔχειν· τὸ γένος οὐκ ἔβοσκε μέ. 405
- ΙΟ. ἡ πατρίς, ὥς ἔοικε, φίλτατον βροτοῖς.
- ΠΟ. οὐδ' ὀνομάσαι δύναι' ἂν ὥς ἐστὶν φίλον.
- ΙΟ. πῶς δ' ἦλθες Ἄργος; τίν' ἐπίνοιαν ἔσχεθες;
- ΠΟ. ἔχρησ' Ἀδράστῳ Λοξίας χρησμόν τινα.
- ΙΟ. ποῖόν τι τοῦτ' ἔλεξας; οὐκ ἔχω μαθεῖν. 410
- ΠΟ. κάπρῳ λέοντί θ' ἀρμόσαι παίδων γάμους.
- ΙΟ. καὶ σοὶ τί θηρῶν ὀνόματος μετῆν, τέκνον;
- ΠΟ. οὐκ οἶδ'· ὁ δαίμων μ' ἐκάλεσεν πρὸς τὴν τύχην.
- ΙΟ. σοφὸς γὰρ ὁ θεός· τίνι τρόπῳ δ' ἔσχες λέχος;
- ΠΟ. νύξ ἦν, Ἀδράστου δ' ἦλθον εἰς παραστάδας. 415
- ΙΟ. κοίτας ματεύων ἢ φυγὰς πλανώμενος;
- ΠΟ. ἦν ταῦτα· κατὰ δ' ἦλθεν ἄλλος αὖ φυγὰς.
- ΙΟ. τίς οὗτος; ὥς ἄρ' ἄθλιος κακέϊνος ἦν.
- ΠΟ. Τυδεύς, ὃν Οἰνέως φασὶν ἐκφῦναι πατρός.
- ΙΟ. τί θηρσὶν ὑμᾶς δῆτ' Ἀδραστος εἵκασεν; 420
- ΠΟ. στρωμνῆς ἐς ἀλκὴν οὔνεκ' ἦλθομεν πέρι.
- ΙΟ. ἐνταῦθα Ταλαοῦ παῖς ξυνῆκε θέσφατα;
- ΠΟ. κάδωκεν ἡμῖν δύο δυοῖν νεάνιδας.
- ΙΟ. ἄρ' εὐτυχεῖς οὖν τοῖς γάμοις ἢ δυστυχεῖς;
- ΠΟ. οὐ μεμπτὸς ἡμῖν ὁ γάμος εἰς τόδ' ἡμέρας. 425
- ΙΟ. πῶς δ' ἐξέπεισας δεῦρό σοι σπένσθαι στρατόν;
- ΠΟ. δισσοῖς Ἀδραστος ὤμοσεν γαμβροῖς τάδε,
ἄμφω κατάξειν εἰς πάτραν, πρόσθεν δ' ἐμέ.
πολλοὶ δὲ Δαναῶν καὶ Μυκηναίων ἄκροι 430
πάρεισι, λυπρὰν χάριν, ἀναγκαίαν δ' ἐμοὶ
διδόντες· ἐπὶ γὰρ τὴν ἐμὴν στρατεύομαι
πόλιν. θεοὺς δ' ἐπώμοσ' ὥς ἀκουσίως
τοῖς φιλτάτοις ἐκοῦσιν ἡράμην δόρυ.

- ἀλλ' εἰς σὲ τείνει τῶνδε διάλυσις κακῶν, 435
 μῆτερ, διαλλάξασαν ὁμογενεῖς φίλους
 παῦσαι πόνων με καὶ σὲ καὶ πᾶσαν πόλιν.
 πάλαι μὲν οὖν ὑμνηθέν, ἀλλ' ὅμως ἐρῶ·
 τὰ χρήματ' ἀνθρώποισι τιμιώτατα
 δύνάμιν τε πλείστην τῶν ἐν ἀνθρώποις ἔχει. 440
 ἄγῶ μεθήκω δεῦρο μυρίαν ἄγων
 λόγχην· πένης γὰρ οὐδὲν εὐγενὴς ἀνήρ.
 XO. καὶ μὴν Ἐτεοκλῆς εἰς διαλλαγὰς ὁδε
 χωρεῖ· σὸν ἔργον, μῆτερ Ἰοκάστη, λέγειν
 τοιούσδε μύθους οἷς διαλλάξεις τέκνα. 445
 ET. μῆτερ, πάρειμι· τὴν χάριν δὲ σοὶ διδοὺς
 ἦλθον. τί χρὴ δρᾶν; ἀρχέτω δέ τις λόγου·
 ὥς ἀμφὶ τείχη καὶ ξυνωρίδας λόχων
 τάσσω·ν ἐπέσχον πόλιν, ὅπως κλύοιμί σου
 κοινὰς βραβείας, αἷς ὑπόσπονδον μολεῖν 450
 τόνδ' εἰσεδέξω τειχέων πείσασά με.
 IO. ἐπίσχε· οὗτοι τὸ ταχὺ τὴν δίκην ἔχει·
 βραδεῖς δὲ μῦθοι πλείστον ἀνύουσιν σοφόν.
 σχάσον δὲ δεινὸν ὄμμα καὶ θυμοῦ πνοάς·
 οὐ γὰρ τὸ λαιμότμητον εἰσορᾷς κάρα 455
 Γοργόνος, ἀδελφὸν δ' εἰσορᾷς ἤκοντα σόν.
 σύ τ' αὖ πρόσωπον πρὸς κασίγνητον στρέφε,
 Πολύνεικες· εἰς γὰρ τοῦτον ὄμμασι βλέπων
 λέξεις τ' ἄμεινον τοῦδέ τ' ἐνδέξει λόγους.
 παραινέσαι δὲ σφῶν τι βούλομαι σοφόν· 460
 ὅταν φίλος τις ἀνδρὶ θυμωθεὶς φίλῳ
 εἰς ἐν συνελθὼν ὄμματ' ὄμμασιν διδῶ,
 ἐφ' οἷσιν ἥκει, ταῦτα χρὴ μόνον σκοπεῖν,
 κακῶν δὲ τῶν πρὶν μηδενὸς μνείαν ἔχειν.
 λόγος μὲν οὖν σὸς πρόσθε, Πολύνεικες τέκνον·
 σὺ γὰρ στρατεύμα Δαναῖδων ἦκεις ἄγων, 466

ἄδικα πεπονθώς, ὥς σὺ φής· κριτῆς δέ τις
θεῶν γένοιτο καὶ διαλλακτῆς κακῶν.

- ΠΟ. ἄπλοῦς ὁ μῦθος τῆς ἀληθείας ἔφνυ,
κού ποικίλων δεῖ τᾶνδιχ' ἐρμηνευμάτων· 470
ἔχει γὰρ αὐτὰ καιρόν· ὁ δ' ἄδικος λόγος
νοσῶν ἐν αὐτῷ φαρμάκων δεῖται σοφῶν.
ἐγὼ δὲ πατρὸς δωμάτων προυσκεψάμην
τοῦμόν τε καὶ τοῦδ', ἐκφυγεῖν χορήζων ἀράς
ἄς Οἰδίπους ἐφθέγγεατ' εἰς ἡμᾶς ποτε, 475
ἐξῆλθον ἔξω τῆσδ' ἐκὼν αὐτὸς χθονός,
δοὺς τῷδ' ἀνάσσειν πατρίδος ἐνιαυτοῦ κύκλον,
ὥστ' αὐτὸς ἄρχειν αὐτίς ἀνὰ μέρος λαβὼν
καὶ μὴ δι' ἔχθρας τῷδε καὶ φθόνου μολῶν
κακόν τι δρᾶσαι καὶ παθεῖν, ἃ γίννεται. 480
ὁ δ' αἰνέσας ταῦθ' ὀρκίους τε δοὺς θεούς,
ἔδρασεν οὐδὲν ὧν ὑπέσχετ', ἀλλ' ἔχει
τυραννίδ' αὐτὸς καὶ δόμων ἐμὸν μέρος.
καὶ νῦν ἔτοιμός εἰμι τᾶμαντοῦ λαβὼν
στρατὸν μὲν ἔξω τῆσδ' ἀποστεῖλαι χθονός, 485
οἰκεῖν δὲ τὸν ἐμὸν οἶκον ἀνὰ μέρος λαβὼν
καὶ τῷδ' ἀφεῖναι τὸν ἴσον αὐτίς αὖ χρόνον,
καὶ μήτε πορθεῖν πατρίδα μήτε προσφέρειν
πύργοισι πηκτῶν κλιμάκων προσαμβάσεις,
ἃ μὴ κυρήσας τῆς δίκης πειράσομαι 490
δρᾶν, μάρτυρας δὲ τῶνδε δαίμονας καλῶ,
ὥς πάντα πράσσωσιν σὺν δίκη, δίκης ἄτερ
ἀποστεροῦμαι πατρίδος ἀνοσιώτατα.
ταῦτ' αὖθ' ἕκαστα, μήτερ, οὐχὶ περιπλοκάς
λόγων ἀθροίσας εἶπον, ἀλλὰ καὶ σοφοῖς 495
καὶ τοῖσι φαύλοις ἔνδιχ', ὥς ἐμοὶ δοκεῖ.
- ΧΟ. ἐμοὶ μέν, εἰ καὶ μὴ καθ' Ἑλλήνων χθόνα
τεθράμμεθ', ἀλλ' οὖν ξυνετὰ μοι δοκεῖς λέγειν.

- ET. εἰ πᾶσι ταῦτόν καλὸν ἔφν σοφόν θ' ἅμα,
 οὐκ ἦν ἂν ἀμφίλεκτος ἀνθρώποις ἕρις. 500
 νῦν δ' οὐθ' ὅμοιον οὐδὲν οὔτ' ἴσον βροτοῖς,
 πλὴν ὀνόμασιν, τὸ δ' ἔργον οὐκ ἔστιν τόδε.
 ἐγὼ γὰρ οὐδέν, μῆτερ, ἀποκρύψας ἐρῶ·
 ἄστρον ἂν ἔλθοιμ' ἡλίου πρὸς ἀντολὰς
 καὶ γῆς ἔνερθε, δυνατὸς ὢν δρᾶσαι τάδε, 505
 τὴν θεῶν μεγίστην ὥστ' ἔχειν τυραννίδα.
 τοῦτ' οὖν τὸ χρηστόν, μῆτερ, οὐχὶ βούλομαι
 ἄλλω παρεῖναι μᾶλλον ἢ σῶζειν ἐμοί·
 ἀνανδρία γάρ, τὸ πλεόν ὅστις ἀπολέσας
 τοῦλάχιστον ἔλαβε. πρὸς δὲ τοῖσδ' αἰσχύνομαι, 510
 ἐλθόντα σὺν ὅπλοις τόνδε καὶ πορθοῦντα γῆν
 τυχεῖν ἢ χορήξει· ταῖς γὰρ ἂν Θήβαις τόδε
 γένοιτ' ὄνειδος, εἰ Μυκηναίου δορὸς
 φόβῳ παρείην σκῆπτρα τὰμὰ τῷδ' ἔχειν.
 χρῆν δ' αὐτὸν οὐχ ὅπλοισι τὰς διαλλαγὰς, 515
 μῆτερ, ποιεῖσθαι· πᾶν γὰρ ἔξαιρεῖ λόγος
 ὃ καὶ σίδηρος πολεμίων δράσειεν ἄν.
 ἀλλ' εἰ μὲν ἄλλως τήνδε γῆν οἰκεῖν θέλει,
 ἔξεστ'· ἐκεῖνο δ' οὐχ ἐκὼν μεθήσομαι,
 ἄρχειν παρόν μοι, τῷδε δουλεῦσαί ποτε. 520
 πρὸς ταῦτ' ἵτω μὲν πῦρ, ἵτω δὲ φάσγανα,
 ξεύγνυσθε δ' ἵππους, πεδία πίμπλαθ' ἀρμάτων,
 ὥς οὐ παρήσω τῷδ' ἐμὴν τυραννίδα.
 εἵπερ γὰρ ἀδικεῖν χρή, τυραννίδος πέρι
 κάλλιστον ἀδικεῖν, τᾶλλα δ' εὐσεβεῖν χρεών. 525
- XO. οὐκ εὖ λέγειν χρή μὴ πὶ τοῖς ἔργοις καλοῖς,
 οὐ γὰρ καλὸν τοῦτ', ἀλλὰ τῇ δίκῃ πικρόν.
- IO. ὦ τέκνον, οὐχ ἅπαντα τῷ γήρῳ κακά,
 Ἐτεόκλεες, πρόσσεστιν· ἀλλ' ἡμπερίᾳ
 ἔχει τι λέξαι τῶν νέων σοφώτερον. 530

τί τῆς κακίστης δαιμόνων ἐφίεσαι
 φιλοτιμίας, παῖ; μὴ σὺ γ' ἄδικος ἢ θεός·
 πολλοὺς δ' ἐς οἴκους καὶ πόλεις εὐδαίμονας
 εἰσῆλθε ἀξήλθ' ἐπ' ὀλέθρῳ τῶν χρωμένων·
 ἐφ' ἧ σὺ μαίνει. κεῖνο κάλλιον, τέκνον, 535
 ἰσότητα τιμᾶν, ἢ φίλους ἀεὶ φίλοις
 πόλεις τε πόλεσι συμμάχους τε συμμάχοις
 συνδεῖ· τὸ γὰρ ἶσον νόμιμον ἀνθρώποις ἔφνυ,
 τῷ πλέονι δ' ἀεὶ πολέμιον καθίσταται
 τοῦλάχιστον ἐχθρῶς θ' ἡμέρας κατάρχεται. 540
 καὶ γὰρ μέτρο' ἀνθρώποισι καὶ μέρη σταθμῶν
 ἰσότης ἔταξε ἀριθμὸν διώρισε,
 νυκτός τ' ἀφεγγὲς βλέφαρον ἡλίου τε φῶς
 ἶσον βαδίζει τὸν ἐνιαύσιον κύκλον,
 κούδέτερον αὐτῶν φθόρον ἔχει νικώμενον. 545
 εἴθ' ἥλιος μὲν νύξ τε δουλεύει βροτοῖς,
 σὺ δ' οὐκ ἀνέξει δωμάτων ἔχων ἶσον
 καὶ τῷδ' ἀπονέμειν; κᾶτα ποῦ ἔστιν ἡ δίκη;
 τί τὴν τυραννίδ', ἀδικίαν εὐδαίμονα,
 τιμᾶς ὑπέρφευ καὶ μέγ' ἡγήσαι τόδε; 550
 περιβλέπεσθαι τίμιον; κενὸν μὲν οὖν.
 ἢ πολλὰ μοχθεῖν πόλλ' ἔχων ἐν δώμασι
 βούλει; τί δ' ἔστι τὸ πλεόν; ὄνομα' ἔχει μόνον·
 ἐπεὶ τά γ' ἀρκοῦνθ' ἱκανὰ τοῖς γε σώφροσιν.
 οὔτοι τὰ χρήματ' ἴδια κέκτηνται βροτοί, 555
 τὰ τῶν θεῶν δ' ἔχοντες ἐπιμελούμεθα·
 ὅταν δὲ χρήξωσ', αὐτ' ἀφαιροῦνται πάλιν.
 ἄγ', ἦν σ' ἔρωμαι δύο λόγῳ προθεῖς ἅμα,
 πότερα τυραννεῖν ἢ πόλιν σῶσαι θέλεις; 560
 ἐρεῖς τυραννεῖν· ἦν δὲ νικήσῃ σ' ὁδε

ὁ δ' ὄλβος οὐ βέβαιος, ἀλλ' ἐφήμερος.

558

Ἀργεῖά τ' ἔγχη δόρυ τὸ Καδμείων ἔλη,
 ὅψει δαμασθὲν ἄστν Θηβαίων τόδε,
 ὅψει δὲ πολλὰς αἰχμαλώτιδας κόρας
 βία πρὸς ἀνδρῶν πολεμίων πορθουμένας. 565
 ὀδυνηρὸς ἄρ' ὁ πλοῦτος, ὃν ζητεῖς ἔχειν,
 γενήσεται Θήβαισι, φιλότιμος δὲ σύ.
 σοὶ μὲν τάδ' αὐδῶ. σοὶ δὲ Πολύνεικες λέγω·
 ἀμαθεῖς Ἀδραστος χάριτας εἰς σ' ἀνήψατο,
 ἀσύνητά δ' ἤλθες καὶ σὺ πορθήσων πόλιν. 570
 φέρ', ἣν ἔλῃς γῆν τήνδ', ὃ μὴ τύχοι ποτέ,
 πρὸς θεῶν, τρόπαια πῶς ἀναστήσεις δορός;
 πῶς δ' αὖ κατάρξει θυμάτων, ἐλὼν πάτραν,
 καὶ σκῦλα γράψεις πῶς ἐπ' Ἰνάχου ῥοαῖς·
 Θήβας πυρώσας τάσδε Πολυνείκης θεοῖς 575
 ἀσπίδας ἔθηκε; μήποτ', ὦ τέκνον, κλέος
 τοιόνδε σοι γένοιτ' ἄφ' Ἑλλήνων λαβεῖν.
 ἦν δ' αὖ κρατηθῆς καὶ τὰ τοῦδ' ὑπερδράμῃ,
 πῶς Ἀργος ἦξεις μυρίους λιπὼν νεκρούς;
 ἐρεῖ δὲ δὴ τις· ὦ κακὰ μνηστεύματα 580
 Ἀδραστε προσθείς, διὰ μιᾶς νύμφης γάμον
 ἀπωλόμεσθα. δύο κακῶ σπεύδεις, τέκνον,
 κείνων στέρεσθαι τῶνδ' ἐν μέσῳ πεσεῖν.
 μέθετον τὸ λίαν, μέθετον· ἀμαθία δυοῖν,
 εἰς ταῦθ' ὅταν μόλητον, ἔχθιστον κακόν. 585
 XO. ὦ θεοί, γένοισθε τῶνδ' ἀπότροποι κακῶν
 καὶ ξύμβασίν τιν' Οἰδίπου τέκνοις δότε.
 ET. μῆτερ, οὐ λόγων ἔθ' ἄγών, ἀλλ' ἀνάλωται χρόνος
 οὐν μέσῳ μάτην, περαίνει δ' οὐδὲν ἢ προθυμία·
 οὐ γὰρ ἂν ξυμβαῖμεν ἄλλως ἢ πὶ τοῖς εἰρημέ-
 νοις, 590
 ὥστε με σκήπτρων κρατοῦντα τῆσδ' ἄνακτ' εἶναι
 χθονός·

τῶν μακρῶν δ' ἀπαλλαγεῖσθαι νοουθετημάτων μ' ἔα.
καὶ σὺ τῶνδ' ἔξω κομίζου τειχέων ἢ κατθανεῖ.
πρὸς τίς; τίς ᾧδ' ἄτρωτος, ὅστις εἰς ἡμᾶς ξίφος
φόνιον ἐμβαλὼν τὸν αὐτὸν οὐκ ἀποίσεται μό-
ρον;

595

ἐγγύς, οὐ πρόσω βεβηκώς· εἰς χέρας λεύσσεις
ἐμάς;

εἰσορῶ· δειλὸν δ' ὁ πλοῦτος καὶ φιλόψυχον κακόν.
κᾶτα σὺν πολλοῖσιν ἦλθες πρὸς τὸν οὐδέν εἰς
μάχην;

ἀσφαλῆς γάρ ἐστ' ἀμείνων ἢ θρασὺς στρατη-
λάτης.

κομπὸς εἶ σπονδαῖς πεποιθώς, αἶ σε σῶζουσιν
θανεῖν.

600

καὶ σὲ δεύτερόν γ' ἀπαιτῶ σκῆπτρα καὶ μέρη
χθονός.

οὐκ ἀπαιτούμεσθ'· ἐγὼ γὰρ τὸν ἐμὸν οἰκῆσω
δόμον.

τοῦ μέρους ἔχων τὸ πλεῖον; ET. φήμ'· ἀπαλλάσ-
σου δὲ γῆς.

ᾧ θεῶν βωμοὶ πατρῶων, ET. οὓς σὺ πορθήσων
πάρει.

κλύετε μου, ET. τίς δ' ἂν κλύοι σου πατρίδ' ἐπε-
στρατευμένου;

605

καὶ θεῶν τῶν λευκοπῶλων δώμαθ', ET. οἱ στυ-
γοῦσί σε.

ἐξελαυνόμεσθα πατρίδος ET. καὶ γὰρ ἦλθες ἐξε-
λῶν.

ἀδικία γ', ᾧ θεοί. ET. Μυκῆναις, μὴ 'νθάδ' ἀνα-
κάλει θεούς.

ἀνόσιος πέφυκας, ET. ἀλλ' οὐ πατρίδος ὥς σὺ
πολέμιος.

- ΠΟ. ὅς μ' ἄμοιρον ἐξελαύνεις. ΕΤ. καὶ κατακτενῶ γε
πρός. 610
- ΠΟ. ὦ πάτερ, κλύεις ἂ πάσχω; ΕΤ. καὶ γὰρ οἷα δοῖς
κλύει.
- ΠΟ. καὶ σύ, μήτερ; ΕΤ. οὐ θέμις σοι μητρὸς ὀνομά-
ζειν κάρα.
- ΠΟ. ὦ πόλις. ΕΤ. μολὼν ἐς Ἄργος ἀνακάλει Λέρνης
ὔδωρ.
- ΠΟ. εἴμι, μὴ πόνει· σὲ δ' αἰνῶ, μήτερ. ΕΤ. ἐξιδί-
χθονός.
- ΠΟ. ἐξιμεν· πατέρα δέ μοι δὸς εἰσιδεῖν. ΕΤ. οὐκ ἂν
τύχοις. 615
- ΠΟ. ἀλλὰ παρθένους ἀδελφάς. ΕΤ. οὐδὲ τάσδ' ὄψει
ποτέ.
- ΠΟ. ὦ κασίγνηται. ΕΤ. τί ταύτας ἀνακαλεῖς ἔχθιστος
ῶν;
- ΠΟ. μήτερ, ἀλλά μοι σὺ χαῖρε. ΙΟ. χαρτὰ γοῦν πάσχω,
τέκνον.
- ΠΟ. οὐκέτ' εἰμὶ παῖς σός. ΙΟ. εἰς πόλλ' ἀθλίᾳ πέφυκ'
ἐγώ.
- ΠΟ. ὅδε γὰρ εἰς ἡμᾶς ὑβρίζει. ΕΤ. καὶ γὰρ ἀνθυβρί-
ξομαι. 620
- ΠΟ. ποῦ ποτε στήσει πρὸ πύργων; ΕΤ. ὥς τί μ' ἴστο-
ρεῖς τόδε;
- ΠΟ. ἀντιτάξομαι κτενῶν σε. ΕΤ. κάμει τοῦδ' ἔρω-
ξέχει.
- ΙΟ. ὦ τάλαιν' ἐγώ· τί δρᾷσεται, ὦ τέκν'; ΠΟ. αὐτὸ
σημανεῖ.
- ΙΟ. πατρὸς οὐ φεύξεσθ' Ἑρινῦς; ΕΤ. ἐρρέτω πρόπα-
δόμος.
- ΠΟ. ὥς τάχ' οὐκέθ' αἵματηρὸν τούμὸν ἀργήσει ξί-
φος. 625

τὴν δὲ θρέψασάν με γαῖαν καὶ θεοὺς μαρτύ-
ρομαι

ὥς ἄτιμος οἴκτρ᾽ ἀσχων ἐξελαύνομαι χθονός,
δοῦλος ὥς, ἀλλ' οὐχὶ ταύτοῦ πατρὸς Οἰδίου
γεγώς·

κἄν τί σοι, πόλις, γένηται, μὴ 'μέ, τόνδε δ' αἰ-
τιῶ.

[οὐχ ἑκὼν γὰρ ἦλθον, ἄκων δ' ἐξελαύνομαι χθο-
νός.] 630

καὶ σὺ Φοῖβ' ἀναξ' Ἀγνιεύ καὶ μέλαθρα χαίρετε,
ἥλικές θ' οὐμοὶ θεῶν τε δεξιμήλ' ἀγάλματα.

οὐ γὰρ οἶδ' εἴ μοι προσειπεῖν αὐτίς ἔσθ' ὑμᾶς
ποτε·

ἐλπίδες δ' οὐπῶ καθεύδουσ', αἷς πέποιθα σὺν
θεοῖς

τόνδ' ἀποκτείνας κρατήσῃν τῆσδε Θηβαίας χθο-
νός. 635

ET. ἔξιθ' ἐκ χώρας· ἀληθῶς δ' ὄνομα Πολυνείκην
πατήρ

ἔθετό σοι θείᾳ προνοίᾳ νεικέων ἐπώνυμον.

XO. Κάδμος ἔμολε τάνδε γᾶν 640 στρ.

Τύριος, ᾧ τετρασκελὴς
μῶσχος ἀδάματος πέσημα 640

δίκε τελεσφόρον διδοῦσα
χρησμόν, οὗ κατοικίσει

πεδία νιν τὸ θέσφατον
πυροφόρα δόμων ἔχρη,

καλλιπόταμος ὕδατος ἵνα τε 645

νοτὶς ἐπέρχεται ῥυτᾶς
Δίρκας χλοηφόρους

καὶ βαθυσπόρους γύας,

Βρόμιον ἔνθα τέκετο μάτηρ

* Διὸς γάμοισι, *

650

κισσὸς ὃν περιστεφῆς

ἐλικτὸς εὐθὺς ἔτι βρέφος

χλοηφόροισιν ἔρνεσιν

κατασκίοισιν ὀλβίσας ἐνώτισεν,

Βάκχιον χόρευμα παρθένοισι Θηβαῖταις

655

καὶ γυναιξὶν εὐίοις.

ἔνθα φόνιος ἦν δράκων

ἀντ.

Ἄρεος, ὠμόφρων φύλαξ

νάματ' ἐνυδρὰ καὶ ῥέεθρα

χλοερὰ δεργμάτων κόραισι

660

πολυπλάνοις ἐπισκοπῶν·

ὃν ἐπὶ χέρνιβας μολῶν

Κάδμος ὅλεσε μαρμάρῳ,

κρᾶτα φόνιον ὀλεσίθηρος

ὠλένας δικῶν βολαῖς,

665

δίας ἀμάτορος

Παλλάδος φραδαῖσι

γαπετεῖς δικῶν ὀδόντας

εἰς βαθυσπόρους γύας·

ἔνθεν ἐξανῆκε γᾶ

670

πάνοπλον ὄψιν ὑπὲρ ἄκρων

ὄρων χθονός· σιδαρόφρων

δέ νιν φόνος πάλιν ξυνῆψε γᾶ φίλα.

αἵματος δ' ἔδενσε γαῖαν, ἧ νιν εὐαλίοις

δεῖξεν αἰθέρος πνοαῖς.

675

καὶ σὲ τὸν προμάτορος

Ἰοῦς ποτ' ἔκγονον

Ἐπαφον, ᾧ Διὸς γένεθλον,

ἐκάλεσ' ἐκάλεσα βαρβάρῳ βοᾷ,

ἰώ, βαρβάροις λιταῖς,

680

βᾶθι βᾶθι τάνδε γᾶν·

σοί νιν ἔκγονοι κτίσαν,

ἂν διώνυμοι θεαί,

Περσέφασσα καὶ φίλα

Δαμάτηρ θεά,

685

πάντων ἄνασσα, πάντων δὲ Γᾶ τροφὸς

ἐκτήσαντο· πέμπε πυρφόρους

θεάς, ἄμυνε τᾶδε γᾶ·

πάντα δ' εὐπετῇ θεοῖς.

ET. χώρει σὺ καὶ κόμιζε τὸν Μενοικέως

690

Κρέοντ', ἀδελφὸν μητρὸς Ἰοκάστης ἐμῆς,

λέγων τὰδ', ὥς οἰκεῖα καὶ κοινὰ χθονὸς

θέλω πρὸς αὐτὸν συμβαλεῖν βουλευμάτα,

πρὶν εἰς μάχην τε καὶ δορὸς τάξιν μολεῖν.

καίτοι ποδῶν σῶν μόχθον ἐκλύει παρῶν·

695

ὁρῶ γὰρ αὐτὸν πρὸς δόμους στείχοντ' ἐμούς.

KP. ἦ πόλλ' ἐπῆλθον εἰσιδεῖν χορήζων σ', ἄναξ

Ἑτεόκλεες, πέριξ δὲ Καδμείων πύλας

φύλακας τ' ἐπῆλθον σὸν δέμας θηρώμενος.

ET. καὶ μὲν ἐγὼ σ' ἐχορήξον εἰσιδεῖν, Κρέον·

700

πολλῷ γὰρ εὖρον ἐνδεεῖς διαλλαγὰς,

ὥς εἰς λόγους συνῆψα Πολυνείκει μολῶν.

KP. ἤκουσα μεῖζον αὐτὸν ἢ Θήβας φρονεῖν,

κῆδει τ' Ἀδράστου καὶ στρατῷ πεποιθότα.

ἀλλ' εἰς θεοὺς χορὴ ταῦτ' ἀναρτήσαντ' ἔχειν·

705

ἃ δ' ἐμποδῶν μάλιστα, ταῦθ' ἤκω φράσω.

ET. τὰ ποῖα ταῦτα; τὸν λόγον γὰρ ἄγνωῶ.

KP. ἤκει τις αἰχμάλωτος Ἀργείων πάρα.

ET. λέγει δὲ δὴ τί τῶν ἐκεῖ νεώτερον;

KP. μέλλειν πέριξ πυκνοῖσι Καδμείων πόλιν

710

ὅπλοις ἐλίξιν ἀντίκ' Ἀργείων στρατόν.

ET. ἔξοιστέον τᾶρ' ὅπλα Καδμείων πόλει

- ΚΡ. ποῖ; μῶν νεάζων οὐχ ὄρᾳς ἂν χρή σ' ὄρᾳν;
 ΕΤ. ἐκτὸς τάφρων τῶνδ', ὥς μαχουμένους τάχα.
 ΚΡ. σμικρὸν τὸ πληῖθος τῆσδε γῆς, οἱ δ' ἄφθονοι. 715
 ΕΤ. ἐγῶδ' αὖ κείνους τοῖς λόγοις ὄντας θρασεῖς.
 ΚΡ. ἔχει τιν' ὄγκον Ἄργος Ἑλλήνων πάρα.
 ΕΤ. θάρσει· τάχ' αὐτῶν πεδίον ἐμπλήσω φόνου.
 ΚΡ. θέλοιμ' ἄν· ἀλλὰ τοῦθ' ὄρω πολλοῦ πόνον.
 ΕΤ. ὥς οὐ καθέξω τειχέων εἴσω στρατόν. 720
 ΚΡ. καὶ μὴν τὸ νικᾶν ἐστὶ πᾶν εὐβουλία.
 ΕΤ. βούλει τράπωμαι δῆθ' ὁδοὺς ἄλλας τινάς;
 ΚΡ. πάσας γε, πρὶν κίνδυνον εἰς ἅπαξ μολεῖν.
 ΕΤ. εἰ νυκτὸς αὐτοῖς προσβάλοιμεν ἐκ λόχου;
 ΚΡ. εἴπερ σφαλεῖς γε δεῦρο σωθήσει πάλιν. 725
 ΕΤ. ἴσον φέρει νύξ, τοῖς δὲ τολμῶσιν πλέον.
 ΚΡ. ἐνδυστυχηῖσαι δεινὸν εὐφρόνης κνέφας.
 ΕΤ. ἀλλ' ἄμφι δεῖπνον οὔσι προσβάλω δόρυ;
 ΚΡ. ἐκπληξίς ἂν γένοιτο· νικῆσαι δὲ δεῖ.
 ΕΤ. βαθύς γέ τοι Διοκαῖος ἀναχωρεῖν πόρος. 730
 ΚΡ. ἅπαν κᾶκιον τοῦ φυλάσσεσθαι καλῶς.
 ΕΤ. τί δ', εἰ καθιππεύσαιομεν Ἀργείων στρατόν;
 ΚΡ. κᾶκεῖ πέφρακται λαὸς ἄρμασιν πέριξ.
 ΕΤ. τί δῆτα δρᾶσω; πολεμίοισι δῶ πόλιν;
 ΚΡ. μὴ δῆτα· βουλεύου δ', ἐπείπερ εἷ σοφός. 735
 ΕΤ. τίς οὖν πρόνοια γίγνεται σοφωτέρᾳ;
 ΚΡ. ἔπ' ἄνδρας αὐτοῖς φασιν, ὥς ἤκουσ' ἐγώ,
 ΕΤ. τί προστετάχθαι δρᾶν; τὸ γὰρ σθένος βραχύ.
 ΚΡ. [λόχων ἀνάσσειν] ἐπὶ προσκεῖσθαι πύλαις.
 ΕΤ. τί δῆτα δρῶμεν; ἀπορίαν γὰρ οὐ μενῶ. 740
 ΚΡ. ἔπ' ἄνδρας αὐτοῖς καὶ σὺ πρὸς πύλαις ἐλοῦ.
 ΕΤ. λόχων ἀνάσσειν ἢ μονοστόλου δορός;
 ΚΡ. λόχων, προκρίνας οἵπερ ἀλκιμώτατοι,
 ΕΤ. ξυνῆκ'· ἀμύνειν τειχέων προσαμβάσεις.

- ΚΡ. καὶ ξυστρατηγούς· εἷς δ' ἀνὴρ οὐ πάνθ' ὄρα. 745
- ΕΤ. θάρσει προκρίνας ἢ φρενῶν εὐβουλία;
- ΚΡ. ἀμφοτέρων· ἀπολειφθὲν γὰρ οὐδὲν θάτερον.
- ΕΤ. ἔσται τὰδ'· ἐλθὼν δ' ἐπτάπυργον εἰς πόλιν
τάξω λοχαγούς πρὸς πύλαισιν, ὡς λέγεις,
ἴσους ἴσοισι πολεμίοισιν ἀντιθείς. 750
- ὄνομα δ' ἐκάστου διατριβὴ πολλὴ λέγειν,
ἐχθρῶν ὑπ' αὐτοῖς τείχεσιν καθημένων.
ἀλλ' εἴμ', ὅπως ἂν μὴ καταργῶμεν χέρα.
καί μοι γένοιτ' ἀδελφὸν ἀντήρη λαβεῖν
καὶ ξυσταθέντα διὰ μάχης ἐλεῖν δορί. 755
- γάμους δ' ἀδελφῆς Ἀντιγόνης παιδὸς τε σοῦ
Αἴμονος, εἴαν τι τῆς τύχης ἐγὼ σφαλῶ,
σοὶ χρὴ μέλεσθαι· τὴν δόσιν δ' ἐχέγγυον
τὴν πρόσθε ποιῶ νῦν ἐπ' ἐξόδοις ἐμαῖς. 760
- μητρὸς δ' ἀδελφὸς εἶ· τί δεῖ μακρηγορεῖν;
τρέφ' ἀξίως νιν σοῦ τε τὴν τ' ἐμὴν χάριν.
πατήρ δ' εἰς αὐτὸν ἀμαθίαν ὀφλισκάνει,
ὄψιν τυφλώσας· οὐκ ἄγαν σφ' ἐπήνεσα·
ἡμᾶς τ' ἀραῖσιν, ἣν τύχη, κατακτενεῖ. 765
- ἐν δ' ἡμῖν ἀργὸν ἔστιν, εἴ τι θέσφατον
οἰωνόμεαντις Τειρεσίας ἔχει φράσαι,
τοῦδ' ἐκπυθέσθαι ταῦτ'· ἐγὼ δὲ παῖδα σὸν
Μενοικέα σοῦ πατρὸς αὐτεπώνυμον
λαβόντα πέμψω δεῦρο Τειρεσίαν, Κρέον· 770
- σοὶ μὲν γὰρ ἡδὺς εἰς λόγους ἀφίξεται·
ἐγὼ δὲ τέχνην μαντικὴν ἐμεμψάμην
ἥδη πρὸς αὐτόν, ὥστε μοι μομφὰς ἔχειν.
πόλει δὲ καὶ σοὶ ταῦτ' ἐπισκῆπτω, Κρέον·
ἦνπερ κρατήσῃ τὰμά, Πολυνείκους νέκυν 775

κτανεῖν θ' ὅς ἤλθε πατρίδα πορθέσων ἐμήν. 756

μήποτε ταφῆναι τῇδε Θηβαῖα χθονί·
 θνήσκειν δὲ τὸν θάψαντα, καὶ φίλων τις ἦ.
 σοὶ μὲν τάδ' εἶπον· προσπόλοις δ' ἐμοῖς λέγω·
 ἐκφέρετε τεύχη πάνοπλά τ' ἀμφιβλήματα,
 ὥς εἰς ἀγῶνα τὸν προκείμενον δορὸς 780
 ὀρμῶμεν ἥδη ξὺν δίκη νικηφόρῳ.
 τῇ δ' εὐλαβείᾳ χρησιμωτάτῃ θεῶν
 προσευξόμεσθα τήνδε διασῶσαι πόλιν.

ΧΟ. ᾧ πολύμοχθος Ἄρης, τί ποθ' αἵματι στρ.
 καὶ θανάτῳ κατέχει Βρομίου παράμουςος ἐορ-
 ταῖς; 785

οὐκ ἐπὶ καλλιχόροις στεφάνοισι νεάνιδος ὥρας
 βόστρυχον ἀμπετάσας, λωτοῦ κατὰ πνεύματα
 μέλπει

μοῦσαν, ἐν ᾧ χάριτες χοροποιοί,
 ἀλλὰ σὺν ὀπλοφόρῳ στρατὸν Ἀργείων ἐπιπνεύσας
 ἄσματι Θήβαις 790

κῶμον ἀνανυλότατον προχορεύεις.
 οὐδ' ὑπὸ θυρσομανεῖ νεβρίδων μέτα δινεύεις,
 ἄρμασι καὶ ψαλίοις τετραβάμοσι μώνυχα πῶλον,
 Ἴσμηνοῦ τ' ἐπὶ χεύμασι βαίνων
 ἱππείαισι θοάξεις, Ἀργείους ἐπιπνεύσας
 Σπαρτῶν γέννα, 795

ἄσπιδοφέρμονα θίασον ἔνοπλον,
 ἀντίπαλον κατὰ λάϊνα τείχεα
 χαλκῷ κοσμήσας.
 ἦ δεινά τις Ἔρις θεός, ἃ τάδε
 μήσατο πῆματα γᾶς βασιλεῦσιν,
 Λαβδακίδαις πολυμόχθοις. 800

ᾧ ξαθέων πετάλων πολυθηρότα-
 ἀντ.

τὸν νάπος, Ἀρτέμιδος χιονοτρόφον ὄμμα Κιθαί-
ρων,

μήποτε τὸν θανάτῳ προτεθέντα, λόχευμ' Ἰοκά-
στας,

ὦφελες Οἰδιπόδαν θρέψαι βρέφος ἔκβολον οἴκων,
χρυσοδέτοις περόναις ἐπίσαμεν· 805

μηδὲ τὸ παρθένιον πτερόν, οὔρειον τέρας, ἐλθεῖν
πένθεα γαίας,

Σφιγγός, ἀμουνσοτάταισι σὺν ῥῥαῖς,

ἅ ποτε Καδμογενῇ τετραβάμοσι χαλαῖς

τείχεσι χριμπτομένα φέρειν αἰθέρος εἰς ἄβατον
φῶς

γένναν, ἃν ὁ κατὰ χθονὸς Ἄιδας 810

Καδμείοις ἐπιπέμπει· δυσδαίμων δ' ἔρις ἄλλα
θάλλει παίδων

Οἰδιπόδα κατὰ δώματα καὶ πόλιν.

οὐ γὰρ ὃ μὴ καλὸν οὔ ποτ' ἔφυ καλόν,

οὐδ' οἱ μὴ νόμιμοι 815

παῖδες ματρὶ λόχευμα, μῖασμα πατρός·

ἥ δὲ συναίμονος εἰς λέχος ἦλθεν.

ἔτεκες, ὦ γὰρ, ἔτεκές ποτε,

βάρβαρον ὥς ἀκοὰν ἐδάην ἐδάην ποτ' ἐν οἴκοις,

τὰν ἀπὸ θηροτρόφου φοινικολόφοιο δράκοντος 820

γένναν ὀδοντοφυῇ, Θήβαις κάλλιστον ὄνειδος·

Ἀρμονίας δέ ποτ' εἰς ὑμεναίους

ἦλυνθον οὐρανίδαί, φόρμιγγί τε τείχεα Θήβας

ταῖς Ἀμφιονίας τε λύρας ὑπὸ πύργος ἀνέστα

διδύμων ποταμῶν πόρον ἀμφὶ μέσον 825

Δίρκας, χλοεροτρόφον ἃ πεδίον

πρόπαρ Ἰσμηνοῦ καταδεύει·

Ἰὼ θ' ἃ κερόεσσα προμάτωρ

Καδμείων βασιλῆας ἐγείνατο

μυριάδας δ' ἀγαθῶν ἑτέρας ἑτέ- 830
 ροις μεταμειβομένα πόλις ἅδ' ἐπ' ἄ-
 κροισ ἔστακεν Ἀρή-
 οῖς στεφάνοισιν.

ΤΕΙ. ἡγοῦ πάροιθε, θύγατερ· ὥς τυφλῷ ποδὶ 835
 ὀφθαλμὸς εἶ σύ, ναυβάταισιν ἄστρον ὥς·
 δεῦρ' εἰς τὸ λευρὸν πέδον ἵχνος τιθεῖς ἑμόν,
 πρόβαινε, μὴ σφαλῶμεν· ἀσθενὴς πατήρ·
 κλήρους τέ μοι φύλασσε παρθένω χερσί,
 οὓς ἔλαβον οἰωνίσματ' ὀρνίθων μαθὼν 840
 θάκοισιν ἐν ἱεροῖσιν, οὗ μαντεύομαι.

τέκνον Μενοικεῦ, παῖ Κρέοντος, εἰπέ μοι
 πόση τις ἢ ἰλίοιπος ἄστεως ὁδὸς
 πρὸς πατέρα τὸν σόν· ὥς ἑμὸν κάμνει γόνυ,
 πυκνὴν δὲ βαίνων ἥλυσιν μόλις περῶ.

ΚΡ. θάρσει· πέλας γάρ, Τειρεσία, φίλοισι σοῖς 845
 ἐξώρμισαι σὸν πόδα· λαβοῦ δ' αὐτοῦ, τέκνον·
 ὥς πᾶς ἀπήνη πούς τε πρεσβύτου φιλεῖ
 χειρὸς θυραίας ἀναμένειν κουφίσματα.

ΤΕΙ. εἶεν, πάρεσμεν· τί με καλεῖς σπουδῇ, Κρέον;

ΚΡ. οὐπω λελήσμεθ'· ἀλλὰ σύλλεξαι σθένος 850
 καὶ πνεῦμ' ἄθροισον, αἶπος ἐκβαλὼν ὁδοῦ.

ΤΕΙ. κόπῳ παρεῖμαι γοῦν Ἐρεχθιδῶν ἄπο 855
 δεῦρ' ἐκκομισθεὶς τῆς πάροιθεν ἡμέρας·
 κάκεϊ γὰρ ἦν τις πόλεμος Εὐμόλπου δορός,
 οὗ καλλινίκους Κεκροπίδας ἔθηκ' ἐγώ·
 καὶ τόνδε χρυσοῦν στέφανον, ὥς ὀρεῖς, ἔχω
 λαβὼν ἀπαρχὰς πολέμιων σκυλευμάτων.

ΚΡ. οἰωνὸν ἐθέμην καλλίνικα σὰ στέφη· 860
 ἐν γὰρ κλύδωνι κείμεθ', ὥσπερ οἶσθα σύ,
 δορὸς Δαναῖδων, καὶ μέγας Θήβαις ἄγών.
 βασιλεὺς μὲν οὖν βέβηκε κοσμηθεὶς ὅπλοις

ἤδη πρὸς ἄλκην Ἐτεοκλῆς Μυκηνίδα·
 ἔμοι δ' ἐπέσταλκ' ἐκμαθεῖν σέθεν πάρα,
 τί δρῶντες ἂν μάλιστα σῶσαιμεν πόλιν.

- ΤΕΙ.** Ἐτεοκλέους μὲν οὖνεκ' ἂν κλήσας στόμα 865
 χρησμοὺς ἐπέσχον· σοὶ δ', ἐπεὶ χρήξεις μαθεῖν,
 λέξω. νοσεῖ γὰρ ἥδε γῆ πάλαι, Κρέον,
 ἐξ οὗ ἔτεκνώθη Λάιος βία θεῶν
 πόσιν τ' ἔφυσε μητρὶ μέλεον Οἰδίπουν·
 αἶθ' ὃ αἵματωποὶ δεργμάτων διαφθοραὶ 870
 θεῶν σόφισμα κἀπίδειξις Ἑλλάδι.
 ἂ συγκαλύψαι παῖδες Οἰδίπου χρόνῳ
 χρήζοντες, ὥς δὴ θεοὺς ὑπεκδραμούμενοι,
 ἥμαρτον ἀμαθῶς· οὔτε γὰρ γέρα πατρὶ
 οὔτ' ἔξοδον διδόντες ἄνδρα δυστυχῇ 875
 ἐξηγρίωσαν· ἐκ δ' ἔπνευσ' αὐτοῖς ἄρᾱς
 δεινὰς νοσῶν τε καὶ πρὸς ἡτιμασμένος.
 ἄγῶ τί οὐ δρῶν, ποῖα δ' οὐ λέγων ἔπη,
 εἰς ἔχθος ἦλθον παισὶ τοῖσιν Οἰδίπου.
 ἐγγὺς δὲ θάνατος αὐτόχειρ αὐτοῖς, Κρέον· 880
 πολλοὶ δὲ νεκροὶ περὶ νεκροῖς πεπτωκότες
 Ἀργεῖα καὶ Καδμεῖα μίξαντες βέλη
 πικροὺς γόους δώσουσι Θηβαίᾳ χθονί.
 σύ τ' ὦ τάλαινα συγκατασκάπτει πόλιν,
 εἰ μὴ λόγοις τις τοῖς ἔμοῖσι πείσεται. 885
 ἐκεῖνο μὲν γὰρ πρῶτον ἦν, τῶν Οἰδίπου
 μηδένα πολίτην μηδ' ἄνακτ' εἶναι χθονός,
 ὥς δαιμονῶντας κἀνατρέψοντας πόλιν.
 ἐπεὶ δὲ κρεῖσσον τὸ κακὸν ἔστι τὰγαθοῦ,
 μί' ἔστιν ἄλλη μηχανὴ σωτηρίας. 890
 ἀλλ' οὐ γὰρ εἰπεῖν οὔτ' ἔμοι τόδ' ἀσφαλὲς
 πικρὸν τε τοῖσι τὴν τύχην κεκτημένοις
 πόλει παρασχεῖν φάρμακον σωτηρίας.

- ἄπειμι, χαίρεθ' · εἷς γὰρ ὢν πολλῶν μέτα
τὸ μέλλον, εἰ χρή, πείσομαι· τί γὰρ πάθω; 895
- ΚΡ. ἐπίσχεσ αὐτοῦ, πρέσβυ. ΤΕΙ. μὴ ᾗπιλαμβάνον.
- ΚΡ. μεῖνον, τί φεύγεις; ΤΕΙ. ἡ τύχη σ', ἀλλ' οὐκ ἐγώ.
- ΚΡ. φράσον πολίταις καὶ πόλει σωτηρίαν.
- ΤΕΙ. βούλει σὺ μέντοι κούχλ βουλήσει τάχα.
- ΚΡ. καὶ πῶς πατρῶαν γαῖαν οὐ σῶσαι θέλω; 900
- ΤΕΙ. θέλεις ἀκούσαι δῆτα καὶ σπουδὴν ἔχεις;
- ΚΡ. εἷς γὰρ τί μᾶλλον δεῖ προθυμίαν ἔχειν;
- ΤΕΙ. κλύοις ἂν ἤδη τῶν ἐμῶν θεσπισμάτων.
πρῶτον δ' ἐκεῖνο βούλομαι σαφῶς μαθεῖν,
ποῦ ᾑστιν Μενοικεύς, ὅς με δεῦρ' ἐπήγαγεν; 905
- ΚΡ. ὅδ' οὐ μακρὰν ἄπεστι, πλησίον δέ σου.
- ΤΕΙ. ἀπελθέτω νυν θεσφάτων ἐμῶν ἐκάς.
- ΚΡ. ἐμὸς πεφυκὼς παῖς ἂ δεῖ σιγήσεται.
- ΤΕΙ. βούλει παρόντος δῆτά σοι τούτου φράσω;
- ΚΡ. κλύων γὰρ ἂν τέρποιτο τῆς σωτηρίας. 910
- ΤΕΙ. ἄκουε δὴ νυν θεσφάτων ἐμῶν ὁδόν,
ἂ δρῶντες ἂν σώσαιοτε Καδμείων πόλιν.
σφάξαι Μενοικέα τόνδε δεῖ σ' ὑπὲρ πάτρας
σὸν παῖδ', ἐπειδὴ τὴν τύχην αὐτὸς καλεῖς.
- ΚΡ. τί φῆς; τίν' εἶπας τόνδε μῦθον, ὦ γέρον; 915
- ΤΕΙ. ἄπερ πέφηνε, ταῦτα κἀνάγκη σε δρᾶν.
- ΚΡ. ὦ πολλὰ λέξας ἐν βραχεὶ χρόνῳ κακά.
- ΤΕΙ. σοί γ', ἀλλὰ πατρίδι μεγάλα καὶ σωτήρια.
- ΚΡ. οὐκ ἔκλινον, οὐκ ἤκουσα· χαιρέτω πόλις.
- ΤΕΙ. ἀνὴρ ὅδ' οὐκέθ' αὐτός, ἐκνεύει πάλιν. 920
- ΚΡ. χαίρων ἴθ' · οὐ γὰρ σῶν με δεῖ θεσπισμάτων.
- ΤΕΙ. ἀπόλωλεν ἀλήθει', ἐπεὶ σὺ δυστυχεῖς;
- ΚΡ. ὦ πρὸς σε γονάτων καὶ γερασμίου τριχός,
- ΤΕΙ. τί προσπίνεις με; δυσφύλακτ' αἶνει κακά.
- ΚΡ. σίγα· πόλει δὲ τούσδε μὴ λέξης λόγους. 925

- ΤΕΙ.** ἀδικεῖν κελεύεις μ' ; οὐ σιωπήσαιμεν ἄν.
ΚΡ. τί δή με δράσεις ; παῖδά μου κατακτενεῖς ;
ΤΕΙ. ἄλλοις μελήσει ταῦτ' , ἐμοὶ δ' εἰρήσεται.
ΚΡ. ἐκ τοῦ δ' ἐμοὶ τόδ' ἦλθε καὶ τέκνω κακόν ;
ΤΕΙ. ὀρθῶς μ' ἐρωτᾷς κεῖς ἀγῶν' ἔρχει λόγων. 930
 δεῖ τόνδε θαλάμαις , οὗ δράκων ὁ γηγενὴς
 ἐγένετο Δίρκης ναμάτων ἐπίσκοπος ,
 σφαγέντα φόνιον αἷμα γῇ δοῦναι χοᾶς
 Κάδμου , παλαιῶν Ἄρεος ἐκ μηνιμάτων ,
 ὃς γηγενεῖ δράκοντι τιμωρεῖ φόνον. 935
 καὶ ταῦτα δρωῦντες σύμμαχον κτήσεσθ' Ἄρην.
 χθῶν δ' ἀντὶ καρποῦ καρπὸν ἀντί θ' αἵματος
 αἶμ' ἦν λάβῃ βρότειον , ἕξετ' εὖμενῇ
 γῇν , ἥ ποθ' ὑμῖν χρυσοπήληκα στάχυν
 σπαρτῶν ἀνῆκεν· ἐκ γένους δὲ δεῖ θανεῖν 940
 τοῦδ' ὃς δράκοντος γέννος ἐκπέφυκε παῖς.
 σὺ δ' ἐνθάδ' ἡμῖν λοιπὸς εἰ σπαρτῶν γένους
 ἀκέραιος , ἐκ τε μητρὸς ἀρσένων τ' ἄπο ,
 οἱ σοὶ τε παῖδες. Αἴμονος μὲν οὖν γάμοι
 σφαγὰς ἀπείργουσ'· οὐ γὰρ ἐστὶν ἥθεος· 945
 [κεῖ μὴ γὰρ εὐνῆς ἦψατ' , ἀλλ' ἔχει λέχος·]
 οὗτος δὲ πῶλος τῇδ' ἀνειμένος πόλει
 θανὼν πατρώαν γαῖαν ἐκσώσειεν ἄν.
 πικρὸν δ' Ἀδράστῳ νόστον Ἀργείοισί τε
 θήσει , μέλαιναν κῆρ' ἐπ' ὄμμασιν βαλῶν , 950
 κλεινὰς τε Θήβας. τοῖνδ' ἐλοῦ δυοῖν πότμοιν
 τὸν ἕτερον· ἥ γὰρ παῖδα σῶσον ἥ πόλιν.
 τὰ μὲν παρ' ἡμῶν πάντ' ἔχεις· ἡροῦ , τέκνον ,
 πρὸς οἶκον. ὅστις δ' ἐμπύρῳ χοῖται τέχνη ,
 μάταιος· ἦν μὲν ἐχθρὰ σημήνας τύχη , 955
 πικρὸς καθέστηχ' οἷς ἄν οἴωνοσκοπῇ·
 ψευδῇ δ' ὑπ' οἴκτου τοῖσι χρωμένοις λέγων

ἀδικεῖ τὰ τῶν θεῶν. Φοῖβον ἀνθρώποις μόνον
 χορὴν θεσπιωδεῖν, ὃς δέδοικεν οὐδένα.

ΧΟ. Κρέον, τί σιγᾶς γῆρυν ἄφθογγον σχάσας; 960
 κάμοι γὰρ οὐδὲν ἤσσον ἐκπληξίς πάρα.

ΚΡ. τί δ' ἂν τις εἴποι; δῆλον οἷ γ' ἐμοὶ λόγοι.
 ἐγὼ γὰρ οὐ' ποτ' εἰς τόδ' εἶμι συμφορᾶς,
 ὥστε σφαγέντα παῖδα προσθεῖναι πόλει. 965
 πᾶσιν γὰρ ἀνθρώποισι φιλότεκνος βίος,

οὐδ' ἂν τὸν αὐτοῦ παῖδά τις δοίη κτανεῖν.
 μὴ μ' εὐλογείτω τὰμά τις κτείνων τέκνα.

αὐτὸς δ', ἐν ὥραίῳ γὰρ ἔσταμεν βίῳ,
 θνήσκειν ἔτοιμος πατρίδος ἐκλυτήριον.
 ἀλλ' εἶα, τέκνον, πρὶν μαθεῖν πᾶσαν πόλιν, 970
 ἀκόλαστ' ἑάσας μάντεως θεσπίσματα,

φεῦγ' ὥς τάχιστα τῆσδ' ἀπαλλαχθεὶς χθονός·
 λέξει γὰρ ἀρχαῖς καὶ στρατηλάταις τάδε,
 πύλας ἐφ' ἐπταὶ καὶ λοχαγέτας μολών·
 κὰν μὲν φθάσωμεν, ἔστι σοι σωτηρία· 975
 ἦν δ' ὑστερήσης, οἰχόμεσθα, κατθανεῖ.

ΜΕ. ποῖ δῆτα φεύγω; τίνα πόλιν; τίνα ξένον;

ΚΡ. ὅπου χθονὸς τῆσδ' ἐκποδὼν μάλιστ' ἔσει.

ΜΕ. οὐκοῦν σὲ φράζειν εἰκός, ἐκπονεῖν δ' ἐμέ.

ΚΡ. Δελφοὺς περάσας ΜΕ. ποῖ με χρή, πάτερ, μολεῖν;

ΚΡ. Αἰτωλίδ' ἐς γῆν. ΜΕ. ἐκ δὲ τῆσδε ποῖ περῶ; 981

ΚΡ. Θεσπρωτὸν οὐδας. ΜΕ. σεμνὰ Λαδώνης βάθρα;

ΚΡ. ἔγνωσ. ΜΕ. τί δῆτα ῥῦμά μοι γενήσεται;

ΚΡ. πόμπιμος ὁ δαίμων. ΜΕ. χρημάτων δὲ τίς πόρος;

ΚΡ. ἐγὼ πορεύσω χρυσόν.

ΜΕ. εὖ λέγεις, πάτερ. 985

χώρει νυν· ὥς σὴν πρὸς κασιγνήτην μολών,
 ἥς πρῶτα μαστὸν εἴλκυσ', Ἰοκάστην λέγω,
 μητρὸς στερηθεὶς ὀρφανός τ' ἀποξυγείς,

προσηγορήσων εἶμι καὶ σώσων βίον.
 ἀλλ' εἶα, χώρει. [μὴ τὸ σὸν κωλυέτω. 990
 γυναικες, ὡς εὖ] πατρὸς ἐξεῖλον φόβον
 κλέψας λόγοισιν, ὥσθ' ἃ βούλομαι τυχεῖν.
 ὅς μ' ἐκκομίζει, πόλιν ἀποστερεῶν τύχης,
 καὶ δειλίᾳ δίδωσι. καὶ συγγνωστὰ μὲν
 γέροντι· τοῦμόν δ' οὐχὶ συγγνώμην ἔχει, 995
 προδότην γενέσθαι πατρίδος ἥ μ' ἐγείνατο.
 ὡς οὖν ἂν εἰδῇτ', εἶμι καὶ σώσω πόλιν
 ψυχὴν τε δώσω τῇσδ' ὑπερθανεῖν χθονός.
 αἰσχροὺς γάρ, οἳ μὲν θεσφάτων ἐλεύθεροι
 κούκ εἰς ἀνάγκην δαιμόνων ἀφιγμένοι 1000
 στάντες παρ' ἀσπίδ' οὐκ ὀκνήσουσιν θανεῖν,
 πύργων πάροιθε μαχόμενοι πάτρας ὕπερ·
 ἐγὼ δὲ πατέρα καὶ κασίγνητον προδοῦς
 πόλιν τ' ἐμαυτοῦ δειλὸς ὡς ἔξω χθονός
 ἄπειμ'· ὅπου δ' ἂν ζῶ, κακὸς φανήσομαι. 1005
 μὰ τὸν μετ' ἄστρον Ζῆν' Ἄρην τε φοῖνιον,
 ὃς τοὺς ὑπερτεΐλαντας ἐκ γαίας ποτὲ
 σπαρτοὺς ἀνακτας τῇσδε γῆς ἰδρύσατο.
 ἀλλ' εἶμι καὶ στὰς ἐξ ἐπάλλξεων ἄκρων
 σφάξας ἐμαυτὸν σηκὸν ἐς μελαμβραθῇ 1010
 δράκοντος, ἔνθ' ὁ μάντις ἐξηγήσατο,
 ἐλευθερώσω γαῖαν· εἴρηται λόγος.
 στεῖχω δέ, θανάτου δῶρον οὐκ αἰσχροὺς πόλει
 δώσω, νόσου δὲ τήνδ' ἀπαλλάξω χθόνα.
 εἰ γὰρ λαβὼν ἕκαστος ὅ τι δύναιτό τις 1015
 χρηστὸν διέλθοι τοῦτο κείς κοινὸν φέροι
 πατρίδι, κακῶν ἂν αἰ πόλεις ἐλασσόνων
 πειρώμεναι τὸ λοιπὸν εὐτυχοῖεν ἄν.

ΧΟ. ἔβας ἔβας,

στρ.

ὦ πτεροῦσσα, γᾶς λόχευμα
 νεοτέρου τ' Ἐχίδνας, 1020
 Καδμείων ἄρπαγά,
 πολύστονος πολύφθορος,
 μιξοπάρθενος,
 δάιον τέρας,
 φοιτάσι πτεροῖς
 χαλαῖσι τ' ὠμοσίτοις· 1025
 Διοκαίων ἄ ποτ' ἐκ
 τόπων νέους πεδαίρουσ'
 ἄλυσρον ἀμφι μοῦσαν
 ὀλομέναν τ' Ἐρινὺν
 ἔφερεις ἔφερεις ἄχαια πατρίδι 1030
 φόνια· φόνιος ἐκ θεῶν,
 ὅς τάδ' ἦν ὁ πράξας.
 ἰάλεμοι δὲ ματέρων,
 ἰάλεμοι δὲ παρθένων
 ἐστέναζον οἴκοις· 1035
 ἰήιον βοᾶν βοάν,
 ἰήιον μέλος μέλος
 ἄλλος ἄλλ' ἐπωτότυξε
 διαδοχαῖς ἀνὰ πτόλιν.
 βροντᾷ δὲ στεναγμὸς
 ἀχά τ' ἦν ὅμοιος, 1040
 ὁπότε πόλεος ἀφανίσκειεν
 ἡ πτεροῦσσα παρθένος τιν' ἀνδρῶν.
 χρόνῳ δ' ἔβα 1045
 Πυθίαις ἀποστολαῖσιν
 Οἰδίπους ὁ τλάμων
 Θηβαίαν τάνδε γᾶν
 τότε ἄσμενοις, πάλιν δ' ἄχῃ·
 ματρὶ γὰρ γάμους

ἀντ.

δυσγάμους τάλας
 καλλίνικος ὦν
 αἰνιγμάτων συνάπτει,
 μιαίνει δὲ πτόλιν ·
 δι' αἱμάτων δ' ἀμείβει
 μυσαρὸν εἰς ἀγῶνα
 καταβαλὼν ἀραῖσι
 τέκεα μέλεος. ἀγάμεθ' ἀγάμεθ',
 ὅς ἐπὶ θάνατον οἴχεται
 γᾶς ὑπερ πατρώας,
 Κρέοντι μὲν λιπὼν γόους,
 τὰ δ' ἐπτάπυργα κλειῖθρα γᾶς
 καλλίνικα θήσων.
 γενοίμεθ' ὥδε ματέρες
 γενοίμεθ' εὖτεκνοι, φίλα
 Παλλάς, ἃ δράκοντος αἶμα
 λιθόβολον κατειργάσω,
 Καδμείαν μέριμναν
 ὀρμήσας' ἐπ' ἔργον,
 ὅθεν ἐπέσυτο τάνδε γαῖαν
 ἀρπαγαῖσι δαιμόνων τις ἄτα.

ΑΓΓ. ὦή, τίς ἐν πύλαισι δωμάτων κυρεῖ;
 ἀνοίγεται, ἐκπορεύεται Ἰοκάστην δόμων.
 ὦή μάλ' αὐτίς· διὰ μακροῦ μὲν, ἀλλ' ὅμως
 ἔξελθ', ἄκουσον, Οἰδίπου κλεινὴ δάμαρ,
 λήξας' ὀδυρμῶν πενθίμων τε δακρύν.

ΙΟ. ὦ φίλτατ', ἣ που ξυμφορὰν ἦκεις φέρων
 Ἐτεοκλέους θανόντος, οὗ παρ' ἀσπίδα
 βέβηκας ἀεὶ πολεμίων εἰργων βέλῃ;
 [τί μοί ποθ' ἦκεις καινὸν ἀγγελῶν ἔπος;]
 τέθνηκεν ἢ ξῆ παῖς ἐμός; σήμαινέ μοι.

ΑΓΓ. ξῆ, μὴ τρέσης τόδ', ὥς σ' ἀπαλλάξω φόβου.

- IO. τί δ', ἐπτάπυργοι πῶς ἔχουσι περιβολαί;
 ΑΓΓ. ἐστᾶς ἄθραυστοι, κοῦκ ἀνήρπασται πόλις.
 IO. ἦλθον δὲ πρὸς κίνδυνον Ἀργείου δορός; 1080
 ΑΓΓ. ἀκμήν γ' ἐπ' αὐτήν· ἀλλ' ὁ Καδμείων Ἄρης
 κρείσσων κατέστη τοῦ Μυκηναίου δορός.
 IO. ἐν εἰπὲ πρὸς θεῶν, εἴ τι Πολυνείκους πέρι
 οἶσθ', ὥς μέλει μοι καὶ τόδ', εἰ λεύσσει φάος.
 ΑΓΓ. ξῆ σοι ξυνωρὶς εἰς τόδ' ἡμέρας τέκνων. 1085
 IO. εὐδαιμονοίης. πῶς γὰρ Ἀργείων δόρυ
 πυλῶν ἀπεστήσασθε πυργηρούμενοι;
 λέξον, γέροντα τυφλὸν ὥς κατὰ στέγας
 ἐλθοῦσα τέρωψω, τῆσδε γῆς σεσωσμένης.
 ΑΓΓ. ἐπεὶ Κρέοντος παῖς ὁ γῆς ὑπερθανῶν 1090
 πύργων ἐπ' ἄκρων στὰς μελάνδεται ξίφος
 λαιμῶν διῆκε τῇδε γῇ σωτήριον,
 λόχους ἐνείμεν ἐπὶ καὶ λοχαγέτας
 πύλας ἐφ' ἐπτά, φύλακας Ἀργείου δορός,
 σὸς παῖς, ἐφέδρους θ' ἱππότας μὲν ἱππόταις 1095
 ἔταξ', ὀπλίτας δ' ἀσπιδηφόροις ἐπι,
 ὥς τῷ νοσοῦντι τειχέων εἴη δορός
 ἀλκὴ δι' ὀλίγου. περγάμων δ' ἀπ' ὀρθίων
 λεύκασπιν εἰσορῶμεν Ἀργείων στρατὸν
 Τευμησὸν ἐκλιπόντα· καὶ τάφρου πέλας 1100
 δρόμῳ ξυνῆψεν ἄστνυ Καδμείας χθονός.
 παιὰν δὲ καὶ σάλπιγγες ἐκελάδουν ὁμοῦ
 ἐκείθεν ἔκ τε τειχέων ἡμῶν πάρα.
 καὶ πρῶτα μὲν προσῆγε Νηίσταις πύλαις
 λόχον πυκναῖσιν ἀσπίσιν πεφρικότα 1105
 ὁ τῆς κυναγοῦ Παρθενοπαῖος ἔκγονος,
 ἐπίσημ' ἔχων οἰκείον ἐν μέσῳ σάκει,
 ἐκηβόλοις τόξοισιν Ἀταλάντην κάπρον
 χειρουμένην Αἰτωλόν. εἰς δὲ Προϊτίδας

πύλας ἐχώρει σφάγι' ἔχων ἐφ' ἄρματι 1110
 ὁ μάντις Ἀμφιάραος, οὐ σημεῖ' ἔχων
 ὑβρισμέν', ἀλλὰ σωφρόνως ἄσημ' ὄπλα.
 Ὠγύγια δ' εἰς πυλώμαθ' Ἱππομέδων ἄναξ
 ἔστειχ' ἔχων σημεῖον ἐν μέσῳ σάκει
 στικτοῖς πανόπτην ὄμμασιν δεδορκότα, 1115
 τὰ μὲν σὺν ἄστρον ἐπιτολαῖσιν ὄμματα
 βλέποντα, τὰ δὲ κρύπτοντα δυνόντων μέτα,
 ὥς ὕστερον θανόντος εἰδορᾶν παρῆν.
 Ὅμολώσιν δὲ τάξιν εἶχε πρὸς πύλαις
 Τυδεύς, λέοντος δέρος ἔχων ἐπ' ἀσπίδι 1120
 χαίτη πεφρικός· δεξιᾷ δὲ λαμπάδα
 Τιτὰν Προμηθεὺς ἔφερεν ὡς πρήσων πόλιν.
 ὁ σὸς δὲ Κρηναίαισι Πολυνείκης πύλαις
 Ἄρην προσῆγε· Ποτνιαῖδες δ' ἐπ' ἀσπίδι
 ἐπίσημα πᾶλοι δρομάδες ἐσκίρτων φόβῳ, 1125
 εὖ πως στρόφιγξιν ἔνδοθεν κνκλούμεναι
 πόρπαχ' ὑπ' αὐτόν, ὥστε μαίνεσθαι δοκεῖν.
 ὁ δ' οὐκ ἔλασσον Ἄρεος εἰς μάχην φρονῶν
 Καπανεὺς προσῆγε λόχον ἐπ' Ἠλέκτραις πύλαις·
 σιδηρονῶτοις δ' ἀσπίδος τύποις ἐπῆν 1130
 γίγας ἐπ' ὤμοις γηγενῆς ὅλην πόλιν
 φέρων μοχλοῖσιν ἐξανασπάσας βάθρων,
 ὑπόνοϊαν ἡμῖν οἷα πείσεται πόλις.
 ταῖς δ' ἐβδόμαις Ἄδραστος ἐν πύλαισιν ἦν,
 ἑκατὸν ἐχίδναις ἀσπίδ' ἐκπληροῦν γραφῇ 1135
 ὕδρας ἔχων λαιοῖσιν ἐν βραχίοσιν
 Ἄργεῖον αὖχημ'· ἐκ δὲ τειχεῶν μέσων
 δράκοντες ἔφερον τέκνα Καδμείων γνάθοις.
 παρῆν δ' ἐκάστου τῶνδ' ἐμοὶ θεάματα
 ξύνθημα παραφέροντι ποιμέσιν λόχων. 1140
 καὶ πρῶτα μὲν τόξοισι καὶ μεσαγκύλοις

ἔμαρνάμεσθα σφενδόναις θ' ἐκηβόλοις
 πετρῶν τ' ἀραγμοῖς· ὥς δ' ἐνικῶμεν μάχῃ,
 ἔκλαγξε Τυδεὺς καὶ σὸς ἐξαίφνης γόνος·
 ὦ τέκνα Δαναῶν, πρὶν κατεξάνθαι βολαῖς, 1145
 τί μέλλετ' ἄρδην πάντες ἐμπίπτειν πύλαις,
 γυμνῆτες ἱππεῖς ἀρμάτων τ' ἐπιστάται;
 ἦχῃς δ' ὅπως ἤκουσαν, οὔτις ἀργὸς ἦν·
 πολλοὶ δ' ἐπιπτον κρᾶτας αἱματούμενοι,
 ἡμῶν τ' ἐς οὔδας εἶδες ἄν πρὸ τειχέων 1150
 πυκνοὺς κυβιστητῆρας ἐκπεπνευκότας,
 ξηρὰν δ' ἔδευον γαῖαν αἵματος ῥοαῖς.
 ὁ δ' Ἀρκάς, οὐκ Ἀργεῖος, Ἀταλάντης γόνος,
 τυφῶς πύλαισιν ὥς τις ἐμπεσὼν βοᾷ
 πῦρ καὶ δίκηλλαν ὡς κατασκάψων πόλιν· 1155
 ἀλλ' ἔσχε μαργῶντ' αὐτὸν ἐναλίου θεοῦ
 Περικλύμενος παῖς λᾶαν ἐμβαλὼν κάρα
 ἀμαξοπληθῇ, γεῖσ' ἐπάλξεων ἄπο·
 ξανθὸν δὲ κρᾶτα διεπάλυνε καὶ ῥαφὰς
 ἔρρηξεν ὀστέων, ἄρτι δ' οἴνωπὸν γένυν 1160
 καθημάτωσεν· οὐδ' ἀποίσεται βίον
 τῇ καλλιτόξῳ μητρὶ Μαινάλου κόρη.
 ἐπεὶ δὲ τάσδ' εἰσεῖδεν εὐτυχεῖς πύλας,
 ἄλλας ἐπῆει παῖς σός, εἰπόμεν δ' ἐγώ.
 ὁρῶ δὲ Τυδεία καὶ παρασπιστάς πυκνοὺς 1165
 Αἰτωλίσιν λόγχαισιν εἰς ἄκρον στόμα
 πύργων ἀκοντίζοντας, ὥστ' ἐπάλξεων
 λιπεῖν ἐρίπνας φυγάδας· ἀλλὰ νιν πάλιν,
 κυναγὸς ὥσει, παῖς σὸς ἐξαθροίζεται,
 πύργοις δ' ἐπέστησ' αὐθις. εἰς δ' ἄλλας πύλας 1170
 ἡπειρόμεσθα, τοῦτο παύσαντες νοσοῦν.
 Καπανεὺς δὲ πῶς εἶποιμ' ἄν ὡς ἐμαίνετο;
 μακραύχενος γὰρ κλίμακος προσαμβάσει

- ἔχων ἐχώρει, καὶ τοσόνδ' ἐκόμπασε,
 μηδ' ἂν τὸ σεμνὸν πῦρ νιν εἰργαθεῖν Διὸς 1175
 τὸ μὴ οὐ κατ' ἄκρων περγάμων ἐλεῖν πόλιν.
 καὶ ταῦθ' ἅμ' ἠγόρευε καὶ πετρούμενος
 ἀνείρφ' ὑπ' αὐτὴν ἀσπίδ' εἰλίξας δέμας,
 κλίμακος ἀμείβων ξέστ' ἐνηλάτων βάθρα.
 ἦδη δ' ὑπερβαίνοντα γεῖσα τειχέων 1180
 βάλλει κεραυνῷ Ζεὺς νιν· ἐκτύπησε δὲ
 χθών, ὥστε δεῖσαι πάντας· ἐκ δὲ κλιμάκων
 ἐσφενδονᾶτο χωρὶς ἀλλήλων μέλη,
 κόμαι μὲν εἰς Ὀλυμπον, αἶμα δ' εἰς χθόνα,
 χεῖρες δὲ καὶ κῶλ' ὥς κύκλωμ' Ἰξίονος 1185
 εἰλίσσετ'· εἰς γῆν δ' ἔμπυρος πίπτει νεκρός.
 ὥς δ' εἶδ' Ἀδραστος Ζῆνα πολέμιον στρατῷ,
 ἔξω τάφρου καθῖσεν Ἀργείων στρατόν.
 οἱ δ' αὖ παρ' ἡμῶν δεξιὸν Διὸς τέρας
 ἰδόντες ἐξήλαυνον ἀρμάτων ὄχους 1190
 ἱππεῖς ὀπλῖται· κείς μὲς' Ἀργείων ὄπλα
 ξυνῆψαν ἐγχῇ, πάντα δ' ἦν ὁμοῦ κακά·
 ἔθνησκον ἐξέπιπτον ἀντύγων ἄπο,
 τροχοὶ τ' ἐπήδων, ἄξονες δ' ἐπ' ἄξοσι
 νεκροὶ τε νεκροῖς ἐξεσωρεύονθ' ὁμοῦ. 1195
 πύργων μὲν οὖν γῆς ἔσχομεν κατασκαφὰς
 εἰς τὴν παροῦσαν ἡμέραν· εἰ δ' εὐτυχὴς
 ἔσται τὸ λοιπὸν ἥδε γῆ, θεοῖς μέλει.
- ΧΟ. καλὸν τὸ νικᾶν· εἰ δ' ἀμείνουν' οἱ θεοὶ 1200
 γνώμην ἔχουσιν, εὐτυχὴς εἶην ἐγώ.
- ΙΟ. καλῶς τὰ τῶν θεῶν καὶ τὰ τῆς τύχης ἔχει·
 παῖδές τε γάρ μοι ζῶσι κακπέφευγε γῆ.
 Κρέων δ' ἔοικε τῶν ἐμῶν νυμφευμάτων

τῶν τ' Οἰδίπου δύστηνος ἀπολαῦσαι κακῶν, 1205
 παῖδός στερηθεῖς, τῇ πόλει μὲν εὐτυχῶς,
 ἰδίᾳ δὲ λυπρῶς. ἀλλ' ἄνελθέ μοι πάλιν,
 τί τὰπὶ τούτοις παῖδ' ἐμῷ δρασεῖετον.

ΑΓΓ. ἔα τὰ λοιπά· δεῦρ' ἀεὶ γὰρ εὐτυχεῖς.

ΙΟ. τοῦτ' εἰς ὕποπτον εἵπας· οὐκ ἔατέον. 1210

ΑΓΓ. μεῖζόν τι χρήξεις παῖδας ἢ σεσωσμένους;

ΙΟ. καὶ τὰπίλοιπά γ' εἰ καλῶς πράσσω κλύειν.

ΑΓΓ. μέθες μ'· ἔρημος παῖς ὑπασπιστοῦ σέθεν.

ΙΟ. κακόν τι κεύθεις καὶ στέγεις ὑπὸ σκότῳ.

ΑΓΓ. οὐκ ἂν γε λέξαιμ' ἐπ' ἀγαθοῖσί σοι κακά. 1215

ΙΟ. ἦν μή γε φεύγων ἐκφύγῃς πρὸς αἰθέρα.

ΑΓΓ. αἰἄ· τί μ' οὐκ εἴσας ἔξ εὐαγγέλου
 φήμης ἀπελθεῖν, ἀλλὰ μηνῦσαι κακά;
 τὼ παῖδε τὼ σὼ μέλλετον, τολμήματα
 αἰσχιστα, χωρὶς μονομαχεῖν παντὸς στρατοῦ, 1220

λέξαντες Ἀργείοισι Καδμείοισι τε
 εἰς κοινὸν οἶον μήποτ' ὄφελον λόγον.

Ἐτεοκλῆς δ' ὑπῆρξ' ἀπ' ὀρθίου σταθεὶς
 πύργου, κελεύσας σῖγα κηρυῖξαι στρατῷ.

ἔλεξε δ' ὧ γῆς Ἑλλάδος στρατηλάται 1225

Δαναῶν τ' ἀριστεῖς, οἵπερ ἦλθετ' ἐνθάδε,
 Κάδμου τε λαός, μήτε Πολυνείκους χάριν
 ψυχὰς ἀπεμπολᾶτε μήθ' ἡμῶν ὕπερ.

ἐγὼ γὰρ αὐτὸς τόνδε κίνδυνον μεθεῖς
 μόνος συνάψω συγγόνῳ τῷμῳ μάχην· 1230

καὶ μὲν κτάνω τόνδ', οἶκον οἰκήσω μόνος,
 ἡσώμενος δὲ τῷδε παραδώσω πόλιν.

ὑμεῖς δ' ἀγῶν' ἀφέντες Ἀργεῖαν χθόνα
 νύσσεσθε, βίοντον μὴ λιπόντες ἐνθάδε.

σπαρτῶν τε λαὸς ἄλλος ὃς κεῖται θανών.

1235

τοσαῦτ' ἔλεξε· σὸς δὲ Πολυνείκης γόνος 1236
ἐκ τάξεων ὥρουσε κἀπῆναι λόγους.

πάντες δ' ἐπερρόθησαν Ἀργεῖοι τάδε
Κάδμου τε λαὸς ὥς δίκαι' ἡγούμενοι.
ἐπὶ τοῖσδε δ' ἐσπείσαντο, κἀν μεταιχμίοις 1240
ὄρκους συνῆψαν ἐμμένειν στρατηλάται.

ἤδη δ' ἔκρυπτον σῶμα παγχάλκοις ὅπλοις
δισσοὶ γέροντος Οἰδίου νεανίαι·
φίλοι δ' ἐκόσμουν, τῆσδε μὲν πρόμον χθονὸς
σπαρτῶν ἀριστεῖς, τὸν δὲ Δαναῖδων ἄκροι. 1245

ἔσταν δὲ λαμπρὸν χρῶμά τ' οὐκ ἡλλαξάτην
μαργῶντ' ἐπ' ἀλλήλοισιν ἵεναι δόρυ.
παρξιόντες δ' ἄλλος ἄλλοθεν φίλων
λόγοις ἐθάρσυνόν τε κἀξηύδων τάδε·

Πολύνεικες, ἐν σοὶ Ζηνὸς ὀρθῶσαι βρέτας 1250
τρόπαιον Ἀργεῖ τ' εὐκλεᾶ δοῦναι λόγον·
Ἐτεοκλέα δ' αὖ· νῦν πόλεως ὑπερμαχεῖς,
νῦν καλλίνικος γενόμενος σκήπτρων κράτει.

τάδ' ἡγόρευον παρακαλοῦντες εἰς μάχην.
μάντις δὲ μῆλ' ἔσφαζον, ἐμπύρους τ' ἀκμᾶς 1255
ῥήξεις τ' ἐνώμων ὑγρότητ' ἐναντίαν
ἄκραν τε λαμπάδ', ἣ δυοῖν ὄρους ἔχει,
νίκης τε σῆμα καὶ τὰ τῶν ἡσσωμένων.

ἀλλ' εἴ τιν' ἀλκὴν ἢ σοφοὺς ἔχεις λόγους
ἢ φίλτρ' ἐπιδῶν, στεῖχ', ἐρήτυσον τέκνα 1260
δεινῆς ἀμίλλης, ὥς ὁ κίνδυνος μέγας
καὶ τᾶῖθλα δεινά· δάκρυά σοι γενήσεται
δισσοῖν στερείσῃ τῇδ' ἐν ἡμέρᾳ τέκνοιν.

ΙΟ. ὦ τέκνον ἔξελθ', Ἀντιγόνη, δόμων πάρος·
οὐκ ἐν χορείαις οὐδὲ παρθενεύμασι 1265
νῦν σοι προχωρεῖ δαιμόνων κατάστας,
ἀλλ' ἄνδρ' ἀρίστῳ καὶ κασιγνήτῳ σέθεν

- εἰς θάνατον ἐκνεύοντε κωλῦσαί σε δεῖ
 σὺν μητρὶ τῇ σῇ μὴ πρὸς ἀλλήλοιν θανεῖν.
- AN. τίν', ὦ τεκοῦσα μητέρα, ἔκπληξιν νέαν 1270
 φίλοις ἀντεῖς τῶνδε δωμάτων πάρος;
- IO. ὦ θύγατερ, ἔρρει σῶν κασιγνήτων βίος.
- AN. πῶς εἶπας; IO. αἰχμὴν εἰς μίαν καθέστατον.
- AN. οὐ γὰρ, τί λέξεις, μητέρα; IO. οὐ φίλ', ἀλλ' ἔπου.
- AN. ποῦ, παρθενῶνας ἐκλιποῦς; IO. ἀνὰ στρατόν. 1275
- AN. αἰδούμεθ' ὄχλον. IO. οὐκ ἐν αἰσχύνῃ τὰ σά.
- AN. δρᾶσω δὲ δὴ τί; IO. συγγόνων λύσεις ἔριν!
- AN. τί δρῶσα, μητέρα; IO. προσπίτνουσ' ἐμοῦ μέτα.
- AN. ἡγοῦ σὺ πρὸς μεταίχμι', οὐ μελλητέον.
- IO. ἔπειγ' ἔπειγε, θύγατερ· ὥς ἦν μὲν φθάσω 1280
 παῖδας πρὸ λόγχης, οὐμὸς ἐν φάει βίος.
 θανοῦσι δ' αὐτοῖς συνθανοῦσα κείσομαι.
- XO. αἰαῖ αἰαῖ, στρ.
 τρομερὰν φρίκα τρομερὰν φρέν' ἔχω· 1285
 διὰ σάρκα δ' ἐμὴν
 ἔλεος ἔλεος ἔμολε ματέρος δειλαίας.
 δίδυμα τέκεα πότερος ἄρα πότερον αἰμάξει,
 ἰὼ μοι πόνων,
 ἰὼ Ζεῦ, ἰὼ γὰρ, 1290
 ὁμογενῇ δέραν, ὁμογενῇ ψυχὰν
 δι' ἀσπίδων, δι' αἱμάτων;
 τάλαιν' ἐγὼ τάλαινα,
 πότερον ἄρα νέκυν ὀλόμενον ἀχρήσω; 1295
 φεῦ δᾶ φεῦ δᾶ, ἀντ.
 δίδυμοι θῆρες, φόνιαι ψυχαὶ
 δορὶ παλλόμεναι
 πέσσεα πέσσεα δαί' ἀντίχ' αἰμάξετον.
- 1284 — 1295 = 1296 — 1307
- ἦν δ' ὑστερήσης, οἰχόμεσθα, κατθανεῖ. 1282

τάλανες, ὅ τι ποτὲ μονομάχον ἐπὶ φρέν' ἤλθέτην,
βοᾷ βαρβάρῳ

1301

ἰαχὰν στενακτὰν

μελομένην νεκροῖς δάκρυσι θρηγῆσω.

σχεδὸν τύχα πέλας φόνου·

κρινεῖ φάος τὸ μέλλον.

1305

πότμος ἄποτμος ὁ φόνος ἔνεκ' Ἑρινύων.

ἀλλὰ γὰρ Κρέοντα λεύσσω τόνδε δεῦρο συννεφῇ
πρὸς δόμους στείχοντα, παύσω τοὺς παρεστῶτας
γούους.

ΚΡ. οἷμοι, τί δράσω; πότερ' ἔμαυτὸν ἢ πόλιν

1310

στένω δακρύσας, ἣν πέριξ ἔχει νέφος

τοιούτου ὥστε δι' Ἀχέρουτος ἰέναι;

ἐμός τε γὰρ παῖς γῆς ὅλωλ' ὑπερθανών,

τοῦνομα λαβὼν γενναῖον, ἀνιαρὸν δ' ἐμοί·

ὃν ἄρτι κρημνῶν ἐκ δρακοντείων ἐλὼν

1315

αὐτοσφαγῇ δύστηνος ἐκόμισ' ἐν χεροῖν,

βοᾷ δὲ δῶμα πᾶν· ἐγὼ δ' ἦκω μετὰ

γέρον ἀδελφὴν γραῖαν Ἰοκάστην, ὅπως

λούσῃ προθῆταί τ' οὐκέτ' ὄντα παῖδ' ἐμόν.

τοῖς γὰρ θανούσι χρὴ τὸν οὐ τεθυνηκότα

1320

τιμὰς διδόντα χθόνιον εὐσεβεῖν θεόν.

ΧΟ. βέβηκ' ἀδελφὴ σὴ δόμων ἔξω, Κρέον,

κόρη τε μητρὸς Ἀντιγόνη κοινῷ ποδί.

ΚΡ. ποῖ κἀπὶ ποίαν συμφορὰν; σήμαινέ μοι.

ΧΟ. ἤκουσε τέκνα μονομάχῳ μέλλειν δορὶ

1325

εἰς ἀσπίδ' ἤξειν βασιλικῶν δόμων ὑπερ.

ΚΡ. πῶς φῆς; νέκυν τοι παιδὸς ἀγαπάξων ἐμοῦ

οὐκ εἰς τόδ' ἤλθον ὥστε καὶ τάδ' εἰδέναι.

ΧΟ. ἀλλ' οἴχεται μὲν σὴ κασιγνήτη πάλαι·

δοκῶ δ' ἀγῶνα τὸν περὶ ψυχῆς, Κρέον,

1330

ἤδη πεπρᾶχθαι παισὶ τοῖσιν Οἰδίπῳ.

- ΚΡ. οἴμοι, τὸ μὲν σημεῖον εἰσορῶ τόδε,
σκυθρωπὸν ὄμμα καὶ πρόσωπον ἄγγέλου
στείχοντος, ὃς πᾶν ἄγγελεῖ τὸ δρώμενον.
- ΑΓΓ. ὦ τάλας ἐγώ, τί ν' εἴπω μῦθον ἢ τίνας λόγους; 1335
- ΚΡ. οἰχόμεσθ' οὐκ εὐπροσώποις φροιμίοις ἄρχει λόγον.
- ΑΓΓ. ὦ τάλας, δισσῶς αὐτῷ· μεγάλα γὰρ φέρω κακά.
- ΚΡ. πρὸς πεπραγμένοισιν ἄλλοις πήμασιν; λέγεις δὲ τί;
- ΑΓΓ. οὐκέτ' εἰς σῆς ἀδελφῆς παῖδες ἐν φάει, Κρέον.
- ΚΡ. αἰᾶ· 1340
μεγάλα μοι θροεῖς πάθρα καὶ πόλει.
- ΑΓΓ. ὦ δώματ' εἰσηκούσατ' Οἰδίπου τάδε,
παίδων ὁμοίαις συμφοραῖς ὀλωλότων;
- ΧΟ. ὥστ' ἐκδακρῦσαί γ', εἰ φρονοῦντ' ἐτύγχανον.
- ΚΡ. οἴμοι ξυμφορᾶς βαρυποτμωτάτας, 1345
οἴμοι κακῶν δύστηνος· ὦ τάλας ἐγώ.
- ΑΓΓ. εἰ καὶ τὰ πρὸς τούτοισί γ' εἰδείης κακά.
- ΚΡ. καὶ πῶς γένοιτ' ἂν τῶνδε δυσποτμώτερα;
- ΑΓΓ. τέθνηκ' ἀδελφῇ σὴ δυοῖν παίδοιν μέτα.
- ΧΟ. ἀνάγετ' ἀνάγετε κωκυτόν, 1350
ἐπὶ κᾶρα τε λευκοπήχεις κτύπους χεροῖν.
- ΚΡ. ὦ τλήμον, οἶον τέρμον', Ἰοκάστη, βίου
γάμων τε τῶν σῶν Σφριγγὸς αἰνιγμοὺς ἔτλης.
πῶς καὶ πέπρακται διπτύχων παίδων φόνος
ἄρᾶς τ' ἀγώνισμ' Οἰδίπου, σήμαινέ μοι. 1355
- ΑΓΓ. τὰ μὲν πρὸ πύργων εὐτυχήματα χθονὸς
οἶσθ'· οὐ μακρὰν γὰρ τειχέων περιπτυχαί,
ὥστ' οὐχ ἅπαντά σ' εἰδέναι τὰ δρώμενα.
ἐπεὶ δὲ χαλκίοις σῶμ' ἐκοσμήσανθ' ὅπλοις
οἱ τοῦ γέροντος Οἰδίπου νεανίαί, 1360
ἔστησαν ἐλθόντ' εἰς μέσον μεταίχμιον

ὥς εἰς ἀγῶνα μονομάχου τ' ἄλκην δορός.
 βλέψας δ' ἔς Ἄργος ἦκε Πολυνείκης ἀράς·
 ὦ πότνι Ἥρα, σὸς γάρ εἰμ', ἐπεὶ γάμοις 1365
 ἔξευξ' Ἀδράστου παῖδα καὶ ναίω χθόνα,
 δός μοι κτανεῖν ἀδελφόν, ἀντήρη δ' ἐμὴν
 καθαιματώσαι δεξιὰν νικηφόρον,
 αἰσχιστον αἰτῶν στέφανον, ὁμογενῇ κτανεῖν.
 [πολλοῖς δ' ἐπήει δάκρυα τῆς τύχης ὄση, 1370
 κᾶβλεψαν ἀλλήλοισι διαδόντες κόρας.]
 Ἐτεοκλέης δὲ Παλλάδος χρυσάσπιδος
 βλέψας πρὸς οἶκον ἠΰξατ'· ὦ Διὸς κόρη,
 δὸς ἔργος ἡμῖν καλλίνικον ἐκ χειρὸς
 εἰς στέρν' ἀδελφοῦ τῆσδ' ἀπ' ὠλένης βαλεῖν 1375
 κτανεῖν θ' ὅς ἦλθε πατρίδα πορθήσων ἐμήν.
 ἐπεὶ δ' ἀφείθη πυρσὸς ὥς Τυρσηνικῆς
 σάλπιγγος ἡχὴ σῆμα φοινίου μάχης,
 ἦξαν δρόμημα δεινὸν ἀλλήλοισι ἐπὶ·
 κᾶπροι δ' ὅπως θήγοντες ἀγρίαν γένυν 1380
 ξυνῆψαν, ἀφρῶ διάβροχοι γενειάδας·
 ἦσσαν δὲ λόγχαις· ἀλλ' ὑφίζανον κύκλοις,
 ὅπως σίδηρος ἐξολισθάνοι μάτην.
 εἰ δ' ὅμμ' ὑπερσχὸν Ἴτυος ἄτερος μάθοι,
 λόγχην ἐνώμα, στόματι προφθῆναι θέλων. 1385
 ἀλλ' εὖ προσῆγον ἀσπίδων κεγχρώμασιν·
 ὀφθαλμόν, ἀργὸν ὥστε γίνεσθαι δόρυ.
 πλείων δὲ τοῖς ὀρῶσιν ἐστάλασσε ἰδρῶς
 ἢ τοῖσι δρῶσι, διὰ φίλων ὀρρωδίαν.
 Ἐτεοκλέης δὲ ποδὶ μεταψαίρων πέτρον 1390
 ἔχρους ὑπόδρομον, κῶλον ἐκτὸς ἀσπίδος
 τίθησι· Πολυνείκης δ' ἀπήντησεν δορί,
 πληγὴν σιδήρῳ παραδοθεῖσαν εἰσιδὼν,
 κνήμην τε διεπέρασεν Ἀργεῖον δόρυ·

στρατὸς δ' ἀνηλάλαξε Δαναϊδῶν ἅπας. 1395
 καὶν τῷδε μόχθῳ γυμνὸν ὦμον εἰσιδὼν
 ὁ πρόσθε τρωθεὶς στέρνα Πολυνείκους βία
 διῆκε λόγχην, καπέδωκεν ἡδονὰς
 Κάδμου πολίταις, ἀπὸ δ' ἔθραυσ' ἄκρον δόρυ.
 εἰς δ' ἄπορον ἦκων δορὸς ἐπὶ σκέλος πάλιν 1400
 χωρεῖ, λαβὼν δ' ἀφῆκε μάρμαρον πέτρων
 μέσον τ' ἄκοντ' ἔθραυσεν· ἐξ ἴσου δ' Ἄρης
 ἦν, κάμακος ἀμφοῖν χεῖρ' ἀπεστερημένοι.
 ἔνθεν δὲ κώπας ἀρπάσαντε φασγάνων
 ἐς ταῦτόν ἦκον, συμβαλόντε δ' ἀσπίδας 1405
 πολὺν ταραγμὸν ἀμφιβάντ' εἶχον μάχης.
 καὶ πῶς νοήσας Ἐτεοκλῆς τὸ Θεσσαλὸν
 εἰσῆγαγεν σόφισμ' ὁμιλία χθονός.
 ἐξαλλαγεῖς γὰρ τοῦ παρεστῶτος πόνου,
 λαιὸν μὲν εἰς τοὔπισθεν ἀναφέρει πόδα, 1410
 πρόσω τὰ κοῖλα γαστροὺς εὐλαβούμενος·
 προβάς δὲ κῶλον δεξιὸν δι' ὀμφαλοῦ
 καθῆκεν ἔγχος σφονδύλοις τ' ἐνήρμοσεν.
 ὁμοῦ δὲ κάμψας πλευρὰ καὶ νηδὺν τάλας
 σὺν αἵματηραῖς σταγόσι Πολυνείκης πίτνει. 1415
 ὁ δ' ὥς κρατῶν δὴ καὶ νενικηκὼς μάχῃ,
 ξίφος δικῶν ἐς γαῖαν ἐσκύλευέ νιν,
 τὸν νοῦν πρὸς αὐτὸν οὐκ ἔχων, ἐκεῖσε δέ.
 ὃ καὶ νιν ἔσφηλ'· ἔτι γὰρ ἐμπνέων βραχύ,
 σώζων σίδηρον ἐν λυγρῷ πεσέματι, 1420
 μόλις μὲν, ἐξέτεινε δ' εἰς ἥπαρ ξίφος
 Ἐτεοκλέους ὁ πρόσθε Πολυνείκης πεσών.
 γαῖαν δ' ὁδᾶξ ἐλόντες ἀλλήλοιν πέλας
 πίπτουσιν ἄμφω κοῦ διώρισαν κράτος.
 ΧΟ. φεῦ φεῦ, κακῶν σῶν, Οἰδίπου, σ' ὅσον στένω·
 τὰς σὰς δ' ἀρὰς ἔοικεν ἐκπλῆσαι θεός. 1426

ΑΙΤ. ἄκουε δὴ νυν καὶ τὰ πρὸς τούτοις κακά.
 ἐπεὶ τέκνω πεσόντ' ἐλειπέτην βίον,
 ἐν τῷδε μήτηρ ἢ τάλαινα προσπίτνει.
 τετρωμένους δ' ἰδοῦσα καιρίους σφαγὰς 1431
 ὦμωξεν· ὦ τέκν', ὑστέρα βοηδρόμος
 πάρειμι. προσπίτνουσα δ' ἐν μέρει τέκνα
 ἔκλαι' ἐθρήνηι τὸν πολὺν μάτην πόνον
 στένους', ἀδελφή θ' ἢ παρασπίζουσ' ὁμοῦ· 1435
 ὦ γηροβοσκῶ μητρός, ὦ γάμους ἐμούς
 προδόντ' ἀδελφῶ φιλιτάτω. στέρνων δ' ἄπο
 φύσημ' ἀνείς δύσκλητον Ἐτεοκλῆς ἀναξ
 ἦκουσε μητρός, κἀπιθεὶς ὑγρὰν χέρα
 φωνήν μὲν οὐκ ἀφῆκεν, ὁμμάτων δ' ἄπο 1440
 προσεῖπε δακρύοις, ὥστε σημῆναι φίλα.
 ὁ δ' ἦν ἔτ' ἔμπνους, πρὸς κασιγνήτην δ' ἰδὼν
 γραῖάν τε μητέρ' εἶπε Πολυνείκης τάδε·
 ἀπωλόμεσθα, μῆτερ· οἰκτεῖρω δὲ σέ
 καὶ τήνδ' ἀδελφήν καὶ κασίγνητον νεκρόν. 1445
 φίλος γὰρ ἐχθρὸς ἐγένετ', ἀλλ' ὅμως φίλος.
 θάψον δέ μ' ὦ τεκοῦσα καὶ σὺ σύγγουε
 ἐν γῇ πατρώᾳ, καὶ πόλιν θυμουμένην
 παρηγορεῖτον, ὥς τοσόνδε γοῦν τύχω
 χθονὸς πατρώας, κεῖ δόμους ἀπώλεσα. 1450
 ξυνάρμοσον δὲ βλέφαρά μου τῇ σῇ χειρί,
 μῆτερ — τίθησι δ' αὐτὸς ὁμμάτων ἐπι —
 καὶ χαίρειτ'· ἥδη γάρ με περιβάλλει σκότος.
 ἄμφω δ' ἅμ' ἐξέπνευσαν ἄθλιον βίον.
 μήτηρ δ' ὅπως ἐσεῖδε τήνδε συμφοράν, 1455
 ὑπερπαθήσασ' ἥρπασ' ἐκ νεκρῶν ξίφος
 κἄπραξε δεινά· διὰ μέσου γὰρ ἀνχένος

ὦθεϊ σίδηρον, ἐν δὲ τοῖσι φιλτάτοις
 θανοῦσα κεῖται περιβαλοῦσ' ἄμφοιν χέρας.
 ἀνῆξε δ' ὀρθὸς λαὸς εἰς ἔριν λόγων, 1460
 ἡμεῖς μὲν ὥς νικῶντα δεσπότην ἐμόν,
 οἱ δ' ὥς ἐκείνον. ἦν δ' ἔρις στρατηλάταις,
 οἱ μὲν πατάξαι πρόσθε Πολυνείκην δορί,
 οἱ δ' ὥς θανόντων οὐδαμοῦ νίκη πέλοι.
 [κὰν τῷδ' ὑπεξῆλθ' Ἀντιγόνη στρατοῦ δίχα.] 1465
 οἱ δ' εἰς ὄπλ' ἤσσον· εὖ δέ πως προμηθία
 καθῆστο Κάδμου λαὸς ἀσπίδων ἐπι·
 κᾶφθμεν οὐπὼ τεύχεσιν πεφραγμένον
 Ἀργεῖον εἰσπεσόντες ἐξαίφνης στρατόν.
 κούδεις ὑπέστη, πεδία δ' ἐξεπίπλασαν 1470
 φεύγοντες, ἔρρει δ' αἶμα μυρίον νεκρῶν
 λόγχαις πιτνόντων. ὥς δ' ἐνικῶμεν μάχῃ,
 οἱ μὲν Διὸς τρόπαιον ἵστασαν βρέτας,
 οἱ δ' ἀσπίδας συλῶντες Ἀργείων νεκρῶν
 σκυλεύματ' εἶσω τειχέων ἐπέμπομεν. 1475
 ἄλλοι δὲ τοὺς θανόντας Ἀντιγόνης μέτα
 νεκροὺς φέρουσιν ἐνθάδ' οἰκτίσαι φίλοις.
 πόλει δ' ἀγῶνες οἱ μὲν εὐτυχέστατοι
 τῇδ' ἐξέβησαν, οἱ δὲ δυστυχέστατοι.

XO. οὐκ εἰς ἀκοὰς ἔτι δυστυχία 1480
 δώματος ἦκει· πάρα γὰρ λεύσσειν
 πτώματα νεκρῶν τρισσῶν ἤδη
 τάδε πρὸς μελάρθοις κοινῷ θανάτῳ
 σκοτίαν αἰῶνα λαχόντων.

AN. οὐ προκαλυπτομένα βοτρυχάδεος στρ. α' 1485
 ἄβρὰ παρηίδος οὐδ' ὑπὸ παρθενί-
 ας τὸν ὑπὸ βλεφάροις

* φοίνικ' ἐρύθημα προσώπου,

καδομένα φέρομαι βάκχα νεκύων,
 κράδεμνα δικουῖσα κόμας ἀπ' ἐμᾶς, 1490
 στολίδα κροκόεσσαν ἀνεῖσα τρυφᾶς,
 ἄγερμόνευμα νεκροῖσι πολύστονον. αἰαῖ, ἰὼ μοι.
 ὦ Πολύνεικες, ἔφης ἄρ' ἐπώνυμος, ὦμοι, Θήβαις·
 σὰ δ' ἔρις οὐκ ἔρις, ἀλλὰ φόνος φόνος 1495
 Οἰδιπόδα δόμον ὤλεσε κρανθεῖς
 αἵματι δεινῷ, αἵματι λυγρῷ.
 τίνα δὲ προσφθδὸν στρ. β'
 ἢ τίνα μουσοπόλον στοναχὰν ἐπὶ
 δάκρυσσι δάκρυσιν, ὦ δόμος ὦ δόμος, 1500
 ἀνακαλέσωμαι, ἀντ. β'
 τρισσὰ φέρουσα τὰδ' αἵματα σύγγονα,
 ματέρα καὶ τέκνα, χάσματ' Ἑρινύος;
 ἃ δόμον Οἰδιπόδα πρόπαρ ὤλεσε,
 τᾶς ἀγρίας ὅτε 1505
 δυσξύνετον ξυνετὸς μέλος ἔγνω
 Σφιγγὸς ἀοιδοῦ σῶμα φρονεύσας.
 ἰὼ μοι, [πάτερ,]
 τίς Ἑλλὰς ἢ βάρβαρος ἢ
 τῶν πρόπαρ εὐγενετῶν ἕτερος 1510
 ἔτλα κακῶν τοσῶνδ'
 αἵματος ἀμερίου
 τοιάδ' ἄχεα φανερά;
 τάλαιν' ὥς ἐλελίζει.
 τίς τ' ἄρ' ὄρνις ἢ θρὺς ἢ ἐλάτας 1515
 ἀκροκόμοις ἀμφὶ κλάδοις
 ἐξομένα μονομάτορος ὀδυρμοῖς
 ἐμοῖς ἄχεσι συνωδός;
 * * αἴλινον ἀλάγμασιν ἃ στρ. γ'

1498 — 1500 = 1501 — 1503

1519 — 1522 = 1539 — 1542

- τοῖσδε προκλαίω μονάδ' αἰ- 152
 ῶνα διάξουσα τὸν αἰὲν χρόνον ἐν
 λειβομένοισιν δακρύοισιν.
 τίν' ἰαχήσω;
 τίν' ἐπὶ πρῶτον ἀπὸ χαίτας
 σπαραγμοῖς ἀπαρχὰς βάλλω; 152
 ματρὸς ἐμᾶς διδύ-
 μοισι γάλακτος παρὰ μαστοῖς
 ἢ πρὸς ἀδελφῶν
 οὐλόμεν' αἰκίσματα δισσῶν;
 ὅτοτοῖ ὅτοτοῖ, λείπε σοὺς δόμους, 153
 ἀλαὸν ὄμμα φέρων,
 πάτερ γεραιέ, δεῖξον,
 Οἰδίποδα, σὸν αἰῶνα μέλεον, ὃς ἐπὶ
 δώμασιν ἀέριον σκότον ὄμμασι
 σοῖσι βαλὼν ἔλκεις μακρόπονον ζῶάν. 153
 κλύεις, ὦ κατ' αὐλὰν ἀλαίνων γεραι-
 ὸν πόδα δεμνίοις
 δύστανος ἰαύων;
 ΟΙ. τί δ', ὦ παρθένε, βακτρεύμασι τυ- ἀντ. γ' 154
 φλοῦ ποδὸς ἐξάγαγες εἰς
 φῶς με λεχήρη σκοτίων ἐκ θαλάμων
 οἰκτροτάτοισιν δακρύοισιν,
 πολιὸν αἰθέρος ἀφανὲς εἶδωλον ἢ
 νέκυν ἐνερθεν ἢ
 ποτανὸν ὄνειρον; 154
 ΑΝ. δυστυχὲς ἀγγελίας ἔπος οἴσει, στρ. δ' 155
 πάτερ, οὐκέτι σοι τέκνα λεύσσει
 φάος οὐδ' ἄλοχος, παραβάκτροις
 ἀ πόδα σὸν τυφλόπουν θεραπεύμασιν αἰὲν ἐμόχθε
 ὦ πάτερ, ὦμοι.

ΟΙ. ὦμοι ἐμῶν παθέων· πάρα γὰρ στενάχειν τάδ',
 ἀντεῖν.

τρισσαὶ ψυχὰι ποίᾳ μοίρᾳ
 πῶς ἔλιπον φάος, ὧ τέκνον, αὖδα.

ΑΝ. οὐκ ἐπ' ὀνειδέσιν οὐδ' ἐπιχάρμασιν, ἀντ. δ' 1555
 ἀλλ' ὀδύναισι λέγω· σὸς ἀλάστωρ
 ξίφεσιν βρίθων * * * *

καὶ πυρὶ καὶ σχετλίαισι μάχαις ἐπὶ παῖδας ἔβα σούς,
 ὧ πάτερ, ὦμοι.

ΟΙ. αἰαῖ. ΑΝ. τί τάδε καταστένεις; 1560

ΟΙ. ὧ τέκνα. ΑΝ. δι' ὀδύνας ἔβας,
 εἰ τὰ τέθριππά γ' ἔθ' ἄρματα λεύσσω
 ἀελίου τάδε σώματα νεκρῶν
 ὄμματος ἀνγαῖς σαῖς ἐπενώμας.

ΟΙ. τῶν μὲν ἐμῶν τεκέων φανερόν κακόν· 1565

ἅ δὲ τάλαιν' ἄλοχος τίνι μοι, τέκνον, ὦλετο μοίρᾳ;

ΑΝ. δάκρυα γοερὰ φανερὰ πᾶσι τιθεμένα,
 τέκεσι μαστὸν

ἔφερεν ἔφερεν ἱκέτις ἱκέταν ὀρομένα.

εὖρε δ' ἐν Ἠλέκτραισι πύλαις τέκνα ἀντ. α' 1570

λωτοτρόφον κατὰ λείμακα λόγχαις

κοινὸν ἐνυάλιον

μάτηρ, ὥστε λέοντας ἐναύλους,

μαρναμένους ἐπὶ τραύμασιν, αἵματος

ἥδη ψυχρὰν λοιβὰν φονίαν,

1575

ἂν ἔλαχ' Αἰδας, ὥπασε δ' Ἄρης·

χαλκόκροτον δὲ λαβοῦσα νεκρῶν πάρα φάσγανον

εἶσω

σαρκὸς ἔβαψεν, ἄχει δὲ τέκνων ἔπεσ' ἀμφὶ τέ-

κνοισιν.

πάντα δ' ἐν ἄματι τῷδε συνάγαγεν,

- ὦ πάτερ, ἀμετέροισι δόμοισιν ἄ- 1580
 χη θεὸς ὅστις τᾷδε τελευτᾷ.
- ΧΟ. πολλῶν κακῶν ὑπῆρξεν Οἰδίπου δόμοις
 τόδ' ἡμαρ· εἴη δ' εὐτυχέστερος βίος.
- ΚΡ. οἴκτων μὲν ἤδη λήγεθ', ὥς ὦρα τάφου
 μνήμην τίθεσθαι· τῶνδε δ', Οἰδίπου, λόγων 1585
 ἄκουσον· ἀρχὰς τῆσδε γῆς ἔδωκέ μοι
 Ἑτεοκλέης παῖς σός, γάμων φερνὰς διδοὺς
 Αἴμονι κόρης τε λέκτρον Ἀντιγόνης σέθεν.
 οὐκουν σ' ἐάσω τήνδε γῆν οἰκεῖν ἔτι·
 σαφῶς γὰρ εἶπε Τειρεσίας οὐ μὴ ποτε 1590
 σοῦ τήνδε γῆν οἰκοῦντος εὖ πράξειν πόλιν.
 ἀλλ' ἐκκομίζου. καὶ τὰδ' οὐχ ὕβρει λέγω
 οὐδ' ἐχθρὸς ὢν σοι, διὰ δὲ τοὺς ἀλάστορας
 τοὺς σοὺς δεδοικῶς μὴ τι γῇ πάθῃ κακόν.
- ΟΙ. ὦ μοῖρ', ἀπ' ἀρχῆς ὥς μ' ἔφυσας ἄθλιον· 1595
 ὃν καὶ πρὶν εἰς φῶς μητρὸς ἐκ γονῆς μολεῖν,
 ἄγονον Ἀπόλλων Λαῖῳ μ' ἐθέσπισε
 φονέα γενέσθαι πατρός· ὦ τάλας ἐγώ.
 ἐπεὶ δ' ἐγενόμην, αὖθις ὁ σπείρας πατὴρ 1600
 κτείνει με νομίσας πολέμιον πεφνέειν·
 χρῆν γὰρ θανεῖν νιν ἐξ ἐμοῦ· πέμπει δέ με
 μαστὸν ποθοῦντα θηρσὶν ἀθλίαν βοράν·
 οὐ σωξόμεσθα. Ταρτάρου γὰρ ὤφρην
 ἐλθεῖν Κιθαιρῶν εἰς ἄβυσσα χάσματα, 1605
 ὅς μ' οὐ διώλεσ', ἀλλὰ δουλεῦσαί τέ με
 δαίμων ἔδωκε Πόλυβον ἀμφὶ δεσπότην.
 κτανὼν δ' ἐμαυτοῦ πατέρ' ὁ δυσδαίμων ἐγὼ
 εἰς μητρὸς ἦλθον τῆς ταλαιπώρου λέχος,
 παῖδάς τ' ἀδελφοὺς ἔτεκον, οὓς ἀπώλεσα, 1610

καὶ τλήμον', εἴ τις ἄλλος ἀνθρώπων ἔφν·

1596

ἄρ᾽ ἀς παραλαβὼν Λαΐου καὶ παισὶ δούς.
 οὐ γὰρ τοσοῦτον ἀσύνετος πέφυκ' ἐγὼ
 ὥστ' εἰς ἔμ' ὄμματ' εἰς τ' ἐμῶν παίδων βίον
 ἄνευ θεῶν του ταῦτ' ἐμηχανησάμην.
 εἶεν· τί δράσω δῆθ' ὁ δυσδαίμων ἐγώ; 1615
 τίς ἡγεμών μοι ποδὸς ὁμαρτήσῃ τυφλοῦ;
 ἦδ' ἡ θανοῦσα; ζῶσά γ' ἂν σάφ' οἶδ' ὅτι.
 ἄλλ' εὖτεκνος ξυνωρίς; ἄλλ' οὐκ ἔστι μοι.
 ἄλλ' ἔτι νεάζων αὐτὸς εὕροίμ' ἂν βίον;
 πόθεν; τί μ' ἄρδην ὦδ' ἀποκτείνεις, Κρέον; 1620
 ἀποκτενεῖς γάρ, εἴ με γῆς ἔξω βαλεῖς.
 οὐ μὲν ἐλίξας γ' ἀμφὶ σὸν χεῖρας γόνυ
 κακὸς φανοῦμαι· τὸ γὰρ ἐμόν ποτ' εὐγενὲς
 οὐκ ἂν προδοίην, οὐδέ περ πρᾶσσαν κακῶς.
 ΚΡ. σοί τ' εὖ λέλεκται γόνυατὰ μὴ χρώζειν ἐμά, 1625
 ἐγὼ δὲ ναίειν σ' οὐκ ἐάσαιμ' ἂν χθόνα.
 νεκρῶν δὲ τῶνδε τὸν μὲν εἰς δόμους χρεῶν
 ἦδη κομίζειν, τὸν δὲ [δ', ὃς πέρσων πόλιν
 πατρίδα σὺν ἄλλοις ἦλθε,] Πολυνείκους νέκυν
 ἐκβάλετ' ἄταπτον τῆσδ' ὄρων ἔξω χθονός. 1630
 κηρύσσεται δὲ πᾶσι Καδμείοις τάδε,
 ὃς ἂν νεκρὸν τόνδ' ἢ καταστέφω ἀλῶ
 ἢ γῇ καλύπτω, θάνατον ἀνταλλάσσεται.
 σὺ δ' ἐκλιποῦσα τριπτύχους θρήνους νεκρῶν 1635
 κόμιζε σαυτήν, Ἀντιγόνη, δόμων ἔσω
 καὶ παρθελεύου τὴν ἰοῦσαν ἡμέραν
 μένουσ' ἐν ἧ σε λέκτρον Αἴμονος μένει.
 ΑΝ. ὦ πάτερ, ἐν οἷοις κείμεθ' ἄθλιοι κακοῖς.
 ὥς σε στενάξω τῶν τεθνηκότων πλέον· 1640
 οὐ γὰρ τὸ μὲν σοι βαρὺ κακῶν, τὸ δ' οὐ βαρὺ,

ἔἴην δ' ἄκλαυστον ἄταπον, οἴωνοῖς βοράν. 1634

- ἀλλ' εἰς ἅπαντα δυστυχῆς ἔφυς, πάτερ.
 ἀτὰρ σ' ἐρωτῶ τὸν νεωστὶ κοίρανον·
 τί θεσμοποιεῖς ἐπὶ ταλαιπώρῳ νεκρῷ; 1645
 ΚΡ. Ἑτεοκλέους βουλευμάτων, οὐχ ἡμῶν τάδε.
 ΑΝ. ἄφρονά γε, καὶ σὺ μωρὸς ὃς ἐπείθου τάδε.
 ΚΡ. πῶς τάντεταλμέν' οὐ δίκαιον ἐκπονεῖν;
 ΑΝ. οὐκ, ἦν πονηρὰ γ' ἢ κακῶς τ' εἰρημένα.
 ΚΡ. τί δ'; οὐ δικαίως ὅδε κυστὶν δοθήσεται; 1650
 ΑΝ. οὐκ ἔννομον γὰρ τὴν δίκην πρᾶσσεσθαι νιν.
 ΚΡ. εἶπερ γε πόλεως ἐχθρὸς ἦν, οὐκ ἐχθρὸς ὦν;
 ΑΝ. οὐκοῦν ἔδωκε τῇ τύχῃ τὸν δαίμονα.
 ΚΡ. καὶ τῷ τάφῳ νυν τὴν δίκην παρασχέτω.
 ΑΝ. τί πλημμελήσας, τὸ μέρος εἰ μετῆλθε γῆς; 1655
 ΚΡ. ἄταφος ὅδ' ἀνὴρ, ὥς μάθης, γενήσεται.
 ΑΝ. ἐγὼ σφε θάψω, κἂν ἀπεννέπη πόλις.
 ΚΡ. σαντὴν ἄρ' ἐγγὺς τῷδε συνθάψεις νεκρῷ.
 ΑΝ. ἀλλ' εὐκλείης τοι δύο φίλω κειῖσθαι πέλας.
 ΚΡ. λάξυσθε τήνδε κεῖς δόμους κομίζετε. 1660
 ΑΝ. οὐ δῆτ', ἐπεὶ τοῦδ' οὐ μεθήσομαι νεκροῦ.
 ΚΡ. ἔκριν' ὁ δαίμων, παρθέν', οὐχ ἂ σοὶ δοκεῖ.
 ΑΝ. κάκεῖνο κέκριται, μὴ' φυβρίζεσθαι νεκρούς.
 ΚΡ. ὥς οὔτις ἀμφὶ τῷδ' ὑγρὰν θήσει κόνιν.
 ΑΝ. ναὶ πρὸς σε τῆσδε μητρὸς Ἰοκάστης, Κρέον, 1665
 ΚΡ. μάταια μοχθεῖς· οὐ γὰρ ἂν τύχοις τάδε.
 ΑΝ. σὺ δ' ἀλλὰ νεκρῷ λουτρὰ περιβαλεῖν μ' ἔα.
 ΚΡ. ἔν τοῦτ' ἂν εἴη τῶν ἀπορρήτων πόλει.
 ΑΝ. ἀλλ' ἀμφὶ τραύματ' ἄγρια τελαμῶνας βαλεῖν.
 ΚΡ. οὐκ ἔσθ' ὅπως σὺ τόνδε τιμήσεις νέκυν. 1670
 ΑΝ. ὦ φίλτατ', ἀλλὰ στόμα γε σὸν προσπτύξομαι.
 ΚΡ. οὐκ εἰς γάμους σοὺς ξυμφορὰν κτήσει γόοις.
 ΑΝ. ἦ γὰρ γαμοῦμαι ζῶσα παιδί σῳ ποτε;
 τί τόνδ' ὑβρίζεις πατέρ' ἀποστέλλον χθονός; 1644

- ΚΡ. πολλή σ' ἀνάγκη· ποῦ γὰρ ἐκφεύξει λέχος;
 ΑΝ. νὺξ ἄρ' ἐκείνη Δαναΐδων μ' ἔξει μίαν. 1675
 ΚΡ. εἶδες τὸ τόλμημ' οἶον ἐξωνείδισεν;
 ΑΝ. ἴστω σίδηρος ὄρκιον τέ μοι ξίφος.
 ΚΡ. τί δ' ἐκπροθυμεῖ τῶνδ' ἀπηλλάχθαι γάμων;
 ΑΝ. ξυμφεύξομαι τῷδ' ἀθλιωτάτῳ πατρί.
 ΚΡ. γενναιότης σοι, μωρία δ' ἔνεστί τις. 1680
 ΑΝ. καὶ ξυνθανοῦμαι γ', ὥς μάθης περαιτέρω.
 ΚΡ. ἴθ', οὐ φονεύσεις παῖδ' ἐμόν, λείπε χθόνα.
 ΟΙ. ὦ θύγατερ, αἰνῶ μὲν σε τῆς προθυμίας.
 ΑΝ. ἀλλ' εἰ γαμοίμην, σὺ δὲ μόνος φεύγοις, πάτερ —
 ΟΙ. μὲν' εὐτυχοῦσα, τᾶμ' ἐγὼ στέρξω κακά. 1685
 ΑΝ. καὶ τίς σε τυφλὸν ὄντα θεραπέυσει, πάτερ;
 ΟΙ. πεσὼν ὅπου μοι μοῖρα κείσομαι πέδῳ.
 ΑΝ. ὁ δ' Οἰδίπους ποῦ καὶ τὰ κλείν' αἰνίγματα;
 ΟΙ. ὄλωλ'· ἐν ἡμάρ μ' ὤλβισ', ἐν δ' ἀπώλεσεν.
 ΑΝ. οὐκουν μετασχεῖν κάμει δεῖ τῶν σῶν κακῶν; 1690
 ΟΙ. αἰσχροῖα φυγὴ θυγατρὶ σὺν τυφλῷ πατρί.
 ΑΝ. οὔ, σωφρονούσῃ γ', ἀλλὰ γενναία, πάτερ.
 ΟΙ. προσάγαγέ νῦν με, μητρὸς ὡς ψαῦσω σέθεν.
 ΑΝ. ἰδού, γεραιᾶς φιλτάτης ψαῦσον χερί.
 ΟΙ. ὦ μῆτερ, ὦ ξυνάορ' ἀθλιωτάτη. 1695
 ΑΝ. οἴκτρά πρόκειται, πάντ' ἔχουσ' ὁμοῦ κακά.
 ΟΙ. Ἐτεοκλέους δὲ πτώμα Πολυνείκους τε ποῦ;
 ΑΝ. τῷδ' ἐκτάδην σοι κείσθον ἀλλήλοιν πέλας.
 ΟΙ. πρόσθε τυφλὴν χέρ' ἐπὶ πρόσωπα δυστυχῇ.
 ΑΝ. ἰδού, θανόντων σῶν τέκνων ἅπτου χερί. 1700
 ΟΙ. ὦ φίλα πεσήματ' ἄθλι' ἀθλίου πατρός.
 ΑΝ. ὦ φίλτατον δῆτ' ὄνομα Πολυνείκους ἐμοί.
 ΟΙ. νῦν χρησμός, ὦ παῖ, Λοξίου περαίνεται.
 ΑΝ. ὁ ποῖος; ἀλλ' ἦ πρὸς κακοῖς ἐρεῖς κακά;
 ΟΙ. ἐν ταῖς Ἀθήναις κατθανεῖν μ' ἀλώμενον. 1705

- AN. ποῦ; τίς σε πύργος Ἀτθίδος προσδέξεται;
- OI. ἱερὸς Κολωνός, δώμαθ' ἱππίου θεοῦ.
ἀλλ' εἶα, τυφλῷ τῷδ' ὑπηρέτει πατρί,
ἐπεὶ προθυμεῖ τῆσδε κοινουῖσθαι φυγῆς.
- AN. ἴθ' εἰς φυγὰν τάλαιναν· ὄρεγε χέρα φίλαν, 1710
πάτερ γεραίέ, πομπίμαν
ἔχων ἔμ' ὥστε ναυσίπομπον αὔραν.
- OI. ἰδὸν πορεύομαι, τέκνον,
σύ μοι ποδαγὸς ἀθλία γενοῦ. 1715
- AN. γενόμεθα γενόμεθ' ἄθλιοι
γε δῆτα Θηβαῖαν μάλιστα παρθένων.
- OI. πόθι γεραιὸν ἵχνος τίθῃμι;
βάκτρα πρόσφερ', ὦ τέκνον.
- AN. τᾶδε τᾶδε βᾶθί μοι, 1720
τᾶδε [τᾶδε] πόδα τίθει, πάτερ,
ὥστ' ὄνειρον ἰσχύν [ἔχων].
- OI. ἰὼ ἰώ, δυστυχεστάτας φυγᾶς·
ἐλαύνων τὸν γέροντά μ' ἐκ πάτρας.
ἰὼ ἰώ, δεινὰ δειν' ἐγὼ τλάς. 1725
- AN. τί τλάς; τί τλάς; οὐχ ὀρᾷ Δίκα κακούς,
οὐδ' ἀμείβεται βροτῶν ἀσυνεσίας.
- OI. ὄδ' εἰμὶ μοῦσαν ὃς ἐπὶ καλ-
λινικὸν οὐράνιον ἔβαν
παρθένου κόρας αἰ- 1730
νιγμ' ἀσύνετον εὐρώων.
- AN. Σφιγγὸς ἀναφέρεις ὄνειδος;
ἄπαγε τὰ πάρος εὐτυχήματ' αὐδῶν.
τάδε σ' ἐπέμενε μέλεα πάθρα
φυγάδα πατρίδος ἄπο γενόμενον, 1735
ὦ πάτερ, θανεῖν που.
ποθεινὰ δάκρυα παρὰ φίλαισι παρθένοις

λιποῦς' ἄπειμι πατρίδος ἀποπρὸ γαίης
ἀπαρθένευτ' ἄλωμένα.

φεῦ τὸ χρήσιμον φρενῶν 1740

εἰς πατρός γε συμφορὰς

εὐκλεᾶ με θήσει·

τάλαιν' ἐγὼ σοῦ συγγόνου θ' ὑβρισμάτων,

ὃς ἐκ δόμων ἄθραπτος οἴχεται νέκυς,

μέλεος ὄν, εἴ με καὶ θανεῖν, πάτερ, χρεών, 1745

σκότια γὰρ καλύψω.

OI. πρὸς ἥλικας φάνηθι σάς.

AN. ἄλῃς ὀδυρμάτων ἐμῶν.

OI. σὺ δ' ἀμφὶ βωμίους λιτάς.

AN. κόρον ἔχουσ' ἐμῶν κακῶν. 1750

OI. ἴθ' ἀλλὰ Βρόμιος ἵνα τε ση-
κὸς ἄβατος ὄρεσι μαινάδων.

AN. Καδμείαν ὦ

νεβρίδα στολιδωσαμένα ποτ' ἐγὼ

Σεμέλας ἱερὸν

1755

θίασον ὄρεσιν ἀνεχόρευσα,

χάριν ἀχάριτον εἰς θεοὺς διδοῦσα;

OI. ὦ πάτρας κλεινῆς πολῖται, λεύσσει', Οἰδίπους ὅδε,

[ὃς τὰ κλείν' αἰνίγματ' ἔγνω καὶ μέγιστος ἦν ἀνὴρ,]

ὃς μόνος Σφιγγὸς κατέσχον τῆς μαιφόνου κράτη,

νῦν ἄτιμος αὐτὸς οἰκτρὸς ἐξελαύνομαι χθονός. 1761

ἀλλὰ γὰρ τί ταῦτα θρηνῶ καὶ μάτην ὀδύρομαι;

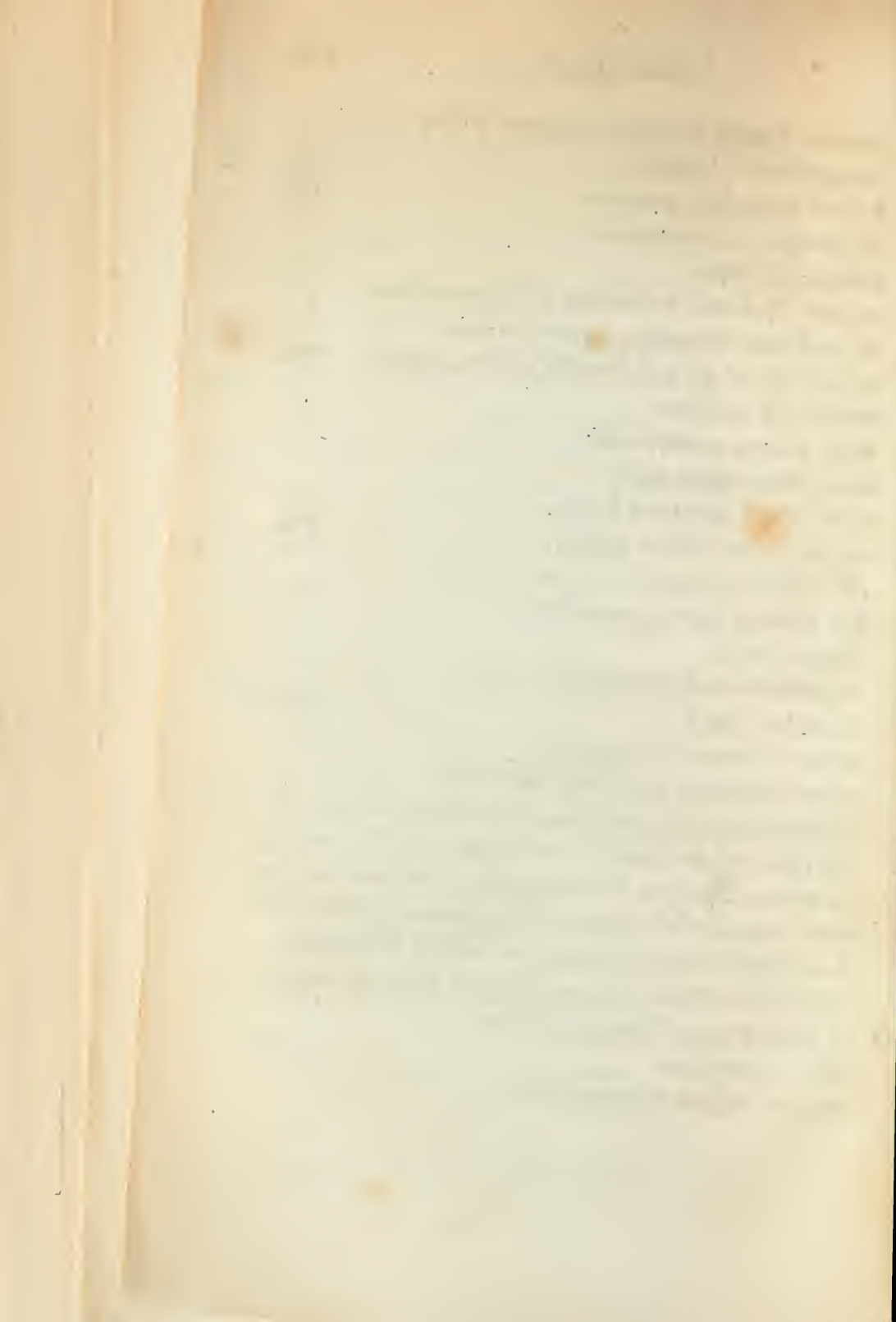
τὰς γὰρ ἐκ θεῶν ἀνάγκας θνητὸν ὄντα δεῖ φέρειν.

[XO. ὦ μέγα σεμνὴ Νίκη, τὸν ἐμὸν

βίοτον κατέχοις

1765

καὶ μὴ λήγοις στεφανοῦσα.]







PA Euripides
3973 Euripidis Tragoediae super-
A2 stites et deperditarum frag-
1854 menta
v.2

PLEASE DO NOT REMOVE
CARDS OR SLIPS FROM THIS POCKET

UNIVERSITY OF TORONTO LIBRARY

UTL AT DOWNSVIEW



D RANGE BAY SHLF POS ITEM C
39 15 28 05 16 005 2